इति ॥



बाबा रघुनाथदासरामसनेहीकृत

विश्रामसागर ॥

श्लोक ॥

सीतारामेति युगलं वस्तुतस्त्वेकरूपिणम् ।
परमानन्दसन्दोहं सर्वाराध्यं नतोस्म्यहम् ॥
यैमाप्त्यै परिमार्गिता हि बहवो लोके जनाः नैव तत्
दातारं हरिभक्तदासगुरुतो नान्यं क्वचिद्दृष्टवान् ॥
तेषामेव तु पादपद्मप्रभया यासुरस्वचक्ष्वाजिह
रघुनाथाखिलग्रन्थसारसुखदं विश्रामसिन्धौ कृते ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपगिरासुखखानि ।
नाना ग्रन्थन केर मत, कहौं वन्दनाबखानि ॥
वन्दौं शारदके चरण, हरण अविद्यामूल ।
बुधिसुधिविद्या दे सुमति, ह्वै मोपर अनुकूल ॥

छं० एकरदन करिवदन सदन सुखके दुखनाशक ।
ईशतनय गणईश शीश रजनीश प्रकाशक ॥
ऋद्धि सिद्धि बुधि लेत देत हरि कुमति न जागत ।
जो सुमिरै मनलाय विघ्न ता जन के भागत ॥
जैजैगणेशगिरिजासुवनभुवनत्रिदितयश अवहरण ।
रघुनाथदास बन्दनकरत बारबार गणपतिचरण ॥
जय अनङ्ग अरिसङ्ग उमा अरधङ्ग विराजत ।
मुण्डमाल मृगछाल कण्ठ बिष ब्याल जो छाजत ॥
शीश गङ्ग सारङ्ग भस्म सर्बाङ्ग लगावत ।
तीननयन मृदुबयन अयन सुख दु ख नशावत ॥
दीनदयाल कृपाल हर करत्रिशूल बर गौरतन ।
रघुनाथदास बन्दनकरत करौकृपा मोहिजानिजन ॥
बन्दौं द्विजपदकमल अमल सुन्दर सबलायक ।
बन्दौं रघुपति सचिवसखा सेवकसुखदायक ॥
बन्दौं गङ्ग तरङ्ग मेदिनी कुमुद बिभाकर ।
बन्दौं सुर मुनि मनुज दनुज बिधि जीव चराचर ॥
बन्दौंकविकोविदबिमल जिनबरण्योसियरामयस ।
सब मोपर किरपा करहु कहौं कथा बलपायतस ॥
रामचरित्र विचित्र अपारा * गावत निगम न पावत पारा
निजमतिसरिस तदपि मुनि गावै * मनचञ्चल तेहि तहा रमावैं
श्रवण कीरतन सुमिरण सेवा * भक्ति अङ्ग भाषत महिदेवा
करन पवित्र गिरा अवहारी * सबप्रकार मुद मङ्गल कारी
अस बिचारि बरणत रघुनाथा * भाषा करि हरिप्रेरित गाथा
कावन दोष गुणग्रन्थ मँझारा * कहे नागपति यहि परकारा

रोला ॥ मगणनगणअरुभगण यगण शुभ चारि कहावै ।
जगणरगणपुनिसगण तगणकवि अशुभ बतावैं ॥
मगण तीन गुरु आदि देव महि सब सुखकारी ।
नगण तीन लघु देव नाग दायक बुधि भारी ॥
भगण आदि गुरु देव चन्द्र मङ्गलदा होई ।
यगण आदि लघु देव नीर आनँद भर सोई ॥
जगण मध्य गुरु देव सूर सुख सकल बिनासै ।
रगण मध्य लघु देव अग्नि दाहन तनु त्रासै ॥
सगण अन्त गुरु देव काल नित देत उदासी ।
तगण अन्तलघु देव व्योम निरफलफलनासी ॥
मनुजकवितके आदिमहँ कीजै इन्हैं बिचारिबुध ।
कहँरघुनाथश्रीरामगुण बरणत अशुभौहोतशुभ ॥

दो० तहां मित्र कोउ दास है, उदासीन रिपु कोउ ।
अपर शुद्ध अशुद्ध कोउ, सुनो कहौं मैं सोउ ॥
खगकचघनबन जइपरल, छतइति मुखप्रदअङ्क ।
शेष परै जो कवित तो, करै राव ते रङ्क ॥

यहि बिधि पिंगल कहन बखानी * सो है मम बिशेष नहिं जानी
तेहि ते सबै कहौं कर जोरी * जो कछु चूक परै लखि मोरी
सुजन सुधारि लहेउ तुम ताही * लघु गुरुबरण जहां जस चाही
मोहिं न ज्ञान सुधिबल चतुराई * कीन्ह चहौं हरिकथा सुहाई
मति अतिदीन पीन रुचि मोरी * चाहत नभै छुवन बरजोरी
यह ढीठता समुझि बर ज्ञानी * छमिहैं निज शिशुसेवक जानी
सुनिहैं सुदिन सराहि सराही * रामसिया पद रत मति जाही
जिमि बालक बोलत तुतराई * सुनत मातु पितु अति हरषाई

निंदहिं कपटी खल अभिमानी * जे हरिविमुख भक्ति नहिं जानी
तासुवचन सुनि सुजन सुछन्दा * तजहिं न उडपदोष शिवनिन्दा
रविहि उलूक कहै भल नाहीं * साखी किमि धारै मन माहीं
निन्दाफल नहि कथौं बखानी * पैहैं जब तब जैहैं जानी

दो० रामकथा सबको सुखद, ऋतु वर्षा की नाइँ ।
अर्कजवासा दुष्टजन, ते आपुइ जरिजाइँ ॥

यदपि रहे मम भणित भदेशी * परिहरि जनगुणनामते लेशी
ताते भई अनूपम नीकी * जिमिमणिमंडित चोतनी फीकी
हरिहरिजनबिन जो कविताई * सुभग प्राणबिन जिमि बपुभाई
खल वायस कर तीरथ सोई * सुजनहंस तहं रमै न कोई
छन्द प्रबन्ध न हरिगुण गावै * सजीवनि सोइ काव्य कहावै
कहैं सुनैं मिलि सज्जन ताही * करैं प्रणाम प्रीति गुणग्राही
यथा बक्रगति सरित निहारी * तासु पाथ पावन सुखकारी
मज्जहिं ताहि महामुनि देवा * अपर न काको बरणौं भेवा

दो० श्रीपति धीपति यज्ञपति, अखिललोकपतिजोपि ।
प्रणवौं भूपति प्रजापति, करौ कृपा प्रभु सोपि ॥
बन्दौं हरिजन पदकमल, अमल तत्त्वप्रद रेनु ।
जिनकेसँगप्रभुफिरतइमि, जिमि बछरासँग धेनु ॥
यद्यपि कामी कुटिलखल, समलौ जन रघुनाथ ।
तद्यपि अहै तुम्हारोई, समुझि न छांडो हाथ ॥
बड़कृत अङ्गीकार जेहि, प्रतिपालत सजिताहि ।
अहिमहिहरविपदधिआगिनि,तजतनदु खदआहि॥
बन्दौं खल मलरहित जे, रामभक्त गुणखानि ।
परदुख सोई सुख जिन्हैं, परसुख मोटी हानि ॥

हरिजन मणिकी कोठरी, आपु सु तारी आहि ।
मुयेहु न त्यागत टेकनिज, तेहिते छाँड्यो नाहि ॥
सन्तस्वभावप्रभावलखि, समुझि खलनके रीति ।
तब मैं कीन्ह्यो ग्रन्थ यह, हृदय न आन्यो भीति ॥
करि अरि केरे कुँवर को, कहा सकै करि श्वान ।
भूकत मारे जाइ हैं, यमके भवन निदान ॥
सो० बन्दौं सन्त समाज, शिशनाय करजोरि करि ।
जहँ हरिनामजहाज, अमितपतितचढ़िभवतरहिं ॥
बन्दौं गुरुपद बारहिं बारा * जासु कृपा छूटत संसारा
होत बिमलमति मान बड़ाई * मिटत बिभेद कपट कुटिलाई
मोहिंसमपतितनयहिजग कोऊ * लघुमति अगुण बपुषलघु सोऊ
सनगुरु गुरु मोकहँ गुरु कीन्हा * यथा दण्ड कर बावन लीन्हा
करहुँ तासु केहि भाँति प्रशासा * जो कृत कागहि पिक बक हंसा
मलिन भव तजि कपट कुसङ्गा * लागेउ नाम चुनन सतसङ्गा
दो० काशी बास निवास सुरसरि पद पाथ स्वरूप ।
गुरु मूरति पशुपति प्रकट, तारक मन्त्र अनूप ॥
बन्दौं अवध अवधपुरवासी * जे अनन्य सिय राम उपासी
बन्दौं सरयू बिमल तरंगा * पावन करणि करणि अघ भंगा
करहिं पान जल सुमिरैं नामा * बसैं अवधमें जे वसुयामा
ते तनुतजि नि फिरि जगनहिंआवैं * अस प्रभाव निगमागम गावैं
बन्दौं नृपदशरथ सब रानी * दुलराये जिन सारँग पानी
बन्दौं श्रीमिथिलेश सुनयना * अवलोके रघुपति निजअयना
बन्दौं भरत, लषण रिपुआरी * रामानुज सब विधि सुखकारी
छं० जयति वातसंजात जयति रविमण्डल ग्रासक ।

जयति सन्तसुर सुखद जयति निशिचरकुलनाशक ॥
जयति विजय मदहरण जयति सियशोचनिवारण ।
जयति ज्ञानगुणउदधि जयति सबसकट टारण ॥
जयति जासुउर बसत नित रघुकुलमणिशरचापधर ।
सोइ प्रभुसेवक जानिकै करौं कृपा रघुनाथपर ॥

दो० बन्दौं श्रीजानकीपद, पदुम जोरि युगपानि ।
बिधिहरिहरचिन्ततजिन्है, शक्तिसहितसुखखानि ॥

छं० सारँगसे दगलाल भाल सारँगकी सोहत ।
सारँग ज्यों तनुश्याम बदनलखि सारँग मोहत ॥
सारँग सम कटि हाथ माथ बिच सारँग राजत ।
सारँग लाये अङ्ग देखि छवि सारँग लाजत ॥
सारँग भूषण पीतपट सारँग पद सारङ्ग धर ।
रघुनाथदास बन्दनकरत सीतापति रघुबशवर ॥

दो० गुणागार गुणरहित हरि, गुणनियता गुणपाल ।
गुणनायकगुण निधनकर, गुणदायक गुणजाल ॥
मातृ पितृ गो मित्र द्विज, गुरुहा दुर्वृत कोउ ।
जासु नाम कीर्तन किये, शुद्ध होत जग सोउ ॥
अन्ध बिलोचन पगुपग, लहै मूक बचनासु ।
जासु कृपाते तिमि मह्नू, कहिहौं गुणगण तासु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दो० बन्दौं बेद पुराण जे, करहिं रामगुण गान ।
जो सुनि प्राणी पावहीं, भोग भक्ति निर्वान ॥

बन्दौं रामनाम अविनासी * अचल अखण्ड चराचर बासी

सब सुखकरण हरणदुखभारी * जपैं जाहि शिव शैलकुमारी
भव निधान कलिमलमथनारी * पावनहु को पावन कारी
मुक्ति पन्थ विश्राम स्थाना * कवि सुसन्तके जीवन प्राना
धर्म विटप वरबीज प्रकाशक * मंगल करन शोक सबनाशक
मानस रोग अनेक प्रकारा * भेषज नाम विनाशन हारा
विपति गहन घनदाण कुठारा * करि अज्ञान मृगेश निहारा
मन्त्रराज षटवरण समेता * कहत सकल निगमागमवेता
परमसरल सुमिरत सुखदाई * लोकानँद परलोक भलाई
जनमन साँरग साँरग हरिसे * जगदधि कूलकलपदलसरिसे
मुक्तिधाम श्रुति सुमन विहंगा * मुनिमन पत्त उड़त जिनसंगा
कलिमलतम विधुवल्लभ गञ्जन * ब्रह्मनयन भ्रमधूम प्रभञ्जन
करमकोटि करिदशन कराला * दुर्वासना उडुप करताला
जन्ममरण निदिक्षुधा पियासा * नामपियूष अशन वरवासा
ज्ञान विराग श्रवण जलजाता * कहै रघुनाथ मोर पितुमाता

दो० रामनाम वस जासु उर, अखिल मन्त्र को वीर्य।
प्रलय अनलविषमृत्युतें, सो नर होय उतीर्य॥

सो० सोइ नाम सुमिरि सुभाय। कहौं ग्रन्थ एक बनाय॥
विश्रामसागर नाम। सुनि लहैं नर आराम॥

दो० सम्बत मुनिवसुनिगमशत, रुद्र अधिक मधुमास।
शुक्लपक्ष कवि नौमिदिन, कीन्हो कथा प्रकास॥
अवधपुरी परसिद्ध जग, सकलपुरिनसिरनाम।
रामघाट के बाट में, रामनिवास सुधाम॥
तहां कीन आरम्भ मैं, रघुपति आयसु पाय।
श्री गुरुदेवा दास के, पद निजहृदय बसाय॥

सत्गुण रजगुण तमोगुण, त्रयविधिके मुनियाँच ।
मोक्षद स्वर्गद शुभद हैं, धरिहौं सुखप्रद साँच ॥
उमा शम्भु सीतारमण, जो मोपर अनुकूल ।
तौ बरणो सो होइ फुर, अन्त मध्य अरु मूल ॥
पर उपदेश न लेश बडाई * कहौं कथा निजमति हितगाई
जग बन मन करिदुख दवदहई * हरिगुणसरि परि तब सुखलहई
श्रुति पुराण बहुविध सुरबानी * लघुमति मोरि परत नहिं जानी
भाषा बन्ध करब मैं ताते * समुझिपरे अस्माकम जाते
बचन विभेद अर्थ नहिं दूजा * यथा इन्दु शशि अर्चन पूजा
पुनि बहुमत बहुग्रन्थन माहीं * सबसग्रह बिन जानि न जाहीं
तेहिते मैं यक ग्रन्थ मझारा * धरब बरण कम अर्थ अपारा
बात बात पर बर इतिहासा * भक्ति बिबेक सहित नहिं हासा
सुनि सदेह करैं जनि कोई * देखै बेद पुराण बिलोई
सबकर सारअंश मत लीन्हा * मैं विश्राम सुसागर कीन्हा
आदिअन्त दोउ जानि किनारा * रामसुयश पयपावन भारा
दो० अद्भुत हास्य शृंगारभव, वीर बिभत्स बिषाद ।
रुद्रसुरुचि सम शान्तये, यामें नवरसस्वाद ॥
संशय भँवर करन सतसंगा * अर्थ गाहिर अध्याय तरंगा
कमल कवित्त सोरठा दोहा * भक्तिसुबास सन्त अलिमोहा
छन्दें बिबिध भांतिकी मीना * सीपसफल चौपाई दीना
राम नाम मुक्ताहल भाई * जासु आब त्रिभुवनमहँ छाई
सज्जनमाल चुगत हरषाहीं * दुष्टकाग बकरी गति नाहीं
नानाविध इतिहास पुरानी * सोइ यहि बीच रत्नकी खानी
मन गिरिबासुकि सुरति लगावै * यहिबिधि मथै सोइ जन पावै

क्षमाशील संतोष विचारा * मोहशयन भदक धरिआरा
दो० उक्तियुक्ति औरेब धुनि, अर्थ भावना केर।
चोचप्राश अन्वयजमक, जलज्वर अपर घनेर ॥
बनत तहां श्रीयुत भगवाना * यामें राम सियाकर थाना
जो चाहै प्रभु दर्शन भाई * तासु युक्ति इमि आगम गाई
प्रथमें श्रद्धा सम्मल बांधे * दूसर साधु संग शुभसाधे
तीसर भजन किया सोइ चलई * तुर्य अनर्थ विरति बनलहई
पञ्चम निष्ठारुचि उपजावै * षष्ठ सुजान ध्यान चितलावै
सप्तम नामासिक ह्वै जावै * जपत जीव त्रयताप नशावै
अष्टम भाव हरे दुख नाना * नवम प्रेम पयकरि अस्नाना
दशम दरश रघुपति के पावै * जीवव्याधि सब तुरत नशावै
निजस्वरूप सुख लहै हजूरी * यहि उपाय विन दरशन दूरी
रामकृपा विनश्रमें उपाई * पावैं जिमि द्विजसुत समुदाई
ग्रन्थ अनेक नदी नदनारा * बहिआवै शुचि जासु मझारा
गी० छं० ॥
षट शास्त्र वेद पुराण मत विश्राम याही में लह्यो।
यहि अर्थते विश्रामसागर नाम मैं याको कह्यो ॥
जे सुनहिं समुझहिं प्रीतिकरि हरिचरणमें चितलाइहैं।
रघुनाथ ते गोपद सरिस संसार यह तरि जाइहैं ॥
दो० कल्पद्रुमसम ग्रन्थ यह, सर्वसुफल दातार।
धर्म मोक्षकामार्थ हरि, भक्तिविराग विचार ॥
बुद्धि न ज्ञान विवेक कछु, बढै न हरिपदप्रीति।
तिन्हैं न प्रीतम लाग यहु, विश्रामोदधि रीति ॥
विविधग्रन्थ देखे सुने, जिनके कपट न शोक।

ते प्रमुदित ह्वै बरणिहैं, पटपद प्रतिश्लोक ॥
पैहैं सुखसम्पति यशपावन * ह्वैहैं हरिहरिजन मनभावन
कल्पित ग्रन्थ कहै जो कोऊ * याचौं ताहि जोरि कर दोऊ
यह ममकृत तुवतारक बारा * देखि गाउ शुनितहिन विचारा
जो मम मतिकल्पित कछु होई * तो मिलि दोष देहु सबकोई
आगे मुनिन कथन जो कीन्हा * सोई मैं भाषा करि दीन्हा
बहुग्रन्थनमा रहे जो बाता * सो एकैमा धर्यो सोहाता
तहँ कोइ कहै कहाँहै भाखा * तेहिते मैं अर्वाच विन माखा
सुर नर पशु पत्ती जो होई * निजवाणी समुझत सबकोई
रहैं बिविहु कोबिद गिरिराया * गरुडै बायस पास पठाया
आपु धर्यो पुनि हंसशरीरा * जब गुण सुने भुशुण्डी तीरा
अजहू जे सुर बाणी कहई * प्राकृतकरि समुझावत अहई
तब सब हर्षे प्रीति बढावैं * नाहित कोइ निकट नहिं आवैं
तेहिते जोनि जहाकी बानी * सोई ताहि तहा सुखदानी
लेनदेन विधि जो कछु करई * देशवाक्यते कारज सरई
दो० जेहिते निज कारज सरैं, ताको निन्दै नीच ।
यथा कोल पय पानकरि, पुनि करिडारत कीच ॥
जो भाषा मानत नहीं, तो भाषा मति गाय ।
जो बोलै तौ श्वानसम, उगिलिअशनफिरिखाय॥
अबगुरुपद निजआजिदग, रामचरण शिरनाय ।
चलीकथा जेहिभांति जहँ, सो सब कहौं बुझाय ॥
पटऋतुमाहि शिशिरऋतु जानो * फाल्गुन शुक्लपत्त पहिचानो
नैमिषक्षेत्र अटन तब होई * पच एक निबसे सब कोई
प्रथम चक्रतीरथ जल पावै * पुनि सब पञ्चप्राग चलिजावै

यहि विधि ब्रह्मसरादि नहाई * धेनुमतिहि आवै ऋषिराई
तेहि तट व्यासदेव कर थाना * ऋषिशौनक तहं रहैं सुजाना
बहुरि सूत आये तेहि ठामा * लखिशौनक कियोदण्डप्रणामा
चरण धोइ आसन बैठारी * धूप दीप आरती उतारी
बोले वचन सुचितकरि गाढे * हाथ जोरि सन्मुख भे ठाढे
नाथ बात कछु पूछा चहऊ * आयसु होय वचन तब कहऊ
दो० अतिशयप्रीति विलोकि तब, कहा सूत हरषाय।
सुनिमन जनि शङ्का करौ, पूछो जो जियआय॥
बोले ऋषि सुनिये महिदेवा * तुम जानत तिहुकालक भेवा
बेदरु शास्त्र सकल तव देखा * नित्यानित्य कीन्हों लेखा
तुम दयाल दीनन सुखदाई * तुम तजि कहा पूछिये जाई
प्रथम कहो गुरुमहिमा गाई * नाम महातम बहुरि सुनाई
कर्माकर्म धर्म अधर्मा * ज्ञान बिराग भक्तिको मर्मा
दुखसुख स्वर्ग नरक सबभाती * कौन कर्म करि केहिमा जाती
माया ब्रह्म जीव जग जाना * हरि हरिजन गुणकरो बखाना
ब्रह्म अनादि भयो बपु आई * कीन्ह चरित कस कहो बुझाई
चारि खानि जग जीव अपारा * उत्पति पालन अरु संहारा
दो० योग यज्ञ व्रत दान तप, बरणाश्रम कर भेउ।
भिन्न भिन्न भाषौ सकल, रहे रहाये तेउ॥
शास्त्र बिना नहिं ज्ञानभव, ज्ञान बिनानहिं भक्ति।
भक्ति बिना नहिं सत्यसुख, ताते सुनिय सुशक्ति॥
कुं० शशिभारश्रुति सर्पबिल, ग्रहमलमगसम लयन।
कर सबकरपग अफलतरु, मोर पच्छ शशि नयन॥
मोरपच्छ शशिनयन, प्राणबिन बिग्रहअहई।

नवै न गुरुजन चरण, रामगुण सुनै न कहई ॥
करै न जो हरिकर्म हित, अटै न तीर्थ मुनीश ।
दारुयोपिता सरिस सो, धावत नावत शीश ॥
दो० हरि विपयक जो होइ जन, ताहि उचित है येह ।
महामनोहर हरिचरित, सुनै सदा करि नेह ॥
सुनि मुनिवचन सूत सुखपावा * वेदव्यास पद शीश नवाव
क्षण यक हरिकर ध्यान लगाई * पुनि मृदुवचन कहे हर्षाई
भेद तुम्हार हवै सब जाना * पूछेउ जिमि मूरुख अज्ञाना
सो मैं अब तुम्हार मत जाना * कीन्ह चहत सबकर कल्याना
धन्य धन्य तुम मुनि बड़भागी * पूछयो रामकथा अनुरागी
रामकथा शुभ चिन्तामनसी * दायक सकल पदारथ जनसी
मोहमहातम बसि करणीसी * अहंकार करि हरिघरणीसी
अभिमत फलप्रद देवधेनुसी * स्वच्छकरन गुरुचरणरेनुसी
कलिमलभेक विपुल सरपीसी * क्रोध महिष दुर्गेदरपीसी
सुजनसमाज उडुप रजनीसी * साधु पोत पालन जननीसी
अघलखन हित दृग पुतरीसी * मनमृगबन्धन हित सुतरीसी
लालच लोभ लता बहरीसी * सद्‌गुण सकल चनकटहरीसी
दुर्वासना समूह शलभसी * दीपशिखासम दहन कलभसी
हरि भगहरणि बिमान सुतासी * दुखद अविद्या तूल हुतासी
धर्म कर्म बनबीज रमासी * सुमतिबढावन सुखसुदशासी
ज्ञानभार भवसुगवतीसी * कविकोविदहित अजयुवतीसी
कामभुजङ्ग विषय लहरीसी * मणि मयूर पाटन गहरीसी
भर्म बलाहक जगत प्रानसी * ज्ञानानङ्ग सरवरन मानसी
भक्तसरस्तान कमल बहनीसी * विरति विचार कहानि रहनीसी

दारिद्दुख मूषकामिनकीसी * रघुपति ध्यानकरन पिनकीसी
सबभूत पावन मधुऋतुसी * कलिमल भजन हेतु मृत्युसी
बिरति बिबेक नृपति मोहनीसी * सदसतोब खीर दोहनीसी
शोक शुक्र भवभीम गुसासी * पितर तरण हरिभक्ति सुपासी
प्रभुपद प्रीति बढ़ावनि ऐसी * अनुदिनलाभ लोभकहं जैसी
रामहिंप्रिय जिमि काशीवासी * भक्तिमुक्तिप्रद मङ्गलरासी
दो० मङ्गल बक्ता के भवन, मङ्गल श्रोता धाम।
मङ्गल लेखकके करन, मङ्गल हो तेहि ठाम॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतथागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय. ॥ २ ॥
दो० भगवत चरित पियूषवर, नित सेवै जो कोइ।
अन्तकालके समय में, तेहि उदवेग न होइ॥
अस हरिकथा कहीं सुखदाता * सुनो प्रथम गुरुमहिमा ताता
गुरु ब्रह्मा गुरु बिष्णु पुरारी * गुरु परब्रह्म दीन दुखहारी
गुरुशरणागत जो कोइ आवै * बहुरि न सो चौरासी जावै
गुरुकृपाल अगणित गति दाता * गुरुकृपा छूटै यमनाता
महाअधम पापी नर होई * गुरु शरणागत आवै सोई
फिरि तें नरक परैं नहिं प्रानी * जो गुरु बचन लेइँ फुर मानी
कहौं एक इतिहास पुरानी * मनलगाय सुनु मुनिबर ज्ञानी
सो० रहा अधिक चक्रनीच, करै ठगाहीं बन बिपे।
नाम तासु मारीच, अतिनिर्दयकपटीकुटिल॥
तेहि यकदिन मन कीन्ह बिचारा * मोसम पतित न कोउ ससारा
जबते धरयो देह जग आई * पाप करत सब उमिरि बिताई
इन अपराध कौनि गति होई * यहि बिधि बिपिन शोच कर सोई

तोहे अवसर गौतम ऋषि आये * जानरहें कछु सहज सुभाये
मुनिहिंविलोकि तुरत उठिधावा * चरणनाय शिर बचन सुनावा
मैं पापी ठग कुटिल चवाई * तुम दयालु पतितन गति दाई
तेहिते प्रभू कृपा अब कीजे * मोहिं आपनो शिष्य करिलीजे
कहमुनि तोहिं शिष्य जो करहू * अर्धपाप अपने शिर धरहू
दो० सुनु ठग पद्मपुराण मैं, देखी सब निरताय।
पाप पुण्य जेहि विधिबटै, सो त्वहि कहौ बुझाय॥
यक तपसी बिषयी यक होऊ * भोजन करैं एकमहँ दोऊ
भली बुरी संगति होइजाई * पाप पुण्य आधा बटिजाई
छुवै सराहै औ बतलावै * दशवा अंश तहा बटिजावै
दर्शन ध्यान बचन सुनु जाका * सतवा अंश पाप पुनि ताका
जप तप दान धर्म यक करई * यक सेवा वाकी अनुसरई
दशौ अंश फल सोऊ पावै * पाप पुण्य जोई होइ आवै
करज काढि पुनि पाप जो करई * तीन भागफल धनदहि परई
चोरी करि धर्म करे जो कोई * पाप पुण्य तेहि कछू न होई
जो कोउ काहू प्रेरि करावै * पुण्य पाप षटअंश सो पावै
प्रजा जो धर्माधर्म कमाई * छठा अंश राजा ढिग जाई
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना * जाप करत वा पूजा ठाना
बात करै अथवा छुइ लेई * छठाअंश निज पुण्यहि देई
आनके कर निजधर्म करावै * छठाअंश फल सोऊ पावै
दो० पिता पुत्र नारी पुरुष, गुरू शिष्य यहिभाय।
पाप पुण्य जो कछु करै, अर्ध अर्ध बटिजाय॥
असबिचारि शिषिकरौं न तोही * बाट न रोंकु जानदे मोहीं
बोला बधिक जान नहिं देहौं * जबलगि गुरु न तुम्हैं करिलेहौं

मुनि मुनि हृदय विचारहिश्राला * यह है खल नहिं देहे जाना
रहननेह चह निजभक्त भाई * परी पूरणथ देहु बताई
कह ऋषि गुरुदक्षिणा मांहीं * नयनो शिष्य करों मैं ताहीं
बोला -का दीजे सो कहऊ * गमादिग होइ लेउ जो चहऊ
अब जनि पाप किहेउ कछु भाई * रामनाम सो सुमिरहु जाई
परमजाप तारक ब्रह्म महां * ब्रह्महत्यादि पापहर जहां
असकहिऋषि चलिभे जिउपाई * बधिक नाम मे प्रीति लगाई
ताहिभांतिन कछुकाल बिताना * मरणकालका दिन जब आवा
ताहि लेन यमदूत सिधये * पाछेते हरिगण चलिआये
शीशमुकुट मणिकुण्डल काना * पीतवसन तनभूषण नाना
भुज विशाल अनुपम करलाजे * हरिदरचक्र कौमुदी राजे
गणन देखि यमदूत डराने * बोले वचन कपट छलसाने
बड़ी भाग्य हम दर्शन पाये * आशु कहा यहि तीर सिधाये
दो०. कहा गणन दूतौं सुनो, बधिकभक्त यहि ग्राम ।
तेहि आने आयन यहां. लै जैबे हरि धाम ॥
सुनत वचन किंकर यमकेरे * बोले निज निज नैन तरेरे
बधिक नीच पापी अन्याई * जीव हतासि नहि जाये गनाई
बनके बन यहि कीन्हेसि नासा * तेहि तुम कहत रामकर दासा
कहगण जबते गुरु यहि कीन्हा * रामनाममे मनचित दीन्हा
किहिसि न तबते कछु अपराध * यहिसम और कौन है साधू
असकहि लीन विमान चढाई * हरिपुरको चलिभे हरषाई
गी० छं० ॥
चलिभे विमान चढाइ हरिपुर ताहि राख्यो जायकै ।
अति देखि गुरुपरताप यमके दूत गय खिसियायकै ॥

असससुभिनरगुरुशरणह्वै हरिभजन जिन नाहीं कियो।
तिन पाय नरतन आय जगकरि हानि नरकहि चलिदियो॥

दो० गुरु शरणागत आइकै, जो सुमिरै सियराम।
इहां रहै आनन्द में, अन्त बसै हरिधाम॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश ते, जो अधिकी ह्वै जाय।
गुरुबिन भवनिधि ना तरे, कहत निगम असगाय॥

यामे कछु सन्देह न पेली * आदिहिते सब गुरुकरि ऐली
ब्रह्मके शिष्य प्रकृतिही जानो * प्रकृतिशिष्य महतत्त्व पिछानो
महत्तत्त्व शिषिप्रणव,जो कहिये * ॐकारते विष्णुहि लहिये
बिष्णु कि शिष्य लक्ष्मी भयऊ * तिनके विधिविधिके शिवकह्यऊ
रामचन्द्र अवतार जो लीन्हा * बिश्वामित्र गुरू तिन कीन्हा
व्यासपुत्र शुकदेव सुभाये * जन्मलेतही बिपिन सिधाये
तिन गुरु कीन्हों जनकै जाई * तब हिरदयमहँ निष्ठा आई
ब्रह्मपुत्र नारद मुनि जेऊ * मनु भगवान केरि सुनिलेऊ
दीक्षाहीन जाइँ हरि तीरा * दर्शन हेतु सदा मुनिधीरा
कछुककाल रहि जब फिरिआवैं * जब बैठें सो ठाउँ धोवावैं
एकबात नारद लखि लयऊ * रमानाथ ते पूछत भयऊ

दो० बोले हरि नारद सुनो, तुम गुरु अबै न कीन।
सो बिचार एती जगह, नित्य पाक करि लीन॥

दीक्षाहीन जहा चलिजावै * सो जागह अशुद्ध ह्वै जावै
गुरुमुख चरण परैं जब आई * तब सोइ धरा शुद्ध होइ जाई
कह नारद सुनिये सुरराया * प्रथमैं तुम मोहि कत न बताया
कहप्रभु तुम अतिशयं प्रिय मोरे * कह्यो न सुनि होई दुख तोरे
तेहिते प्रभु गुरु कीजे जाई * काहि करौं अब देहु बताई

जो प्रथमैं मिलिजाय सकारे * ताहि गुरू तुम कीन्ह्यो प्यारे
भोरभये निकसे मुनि जबहीं * धीमर देह धरी हरि तबहीं
मुनि आगे ह्वै निकसे आई * नारद देखिपरे पग धाई
तेहि गुरुकरि हरिके ढिग आये * देखत प्रभु निजहृदय लगाये
दो० कह गुरु कीन्हों कौनपै, सुनि बोले हरिराउ ।
गुरुमैं पै जो तुम कही, चौरासी कहँ जाउ ॥
सुनि नारद निजगुरुपहँ आये * समाचार सब कहि समुझाये
गुरु दयालु बोले तुम जावो * हरिते चौरासी लिखवावो
लिखि जब होहिं लौटि तब जायो * हाथजोरि युग बचन सुनायो
सुनि नारद आये प्रभुपाहीं * चौरासी जानत मैं नाहीं
सो लिखि मोहिं देहु समुझाई * ताहि देखि भुगतौं मैं जाई
कहहरि नौलख जलचरजाती * सब योनिन भरमै बहुभाती
दश लख पक्षी को विस्तारा * उडतरहै भयको उरधारा
ग्यारह लाख जाति कृमिकीटा * बीस लाख बनविटप जो दीटा
तीस लाख पशुयोनिहि जानो * चारि लाख मानुष्य पिछानो
यह चौरासी योनि कहावै * सब भुगते बिन अन्त न पावै

हरिगीतिका छन्द ॥

सुनि गये नारद लौटि तासें देखि प्रभु बोलत भये ।
केहि दीन मत यह तुम्हैं कहऋषि आज गुरु मोको दये ॥
तेहि कहत पै जिन एक क्षण मे मेटि चौरासी दई ।
अस और नाहिं कृपालु दीनदयालु गुरुसम जग हुई ॥
दो० गुरु गोबिंद ते अधिकहैं, यह प्रतीति मनलाइ ।
गोबिंद डारैं नरक जो, तौ गुरु लेइँ बचाइ ॥
तम गुकार रु तासु हर, गुरु सोइ करै प्रकास ।

बर्णों धर्मरु शास्त्र को, यह मैं वर इतिहास ॥
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमारीचनारदकथावर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ॥३॥
दो० बन्दि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरासुखखानि ।
बर्णों धर्मरु शास्त्र को, पुनिइतिहासबखानि ॥
कहा सूत गुरु महिमा गाई * सुनि शौनक बोले हरषाई
नाथ मोहिं निज किङ्कर जानो * गुरुप्रभाव कछु और बखानो
कहा सूत गुरु बिन कछु करई * ताको काज एक नहिं सरई
गुरु बिन मुक्ति पन्थ नहिं पावै * गुरु बिन नर चौरासी जावै
गुरु बिन ज्ञान भक्ति नहिं जानै * गुरु बिन आतम नहि पहिचानै
दो० बिनगुरुदीक्षा अफलसब, जप तप होमक्रियादि ।
ज्यों पाहन में बीजवइ, उपजे ना फल वादि ॥
तेहिपर इक इतिहास बखानो * सुन्दर ताहि पुरातन जानो
अवध उत्तरे योजन चारी * रहै नगर यक अतिसुखकारी
तामें कृष्णदत्त द्विज रहई * सुन्दरि नाम तासु त्रिय अहई
करै दान दिन प्रति अधिकाई * द्वारे अतिथि बिमुख नहिं जाई
हीरा हेम पदारथ नाना * देहिं विप्रकहँ बेदविधाना
अशन बसन गज बाजि मिठाई * शय्या दान करै मनलाई
दो० एकदिवस द्विजबर सोई, गयो रहै कहुँ ग्राम ।
नाम सुन्दरी तासु त्रिय, रही आपने धाम ॥
तेहि दिन तेहिपुर नारद आये * करवीना शिरतिलक लगाये
रामचरित गावत हरषाई * तेहि द्वार ह्वै निकसे जाई
आवहिं देखि सुन्दरि उठिधाई * करि बहु विनय भवन लैआई
उच्चासन तापर बैठारे * हेमथार लै चरण पखारे

कुछु चरणोदक कीन्हों पाना * कछु छिरक्यो सिगरेअस्थाना
धूप दीप आरती उतारी * बडी भाग्य भै आजु हमारी
मुनि आज्ञा लै पाक बनाई * कह्यो स्वामिचलि भोग लगाई
तव नारद उठि भोजन कीन्हा * अँचे बहुरि आसन पग दीन्हा
सुन्दरि बात करन तब लागी * लखि नारद बोले अनुरागी
धन्य तुम्हार मात पितु चीन्हा * जिनकी कोखि जन्म तुम लीन्हा
नरतनु पाय सफल तव भयऊ * जो मन जनसेवा महँ दयऊ
धन्य तुम्हार गुरू सुखदाई * साधुसेव जिन तुम्हें दृढाई
सो० सुनि बोली द्विजनारि, मेरे तौ गुरु हैं नहीं।
अपने हृदय बिचारि, देहुँअशनलखिक्षुधितकहँ॥
सुनि अस वचन देवऋषि तासू * डारे अशन बान्तकरि आसू
लखि सुन्दरि डरि बोले लीन्हा * केहि अपराध वमन प्रभु कीन्हा
कह मुनि होइ वैष्णव जो जन * करै अवैष्णव के गृह भोजन
पावै-तहां जलहु बिन जाने * ताको यह प्राश्चित्त बखाने
चन्द्रायण व्रत ठानै सोई * तेहि अघते तव पावन होई
इष्टापूर्त्ति पुण्य सब वाके * किये अमिथ्या निष्फल ताके
तेहिते अधिक पाप तेहि परई * निगुरा छुवा जो भोजन करई
यहिते नष्ट कर्म नहिं आना * भ्रष्टबुद्धि करिदेत अयाना
दो० ताते सुन्दरि तव छुआ, भोजन कीन अजान।
कियो बान्त यहिकारणो, नष्ट भयो मम ज्ञान॥
सुनि सुन्दरि मन कीन बिचारा * कत मैं कीन्ह धर्म अधिकारा
कत मैं विविध दान व्रतकियऊं * कत मैं तीर्थाटन मन दियऊ
कत मैं सुवरण सींग मढ़ाई * दई गऊ विप्रन समुदाई
गुरु बिन धर्म करै जो कोई * मैं नहिं जान्यो निष्फल होई

तेहिते मुनि अब दाया कीजै * राममन्त्र मोका प्रभु दीजै
अब जनि देर लगावहु स्वामी * देखि प्रीति बोले ऋषिनामी
प्रथम जाइ कीजै अस्नाना * सुन्दरि कहा बचन परमाना
जब हरिशरण जीव यह जाई * यमगण प्रसैं कुटुम्बिन आई
सुत पितु मातु कहैं अस बैना * भक्ति न छाजै हमरे ऐना
कोउकहै अबहिं जगतसुखकीजै * बृद्धभये पर हरि भजिलीजै
सुनि मतिभ्रम जे रहे चुपाई * लीन्ह्यो काल अचानक खाई
मृतक जानि सुत पुत्री नारी * रोवहिं स्वारथ हेतु पुकारी
तासु शोच कोउ नेक न करई * हरिहिंविमुखनौं कसदुख परई
तेहिते मैं नहिं जाब नहाई * सुनि नर नारि देहिं भरमाई
रामचरण पङ्कज चित दीना * जिहिते होत पाप सब छीना
सुनतबचन मुनिअतिसुखपावा * तुलसी माल कण्ठ पहिरावा
दो० बिप्र बैश्य नृप शूद्र वा, होइ अपतिपति बाम ।
हरिव्रत धारै उचित तेहि, है तुलसीको दाम ॥
बिधिहरिहरकहँसाखिकरि, राममन्त्र तब दीन्ह ।
बैष्णवधर्म सिखाइ कै, गवन पितापुर कीन्ह ॥
तेहिक्षणमिले तासु पति आवा * लाखि सक्रोध अस बचन सुनावा
केहिके कहे लीन्हि तैं माला * जानिपरा पहुँचा तव काला
अबते तोरु चहसि जो प्राणा * नाहिंत काटिहौं शीश कृपाणा
सुनि सुन्दरि बोली करजोरी * सुनहु प्राणपति टेक जो मोरी
चहु तनु टूक टूक करिडारो * भावे अनल माहिं धरिजारो
धरती खोदि तोपि बरु देहू * तजौं न रामहिं प्रण मम येहू
जिन प्रथमैं करि पाछे छाड़ा * तिन्हैं जानिये स्वाङ्गी भाड़ा
दो० अस अबलाके बचनसुनि, गुणि द्विज रह्यो चुपाय ।

काढ़िदेउँ तो जग हँसै, मारे हत्या आय ॥
तेहि दिनते अस नेम सो धरई * पतिका छुवा न भोजन करई
सहित प्रीति तें अशन बनावै * परसि दूरिते ताहि पवावै
यहिविधि दिनप्रति पावै खाना * देखि विप्र मन भई गिलाना
जो हमारि जूठनि निन खाई * सो अब दूरि ते देत बहाई
अबकी ऋषि आवैं मम धामा * मोहू गुरुकरि सुमिरौं रामा
यहिविधिद्विजमनकरतविचारा * कृपा कीन्ह नारद पगु धारा
गुरुहि देखि सुन्दरि हरषानी * शीश नाय बोली मृदु बानी
सफल जन्म भा आजु हमारा * जो निकेत रौरे पगु धारा
सुन्दर आसन पर बैठावा * चरण धोइ चरणोदक पावा
बहुरि धान्य पैकरमा कीन्हा * द्रव्य भेंट लै आगे दीन्हा
दो० गुरु वैद्य अरु ज्योतिषी, देव मित्र बडराज ।
इन्हैं भेंट बिन जो मिलै, होइ न पूरण काज ॥
आज्ञा मागि कीन्ह जिवनारा * षटरस व्यञ्जन विविध प्रकारा
सुवरणथार परसि धरिदीन्हा * हरिहिअर्पि मुनि भोजन कीन्हा
अचमनकरि आसन जब आये * द्विज सुन्दरि ते बचन सुनाये
गुरुदिक्षा मोहिं देहु देवाई * जाते तव सगति होइजाई
सुन्दरि आय कहा गुरुपासा * इनहुनका कीजै हरिदासा
द्विजहु तव बोला करजोरी * पुरवहु प्रभु अभिलाषा मोरी
दिक्षा लिहे सरै मम काजू * ताते विनय कीन्ह मैं आजू
कह नारद द्विज आउ नहाई * तव तुमका हरिनाम सुनाई
सुनि मुनिवचन विप्र हरषाना * पुरनट सरि तहँ चल्यो नहाना
मग यक पण्डिततें भै भेंटा * ठाढकीन्ह तेहिं गहिकर फेंटा
पूछौ कृष्णदत्त तुम आजू * हरबर चलत कौन बड़ काजू

कृष्णदत्त पण्डित ते भाषा * गुरुदीक्षा की है अभिलाषा
दो० तब पण्डित बोले वचन, कृष्णदत्त सुनिलेहु ।
यह मृत्युपक्ष कुँवार है, गुरुदिक्षा जनि लेहु ॥
यामे पिण्डदान भल कीन्हा * दीक्षा मन्त्र न चाहिय लीन्हा
कार्त्तिक शुक्लपक्ष शुभ मासा * तब तुम होयहु हरिके दासा
सुनतवचन द्विजमन भ्रम आवा * तुरत पलटि नारद पहँ आवा
कह प्रभु क्वार जान अब दीजे * कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजे
यह सुनि नारद गे विधि पासा * विप्र रहे कार्त्तिक की आसा
ताकी अवधि न पहुचन पाई * बीचमे दुहुँन काल लियो खाई
दो० पलपहारकी खबरि नहिं, धौं यामें का होय ।
आगेकी आशा करत, काल हँसै मुख सोय ॥
अस विचारि जे चतुर नर, करत न लावै वार ।
नहि जानी केहि घरी मे, काल करै संहार ॥
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतकृष्णदत्तकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ॥४॥
कह शौनकमुनि कहौं बखानी * तनु तजि कहा गये द्वौ प्रानी
कहा सूत सुन्दरि द्विजनारी * चढि बिमान हरिलोक पधारी
विप्र गयो यम के दरबारा * पाप पुण्य का भयो बिचारा
यमते चित्रगोपित्र बखाना * इन बहु कीन्ह पुण्य अरु दाना
जबते जाय देह इन धारी * उभय पाप कीन्हे अति भारी
कह यम कौन पाप सो कहिये * तेहि अनुसार दण्ड गहि चहिये
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा * सब विप्रन कहँ न्योता दीन्हा
तहा एक हरिजन चलिआवा * कृष्णदत्त ते बचन सुनावा
हम हैं क्षुधावन्त द्विजराई * कछु भोजन मोहिं देहु मगाई

असमुनि विप्र क्रोधकियो भारी * अनुचितबचन कहेउ दुरचारी
सुनि कटुबचन गयो उठि साधू * ताहिते यहिपर भा अपराधू
हरिजन जासु यज्ञ महँ आवै * मिलै न अशन क्षुधित फिरिजावै
ताकी पुण्य सकल घटिजाई * बहुरि पाप होवै अधिकाई
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा * तेहिलखि इन अतिडाटैं लीन्हा
ताते पुण्य छिन भै याकी * थोरी एक रही है बाकी

सो० सुनिबोले यम याहि, राजदेहु गजदेह अब ।
निजफलभोगीजाहि, आप कहूं नृपके भवन ॥

असकहि धर्म बिपिनजनभावा * कृष्णदत्त गजका तनु पावा
कछुकदिवस बनमाहि बितायो * पुनि नृपचन्द्रसेन गृह आयो
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा * जिनके सदा धर्मेश्वर साजा
यह सब चरित देखि द्विजनारी * मनमा शोच करै अतिभारी
मम पतिसों वारण तनु पावा * मोह बिबश मन खेद बढावा
बर लै पुनि मृतलोकहि ऐली * जहँ आशा तहँ बासा पेली
जाके घर गज ता नृप केरी * भई सुता अतिरूप घनेरी

दो० दानदिहिसियस्किहिसिगुरु, भै कन्या नृप केरि ।
राजाको करि द्विज भयो, दूनों जात सुमेरि ॥

कन्या जब कछु भई सयानी * गई द्विरद पहं निजपति जानी
इन देखा यह है मम नारी * भई महीपति केरि कुमारी
अस बिचारि दोउ प्रीति बढाई * दिन दिन होतजात अधिकाई
एकदिवस नृप हृदय विचारी * ब्याह योग्य भइ सुता हमारी
विप्र बोलि शुभघरी सोधाई * यत्न स्वयम्बर केरि बनाई
सुनि सिन्धुर निराशन त्याग्यो * करिविचार मनशोचन लाग्यो
लखि राजा बर बैद्य बोलावा * तबहुं न कुम्भी दाना खावा

कृष्णदत्त पण्डित ते भाषा * गुरुदीक्षा की है अभिलाषा
दो० तब पण्डित बोले वचन, कृष्णदत्त सुनिलेहु।
यह मृत्युपक्ष कुँवार है, गुरुदिक्षा जनि लेहु ॥
यामें पिण्डदान भल कीन्हा * दीक्षा मन्त्र न चाहिय लीन्हा
कात्तिक शुक्लपक्ष शुभ मासा * तब तुम होयहु हरिके दासा
सुनतबचन द्विजमन भ्रम छावा * तुरत पलटि नारद पहँ आवा
कह प्रभु क्वार जान अब दीजे * कात्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजे
यह सुनि नारद गे विधि पासा * विप्र रहे कात्तिक की आसा
ताकी अवधि न पहुचन पाई * बीचमें दुहुन काल लियो खाई
दो० पलपहारकी खबरि नहि, धौं यासें का होय।
आगेकी आशा करत, काल हँसै मुख मोय ॥
अस विचारि जे चतुर नर, करत न लावैं बार।
नहि जानी केहि घरी में, काल करै सहार ॥
इति श्रीविश्रामसागरतत्वमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतकृष्णदत्तकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ॥४॥
कह शौनकमुनि करौं बखानी * तनु तजि कहा गये दोउ प्रानी
कहा सूत सुन्दरि द्विजनारी * चढि बिमान हरिलोक पधारी
विप्र गयो यम के दरबारा * पाप पुण्य का भयो विचारा
यमते चित्रगोपित्र बखाना * इन बहु कीन्ह पुण्य अरु दाना
जबते जाय देह इन धारी * उभय पाप कीन्हे अति भारी
कह यम कौन पाप सो कहिये * तेहि अनुसार दण्ड यहि चहिये
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा * सब विप्रन कहँ न्योता दीन्हा
तहा एक हरिजन चलिआवा * कृष्णदत्त ते बचन सुनावा
हम हैं क्षुधावन्त द्विजराई * कछु भोजन मोहिं देहु मगाई

असमुनि विप्र क्रोधकियो भारी * अनुचितवचन कहेउ दुराचारी
सुनि कटुबचन गयो उठि साधू * तेहिते यहिपर भा अपराधू
हरिजन जासु यज्ञ महँ आवैं * मिलै न असन क्षुधित फिरिजावैं
ताकी पुण्य सकल घटिजाई * बहुरि पाप होवै अधिकाई
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा * तेहिलखि इन अति डाटे लीन्हा
तातें पुण्य छिन्न भे याकी * थोरी एक रही है बाकी
सो० सुनिबोले यम याहि, राजदेहु गजदेह अब।
निजफलभोगीजाहि, आप कहूं नृपके भवन॥
असकहि यमे विपिनजनभावा * कन्यादत्त गजका तनु पावा
कछुकदिवस बनमाहिं बितायो * पुनि नृपचन्द्रसेन गृह आयो
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा * जिनके सदा धर्मकर साजा
यह सब चरित देखि द्विजनारी * मनमा शोच करै अतिभारी
ममपतिसो वारण तनु पावा * मोह विवश मन खेद बढावा
बर लै पुनि मृतलोकहि ऐली * जहँ आशा तहँ वासा पेली
जाके घर गज ता नृप केरी * भइ सुता अतिरूप घनेरी
दो० दानदिहिसिअरुकिहिसिगुरु, भै कन्या नृप केरि।
राजाको करि द्विज भयो, दूनों जात सुमेरि॥
कन्या जब कछु भई सयानी * गइ द्विरद पहँ निजपति जानी
इन देखा यह है मम नारी * भइ महीपति केरि कुमारी
अस विचारि दोउ प्रीति बढाई * दिन दिन होतजात अधिकाई
एकदिवस नृप हृदय बिचारी * ब्याह योग्य भइ सुता हमारी
विप्र बोलि शुभघरी सोधाई * यल स्वयम्बर केरि बनाई
सुनि सिन्धुर निराशन त्याग्यो * करिविचार मनशोचन लाग्यो
लखि राजा घर बैद्य बोलावा * तबहुं न कुम्भी दाना खावा

यहिविधि बीति बार बहु गयऊ * तबतो नृपके अतिदुख भयऊ
कह कन्या पितु ते अस जाई * गजहि अशन मैं देहुँ कराई
बोले भूप जाहु किन अबहीं * मरिजाई तब जैहौ कबहीं
पिता वचन सुनि गे पतिपासा * बोली तुम कत रहत उदासा
बहुदिनते भोजन नहिं खायो * सो कारण मोहिं नाहिं बतायो

दो० कह गयन्द चाहत करन, नृपति तुम्हार विवाह ।
सो विचार अब होत है, हृदय हमारे दाह ॥

जबते यहा जन्म तव भयऊ * कबहुं न संग बिछुरि मम गयऊ
अस बिचारि दुख होतहै मोहीं * व्याही आन पुरुष अब तोहीं
ताते मैं नहिं दाना खाहूं * बारहिंबार मनहिं पछिताहू
सुनि कन्या बोली मृदु बानी * शोच किहे दुख है अरु हानी
हम जो कहा नरतनु के माहीं * भजहु राम फिर अवसर नाहीं
तब कार्त्तिककी आश लगायो * अब वारण की देही पायो

दो० तब कार्त्तिककी आशकरि, बिसस्यो सिरजनहार ।
अब चौरासी योनि में, आय पस्यो भरतार ॥
ताते पुनि मैं कहत हौं, दुखतजि भोजन खाहु ।
तुम्हैं छाडि हौंना करब, आनपुरुषसँग व्याहु ॥

सो० सुनिगज भोजन कीन, लखि नृप बोल्यो कुँवरिते ।
कौन मन्त्र तुम दीन, जो सुनि खायो तुरतही ॥

घ०छ०कह कन्या यहि जन्म, केर गज अहैं मोर पति ।
मैं हौं याकी नारि, बिप्रघर जन्म रहै सति ॥
हौं गुरुकरि हरिभज्यों, भइउँ तेहि सुता आइ तव ।
इन दीन्हों बहु दान, भक्तिबिन वारणवपुभव ॥
सज्योस्वयम्बरसाजसुनि, करिभोजनतजदीनतेहि ।

बचनदीन मैं जाइजब, तबफिरभोजन कीन्हयहि ॥
सुनि अस वचन भूप हरषाना * कन्या वचन सांच नहि माना
लागे करन स्वयम्बर साजा * आये देश देश के राजा
रानी तब कन्यहि अन्हवावा * कीन्हो तनु शृङ्गार सोहावा
सहित सनेह गोद बैठाई * बोली मधुर बचन सुखदाई
रङ्गभूमि आये बहु भूपा * देश देश के सुभग स्वरूपा
जो तव मन भावै महिपाला * मेल्यो तासु गरे जयमाला
असकहि हार दीन्ह तेहि हाथा * पठई एक सहेली साथा
भूपन दिशि नहि दृष्टि उठाई * चली कुँवारि कुञ्जरपहँ आई
परशी उर मेल्यो जयमाला * चकित भये सब देखि भुवाला
सबहिन कहा वयस लघु जानी * बाधिगई कन्या फिरि टानी
सखी सदन लाई जहँ रानी * मातु ताहि लखि बहुत रिस नी
दई सबै मति हरी तुम्हारी * नृप तजि माल व्याल उरडारी
दीनचहै विधि दुख जब जेही * ताकी मति पहिले हरिलेही
असकहि पुनि दीन्होकरमालहि * अबनै पहिरावहु नरपालहि
गई कुँवरि पुनि फिरि उरडारी * देखि भूप सब चले सिधारी
तब राजा अतिशय दुख पावा * असि ले कन्यै मारन धावा
श्रुतिधारी जे विप्र प्रवीना * छोरि कृपाण नृपति ते लीना
अल्पवयस यह अहै कुमारी * है अज्ञान न चाहिय मारी
सो० बोर रहंट द्विज चोर, सुता नारि व्यभिचारिणी ।
यती अन्त्यज ओर, तदपि न इनको मारिये ॥
छं० दश गो मारे पाप, सदश यक द्विज संहारे ।
दशद्विजवधे जो पाप, एक स्त्री के मारे ॥
दश स्त्री बध पाप, एक कन्या बध होई ।

दश कन्या बध पाप, यती यक मारे सोई ॥
दो० दश दण्डी मारे परे, जो पातक शिर आय ।
तेहिसम यक हरिजन बधे, कहतनिगमअसगाय ॥
ताते छाजन लीजिये, कीजै एक उपाय ।
वर खोजाय टीकाकरो, बहुरि देहु भौंराय ॥
सुनि नृप नाऊ विप्र बोलावा * वर ढूढन हित तुरत पठावा
पुर अरु ग्राम अनेकन देशा * देखे जहँ तहँ सकल नरेशा
गुंग पंगु अन्धा वर काना * सिरी वरी कोढा जाना
असवरु मिले जहा चलि नाहीं * कन्यासरिस मिले कहुँ नाहीं
तब द्विज नाउ दोउफिरिआये * राजा ने सब वरणि सुनाये
सुनि नृप कर्मबिपाक मगाई * विप्रन ते ताको बचवाई
कह द्विज कन्या कहा जो रहई * महाराज से साँची अहई
जहा तहा फैली यह बाता * हाथी राजा कर जामाता
सुनि अपकीरति नृप दुख पावा * अग्निकुण्ड तुरतै खनवावा
दो० गोमल घृत शरिदीन नृप, जरे लाग तेहि माँह ।
तेहि क्षण आये देवऋषि, खैंचिलीन्ह गहिबाँह ॥
कह नारद क्यों जरे भुवाला * सो सब बरणो मोसे हाला
बोल्योनृप गजअशन न कीन्हा * कन्या ताहि खवावै लीन्हा
मैं पूछा क्स दिहे खवाई * कन्या कहा मोर पति आई
तासु गिरा हम सत्य न जानी * यत्न स्वयम्बर की सब ठानी
कन्या हारु गजहि पहिरावा * तेहि पाछे मैं वर खोजवावा
जसि कन्या वर मिला न तैसा * मिला सो आँधर पंगु अनैसा
तब मैं कर्मबिपाक बँचाई * कन्या कहा सो साची पाई
ताहूपर जे पुरुष अनारी * पग पग निन्दा करैं हमारी

सो अपकीरति सुनी न जाई * ताते मरिहौं खाय गरल।
दो० कह नारद जनिजरहु अब, है कछु एक उपाय।
रामनाम गज सुने सो, अबही नर होइजाय॥
सुनि मुनि वचन भूप सुख पावा * वारवार चरणन शिर नावा
महाराज अब देर न कीजै * वेगि गजहि गुरुदीक्षा दीजै
जेहि अपकीरति मिटै हमारी * वरोंजाय तेहि साथ कुमारी
सुनि नारद हरिमन्त्र सुनावा * गजपातक सब दूरि बहावा
सुन्दर भा बालक यक आई * तेहिशोभा कछु वरणि न जाई
वयस किशोर गौरतन जासू * दृगविशाल शशिसम मुखहासू
बाल विलोकि भूप अरु नारी * इकटक रहे निमेष निहारी
देखि सखी सब कुँवरि सराहैं * धन्यभाग्य बड़ तुम्हरे आहैं
भयहु तनु दुख सह्यो अपारा * ताते पायो सुभग कुमारा
केहु न विधि अस दीन्ह्यो नाहू * सखी सराहैं कहैं मनमाहू
तब कुमार शिशुनन्दन कीन्हा * शिरनाइ चरणन धरिलीन्हा
जयजयजय ऋषिराज तुम्हारी * मोहिं पापीकी विपति निवारी
गजतनुलहि मैं अति दुखपावा * ता दुखते तुम आजु बचावा
दो० आयो मैं तव कृपाते, अरु सतसंग प्रभाव।
दासी जात न चाहि हित, कहत जहां चलिजाव॥
तब मुनिवर बरशिक्षा दीन्हा * सुनि तेहिसहित हिये धरिलीन्हा
नृपनन्दिनी कन्या सोइ जानो * भे नारद के शिष्य बखानो
तेहिपाछे पण्डित बोलवावा * व्याहहेतु शुभ दिवस शोधावा
पंडित लगन विप्र अस बोला * आजु लग्न नृप अहै अमोला
सुनि नरेश मन मैं परतीती * कीन्ह व्याह गन्धर्व कि रीती
बहुविधि दायज दीन्ह भुवाला * बड़ आनन्द भयो तेहिकाला

गी० छं० ॥

नृप कीन्ह सुता विवाह अति उत्साह नाहिं वरणत बनै ।
दियो दानबहुमहिसुरन कहँ गजबाजि पदरथ को गनै ॥
दिनदिनअधिकअधिकातसुख सुरगुरुसरिस बहुभातिहो ।
गुरुशरणके परताप ते रहि सकल संशय जातिहो ॥

दो० गुरु समान तिहुँलोकमें, और न दूसर देव ।
तातें शौनक कीजिये, गुरुचरणन की सेव ॥
दीप उडुप मणिचन्द्ररवि, पञ्चप्रकृति गुरु जानि ।
वैष्णवदीक्षा सर्वपर, मुनिवर कहत बखानि ॥
वैष्णव धर्मते परे जो, धर्म निरूपै कोय ।
सो सहस्र जयमान ते, सुजनन बाँदे सोय ॥

कु० अन्य सुराश्रय होइ तो, राममन्त्र फिरि देय ।
राममन्त्र युत जौन तेहि, अपर न देय न लेय ॥
अपर न देय न लेय, सोई पथ पाय बतावै ।
सतगुरु मानहि ताहि, ज्ञान जो जाते पावै ॥
कहत दास रघुनाथ ये, गुरू शिष्य दोउ धन्य ।
परै नरक महँ जाग जो, धर्म सिखावै अन्य ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगुरुमाहात्म्यकृष्णदत्तकथावर्णनोनाम
पञ्चमाऽध्याय ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपगिरासुखखानि ।
वर्णों नाम प्रभाव बहु, ग्रन्थनकर मतआनि ॥

पुनि शौनक बोले कर जोरी * ऋषि सुमन्तु पद प्रीति न थोरी
नाथ मोहिं निज सेवक जानी * नाम महातम कहौ बखानी

सुनि मुनि वचन सूत हरषाने * बोले विमल वचन सुखसाने
सुनो कहौं मैं नाम प्रभावा * जो गिरिजा प्रति शङ्कर गावा
एकबार शिव सहित भवानी * बैठे निज आश्रम सुखदानी
पतिहिं प्रसन्न देखि अधिकाई * बोलीं शिवा सनेह बढ़ाई
दो० मुहुरमुहुर तुम कहतहौ, रामनाम सुखदानि ।
तासु अर्थ करि कृपा प्रभु, मोसे कहौ बखानि ॥
धन्य प्रिया तुम जगतमें, कह्यो ईश हरषाइ ।
रामनाम के अर्थही, जो पूछेउ मनलाइ ॥
चारि वेद अरु षटसहस, सब पुराण मुनि देव ।
नामप्रभाव सो उग्रअति, ते नहिं जानत भेव ॥
रामनामको अर्थ जो, सो सब जान्यो राम ।
तासु अनुग्रह से कछुक, मैं पायों सुखधाम ॥
निजमति सरिस सुनहु मनलाई * नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई
कोटि कामसम जा तनु शोभा * अस को जो न देखि तेहि लोभा
जनक नगर जे नर अरु नारी * रमेदेखि तनु सुरति बिसारी
सप्तद्वीप के नृप जो आये * सहितविदेह सो देखि लोभाये
परशुराम बिन कारण कोही * रामरूप देखत गे मोही
बन विहरत खग मृग नर नारी * कोल किरात पात द्रुम डारी
रमे सकल मिलि सेवा ठानी * रमुक्रीडा तेहि कहत भवानी
घोरि निशाचरि लखि छवि रामा * पुनि इच्छा कीन्हेसि वशकामा
चौदह सहस असुर खरदूषण * मोहे देखि राम बिन भूषण
दो० दण्डकबन मुनि सर्व जे, ज्ञान योग तपधाम ।
रामरूप छवि देखिके, मे पूरुष ते वाम ॥
रमेहु बालि देखत रघुराया * अजरामर नहिं लीन्ही काया

रावण समर निशाचर जेते * देखि राम छवि मोहे तेते
अवध नगर नर नारि चराचर * रम्यो राम तनु देखि दिवाकर
रमुक्रीडा ताते तुम जानो * अब सो सुनो जो और बखानो
जलतरङ्ग जिमि रवि अरुधामा * कनक एक भूषण बहुनामा
गिराअर्थ जिमि अग्नि उष्णता * कहत भिन्न नहिं भिन्नसो अनता
तैसे नाम रूप द्वै भावा * यदपि नाम कर अधिक प्रभावा
दो० रूपमिलतनहिं नामबिन, नाम रूप बिन बादि ।
ताते दोऊ नित्य हैं, अमलअनूप अनादि ॥
रामबदन रा जानिये, आ तेहि उर पहिंचानि ।
मा मकार दोउ चरण भे, रेफ तेज चेतानि ॥
सो० कोटि भानुते भूरि, है प्रकाश यामें बिमल ।
रह्यो चराचर पूरि, परब्रह्म ताको कहत ॥
कोटि विष्णु अज ईश, कोटि शारदा शेश शशि ।
सुरपति कोटि फणीश, समप्रभाव जामें बिशद ॥
तीरथ कोटि अनन्त, नाम अधिक पावनकरन ।
हरणपाप श्रुति सन्त, कहत तदपि उपमा नहीं ॥
कह रवि कहँ खद्योत प्रकाशा * सम कि लहै मुख फूँक बताशा
उपमा नाम कि नाम न आना * गुह्यभेद सुनु करहुं बखाना
रामनाम अशाश ते जानो * तीनि सिद्धि भे प्रकट बखानो
सोहं बीज और ॐकारा * अर्ध अर्ध ते करब विचारा
अर्धाकार ते ऊ पहिंचानो * रेफ सो अन्तरभूत पिछानो
हल मकार ऊपर अनुस्वारा * ताते सिद्धि भई ॐकारा
यहिविधि सोहं बीज भवानी * नाम ते प्रकट मुक्तिकी दानी
दो० रामनाम ते प्रकट भईं, पटवस्तुईं जे और ।

तिनके नाम बखानहूँ, सुनु मन करि इकठौर ॥
परब्रह्म अरु जीव जो, महानाद स्वर चारि ।
प्रथम बिन्दु षष्ठ अवर, मायादिक्य निहारि ॥

परब्रह्म सो रेफते भयऊ * जीव रकार आदिते कह्यऊ
मध्याकार नाद सो कहिये * रा दीरघ ते स्वरको लहिये
हल मकार ते भा अनुस्वारा * अनुस्वार ते प्रणव विचारा
प्रणव ते भये तीन गुण जानो * सत रज तामस आदि बखानो
त्रैगुण ते त्रैदेव उपाये * ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये
तिनते भयो सकल ससारा * रमुक्रीडा तेहि करत उचारा

दो० नारायणको रूप करि, जो है प्रथम रकार ।
महाविष्णु आकार ते, महाशम्भु माकार ॥
रामनाम के भीतरे, ब्रह्म जीव त्रैलोक ।
ज्योतिलिबीज नक्षत्र नभ, नगरमाहिं गृहथोक ॥
रामनाम के ध्यान में, सृष्टि ध्यान होइजात ।
जिमि सींचे यक मूल के, डार पात हरियात ॥
रामनाम को छाडि के, करत जो अपरउपाय ।
मुखतजि भोजनभजैजिमि, सपनेहुँ छुधा न जाय ॥

रमुक्रीडा याते बुध कहई * अपर हेतु सुनिये जो अहई
परम याग-शुभ रेफ कहावै * परम विराग रकार बतावै
सो पावक के बीजहि लहिये * बड़वानल आदिक जो कहिये
अस विचारि जो नाम उचारै * कर्म शुभाशुभ सो सब जारै
परम ज्ञान विज्ञान जो कहई * ताको मूल अकार सो अहई
सो सूरज का बीज यही है * सुमिरत करत प्रकाश सही है
भक्तिस्वरूप मकार सोहावनि * चन्द्र बीज त्रैताप नशावनि

तीनकाण्ड रविशशि सवजाते * रमुक्रीडा कवि वरणत ताते
सत रकार चित जानु अकारा * आनदरूप मकार विचारा
सत कहिये जो विनशे नाहीं * चित चैतन्य सकल घटमाहीं
आनँद जो नित अहै अनन्दा * ताते नाम सचिदानन्दा
दो० ततपद ब्रह्म सो रेफ कहि, त्वम्पदजीव अकार ।
हलमकार मायाअमी, तत्वमसी श्रुतिसार ॥
हल मकार क्षर माया, अक्षर ब्रह्म अकार ।
रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि, सब व्यापक निरकार ॥
हलमा इच्छा प्रकृतिते, सकल शक्ति सजाय ।
रमुक्रीडा तेहि कहत अब, मुख्य नाम कहौं गाय ॥
कुं० विष्णु नरायण कृष्ण जो, वासुदेव हरि ब्रह्म ।
परमेश्वर परमातमा, विश्वम्भर निष्कर्म ॥
बिश्वम्भर निष्कर्म, कलानिधि कलुप हनन्ता ।
केशव कमलाकन्त, बिश्ववपु भव भगवन्ता ॥
औरो नाम अनेक जो, रटै त्यागि सुख शिष्णु ।
सुखदसकल पावनमहा, पहुँचावत पुरविष्णु ॥
सब नामन में रामनाम, परकाशक जिय जानु ।
जिमि नक्षत्रमहँ चन्द्रमा, अरु ग्रहगन में भानु ॥
अरु ग्रहगन में भानु, कबिन में यथा अनन्ता ।
निर्जर में जिमि शक्र, भक्तमें जिमि हनुमन्ता ॥
लोकन में गोलोक, सरित में सरयूधारा ।
नरनमाहिं जिमि भूप, धनुपधारिन में मारा ॥
भगवन्तन में राम, यथा शक्तिन में सीता ।
अद्रिन में जिमि मेरु, पुण्यपाठन में गीता ॥

कामधेनु गो माहि, अहिंसा धर्मनमा जिमि ।
वृक्षन में सुरवृक्ष, खगनमें बैनतेय तिमि ॥
क्षमनमाहिं जिमिक्षमा, सरनमें जिमिसरस्वान ।
कर्मन में हरिकर्म, ज्ञान में अध्यात्मा ॥
पुरिनमाहिंजिमिअवध, मन्त्रमें जिमि ॐकारा ।
रुद्रन में मैं यथा, स्वरनमें जिमिआकारा ॥
पुष्कर तीरथ माहि, मणिन में कौस्तुभ जैसे ।
सब नामन में राम, नाम तुम जानौ तैसे ॥
सुनिबोलीगिरिजाबहुरि, बरणो तिनके अर्थ अब ।
कहशिवसोऊसुनु प्रिया, बरणों नामसहेत सब ॥
नर जीवनकी संज्ञा मानौ * नर सब ताके आश्रित जानौ
तातें नाम नरायण कहिये * नर हियअयन जासुको लहिये
हरि दुख हरत भक्तके पापा * ताते हरि अस नाम सुथापा
वासुदेव सबमा बस जोई * सब जहं बसै वासुदेव सोई
केशव सो जेहितेहु सुर सेवैं * कला अंश अवतार जो लेवैं
पोषत भरत सकल संसारा * तासु विश्वम्भर नाम उचारा
पूरण जिमि सबजगतअकाशा * सर्वभिन्न निरगुण परकाशा
ताते ब्रह्म कहावत सोई * अनत अनन्त रूप जेहि होई
दो० कृषिभूवाचक शब्द जो, ताहि कहत हैं कृष्ण ।
सबमें व्यापक रहत नित, बिषणव्यापसो विष्णु ॥
सर्वैश्वर्य सुधर्म यश, श्री बिराग विज्ञान ।
षटभग जामें होइं ये तेहि कहिये भगवान ॥
राम नाम ते होत जो, सो काहू ते नाहिं ।
यह निश्चयकरिदेखियो, सकल पुराणन माहिं ॥

रामनाम निर्बर्ण है, सब बर्णन को ईश।
मुकुट छत्र ये जानिये, रेफ विन्दु सब शीश॥
राम नाममय सर्व है, नाम प्रकृति अरु वर्ण।
रसुक्रीडा ताते कहत, सुनहु अपर परिकर्ण॥
कोटितीर्थ व्रत दान तप, कोटि योग जप ध्यान।
कोटिज्ञान विज्ञान मख, तुलै न नाम समान॥
सप्तकोटि जो मन्त्र है, चित भरमावन काज।
रामनाम परमन्त्र है, सकल मन्त्र को राज॥

रामनाम जे जपैं सदाहीं * भुक्ति मुक्ति तेहि संशय नाहीं
मूर्ध गगन तहँ बसत रकारा * त्रिकुटी वास अकार विचारा
जिह्वावाम मकारहि जेई * निजनिजथल उच्चार सो होई
योगी अर्न रकारहि ध्यावै * अरु अकार ज्ञानिन मनभावै
पूरण नाम जपै हरिदासा * भुक्ति मुक्तिकी छाडै आसा
जैसे मन्त्र प्रयोग कहाने * तैस तैस साधे फल पावे
ते सब सिद्ध क्षिप्र होइ जाई * रामनाम सुमिरै मनलाई
जपे कौनविधि युक्ति बताओ * निजजन जानि न नाथ दुराओ
कहशिव सुनो प्रिया करिप्रीती * नाम जपनकी बरणों रीती
सतगुरुने जब पावै नामैं * करि बिश्वास रटै तजि कामैं

गी० छं० ॥

तजि काम क्रोध बिमत्सरालस लोभ मोह निवारिकै।
छल मल कुसंगति त्यागि मद दुरबासना सनमारिकै॥
शुचि अंग गो मन जीति नासा निरत नित नामैं रटै।
ह्वै जाय सो नर रामही को रूप भवबन्धन कटै॥

प्रीति अप्रीति रीति बिन जाने * कहत नाम सुख लहत सयाने

अमियगरलगद जलमलत्यागी * पारससम गुण कहत विरागी
अन्तर नाम जपत जो कोई * मुक्ति होत परिभक्तन सोई
रामरूप दरशन नहि पावैं * ताते जन रसना मन लावैं
रसना नाम रटन जो कोई * पराभक्त हरि दर्शन होई
रसना नाम रटेउ जिन जानो * तिन सबहिनके नाम बखानो

दो० लोमश नारद व्यास शुक, भृगु अगस्त्य प्रहलाद ।
गणिकायमन रायन्दद्विज, नामक जान्यो स्वाद ॥

काकभुशुण्डि नाम गति जोई * कल्पान्तो जेहि नाश न होई
वालमीकि ध्रुव सुमिरेउ नामा * पावन भयो लह्यो विश्रामा
नाम प्रसाद शेष महि लीन्हे * भुवन चारिदश रजसम कीन्हें
नामहिं बल मैं विषकियो पाना * वेदपुराण विदित जगजाना
सनकादिक गणपति हरिजाता * जीवनमुक्ति पूज्य सुखदाता
औरौ अमित भये हरिदासा * नाम सुमिरि गे प्रभु के पासा

सो० योगी ज्ञानी भक्त, जे सुकर्म करता सकल ।
राम नाम अनुरक्त, रसुक्रीडा ताके कहत ॥

सतयुग सत्य न झूठ बखानी * करि हरि ध्यान तरै भव प्रानी
त्रेता तप मख सयम करहीं * सुरबलि देइ जीव जग तरहीं
द्वापर व्रत पूजा आचारा * करि करि जीव होइ भवपारा
कलि नहिं तप व्रत सयम योगा * साधन कठिन देह बस रोगा
ताते निगम सुगम मगगावा * कलिभवसिन्धु नाम दृढ नावा
नाम प्रताप सकल युग जानू * कलिविशेष जिमि ग्रीषम भानू
अस विचारि ते नरवर ज्ञानी * जपहिंनाम ऋतुअनऋतुमानी
अन्नअशनतजि बनफलखाना * गजरथ बाजि देइ गोदाना

गी० छं० ॥

गो देइ कोटिन दान गिरि चढ़ि झांप ले तन जारहीं ।
सब कराहिं तीरथअटन ज्ञान पुराण वेद विचारहीं ॥
मख कोटि सुर तेंतीस राधै योग अष्टागहि करै ।
यक राम नाम जहाज बिन ससारसागर ना तरै ॥

दो० स्वैअनलशशिब्योमफल, तम रवि देइ मिटाय ।
बिन हरिभजन न भवतरै, करे जो कोटि उपाय ॥
गरुडै खाइ भुजगबर, घृत निकसै जलनीक ।
भजन बिना सुख ना लहै, यह पाथरकी लीक ॥
असविचारि रघुनाथ भजु, रामनाम मन ओर ।
जब होई तब होइहै, येहीते भल तोर ॥
सोइ ज्ञानी ध्यानी गुणी, दाता सूर सुजान ।
अतिपवित्र रघुनाथ सो, जो सुमिरै भगवान ॥
रामनामका अर्थ कछु, कह्यो बुद्धि अनुसार ।
नामप्रभाव अपार अति, को अस पावै पार ॥
शठ अशिष्य त्रिपपाठकी, तिन्हें न यह मत देइ ।
राम उपासक ते कही, जो सुनि उरधरि लेइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतनाममाहात्म्यवर्णनोनामषष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखखानि ।
कूरम कोल पुराण की, कहौं इतिहासबखानि ॥
कहशौनक हरिनामकहि, पतित तरे जग कौन ।
यह अभिलाषा सुननकी, कहौ नाथ तुम तौन ॥
बदेउ सूत हरिनाम कहि, तरिगे पतित अनेक ।

पार न पावै जो गनैं, सहस्र शारदा शेष ॥
जो कछु मम जाने सुने, गुणे पुराणन माहिं ।
सो तवहित वरणन करों, जो पूछेउ मोहिं पाहि ॥
बालमीकि गणिका गज जानौ * गमन केर इतिहास बखानौ
कीरतिमुख इक मुनिवर रहई * विपिनमध्य तनयोग न चहई
इकदिन स्वपने शुक्र विनासा * चावी धरि ऋषि चले उदासा
तेहिते बालमीकि मुनि भयऊ * ठगनि केरि सगति होइ गयऊ
तिनके साथ विपिन नित जाई * मारि जीव धन लेइ छिनाई
तब निधिसो जब भयो मयाना * तब वन लाग अकेलेहि जाना
ब्राह्मण वैश्य शूद्र जेहि पावै * प्रथम मारि तेहि वस्तु छिनावै
जो कोइ आपुइते धन देई * विनवध किहे कबहुँ नहिं लेई
दो० एक दिवस बड़ि देरभइ, मिला न कोऊ ताहि ।
तेहि मग निकसे सप्तऋषि, कहत नाम जो आहि ॥
कश्यप अत्रै जमदगिनि, विश्वामित्र वशिष्ठ ।
भरद्वाज गौतम कहे, नाम सप्तऋषि शिष्ठ ॥
इन्हैं देखि धावा हरषाई * बोला वचन मुनिनते जाई
पोथी पत्रा देहु उतारी * नाहित सवन डारिहौं मारी
जानि दुष्ट बोले मुनि ज्ञानी * सुनु ठग हम पूछत इक बानी
जो तुम पाप करत अतिभारी * तिनमा कोइ औरौ सन्भियारी
यह घर जाइ पूछिये बाता * आइ हमै फिरि कीजे घाता
कही विहँसि मैं बूझन जावों * तुमभाजिजाउ कहा पुनि पावों
तब मुनि सौंहै रामकी खाई * सुनि आवा घर देर न लाई
तात मात सुत बनिता भाई * पूछेसि सबका निकट बोलाई
मैं जो लूटि मारि धन लावौं * खातसकलमिलि भोग भोगावौं

जीव बधेकर पाप जो होई * तेहिमा सझियारी है कोई
सबहिन कहा पाप जो आहीं * ताके हम साथी हैं नाहीं
दो० अस सुनि सो डरपत भयो, गयो ससऋषि पास ।
हाथ जोरि चरणन परथो, करथो बचन परकास ॥
महाराज हौं शरण तुम्हारी * पतितजानि मोहिं लेहु उबारी
सुत पितु मातु बन्धु त्रिय नाती * हैं सब स्वारथ केर सँघाती
सकट परे काम नहिं आवैं * सबके सब जहँ तह भजिजावैं
अब लग मैं सबका निजजानी * करतरह्यों पातक सुख मानी
सो अघ समुझि लगतडरभारी * पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी
दीन जानि बोले सुखदाई * मरामरा कहि सुमिरेहु जाई
सुनिमुनि बचन हृदयधरिलीन्हा * मरामरा सोइ सुमिरण कीन्हा
तिसरे शब्द राम होइ गयऊ * बालमीकि कर कारज भयऊ
जाप करत भे पातक नाशा * निर्मल हृदय भयो परकाशा
दो० तबभविष्यसियरामयश, कह्यो कोटि शत गाइ ।
शौनक नाम प्रभावअस, मरा कहे गति पाइ ॥
और सुनो गणिका इक रहई * ताके पाप पार को लहई
अन्त समय लीन्हों यम घेरी * लगे देन तेहि त्रास घनेरी
तेही समय यक हरिजन आयो * देखि नायिका बिनय सुनायो
तुम हो दीनबन्धु सुखदाई * मोहिं सकटते लेहु छुडाई
सुनि साधू मन विस्मय कीन्हा * मन्त्र याहि नहिं चाहिय दीन्हा
जो याकर कल्याण न होई * तो प्रण जाइ हमारो खोई
बिना नाम भल होत न जानों * याहि कौनबिधि नाम बखानौं
दो० अस बिचारि साधू कह्यो, जग जो हिन्दूलोग ।
कीर पढावत कहौ सोइ, तब तव नाशै शोग ॥

सुनि गणिका यह राम्हो आही * अस कहते तन छूटा ताही
सुनतहि हरिगण आये धाई * यम फांसते लेत छुड़ाई
हितसे सुभग विमान चढ़ावा * रामधाम तहँ जाइ बसावा
ऐसे हैं राम नाम सुखदाई * अधम जाति गणिके गतिपाई
पुनहु एक गज अतिबलवाना * करन गयो सागर जलपाना
आइ गयो ताकर पग धाई * लैगा जल गहिरे ग्रासलाई
फिरि गज खैंच किनारे लावा * यहिविधि सो बहुकाल बितावा
गजके नात भ्रात सुत भामा * कछुदिन भोजन दीन्हों तामा
पाछे सबन त्यागि तेहि दीना * क्षुधा छीण भा बल ते हीना
कोउ सहायक जब नहिं देखा * जान्यो गा अब प्राण विशेखा
तब मोहि अर्ध नाम गोहरायो * गरुड़छांड़ि हरि तुरतहि धायो
आइ हति ग्राह लीन बचाई * सुनु मुनि अस दयालु रघुराई
तिन्हें छांड़ि जे आनै ध्यावैं * तजि सुरसरिजल कूप खनावैं
और सुनौ मैं कहौं बखानी * रह्यो मलेच्छ एक अघखानी
एक दिवस शुचि कहँ गयऊ * बाहर ग्राम सो बैठत भयऊ
पाछे ते शूकरसुत आवा * विट ऊपर मुख मारि गिरावा
कहा यमन मा ओ हारामा * अस संगत छूट्यो ता जामा
यमके दूत गहिन तेहि धाई * आइ गणन तब लीन छिड़ाई
कहा गणन लीन्हों यहि नामा * अब नहिं जाय तुम्हारे धामा
कह यमदूत हराम जो कीन्हा * सो यहि नाम सुवरका लीन्हा
हरिगण कह सक्टके मारे * हाइ राम अस कहेसि विचारे
दूत कहा चलि न्याव चुकाई * जाहि मिलैं सोई लैजाई
यहिविधि झगरत गे विधिपासा * बोले ब्रह्म जाहु कैलासा
तब चाले उमानाथ पहँ गयऊ * दोउमिलि हाल गुजारत भयऊ

दो० सुनतकहा शिवनामकर, न्याव न मोसों होइ ।
चलि वैकुण्ठ चुकाइये, श्रीपतिते कहि सोइ ॥
अस विचारि वैकुण्ठहि आये * समाचार सब हरिहि सुनाये
कह यमदूत चरण शिरनाई * इहुहै अति पापी अन्याई
मरत हराम कहेसि मुख येहीं * तात गण लै जान न देहीं
सो नियाय तुमते प्रभु होई * जो तुम कहौ करैं हम सोई
सुनत विष्णु मन कीन्ह विचारा * नाम प्रभाव अनन्त अपारा
बाले यमदूतो सुनि लीजे * याको इहैं रहन अब दीजे
सुनियमगण चलिभ खिसिपाई * हरषे शिव निरश्चि मुनिराई

गी० छ० ॥

हर्षे बिरञ्चि महेश शेश गणेश नारद आदिकैं ।
जहि हेतु मुनि तप करत योगी योग आसन साधिकैं ॥
नहि मिलत सो पद यमन कहि हाराम बिनश्रम पायहू ।
अस जानि नामै ना जपैं तिन बादि जन्म गॅवायहू ॥

दो० अस है नाम प्रभावजेहि, कहि न सकैं हरि आपु ।
ताते सन्तत कीजिये, रामनाम को जापु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतबाल्मीकिगजगणिका उद्धारवर्णनोनाम
सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं कथा भागवत की, अब इतिहास बखानि ॥
बोले मुनि कछु नाम प्रभावा * कहौं सुनो अब अपर सोहावा
कनउजतीर ग्राम इक अहई * अजामील द्विज तामें रहई
माता पिता नाम अस धारा * सो सब साच कीन्ह करतारा

पूर्वकर्म वश तजि निज नारी * वेश्या एक लिहिसि बैठारी
छुधापात्र ताके सँग कीन्हा * शौच सयान दूरि धरि दीन्हा
अजा मोल लै नीचन देई * चर्म नफा पर अपना लेई
अस पातक निशि वासर करई * हृदय नेक दाया नहिं धरई
प०छं०एकदिवस इक साधु, तासु नगरी महँ आयो ।
पूछेउ हरिजन धाम, सुनत दुष्टन बहँकायो ॥
अजामील घर जाहु, चहौ जो तुम विश्रामा ।
हरिजन जान्यो सांच, गयो चलि ताके धामा ॥
दो० गणिका लखि बूझे तुरत, अजामील सुनिपाइ ।
विनती करि फिरि लैगयो, आसन दीन बनाइ ॥
यद्यपि मैं यहि जन्म में, कुसंग अघयुत दीन ।
तदपि पाछिले जन्म महँ, पुण्य घनी कछुकीन ॥
सो० पुण्य पुञ्ज बिन नाथ मोको तव दर्शन कहां ।
जोपि मिलत कहुँ साथ, तौ नहिं होतो भाव उर ॥
अस कहि सीधा बिटते लायो * विविधभाति भोजन करवायो
ह्वै प्रसन्न बोल्यो हरिदासा * तव वनिता उर पुत्र निवासा
अबकी बेर जन्मत जब याहीं * धरो नाम नारायण ताहीं
नारायण जो धरिहौ नामा * तौ नहिं जैहौ यम के धामा
प०छं०असकहि हरिजन गयो, भयो जब बालक जानी ।
धरयो नरायण नाम, बचन वैष्णव को मानी ॥
तासों राखै नेह, नेकु नहिं न्यारा करई ।
मोहवश्य भा अन्ध, मृत्यु ते नाहीं डरई ॥
दो० यहि भातिन कछु कालगो, अन्तसमय की बार ।
लेन चले यमदूत बहु, आये तासु अगार ॥

महाभयानक रूप निहारी * अजामील डर्‌यो अतिभारी
मुद्गर मारि डारि गर फासा * काढत जीव चले उधश्वासा
निकसत प्राण भई अति पीरा * रही न तनुकी सुद्धि शरीरा
कष्टघेरि यमगण इक लयऊ * मुखसे बचन बोलि नहिं गयऊ
दो० तबसोइसुतकी यादिकरि, कह्यो बचन हरुवाय ।
कहां नरायण पुत्र मम, तेहिमोहिदेउदिखाय ॥
नाम लेत हरि हृदय बिचारा * दुखकी बश कहुँ मोहिं पुकारा
मोर नाम जे जग में लेहीं * तेहि कि कष्ट यमकिंकर देहीं
सवैया ॥
तुरतैहरिबोलिकह्योगणते केहुनामलियोतेहिवेगियचावो ।
फासछोड़ाइचढ़ाइ बिमान बजाइनिशानमेरे ढिग लावो ॥
आयसुपाइ गये द्विज धाम बिलोकिकै दूतसबै दुखपावो ।
बोलिउठेतबहीं गणते केहि कारण भौनघुसे तुम आवो ॥
इतना सुनि उत्तर गण दीन्हा * इहा रहत हरिजन हम चीन्हा
तासु फास काटन के हेता * ताते पठइनि कृपानिकेता
सुनि यमदूतन कहा रिसाई * तुमतौ गणौ बडे अन्याई
याकीसम नहिं दूसर पापी * ताको तुम हरिजन करि थापी
न्यायनिमास किहिसिमदपाना * अनजानहि लेचल्यो बिमाना
सुनहु गणौ जे आमिष खाहीं * तेहिसम और पाप नहिं आहीं
याकर दोष मोन कछु होई * कृष्ण कह्यो पारथसे सोई
पशु हते जो रोम शरीरा * तितने वर्ष नरक मह पीरा
आठ जो हिंसाके गृह जानो * सो भाग्न मे सालि बखानो
जीव बधन इक आज्ञा देई * दूजो मारे मै गहि लेई
चौथे सुनो सवारन हारा * पचरा बेचनहार निहारा

छठा रसोई जौन चढावै * सतवां सो जो परसि जिमावै
अठवां खानहार जो होई * परैं नरक महँ आठो सोई
दो० मोल मँगावै घर हते, ताहि द्रव्य दे कोउ ।
सुखसम्पति सब नाशही, मोक्ष लहै नहि सोउ ॥
द्विज ह्वै के मदिरा जो खाई * देव तुरुककर पूजे जाई
वारमुखी जो गरे लगावै * कुलका धर्म सकल घटिजावै
तेहि द्विजकी पूजा जो करई * पुण्य जाइ घटि अघ शिर परई
यामें नहिं हम झूंठ बखाना * धर्मशास्त्र में यह परमाना
तेहिते अब ऐसी जनि कीजै * याहि नरक लैजाने दीजै
अस पापी जो हरिपुर जाई * नरकहि तेहि हम डारब भाई
सवैया ॥
बोले तबै गण दूतनते तुम नामप्रभाव न जानत भाई ।
गो द्विज पापकरै नर जो अपने करते मधुलेइ छोडाई ॥
चोरी करै वटपारी करै गुरुतल्प धरै पग आमिष खाई ।
औरहु पापकरै बहु जो हरिनामलिहे सबही जरिजाई ॥
दो० गणिका यमन गयन्दसे, वालमीकि अघखानि ।
नाम कहत सब तरिगये, कहँलगिकहौं बखानि ॥
कोटि गऊ जो देवे दाना * ग्रहण करै काशी अस्नाना
मकर प्रयाग बसै जो जाई * यज्ञ करै दश सहस सोहाई
गिरि सम हेमदान कर कोई * राम नामसम तुलै न सोई
यथा धेनुक मुद्रा जग माहीं * हैं सब एक पदिक सम नाहीं
वस्तु अमोल यथामति कहहीं * जिनजानाजस तसफल लहहीं
सकलहि परिहास जो करई * राम नाम सुमिरत अघ हरई
अस हरिनाम प्रकट जग माहीं * शेश महेश रटतहैं जाहीं

सोई नाम याते कहि आवा * याकी सम को भक्त कहावा
कह यमदूत सुनहु गण जेता * कस यहिं कीन रामते हेता
यह तौ पुत्र नाम कहि टेरा * ताते हम दियो दुख घनेरा
जो यह लेत रामकर नामा * तो हमते याते का कामा
कहगण हरिजन जो कहिगयऊ * ताके वचन मानि यहि लयऊ
करि उपदेश सन्त दिय नामा * ताते भक्त भयो यह रामा
चारौ युग श्रीशारँगपानी * साखी करि आये जन बानी
यहिविधि दूतन कहि समुझाई * लीन्हो ताहि विमान चढाई
रामधाम लैगे यहि भाती * यमकिंकर चलिभे खिसियाती

हरिगीतिका छन्द ॥

खिसियाहि चलिभे दूत यमके देखि महिमा नामकी ।
अस अधम पापी खल सुरापी निर्दयी हरि वामकी ॥
सो अन्त समय पुकारि सुत को नाम हरिपुरका गयो ।
अस राम नाम प्रभाव सुनि अतिहर्ष शौनकके भयो ॥

दो० नारायण इति नाम कहि, अजामील भो पार ।
ताते सन्तत कीजियो, राम नाम उच्चार ॥
सुत वनिता धन धाम जो, सब इहनै रहि जाइ ।
नरक स्वर्ग यमलोक मे, नामै होत सहाइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतअजामीलप्रसङ्गवर्णनोनामाष्टमोऽध्याय ॥८॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
धर्मदूत संवाद अब कहौंअसकन्दबखानि ॥
सो० कह शौनक हरषाइ, अजामील जब ना मिल्यो ।
दूत धर्मढिग जाइ, कहा कहिन सो बरणिये ॥

कहा, दूत यमदूत रिसाई * धर्मराज पहँ पहुचे जाई
दुरड, फांस सब दीन्हो डारी * देखो रविसुत दशा हमारी
जाहि अधम पापी हम चीन्हा * तेहि तर्वाढ़गलानन मनकीन्हा
अन्तसमय सुत नाम पुकारा * तुरंत हरिगण ताहि उवारा
लीन्हेनि बहुरि विमान चढाई * रामधाम तहँ राखेनि जाई
असे अनरीति न हमैं सोहाई * ताते तब ढिग आयन साई
दो० दण्डफांस लीजै अपनि, कह्यो सबन शिरनाइ।
दूतकर्म नहि करब अब, अस कहिचले रिसाइ ॥
रिसइ जानि यमराज बोलाये * करि सनमान निकट बैठाये
कह धर्म दूत सुनो मम बाता * है हरिनाम सकल सुखदाता
ससकार जो अवकर आही * सूक्षमरूप कहत मुनि ताही
सो नहि नशे तपादिक कीन्हे * यतन अनेक दानविधि दीन्हे
सो वह सूक्षम अघ को मूला * सुकृत नाम नाशत सब शूला
ताते ताके अघ, सब नाशे * जिमि तम सहजै भानु प्रकाशे
जो जन लेइ रामकर नामा * तेहिते तुमते, है का कामा
तिनके निकट न जायो भाई * देखि दूरिते दिह्यो बराई
सुनत दूत कह, जगके माहीं * नाम एक बरलेत को नाहीं
जो उनके ढिग जान न पाई * तो मृत्युलोक करब का जाई
कह रविसुत दूतो सुनि लेहू * मैं जो भूत तामे मन देहू
राम कहत जो नर जगमाहीं * सो व्यवहार नेह कछु नाहीं
गुरु ते राम नाम जिन पावा, * करि बिश्वास सो हृदयबसावा
जो कोइ कोटिन करै उपाई * मारै त्रासे लोभ दिखाई
तदपि राम तजि अन्त न ध्यावे * सो हमरे लोकै नहिं आवे
अस हरिभक्त बिलोक्यो जबही * कर्यो प्रणाम, दूरते तबही

साकट कह्‌ तुम धरि लेआवो * नरक डारि सबकर्म भोगावो
बाले दूत जोरि युग पानी * इक सशय हमरे उर आनी
पाचतत्त्व की सब की देही * किमि जानब ये राम सनेही
भक्तनकेर चिह्न कहौ गाई * जाते हम उन ढिग नहिं जाई
बहुरि कहौ साकट कर भेदा * जिन्हैं लाय देई बहु खेदा
कह रवितनय सुनौ रे भाई * भक्तचिह्न मैं कहौं बुझाई
कण्ठविषे तुलसी की माला * मस्तकमें दिय तिलक बिशाला
शङ्ख चक्र भुजमूल सोहाये * भुवनपवित्रकरण भुवि आये
हरि की कथा सुनैं हरषाई * राम नाम सुमिरैं मन लाई
जीवबधन हित अस्त्र न धरहीं * देखत दीन दया अतिकरहीं
क्षमा शील सतोषै गहहीं * बाल वृद्ध सबके प्रिय रहहीं
मन क्रम काहू दु ख न देवैं * अति उदार सन्तनकहे सेवैं
अस हरिभक्त हरीसम जान्यो * यामें रञ्चक भेद न आन्यो

दो० जो कदापि भक्तन विषे, कछुक दोष दरशाइ ।
तथा देहकृत मानिये, भक्तन परसै नाइ ॥
भक्तदोष प्राकृत नहीं, तिन्हैं न बाधक होइ ।
औरनको पावन करन, सद समर्थ है सोइ ॥

ताको यह दृष्टात विचारो * सो सुनिकै सदेह निवारो
जो गङ्गा मे फेणु दिखावे * तौ का गङ्गप्रभाव मिटावे
ब्रह्मद्रव जगमगत जहाहीं * हरत ब्रह्महत्या क्षणमाहीं
तैसे सन्त गोविन्द पियारे * सब दोषनको भञ्जनहारे
ताते तुम्हे कहौं समुझाई * भक्तन ढिग जनि जायो भाई

दो० भक्तन के लक्षण कहे, कछु सक्षेप बखानि ।
अब साकट बर्णन करौं, सोउ लेहु तुम जानि ॥

साकट जेहि हरिभक्ति न भावै * साधनलखि मन क्रोध बढावै
साकट पर छल निन्दा करई * परसुख देखि बिनानल जरई
साकट सो हिंसारत रहई * तजै सुपन्थ कुपन्थै गहई
साकट जो परद्रव्य चोरावै * परअपकार सदा मन भावै
साकट सो भोगै परदारा * करै अकारण क्रोध अपारा
जिव बदले जो जीव मरावै * साकट मास बिराना खावै
गुरु पितु मातु वचन नहिं मानै * साकट औरनका दुख ठानै
इमि नर विमुख रामते आहीं * डारहु आनि नरकके माहीं
दो० कौन कर्म करि लहत नर, नरक स्वर्ग में बास।
सो हमते बर्णन करौ, जानि आपने दास॥
कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा * परत नरक महँ कहौं सुमर्मा
हिंसाकरै वचन कटु भाखै * सुनै वेद परतीत न राखै
दै विश्वासघात जो करई * प्राणी सोइ नरक महँ परई
देव बिप्र सन्तन दुखदाई * पर निन्दा करै अपन बडाई
बिनासमय भोगै जो नारी * परत नरक मद मास अहारी
रजस्वला तिय गर्भिणि होई * तासों रमण करै जो कोई
बिप्रै न्यवति बहुरि नहि देवै * सो नर नरक बास को लेवै
शूद्र भील श्वपचाधम कोई * भगवद्भक्ति परायण होई
तिन्हैं जानिकै करै जो तर्का * मन्दबुद्धि सो भोगै नर्का
जे निज देह माफ अभिमानी * आतम बुद्धि लखै अज्ञानी
हरि कलत्र अपना करि मानै * प्रतिमामात्र देव करि जानै
सलिलमात्र तीरथ जिन जाना * सन्तन मे कछु भाव न आना
ते गोखर सम जानो प्रानी * परत नरक महँ वाचक ज्ञानी
अर्चै बिष्णु शिलाकरि मानैं * श्रीगुरुदेवै नरकरि जानैं

वैष्णवकी जो जाति विचारै * अन्यदेव सम विष्णुहिं धारै
हरि हरिजन चरणोदक होई * तीर्थबुद्धिकरि मान सोई
राम नाम मन्त्रन सम धरई * सो नर घोर नरकमहँ परई
गोशाला अरु ग्राम जरावै * धूत चौर्य परत्रिय मन लावै
देखे बिना दोषदे शीशा * नरक परै सो निरंजनीशा
तीरथ देव गऊ अस्थाना * मध्यगली धर्मशाला जाना
जाय मैल विष्ठा जो करई * जीव बधै सो तन में परई
पूजै नाहिं सत घर लाई * और रोगिन मन क्रोध बढ़ाई
रोत्र गुरूते बात चोरावै * हरियशनाजि नरर्वाराति गावै
भक्तन को यश कभू न कहई * रामभक्त ते विमुखहि रहई
पर अवगुण जो करै उघारा * ते शठ भुगतैं नरक अपारा
नारी जो निजपति धिक्कारै * आन पुरुषको गले लगावै
पतिते बोलै वचन कठोरा * रामते विमुख धर्म मूल मोरा
अस तिय परै नरक के माहीं * यामें कछु संशय है नाहीं
पाप कर्म सबते तम होई * ऊँच नीच चाहै करै कोई

दो० नरक परत जेहि कर्म करि, सो मैं कह्यों बखानि।
स्वर्ग मिले सो कहत अब, दूत लिख्यो तुम जानि॥

श्रद्धासहित करैं जे दाना * पूजैं उत्तम विप्र सुजाना
होम यज्ञ तीरथ व्रत करहीं * जप तप गायत्री मन धरहीं
पर उपकार सदा मन भावै * द्वारे अतिथि विमुख नहिं जावै
बोलैं वचन सबन सुखदाई * ते नर बसैं स्वर्ग महँ जाई

१—ॐकार पितृरूपेण गायत्रीमातर तथा।
पितरौ यो न जानाति स विप्रस्त्वन्यरेतज॥

काहूकर बुरा नहिं चहहीं * रक्षा करत जीवकी रहहीं
मान-परावो गिरन न देहीं * सत्य बचन इन्द्री गहि लेहीं
वैष्णव देखि करैं परनामा * रजकण जितने लागैं धामा
तितने शत मन्वन्तर माहीं * बसैं स्वर्ग कहि आगम जाहीं
नारी पतिव्रता जो होई * धर्मवान कोमलचित सोई
पति कुष्ठी दारिद्री जानो * रोगी कृपण अन्ध पहिचानो
कामी क्रोधी कैसो होई * नारि ईश सम मानै सोई
पति के संग सती होइ जावै * सो तिय सत्य स्वर्गसुख पावै
सो० आश्रम-धर्म दृढ होइ, बिहँग कपोता का सरिस ।
बसै स्वर्गमहँ सोइ, बहुत काललगि जानियो ॥
इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतयमदूतसवादवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ॥९॥
दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं इतिहाससमुच्च को, अबइतिहासबखानि ॥
सुनत दूत अस पूंछ लीन्हा * बिहँग कपोत धर्म क्या कीन्हा
सोउ नाथ अब कहो बखानी * जाइ गृह आश्रम जेहि जानी
कह धर्म सुनहु दूत मनलाई * बदौं कथा सुन्दर सुखदाई
वधिक एक अति निर्दय रहई * बिपिन जाइ जावन कहँ गहई
निशिदिन नीच जीव सहारै * पाप दोष नहिं हृदय बिचारै
एकदिवस यक बनाइ सिधावा * तामें जीव न एकहु पावा
उत्तर दिशिते आंधी आई * भया अँधेर न सूझै राई
गरज्यो मेघ प्रलय की नाई * भाग्यो सुनत पन्थ नहिं पाई
वृष्टिहोन पुनि अतिशय लागी * पाथर परत सबै छाधि भागी
जहाँ तहाँ जल बहै घनेरा * पाव न अड बिपतिने घेरा

माघ मास कांपै सब देहा * सहै त्रास करि करम सनेहा
क्षुधा सतावै ज्यों ज्यों तनको * होवै पीर अधिकही मनको
पवन जोर ते पक्षी जानो * गिरि गिरिपरे वृक्षतर मानो
दामिनि चमक कपोती देखी * धाइबधिक तेहि गह्यो विशेखी
दो० आपु कालके गाल में, सो न विचारयो अन्ध।
वाहि पींजरा माहिं करि, चलतभयो मतिमन्द॥
शोचत सुमन कपोती सोई * मम पति आजु अकेलो होई
मन्दिर तिनकर जह रहावा * तेहि द्रुमतरे बधिक सोइ आवा
छाया ताकी सघन निहारी * बैठा समिटि सुपास बिचारी
शीत क्षुधावर बोलि न जावै * काठ सरिस तनभा दुख पावै
ताही समय कपोत सा आयो * प्यारी बाम धाम नहिं पायो
दो० मोते पहले आवती, नित्य बधू गृह माहिं।
आजुरही कहँ प्राणप्रिय, कछू कुशल है नाहिं॥
असबिचारि मनशोचन लाग्यो * मोह प्रबल हिरदयमहँ जाग्यो
मैं जु अकेल रह्यों घर माहीं * बिन बनिता जीवन कछु नाहीं
नारि पुरुषते अन्तर परई * धिकतेहिनरहि जो गृहमनधरई
आश्रमकी शोभा त्रिय जानो * बनिता बिना वृथा सुख मानो
नित तित दृष्टि कपोतहिं फेरी * देखी बधू पांजरे गेरी
बिस्मय कीन्ह कपोती जबहीं * बोल्यो बचन बिकलह्वै तबहीं
अ ो प्रिया अब मैं का करिहौं * तुमबिनु प्राण त्यागिकै मरिहौं
पतिको बिकल कपोती जानी * बोली बचन धर्म नय सानी
हे पति त्यागो शोच सनेहा * दु ख मूल जानो जग गेहा
मिलनबियोग दु खसुख साथा * ताते शोच करिय जनि नाथा
देखो तुम बिचारि मन माहीं * जगमें कोउ काहू कर नाहीं

धाम वाम तन धन सुत भाई * एक दिवस सबही छुटि जाई
जो कछु धर्माधर्म कमावै * अन्त समय सो संग सिधावै
अधर्म करे भरै यम त्रासा * धर्म ते लहै अमरपुर वासा
ताते धर्म करो मन लाई * याते लोक अलोक भलाई
बधिक आश्रम तुम्हरे आयो * याको पूजि करो मनभायो
पति मति वैरी याको जानो * बैठो शरण तुम्हारी मानो
विपति परे जो करे सहाहीं * होय तासु यश त्रिभुवनमाहीं
घर आये सत्कार न करई * नाशै पुण्य पाप शिर परई
धनि वह गेह कुटुँब परिवारा * जाते होवे पर उपकारा
ताते याकी सेवा करहू * गृहस्थ धर्म सो हिरदे धरहू
करो धर्म जनि देर लगावो * फिरि ऐसो अवसर नहिं पावो

दो० सुनत कपोती के बचन, कीन कपोत विचार ।
मैं पक्षी मानुष्य यह, किमि पोषों यहि बार ॥
अस कहि उतस्यो वृक्षते, गयो बधिकके पास ।
सन्मुख ह्वै श्रद्धा सहित, कीन्हों बचन प्रकास ॥
मोको आज्ञादेहु कछु, सोइ करौं यहि बार ।
धन्य भाग मेरे प्रभू, जो तुम आये द्वार ॥

सुनि किरात बोला असि बानी * कहो कपोत सुनहु सुखदानी
मोको शीत सतावै भारी * सो काहू विधि देहु निवारी
तब कपोत चढ़ि चहुँदिशि देखी * बरत बृहद इक पुर में पेखी
विहँग चाव करि पहुंचो जाई * जरत सामिध गहिलायो धाई
झांझ उजारि भूमि मे डारी * तामें अग्नि दई परजारी
औरौ पात सूख तरु केरे * चुनि चुनि लाइ अग्निमहं गेरे
ताप्यो बधिक शीतभयो नाशा * चेतनु ह्वै पुनि वचन प्रकाशा

दो० पर उपकारी बिहँग तैं, शीत निवारे मोर।
अब कछु भोजन दीजिये, क्षुधा सतावै घोर॥
सुनि कपोत मन कीन विचारा * धिक है पशु पक्षी अवतारा
चरिचुनिके निजु पेटहि भरहीं * पर उपकार कौन विधि करहीं
धनि वै मनुष बहुत सुख डारैं * धिक हम आपन उदर पसारैं
भयो कपोत खेद उर भारी * विनवित गृहको वसव उजारी
भुवन कूप कृमि कुटुंबविलासा * होइ पाप जन जाइ निरासा
रुदन कपोत कियो बहुतेरो * केहिविधि हरौं दुःख यहिकेरो
शोचतही मन कीन विचारा * श्रयविधिते चहि परउपकारा
धर्म सधै तो करौं उपाई * हर्षि बधिकते बोल्यो जाई
धीरज धरो अतिथि मनमाहीं * देत अहार देर अब नाहीं
दो० करि परिकमा अग्नि को, कूदि पर्यो तात्रीच।
यह सब कौतुक देखिकै, बधिक कियो शिरनीच॥
सो० पूरब पुण्य प्रताप, उदय भयो वैराग तेहि।
लाग्यो करन कलाप, मोसममन्द न बुद्धिकोउ॥
धन्य धन्य पक्षी तन तेरो * धिक जीवन मम मानुष केरो
नरतन लहि का कीन्ह कमाई * पाप करत सब बयस गँवाई
कबहू कछू सुकृत नहिं कीन्हों * नहिं काहूकर दुख हरिलीन्हों
धिक धिक मोकों बारहिबारा * धनि विहग जेहि धर्म विचारा
मैं जो किये अति पातक भारी * अब तप करि सब देहों जारी
अस कहि डारयो जालहि फारी * तुरत विहंगिनि दीन निकारी
दो० छूटि कपोती फन्द सों, ऐसे करत विचार।
पति बिन जीवन नारिको, जगमें वृथा निहार॥
यों कहि गिरी अग्निमहँ सोई * भई सती साचो यह जोई

मध्य अग्नि महँ दीख बिमाना * पति तावीच बैठ जिमि भाना
बिहँगिनिको तनुपलटि जो गयऊ * ताहू केर दिव्य बपु भयऊ
पति लखि भेंट्यो गरे लगाई * गयो दुःख सन्ताप नशाई
रखक दुख कीन्हों धर्महेता * सुख जो भयो गनै को तेता
ताते धर्म कीजिये भाई * यामें जनि रहिये कदराई
नारि पुरुष दोउ चढ़े विमाना * गगण तें उड़े मगन मन जाना
जय जय देव किहिनि हरषाई * सत्यलोक तहँ राखेनि जाई
दो० प्रवरा प्रवरी की कथा, भई कही मैं सोय।
बधिकहाल बरणों बहुरि, सुनि राखो हिय जोय॥
बधिक बिपिन तपकीन्हो भारी * मगन ध्यान तनसुरति बिसारी
इकदिन अग्नि लगी चहुँपासा * बधिक देह जरिबरि भइ नासा
अघ जो रहे जरे तन संगा * बधिक सो राच्यो हरिके रंगा
दिव्य बिमान पारषद लायो * तापर चढिकर स्वर्ग सिधायो
कपटी कुटिल कीर अघधामा * सज्जन संग लहो बिश्रामा
गृहस्थ धर्म जस तस यह गावा * सुनि दूतन अतिशयसुख पावा
कह यमचरण चार शिरनाई * अब हम मृत्युलोक कहँ जाई
कौने ठौर जाइ हम रहिये * कहा न जाइँ कृपाकरि कहिये
बोले यम जो पूछेउ आई * तुमहिं देहुँ अस्थान बताई
जे नर हरि पूजन मन धरहीं * लै चरणोदक भोजन करहीं
कथा सुनैं हरि कीरति गावैं * ठाकुरद्वारे में नित जावैं
कुटुँब सहित गुरु साधुन सेवैं * क्षुधित देखि तेहि भोजन देवैं
दो० हरि गुरुदासन ते रहे, सांचो निश्छल जौन।
तिनके दिग जनि जायहू, दिखो त्यागि ये भौन॥
पिता अवज्ञा पुत्र न करहीं * द्वारे अतिथि निमुखनहिं फिरहीं

यज्ञ होम करि विप्र जिमावैं * सन्तनकी सगनि चलि गावैं
वेद बचन राखैं विश्वासा * इतने ठौर तुम्हार न वासा
अस अस धाम त्यागि तुम देहू * बसो जहां सोऊ सुनि लेहू
जहा न कथा राम की होई * हरिकी भक्ति न जानै कोई
पुत्र न मानै पितु की सीखा * जेहि घर लहै न भिक्षुक भीखा
कण्टक वृक्ष होइ जेहि धामा * तहां जाइ तुम करो मुकामा
जिवहिंसा जाके घर होई * मदिरा मांस मीन भख जोई
हरि तजि पूजे भूत पिशाचा * वेश्यारत कह सत्य न वाचा
अस नर जहँ तहँ बसिये जाई * मरे नरक महँ डारो लाई
सूने भवन दीप नहि बरई * गणिका आय नृत्य जहँ करई
गृह जूठनि जारा लपटाना * पर्व परे नहिं देवैं दाना
सुना पराई घरमा आवे * रहै निरादर दुख जहँ पावे
पर्व परे भोगें जो नारी * बसहु जाइ अस भवन विचारी
बासी अन्न जो दिनप्रति खावै * जेहि गृह सन्त न आदर पावै
कलह होइ जह साझ सकारे * साधु विप्र जे करैं दुखारे
बिना दीप निशि भोजन खाहीं * बसहु दूत तिनके घर माहीं
दो० मातु पिता कहँ देहिं दुख, करैं कहै जो बाम।
तहां बसो तुम जाइके, जे न भजहिं सियराम॥
आपु भक्त घर साकट नारी * सुत कलत्र सब मांस अहारी
तिनका छुआ जो भोजन खाई * भक्ति धर्म सबही घटिजाई
अवशि बसो तिनके गृह शोधी * जे सतगुरु ते भये विरोधी
छोरे केश रहैं जो नारी * बहू सासु से लडैं प्रचारी
मरघट चारि पन्थ जो होई * अजयापुत्र रहैं जहं सोई
ये अस्थान कहे मैं बरणी * औरो लेहु जानि लखि करणी

धर्मराज के वचन सुहाये * सुनि यमदूतन के मनभाय

गी० छं० ॥

भयो सुनत यमदूतपुर रविपूत जो वर्णन कियो।
उठि नाइशिर मनमुदितह्वै सबफांस मुद्गर करलियो ॥
यह दूत यम संवाद वर्णौ सुनै जे अरु गाइहैं।
तेहि भूत अपर पिशाच यमके दूत नाहि सताइहैं ॥

दो० लक्षण धर्माधर्म के, ऊंच नीच जे आहिं।
जनरघुनाथविचारि कछु, लिखे ग्रन्थके माहिं ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहिकृतगृहधर्मयमदूतकथावर्णनोनाम
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
नाशकेत भारत्थ की, कहौंइतिहास बखानि ॥
धर्मराज निजगणन ते, बोले निकट बुलाय।
गङ्गयमुन के बीच इक, द्विज तेहि लावहुजाय ॥

जामु गिरि ढिग बस्ती आही * तामें विप्र रहत है वाही
नाम शालमलि ताको जानौ * गोत्र अगस्त्यकेर पहिचानौ
पूरण आयु भई सब ताकी * लावहु वेगि नहीं अब बाकी
सुनि यमदूत सकल हरषाने * निजनिज वाहन सबन पलाने
कोइ कूकर शूकर पर कोई * करमें गुर्ज भयानक सोई
कोई चले महिष चढ़ि बीरा * बडबडे दशनलिहे धनु तीरा
कोइ खरपर आरूढ़ पिछाना * कारी देह सुमेर समाना
कोइ मुरदा पर किहे सवारी * ठाढ़े केश गदा करधारी
कोई सिंह चित्ता चढि धाये * लोहित लोचन भौंह चढाय

कोर बसहा पर आसन कीन्हं * फांसी अरु मुद्गर कर लीन्हें
यहिभाँतिन यमदूत सिधाये * वमन विप्र जहं तेहि पुर आये

सो० सोइ गोत्र सोइ नाम, दूसर द्विज तामें रहत।
यम घुसिगे तेहिधाम, डारि फांस आसन लगे॥

दो० उभै घरी के वीचमहँ, मारिलिहिनिद्विजसोइ।
मुसक बांधि लेचलतभे, रहे कुटुम्बी रोइ॥
तात मात सुत भ्रात तन ग्राम धाम धन जोइ।
सब जहँ के तहँई रहे, संग चल्यो नहिं कोइ॥

भूसुर कहँ आगे करि लीन्हा * यमपुर ओर पयाना कीन्हा
मृत्युलोक ते यमपुर जानो * सहसछियासी योजन मानो
आठ ठौर तेहि मारग माहीं * अतिशयकष्ट होत सुन नाहीं
प्रथमै दुइ सहस मग जोई * तामें दुख सुख कछु नहिं होई
एक सहस योजन तेहि आगे * सिंह बहुत लखि अतिभै लागे
जे बैठे सा उनके माहीं * तिन्हैं दुख तहँ व्यापै नाहीं
योजन पांच सहस अस होई * कांटे परत लोह सम सोई
पायन में सो चुभि चुभि जावैं * तामें प्राणी बहु दुख पावैं
गज रथ बाजि पालकी दीन्हा * ते नर तेहि चढि जाते चीन्हा
उभै सहस योजन यहि भांती * बारु तपत रहत अति ताती
सुवर्णदान दिहिनि जिनलोगा * तिनका तहां न व्यापै सोगा
योजन द्वादश सहस अगारा * परत विषम खाड़े की धारा
रथ कर दान काम तहं आवै * नाहित नर अतिशै दुख पावै
आगे योजन आठ हजारा * मिलत तहां जल गाहिर अपारा
मही दान दीन्हें सुख पावै * उतरत पायन में छुइ जावै
योजन तीस अगारू जाई * अन्धकार तहँ अति दुखदाई

दीप दान तहँ कामे आवै * ठाकुरद्वारे जौन बरावै
की ब्राह्मणघर की मग माहीं * साधुभवन की तुलसी पाहीं
तीरथ माहिं कथाके नेरे * बारि दीप ते जाहिं उजेरे
सो० आगे योजन आठ, महाभयानक मग मिलत ।
चढ़ा उतरके बाट, होत तहां प्राणी बिकल ॥
दो० तेहि के आगे मिलत है, योजन सहस अठार ।
तपतभानु भृश शीशपर, तहँ अतितुदन अपार ॥
तेहि मारग में सो सुख पावै * कुवा बावलो ताल खोदावै
की पौसारा दीन बैठाई * की ठाकुरद्वारे पहुंचाई
अरु मारग में वृक्ष लगावै * ऐसा दान काम तहँ आवै
सहस छियासी योजन येही * पृथक पृथक देख्यो द्विज तेही
आगे जाय यमपुरी तीरा * दखी तहँ यक नदी गँभीरा
नाम तासु बैतरणी आही * मज्जा रुधिर भरा तेहिमाही
गोजर बीछि सर्प अरु कीरा * उतरत पापी पावहिं पीरा
सौयोजन की चाकल सोई * देखत प्राण विकल तहँ होई
जो अपने स्वामी को मारै * कन्या कामिनि द्विज संहारै
जीव बंध अरु सबै सतावै * पुर जङ्गल महँ आगि लगावै
तिन्हें प्यास तहँ लागे भाई * रक्त पीब सोइ पावैं जाई
दो० आमिष अहारी मद पिया, ज्वारी चोर कसाय ।
बटपारी जो पातकी, दुखपावत अधिकाय ॥
कोउ उछरत बूड़त कोऊ, लहरि सङ्ग बहिजात ।
काहू बीछी सर्प बहु, कीड़ा नोचे खात ॥
सो० जो कोउ पापी होय, ताहि रुधिर की लखिपरै ।
पुण्यवान कहँ सोय, देखिपरै घृत क्षीर की ॥

छं० होम यज्ञ व्रत कीन दान जिन सबको दानी ।
पूजे द्विज त्रिपुरारि किये तीरथ असनानी ॥
पुरटदान पटदान तुला गज बाजि जो दीन्हीं ।
आज्य मिठाई क्षीर दही पोथी दल कीन्हीं ॥
सन्तचरणमें प्रीति जिन गुरुद्विज सिमजानि गुन ।
ते बैतरणी सल नहि उतरिजात नहिं होत दुख ॥

जिन गोदान दीन्ह सनमाना * पारि पूंछ सो तरी पारा
यहिविधि नदीउतारि द्विज पाई * पुनि यमपुरी देखी जाई
योजन सहस्र तासु विस्तारा * चार द्वार चारि दिशारा
पूरब उत्तर पश्चिम जानी * चौथा दक्षिण द्वार सिरानी
धर्मवान जो प्राणी भयऊ * सो तीनों द्वार है गयऊ
दक्षिण द्वारे मे सो जाई * जो नर पाप कीन्ह अधिकाई
विप्र साधु सुरभिन दुख दीन्हा * धर्म विश्वासघात जिन कीन्हा
दुष्ट बड़े तन मन दुखदाई * सब जीवन की करै बुराई
चोरी करै चौपथा मारै * पशी पसारि फन्द में डारै
कन्या बेचि द्रव्य जे लेहीं * छल करिके काहू विष देहीं
हरिते विमुख सदा जे रहई * काम क्रोध तृष्णा बश बहई
वेद पुराण शास्त्र नहि मानै * गुरुते कपट सयानप ठानै
दुखी दीन कहँ आप सतावै * झूठी साखि भरन ते जावै
साधू ब्राह्मण सेवन नाहीं * तिनहि न दान पर्व के माहीं
अस प्राणी दक्षिण दिशि जावै * यम किंकर तेहि बहुत सतावै
दक्षिणद्वार गयो द्विज सोई * जाय शालमलि देख्यो जोई

दो० तहां सिंह बहु श्वान वृक, सर्प गीध अरु भाल ।
अन्धकार नहिं जान कोउ, राति दिवसका हाल ॥

नरक इक्कीस हैं जहां, परे पतित रहें रोइ।
त्यों त्यों मारें दूत शिर, रक्षक तहां न कोइ॥
तिनमें बड़े जे मुख्य हैं, नरक अठारह जानि।
भिन्न भिन्न कर नाम अब, सबके कहौं बखानि॥
प० छं०॥
प्रथम इक कुम्भीपाकजानि। अतिशै दुखदाई ताहिमानि॥
जो विप्रनकपशुपक्षि मारि। ब्रह्मचारीको तप देहिंटारि॥
अरुदानदेत हटकै जो नीच। सो परतनरककुम्भीकेबीच॥
है कुम्भलाख मुखछोटजासु। षोडश योजन बिस्तारतासु॥
तामें मलमत्राअतिनिहारि। दुखपावत पापी नरऽनारि॥
क० छं०॥
दूसर नरक अवीचिनाम। तामें पल नाही है अराम॥
गुरु अरु कन्या बधे कोइ। भक्ष्याभक्ष्य जो खातहोइ॥
जो पाहुनआवैनिज निकेत। तेहि न करे सनमान हेत॥
नरके अवीची परत सोइ। नर नारी चाहै सोइ होइ॥
हरिगीतिका छन्द॥
अब नरक तीसर नाम रौरव है भयानक सो महा।
तेहि देखि डरपत जीव थारू तपत रहती है तहां॥
पग जरत आगी करत रोदन दौरि चहुँदिशि जावहीं।
अति होत व्याकुल एकक्षण बिश्राम नाहिंन पावहीं॥
तो० छं० जिन राज्य विषे नहिं न्याव किया।
बिन औगुण पर्जहि दण्ड दिया॥
जिन ब्राह्मण वेद पढ़े जु भले।
तेहि मारग आपु सो नाहि चले॥

केहुँ आरत आइ के प्रश्न करी।
अह टेढ बताइ सो वित्त हरी॥
धरि पाखँड रूप फिरैं जग में।
हरि विमुख सो बूडि रहे अघ में॥
जप संयम पूजन नाहि करैं।
तप तीरथ यज्ञ न ध्यान धरैं॥
व्रत दान कभू जे ना करते।
तम रौरव माहिं परैं नर ते॥

चौंयनरक गुरु जिमि है नामा * गुरुरस अस औटत है तामा
जो काहू की भाजी मारै * अरु काहू का बुरा विचारै
पट गुड लौण जो लोह चुरावै * गुरु जिमि नरक सोइ दुखपावै
पचवा कूप नरक तहँ सहई * तामे प्राणी अतिदुख लहई
कूपसमान बननि तेहि केरी * पीव रक्त कृमि तामे हेरी
तासु निकट बैठे बहु कागा * बडि बडि चोच भयानकनागा
परे जीव कबहीं उतराहीं * मारैं चोंच रसातल जाहीं

दो० रामभक्ति जिन नाहि करी, गुरुदिक्षा नहिं लीन।
रामनाम सुमिस्यो नहीं, साधुसग नाहि कीन॥

सो० मानुप देही पाय, कह्यो सुन्यो नहि रामयश।
दासी सग कराय, कूपनरक मंह सोइ परत॥

छठवा कीट नरक है जानो * तामें कीडा भरे बखानौं
पापिन के तन चोटैं सोई * तामे त्रास अधिकही होई
मारि मारि मछरी जिन खाई * है कृमि रहैं निरै महँ जाई
भली बस्तु जो छिपिके खावैं * अरु काहू को अन्न चोरावैं
दुखी दीन लखि दया न करहीं * कीट नरक महँ सो नर परहीं

सतयां असीपत्र बन नामा * ताके पत्र दुधारे श्यामा
पापिन को तामें घमिलावें * कटिकटि जायं बहुरि जुरिआवें
त्राहि त्राहि तहँ जीव पुकारें * त्यों त्यों दूत परिघ शिर मारें
जिन कोउ अपने मित्रहि मारा * काटेनि हरियर वृक्ष गँवारा
पापी कुटिल अकारण क्रोधी * परनिन्दक गुरु सन्त विरोधी
गंगा करत भङ्ग जे करहीं * असीपत्र महँ सो दुख भरहीं
दो० अठवां दारुण नरक है, जेहि देखत भय होय।
जे कामी है नारि नर, तहँ पावे दुख सोय॥
बहुत खम्भ नररूप तहँ, बहु हैं नारि अकार।
बरत रहत इकरस सदा, दोउदिशि काष्ठ अपार॥
जो नर परत्रिय गरे लगावें * पकरि खम्भमहँ ताहि भेंटावें
कहे कि चीन्हिलेहु सोइ नारी * जेहिके सङ्ग कियो सुख भारी
जे त्रिय आन पुरुष सग करहीं * तहां जाय तेऊ दुख भरहीं
परबी परे बरत वा होई * तेहि दिन मैथुन करें जो कोई
सोउ खम्भ महं जात भेंटावा * यमके दूत अधिक तहिं तावा
कहेसि कि तुम मानुष तनपायो * करि करि मैथुन ताहि गवांयो
तुमते खर शूकर भल जानी * बरष बरष सन्तोषे आनी
हरिकी भक्ति कियो सो नाहीं * सहा कष्ट अब दारुण माहीं
नवम नरक निश्वास कहावे * तामें श्वास न घूटी जावै
सो० ब्राह्मण विधवानारि, पर गुरु अंश चोरावहीं।
कहे न बचन बिचारि, परे सोइ निश्वास महँ॥
दशवां कूल शकुल है भारी * तामें तो अति दुख अधिकारी
अग्निसमान जरत द्रुम रहही * दशयोजनके चाकल अहहीं
योजन पांच पेर बिस्तारा * एक एक का न्यारा न्यारा

बँधे जँजीरन में तहँ पापी * हाय हाय बोलैं सतापी
ब्राह्मण क्षत्री शूद्ररु वैसा * भारी पाप कीन जिन जैसा
मारैं जीव मास लै खावैं * ते नर यही नरक दुख पावैं
गेरहौं नरक सुईमुख नामा * सूचीछेद परे जिव तामा
जिन सतगुरु की निन्दा कीना * सन्तन दोष लगावत हीना
तीरथ वहिमुख वेद पुराना * सबहिनकी निन्दा जिन ठाना
नारि बधे अरु विप्र सतावैं * सो सूचीमुख नरकहि जावैं
बरहौं घोर नरक अस नाऊ * सो विकराल भयानक ठाऊ
तामें सिंह स्यार अहि शूकर * भालु भेड़िया कागरु कूकर
जिन रसना हरिनाम न लीन्हा * कटुक वाद साधुन ते कीन्हा
क्वहुँ न कोमल वचन उचारे * तेहि मुख नाग लगावत कारे
सन्त दरश जिन कीन्हों नाहीं * निरखि चख्यो नहिं पग भूमाहीं
परत्रिय देखि कुदृष्टिहि झाकैं * तिनकी काग निकारन आखैं
जो कोउ पुर में आगि लगावै * तिनका मास भेड़िया खावै
जो कोउ वनपशु पक्षी मारे * ताका पेट सिंह धरि फारे
जो कोउ काहुइ मारै भाई * शूकर ताके हाथ चबाई
जिन हरिचरित सुने नहिं जाना * सीस औटि डारै तेहि काना
जिन नर अमिप अहारै कीन्हा * गोला लाल पिवावै लीन्हा
पंवत गोला करैं पुकारा * त्रास देइँ यमदूत अपारा
तब तो भख्यो परावा मासू * अब कत रोवत बड़ बड़ आसू
काँट चुभत अपने दुख मान्यो * पर को सकट देत न जान्यो
दो० बिन दावा नित रहत जे, फूल पात चुनि लेत।
तिन्हैं मारि भक्षण किओ, केवल रसना हेत॥
कर्म किओ जस भोगो सोई * नरक अघोर माहिं अस होई

तेरहों शूली नरक कहावे * शूली सम दुख तामें पावे
जो नर पाप करै अधिकाई * करि शिकार मृग मारे जाई
नाहक नर शूली धरि दीन्हों * जिन वनमाहिं ठगाही कीन्हों
काहुकों शस्त्रन ते मारे * तेहि यम शूली नरक में डारे
नरक चौदहों है दुख खानी * अग्निकुण्ड तेहिनाम बखानी
तामें अग्नि बरै अति भारी * जाहि देखि डरपे नर नारी
जरैं जीव बहु ताके माहीं * हाय हाय बोलैं घिघियाहीं
कोउ कहैं मैं बहुत पियासा * जल पियाइ फिर दीजे त्रासा
दूत कहैं सुनु रे मतिहीना * तू नो दया धर्म नहिं कीना
प्यासे को जल नाहिं पियायो * भूखे को नहिं कबहुं खवायो
साधू ब्राह्मण अरु गुरु भाई * पूज्यो नहीं कबहुं घर लाई
महंगा परे नहिं दीन्ह्यो दाना * पेट भर्यो नित बैल समाना
धिक धिक रे मूरख नर लोई * अपना किया भुगत अब सोई
पानी मांगत कौने ज्ञाना * प्रथमे अग्निकुण्ड नहि जाना

दो० नरक पन्द्रहों है जहां, तेलयन्त्र ता नाम ।
कोल्हूकी सम सो बना, डरत देखि नर बाम ॥

जो चोराइ पर खेतहि काटै * नित दिन मात पिता कहँ डाटै
भूमि पराई लेइ छिनाई * परपत्नी परवश लै जाई
तुला चढ़ाय घाटि जो देवै * तेलयन्त्र सो बासा लेवै
सोरहों नरक नाम दुखदाई * तामे तो है दुख अधिकाई
जो मद पीवै आमिष खावै * झूठे काहू दोष लगावै
पर औगुण जो करै उघारा * दुखी दीन कहँ नाहक मारा
भक्ति छुड़ावै निगुरा करई * कहे कहाये जो परहरई
दुखद नरक में सो दुखपावै * जो नर कीन्ही कृत बिसरावै

सो० नरक सत्रहों जानि, अन्धकार जेहि नाम है।
महाभयानक मानि, तामें कछु सूझै नहीं ॥
जे राकस अतिनिरदै कोही * तन अभिमानी हरिजन द्रोही
गरे बिराने करद चलावै * अन्धकार दुख सोई पावै
नरक अठरहों है दुखधामा * इवै विलोचन ताकर नामा
तामें नर अन्धा ह्वै जावै * भरमत फिरै कष्ट बहु पावै
जो मग चलत जीव नहिं पेखै * क्रोधदृष्टि ह्वै साधुहि देखै
अरु परनारि कुदृष्टि निहारै * कण्टक तोरि बाटमें डारै
विधवा नारि नयन जो आंजै * खाइ पान परपतिके काजै
जो ठाकुरद्वारे नहिं जावै * साधु गुरु लखि शीश न नावै
अन्धे को देवै बहकाई * परै विलोचन में सो आई
दो० नरक अठारों साल महँ, देखि डर्यो मनमाहिं।
तनकापत सबकछुवचन, मुखते आवत नाहिं ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतयमपुरीवर्णनोनामएकादशोऽध्याय ॥११॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
वर्णौं कर्मबिपाक कछु, सोइ इतिहास बखानि ॥
फिरि दूतन आगे करि लीन्हा * यमकी सभा ठाढ तह कीन्हा
बिप्र बिलोकेउ धर्मक रूपा * मारकण्डयो सम तेज अनूपा
रतनजटित शिरमुकुट बिराजै * श्रुतिकुण्डल गलमाल भ्राजै
चारि बेद के पढ़नवारे * और मिमांसा जाननहारे
बहुत शास्त्र रचि आप बनाये * धर्महेत जग माहिं चलाये
बैठे सिंहासन हरषाहीं * शोभाकान्ति अधिक तिनमाहीं
और ऋषीश्वर बहु सतिबादी * धर्मराज ढिग तिनकी गादी

जोलहि जब यमगण लेजावे * ठाढ़ करें रविसुत के ठावें
कहैं माहेश्वर वहां लेजावो * चित्रगोपें यहि दिखावो
दो० सुकृत प्रकट पुनि पाप जो, करत जीव जगमाहि ।
सो सबलिखिलिखिधरतहैं, तनकौ चूकत नाहि ॥
पाप पुण्य ते सब कहि देवैं * रविसुत निजकानन सुनिलेहीं
धर्मसहित तब न्याय चुकावैं * जे जस करें सो तस फल पावैं
पापिनको लै नरक में डारें * यमकिंकर शिर मुद्गर मारें
धर्मवान तें स्वर्ग सिधावें * आगे बाजन बजत जावैं
पहुँचैं स्वर्ग निकट जब जाई * आगे मिलैं अप्सरा आई
नृत्य करत भीतर लेजावें * सिंहासन ऊपर बैठावें
कहैं कि हम हैं तुम्हरी दासी * रहिये एकठने वच स्वामी
देवदेव ह्वै करें निवासा * देमाले सुख भोग विलासा
अब सो पुण्य कहौं समुझाई * जामें बसत स्वर्गमह जाई
जिन नर दान द्विजनकहँ दीन्हा * काहूकर अपमान न कीन्हा
सब जीवनकी दया विचारैं * काहुइ दुख देवैं नहिं मारें
वेद पुराण सुनै सुख पावैं * कथा कीर्तन में मन लावैं
योग तपस्या तीरथ करहीं * संयम सहित व्रत अनुसरहीं
गाड़ै बस्तर घोड़े हाथी * गोवें दई बाछरा साथी
कन्दमूल फल अन्न जो दीन्हा * विप्र साधु न आदर कीन्हा
मग में वृक्ष विपुल लगवाये * कूप बावली ताल खनाये
कार्तिक माह बैशाख नहाये * नागे पगनौं पर पहिराये
औरौ धर्म विविधविधि कीन्हा * स्वर्गमाहिं तिन बासा लीन्हा
दो० जो कोइ करे सो आपु को, परको करै न कोइ ।
अपना कीन्हा पाइहै, ऊंच नीच किन होइ ॥

जिन दोउ गुरुते दीक्षा लीन्हा * मनलगाइ हरि सुमिरन कीन्हा
साधुनकी सेवा तिन करहीं * मनके वचन मोह टरहीं
दान करे सो हरिको अर्पे * बोलै सत्य झूठ नहिं भाखैं
करैं भक्ति सतसंगति जावैं * अस नर ते बैकुण्ठ सिधावैं
तिनको धर्म नीर नहिं न्याऊ * जे हरिभक्ति करैं सतिभाऊ
यानिधि धर्मराज के पासा * जाइ न एको हरिका दासा
पापिनको यम यहिविधि करहीं * प्रथमे नरक माहि लै डरहीं
बहुत काल लगि नरक भोगाई * फिरि जगमें जनमावन भाई
पूरब जिन जस कीन्हे कर्मा * तैसा आइ लेन जग जन्मा
जो नर ब्राह्मणहत्या कीन्हा * जन्म निपुत्री तेहि जगदीन्हा
गऊ पापते होइ मलेच्छा * जो नहि करे जीव की रच्छा
जो काहूका सोन चोरावै * जन्म पाइ कर्णी है जावै
मदिरा पीने मेडुक होई * मारे पशु रोगयुत सोई
द्विज पुस्तक पढिनाहि विचारा * बहुत रहे चिरयाको धारा
हरिकी भक्ति करी सो नाहीं * तेई होत सर्प जग माहीं
जिन गणिकाकी संगति ठानी * रासभ होत आइ सो प्रानी
जो द्विज मांस अहारी होई * ताको दान देइ जो कोई
दोनो गीदरका तन पावैं * परकी निन्दा मुख कर गावैं
जिन पलदान दीन अधिकारा * पावै बार सिंह अवतारा
जो कोइ कन्या होती मारै * सो गिरगिट की देही धारै
झूठा बाद विवाद बढावै * सो कच्छप की देही पावै
देवेयोग्य दान नहिं करहीं * सो शठ बकुला का वपु धरहीं
दान देन जो बरजै कोई * सो तौ लदुवा घोड़ा होई
कर्ज खाइ कोई मरि जाई * ह्वैके वृषभ भरै सो आई

जो साधुनकी निन्दा कीन्हा * शूकर केर जन्म तिन लीन्हा
जो कोइ धरी धरोहरि नाटै * अरु पातिन के पग जो बाटै
साधुहिं दोष लगावै जोई * सोइ विष्ठा कर कीड़ा होई
जो काहूका लोह चोरावै * होइ नहारू बहु दुख पावै
जो काहूको अन्न चोरावै * होवै बहिरा सुना न जावै
दो० ब्राह्मण अरु हरि भक्त कहँ, लातन मारै जोइ।
जन्म पाइ जगके विषे, सोई पगुल होइ॥
अछत होत गुरु गुरू न कीन्हा * सोइ बिलार होत हम चीन्हा
जो नित कोधी हरै नाहीं * सोई होत नकुल जग माहीं
दै विश्वास करे दुष्टाई * सो है कुरंग बसे वन जाई
दान देइ पाछे पछितावै * सो नर जन्म मेष कर पावै
जिन करपूर कपास चोराई * सो शुत्रा होवै सुनि भाई
बैलै बधिया करे करावै * सोउ नपुंसक लखा है जावै
जो अनहोती करे लड़ाई * सो वनकी मार्जा है जाई
गुरु ब्राह्मणका अन्न चोरावै * सो मरु देश भुजग तनु पावै
नरतन पाइ करै परपीड़ा * सो होवै मोहरी का कीड़ा
ज्ञान पाइ गुरु ते फिर जावै * सो शरीर कोढी का पावै
जो सन्तनकी हाँसी करई * जम पाद सिरीं है मरई
भीतर कपट उपरते प्रीता * सो पापी धारे तन चीता
पर प्रमदन ते जो रति करहीं * सो जगमाहिं श्वान वपु धरहीं
देखि दोष जो आमिष खावै * सो नर गीधकेर तनु पावै
पाप सहित जिन दीन्हो दाना * सोई होत दरिद्र जगजाना
हरिजनमाहिं छूति जिन मानी * होत छछूदरि सो मलखानी
सो० विना लगाये भोग, जे नर भोजन करत नित।

होत तासु तन रोग जन्म मिलत तेहि कागकर॥
दो० जह लगि खोटे कर्म है, सो सब दुखकी खानि।
सोई करि नर परत है, चौरासी मे जानि॥
स्वर्ग पुण्य छीण ह्वै जावै * पुनि सो मृत्युलोकको आवै
नरतन मिले तिन्हे अतिपावन * सुत वनिता धन धाम सुहावन
करे धर्म स्वर्गहि सुख पावै * अधरम करै तो नरक सिधावै
हरि की भक्ति करै नहि जबलौ * आवागमन मिटै नहि तबलौ
यहि भांतिन यम लेखा लीन्हा * जेहि जमचहा ताहि तस दीन्हा
पाछे यमगण द्विजै दिखावा * राखि हरि निनते बचन सुनावा
रे दूतौ मतिमन्द गवांरा * आजु कसूर कियो तुम भारा
अस्यनाम द्विज और रहायो * ताको तजि याको ले आयो
सुनि यमदूतन बचन बखाना * भोगे नाग इन्द्र हम आना
धर्मराज तब द्विज मनमान्यो * मनमे निज अपराध पिछान्यो
कैसो पापी होवै कोई * विना अवादे आव न सोई
यहु द्विज विना अवादे आयो * यम विचारि यम बचन सुनायो
दो० हे द्विज तोको देखिकै, लागि दया अति मोहि।
जो भावे सो मागु वर, आजु देहुँ मै तोहि॥
कहद्विज जो प्रभु किरपा कीजै * तौ मृत्युलोक जान मोहिं दीजै
जितनी मोरि आयु है बाकी * तितने दिवस वहा मोहि राखी
अबलगि मै कछु धर्म न किहेऊ * झूठे जगत माहि मन दिहेऊ
जबते देख्यों पुरी तुम्हारी * नरकनिरखि लाग्यो डर भारी
ताते अस मत मोसे कहिये * जाते फिरि तब धाम न अइये
कह यम पापी पुण्यी दोऊ * मोरे पुर आवत है सोऊ
राम भक्ति जग करै जो कोई * तिनपर मेरा दण्ड न होई

चक्र मूक दिशि रक्षा करई * इतदिशि गरुड़ न पवहु टरई
एक ओर शव पाउँ दौरे * हरिदा तिनपर सब ठौरे
तिन्हें विरोधि यहाँ हित रहेऊ * मन क्रम बचन सत्य मैं कहेऊ
ताते द्विज अब जग मे जाई * सुखनद भक्ति करौ हरषाई
जिन हरि भक्ति इन्द्र दुख पावे * पुण्य जाय मृत्युलोकहि धावे
राम भक्त को पाप न होई * भक्ति बीज अजरामर सोई
सुनि द्विज धर्महिं शीश नवायो * तुरतपलटि मृत्युलोकहि आयो
मृतकशरीरमाहिं पुनि जाग्यो * ललितगृहवासिनको दुख भाग्यो
पड़ो कोलाहल नगर मँझारी * सुनत चले देखन नर नारी
भई भीर बहु विप्र निकेता * आये चलि पुरवासी जेता
पूछन लगे कहां तुम गयऊ * केहिभांतिन फिरि आवत भयऊ
कहा सालमल यमगण आये * महा भयानक रूप बनाये
मारि मोहिं यमलोक सिधाये * आठ पहर मग दुख अतिपाये
देखि एक बैतरणी भारा * तामें पीब रक्त कृमि धारा
पायन यमपुरी दक्षिण द्वारे * तहां इकीसन नरक निहारे
तिन में जीव परें बहु शोरा * देखत धीरज भाग्यो मोरा
दूत दुवे लगे यम पासा * तिन मोहिं देखत वचनप्रकासा
याके नाम और द्विज भाई * तेहि तजि यहि दीन्हों दुख आई
मोसे कहिनि मांगि वर लीजै * मैं कह बहुरि जान मोहिं दीजै
और बात इक देहु बताई * जाते फिरि तव लोक न आई
तिन कह रामभक्ति कर जाई * कबहुँ न नरक परहु पुनि भाई
ज्यहिविधिगयन जवनविधिआयन * सो हमतुमते बरणिसुनायन
जे नर चतुर सुजान सुकर्मी * लागे करन भक्ति मिलि मर्मी
आतु सालमल गुरुहिं बोलाई * राममन्त्र लीन्हों हरषाई

हरिगीतिका छन्द ॥

लीन्हों हरषि द्विजमन्त्र तारक बहुतविधि उत्सव कियो ।
पितुमातुसुत तियबन्धु कोउ घर रहन माकत नाहिं कियो ॥
करि नेम सुमिरे नाम पूजन ध्यान नित हरिको करे ।
सतसंग साधन सेव हरियश कहे सुनि मन में धरे ॥

दो० यहिविधिरघुपतिभक्तिद्विज, कीन्हीं अतिअभिराम ।
अन्तसमय सब कुटुंब ले, बस्यो रामके धाम ॥
जन रघुनाथ विचारिके, भक्ति करो सतिभाय ।
नातरु फिरि पछिताहुगे, नरतन बीतो जाय ॥
बहुत जन्म सुकृत कियो, ताको फल नर देह ।
कहे रघुनाथ सो पाइके, जन्मसुफल करिलेह ॥
चौरासी लख कोग में, यक दरवाजा छोट ।
ताहि पाइ जो ना कढ़े, तो फिरि भरमे कोट ॥
काल सचानो शिर खड़ो, ताहि डरे नहिं नेक ।
फूलो फिरे समुद्र में, करत कुकर्म अनेक ॥
आखिर को फिर ना रहै, मरना तोहि विशेखि ।
ताते हरि भजि लीजिये, यही लाभ मन पेखि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्रमतआगरप्रथउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगृहधर्मकर्मविपाकवर्णनोनाम
द्वादशोऽध्याय ॥ १२ ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णों महभारत्थ की, पुनिइतिहासबखानि ॥
कह शौनक यह जगतमें, कोउ धनी कोउ रङ्क ।
कोउ भोगी रोगी कोऊ, भूपति भिक्षुक शङ्क ॥

कोउनिशिदिनदुखहीसहत, कोउ भ्रमतमरिजात ।
कोउ जियत बहुकालतक, कोउ बिन उग्र लखात ॥
काहूके जननी जनक, मरत बालपन माहिं ।
सो यह कारण कौन है, कहौ नाथ मोहिपाहिं ॥

सुनि तब सूत बचन अस भाखा * लखि अधिकारी गुप्त न राखा
शौनक जो तुम पूछेउ आई * सो सब कर्म प्रभाव लखाई
कर्म ते दुख सुख रोग अरोगी * कर्म ते भिक्षुक भूपति भोगी
कर्म ते मरे बाल पितु माता * और बात कछु नाहिन ताता
इक इतिहास कहौं अब गाई * जाहि सुनत बहुव्याधि नशाई
यक द्विजगुणनिधिनाम सुजाना * सर्वशास्त्रनको जेहि जाना
ताहिके यक कन्या भै आई * नाम सुवर्ता छवि अधिकाई
चारि बर्ष की भई कुमारी * तबहीं तासु मरी महनारी
तबगुणनिधिनि मनमनहिं बिचारा * बिनतिय भवन बसब धिक्कारा
कन्या युत सो बनहि सिधायो * तामें मुनि आश्रम बहु पायो
तिनके ढिग यक कुटी बनाई * रहन लग्यो द्विज अतिहरषाई
करन लाग कन्याहि प्रतिपाला * विप्र जानिये बड़े दयाला
विविध भाँति के चित्र बनावै * लाय खिलौना ताहि खिलावै
राखै ताहि प्रसन्न सदाहीं * होइ उदास कबहुँ सो नाहीं
मातुहीन अरु बालकुमारी * तेहिहित द्विज सन्यास न धारी
भई सुवर्ता जबै सयानी * तब द्विज ब्याहकरन मनआनी
इतनें माहिं काल धरिखायो * मनइच्छा सो करन न पायो
मृतक पिताहि लखि कन्या रोवै * व्याकुलअधिक धीर नहिं होवै
कहै सुवर्ता बहुविधि बानी * पिता पिता कहि रोदन ठानी
दो० मोको तजि कितको गयो, अहो पिता परवीन ।

दयावन्त सब भांति तुम, मैं कन्या अतिदीन ॥
अब इत रक्षक कौन हमारा * मात पिता भ्राता नहिं प्यारा
हाय हाय मैं का कर्म कीन्हा * ऐसा दुःख दैव मोहिं दीन्हा
जरौं अग्नि की जलमें बहिहौं * की चढ़ि गिरि गिरि महिमरिजैहौं
पटके दोउ कर शिर भूमाहीं * बिनापितु मा मम जीवन नाहीं
सुनि कन्या का रोदन भारी * उठि दौरे ऋषि संयुत नारी
सो० आये सब तेहि तीर, समझावैं बहुभांति करि ।
धरैं न मन में धीर, तात मातकहि शिर धुनै ॥
ऋषिपत्नी बहु करैं प्रबोधा * नहिं उपजै ताके उर बोधा
लखि यमके मन करुणा आई * ततक्षण द्विजका रूप बनाई
पहुँचे आइ सुवर्णा तीरा * कह्यो बचन मृदु सुखद गँभीरा
दो० हे कन्ये मति रुदन करु, धरु धीरज मनमाहिं ।
अपने कर्मन केर फल, जाय कहू सो नाहिं ॥
आगे करै सो अब भुगतावै * अब जो करै सो आगे पावै
कल्प कोटि तक घटै न सोई * अवशिनेव भोगन कहँ होई
कर्म बीज होना फल अन्ता * तेहि निरखन्त होत कोइ सन्ता
ताते कुँवरि न रोदन कीजै * पाछिल कर्म किये तस लीजै
कह कन्या भाखो प्रभु तौना * पूरब कर्म कीन्ह हम कौना
विप्र कहा सुनु सुता सयानी * प्रथम जन्म तब कहौं बखानी
पूर्व जन्म गणिका तै अहई * उजयनि नगरमाहिं घर रहई
सुन्दररूप नयन चपलाई * जेहि चितवै तेहि लेइ लोभाई
पुरके लोग बहुत बश तेरे * जो तुम कहौ करैं वहि बेरे
तेहि पुर विप्र रह्यो इक जानो * पुन तासु विज्ञान पिछानो
पूजा करै धर्म शुभ साधै * पापकर्म नहिं कछु अवराधै

एक दिवस सो सहज सुभाई * तब द्वारे है निकसो आई
तोतें तुम्हें भूल्यो सुधि शाना * रहो ठाढ़ तहँ मनो दिवाना
तब तू जानि नाहि बोलवावा * आदर करि निज ढिग बैठावा
वाकी प्रीति तुम्हीं से लागी * मातु पिता वनिता निज त्यागी
तेरे विषय बसै दिन राती * चलता फिरत हियमोहिं सोहाती
इक दिन तेरे भवन मँझारा * दूसर कामी आइ पधारा
विप्र शूद्र तें भई जो रारी * शूद्र द्विजै तहँ डायो मारी
दो० यम किंकर तेहि लेगये, डारेनि नरक अघोर ।
शूद्र तुरन्तै भाग तब, भयो नगर महँ शोर ॥
काहू द्विज गृह आइ पुकारा * तव सुत गा गणिका घर मारा
सुनि पितु मातु नारि दुख पाई * रोदन करत धाम तव आई
पुत्र विलोकि अधिक दुख पागे * ताको शाप देन तब लागे
तासु मातु बोली असि बानी * पुत्र वियोग न धीरज आनी
हे वेश्या तैं सुत वश कीन्हा * यन्त्र मन्त्र करि धन हरिलीन्हा
फिर ताको डारे मरवाई * हमकहँ दुख दारुण दिलवाई
पुत्र विछोह कराये मोहीं * मातु हीन होइ दुख तोहीं
दो० पिता तासु ऐसो कह्यो, बाल अवस्था माहिं ।
पिता तोर मरि जाइहै, जहा हितू कोउ नाहिं ॥
कह्यो भार्या पति बिना, मोहिं किये तैं जैस ।
रह्यो कुवांरी नाह बिन, सह्यो कष्ट तुम तैस ॥
ऐसे तोको शाप जो, दियो तिहूं मिलि जानि ।
ताते दुख यहि उमिरिमें, भयो कर्मगति आनि ॥
सो० भले बुरे जो कर्म, बिन भोगे छूटत नहीं ।
धरै जो कोटिन जन्म, सङ्ग न छांड़त एकक्षण ॥

सुनत सुबर्ता बोली बानी * द्विज तुम कहा सत्य मैं जानी
जन्म पाछिलो तुम कहि गाना * जेहि क्रमते मैं अस दुख पाना
इक सन्देह होत मन मोरे * सो अब पूछतिहौं करजोरे
मैं दारिक अतिशय अपावनि * बहुनाहन ते नेह लगावनि
विषय मनोरथ नित प्रतिपाले * बहुमनुष्य के घर मैं घाले
जननिजनक कुलधर्म सो त्यागे * जे मेरे संग नेकहु पागे
कहौं कथा सब पाप कीन्हा * भलो कर्म स्वपने नहिं चीन्हा
द्विजकुल जन्म कौनविधि पायो * सबदिन खोटे कर्म कमायो
अरु तुम दरशदियो किमि आई * सुनि भूसुर बोला सुख पाई
दो० जौन कर्म ते बिप्रकी, सुता भई तू आइ।
तीन दरश मैं पुण्य जेहि, सुनु सो कहौं बुझाइ॥
एक विप्र हरिभक्त सुजाना * समदरशी गुण ज्ञान निधाना
गौ गज श्वान विप्र चाण्डाला * सबमें इक दीखै नदलाला
जप तप आदि धर्म जो ठानै * तेहिकर फल अर्पै भगवानै
इन्द्री जीति घेरि मन राखै * झूठ बचन मुखने नहिं भाखै
कामरु क्रोध मोह मद त्यागी * रहित लोभ हरिपद अनुरागी
मैं अरु मोरि तोरि नहिं जानै * दुख सुखको सामान्य पिछानै
नहिं कछु आश्रम बन्धन ताके * कुल कुटुम्बकर मोह न जाके
जिन चाहे तितहीं बसि रहई * हर्ष शोक नहिं विस्मय गहई
एक दिवस पुरवासा लेवै * दूजे दिन तहं ते चलिदेवै
विचरत सहज सुभाय सोहायो * यक दिन नगर तुम्हारे आयो
देखि श्वेत तव द्वारे माहीं * चस्यो सन्त निशिलोटपन नाहीं
मैले बसन शरीर कृशाना * त्यागे विषय भोग जो नाना
आधी रात भई निशि नासा * बैठे भजन करै हरिदासा

दो० तेहि समय कुतवाल की, फेरी पहुँची आइ ।
पूछ्यो सन्त सो कौन तू, सो तौ मौन रहाइ ॥
तिन्हि उत्तर कछु दियो न जबहीं * चोर चोर परि पकर्‌यो तबहीं
द्विजकछु साचवचन समुझायो * दुष्टन मन विश्वास न आयो
लिये चले लै अपने साथा * नहिंकछु दुखपायो द्विजनाथा
गे जागे अपने घर माहीं * शोर सुनत आई तिन पाहीं
दीप मँगाइ तिनै दिखरायो * तब तुम तिनने बचन सुनायो
जो यह चोर होइ सुनि लीजे * तौ चाहौ सो हमको कीजे
सुनि तवबचन दिहिनि छुटकाई * कर गहि तू निज मन्दिर लाई
चरण पखारि पलँग बैठावा * धूप दीप करि पद शिरनावा
कह्यो कछुक दिन ममगृह रहऊ * पहिरो बसन जोनविधि चहऊ
षटरस भोजन करौ बनाई * जाते देह पुष्ट है जाई
सुनत सन्त बोल्यो शुभबानी * ज्ञान विराग भक्तिरस सानी
दो० धन्य मातु तव भावको, मोहिं चही कछु नाहिं ।
वृथा सकलसुख जगतके, विनशिजात क्षणमाहिं ॥
क्षुधा तृषा सुखभोगकी, कछु इच्छा नहिं मोहिं ।
सहजआइ निकस्यो इहां, सत्य सुनायो तोहिं ॥
तुम समान मैं और न चीन्हा * पर उपकार आजु तैं कीन्हा
पर उपकारी धनि नर नारी * भवसागर सो होवैं पारी
तुम पर तुष्ट होहिं भगवाना * मेटैं जग कर आवन जाना
मोको कछु चहिये नहि माई * करहु शयन निज सेजहिंजाई
यहिबिधि सन्त कह्यो समुझाई * तब तैं पुनि बोली शिरनाई
महाराज मैं अनिहौं आजू * दर्शन पाइ सरे सब काजू
पापचारिणी मैं असि नारी * जेहि भवतरौं सो कहौ बिचारी

कह्यो सन्त भक्तरण जो चाहे * तो हरिशरण आइके गाहे
काम क्रोध मद मोह निवारे * निज अभिमान दम्भ परिहारे
तृष्णा लोभ मत्सरता दहई * इन्द्रिन के मारग नहिं बहई
थिर स्वभाव एकान्त निवासी * दुख सुख समचित धर्मप्रकाशी
उपज्यो न नाहि मृतक पहिचानै * निज न हर्ष शोक गम आनै
नाशवन्त सब जग को देखै * आतम अचल अखण्डित पेखै
शम दम शील दया उर राखे * गुरु ते गर्वित वचन न भाखे
परदुख देखि तासु दुख हरई * हरि हरजन की सेवा करई
रामनाम सुमिरै मन लाई * राम छाड़ि चित अनत न जाई
ऊठत बैठत भोजन पावत * श्वास श्वासप्रति नामै गावत
आन उपाय सकल परिहरई * केवल राम नाम भज करई
सो संसार तरै सति माना * याम कछु सदेह न आनो
मुक्त होइ भव बंधन छूटै * फिरे तेहि यमकिंकर नहिं कूटै
ताते तुमहू येही कीजै * नर तन पाइ सुफल करिलीजै
भय निद्रा मैथुन आहारा * सब योनिन में मिलत निहारा
हरि सुमिरण याही ते होई * सब योनिन सम ताहि न खोई
दो० ऐसे तोहिं उपदेशही, करत भयो भिनसार ।
स तू उठि रमतो भयो, धरि हरिपद उर सार ॥
तब तोहिं उदय भयो वैरागा * विषयविलास वमनसम त्यागा
धर्मश्रुति हिरदय महँ थापो * कनक मृत्तिका सरिस निहारयो
तजि घर बन में बासा कीन्हा * रामचरण मह मन चित दीन्हा
द्विजदेह करि हरिको ध्यायो * जन्म विप्रकुल तेहि पुनि पायो
प्रथमे द्विजन शाप जो दयऊ * तेहिते तोहिं दुख यह भयऊ
सन्तकृपा यमजाल न परेऊ * सतकृपा सब पातक जरेऊ

सन्तकृपा ते नरक न लहेऊ * चौरासी बिच नाहिंन बहेऊ
सन्तकृपा मैं दर्शन दीन्हा * पूर्वकर्म तब वर्णन कीन्हा
यह मैं भेद सकल कहि गावा * जो तुम पूरब कर्म कमावा
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतसुवर्चाकथावर्णनोनामत्रिदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं मिमांसा शास्त्र मत, सोइइतिहासबखानि ॥

सुनत सुवर्चा वचन उचारा * नाथ शोक तुम मोर निवारा
तदपि सुरति करि दुख है आवत * मोह विवश मन धीर न पावत
ताते बात कहो अब सोई * जाते फिरि मोहिं दुख न होई
कह द्विज सुनु कन्या मनलाई * तह दुख जहँ सनेह सरसाई
बिन सनेह दुख होय न कैसे * शुक मूषक सुन स्वेदन जैसे
सब जीवन में समता आनै * शत्रु मित्र मध्यस्थ न मानै
वपु धरि हानि लाभ जो होई * कर्मन के शिर राखे सोई
जैसे नारि गौतमी कीन्हा * पुत्रशोक तेहि भयो न चीन्हा
कह कन्या सुनिये द्विजराई * कथा गौतमीकी जो चलाई
मैं अज्ञान न ऐसे जानो * ताते करि विस्तार बखानो
बोला विप्र कुँवरि सुनि लेहू * कहौं कथा तामें मन देहू

दो० ज्ञानवन्त धीरज बडी, दया हृदय बैराग ।
नारि गौतमी जानिये, हरिपद में अनुराग ॥

करै तपस्या वन के माहीं * परमकठिन कहि जात सो नाहीं
ताके रहे पुत्र यक जानो * खेलै तहँ निर्भय पहिचानो
यकदिन एकारु शिशु गयऊ * काट्यो सर्प तुरत मरि गयऊ
तहँ यक बधिक देखि यह हाला * डारिफांस पकरो सोइ व्याला

लायो जरा गौतमी ठाई * नागा गहि ... ...
अ०छं० बालक निहारै । सर्प ने मारै ।
बडो दुष्ट जान्यो । पकरि ताहि आन्यो ॥
तजो नाहि याको । बदल लेउ वाको ।
चहो जाय पोषी । भयो मम दोषी ॥
ऐसे बचन सुने भगवानी * बोलत ... ...
अहो बधिक मैं कहौ सो माने * ... ...
याहि हते सुत जावै नाही * वृथा ... ...
क्यों बैर हिंसक ठग होई * नाहि ... ...
बालक देखा सर्प अनारी * मैं तो याहि ... ...
मुनि गौतमी कहा अस बाना * ... ...
क्रामी क्रोधी हिंसक रोगी * अयशी कृपण ... ...
वृद्ध मूढ तृष्णा के जोगे * ... अग्नि जल ... ...
रामविमुख निन्दक अभिमानी * पापी बैरी ... ...
वेद विदूषक हरिजन द्रोही * भुजग भूत ... ...
ये सब जीव मृतक सम जानो * ... ...
अपने कर्मते मर्यो कुमारा * अपने कर्म तुम जाव निहारा
अपने कर्म सर्प बँधि आवा * जस कीन्हेसि तैसा फल पावा
परको दुःख देवें जो कोई * सोई दुःख ताहु कहँ होई
बोले गिरा कूप की जैसी * वाही समग मिलै तेहि तैसी
जो दरपन का थाप उठावे * तैसा थाप नाहि बनि आवे
पिछिले जन्म कर्म किय जैसे * भोगे देह धारिके तैसे
बालक नहीं सर्प ने मार्यो * वाके कर्म ताहि संहार्यो
तेहिते बधिक छाडिदे येहू * दोष भुजगहि नाहक देहू

मुनि गौतमी और अगं मैना * बोला उरग पाय दुख चैना
तुम्हे हे प्रभु दोष न मेरा * मैं तो फिरौं मृत्युका प्रेरा
बालक पीति देखो नाग * मई भेट इहि विपिन मँझारा
डस्यौं न मैं तेहि सहज सुभाये * बिना मृत्युकी आज्ञा पाये
तरो मुनि मृत्यु तहां चलिआई * बोली वचन सत्य सुखदाई
सो० हौं नहि खायो बाल, नहीं बध्यो यहि सर्प ने ।
दई जो आज्ञा काल, सोइ करौं मैं आइकै ॥
मैं हो दुलराय की चेरी * आजा होइ मरौं या बैरी
काल कहै तासो मैं लाऊ * बिनानिदेश निकट नहि जाऊं
भु० छं० सुने बैन ऐसे जबै कालराया ।
धरी देह छिप्र उसी ठौर आया ॥
कह्यो सर्प नाहीं नहीं मृत्यु मारयो ।
नहीं रोग कोई जो मैं नाश धारयो ॥
करै कर्म जो जैस तैसाहि पावै ।
बिना भेद जाने हमें दोष लावै ॥
मरै औ जियै वृद्ध बालक जवाना ।
सो तो कर्महीते नहीं और आना ॥
कोई कर्म कैके बहुत काल राहै ।
कोई कर्म कैके अगिनिमें न दाहै ॥
कोई कर्म कीन्हो हमैं जीति लीन्हो ।
बस्यो विष्णु के धाम विश्राम चीन्हो ॥
दो० कोई कर्म करि नीचते, भये ऊँच कोइ गर्त ।
कोइ चोरत तारत कोई, सिरजत पालत हर्त ॥
कोइ जलडूबै तरु गिरै, अगिनि जरै विप खाय ।

कोइ सहस्त्रन रोग कोउ, सर्प डसे मरिजाय ॥
काहुइ सिंह भेड़िया खावै * कर्म किहिनि तासि मृत्युहि पावै
चित्रकेतु सुत गज ह्वै जनमा * रानी सकल गिजाई बनमा
पग तर पीसि गई मरि जोई * बिषदै बदला लीन्हेनि सोई
कीर बिछोह जानकी कीन्हा * ह्वै सो रजक निन्दि बन दीन्हा
दशरथ दुख अन्धन का दयऊ * पुत्र शोक तनु त्यागत भयऊ
चतुरानन कन्या को धायो * तेहि कर्मते शिव शीश गिरायो
बालिहि राम बाण ते मा ो * द्वापर मे सोइ बदल बिचारयो
व्याध भयो द्वापर महँ सोई * कृष्णचरण माशो शर जोई
गान्धारी सुत शत गे मारे * कमठ अण्ड रुज हेत बिदारे
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई * कर्मते नृप वर भयो जटाई
कर्मते भे नृप नहुष कुजन्तू * कर्मते रवि शशि राहु ग्रसन्तू
हरि बृन्दाते जो छल कीन्हा * तेहिकर्म श्राप जन्म जगलीन्हा
नारद शाप बिष्णुकह दयऊ * कर्मते शम्भुलिङ्ग गिरि गयऊ
कहलगि कहौं कर्म जस कीन्हा * तस सबहिनामाल भोगै लीन्हा
तेहिते कर्म प्रधान जग अहई * दुख सुख जीव कर्म करि लहई
सो०सम्पति बिपति कलेस, उत्पतिपालन यश अयश ।
होत कर्म ते तैस, यामें दोष न मोर कछु ॥
सुनत कालके बैन, बुद्धि फिरी तब बधिककी ।
भा बिराग उर ऐन, छाडिदिहिसितेहिसर्पकहँ ॥
सर्प मृत्यु अरु काल, जितते आये तित गये ।
भयो बधिक उर शाल, कर्म पाछिले सुरतिकरि ॥
दो० बधिक गौतमी के चरण, पुनिपुनि शाशनवाय ।
लग्यो योग जप तपकरन, कुलकी रीति गँवाय ॥

वधिक गौतमी की कथा, भई जौन बिधि जानि ।
सो कन्या तोसों कही, मैं संक्षेप बखानि ॥
अस ब्राह्मणके बचनसुनि, मनमें कीन्ह विचार ।
पुनि कन्या बोलत भई, बचन महा सुखसार ॥
मेरे मन को दुख हर्यो, कह्यो बोध बहुभांति ।
गयो मोह अज्ञान अब, हृदय में आइ शान्ति ॥
सो० योगी जानत भेव, अगले पिछले जन्मकर ।
सो मोसों कहि देव, हे स्वामी तुम कौन हौ ॥

कह्यो विप्र सुनु कन्या बाना * मैं हौं यम पापिन दुखदाना
तोको दीन दुखी अति देखा * कीन्हो वोर आय द्विज भेखा
मांगो बर भावै जो ताहा * अनिभ्रमन जिय जानहु मोहाँ
कह कन्या पितु मातु हमारा * सुहृद बन्धु सगरे परिवारा
बसैं स्वर्ग जब लगि शशिभानू * यही मोहिं दीजै वरदानू
एवमस्तु कहि यम चलिभयऊ * तुरत सुव्रती यह ब्रत लयऊ
जप तप लागी करन उदारा * कन्दमूल भखि भोग बिसारा

गी० छं० ॥

बिसराय तन सुख भोग जगके तुच्छ मन में जानिकै ।
लागी करन हरिभक्ति सुमिरन ध्यान ज्ञान पिछानिकै ॥
सब कर्मबन्धन काटिकै श्रीरामके धामें गई ।
सुर सिद्ध मुनि गति जोन दुर्लभ भजन करि पावत भई ॥
दो० आठपहर चौसठ घरी, तिनमें भजिये राम ।
जन रघुनाथ न भूलिये, यही सयानो काम ॥
यह इतिहास पुराण में, बरण्यो मति अनुसार ।

कहै रघुनाथ जो उरधरै, भवसागर है पार ॥
इति श्रीविश्रामसागरे सर्वमनोरथागरे ग्रंथउजागरे श्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगौतमीसुत नौधर्मप्रसंगवर्णनोनाम
चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥
दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं भक्तकी कथा कछु, अघविलास यखानि ॥
सो०पुनि शौनकमुनि पाहिं, पूछ्यो दोउ कर जोरिकै ।
दान तपस्या माहिं, अधिककहासोबरणिये ॥
सुनत सूत बोले हरषाई * सुनु शौनक मैं कहौं बुझाई
तप ते दान अधिक हैं जानी * श्रद्धा सहित करै जो प्रानी
बहुत कष्ट करि द्रव्य कमावै * तेहि परमारथ माहिं लगावै
ताको यश त्रिभुवन महं होई * बसै स्वर्गमहं निश्चय सोई
जो सुधर्मकरि फल नहिं चहई * तौ हरिभक्त परमपद लहई
तापर यक इतिहास बखानो * सुन्दर महा पुरातन जानो
मुद्गल विप्र एक सुत नारी * बसत रहे कुरुक्षेत्र मँझारी
सीलावीनि विरात आसि गहई * पाख एक तक जोरत रहई
डेढ़ सेर जव इकठे होई * पीसि बनावे भोजन सोई
साधु विप्र प्रथमे भुगतावै * पाछे अपना सब मिलि पावै
यहि भांतिन बीते बहु काला * द्विज निजधर्म करै प्रतिपाला
अ० गी० ॥
एक दिवस ऋषि दुर्वासा । सुनि विमल बड़ाई तासा ॥
ते लेन परीक्षा आये । हरिजन का वेष बनाये ॥
म०छं० अरु देह क्षीन । तन बसन हीन ॥
द्विज द्वार आय । तप को छिपाय ॥

लखि बिप्र सोय। अति मगन होय॥
दण्डवत कीन। पग धोय लीन॥
आसन पधारि। आरति उतारि॥
दोउ पानि जोरि। बोल्यो निहोरि॥

महाराज धनि भाग हमारे * जो निकेत तुम आइ पधारे
जेहि गृह सन्तचरण नहिं जावैं * अश्मशान तहँ भूत रहावैं
तव दरशन निर्मल मन भयऊ * सचितकर्म सकल जरिगयऊ
भोजन रहै सो आगे राख्यो * दीन बचन बहु बुधते भाख्यो
सुनि द्विजवचन गूढ़ सुखदाई * पावन लग्यो सन्त हरषाई
जेइचुक्यो कछु जूठनि रह्यऊ * सो अधि बांधि बगलमें गह्यऊ
एकौ आस न तिनको राख्यो * विप्र प्रसन्नभयो मत साख्यो
दुर्वासा चलिमे निज गेला * मुद्गल मन नहिं आयो मैला
पट पखवार ऐसे करेऊ * खाइ जाइ द्विज दोष न धरेऊ
और भाव दिन दिन अधिकाई * नेक कृपणता मनहिं न आई
लखि दुर्वासा दूगुन भावा * भीतर बाहर एकसम पावा
बोलत भये विप्रते बानी * हर्षसहित निर्मल सुखदानी

तो०छं० धन्य तुम जगमाहिं। असदानि दूसर नाहिं॥
निजअशनहमकोदीन। बडदान तुमने कीन॥
तिहुँलोकमें यश तोर। होई वचन फुर मोर॥
अरु विष्णु के पुर जाइ। बसिहौ तहां सुखपाइ॥
जो मुनिनदुर्लभभक्ति। मिलिहै तुम्है सोशक्ति॥
असबचनसुनिद्विजराय। बोल्योबचन शिरनाय॥

सो० अहो सन्त सुख भौन, तुम किरपा जापर करौ।
मोक्ष आदि सुख जौन, मिलतसहजमे आइतेहि॥

ब०छं० यहि विधि करत बतकही बिप्र सुजान ।
स्वर्ग लोक ते लाये दूत विमान ॥
सुर बिमान की उपमा कही न जाय ।
सात स्वर्ग की विभव जु माहि लखाय ॥
रतन जटित अति उज्ज्वल शोभावान ।
उतस्यो नभ ते मानों चन्द्र समान ॥

सु० छं० ॥

सुर दूत पुनि वन्दन कही । इन्द्रादि देवन की सही ॥
तव हेतु जिय आयो भलो । चढ़िस्वर्गको अबहीं चलो ॥
अस बैन दूतन के सुने । मनमाहिं द्विजमुद्गल गुने ॥
बोल्यो बहुरि हरषाइकै । दूतौ सुनो मनलाइकै ॥
सो०सुरपुर दुख सुख कौन, गुण अवगुण तासें कहा ।
कहो कृपा करि तौन, हा प्रभु जाते जानिये ॥
कह्यो गणन हे सन्तकृपाला * तुमको सब मालुम है हाला
दीन जानि प्रभु दाया कोऊ * हमते प्रश्न ऐसि उचरेऊ
सुनो स्वर्ग सुख बरणों सोई * जन्म मरण की व्याधि न होई
भय न कलेश लेन नहिं देना * क्षुधा तृषा नाहिं व्यापत जेना
कल्पविटप मनसाका पूरा * छाह बसे होवै दुख दूरा
रतनजटित हेमालय बयऊ * सुभग सेज पट भूषण घन्यऊ
दिव्यरूप है बासा पावे * सेवा करन अप्सरा आवै
स्वर्ग माहि अस सुख है भाई * सो हम तुमको दीन बताई
दुख अब तासे सुनो ऋषीशा * कहौं सोई जो आखिन दीशा
इहनो कछु कर्तव्य न हावै * जाते पुण्य बढे अरु खोवै
करी कमाई जो फल खावै * खात खात कमती है जावै

परकी पुण्य अधिक लखि सोई * तबै ईर्षणा मनमें होई
पुण्यक नाश सब ह्वै जावै * फिरि सो मृत्युलोक को आवै
जप तप यज्ञन ते सुरलोका * मिलत इमपि ताहूमे शोका
देवदूत की ऐसी बानी * सुनि मुद्गल बोल्यो सुखमानी
काम क्रोध मद मत्सर आदी * जह अति तहँके सुख सबवादी
स्वर्ग माहिं है दुःख अपारा * तेहि मन चाहत नाहिं हमारा
निश्चलधाम होइ जो कोई * हमने बरणि सुनावो सोई

दो० कहँ गन स्वर्ग पताल ये, सब नाशक ये जानि ।
स्वर्गलोक विधिलोकलौं, सबकी होवै हानि ॥
विष्णुलोक नित थिररहै, उतपति परलय नाहिं ।
सुख तित बहुत प्रकारके, बसत सन्त तेहिमाहिं ॥
जन्म मरण तामें नहीं, अरुस ईर्षणा व्याधि ।
आनन्दै आनन्द है, रामधाम अनादि ॥

तो०छं०तहँ रहतहैं हरिराय । ऐश्वर्यकछु कहौं गाय ॥
जेहिराजसब ब्रह्मण्ड । चौदहभुवन नवखण्ड ॥
बैकुण्ठगढ़ आजीत । चाकर सकल सुरमीत ॥
बीरञ्चि जासु देवान । है फौजदार ईशान ॥
मातङ्गवसु दिगपाल । पानी भरै घनमाल ॥
कोतवालहै यमराज । नक्षत्र मानहु बाज ॥
मुस्तौफि चित्रगुप्ति । मुंशी लँबोदर तिप्त ॥
पुरन्दर कानूगोइ । आजीरअखिल सोइ ॥

स०छं०अरु सूर्यशेष विचारी । कूबेर जासु भण्डारी ॥
चहुँखानि लाख चौरासी । तहँ सब करिखन-बासी ॥
करैं परारब्ध कर भोगा । रहै सबपर कर्म दरोगा ॥

अहदोग्रह रोग अनन्ता। जागीर तगीर करन्ता॥
यमदूत पियादा फिरहीं। जे रामविमुख ते धरहीं॥
महिपेशलोक वेंदिखाना। वहुनरकभाकसीजाना॥
हरिधर्म पोत विनदीन्हे। तहँपरतआइशठचीन्हें॥
बिनवेद प्रतिग्रह धारी। ते जानहु सबै वेगारी॥
परस्त्री पञ्च अइ जानो। तहसीलदार यहमानो॥
जप तपव्रतदानहिं करहीं। तेनरजनु पोताहिंभरहीं॥
मद काम क्रोध अहँकारा। डकइत लूटत ससारा॥
सतसग नकीव तयारा।सोकरतफिरतहुशियारा॥
है अन्नपूरणा मोदी। दे सबै अहार सोदी॥
वकील वीर हनुमाना। जयविजयरहतदरवाना॥
शुचि सेवक भक्त पिआरे। जिनकेहितनरतनुधारे॥
सुरलोकमकल जागीरा। सरसहनाजासुममोरा॥
अरु धर्म नवीन करारा। है भक्ति बड़ी सरकारा॥
नोयतिहै अनहद तासा। चोपै बर बारहु मासा॥
भूलोक जासु बाजारा। तहँ होत कर्म व्यापारा॥
सेराइ द्वीप अरु खण्डा। धनुकालमृत्युपरचण्डा॥
वन बाग अठारौ बागा। हैं सातो सिन्धु तड़ागा॥
परवत सब बिछी जाना। तरुनभ दीरघ ताना॥
वन्दीगण बेद कहावैं। जे नेतिनेति यशगावै॥
जिनकीप्रिय लक्ष्मीरानी। साहेली गिरा भवानी॥
दे भक्ति मुक्ति दो दाना। तेहिधेनकसन्तमुजाना॥
हैऋद्धिसिद्धि जेहिदासी।सोनिशिदिनकरैंखवासी॥
दो० कोटि कोटि ब्रह्माण्ड है, रोम रोम प्रति जासु।

कहै रघुनाथ बखानि कोउ, पार कि पावै तासु ॥
सुनि प्रभाव असविष्णुको मन हर्ष्यो महिदेव।
पूछ्यो हरिपुरकिमिमिलै, ताको कहिये भेव ॥
मिलै जो वह पद भक्तिसे योग ज्ञान मन लाय।
और उपाय करै किते विष्णुलोक महँ जाय ॥
सो० देवदूत के बयन, सुनि बोल्यो मुद्गल बहुरि।
जाहु आपने अयन, कह्यो बन्दना सुरनते ॥
दो० देवदूत भेजे स्वरग, आप भक्ति मन लाय।
कछुदिवस निजकुटुंबयुत, बस्यो विष्णुपुर जाय ॥
सो० तपते अधिकी दान, सह श्रद्धा के जो करै।
होय भुवन बिख्यात, भक्ति मिलै मुनिद्विजसरिस॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमुद्गलप्रसंगवर्णनोनामपञ्चदशोऽध्याय ॥१५॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
हरि धर्मोत्तर ग्रन्थ की, कहौं इतिहास बखानि ॥
सो० सुनि शौनक सुख पाय, नायशीश बोल्योबहुरि।
नाथ कहौ समुझाय, पुण्य बढ़त केहिद्रव्यते॥
कहा सूत मुनि कहौं बुझाई * जेहि धन धर्म बढ़ै अधिकाई
सुकृत करि जो द्रव्य कमावै * तेहि परमारथ माहिं लगावै
बाढ़ै पुण्य पाप ह्वै नासा * सो नर लहै स्वर्ग मे बासा
अधरम करि जो द्रव्य कमावै * धर्म माहि पुनि ताहि लगावै
ताकी पुण्य वृथा ही जानो * सुनो एक इतिहास बखानो
नृप यक वीरभद्र अस नामा * सोरठनगर माहिं तेहि धामा
करी पुण्य बहु सातिक राजा * गज रथ भूमि पालकी बाजा

सो० सुवरण माँग मढ़ाय, मुक्ता गूँथे रजत खुर ।
पीताम्बर ओढ़ाय, देइ धेनु द्विज नारहीं ॥
कन्यादान करै पटराना * गजमहोत्सव बहुविधि ठाना
तेहिपर एकबार विधि योगा * नृप रह नृपवर नगर संयोगा
निशा अचानक नगर लुटायो * केउ कान नहिं पावै पायो
रानी नृपति अनाथहि बेषा * भागवत दोउ नहिं देशा
आये एक नगर के माहीं * देवराम यह तिन नाहीं
करसुवका एक नृप चीन्हा * बेंचि कछुक दिन भोजन कीन्हा
नातेदार रह पितु मामा * गये महिन गृह नेहि धामा
तहाँ नहीं कछु आदर पाया * बहुरि भूप भगिनी पर आयो
जानि अभाव जनक लघुभाई * तिनके निकट गयो चलि राई
सो० रहे तहा कछु काल, पुनि लागे अनखान मन ।
चलिभे तुरत भुवाल समुझि करमगति मनविषे ॥
दो० जाके भवने जाइँ चलि, बात न पूछै कोइ ।
विपति परे हरिबिन कोई, काहूको नहि होइ ॥
कुं० कमलकर पितुसरितपति, गरलसुधा शशि भाय ।
मित्र भानु ब्रह्मा तनय, विश्वभरा जेहि माय ॥
विश्वभरा जेहि माय श्री रम्भा दोउ भगिनी ।
बहनोई हरि इन्द्र, नाति शिव सुन्दर भगिनी ॥
अस परिवार सुसारजड़, जारिदियो निशियाम ।
बिपति परे रघुनाथ बिन, कोइ न आयो काम ॥
भूखन मरन लग नृप रानी * भिक्षा कीरी युक्ति तब ठानी
घर घर भिक्षा करै भुवारा * तनपर बसन न जुरै अहारा
कछुककालयाविधि चलिगयऊ * नृप रानी से बोलत भयऊ

सोरठगढ़ इक शाहु सुजाना * मानिक नाम विदित धनवाना
बेचन पुण्य जात जो पाई * मानिक शाहु लेनहि सोई
कागद पर लिखि तुला चढ़ावै * ताहि बराबर सोन दिवावै
रानी कहा सुनो नृप राई * तुमहू कीन्ह पुण्य अधिकाई
तामें कछुक बेचि लै आवो * पहिरो बसन पेट भरि खावो
जो जगमें तनु रही हमारा * करब दान पुनि बहुत प्रकारा
कह राजा रानी सुनि लेहू * मारग को खरचा कछु देहू
सुनि रानी तुरत उठि धाई * गृह गृहने भिक्षा करिलाई
नृपके बसन बाँधि मोइ दीन्हा * गणपति सुमिरि पयाना कीन्हा
तेहि बासर निशि में तरु पाई * रह्यो सो तिय निन भोजन राई
दूसरे दिन चलि सर यक पायो * करि मज्जन नृप भौरी लायो
सेकि तुरत हरिभोग लगावा * ताहिक्षण यक अभ्यागत आवा
क्षुधावन्त बोला हर आई * सुनि नृपके मन करुणा आई
दो० होय धनी कङ्गाल जो, तदपि रहै उदार।
जन्म दरिद्री धन लहै, करि न सकै उपकार॥
द्वै भौरी अभ्यागतहि, दीन्ही करि सन्मान।
दुइ पुनि अपना खाइके, कीन्हो बहुरि पयान॥
तिसरे दिवस शाहु पहँ आयो * आदर करि राजा बैठायो
पूछेउ बणिक कहाते आये * को हौ कौने काज सिधाये
सुनि नरेश अस वचन प्रकासा * सोरठते आयन तुव पासा
बेचन पुण्य हेतु मइ ताता * तुमइ लेत सुनी हम बाता
अस सुनि शाहु उतरु तब दीन्हा * बेचहु पुण्य जवन कछु कीन्हा
लिखि कागदपर तुला चढ़ावो * सांची लिखो द्रव्य जेहि पावो
दश सहस्र मख कीन्हा राई * सो लिखि मानिक तुला उठाई

पलरा दोऊ रहे समाना * रती न चढ़ा महीप लजाना
बोला शाह और लिखि धरहू * साची लिखो झूठ परिहरहू
सो०हेम गऊ गज बाज, दीन्हों कन्या दान जो।
तुला चढ़ायो राज, सोऊ सब बिरथा भयो ॥
जहलगि लोग रहे तेहि ठामा * हिन्दू गुमाश्ता चार गुलामा
सबन कही झूठ तुम अहऊ * ठगहीकरि सुखसम्पति चहऊ
जो तुम करते दानरु धर्मा * कश्चन चढ़त न कौने मरमा
लखिसब बोला शाह सुजाना * कौने समय कीन तुम दाना
बीरभद्र कह सुनिये शाहू * जब हम थे सोरठके नाहू
गजरथ तुरग पालकी याना * भृत्य भृता बहु चमू खजाना
तब यह दान दीन्ह हम भाई * तुमने साची कहा बुझाई
बोला चिट का चढ़े सुनारा * यह अधर्म कर धर्म तुम्हारा
लूटिचारि परजे दुख दिहेऊ * बनितनकहँ बिनबस्तर किहेऊ
बछरा गऊ बेढ़ि ले आयो * हरियर वृक्ष अनेक कटायो
आया कोउ फिरियादी दीन्हा * ले धनसाच न्याय नहिं कीन्हों
सो धन आनि धर्म तुम ठाना * ताते कौन पुण्य परमाना
जबते रङ्क भयो तुम राई * तबते पुण्य कियउ कछु भाई
दो० कह्यो महीपति बचनमृदु, सुनिये शाह सुजान।
भिक्षा करि भोजन मिलै, काहेम कीजै दान ॥
कु० कीन्ह पयाना यहाँको, सुमिरि हृदय गणराय।
तेहिमगइकमरकेनिकट, भँवरी चारि लगाय ॥
भाँरी चारि लगाय, आपं हरि ग्रास उठावा।
तेहिसमय मम निकट, एक अभ्यागत आवा ॥
छुधित देखि मैं तासुको, उभय मधुकरी दीन्ह।

देॐ मन श्रवण सुनहु, यही पुण्य जग कीन्ह ॥
मणिमाणिक्य तिन्हतुला चढ़ायो * दान गहि धरि हेम उठायो
नरहीं पग्रा गौरहू गनऊ * पुनि लै पुत्र चढ़ावन भनऊ
ज्यों ज्यों कनक आनि चढ़ावै * त्यों त्यों गला अधिक गरुवावै
सडेनानि सुवरण शाह निकेला * है भीरि गम भयो न नेता
बोला मानिक सुनहु नरेशा * अब नहिं हेम हमारे लेशा
जौहै जो कछु है गहि लीजै * अपने नगर पयाना कीजै
सुनि नृप मेहिमां ऊंट मँगायो * सकल कनक तिनमाहिं लदायो
लीन्ह संग सिपाही नाना * निजसोरठ कहँ कीन्ह पयाना
पहुँचे दिन तिसरे घर धाई * लखि गलिहाश्मा सुख अधिकाई
बहुरि सेन नृप आनि अनेका * चतुरंगिणी एकते एका
दो० दै डंका अरि भूपपर, चढ़ा चमू सजाय ।
रामकृपा तेहि जीतके, लीन्हो राज छिनाय ॥
आय निकल महीतल कीन्हा * विप्रनदान विविधविधि दीन्हा
सकल शाग पुनि राज सुधारा * पाले प्रजा अनेक प्रकारा
अरि रन कंटक होन नहिं पावे * करें ताहि नृप दण्ड दिवावै
सागेहु करन भक्ति युत रानी * छाड़ि अनातकर्म मनमानी
आनि साधु नगर में कोई * मिले पुर चलि भूपति सोई
करि प्रणाम मन्दिर लै आवे * पदगल तरि निजशीश चढ़ावे
षोडश भाँति पूजि सनमानी * मन जोगवत रहैं भूपतिरानी
सुने कथा हरिकीरति गावै * तजि सतसंग अनत नहिं जावें
सेवक सचिव करें पुर काजा * विष्णुचरण सेवै नित राजा
भवन बनाय सुवस्तु भराई * मुदित देइ महिदेवन राई
सुमन वाटिका बाग लगाये * वापी कूप तड़ाग खनाये

करै जो धर्म कर्म शुभ जानी * वासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी
सहित नेम सुमिरै हरिनामा * क्रोध न लोभ मोह मद कामा
युक्तिसहित करि भोग विलासा * ममग्पाय तनु तजि अनयासा

हरिगीतिका छन्द ॥

अनयास निज वपु त्याग भो हरिरूप करि आयुध धरे ।
भुज चारि उर पट मुकुट कुण्डल तिलक शिर मालागरे ॥
आरूढ़ सुभग विमान लखि सुर सुमन बहु बरषायऊ ।
जप योग तपते अगम सो पद भक्ति करि नृप पायहू ॥

दो० कह रघुनाथ अधर्म करि, पुनि हरि सुमिरण कीन्ह ।
फरम बन्धते छूटिकै, मोक्ष स्वरूपी लीन्ह ॥
तजिकुकर्म शुभकर्म करि, द्रव्य कमाय जो कोइ ।
ताहि लगावै धर्ममें, तपते अधिकी होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्रमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतनवरिभद्रप्रसंगवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः ॥१६॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
महभारथ सद्ग्रन्थ को, कहौं इतिहास वखानि ॥
सो० शौनक सहित हुलास, पूछेउ कै पद धर्म के ।
कितउतपति कितनास, कितअस्थितिविस्तारकित ॥
कु० कह्यो सूत मुनि धर्म के, चारि चरण पहिचान ।
प्रथम सत्य पुनि दया है, और तपस्या दान ॥
और तपस्या दान सत्यते उतपति सोई ।
दया तहा विस्तार, क्षमा ते अस्थिर होई ॥
नाश होतहै लोभ करि, क्रोधौते दूरी रह्यो ।
कृतयुगचहुँपुनितीनिफिरि, दुइकलिइकवेदनकह्यो ॥

दो० सुनशौनकाजेहिंभांतिजिन, धर्मकिहिनिजतनुधारि ।
लिखे पुराणन में कहौं, तिनमें ते दुइचारि ॥
भूप त्रिसंकुतुभुजबली, महिमण्डलरिपुजीति ।
कीन्ह्यो सुख गोद्विजप्रजन, सहित वेदकी रीति ॥

चन्द्रप्रभा रहै तिनकी बाला * जिन जाये हरिचन्द्र नृपाला
मदनावति हरिचन्द्र कि रानी * जासु सुयश त्रिभुवन में जानी
रोहिताश्व रह तासु कुमारा * इन्द्रावती वधू सुकुमारा
करै राज्य हरिचन्द्र नरेशू * धन अधर्म कर लेइ न लेशू
तासु राज्य कोउ दुखी न रहई * चारों वर्ण धर्म निज गहई
सब सुन्दर सब निरुज शरीरा * सब गुणज्ञ सब पण्डित धीरा
तेहि पुर रामभक्त नर नारी * सन्त समागम रुचि अधिकारी
निशि दिन भूपप्रीति हरिचरणा * सुमिरण पूजन वन्दन करणा

सो० वापी कूप तड़ाग, खनवाये मारग बिषे ।
लगवाये बहु बाग, बनवाये हरिहरभवन ॥

दो० बिटपफूलफलसहितगिरि, प्रकटभई मणिखान ।
कामधेनु भै भूमिजल, कहे दोहु धन आन ॥
धर्म बचन मन जो करै, सो अरपै भगवान ।
भक्तिवन्त भूपालवर, हरि तजिरतिनहिंआन॥

प्रतिसम्वत सब माल खजाना * देइ लुटाइ न राखै दाना
नृप कीरति सब जग में छाई * जहा तहा मुनि करें बडाई
कहैं कि नृप हरिचन्द्र समाना * है न अवर धर्मज्ञ जहाना
सुनि कौशिक मुनि कहा रिसाई * अबहीं नृप सत देहु डिगाई
तुरत अवध पुरी चलि आयो * कोलक कुनप बिशाल बनायो
प्रबिशि वाटिका चांडन लागे * धुरधुरात रखवार भागे

ते भूपति पहँ जाय पुकारे * सुवर देत इक बाग उजारे
सुनि नरेश पठये भट भूरी * आये सब जहँ कोल गरूरी
दो० करि उपाय हारे सकल, कोल सु निकरयो नाहिं ।
सुनि हरिचन्द्रतुरङ्गचढ़ि, पहुँचे तेहिके पाहिं ॥
भाग वराह टाप सुनि पावा * देख ताहि भूपति रपटावा
कहुँ लखि परत कबहुँ दुरिजाई * सघनविपिन इमि गयउ लिवाई
आगे बढि मुनि युक्ति उपायो * यक पुत्री यक पुत्र बनायो
आपु भये पण्डित तेहि बेरा * लागे करन ब्याह तिनकेरा
अब वराह दीख नहिं जबहीं * आये नृप तिनके ढिग तबहीं
लखि क्षितिपति बोला द्विजसांई * यहि कन्या के है नहिं कोई
पायँ पूजि याके नृप देहू * तुम धर्मज्ञ जगत यश लेहू
कह हरिचन्द्र विपिन के माहीं * है कछु प्रभु मेरे ढिग नाहीं
नगर माहिं जो चलते देवा * सब विधिते तहँ करतिउँ सेवा
विप्र कहा कछु सगुन करीजै * गृहलिवाइ पुनि चहो सो दीजै
है लगाम कुञ्जी तव तीरा * तेहिते पद पूजो रण धीरा
तुरतै नृप पद पूजै लीन्हा * विश्वामित्र स्वाल पुनि कीन्हा
मैं तुम्हार पण्डित हौं राजा * मोको कछु दीजै महराजा
भूपति कहा मांगि द्विज लेहू * कनक तीनि मन राजन देहू
कह हरिचन्द्र दीन द्विजराई * चलहु भवन मन लेहु भराई
कन्या कुँवर गुप्त ह्वै गयऊ * मुनि नृपसङ्ग अवध चलिभयऊ
राजा वाजि चढन तब लागा * छीनिलीन मुनि गहिकर वागा
दो० कह ऋषि कन्यहि देइकै, पुनि नृप फेरे लेत ।
अस अधर्म नहिं चाहिये, तनक वस्तु के हेत ॥
अस कहि आपु भये असवारा * पाइ पियादे चले भुवारा

पहुँचे नहीं अश्व के साथा * आगे वदि टरे ऋषिनाथा
नृप सुकुमार बहुत श्रम पायो * कछुदिन रहे अवधपुर आयो
लखि नृप खुशी भये नरनारी * गये भूप निज भवन मँझारी
सुभग गलीचा एक बिछायो * करि सनमान मुनिहिं बैठायो
चरण पखारे वारि मुख नाई * भोजन कहँ पूछा पुनि राई
सुनि मुनि कहा हेम मम दीजै * पीछे अपर बात कछु कीजै
तब नृप कलरु भराइ मँगावा * कह्यो लेहु मुनि वचन सुनावा
कुलीदान दियो म्वाहिं राई * द्रव्य सकल तेहि भीतर आई
जहँ लगि राप घोडकै वानी * तहँ लग्न भई हमारी रानी
मेरि द्रव्य मोसो कहै लेहू * औरै कनक आनिके देहू
नाहित कहौ दीन नहिं राई * हम अपने आश्रम का जाई
कह नृप शिर काटै जो कोई * ऐसि बात हम ते नहिं होई

दो० सुनि सुत रानी भूपतिहु कह्यो शीश धरि माथ ।
मनु म तु सोनेपर हमैं, बेंचि लीजिये नाथ ॥

अस सुनि तिन्हैं लीन ऋषिराई * बेचन हेतु चले ऋषिराई
आनि प्रजा लै हेम सिधाये * राजे मोल लेन बहु आये
विश्वामित्र कह्यो तिन हेरी * प्रजाकि द्रव्य हवै नृप केरी
आन देश तहँ बिकहु नरेश * चले बनारस सहत कलेश
आगे मुनि पाछे नृप रानी * तेहि पाछे सुत रोहित जानी
मुनि दूसर द्विज देह बनाई * बैठ्यो पुर कूप पर जाई
राजहि देखि समीप बोलायो * पूछेउ हाल महीप बतायो
बोला विप्र भूप सुनि लीजै * गो द्विज दूरि पान जल कीजै
कह नृप द्विजहि दिये बिन भाई * पियब न पाय प्राण बरु जाई
दो० असकहिं अयनृपचलिदियो, रानी पहुँची आइ ।

कह्यो विप्र जल पीजिये, पेइ गये हैं राइ ॥
रानी वैसे वचन सुनायो * रोहिताश्व पाछे सुन आयो
ब्राह्मण कहा पियउ सुन पानी * आगे पेउ गये नृप रानी
कुंवर कह्यो वे वृद्ध विचारे * छाडिन धर्म प्यास के मारे
हम तो द्विजहि दिहे विन हेमा * घूटब नहीं लार यह नेमा
अतिधर्मज्ञ हिये हम जाने * गाधिसुवन मनमाहिं लजाने
चलत चलत काशी महँ आये * मुनि लै बीच हाट बैठाये
विप्र एक रानिहि लै गयऊ * मनभरि हेम देइ सो दयऊ
मालाकार कुंवर कहँ लीन्हा * फुलवारी महँ डेरा दीन्हा
राजहि लिहिसि डोम यक आई * पाइ पुष्ट चलिभे अतिराई
नृपने कही श्वपच अस बानी * भरा करो नादन महँ पानी
सुनि नृप नीर भरन तव लाग्यो * कहमुनि भूप सत्य नहिं त्याग्यो
जो जल भरे चले मुनि आवे * फोरे नांद पाथ वहिजावे
देखि श्वपच निय तिनते लरई * बैठ रहत कछु काम न करई
सुनि कह डोम भूप सुनु बाता * हम तुम बीच ईश जगत्राता
वाचाबद्ध नृपति तो कियऊ * मरघट निकट बास तव दियऊ
लै शव यहा जो आवै कोई * दण्ड लिहे विन दाह न होई
निशा आइ हमका धन देऊ * भोजन मात्र तात तुम लेऊ
दो० यहिविधिवसतमशाननृप, बहुत दीन धन आइ ।
सुख्यो डोमनायक परम, हितकारी जन पाइ ॥
कछुककालयहिविधिचलिगयऊ * तब मुनि रूप सर्पको लयऊ
हरिचंद सुतहि डस्यो सो जाई * दीन्हों ताहि रविहिं सौंपाई
रानी जब खबरि यह पाई * रोदन करत कुंवर पइ आई
लै लहास गंगा के तीरा * गै जहि घाट रहत नृपधीरा

नारि विलाप करत बिधि नाना * मृत शव देखि भूप दुख माना
प्राँन धीर धीर महीपति कहई * ईश रजाइ शीश पर अहई
दुःख सुख देह पार्य संग लागे * मिलन बिछोह स्वप्न जिमिजागे
जल अंकश क्षिति पावक वाता * मिलें कीन परपन्न विधाता
नरवरबपु मोहवश शोचा * परभन गये करें दुख पांचा
दो० प्रकट भयो तनु जानिये, सो खोयत तब तीर।
जीवन जागन नित्य है, अस बिचारि धरु धीर॥
नट मर्कट गति देखु निहारी * हरि आधीन सकल तनुधारी
नाच कुलोल फिरत हैं तौलों * अभ आगार लकरिया जौलों
सब संसार काल कर भोगा * आपु न देखत आनहि सोगा
अस्थि माँस बिष्ठा तन अयऊ * चर्म लपेटि सहाय न भयऊ
तेहि पर कहत मोहि सम आना * कछु दिन गये रही नहि माना
अन्प आयु बहु करत उपाई * मृत्यु शिरखड़ी न ताहि डराई
बलिपशु पाइ घास जिमि चरई * बूड़त आपु आन को धरई
दो० जगत बिकटबन कुरगमन, माया जाल पसारि।
काल शिकारी बिन खबरि, लोन अचानक मारि॥
दारु नारि नन ममता डोरी * कर्म नचावत है चहुँ ओरी
दश इन्द्री सुर निजनिज ओरा * खैंचत जहाँ तहाँ बरजोरा
मूसत पाच चोर करदजा * रहतहितू ह्वै निशिदिन सज्जा
जान कुशल कैसे कहि जाई * जिमि खेती हरवाहे खाई
शोक समान देखि सब परई * सुखी सो जो हरिपद मन धरई
दुःख कर मूल मोह है रानी * सो तजि सपदि मातु ममवानी
दरुड नाटपट हमकंह दीजै * पाछे पुत्रदाह निज कीजै
रानी कहा सुनौ नरपाला * तुमते कछू छिपा नहि हाला

कहौ द्रव्य कहवा मैं पाऊं * जो लै तुम्हैं दीजिये आई

दो० कह नृप कर लीन्हें बिना, हौं नहि दाहन देहुं ।
स्वामी केर निदेश तजि, नाहक अधरम लेहुं ॥

सो० तेहि ते मै अब जाय, पूछौ प्रभुते हाल यहु ।
जो वे देइं बताय, सोइ करब पुनि आइकै ॥

असकहि हरिचंद नगर सिधाये * गाधिसुवन मरघट तहँ आये
रानी से अस बचन उचारा * बैठि लिहे कत मृतक कुमारा
रानी सकल हाल कहिदयऊ * पुनिमुनि ऐसे बोलत भयऊ
जो दुरवृत नाइ करी निदेशा * तौ तोहिं दहन न देइ नरेशा
तेहिते मै तोहिं देउ बताई * भस्म सकल तन लेहु लगाई
बालक यक आकर्षि जो लीन्हा * सो रानी कहँ मुनिवर दीन्हा
कह्यो कि लै मठ बैठो जाई * मैं तुम्हार सुत देउ जराई
सुनि रानी गै मण्डप जबहीं * कौशिकमुनि पुर आये तबहीं
जहँ तहँ अस दीन्हो गोहराई * नगर तुम्हारे डाइनि आई
पूछिनि कहा हवै मठमाहीं * यामे झूठ कहत हम नाहीं
गई अबै पुरते सहमोदा * लीन्हें यक बालक शव गोदा

चौबसाछ० सुनि सब धाये । तेहि ढिग आये ॥
रूप निहारी । अति भयकारी ॥
बालक चीन्हा । गहि कर लीन्हा ॥
नृपपहँ ल्यायो । कहि समुझायो ॥
भूप रिसाई । दिहिसि टँगाई ॥
कह्यउ कि धावो । श्वपचहि लावो ॥
गरदन मारो । करो न बारो ॥
हिसक त्यागे । भल नहिं आगे ॥

दो० गा इक धावन डोमगृह, कह्यो हाल समुझाय ।
तेहि पठवा हरिचन्द्र कहँ, चलि आये तहँ राय ॥
राजा निज रानी पहिंचान्यो * तनको मोह न मनमें आन्यो
कैत्ता तुरत उठायो राई * मारो शीश विलग है जाई
आइ तबै हरि कर गहि लीन्हा * जयतिजयति नभ देवन कीन्हा
धनि रानी धनि नृपति महाना * तज्यो न धर्म सह्यो दुख नाना
सुदिन सकल धर्मज्ञ कहावैं * कुदिनकसौटी परि खुलि जावैं
घन प्रहार विन साचे हीरा * अगे कि सके काचकर खीरा
शस्त्रशास्त्र जिमि सबकोइ बांधै * शूर सोइ जो समर न कांधै
मुनि तें कह्यो रिसाइ खरारी * तुम्हर मत्सरता अति भारी
जप तप संयम करते भयऊ * आदिसुभाव तदपि नहिं गयऊ
अस धर्मज्ञ नृपहि दुख दीन्ह्यो * यामें कहा लाभ का चीन्ह्यो
धर्म डोलावन इनकर आयो * फूकन चहत सुमेरु उड़ायो
तपकर तुम्हें बहुत अभिमानू * सो नहिं रही सत्य यह जानू
सुनि मुनि चरण परे ह्वै दीना * प्रभु अपराध बहुत मैं कीना
करहु सो क्षमा जानि अज्ञानी * नृपपद परहु कह्यो प्रभु बानी
सुनि मुनिगहे चरण तजि माना * लखिनृपकौन सकुचिसनमाना
तुरतै पुत्र दीन मंगवाई * जो प्रथमे रवि कासी पाई
दो० नृप हरिचन्द्रहि जानिकै, पुरबासी सब लोग ।
भूपसहित विनती करी, भये दरश विधियोग ॥
सो० बोले विष्णु बहोरि, जो भावै सो मांगिये ।
कह नृप दोउकर जोरि, मोको कछू न चाहिये ॥
रानी ते पृथ्भउ सुरराई * मागी जो कछु वाको भाई
रमानाथ नारी ते भाषा * मागहु वर जो मन अभिलाषा

राजा कहा नाथ मुनि लीजै * प्रथमै भक्ति आपनी दीजै
जहँ जहँ जन्म धरब हम जाई * तहँ तहँ हरिचन्द्रै पति पाई
पुत्र मिलै रोहित समाना * राजकाज धन धाम खजाना
यहि बिधि पुनि सांगे नहिं आई * जौंन नाथ दरश तव पाई
यह बरदान देहु मोहि स्वामी * और न चाहिय अन्तर्यामी
सुनि हरि सजलनयन होइ आयो * प्रेमसहित निजहृदय लगायो
तुम समान प्रिय जासु अगारा * कम न होइ तहँ धर्म अपारा
चलहु अवध निज राज कराजै * प्रजा अनाथ तिन्हैं सुख दीजै
सुनि हरिचन्द्र अवध चलि आये * पुरवासी लखि रत्न लुटाये
सिंहासन भूपनि बैठारे * जगनिवास बैकुण्ठ पधारे
बहुरि सकल सगर करि दूरी * रानी सहित किहिनि सुख भूरी

गी० छं० ॥

सुखभूरिकरि नृप रानि परजन विविधविधि पालत भये ।
तजि अन्त समय शरीर विन परिशर्म हरिपुरको गये ॥
यह कथा नृप हरिचन्द्र की तुम ते कही समुझाइकै ।
अब और यक इतिहास भाषौं सुनहु मुनि मनलाइकै ॥

सो० हंसध्वज नृप तासु, तनय सुधन्वा हरिभगत ।
निजप्रद्युम्नोभासु, शङ्खलिखितखलद्विजनहित॥
रन्तिदेव नृप आन, बहु दिन मे भोजन लहे ।
विप्र शूद्र शठ श्वान, सनमाने तब मिले हरि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसम्मतआगरप्रथउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीरचितहरिचन्द्रशुभनारायणप्रसंगवर्णनोनाम
सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
बर्णौं भारत की कथा, कछु दालभ्य बखानि ॥
सो० शौनक मनमें गुण्य, पूछ्यो पद शिरनाइकै ।
जिवरक्षा कृत पुण्य, होत कहा सो वर्णिये ॥
सुनि सुमन्त बोले हरषाता * नीक प्रश्न कीन्हो तुम ताता
धर्ममूल जिव रक्षा जानो * सुनो तासुकृत पुण्य बखानो
जहँ लगसब तीरथ करि आवे * गया माहिं नित पिण्ड परावै
गो गंजु हय पट माणिक हेमा * देहि विप्रन्ह करि नित नेमा
यज्ञ सुसफल करे अन्न दाना * सयम नेम तपस्या टाना
ये सब पुण्य जो तुला चढ़ावै * जिवरक्षा सम मोउ न पावै
राजा शिवि की कथा बखानौं * जिवरक्षा तिन कीन्ही जानौं
भूपति यज्ञ करत इकवारा * रहे तहां महिदेव अपारा
इन्द्र अग्निशिवियश सुनि गायो * लेन परीक्षा दोउ मिलि आयो
अग्नि कपोत वपुष तब कीन्हा * बाजरूप वासव धरि लीन्हा
भाज कपोत बाज रपटावा * नृप जहँ यज्ञ करत तहँ आवा
दो० बैठे शिवि लखि गोदमें, दुर्यो कपोत डराय ।
पीछे बाज बोलत भयो, नृपते बचन बनाय ॥
अहो भूप धर्मज्ञ तुम, महूँ सुनी यह बात ।
सोह कृपणता है नहीं, तनकौ तुम्हरे गात ॥
तुम सबको पालो महिपाला * मन्त अमन्त कहा नर बाला
अवगुण देखि छिपावै जानी * गुणको सदा धरत उरआनी
द्वार अतिथि जो कोई आवै * तुमते निफल जान नहिं पावै
अब जनि धर्म छांड़िये राउ * यशते रहे अयश जग आवै
भोजन मोर कौन रहायो * ताको तै क्यों गोद छिपायो

भूखो हौं बहु दिन को राई * याको मोहिं देहु पकराई
राजा कहा श्येन सुनि लीजै * याकी आश छोडि अब दीजै
पक्षी दरपि शरण मम लीन्हा * तजौं न याहि परण दृढ कीन्हा
शरणागत आये जो त्यागै * ब्रह्महत्या ताके शिर लागै
दो० लोभ क्रोध बश परिहरै, करै न रक्षा जासु।
सो नर पापी नीच खल, मुख नहिं देखिय तासु॥
मुख देखे सुकृत घटिजाई * स्मशान लखि सुख अधिकाई
तेहिते यहि तजिहौं नहिं भाई * शीशहु जो कोउ काटै आई
बोला श्येन सुनत असि बाता * मैं तोहि सुना रहे बड़दाता
धर्मटेक सो छाडि भुवाला * लै अपयश जीहौ के काला
दिये अहार होइ जिव रक्षा * तजि हठ लेहु मानि सो शिक्षा
किये अहार प्राण थिर रहई * नाहित तन् तजि मारग गहई
मेरे मुये बहुत कर नाशा * जननिजनक सुतनारि बिनाशा
एक जीव की रक्षा करहू * बहुतेनकी शिर हत्या धरहू
बिन बिवेक धरमहु कर कोई * पाछे तेहि पछिताउक होई
करमन की गति भीनी राई * पुण्य करत पातक ह्वै जाई
तेहिते नृपति मानि अब लीजे * मोर अहार होइ मोहिं दीजै
सो० कह शिबि सुनहु शचान, शरणागत रक्षा करै।
यहिसम धर्म न आन, सो मैंनिजहिरदयधर्यो॥
दो० सोइ परिडत धर्मज्ञ सोइ, सतिवादी मतिधीर।
शीलवन्त ज्ञानीश जो, हरै पराई पीर॥
मोहिं इच्छा कछु स्वर्ग कि नाहीं * नहिं वैकुण्ठ जानके माहीं
मुक्ति भुक्ति की चाह न करहू * नरक परनको मैं नहिं डरहू
दृढ अभिलाष यहै मन माहीं * आवै शरण तजौं तेहि नाहीं

जो मोपर प्रसन्न भगवाना * देहि टेक हिय गहो न आना
सैन धन धाम ग्राम पुर जाई * तजौं न ताहि शरण जो आई
मोहि कपोत परम प्रिय भाई * ताको कहौ तजौं किमि जाई
और कहौ सो लीजै माँगी * सुनि सचान बोला भय त्यागी
भूमि धाम धन धरु अपारा * लिहे मरौ नाहिं काज हमारा
मम भक्षण पक्षी है येहू * सो नहिं देउ तौ अब सुनि लेहू
आपन मांस खवावो मोही * दयावन्त तब जानौं तोही
तुला चढ़ाइ कपोतहि दीजै * तेहि सम धरहु देह मन कीजै

छं० सुनि शिवि मनहरषित भयो, कह्यो धन्य मम भाग ।
अमद अस्वच्छ शरीर यह, परमारथ में लाग ॥
परमारथ में लाग, धन्य जननी जिन जायो।
दीन्हों जात जराय, कहौ केहि कामें आयो॥
हरिसुमिरण अरु कर्मशुभ, मानै पाइ नरदेह पुनि ।
जीवन ताही को सफल, बोल्यो बहुरि सचान सुनि ॥

क्षुधा करै कनु बाज भुवारा * क्षुधित जात है प्राण हमारा
राजा तुरत तुला मंगवायो * पलरा पर कपोत बैठायो
दूजे पला मांस निज धरेऊ * आपन गुरू कपोते करेऊ
नृप राजा फिर काटि चढ़ावा * विहंगपला नहिं समसरि आवा
काटि काटि कियो ढेर डारी * उठ्यो न भूप नेकु निहारी
चढ़ि बैठ्यो नृप तब हरषाई * देखि अग्नि हरि रहे लजाई
सुर देखैं नभ चढ़े विमाना * कहैं कि अस प्रण कहूँ न ठाना
जय जय धन्य धन्य नृप कहहीं * सुमन बरषि निजनिजपुर फिरहीं

दो० अगिनि पुरन्दर कपट तजि, प्रकट्यो आपन रूप ।
है प्रसन्न बोलत भये, धन्य धन्य तुम भूप ॥

विश्वमाहि तुमसम नृपति, है नहि कोई और ।
प्रण कीन्हो भल होइहै, तेरो यश सब ठौर ॥
मेघ नदी जल भूमि द्रुम, सन्तजन्म जो लेत ।
केवल विधि परकट किये, परमारथ के हेत ॥
तुम समान राजा जे आहा * नउ जानिये सनन माहीं
इतनेन की जो निन्दा करहा * रौरवनर्क माहि सो परहीं
तेरे तनकी जार नहीं * हैं नरेन सभग सुगदाई
हम शठ हठवश कुकर्म कीन्हा * नाहक श्राग तुम्हें दुख दीन्हा
सो अपराध क्षमो करि दाया * असकहि सुरपति स्वर्ग सिधाया
यज्ञ जबै पूरण ह्वै गयऊ * तब भूपति मन हर्षित भयऊ
गण विमान लाये हर्षाई * विष्णुलोक लै गवनिनि जाई
जो यह कथा सुनै अरु गावै * यमकिंकर तेहि नाहि सतावै
शिविकी कथा कही ना जाना * और सुनो यक कहौं बखानी
केकी नगर रहै यक शाह * ऋद्धिमान पर कृपण अथाह
देवदत्त अस तासर नामा * सुयशा नाम तासु की वामा
एक बार पतिपद शिरनाई * बोली वचन मधुर सुखदाई
सुनहु नाथ निगमागम गावै * नरतन बड़े भाग्य ते पावै
तेहिलहि जोहरिभजन न करहीं * जगत भार शिर ऊपर धरहीं
सो पाछे पछितात अभागी * जिमिनरवाल अमोलिकत्यागी
ताते पति हरि भक्तिहि कीजे * नरतन पाइ सुफल करिलीजे
धनते धर्म करहु मन लाई * आखिर अन्त संग नहि जाई
ऐसे वचन नारि जब कह्यऊ * सुनिशुचिशाह परम प्रसन्न भयऊ
दो० धर्म करन लागे ललकि, तन मन धन ते दोउ ।
जो माँगै तेहि देइ सोइ, विमुख न जावै कोउ ॥

नवधा भक्ति करै नित नेमा * विप्र वैष्णव पद अति प्रेमा
यहिभांतिन बहु दिवस बितावे * लेन परीक्षा धर्म सिधावे
रूप अघोरी का धरि लीन्हा * शाह दुवार ख्याल आ कीन्हा
हर्षित वैश्य भीतर लै गयऊ * मुदित मनोरथ पूछन भयऊ
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी * मोको आजु क्षुधा बहु लागी
पुत्र तुम्हार वर्ष पट करा * तेहि आमिष मन चाहत मेरा
दोउ प्राणी मिलि सुतवध कीजे * क्षोभ न तनको मनमें लीजे
निजनिज कर मोहिं देहु खवाई * ना हौंरूके तौ अन्ते जाई
सुनत शाह शाहुनि अस वयना * खेलत सुते बोलाये अयना
मारन लगे दोउ मिलि जबहीं * बालक वचन कहन भा तबहीं
मात न मातु घरै महँ रहौं * अब हौ दूरि न खेलन जैहौं
सो० अहो सुवन तव कर्म, होत जो खेलन को लिखा ।
तौ कत लेत्यो जन्म, आइ हमारे जठरमहँ ॥
अस कहि घात कीन हरषाई * बोटी बोटी बिलग बनाई
कह्यो अघोरी सो प्रभु लीजे * देर भई यहि भोजन कीजे
सुने तेहि कहा कि मैं नहिं खैहौं * इतने में तनको न अघैहौं
निजनिज आमिष दीजै थारा * जेहिते जाइ उदर भरि मोरा
सफल जबै काटन कह कीन्हा * तुरते धर्म हाथ गहिलीन्हा
खुशी है आपन वपु प्रकटायो * देवदत्त सो वचन सुनायो
अहो शाह सुनु मैं हौं धरमा * आयो लेन तुम्हारो मरमा
धन्य धन्य तुमहौ धनि ताता * धर्म हेतु सुत कीन्हौ घाता
तुम्हरी पुण्य घटी नहिं भाई * दिनदिनअधिकअधिकअधिकाई
विष्णुलोक बसिहौ तिहुँ प्रानी * जन्म मरण की होई हानी
पुत्र तुम्हार बालकन माहीं * खेलत हवै अमिथ्या नाहीं

मुनि यक सेनक शाह पठायो * तेहिके सग कुवर चलि आयो
देखि मातु पितु हर्षित भयऊ * हृदय लगाय माय भरिलयऊ
दो० भये बिदा तब धर्म करि, देवदत्त सनमान ।
हरिपुरते आवत भयो, ताही समय विमान ॥
गी० छं० ॥
आयो विमान निकेत निर्मल रत्नसागर मणिमयो ।
लयो धाय गणन चढ़ाय तिनका विष्णुपुर बासा दयो ॥
लखि देव जयजयजयति कहिकहि सुमन बहु बरषायहू ।
रघुनाथ गुरुपद माथ धरि यह कथा सूक्षम गायहू ॥
दो० धन्य पुत्र हरिभक्त जो, धन्य पतिव्रत नारि ।
जासों परमारथ बनै, धन्य सो दर्वि निहारि ॥
इति श्रीविश्राममागरसत्रमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
राममनेहीकृतशिविरादेनदत्तप्रसगवर्णनोनाम
अष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णों भारतग्रन्थ की, पुनि इतिहास बखानि ॥
अग्निदेव कर पुत्र यक, तासु सुदर्शन नाम ।
धर्मवान गोजोतवर, क्षमा शील तपधाम ॥
बोधवान नृप निज सुता, दीन्ही द्विजे विवाहि ।
दोऊ प्राणी मिलि बसे, कुरुक्षेत्र महँ जाहि ॥
निशि दिन धर्म सुदर्शन भावै * अतिथि द्वारते विमुख न जावै
मन क्रम करै साधु की सेवा * अन्ते म्वामी सन्त देवा
यहिबिधि कछुककाल चलिगयऊ * इकदिन द्विज मनशोचत भयऊ
साधुन में नहि त्रियको भावा * अरधअङ्ग तेहि बेद बतावा

मैं न होउँ गृह हरिजन आवै * बनिताते सनमान न पावै
तौ मम धर्म होइ सब नासा * जो आदर नहिं पावहि दासा
नारि पुत्र दोउ इकमत होई * ताहि कर धर्म डिगै नहि कोई
दो० अस बिचारि निज बधूते, बोल्यो विप्र सुजान ।
सन्त सेव हिरदे धरौ, जाते होय कल्यान ॥
सन्त सेव हरि सेव से, शतगुण अधिकी जानि ।
निजमुख प्रभु वर्णन कियो, धर्मान्तर में मानि ॥
पुरह धरत नैवेद्य तेहि, शुद्ध करौं मैं देखि ।
स्वाद लेत मुख दास के, कह हरि विसिते पेखि ॥
सर्वाराधन में परे, हरि अवराधन आहिं ।
जनसेवा तेहिते अधिक, कहशिव आगममाहिं ॥
गोविंद पद पूजन करैं, सन्तहि सेवैं नाहिं ।
ते नहि प्रीतम विष्णुकहँ, दम्भिकभाजन आहिं ॥
आवै बैष्णव जासु घर, पावै नहि सनमान ।
नशै पुण्य सौ जन्म की, कह स्कन्द पुरान ॥
यमन क्षेत्र निश्चय तहा, जहा न सन्तस्थान ।
वासै जब हरिक्षेत्र सो, वद वाराह पुरान ॥
साधुभजे भजिजात हरि, जिमिशिशुगर्भमँझार ।
बिन जननी तोपे नहीं, इमि कह अमृतसार ॥
श्रद्धायुत हरिभक्त कहँ, अन्न खवावे कोइ ।
सोई सोमपर्वत सरिस, दिनादिनअधिकी होइ ॥
साधुसेव कीन्ही नहीं, जिन नरतनको पाय ।
ते नर पशुते अधिक हैं, पेट भरन को चाय ॥
पचिपचिमरयोकुटुम्बहित, परमारथ नहि कीन ।

धिकधिक ताकी बुद्धिको, तजि अमृत विष पीन ॥
ताते सुमुखि मानु मम बाता * जाते मोर तोर कुशलाता
तन मन धन सन्तन कहँ दीजै * है अधीन चरणोदक लीजै
गृहस्थाश्रम को धर्म है याही * हरिजनआइ विमुख नहिं जाहीं
जो कछु मन कहैं सो कीजै * सुखप्रद वचन मानि मम लीजै
जो त्रिय कहा करै पतिकेरा * सो पावै सतिलोक बसेरा
सुनि पतिवचन नारि सुखपाई * बोली वचन कपट नहिं राई
अहोनाथ म्वहिं धर्म दृढायो * सुनि तववचन मोहिं अति भायो
तनमनधनकरि सन्तहि पोषिहौं * हे पति परण तुम्हारी राखिहौं
पतनी सो जो अनो मम्हारै * विमुख करै सो शठ निरवारै
पति सो जो त्रियकी पति राखै * निज रतिबिन त्यहिको पतिभाखै
ऐसे वचन कहे जब नारी * सुनत विप्र उरभा सुख भारी
दो० दोउ धर्म लागे करन, तन धन सो तजि नेह।
विविधभाति सेवा करैं, सन्त जो आवै गेह ॥
यहिभातिन बहुकालगे, रह्यो सुयश जग छाय।
मृत्यु दुवारे आइकै, मुहुर मुहुर फिरिजाय ॥८
कबहुँ धर्म पटनी नहिं होई * तात मारिमकै नहिं सोई
यहनिन सुनो सुदर्शन कानन * गये रहै तहँ समिधी आनन
धर्म परीक्षा लेन सिधाये * वेष वेग्न कर बनाये
जहँ द्विजभवन तहा चलिगयऊ * ओघवती ते बोलत भयऊ
हे धर्मज्ञ सुनो मैं तोहीं * मनमथ आजु सतावत मोहीं
तातें अपने तनको दीजै * जेहिते अङ्ग सङ्ग करिलीजै
सुनि करजोरि रह्यो द्विजबामा * लीजै अशन वसन बहु दामा
ऐसी बात न करो गोसाईं * बोले धर्म और कछु नाहीं

कर्वल चहीं शरीर तुम्हारा * जाते लाग्यो चित्त हमारा
जो न देहु तो मारग लीजै * द्वै मा एक बात कहि दीजै
सुनि असवचन नारि शिरनाई * मन में शोच कीन अधिकाई
मेरे तो प्रण कौन सों जाई * सग करों पतिव्रत नशाई
दो० शोचतही श्रुति के वचन, ह्वै आये तब आदि ।
पतिआज्ञा त्रिय करै जो, पतिव्रत जाइ न बादि ॥
तब हरिजन ते बोली नारी * किरपा हमपर कीन मुरारी
गृह तन धन सब तुम्हरे स्वामी * हम सेवक सब विधि अनुगामी
सुनि हरि कुटी कपाट लगायो * ताही समय सुदर्शन आयो
सगिसुननारियसकुचि न बोला * दीन्हो भेद अतिथि तब खोला
मोर मनोरथ पुरवत नारी * खड़ रहो तुम द्वार मझारी
सुनत सुदर्शन अतिसुख पावा * धन्य धन्य पति वचन सुनावा
धन्य प्रिया तव पितु अरु माई * पूज्यो सन्तहि हेत बड़ाई
आखिर तनु नहिं रहत तुम्हारा * ह्वै जातो कृमि विष्ठा छारा
सो वपु वैष्णव हेत लगायो * राख्यो धर्म मोहि अतिभायो
अहो सन्त मन निश्चल होई * मानि शङ्का मान्यो तुम कोई
धाम वाम तन धन जो हूंगे * सो सब जानो साधुन केरो
मैं सबविधि सन्तन को दासा * और न मेरे आन उपासा
पुण्य हमारि उदय भे आजू * जो घर सध्यो तुम्हारो काजू
वचन सुदर्शन के सुनि प्यारे * धर्म निकरि आये तब द्वारे
धन्य धन्य तुम धनि तव बाला * प्रण आपन कीन्हो प्रनिपाला
दो० अहो सन्त मैं धर्म हौं, यह पतिव्रता नारि ।
लेन परीक्षा आयऊं, नहिं कछु दोष विचारि॥
तुमसम पुण्यसलोक नहिं, तीनिलोक महँ कोइ ।

जस कीन्हो तस जगत मे, काहू ते नहि होइ ॥
देव दनुज नर नाग मुनि, गणिकातजिजगमाहिं ।
नारिदोष को देखिकै, रोष करै को नाहि ॥
तुम्हरे क्रोध भयो नहि राई * ऊपर ते बहु दियो बड़ाई
नहीं कृपणता मान न मोहा * समजित इन्द्रीजित न कोहा
बिष्णुलोक तहे बसिहौ जाई * आजुइ लेन बिमान जो आई
अर्धङ्गी तव आर्य अङ्गा * सङ्ग रहौ सो तुम्हरे सङ्गा
अर्ध अङ्ग ते सरिता होई * बोधवती कहवाई सोई
जो कोइ मज्जै याहि मझारा * तासु पाप सब हैहै छारा
असकहि धर्म भे अन्तर्धाना * गण लै आये सुभग बिमाना
घोडा सहस लगे त्यहि माहीं * पवन समान उड़त जे जाहीं
पति पत्नी तेहि माहि चढायो * लखि सुर हर्षि सुमन बरसायो
अपने पुण्य प्रताप ते दोऊ * गे हरिपुर जानै सब कोऊ
दो० द्वारे मृत्यु बैठी रहै, सत देखन के काज ।
प्रण छूटै तौ मारहू, ज्यों तीतर को बाज ॥
सो० प्रण जब छूट्यो नाहि, चली तुरत खिसिआइकै ।
जाति न मृत्युघरमाहिं, है मुनि पुण्य प्रतापते ॥
पढ़ै सुनै नर कोइ, यहइतिहासजोनित्यप्रति ।
मृत्यु अकाल न होइ, भाषत भीषमपर्व इमि ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुदर्शनकथावर्णनोनाम
ऊनविंशोऽध्याय ॥ १९ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
बर्णों भारतग्रन्थ की, पुनि इतिहास बखानि ॥

और सुनो मैं करौं प्रकासा * बहुला गऊकेर इतिहासा
चन्द्रावती पुरी यक अहई * चन्द्रसेन राजा तह रहई
द्विज हरिभक्त बसै तेहि ग्रामा * बहुला गऊ तासु के धामा
उज्ज्वल अङ्ग हंसकी नाहा * विचरै सदा अभय बनमाहीं
रोहितागिरि यमुना तट एका * गुफनमाहिं रहैं जीव अनेका
वृक्ष सघन बेली उग कानी * चारो तरफ भरा तेहि पानी
यक दिन बहुला सङ्ग बिहाई * चरत चरत परबतपर आई
सिंह एक निकसा अतिभारी * बड़ बड़ रदन बदन भयकारी
बहुले देखि सामने धावा * निकटजाय असवचन सुनावा
जीवन कठिन जानु निज गाई * लेहौं तोहि आजु मैं खाई
जो आवै इहि बन के माहीं * मोसे सो उबरत है नाहीं
सुनिहरिवचन गऊ बिलखानी * बछरा छोट आपनो जानी
केहरि कह रोवे केहि काजू * बचिहौ नहिं हमते तुम आजू
वद बहुला सुनु केहरि भाई * आपन शोच मोहिं नहिं राई
जो उपजे सो निश्चय नाशे * जो नाशे सो पुनः प्रकाशे
प्रीति पुत्र की हृदय में गाढी * तेहिते मोह अग्नि मोहिं बाढी
प्रथम पुत्र जावा मैं याही * पियतअवै पय तृण नहिं खाही
सो० बच्छै क्षीर पियाय, फिरि मैं इहनै आइहौं ।
तब तुम लीन्ह्यो खाय, सुनिबोल्योमृगराजहँसि ॥
दो० जो कोउ शूली चढत पर, लगन लिखावै धाय ।
तैसे तैं मृत्यु भूलिकै, बछरा के ढिग जाय ॥
मेरे फन्द आय जो परेऊ * सो जानो जग जन्म न धरेऊ
तैं चाहे निज पुर को जाना * मोहिं बनाये निपट दिवाना
घर मे जाय पुत्र को पैहौ * प्राण देन फिरि काहेक ऐहौ

तानै हो नहि रहौ जाई * सुनि बहुला बोली अकुलाई
विप्र गऊ पितु मातै मारै * बनिता बालक गुरू सहारै
कन्या ब्याहि आप जो देव * दोउ जनन ते पैसा लेवै
साधुन की निन्दा मुख गावै * हरिहर तजि जो आनहि ध्यावै
इन करमन का पाप जो जागै * नहि आऊं तो मम शिर लागै
झूठी साखि सभामहं बोलै * अतिथि निराश बासते टोलै
तुला चढाय थाटि फिरि देवै * माफिन में पुनि पोतहि लेवै
कथा होत जो दुन्दि मचावै * विघ्न करै होने नहिं पावै
चोरी ज्वारी रत परनारी * हरिहिंसक मद मांस अहारी
येते कर्म किहे जो पापू * नहिं आवों तो मम शिर थापू

दो० हरिविमुखन ते मित्रता, रामजनन ते रोष।
जो नहि आऊं तो परै, मेरे शिर यह दोष॥

मात पिता जे सेवें नाहीं * भली वस्तु जे छिपिके खाहीं
दे विश्राम दगा करिजावें * साधु गुरु में दोष लगावें
हरिहरजन गुण कह न सुनई * परउपकार लागि शिर धुनई
औरौ पापकर्म जो होरी * नहि आवौं तो लागैं मोहीं
सुनत सिंह बोला हे गाई * शपथ तोर मोरे मन भाई
हमरे मन विश्वास तिहारो * जित चाहो तित बेगि सिधारो
आयो आतुर नीर पियाई * असजनि जान्यो ठग्यो बनाई

दो० अहो सिंह तब ठगन की, समरथ काको आहि।
ठगा चहै जो और को, सोई शठ ठगि जाहि॥

अस कहि आयसु हरिको पाई * हुंकरत बहुला तुरत सिधाई
पहुंची जब बछरा के तीरा * बाल विलोकि गई सब पीरा
अकुल जननि देखि दिगआवा * चूमि चाटि मा दूध पियावा

चित उदास अस्याकार जानी * बोला बच्छ अस ह्वै बानी
मातु विकल देखो मैं तोही * कारण कौन बताओ मोही
बहुला कहा पियहु सुत छीरा * जेहिकारण आइउ तव तीरा
आजु निहारि लेहु मोहिं बेटा * कालिहते नहिं होई पुनि भेटा
बन में हरि घेरयो कहि खेहा * सौहैं दै आइउं फिरि जेहा
बोला बच्छ जाउँ मैं माई * तेरे बदले म्वहिं हरि खाई
धर्मवान माता तैं आही * तव सेवा मोहि करनो चाही
जाते मम होवै उद्धारा * सुनि बहुला अस वचन उचारा
दो० हे सुत आई मृत्यु मम, तेरी आई नाहिं।
मेरी बदि तू कौन बिधि, जैहै हरिमुख माहिं॥
सो० सुनु सुत मम उपदेश, नखी नारि नृप शृङ्गधर।
सरि सशस्त्र अकुलेश, इन बिश्वास न कीजिये॥
अनकहिं बोलि गोवन ढिगआई * देखि मिलीं सुरभी सब धाई
पूछन लगीं कुशल कित रहेऊ * गिरि पर गहन सिंह तहँ गहेऊ
खाये लेत रहे मृगराजा * सौंह देइ आइन सुत काजा
सबसों बिनय करी कर जोरे * छमा कीजिये अवगुण मोरे
हौं अब जात सिंह के पासा * सुनत सखी सब भई उदासा
बोलीं बिलखि शास्त्र अस कहई * झूठ कहिय प्राण जो रहई
तोहिते बहुला तुम मति जाओ * घर बैठी निज प्राण बचाओ
बहुला कहा सखी सुनि लेहू * अस उपदेश हमैं मति देहू
आपन प्राण वचन के हेता * झूठ कहै तेहि जानो प्रेता
परके प्राण झूठ कहि बाचैं * झूंठ नहीं सो जानहु साचैं
जाकी मृत्यु मरै नर सोई * आपु अकेलो संग न कोई
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं * पाप न झूठ सरिस जगमाहीं

शिवते झूठ कह्यो चतुरानन * जगमहँ पूज्य नहीं तेहि कानन
सियते झूठ नदी गो कहेऊ * भक्ष्य अभक्ष्य गुप्त है वहेऊ
हरि श्रुति निन्दा झूठ बखानी * भये बोध सोइ पातक जानी
उमा शम्भु ते झूठ उचारा * त्यहि कारण दुख लगो अपारा
नर वा कुञ्जर धर्म बखाना * तेहि अब भयो अगुप्त पयाना
तेहिते सत्य तजब हम नाहीं * अस कहि चली केशरी पाहीं
नमस्कार सब गोवन कीन्हा * सत्यहेतु जीवन तनु दीन्हा
चलत चलत बहुला तहं आई * बैठो रह जहां मृगराई
बोलत भई सिंह मोहिं खावो * हो आई निज क्षुधा मिटावो
देखि व्याघ्र कह बैठो माई * अब न खाव तोहिं चहु मरिजाई
सतिवादी कहुं दुख को पावै * तिमिर कबहु दिनमणिहिमिटावै
कीन्हो सत्य जौन कछु कहेऊ * तव आवनमोहिं अचरजभयऊ

दो० सत्यमाहिं सब लोक हैं, सत्यमाहिं सब धर्म ।
ज्ञान मुक्ति है सत्य मे, सत्यमाहिं शुभ कर्म ॥
धन्य धाम तव धन्य पुर, धन्य चरत तृण जौन ।
धन्य धरणि जहँ पगधरौ, धनि किसान है तौन ॥

धनि तव चीर धन्य जिन पीन्हा * धन्य तुम्हार दरश जेहि कीन्हा
मै निज भागि धन्यकरि चीन्हों * जबते दरश आपको कीन्हों
अब बहुला सो दीजे ज्ञानू * जेहिते होय मोर कल्यानू
बहुला कहा सिंह सुनि लेहू * हिंसाकरन छाड़ि अब देहू
हरि सुमिरणमें तन मन दीजै * यह उपदेश मानि मम लीजै
को तुम हो सो कहहु बखानी * सुनि कण्ठीरव बोला बानी
हे स्वामिनि मैं हौं गन्धर्वा * विद्या रूप केर उर गर्वा
देवशाप छांपी तनु पाया * यहि तनुते बहुपाप कमाया

तुम्हरे दरश भये अघ नाशा * छूटो शाप हृदय परकाशा
मैं प्रसन्न हो तुम घर जाई * मम अपराध छम्यो ये माई
अस कहि हरिसुमिरनमें लाग्यो * भोजन नीर देहसुख त्याग्यो
कछु दिन में तनु छूटत भयऊ * चढ़ि विमान सुरपुरकहँ गयऊ
बहुला जब आई निज धामा * पुत्र सहित पायो विश्रामा
सत्य वृत्ति सबहिन उर धारी * बच्छसहित भइ धेनु सुखारी

हरिगीतिका छन्द ॥

सुखसाथ रहि कछुकाल चलत विमान लेन जो आयहू ।
नृपसहित पुरनरनारि द्रुम पशु आदि सबन चढ़ायहू ॥
लै उड़े गण लखि देव बरषे सुमन घन जय जय कियो ।
गयो लाँघि सातौं स्वर्गपर गोलोक में बासा लियो ॥

दो० बहुला हरिसम्वाद नित, कहै सुनै जो कोइ ।
रहै सदा आनन्द में, मृत्यु अकाल न होइ ॥

छप्पय । धाममाहिं जो पढ़ै, सुक्ख बालक का होई ।
गऊखरिक जो पढ़ै, वृद्धि गौवन की सोई ॥
दुखी होइ सो पढ़ै, नहीं तौ श्रवणन करई ।
होइ सकल दुख नाश, और तन रोगौ हरई ॥
बहुलमहातम भारतमें, कह्यों कछुक मैं गायकै ।
सुकि चहै रघुनाथ भजु, रामनाम मन लायकै ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुदर्शनबहुलाकथावर्णनोनाम
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखखानि ।
वर्णौं जैमिनि की कथा, कछु अस कन्द बखानि ॥

सो० मोरध्वज नृप एक, धर्मधुरन्धर नीतिरत।
रामभक्ति की टेक, वधू पिङ्गला पतिव्रता॥
तासु राज्य कोइ दुखी न रहई * मन अधर्मपर भूप न गहई
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * वसैं जान नहि नगर मँझारी
सब मिलि करैं भक्ति हरिकेरी * नृप रानी उर प्रीति घनेरी
माला तिलकसहित जो आवैं * सनत नृप आगे उठि धावैं
भवन लायके चरण पखारैं * चरणोदक लै मातम धारैं
दो० गङ्ग नहाय सहस्र बर, द्वारावति सत्य जान।
सन्तचरणजल जो पियैं, तुलै न तेहिसम आन॥
सो० सिंहासन बैठाय, पोडश विधि पूजन करै।
नित नवनेह बढाय, सेवैं नृप सुत नारि युत॥
ज्यहिदिन सन्त न कोई आवैं * तेहिदिन आप न भोजन पावैं
चोर सात मिलि कीन्ह विचारा * हरिजन के आधीन भुवारा
साधुन केर वेष धरि लेहू * सब चलिये मोरध्वज गेहू
नृप ते प्रथम सेव कराई * धान पाय मुसब धन भाई
अस कहि सुन्दर वेष बनायो * सातौं हरि गमा गृह आयो
देखि दण्डवत कीन महीपा * मानो लयो स्वातिजलसीपा
पदपखारि आसन बैठायो * धूप दीप आरती उतारयो
अन्त पुर मे आसन दीन्ह्यो * सुत वनिता सब सेवा कीन्ह्यो
एक दिवस राजा मन आई * वन की शोभा देखिय जाई
छप्पय। अस विचारि कसवाहू, अश्वचढि चले भूप जब।
चमू चार असवार, अनुग पाछे लागे सब॥
सघनविपिन मे गये, फिरैं जहँ मृग करिहरिसँग।
बोलत विविध विहंग, फूल फूले नाना रँग॥

विहरतबीतोदिवस निशि, पायकीन्ह विश्राम तहँ।
शुभतड़ाग पुरइनिकमल, करत भँवर गुञ्जार जहँ॥
इहां देखि घर सून, चोर मूसन मन लायो।
हीरा हेम निकारि, भवन बाहेर धरिआयो॥
ढोवत बीती रैनि, लोभ बश कछू न जान्यो।
रानिहिं डार्यो मारि, बाधि वसु वेगि परान्यो॥
इतते सातौ जात हरि, उतते आवत राज।
देखि हिये सशय कर्यो, पर्यो चरण तजि बाज॥
बोल्यो दोउ करजोरि, क्षमौ प्रभु गुनह हमारी।
रानी नारि सुभाव, अवज्ञा किहिसि तुम्हारी॥
चलिये बहुरि निकेत, चेत हमरे तब होई।
सुनि ठग गये सुखाय. राय ते बोले सोई॥
साधु नहीं हम चोर हैं, धन मूसा सो लेहु।
ह्वै दयाल हम सबन पर, जीवदान अब देहु॥
कह्यो भूप धन धाम, वाम सुत देह हमारी।
हवै सकल तव नाथ, वृथा कत होत दुखारी॥
ऐस वचन जनि कहौ, लोग सुनि करिहैं शोरा।
कहि हैं परगट गुप्त, सब हरिजन हैं चोरा॥
गहिकर लाये भवनको, सिंहासन बैठाय।
रानिहिमृतक निहारिकै, शोच न मन मे आय॥
कुं० लाग्यो पुनि सेवा करन, नृप सन्तन की आय।
कनक थार सातहुँन के, धोये चरण बनाय॥
धोये चरण बनाय, मृतक रानी तहँ लायो।
रुण्डहि मुण्ड मिलाय, रामकर ध्यान लगायो॥

सींच्यो चरणामृतहि, प्राण घट माहीं जाग्यो ।
उठी तुरत हरपाय, भूपलखि भाषन लाग्यो ॥
आजु तुम्हें निद्रा बहुत, कहा कि वेरी आय ।
सन्त चले जब रूठिकै, राख्यो क्यो न मनाय ॥
हाथ जोरि रानी कह्यो, सुनो प्राणपति बात ।
सोइगई मै आजु अदि, इन्है न जान्यों जात ॥
कह नृप पद अबते गहौ, गहे रानि सुखभेरि ।
मन मे भयो न मेल कछु, लागे सेवन फेरि ॥
प्रतिमा तीरथ मन्त्र गुरु, वेष जो वैष्णव कोइ ।
जाकी जैसी भावना, ताहि तैस फल होइ ॥

तब हरि पुनिपुनि आयसु मागा * बोले नृप सहित अनुरागा
जो मन चहो मो हमते लीजे * चोरी कर्म छाडि प्रभु दीजे
जन्म भर कह सपति दीन्हा * हरष समेत बिदा तब कीन्हों
ऐसी भक्ति देखि भगवाना * मनबचक्रमते निजजन जाना
मोर ध्वज पर दाया कीन्हो * चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्हो
इति भांति दुख नाहिं आवै * नृप के नगर न पैठन पावै
एक दिवस यमदूत जो आये * चक्र सुदर्शन लखि रपटाये
भागत यम पहँ पहुचे जाई * दण्डफास सब दिहिनि चलाई
तखि हरि कहा हेत का भाई * सुनि गण बोले बचन रिसाई
दण्ड हमार तिहू पुर माहीं * ऊच नीच कोउ छाडत नाहीं
मोरध्वज पुर जान न पायन * देखेहु चक्र इहां भगिआयन
यह अनुचित देखी महराजा * हम ते यह सपरी नहिं काजा
सुनि रविसुत मन क्रोध बढायो * दूतन सहित विष्णुपहँ आयो
शीश नाय कह अरज हमारी * सुनहु नाथ त्रिभुवन सुखकारी

तब आशो ते जाग मँभ्हाग * सब पर रहत है दण्ड हमारा
मारत्गुन पुर दूत हमारे * ते नहिं रोयो चक्र तुम्हारे
दो० दूतनकर अपमान भा, कीन्हिनि फाँस चलाय।
सो यहि कारण कौन है, नाथ कहौ समुझाय॥
हँसियोले हरिगुनहुयम, नृपसम भक्त न कोय।
तेहिने दीन्यो चक्र निज, रखवारी कहे सोय॥
केहि विधि जावें दूत तब, मेरे जन के पास।
सुनत पितृपति जोरिकर, कीन्हों वचन प्रकास॥
छप्पय। भूप करै केहिभाति, यज्ञ मे कहिने मोहीं।
कह प्रभु कहे न बनी, चलो दिखरावों तोहीं॥
चलहि सिंहकरि आतु, माधुकर रूप बनायो।
आये नृप दरबार, देखि उठि पद शिरनायो॥
सिंहासन पधराय कै, षोडश विधि पूजा करी।
भोजनको पूछत भयो, तब नृप ते बोले हरी॥
सिंह एक सम साथ, प्रथम भोजन तेहि दीजे।
कहो सूप का चही, तौनि तनवीरहि कीजे॥
नर को मांस जु देहु, आन मानुज नहिं खाई।
जिनो भक्ति प्रणतजहु, किती शिशुलेहु बोलाई॥
भक्ति तुम्हारी ना तजो, कोटि विघ्न किन होय।
सुतवनिताधनधामतन, सग जाइ नहिं कोय॥
इमि कहिन यक दास बोलाई * कह्यो कि आनहु सुतहि लेवाई
आज्ञा मानि कुंवर ढिग गयऊ * खेलत बोलि लयावत भयऊ
पुत्रहि लखि नृप वचन प्रकासा * हमरे इक आये हरिदासा
तिनके सँग इक नाहर अहई * तुम्हरो मांस खान सो चहई

सो दस आज्ञा अहै तुम्हारी * मेटहु सशय आजु हमारी
सुनि ताम्रध्वज कह शिरनाई * धन्य सो तन परस्वारथ आई
धन्यधाम जह अतिथि कि सेवा * धन्य शिष्य जाने गुरु देवा
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरई * धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई
धन्य ग्राम जो सुरसरि तीरा * धन्य तपी तामस बिन धीरा
धन्य सो नगर जहा रजधानी * राजा धन्य धर्ममतिमानी
धन्य दास जो आयसु मानै * धनि स्वामी सेवा पहिचानै
धन्य श्वान जो इन्द्री जीतै * धन्य सो जाति न गावै भीतै
धन्य सभा जहँ पण्डित होई * पण्डित धन्य क्रियागुन गोई
धनि धन पाइ जो त्यागन करई * धन्य दरिद्री पाप न चरई
धन्य सुखी जो विषय निवारै * धन्य साधु जो मानस मारै
धन्य सो क्षमा समरमह आनै * धनि दाता नहिं दान बखानै
धन्य सो द्रव्य दानमहँ लागै * धनि प्रभुता मद मान न जागै
धन्य कर्म जो भगवत हेता * धन्य ज्ञान वैराग्य समेता
धन्य विरति जो रति भगवानै * धन्य सो कवि हरिचरित बखानै
धनि नर परअवगुणहिंछिपावै * धनि विद्या विकार मिटिजावै

दो० दयावान सो देश धनि, कहत वेद बुध लोइ।
रामभक्त जहँ ऊपजै, धन्य जाति कुल सोइ॥
धन्य घरी रघुनाथ तब, जब होवै सतसङ्ग।
जन्म तासुको सफलजो, रँगै राम के रङ्ग॥

अहो पिता मोहिं भा सुखभारी * जो हरि मागी देह हमारी
अब यह परस्वारथ मे आयो * धनि जननी ऐसो तन जायो
रोग दोषवश छूटै काया * स्वारथ शाल रजाइ रखाया
विष्ठा कृमी खाक होइ जाई * कहाँ कौन स्वारथ फिरि आई

माता भ्रात सुरे दसमासा * तहाँ अनेक मागने तेहि आसा
सो पुनि लुप्यो न परहितमार्गी * मानव जन्म धिग है ताही
दो० भजन परारथ कर्म शुभ, मधे पाय नर देह।
जीवन ताको सफल है, अरु सवक सुख येह ॥
अस कहि पिते नवायशिर, चलिभे कुँवर प्रवीन।
आये केशरि मन्त्र जहँ, कहे वचन ह्वै दीन ॥
अब गोविन्द क्षमका करि ताजे * अहो मित्र तुम देर न कीजे
बार बार एम जब कहेऊ * सुनि यम निजजन प्रकटत भयऊ
रूप चतुर्भुज हरि का लाहा * प्रकट नृपहि कहे दर्शन दीन्हा
धन्य धन्य तुम धन्य प्रयाग * साप सराहत त्रिजनदाग
केहि रविजनय भये यहाँ दई * मन तुम्हार तुमने अभिलाई
जामु प्रपालि तव कीन बड़ाई * मैं निजनयनन देख्यों आई
बोले प्रभु अर मागु नरेशा * प्रणतपाल मेरो यह वेशा
मोर राज यह सब सुखदायिनि * आपनि भक्ति देहु अनपायिनि
एवमस्तु कहि कृपानिधाना * बोले पुनि सुनु भूप सुजाना
रहौ भक्ति जबलगि यह देही * अन्तसमय मम धाम सनेही
असकहि हरि यम तुरत सिधाये * अपने अपने मन्दिर आये
धर्म सुगुन से कथा बखानी * भई शांति मन मिटी गलानी
जो जन चरित सुने नित एहा * होइ सन्त पद पावन नेहा
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमोरध्वजकथावर्णनोनाम
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥
दो० सुमिरि राम सियसन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि।
बरणौं हरि अस्तुतिमत, कछुसोइकथाबखानि ॥

रानिहि मार्यो हरिगणलखि, तदपि न भयो अभाव ।
पुत्रहि दीन्हा झूँपि जन, हिन मोरध्वज राव ॥
यहिविधि भक्ति करै नरनाहा * दिनप्रति बाढ़ अधिक उछाहा
भूप धर्म जो वेदन गाये * सो सकला [illegible] करावै
सुर भूसुर सुरभिन अति मान * वैष्णव कहँ विष्णुहि सम जान
श्रीपति चरण लीन मन जासू * लुब्धक रूप [illegible] न पासू
बहुतकाल यहि विधि चलिगयऊ * और सुनो जो कारनी भयऊ
कीन धर्मसुत यज्ञ समाजा * पर बाजि [illegible] बर साजा
दो० कृष्ण विजय बभ्रूवहन, नीलध्वज वृषकेतु ।
हंसध्वज औरौ सुभट, सेना रक्षा हेतु ॥
चलत बाजि आयो मोर्द्ध, मोरध्वज के ग्राम ।
ताम्रध्वज गहि बाँधि पट, बाध्यो लै निजधाम ॥
चढ़ि रथ आगे आप सिधायो * पाछे इत अर्जुन [illegible] आयो
होन लागे अति मान संग्राम * [illegible]
सात दिवस भरि [illegible] * मोरध्वजसुत जीति न जाई
अर्जुन आदि वीर जे रहेउ * दियो [illegible] विकल सब भयउ
लखि अचेत निज मन्दिर आयो * [illegible]
भक्ति करत जाकी नित रहिये * तिनने युद्ध करन [illegible]
मोहि दुखहरन सुरन सुखकारी * धर्यो आय वपु कृष्ण मुरारी
सुनि ताम्रध्वज यही सुवाता * अनजाने अनीति मैं ताता
यहा कृष्ण पारथ ते कथ्यऊ * सात दिवस इहँ है गयऊ
मोरध्वज है भक्त हमारा * तेहिते लरे न पैहौ पारा
सुनि कपिध्वजके भा अभिमाना * हमते बड़ा भक्त को आना
जिनके वश नित रहत गोपालय * धनुष केरि विद्या उरआलय

यह अभिमान कृष्ण प्रभु जाना * लगे विचारन इमि भगवाना
अ०छं०जाय द्वैत ते ज्ञान जाय कुल द्विजहि सताये ।
जाय नीचसँग सुमति जाय सुध भोजन खाये ॥
जाय क्रोध ते धर्म जाय आदर नित मांगे ।
जाय नीति बिन राज्य जाय शूरापन भागे ॥
जाय ज्ञान ते मोह जाय अघ हरिगुण गाये ।
जाय तिमिर रवि उदय जाय विद्यालस आये ॥
जाय यती वशकाम जाय यश लोभ बढाये ।
जाय गृही बिन कार जाय सुख सबहिं सताये ॥
जाय कुमति ते द्रव्य जाय संतोष ते ममता ।
जाय कपट ते प्रीति जाय रिस कीन्हे समता ॥
जाय लखाते शोच जाय पातकते शोभा ।
जाय सुपथ ते रोग जाय वैराग्य ते लोभा ॥
जाय जन्म अरु मरण रामके सुमिरण कीन्हे ।
जाय गुरू ते भर्म कर्म निज रूपहि चीन्हे ॥
शान्तिजाय परवर्तिते दोष जाय दिहे दान ।
कहे रघुनाथ यों जातहै भक्ति किहे अभिमान ॥
तातें अवहीं देहु मिटाई * नातरु बढत बढत बढिजाई
कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं * आवो भक्ति देखावों तोहीं
आपु वृद्ध द्विजवपु धरि लीन्हा * बालरूप विजय कहँ कीन्हा
आगे चलि मोरध्वज द्वारा * हरि पूजन महँ रहे भुवारा
द्वारपाल जा खबरि जनाई * बोले नृप बैठारहु जाई
कहत दोउ जन चले रिसाई * सुनि नृप परे चरणमहँ धाई
करि सन्मान सुआसन दीन्हा * हाथ जोरि इमि पूछे लीन्हा

वान हेतु आयो महराजा * आयसु होय करौ सोइ काजा
हम सरिखेनते बनत न आना * तुम्हरी सेवा ते कल्याना
दो० विप्र कही जो देनकी, करो प्रतिज्ञा राइ।
तो मै मागो जाहिते, बचन वृथा नहि जाइ॥
कह नृप कीह प्रतिज्ञा मागो * तबतो विप्र कहन अस लागो
जातरहेन बन हरि गुरु मिलऊ * गहिसि आय बालक मोहिदिलेऊ
तब मै कह्यों छाड़ि यहि दीजे * याके बदले मोको लीजे
सिंह कहा मोरध्वज राऊ * तासु अङ्ग दाहिन लै आऊ
तौ मै बालक देहु बचाई * नाहिं तो याहि डारिहौ खाई
हौं तब अङ्ग देन कह राई * आशिष तब बहु सौंह कराई
सोई लेन आयो तब द्वारा * अपर हेतु नहि कछू हमारा
सुनि रानी बोली हरपाई * अरधङ्गी तिय बेदन गाई
ताते मोहि केहरि को दीजे * पुत्र कह्यो नहि मोको लीजे
बहुरि कृष्ण बोले मुनिलेहु * केहरि बचन कहा यक येहू
इस्त्री पुत्र हाथ गहि आरे * चीरें हर्ष समेत भुवारे
सुनि आरा नृप लीन मगाई * रानी पुत्र गह्यो तब आई
शिर धरि चीरन लागे कैसे * बढ़ई उभय काठ कहँ जैसे
चीरत आयो नासा तीरा * बायें दृग भरि आयो नीरा
दो० निन्दनिन्द्रकहि नीर लखि, चले कृष्ण अनखाय।
दोउकर टेकि करोत नृप, पूछेउ ठाढ़ कराय॥
केहि कारण प्रभु चलेउ रिसाई * तौनि बात मोहि कहौ बुझाई
देत छोभ तेरे है आना * तेहिते यक अम्बक जल छावा
कह नृप मोरे छोभ न राई * बाम अङ्ग रोवत यहि लाई
मै न लग्यो परमारथ माहीं * मोसम भाग्यहीन कोउ नाहीं

तुम्हरे दाहिने मोंनहिं धावा * सुनत कृपाल महासुख पावा
फेरयो शीश कमल कर जबहीं * भई नवीन देह नृप तबहीं
सजल नयन प्रभुहृदय लगायो * जय कहि देव सुमन बरषायो
कह्यो कि नृप मांगहु वरदाना * जो इच्छा मन होइ सुजाना
कोटि भाँति जो देहुं भुवारा * तुमते तबहुं न हौं उद्धारा
ऐसी भक्ति कीन्ह तुम मोरी * रहि न सकिहौं दिशि तोरी
दो० भूप कहा जो ह्यपदहु, करें तिहारे साथ।
ताको तुम गिरि मेरुसम, मानिलेत हैं नाथ॥
एक बात मागत हौं स्वामी * सो मोहिं दीजै अन्तरयामी
आगे युग लागी कलिकाला * कुटिल अपावनरूप कराला
तामें करनी भजन केरी * लहु न नाथ अरज यह मेरी
कलिमें भक्त नाम की आसा * करनी लिये न होइ प्रकासा
सुनत वचन कह विहँसि मुरारी * जो मांग्यो सो दीन्ह्यो हारी
निज के हेतुहि अब कछु कहिये * प्रभुपदप्रीति यही मोहिं चहिये
कह प्रभु धन्य धन्य तुम राजा * धन्य पुत्र तिय सहित समाजा
अस कहि ह्यलै विदा जो भयऊ * देखि दर्प पारथ कर गयऊ
गी० छं० ॥
जब देखि नृपकी भक्तिको अभिमान पारथ को गयो।
गिरि चरण श्रीगोपालके ह्वै दीन अस बोलत भयो॥
नहिं मन्द मोसम कोउ तुमते नाथ हौं सेवा लई।
धिग तेहुं पर अहंकार राखत भक्त मोसम नाहई॥
लोभवश गुरु मित्र भ्राता पुत्र बहु जीवनि हते।
समुझि कुल करतूति अपने दोष जाये नहिं गने॥
परापिता द्विज कानीन हमरे पिता गोलक गारज।

हम कुण्ड कटु अग्रज जुवारी हद्दहारी नारिजू ॥
अतिकष्टकरि भो व्याहु सो त्रिय पञ्चभरतारी भई।
गुण हीन हरिछुद्र पीन पावर निधन निर्बल निर्दई ॥
ऐसेहु पर नहिं जानियत धौं काहिते रीझेउ हरी।
वनवान विप ऋय रिपुनते सब ठौर तुम रक्षा करी ॥
छ० दुरवल के वल भूप भूपके वल को बल है।
तस्कर के वल राति धनिहि धन घातै छल है ॥
मूरख के वल मौन मानिनी के बल रोदन।
क्रोध के वल खलबयन मयनके बामविनोदन ॥
द्विजके श्रुति कविवलवरण खगके पर शरकरलहौ।
तेहिप्रकार यदुनाथ तुम नाथ हमारे वल अहौ ॥
दो० कह रघुनाथ सनेहिनर, यहिविधि विनती कीन्ह।
मोरध्वजकी यह कथा, यथाबुद्धि कहि दीन्ह ॥
मोरध्वजकी यह कथा, पढ़ै सुनै नित नेम।
होय भाव भक्तन विषे, बढ़ै राम पद प्रेम ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमनआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमोरध्वजआख्यानवर्णनोनाम
द्वात्रिंशोऽध्याय ॥ ३२ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
वर्णौं महापुराण को, अब इतिहास बखानि ॥
सुनहु मुनिहु मनलाइकै, सुन्दर कथा अनूप।
कही जौन शुकदेवजी, सुनी परीक्षित भूप ॥
सोई कथा मैं कहौं बुझाई * रामचरण जेहि रति अधिकाई
सतयुग भे मनु जगयश जासू * नृप उत्तानपाद सुत तासू

सुरुचि सुनीति रहैं दोउ रानी * विधुवदनी गुणरूप सयानी
उत्तम नाम सुरुचि सुत जायो * ध्रुव सुनीतिके वेदन गायो
सुरुचि महीपै प्रिय अधिकाई * सो सुनीतिके महलन जाई
कबहुँ हेर मगि देइ सुरारा * ताहीते दोउ करै गुजारा
पांच वर्षके ध्रुव जब भयऊ * खेलतनृप जहं तहं चलि गयऊ
उत्तम गोद बैठ तहँ आई * लखि नृपकर लियो गोदउठाई
ताहि सुरुचि अति उठी रिसाई * दिहिसि उतारि गोदते धाई
दो० बैठन को नृपगोद जो, लिखा होत तव कर्म ।
तो सुनीति के जठर में, काहेक लेत्यो जन्म ॥
पुत अभागिनि केर है, चहो गोद नृपकेर ।
अबै मिलतहै सेरभरि, सोउ न मिलिहै फेर ॥
छं० तपबिन होइ कि राज साजबिन होइ कि कारज ।
गुण कि होइ बिनटहल बिनागुण होइ कि चारज ॥
धनबिन मित्र कि होइ मित्रबिन होइ कि सदसुख ।
सिद्धि कि बिनबिश्वास दासबिन मिटै कि भवदुख ॥
अघबिनहोत कि अयश शुभ यशकि होइ बिनदानके ।
होत मुक्ति युत मुक्ति कहुँ बिना भजे भगवान् के ॥
अस कहि याहि पकरि ध्रुवकेरी * मन्दिर बाहर दीन खदेरी
रोवत ध्रुव माता ढिग आयो * देखत जननी गोद उठायो
पूछहि माता सो कहिये मोसे * का अपराध भयो सुत तोसे
कह ध्रुव पिता गोद माहि लीन्हा * रानी छीनि डारि मोहिं दीन्हा
दूरि दूरि कहि धरते काढ्यो * सुनिदुर्बचन मोहिं दुख बाढ्यो
ऐसी विधि मोको दुख दियऊ * राजा कछु मन्यो नहिं कियऊ
ताते मैं पूछत हौं तोको * काकी शरण अहै सुख मोको

कह्यो मातु सुखनिधि भगवानू * सोइ पितुमातु बन्धुमेग जानू
जेहि प्रभु राखि गरभ में लीन्ह्यो * पानीके बुंद प्रकट वपु कीन्ह्यो
गरभ मोचि पुनि बाहर लायो * मात पयोधर छीर पियायो
यहिविधि पुष्ट किहे सब अङ्गा * जनमत मरत तजै नहिं सङ्गा
जिय अपराधी ताहि न जानै * सङ्कट परे तबै कछु मानै
ताते सहै विपति बहु भाती * चौरासी लख आवत जाती
असजिय जानि भजहु भगवानै * सुमिरत जाहि शम्भु धरि ध्यानै
सो प्रभु विश्वरूप श्रुति कहई * सुनो तात जेहि संशय दहई

च० छं० ॥

पद पताल शिर ब्रह्मधाम । अपर लोक है अङ्गनाम ॥
नयन दिवाकर दिशा कान । अश्विनीकुमारबाजासुघ्रान॥
घनकेशअम्बुपतिजीहजानु।निशिदिननिमेषआननकृशानु॥
दिगपालबाहुहैपवनस्वास।रोमावलिविटपलघुदीर्घबास ॥
नारी सरिता अरु अजाहासु । अ धरलोभ यमदशन तासु॥
अस्थिअद्रि रसशब्द भोग । जानै विरला कोउ चतुर लोग॥
विष्णु प्रजापति वीर्य तोय ।भृकुटी विलासोइकालहोय॥
उदर सिन्धु माचो प्रसङ्ग । ईश थूल इतना जु अङ्ग ॥
सो० अहङ्कार त्रिपुरारि, चतुरानन सोइ बुद्धिवर ।
मन द्विजराज विचारि, चेतनरूप अनूप हरि ॥
दो० सो प्रभु सचराचरविधे, पूरण व्योमसमान ।
भजनबिना नहिं लखिपरत, ज्यों बिनमथेकृशान ॥
असविचारि सब शोचतजि, रामचरण चितदेहु ।
सुर दुर्लभ तनु पाइकै, ताहि सुफल करिलेहु ॥
ऐसे बचन सुने ध्रुव जबहीं * हाथ जोरि बोले शिशु तबहीं

तुम कत दुखी सुखी वह रानी * तीन भेद मोहिं कहौ बखानी
कह रानी प्रथमे तन माहीं * सपन्यो दान दीन कछु नाहीं
साधु सग हरिभजन न भावा * खर कूकर सम सेति गँवावा
जसकछुकर्म पांचभल कीन्हा * सोइजनमतविधिशिरलिखदीन्हा
नहिं जानी केहि सुकृत तेरे * भये प्राप्ति गुण गोबिंद केरे
तेहिते कोइदुख निकट न आवै * परारब्ध तेहि तनु भुगतावै
दो० जो कछु लिखा लिलाटमे, सो होवे परिणाम।
चहै परै घर रङ्कके, चहै महीपति धाम ॥
यद्यपि हरिके भजनकरि, होत सुरी ते काट।
नरवर्णन ते ह्वै गई, विधिवरषे बडिवाट ॥
तातें सुत तुम ऐसी करहू * रामचरण पङ्कज चित धरहू
भुक्ति मुक्ति हरिदर्शन पावो * जो तजि काम नाम लवलावो
योहि विधि मातुदीन जब ज्ञाना * सुनि ध्रुवके अतिशय मनमाना
पूरबका कछु सुकृत जागा * ध्रुव के भयो विमल वैरागा
उठि जननी ते आज्ञा मांगी * करिहौं भजन विपिन गृहत्यागी
बोली मातु अबै तू बारो * शत सम्वत जनि बन पगु धारो
क्षुधा तृषा जब आनि सताई * केहिते भोजन मांगिहो जाई
शीत उष्ण बरषा दुख पैहो * का बन ओढिहो काह डसैहो
बाघ सिंह बक शूकर आई * औरौ जीव बहुत दुखदाई
बालक देखि देहैं दुख भारा * का उपाय तब चली तुम्हारा
दो० सुनि ध्रुवकह मातातुरत, गयो ज्ञान का तोर।
अबहीं तैं हमते कहै, हरि रक्षक सब ठौर ॥
गरभ माहिं रक्षा करी, जहा हितू नहिं कोइ।
अबका परखि न पालि है, विपिन गये मह सोइ ॥

अस कहि ध्रुव चलिभे हरषाई * मन्त्रिन भन्यो नृप ते धाई
ध्रुव बालक वन जात तुम्हारा * का निदेश तब है यहिबारा
कह नृप सोन सेर युग देहू * अनहीं ध्रुव फेरि तुम लेहू
मन्त्री सुनि आये ध्रुव पासा * अस्थिरकरि अस बचन प्रकासा
सेरभरे कर दुइ सेर खाहू * लउटि चलौ घर वनहिं न जाहू
जहिं प्रभु दीन सेरमे दूना * तेहिके भवन अनरका सूना
हरिमारग ते फिरब न भाई * करै जो कोई कोटि उपाई
मन्त्रिन आइ कहा नृपपाहीं * चले जात ध्रुव आवत नाहीं
राजा कह्यो ग्राम यक दीजै * माने तबै फेरि ध्रुव लीजै
सचिवन ध्रुवको ग्राम सुनायो * तब ध्रुव अधिक सनेह बढ़ायो
मनमे अभय मनोरथ जागा * तुरत मिलन ग्राम इक लागा
नाम जपंते धौं का होई * मोरे मन प्रतीति असि सोई
ताते हम अब लौटब नाहीं * मन्त्रिन जाइ कही नृप पाहीं
तब राजा आपुइ चलि आयो * चौथाई कहि अर्ध सुनायो
बहुरि कह्यो सब राजहि लीजै * नानाभांति भोग चलि कीजै
सुनि पितुबचनकहतध्रुवभयऊ * प्रथमैं सेर अन्न नहिं दयऊ
जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई * प्रभु जाके ताके सब कोई
जब मैं रामचरण चित दीन्हा * तब तुम नाम राज्यकर लीन्हा
हरिसम्मुखते जो फिरि आवों * सती स्वांगकरि ताहि लजावों

दो० रानी जबहीं गोदते, दीन्हों मोहि उतारि।
तबहीं क्यों न सँभारेऊ, मोह करत अब हारि॥

जबलग हरिके दर्श न पैहों * तबलग जगमे मुख न देखैहों
मन्त्री नृप सब कहिकहि हारे * हठ करिकै ध्रुव बनै सिधारे
मिले ध्रुवै नारद मग माहीं * पूछेउ कित आयो कित जाहीं

जननिजनककी कित तवआमा * हे सुत कहाँ कहा तव नामा
बोल्यो ध्रुव पितु मातु मुरारी * भ्राता मित्र सोई सुखकारी
सोई कुल जाति कुटुंबपरिवारा * सब जीवन को सिरजनहारा
जबलग ऐसे पित न जानै * तबतक झूठ साच करि मानै
जगमहँ जेहिविधि यदसबकोऊ * तुमने कहि समुझाऊ सोऊ
नृप उत्तानपाद पितु अहई * माता उभय नाम ध्रुव कहई
पिता गोद लखि दुसरि माता * दिहिसि उतारिकहिसि कटुबाता
दो० रोवत जननी पहँ गयो, तेहिमोहि दीन्हों ज्ञान ।
हे सुत सुखसपन्यो नहीं, बिना भजे भगवान ॥
तब मैं बनको चल्यों रिसाई * सचिवन कहा भूप ते जाई
राजा तब बहुलाभ दिखायो * सब तजिहों हरिशरण तकायो
तुम कोहौ निज नाम बखानो * मैं बालक नहि ऐस जानो
कह ऋषि नारद नाम हमारा * गो दोहन विचरों ससारा
सुनि ध्रुव गिरे चरण हरषाई * ऋषि उठाय लिय गोदलगाई
चलु ध्रुव तोहि फेरि लै जावों * राजाने सन्मान करावों
राज करो चलि ब्याह करीजै * बालक एक होइ सुनिलीजै
सुतहि राज दै बनहिं सिधारो * सब राजन की साखि विचारो
कानन सिंह बाघ बहु रहई * भालु भेड़िया देखत गहई
निशिचरविपुल फिरत दुखदाई * बड़े बड़े भय मानत भाई
तहँ बालक को कौन उबारा * ताते मानो वचन हमारा
शीत उष्ण बरषा दुख पावै * क्षुधा तृषा जब अधिक सतावै
तब केहिते दुख कहिहों गोई * तहँ नहिं मातु पितानुज कोई
करणी कठिन न कीन्ही जावै * विपिनजाइ कत प्राण गमावै
दो० कह रघुनाथ अनेकविधि, सुनि भय रहे देखाय ।

ध्रुवके तनक न शङ्कभय, राम कृपा दृढताय ॥
कह ध्रुव हरिरक्षक सब ठावा * घरवन फिरतचलत निच गावा
जैसी करै भावरी होई * तैसी मृत्यु पाव सब कोई
आखिर यह तन एकदिनछीजै * तेहिते हरिसुमिरण करि लीजै
माता पिता नारि सुत नाती * को काको सब पथिक लखाती
इन सबहिनते सरत जो काजा * तौ तजि क्यों बन जाते राजा
राज पाके मद होइ आवै * करै अनीति नरकको जावै
राज नरक दोउ मग रहई * यहिते मोहि नहि भावत अहई
ताते मोहिं हरि भक्ति दृढावो * कृपा करो गुरुमन्त्र सुनावो
मै बडभागी हौं ऋषिराया * यहि अवसर तव दर्शन पाया
दो० लागत लत ज्यों वृष्टिभै, बूडत बोहित साथ ।
मरतहि अमृतरिमिलितिमि, मोहिमिले तुम नाथ ॥
बन्धुवैर परनारि सँग, न्यायम करै देर ।
भोजन दान सुकर्म मे, नाहिं लगाई वेर ॥
ताते बेगि सुदीक्षा दीजे * पतितै प्रभु पावन करिलीजे
नारद ध्रुवके मन की जानो * भूत भविष्य वर्तमान पिछानो
तब ध्रुवको दीन्हो उपदेशा * मूलमन्त्र जपहि जाम महेशा
आसन ध्यान कह्यो जप नेमा * नवधा भक्ति बतायो प्रेमा
शम दम सत सन्तोष विचारू * ज्ञान बिराग दया उर धारू
काम क्रोध मद मत्सर लोभा * छाडो मान मोह छल छोभा
सो० विद्या जाति महन्त, यौवनको मद रूपमद ।
तजै यतनकरि सन्त, पांच काटिये भक्तिके ॥
औरो विघ्न भजन में भाई * ऋद्धि सिद्धि सब घेरैं आई
इन्द्र डरपि अप्सरा पठावैं * छलबलकरि सो आनि डिगावैं

जाय, कृपा करि असुरारी * तहिने सफल जाये जिगहारी
सुनि शिषा दै जबहि सिधारे * तब ध्रुव चलि मधुवनमें आगे
इति श्रीविश्रामसागरसवमतथागमअउजागरशीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतध्रुवमधुवनआगमनोनाम
त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
राजनीति संयुत कहौं, मोइ इतिहास बखानि ॥
पाँच बरष के बयस ध्रुव, धर्म करी कछु नाहिं ।
सुनि मा ते उपदेश जहि, आये मधुबन माहिं ॥
एकपाँय भे ठाढ सुजाना * निश्चलमन करि हरिको ध्याना
अन्नत्यागि फलफूल जो खायो * फलहु तजे तब पात चबायो
दलहु छाँडि जल कीन अहारा * जल परिहरि भे पवन अधारा
यह चितवनि रहत चित छाई * कब देखौं हरिपद सुखदाई
दो० पवन तजत लागे जरन, सुर सब शक्र डरान ।
जैसे केहरि को निरखि, अस्थि लिये मुख श्वान ॥
मायाँ देवीं तुरत बुलाई * कहिनि कि ध्रुवहि डिगावहु जाई
मैना और उर्वशी सङ्गा * आइ जहँ ध्रुवमहित अनङ्गा
ऋतु बसन्त विरचेसि अमगाई * नवपल्लव फल फूल सुहाई
गुञ्जन अलिगण कुञ्ज विहङ्गा * बाजन बाजन उठत तरङ्गा
नृत्यहि अप्सरा भाव बतावैं * उच्च स्वर कल किन्नर गावैं
यहिबिधि कीहिनि उपाय घनेरी * छूटी नहि समाधि ध्रुव केरी
ऐसे ध्रुव डिगहि नहिं जाना * तब देवी माया छल ठाना
रूप बनाइ सुनीतिक लीन्हा * पुत्र पुत्र कहि रोदन कीन्हा
प्रथमै आँधी आनि चलाइसि * परे उपल जलमल बरसाइसि

भीजे पट कट कट रद होवै * कांपे कुणप पुत्र कहि रोवै
घरते नृप मोहिं दीन निकारी * जा ध्रुव ढिग जाकी महतारी
केहिकी अब मैं शरणे जावों * बोलो लाल बहुत दुख पावों
शीश धुनै कर दैदै मारै * हायहाय कहि बचन उचारै
दो० शोर सुनत रघुनाथ तब, ध्रुव की जगी समाधि।
लगे विचारन मनैमन, हरिचरणन चित साधि ॥
एकाएकी कानन माहीं * किमि रानी आवत मोहिं पाहीं
जो अज्ञान होत तो औती * प्रथमें बन मांहिं बनै पटोती
जानि परत यह माया अहई * आई छलन मोहिं सुन कहई
नारद बचन यादि जब कीन्हा * पुनि ध्रुव रामचरण चित दीन्हा
रघुपति कृपा न भूले सन्ता * जिमि नट लहै जनूडा अन्ता
बहुप्रकार सो सचि पचिहारी * तब लजाइ सुरलोक सिधारी
इन्द्र आदि सुर ह्वै ह्वै दीन्हा * मधुसूदन की विनती कीन्हा
महाराज ध्रुव तेज अपारा * तांहिते सुरपुर छूट हमारा
तिष्ठन कोन ठौर प्रभु पाई * जरत विबुध जह जई चलिजाई
ताते हमैं राखि प्रभु लीजै * ध्रुवको जाय दरश अब दीजै
व्याकुल लखिसुरकृपानिधाना * मन बच कर्म दास निज जाना
आये हैं ध्रुव निकट मुरारी * लगि समाधि तनसुरति बिसारी
कृश लखि शङ्खनाद हरिकीन्हा * खोलि नयन ध्रुव तबही दीन्हा
आगे खड़े दीख भगवाने * भक्तवत्सल शिव रूपनिधाने
दो० तडित विनिन्दक पीतपट, नीलजलद तनश्याम।
इन्दुवदन वारिज नयन, करआयुध अभिराम ॥
शीश मुकुट वनमाल उर, छवि मनोजहरिभास।
ध्रुवबिलोकि लागे करन, अस्तुति सहित हुलास॥

छं० नमो राम सुखधाम नमो जगदीश दयालं।
नमो अशेष अलेख नमो सुरमुनि प्रतिपालं॥
नमो अनाथननाथ नमो सन्तन हितकारी।
नमो शम्भु अज ईश नमो निरगुण गुणधारी॥
नमो अपार अगार नमो निरकार निरामय।
नमो अभेद अछेद नमो निरखेद निरामय॥
नमो अजीत अतीत नमो परमात्मानन्दं।
नमो निकर्म निभर्म नमो निज ब्रह्मसुछन्दं॥
नमो अरूप अनूप नमो सुरभूप उजागर।
नमो वीर रणधीर नमो तारण भवसागर॥
नमो शरण दुखहरण करण ततकाल निहालं।
नमो तुमेक अनेक नमो कालहु के कालं॥
नमो कृष्ण तोहि कृष्ण तोहि राम बलरामं।
तुहीं दशो अवतार तुहीं सारण सब कामं॥
नमोनमो जयजयतिजय अधमउधारणअघहरण।
रघुनाथदासयहिभांतिध्रुवअस्तुतिकीन्हींगहिचरण

दो० सजल नयन प्रभुअङ्कभरि, लीन्हों हृदय लगाय।
कह्यो पुत्र वर मांगिये, जो तेरे मन भाय॥

मधुभारछन्द। सुनि। गुनि॥ ध्रुव। बुध॥

मांगौं कहा जगत पति देवा * सब नश्वर बिन तुम्हरी सेवा
अवि खांव लागि दवि जो होई * त्रिभुवन राज पाव जो कोई
जांपे मरण करण सुख कैसो * सपने की सम्पति भ्रम जैसो
तोहितें नाथ कृपा जो कीजे * प्रेमभक्ति आपनि मोहिं दीजे
योगयज्ञ जप ज्ञान विरागा * क्रिया काण्ड बहुभांति बिभागा

भक्ति बिना गुण सोहत कैसे * जीव बिना तन भूषण जैसे
सतसङ्गति भवनिधि जलयाना * देव दया करि सो भगवाना
सुनि ध्रुववंचन सरल छलहीना * बोले प्रभु भञ्जन दुख दीना
साची बात कही तुम ऐसी * मेरे भक्त कहत हैं जैसी
सुर नर नागलोक निधिहूको * मोबिन भक्त गनन सब फीको
पर तव मातु बहुत दुख पायो * राज हेत तैं बन को आयो
जो निजपुर अबहीं लेजावों * जगमें जाहिर नाहिं करावों
तौ सब जनहिं ध्रुव मरि गयऊ * की बन खाय जनावर लयऊ
जो जगमें अपकीरति होई * तौ केहिकाम धाम मम सोई
ताते प्रथम राज चालि कीजै * छत्तिस सहस बरस लग लीजै
पुनि मम लोकहि आवो ताता * चढि बिमान संगलीन्हे माता
तब ध्रुव कह्यो जोरि युग पाणी * राजने नरक होन श्रुति बाणी
कहभगवान अधर्म जो करई * सो नृप जाय नरकमहँ परई
धर्मवान क्यों नरके जावै * राजनीति रत दोष न आवै
बोले ध्रुव मम नीति न जानी * कह हरि सुन मैं कहौं बखानी

अ० छ० कहै न मिथ्यावचन मूढ मन्त्री नहि राखै ।
दैकै लेइ न फेरि अजाने अमन न चाखैं ॥
मित्रै देइ न दुःख अमित्रै ना पतिआवै ।
सबते राखै हेत विप्र ना भूलि सतावै ॥
दण्ड न बिरथा करै पुत्र सम परजै पालै ।
जूवा चोरी मास मद्य हिंसा ये टालै ॥
परत्रिय मातुसमान द्रव्यपर बिषसम जानै ।
तजै कोह मदमोह द्रोह तनछोह न आनै ॥
करै सदा सत्सग भक्त भगवत सम लखै ।

नतराखे हरिचरण करण मुनि कथा विशेखे ॥
रिपने ठाने समर गूढ़ निजमन्त्र न खोले ।
आन कवि शुभ वद गिरा कटु कभी न बोले ॥
लोभी लम्पट द्विज न धर्म अधिकारी करही ।
दान देइ लखि पात्र पाठ पूजा अनुसरही ॥
जप तप सन्ध्या व्रत करि तजै खजाना कोप ।
कहै रघुनाथ ऐसे नृपै रती न लागै दोष ॥
दो० वृक्ष सींचे छाँटि जवर, झुकेन माहिं दे टेक ।
फूले फल सोइ लेइ नृप, चिरजिव माली एक ॥
जो न चलै यहिरीति नृप, अवशि नरक सो जाय ।
अब सुनु परजनको धरम, जाते दोष नशाय ॥
कृषी वणिज व्यापार में, नफा मिलै जो जानि ।
दशांश दे विप्र कहँ, दोष न लागै हानि ॥
जो द्विज पावै और कहँ, चौथ्याई दे सोइ ।
लेइ देइ विश्वास करि, दोष नाश तब होइ ॥
सेवाकरि धन जो लहै, यथाशक्ति दे दान ।
तौ नाहिं लागै दोष कछु, कुकरम करै न आन ॥
तातें तुम ध्रुव राजहि करहू * जो मैं कह्यो सो मारग धरहू
मम आज्ञा मानै जो कोई * ताहिकि कछु दुख सपनेहु होई
मेरी नीति करो तुम राजू * भुक्ति मुक्ति दे सारो काजू
यों कहि राजकाज सब साजे * विविध प्रकार बाजने बाजे
सैन अपार प्रकट प्रभु कीन्हों * तम्बू सेज बिछौना दीन्हों
गज रथ बाजि पालकी याना * चोबदार दरबानी नाना
वणिक बजाज सराफ सोनारा * हलवाई, जौहरी चमारा

जहलग भूपन केर समाजा * सो सब प्रकट कीन महराजा
भक्तवछल प्रभु किरपा कीन्हा * चक्रवर्ती ध्रुवको करि दीन्हा
शङ्खादिक बहुभांति बजाई * चली कटक अति बरणि न जाई
दो० हरिकी आज्ञा मानिकै, ध्रुव चढ़ि चले गयन्द।
जनरायन हरिकृपाते मिटिगे सब दुख फन्द॥
देश देशके नृप सुधि पाई * लै लै भेट मिले ते धाई
करि सनमान सुता निज देही * दायज अमित कहांतक लेहीं
यहि भांतिन निजपुर नियरायो * नारद तब नृपके ढिग आयो
कह्यो पुत्र ध्रुव आवत तेरो * हरि दीन्हों तेहि राज घनेरो
राजा कहा विपिन गा सोई * अब ध्रुव कैसे जीवत होई
जल बहिगयो कि अग्नि जरायो * सिंह सर्प धौं बाघन खायो
वृषभ महिष हय अजा हेराई * सकल काम तजि ढूंढन जाई
मैं अपराधी बालक त्याग्यो * चल्यो गहन उठि मग न लाग्यो
नारद कहा शोच जनि करहू * बेगिहि आवत धीरज धरहू
सुनि सुनीति उर भा सुख भारा * मुनिअसत्य कर्या कहत विचारी
तेहि समय ध्रुव दूत पठायो * नृप उत्तानपाद ढिग आयो
सब वृत्तान्त कहा तेहि गाई * सुनते भूप उठा हरषाई
रानी सहित सचिव पुरवासी * ध्रुव ढिग चले विहाय उदासी
ध्रुवके ढिंग नृप जब आयो * तिनहिं देखि ध्रुव उठि शिरनायो
लीन्ह महीपति गोद लगाई * गदगदि मनहु नाग सिर पाई
अश्रुमाल भरि भेटी माता * प्रेमाश्रुन ते सींच्यो गाता
दो० पुरलोगन कहँ भेटिकै, पूछि कुशल बहुभांति।
आसन दीन्हों सबनकहँ, यथायोग्य सब जाति॥
राजा ध्रुव कहँ कान बताई * भाग्यवन्त तुम धनि सुत माई

जो हरिभक्ति हृदयमहं भाखो * सो पाटांतक पितर उधारो
सुर नर मुनि सब करत विचारा * पुत्र बिना फिरा संसारा
एक पुत्र जन्म अस आई * शतपीढ़ी जे नरक पठाई
एक सुवन सुरपुर पहुँचावै * लिख्यचाम यमत्रास छोड़ावै
सोसम भाग्यवन्त नहिं आना * पुत्र मिला हरिभक्त सुजाना
सुनिवर जोरि विनय ध्रुव कीन्हीं * तुम्हरी कृपा भक्ति प्रभु दीन्ही
विविध भांति जेवनार कराई * बासर गयो निशा तब आई
हरि विश्वकर्म आज्ञा दीन्ही * कनकपुरी जगमगहु कीन्ही
मणिमय मंदिर मधुरी चलिहऊ * तेहिमहँ ध्रुवकहँ बासा रहिऊ
लागि रहत सकल हरणाई * भावभक्ति दिनदिन अधिकाई
अरिनु जीति विप्रन सुख दीन्हा * भुजबलसकल विश्ववशकीन्हा
पुत्र समान प्रजन कहँ रखे * अधर्मपर धन रवहु न लेवे
कथा कीर्तन ध्यान कराहीं * सुमिरण करत याम चलिजाहीं
ध्रुव राजा की आज्ञा मानैं * राजा ध्रुवहि बड़ाकरि जानैं
यकदिन करि विचार बनगयऊ * हरिसुमिरणकरि हरिपदलयऊ
दो० ज्यों पङ्कज जलमें रहत, अरु सनेह पयमाहिं ।
त्यों ध्रुव बरतैं राजसुख, लिप्त छोड़ कहुं नाहिं ॥
यहिविधिछत्तिससहस्रबर्ष, कीन्ह्यो भोग बिलास ।
कछुदिन बाकी रहे जब, तब मनभयो उदास ॥

कमल छन्द ॥

साधु विप्र । ओलि छिप्र ॥ पूछि काम । दीन दाम ॥

गी० छं० ॥

दियो राजकाज सुपुत्रकहँ पुनि आनु बनहिं सिधायहू ।
जहँ कीन्ह प्रथमी आय तहँ हरिकेर ध्यान लगायहू ॥

कछुकाल बीते विष्णुकेर विमान ढिग आयो भलो,
गण लिहिनि ध्रुवै चढ़ाइ तापर हर्षि वैकुण्ठै चलो॥
ध्रुव कह्यो तिनत मातु हमरी रहत तेहि ले लीजिये।
वह जात चढ़ी विमान आगे देखि आनँद भीजिये॥
यहि भांति पहुँचे जाय ध्रुवका अचल हरिपदवी दई।
रघुनाथ सकल नक्षत्र अजहू करत परिकर्मा हई॥
दो० ऐसी हरिकी भक्ति है, ताहि करत जे नाहि।
तिन्हैं जानिये पशूसम, सींग पूछ बिन आहिं॥
ध्रुव चरित्र रघुनाथजन, कह संक्षेप बखानि।
पढ सुनै करिनेम तेहि, होय दैत्य दुख हानि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतध्रुवचरित्रवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्याय ॥२४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरासुखदानि।
अब नरसिंहपुराण की, कहौं इतिहास बखानि॥
जगतविदित बैकुण्ठ है, जहा बसत भगवान।
द्वारपाल जय बिजयदोउ, अतिभुज बली सुजान॥
एकवार सनकादि तहँ, आये जनु चहुँ बेद।
ब्रह्मानन्द मगन मन, बालस्वरूप अभेद॥

रमानाथ के दर्शन हेना * लगे जान ऋषि हरषि निकेता
जयरुविजय दोउरोकि बखाना * निन आयसु नहिं पैहौ जाना
सुनि मुनि दीन शापकरि कोहू * तीनिजन्म तक राकस होहू
भयो शोर सुनि सबहिन जाना * श्रीसमेत आये भगवाना
कहहरि इन बहु कीन्हो पापा * मुनिभलकिह्योदिह्यो जो शापा
तब बोले सनकादि विचारी * प्रभु अपराध कीन्ह हम भारी

तब [illegible] कीन्हा * तिन [illegible]
[illegible] भयो [illegible] * [illegible] नाहिं
[illegible] * [illegible] नहिं [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] नामा * [illegible]

दो० सोइ [illegible] तहँ भये जनमी जाय ।
तहँ तेहि प्रभुके लागबो, सुमिरत बिसरि न जाय ॥

[illegible], कर [illegible] न [illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible] भया बिरोधी
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]

दो० एक जन्म सुधर्मा करौ, सनकादिक उपचार ।
एक जन्म भगवान कह, हम करिहैं उद्धार ॥
अनेकादि सनकादिक सहित, हरिगृह चले सिधाय ।
तहँ त्रिय बीते जाय विजय, भे दितिके सुत आय ॥

छं० कनककशिपु हाटक नयन दुरयदनि दोउभाय ।
जेष्ठ भयो छोटभाय छीनि इन्द्रासन लीन्यों ॥
निरजर दिये निकारि हुकुम अपनाही कीन्यों ।
एक बार हरनाक्ष धरा लैगयो पराई ॥
धरि वराह अवतार ताहि हरि मार्यो आई ।
हरणाकुश तपको गयो इन्द्रासन सुलपाय ॥
है लीन्यों पुर आपनो त्रिय वधू फेर कराय ।
कुलिशपाणि नारद तहां आय दियो उपदेश ॥

आय दियो उपदेश शोक तेहि कछुक मिटायो।
गर्भ रहैं प्रह्लाद ज्ञान सब तामें पायो ॥
रहे तहा बहुकाल मातु ओदर के माहीं।
करै भजन मन मुदित कष्ट तन व्यापै नाहीं ॥
हरणाकुश को सिद्धिभो तपविधि भाष्यो आइ।
अहो पुत्र बरमागिये ऋधिसिधि जो मनभाइ ॥
जो मोपर परसन्न प्रभु तौ दीजै बरु येह।
तौ दीजे वरु येह हमैं जो सृष्टि तुम्हारी ॥
मरौं न काहू हाथ बात मोको यह प्यारी।
राति दिवस नहिं मरौं गगन नाहिजलहथियारा ॥
दैकै बरु विधि गयो भयो तेहि हर्ष अपारा।
गरजि चढ़यो घर आपने सूनो देख्यो आइ ॥
कोपि चढ़्यो फिरि इन्द्रते सुरपुर लीन छिड़ाइ।
घरलायो त्रिय आपनी जन्म लीन प्रह्लाद ॥
जन्म लीन प्रह्लाद भयो तेहि आनँद भारी।
दिये दान गज बाजि याचकन किये सुखारी ॥
करै राजि मनमगन विप्र गौवन कहँ मानै।
हरि देवनते द्रोह आपनो बैरी जानै ॥
यहि भातिन वीतत भये भोग करत कछु काल।
बडे भये प्रह्लाद तब खेलैं जहँ कहुँ बाल ॥

मनोहरछन्द ॥ सुनो एक हाल तेहि नगर कुम्हार बसै, धोखे ते विलारी बचा आवाँ मे लगायो है। पाछे सुधि आई शीश धुनै पछिताई तहां, आयो प्रहलाद पास कहि समुझायो है ॥ जपौ रामनाम जासे सरै सब

काम निद्रा, वीतो चारिश्राम राम रटलागो है ।
जैसेही प्रभात खोजनो लाग्यो मय दैत्यन को, मिटिगयो शोक प्रह्लाद मन भायो है ॥

च० छं० ॥

इकदिवस सुरारी मनहिं विचारी पठनयोग प्रह्लाद भयो ।
करिगुरुके लरका खलखाम रका बोलिनिन्हें मुनसौंपिदियो ॥
लैगे चटसारा तहँ बैठारा बाल अपारा जहां रह्यो ।
पाटीकरलिन्हें अंकसमिन्ह पढ़ो द्विजन यहि भाँति कह्यो ॥
तेहिअर्थ लगायोपोनि दशायो नित्यवत्य रामराम लिख्यो ।
लखिविप्रसुज्ञानी कहि मृदुबानी प्रेरेउ अत्र चकाह सिख्यो ॥
तबै पितु मुनिपँह बहुत रिसैहै मारिहै धरिहै शिरखोरी ।
ताते यहि बानी डारु बिसारी मानहुँ सतबाणी मोरी ॥

पादाकुलक ॥

कहप्रह्लादा । सुतअह्लादा ॥ विप्रसुनीजै । सत्यभनीजै ॥
विद्यानामा । वर्णनामा ॥ अधिककोआही । पढ़ौंमैंताही ॥

तो० छं० ॥

सुनिये सुत बेद पुराण कहैं । विद्यासमनाधन और अहैं ॥
नाहिं चोर चोरायसकै न जरै । सुत देश प्रदेश न भूप हरै ॥
गुणरूप पराक्रम बुद्धिधनी । सतसेवकबंधु अनेकधनी ॥
बिन विद्यासों नर सोहत यों । बहुहंसनमेंबकबालज्यों ॥
तेहितेसुत विद्या नित्य पढ़ौ । जेहिपावहुराजगयन्दचढ़ौ ॥
अस बैन सुने द्विजके जबहीं । प्रह्लादजुबोलिकहोतबहीं ॥

दो० विद्या धन कुल रूप मद, प्रभुता यौवन नारि ।
ये बाधक हरिभक्ति के, कह बुध बेद विचारि ॥

ब०छं० तेहिते मैं यह विद्या पढ़ब न नाथ।
सुनि महिसुर प्रह्लाद के गहि दोउ हाथ॥
लाये जहँ हरणाकुश कहिनि रिसाइ।
पढ़ न तव सुत राजन हमहिं सिखाइ॥

कदपाछन्द॥ बिहँसि प्रह्लादको गोद बैठारिकै कही मुख चूमि सुत पढ़ो काहा। रामही नाम सब पढ़नमें सार है पढा हम सोई सुनि हृदय दाहा॥ बदत बुध वेद यह दुष्टकी रीतिहै प्रीति अधर्म में अधिक लावै। ज्ञान वैराग्य हरि भक्ति भव भयदहन नाम गुणग्राम जेहि नाहिं भावै॥ कही हँसि देव शठ क्रूर ऐसी बड़े आइ कोइ बाल भरकायदीन्हा। बहुरि प्रह्लादते कहत सुनिलीजिये शत्रु को नास नहिं चहो लीन्हा॥ सकल जगदीश सब जीवको पोषना तासुते तात का वैर कीजै। छाड़ि मद मान शुभ ज्ञान हिरदे धरौ करौ हरिभजन जग सुयश लीजै॥

दो० शत्रु न काहूकेर हरि, मित्रहु नाहिन तात।
जैसो देखै मुकुर में, तैसो ताहि लखात॥
सुनेयचन अस असुरपति, रिसवशदिहिसिउतारि।
कहिसि द्विजनते याहि लै, जाहु पढ़ावो मारि॥

हा०छं० सनि पुनि द्विज लागे चटसारहि।
लिखि दीन्हेनि सुत पढ़ौ पहारहि॥
आपु गये पुर कहँ कछु कासहि।
पोंछि लिख्यो प्रह्लाद श्रीरामहि॥

श०छं० लखि बालक सब। ढिग आये तब॥
सखा ते जैसे। बोलै ऐसे॥

दो० कहा शिशुन प्रह्लाद ते, हठ तुम करते काहि।
मात पिता गुरु जो कहैं, प्रमुदित कीजे ताहि॥
सुनि बोले प्रह्लाद तब, मात पिता गुरु सोइ।
करै जो सन्मुख रामके, जहँलग निजबल होइ॥
अमृत पलटे देइ विष, पारस बदले काच।
जानिबूझि तेहि लेइकोउ, कहौ सखो सब सांच॥
पढ़नसुननसोइसुफलजो, रामचरण रति होइ।
नातरु फिरि मूरख भला, बाद न ठानै कोइ॥
सुनहु तात यहि जगके माहीं * दुख निशिदिनसुखसपनेहुनाहीं
देखहु तुम निज हृदय विचारी * उपजत चारि खानि तनुधारी
अण्डज जो अण्डा ते होई * पिण्डज प्रगट गर्भ ते सोई
स्वेदज श्रमशीकर ते जानौ * उद्भिज सग बारिकर मानौ
भ्रमत जीव सब योनिन माहीं * दुख बहुभाति बरणि नहि जाहीं
पाप पुण्य जब सम दोउ होई * ईश कृपा नरतन लहै सोई
प्रथम जीव जलमाहीं आवै * जलते बहुरि अन्न में जावै
जाके भवन जन्म भा चहई * सोई अन्न खात वह अहई
अन्नते रस रसते सुखकारी * रुधिर वीर्य यक मास निहारी
जब युवती रतिदानहिं पावै * तब सोइ जीव गर्भ में आवै
रज वीरज यकाग्निमहं मिलई * पंचयेंदिन बुद्बुद उठि खिलई
दो० सतयें दिन फेना उठत, दशयें पिण्ड पखवीश।
मासदिवसजबहोत तब, निकसन लागत शीश॥
उभै माम भुज जाध लखाई * तिसरे पेट बिलग ह्वैजाई
बेदै मास अंगुरी कच रोमा * हाड़ माम सरलजा जु सोमा
पूर्णगर्भ सातयं मासा * अठयें बाकसहित चलश्वासा

नवयें मास चेतभा भाई * पूर्वजन्म सतकर्म सुमि आई
विष्ठा मूत्र उपर है बाहे * चोटत कीट अनल तन दाहे
पीड़ित सदा अधोमुख रहई * तह न मातु पितु केहि दुख कहई
तब भगवान केरि सुधि कीना * बोलत भयो वचन है दीना
दीनदयालु कृपालु मुरारी * अशरणशरण हरण दुखभारी
प्रभु यहिबार मोहिं निरवारो * कर्मक्षेत्र में लै तनु डारो
तहँ तव चरणकमलचितलावों * जाते गर्भवास नहिं पावों

दो० चारि ठौर सब नरन के, कछु वैराग चढ़न्त।
गर्भमाहिं शवके निकट, कथासुनत रतिअन्त॥
विनयसुनी तब कृपानिधि, पवन चलाई एक।
योनि छाड़ि वाहर भयो, भूल्यो ज्ञान विवेक॥
पिता शुक्र बहुते कुँवर, भा रज अधिक कुमारि।
रज वीरज दोउ सम तहा, होत नपुसक धारि॥
कर्म होत जैसे कछू, तैसाही फल होय।
तैसाही सुख दुखको, भोग करत नर सोय॥
कर्म सो त्रिविध सञ्चित, परारब्ध क्रियमान।
भरै धरे बपु करै जस, तस भोगै तन आन॥

याहिविधि लीन जन्म जगआई * छिनयक वचन बोलि नहिं जाई
पुनिभा कछुक चेत तब जाग्यो * कहा कहा कहि रोवन लाग्यो
सुत उतपति सुनि पितु महतारी * हर्षित गान करैं मिलि नारी
छठी भई पुनि बरहों कीन्हा * नामकरण शिशु सुखमें दीन्हा
करत मूत्र विष्ठा जहँ परिया * स्वच्छास्वच्छ गनन नहिं करिया
माताहू कछु भेद न जानै * सुत धौं केहिहित रोदन ठानै
मन अनरुचित करै उपाई * जेहिते अधिक होत दुख आई

पांच वर्ष बालापन गयऊ * पुनि पौगण्ड अवस्था भयऊ
पढ़ि सुनि खेल कूद के माहीं * दश सम्वत गत चेत्यो नाहीं
जननी कहत पुत्र बड़ भयऊ * यह नहिं जानत सुत घटि गयऊ
बहुरि कुमार अवस्था आई * दसव बरस लाग्यो तरुणाई
भा विवाह वर भामिनि पाई * अनुदिन षोडश वर्ष बिताई
तब तहँ तरुण अवस्था लागी * काम अग्नि हिरदे बिच जागी
वनितनते अति हेत बढ़ायो * आपन सुख तिनमें लखि पायो
दो० यथा गृहप श्वकाहियलै, चपिचापत सह प्रीति ।
निज तालुगत सनुजमपि, मानत लोग अभीति ॥
तन हेरै फेरै नयन, बयन कहै मद साथ ।
हिंसारत निजमत चलै, मलै ओठ दोउ हाथ ॥
चालिस वर्ष लगी तरुणाई * रही बहुरि आई बुढ़ाई
भये पुत्र उपपुत्र घनेरे * होन दुखी तिनके दुख तें
निशदिन चिन्ता करत अपारा * सबन हेर मांझे प्रतिपारा
कछु शठ कृषवारी के जावै * जो तेहि चारा देत सदीवै
तिनके हेत करै अघ नाना * नहिं जानै मरि यमपुर जाना
भजै न हरि हरिजन गुणलीला * कहे न सुने मुदितमन शीला
आवतनहीं वृद्धापन गयऊ * जरा अवस्था आवत भयऊ
तनबल गयो गिरे सब दाना * डगमग चलत सुनत नहिं काना
हरेजस कहत अकाम विचारी * दीन्हों खाट दुवारे डारी
परे पौरिपर क्षुधा सतावै * मांगत कहे पहा कोउ पावै
तृषा लागि जल देत न कोई * बकत तहा मुख आवत जोई
तारके कहुं मांडि नहिं जाहीं * का यमराज बिसरिगो याही
जिनके हित परलोक बिगारा * ते सब नियरत किहिनि किनारा

इकदिनयमगण लीन्हेनि मारी * सुनत दीन पुर बाहेर डारी
ले जब गये दूत यम पासा * देखन दिहेनि नरकमहँ बासा
प्रथम दुखद नरक भुगनायो * पुनि चौरासी में जनमायो

दो० जीवत नाना दुख सह्यो, बिना भजे भगवन्त।
अब चौरासी के विषे, भोगौ कष्ट अनन्त॥
धिग धिग ताकी बुद्धिको, नरतन बोहित पाइ।
तरै न जो जगजलधिसों, आतमहत गति जाइ॥

तेहिते तात नरक परिहरहू * रामभक्ति हिरदय मह धरहू
स्त्रवै अम्बुभुक कुश रस पाई * उवै दिवाकर पश्चिम आई
मृगजल निरखि तृषा नरु जावै * राम विमुख सुख जीव न पावै
सुनि सब बालक बोले सोई * इक संशय हमरे मन होई
हम तुम जन्म लीन इक संगा * खेलत रहेन विहग तुरङ्गा
तुम हरिभक्ति कहा यह पाई * मुनिदुर्लभ पुराण श्रुति गाई

दो० छं० ॥

सुनिप्रह्लादकह्योहरिशाच्चजय।मारोगयोपितुगातपकोतव॥
इन्द्र सकोपिदैत्यपुरछेकिकै। मातुहमारीसगर्भहिदेखिकै॥

भु० छं० ॥

विचारयोहियेमेंतबेपर्वतारी।असुरशुक्रतेगर्भयाकेमँझारी॥
बधेयाहिनीकोनतोशत्रुहोई।करीरारिआगेखलीदुष्टमोई॥

दो० तेहि अवसर नारद तहां, आइ कही असि बात।
याहिके उर हरिभक्त है, सुर सुखदायक तात॥
सुनिकै नारद के बचन, तब चलि भये सुरेश।
दुखित देखि मुनि मातुकहँ, लगे देन उपदेश॥

सवैया ॥

तजिशोचहियेहरिनामधरौ जो ह्वै सुखदायकदु खप्रहारी ।
जेहिध्यावतशेषगणेशदिनेशअपालनकादिउमात्रिपुरारी ॥
सुतबन्धुसखात्रियमातु पिताधनधामसबैघरविकोमयवारी ।
ताविच धावतहै मृगज्यों न जपै जगपालकसिन्धुमुरारी ॥

दो० यहिविधिमुनिमममातुकहँ, उपदेश्यो दिनसात ।
मैं सचेत जननी जठर, सुन्यो कह्यो सोइ तात ॥

सुनि प्रह्लाद वचन अनुरागे * दण्डप्रणाम करन सब लागे
भल उपदेश हमैं तुम दीन्हा * मात पिता स्वारथरत चीन्हा
अस कहि बैठे निजनिज ठामा * लागे लिखन रामहीं रामा
तेहि अवसर दोउ महिसुर आये * प्रह्लादै लखि वचन सुनाये
विद्या पढ़ौ छाडि शठताई * हठ कीन्हे कछु नाहि भलाई
हाटकलोचन बहुत हठ ठाना * मारे गये ह्वै तब जाना
भीष्मराज कर हठ है नीका * शठनाकर हठ दुखप्रद जीका
सुनिरिसकरिद्विजधरिदोउहाथा * लाये तहँ जहँ निशिचरनाथा
महाराज तव सुत यह कैसा * कालकूट हरिघटमहँ जैसा
राम राम जग राम पुकारे * पढ़न न विद्या हम पचिहारे
विप्र वचन सुनि गोद उठाई * बोला अधिक सनेह बढ़ाई
तुम सुत जेठे सब सुखकारी * तुमहीं राजकेर अधिकारी
तातें विद्या पढ़ौ सचेता * सुखद सिखावन सुत तव हेता

त्रि० छं० यद्यपि तुम तात यह बात हितकी कही ।
तदपि मोहिं नीकि नाहिं लागि तनकौ सही ॥
लोक मे सुखद परलोक में अकाज को ।
तातें हौं न पढ़ौं तात करौं नाहिं राजको ॥

नि० छं० ॥ मुनि घर आनी । अतिथि ठानी ॥
असनि गिरायो । गजे मँगायो ॥ कह द्विजि लीजै । पग
तर दीजै ॥ यह सुखदाई । भये भलाई ॥

म० छं० ॥

ब्रह्मा द्रिमात । मुनि पवमान ॥ [illegible] । फल्यो धरि धीर ॥
ना० छं० नाथ बात मानि मोरि । पुत्र येव धरौ गोरि ॥
कम नीचही समान । पारही देहु जान ॥
छोड़ पुत्र यादि लेहु । राजकाज ताहि देहु ॥
कृष ज्ञान नारि तीन । कहै सुने समा कोन ॥

इति श्री[illegible] ॥ २४ ॥

दो० मुनि [illegible], [illegible] गिरा सुखदानि ।
[illegible] को, पुनि इतिहास बखानि ॥
[illegible], [illegible] महान ।
[illegible] पिता [illegible], [illegible] बाद [illegible] ॥

प० छं० ॥

[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] सोभै [illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥

दो० [illegible], [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥
[illegible] विधि, [illegible] ।
[illegible], [illegible] ॥

ता० छं० ॥

ताहिसमय पुरलोगनुआये । आरतहै अस बैन सुनाये॥
नाथ सुनो बड़ शोच हमारे । बाल सबै प्रह्लाद बिगारे ॥

तो० छं० ॥

तिनकेरिदयानाहिं जानकही । कहुँरोवतहाँसतहाकसही ॥
कहुँ नाचत गावत गोपरहे । पुलकांग बिलोचननीरबहै ॥
हरिनाम निशङ्क रटैं सुनते । किन येऊ पियूष रहे हसते ॥
धिकजीवनहै जगमेंतिनको । मनलाग न यारसमेंजिनको ॥
दो० सुनो, नाथ प्रह्लाद जो, फिरि रहैं चटसार ।
तौहम बसिहैंअनतकहुँ, त्यागब नगर तुम्हार ॥

ता० छं० ॥

यहविधिके सुनि बैन खरारी । मुष्टिक एकभवांकि मारी ॥
विप्रनते पुनि बोल्योरिसाई । खोयहु बालक मति पगाई ॥
दो० गुरुनन्दन तुम बन्धु दोउ, तात करिय न रोष ।
भयो कालबश बाल यह, विप्र तुम्हार न दोष ॥
असकहिपुनिसुत रे दिशि डोला * रामनाम सुमिरत लखि बोला
अबने मानि लेहु मम बानी * नाहित होत प्राण की हानी
सुनो तात भक्तन की टेका * छूट न जो दुख परै अनेका
सुनि प्रह्लाद वचन करि कोपा * मानो अगम प्रचागमि योधा
राजकुमार सके बो बांधी * सुभट समूह रहे चुप साधी

च० छं० ॥

तब आयुर धावा बांध बनावा गिरिते दीन्हेसि डारी ।
ऊपरै हरिलीन्हों सुधरिदीन्हों लागि न तानि बयारी ॥
पुनि जकड़ि जंजीरन नीरगंभीरन दिहिसि दुष्ट बोरवाई ।

साकरिकहँ तोरी भक्तहि छोरी किहिनि किनारे आई ॥
तब गज मँगवायो तरेडरायो देखत कुञ्जर भाग्यो ।
महिखोदिगडायोअहिलपटायोतेहिसखायिपतिनत्याग्यो ॥
तुपकैं बहुदाग्यो घाव न लाग्यो पुनि फेरेउ शिर आरा ।
दोउचरण बँधायो उरध टँगायो तीरन तकितकि मारा ॥
उर चुभ्यो न एका ताप अनेका नामप्रताप न व्यापी ।
सब करैं बिवादू यहिढिग जादू तेहि बल बचत प्रलापी॥
सुनि ताकी भगनी हरवरमगनी नाम ढूंढला आई ।
उर लै प्रह्लादै अतिअहलादै बैठि अग्नि लगवाई ॥
निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठकपाट लै आवैं ।
डारैं तिहिमाहीं छप्पर ढाहीं चरखफरक जो पावैं ॥
बल्लनकी माला नरभखबाला गुहि गुहि आइ चलायो ।
जपिग्रे मनुलाई हँसै ठठाई वड हरिभक्त कहायो ॥
भोरहि प्रहलादा गुत अहलादा बैठे धूरि उड़ावैं ।
जरिगे तमचारी दुष्टनि नारी नभनिर्जर गरियावैं ॥
भावत रघुनाथा यह सब बाता भइ सतयुग के माहीं ।
करि साधुसे द्रोहा ह्वै बश मोहा अवलगु जारीजाहीं ॥
दो० देखि सखा प्रह्लादके, हर्षि मिले सब धाय ।
दनुजराय बोलत भयो, पुनि निज ढिग बैठाय ॥

सु० छं० ॥

हौं बहुत्रासदई सुत तोकहँ । तदपि तू न डरै कछुमोकहँ ॥
तातसुनो जिनके उरहैं हरि । तेनिर्भयकोउकाहसकैकरि ॥
तोलगसंसृतिशोकसतावत । जौलगरामकनामनध्यावत॥
है सब तापप्रनाशनको गद । देखु समीप अहबपुते हद ॥

स० छं० ॥ सुनि बचन ऐस । शर लाग जैस ॥ गहि खम्भ बाहु । आँधिसि रिसाहु ॥ तब भायाहर्यो । मै कौन पर्यो ॥ कर खड्ग काढ़ि । जनु तड़ित गाढ़ि ॥ बोला कठोर । कहँ राम तोर ॥ जेहि रहे सुधेउ । अब राखिलेउ ॥

त्रि० छ० ॥

रामछलारहवै सचराचर मे नहि मानुतौ यो लखिलीजै । नामके अच्छर चौगुणकै पुनि पाच मिलायकै दूगुन कीजै ॥ आठकभागदिवै रघुनाथ बचैं युग अंक तहां मनुदीजै । मोहूमैं रामहै तोहूमैं राम है खड्ग में रामहै खम्भसुनीजै ॥

आछन्द ॥ खम्भा । साहै ॥ भाष्यो । जैसे ॥

दण्डकछन्द ॥ गगड़गडगड़ान्यो खम्भफाव्यो चरचराय निकस्यो नरनाहर को रूप अतिभयानो है । कटकटकटावै दाढ़ै दशन लपलपावै जीभ अधर फरफरावैं मोछव्योम छ्वायमानो है ॥ भभरिभरभराने लोग डडरिडरपराने धाम थथरिथरथराने अङ्ग चिते चाहतखानो है । कहत रघुनाथ कोपि गर्जै नरसिंह जबै प्रलयको पयोधि मानो तड़पितड़तड़ानो है ॥

गी० छ० ॥

गर्जो महाधुनि घोर शब्दक शोर तिहुँ पुरमा भयो । चौंके विरञ्चि डेरान बासव ध्यान शङ्कर तजिदयो ॥ लेलखरत दिग्गजकोलकूरम कलमल्यो अहि महिहली । नर नाग सुर में बिकल उछरेउ सिन्धुजल मारुत चली ॥ दनुजराज देखा नरहारी * बोला बचन सक्रोध पुकारी रे हरि कुहुक तोरि मैं जाना * छलकरि बध्यो बन्धु बलवाना

तासु बैर लेने हित तोहीं * खोजिफिरेउँ कहु मिल्यो न मोहीं
अब नरहरि तनु धरि मम नेरे * आयो कठिन कालके प्रेरे
अस कहि कीन्हेसि गदा प्रहारा * गहि नरसिंह धरणि दै मारा
पुनि उठि लरत धरत हरि धाई * बहुत काल इमि भई लराई
विकल जानि सुर रमानिवासू * उरु धरि उदर बिदारेउ तासू
लखि सुर हरषि सुमन बरषायो * जय जय कहि दुन्दुभी बजायो
आँतैं काढ़ि पहिरि उर हारा * तदपि न निवरति क्रोध अपारा
नारदादि सनकादि मुनीशा * सहित शक्र कमलाजगदीशा
डरहिंसकल कोइ निकट न जावैं * दूरिहि ते सब विनय सुनावैं
कह विधि कमलाते तुम जाहू * निकटवासिनी हरिकी आहू
सुनि कमला कर कानन धारा * हम अस रूप न कबहुं निहारा
दो० तब सुर सब प्रह्लादकी, विनयकिहिनिढिगआय।
चतुरानन बहु प्रीतिते, बोले हृदय लगाय॥
निकटजाहु प्रह्लाद तुम, हम सब देव डरात।
सुनत गये नरसिंहपहँ, हर्ष शोक नहि गात॥
दीनदयाल ललकि उरलायो * बिछुरा बन बालक जनु पायो
हासुत तोहिं नीच दुख दीन्हा * पायसिफल खल आपन कीन्हा
अब मोहिं अतिप्रसन्न जियजानू * मांगु तात अभिमत बरदानू
सुनहु नाथ तव भक्ति जे करहीं * मनमें कछु कामना धरहीं
ते वै बनिक न आशिक जानी * कुन उद्योग नफा अनुमानी
हमें न कछु चहिये किरपाला * सुकृति सुभक्तिहि देहु दयाला
यह बरदान मिलै प्रभु मोका * बिमुख पिता पावें परलोका
सुने नरसिंह कह्यो हरषाई * सुनहु तात मम भक्ति बड़ाई
कुं० जाके कुलमें भक्त मम, नाम लिहाड़ी होय।

एक एकशत आपनी, पीढ़ी तारत सोय ॥
पीढ़ी तारत सोय, पिताकी चौबिस जानौ ।
माताकी गनि बीस, बामकी षोडश मानौ ॥
द्वादश पुत्री और, एकादश भगिनी ताके ।
दश फूफा की और, आठ मौसी गै जाके ॥
दो० कुल पवित्र जननी सफल, भागवती महिवास ।
स्वर्ग स्थित पितरोपि धनि, येतु बस मम दास ॥
जब जगपति अस वचन सुनाये * जन प्रह्लाद हिये अति भाये
नायें माथ प्रेम परतीती * गो त्यहिछिन लागन यह रीती
सुनि नरसिंह कही असि बाना * वचन हमार मानिये ताता
यदपि तुम्हें इच्छा कछु नाहीं * तदपि मन्वन्तर राजि कराहीं
गी० छं० ॥
करिय मन्वन्तर, एकको सुत राज्य अस मोरे कहे ।
हौं डरत मायाते तुम्हारी विनय करि हरिपद गहे ॥
मम तोर दोहि चरित्र नित सह मोद सुनिहें जे गाइहें ।
रघुनाथ ते निशशङ्कही भवबन्धते छुटि जाइहें ॥
दो० यह चरित्र प्रह्लादकर, बरण्यो जन रघुनाथ ।
श्रीगुरु देवादास के, चरण कमल धरि माथ ॥
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतप्रह्लादचरित्रवर्णनोनाम
षड्विंशोऽध्याय. ॥ २६ ॥
दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
मार्कण्डेयपुराण कछु, भेगल कहौं बखानि ॥
रघुपति इच्छा प्रकृति सो, रच ब्रह्माण्ड अनेक ।

निधिहरिहरगुणथापियहु, करहु कथहुँ रहएक ॥
पुनि शौनक बोलत भये, नाथ कहा यहिवार ।
अवधपुरी भूलोक महँ, आई केहि परकार ॥
कहा सूत सुनिये मुनिज्ञाना * यहां भेद मैं करौं बखानी
एक बार जल बाढत भयऊ * सब ब्रह्माण्ड बूडि तहँ गयऊ
ले जीवन की तत्त्व भवाना * आदिगरणु महँ आइ समाना
हरि तब शयन शेषपर कीन्हो * मोहसो माया जगत न ताहीं
विष्णु श्वास ते भे चावेदा * नादि तत्त्व जे वरणत भेदा
नाभितेएक कमल तब निकस्यो * सो पङ्कज जल ऊपर विकस्यो
तब तासु ब्रह्मा भे आई * चारिभुजा पुत्तनारि लखाई
जलविलोकिविधि हृदय विचारा * कह माता कहँ पिता हमारा
कमलनाभि गहि तरका गयऊ * पुनि ऊपर कहँ आवत भयऊ
विपुल बार अस ऊपर आया * पद्मनाभिकर अन्त न पायो
तब नभते भै गिरा सोहाई * मिलत न प्रभु बिन तप सेवकाई
सुनि अज चित्त ध्यानमें दयऊ * बहुत कालपर दर्शन भयऊ
स० छ० तहँ विष्णुके श्रुतिमैलसे । प्रकटे असुरयुगशैलसे ॥
लखिकै तिन्हैं ब्रह्म डरेउ । तबदेवकीविनतीकरेउ ॥

म० छ० ॥

जयजयमाता । सबसुखदाता ॥ जगत कहावै । तब उपजावै ॥

मो० छ० तोही आदि माया । निगम नेति गाया ॥
तोही करणि हरणी । तोही विश्व भरणी ॥
जलज माहि मोही । प्रकट कीन्ह तोही ॥
जगत बश तुम्हारे । तरण वृन्द चारे ॥

पा० छं० ॥

हरिवश तोरे । सोवत भोरे ॥ देहु जगाई । करै लराई ॥
असुरसंहारैं।हमै उबारैं॥सुनि तव माया । हरिहिजगाया ॥
मधुकैटभ देख्यो हरि जागे * दोउ ब्रह्मा कह मारन लागे
ताहि विष्णुहि दिये जगाई * तब ब्रह्मा अति शोर मचाई
केशव दीख दुष्ट कहँ आये * क्रोधित ह्वै असुरन पर धाये
हरि लागि जल माहिं लड़ाई * जानि न जाइ बली दोउ भाई
पांच सहस्र वर्ष चलि गयऊ * मधुकैटभ तब बोलत भयऊ
हम प्रसन्न तुमपर भगवाना * लखि शूरता अहो बलवाना
तातें बर भावै सोइ लीने * कह हरि शीश आपने दीजै
दो० हँसिबोले दोउ दीन्ह हम, जो तुम मांग्यो नाथ ।
पर जल में जनि मारिये, बाहर काटौ माथ ॥
हरिछं० तब हरि डर धारे । जल पर बध करि ॥
लीलाछं० मरन लागे जबै । बचन बोले तबै ॥
भूमि तनुकी सबै । वृष्टि तापै रवै ॥
तब हरि असुर हते निज पानी * तासु भ्योनि प्रभुमाहि समानी
तबतें मधुसूदन कहवाये * कैटभारि गुण आगम गाये
भूमि भई तिन तनकी जानो * नाम मेदिनी ताहि बखानो
जलके ऊपर रहा सो छाई * जिमि नलिनी सरपर उतराई
जलकर पारावार सो नाहीं * कच्छप एक रहत त्यहिमाहीं
मस्तक कांति चरण रग हेरे * कैयो कैयो योजन केरे
दो० सससहस शतकोटि यक, अर्बयोजन परमान ।
कूरममुख पूरब दिशा, पश्चिम पूँछ बखान ॥
तापर शेषनाग डाम रहई * जैसे मूल मेरु पर अहई

फन हजार ताके श्रुति काहा * यकफनपर यक रहत बराहा
मशकसमान जानि नहिं पावा * अस तनु शेष सो आगम गावा
वसुधा दशन बराह के धारी * निलसम गनै कोल अस भारी
कु० आठौ दिशि दिग्गजरहैं, महि रक्षा हित दुन्द।
ऐरावत पुनि पुण्डरिक, वामन चौथ मुकुन्द॥
वामन चौथ मुकुन्द, पराजित यम सारभ कुज।
हेमदन्त परमान, अठारह योजन के दुज॥
दुज द्वै योजन केर, मूंडि त्रै योजन पाठा।
पट पट योजन ऊंच, बली अति दिग्गज आठा॥
दो० यहिविधिथिरकरिभूमिप्रभु, विधिको आज्ञा दीन।
सृष्टिरचौ यहि धरणिपर, सुनिविधि शिरधरिलीन॥
ब्रह्मा सृष्टि रचन जब थापी * पचास कोटि योजन भूनापी
मनते विधि जग रचने लागे * इच्छेते वहु सुन उपरागे
सनकादिक आदिक जे भयऊ * माया रहित सकल वन गयऊ
तब बायें भुज ते शतरूपा * दहिने उपजाये मनु भूपा
तिनहू बनका कीन पयाना * लखि ब्रह्मा तब रोदन ठाना
ताते रुद्र प्रकट भे गेरा * कृत रोवत हम रचब घनेरा
कोई चीन कोइ पीन बिशाला * कोइबिनाशिर कोइ बिपुलकपाला
कोइ बिनकर मुखदगपगकाना * कुटिल कराल कहूंके नाना
यहि विधि भूत बहुत उपजाये * एकहि एक लेहिं सो खाये
तब निधि तिन्हें बरजि सौंपाये * रुदन सहित विष्णुपहँ आये
प्रभुते सब निज हाल निरूपा * मुनि मिलिगे जहँ मनुशतरूपा
बोले सुतन राज्य चलि करहू * बचन हमार हृदय महँ धरहू
शम सन्तोष दया सुविचारी * जहँ तहँ अहै सुखद व्यवहारी

[illegible]

दो० बहुरि तीन कन्या भईं, सकल सुलक्षण खानि।
देवहुती अवकूति अरु, परसूती ये जानि॥
मनुते मे मनुष्य मनुराया * तेहिते मानुष नाम कहाया
राज्य करत बीते बहु काला * यकदिन कीन्ह विचार भुवाला
विषय करत चारिउ पन गयऊ * तदपि न इन्द्री निरापन भयऊ
भक्तिविमुख सुख दुःख समाना * अस बिचारि बन कीन्ह पयाना
नारि सहित नृप नैमिष आये * हर्षि गोमती माँहि नहाये
तहा विप्र हरिदेव प्रवीना * कनकलतायुत नारि नवीना
करहिं तपस्या भगवत हेता * अशनबसन तजि अवधनिकेता
लागे करन तहँ तप आपू * द्वादश वर्ष मन्त्रकर जापू
गौर श्याम सिय राम स्वरूपा * धरें अहर्निश ध्यान अनूपा
कन्दमूल फल कछुदिन खाये * पुनि सब त्यागि नीरपर आये
षट सहस्र सम्बत जल पीनो * पुनि गतिवात सोउ तजिदीनो
वर्ष सहसदश भल्यो समीरा * पुनि सोउ तजिदीन्हो मतिधीरा
मन अभिलाष यहै दिनराती * प्रभु कहँ देखि जुड़ाइय छाती
निर्गुण निराकार निरखेदा * नेति नेति ज्यहि गावत बेदा
ब्रह्मा विष्णु महेश सुभेषा * जासु अशते होत अलेषा
दो० सोइ प्रभु सेवा बश रहत, कहत निगम असगाय।
जो यह सत्य तो पूजिहैं, मम अभिलाषा आय॥
तो०छं० इमि वर्ष दशहज्जार। रहे दोउ बिन आधार॥
कृशगात नातनवारि। नहिं नेकु मानी हारि॥
ह०छं० लखि तप अतिभारी। हरि अज त्रिपुरारी॥
चलि मनु ढिग आये। मृदु वचन सुनाये॥
यु०छं० मागहु बर सुत सोई। जो इच्छा मनु होई॥

मनु कछु कहत न भयऊ। पुनिपुनि फिरिकै गयऊ ॥
चौ० छं० ॥ शम्भु जगस्वामी । अन्तर्यामी ॥
निज जन जान्यो । नन्य पिछान्यो ॥
घ० छं० ॥
तब अनंत बानी सुनु नृप रानी मागहु जो वर भावै ।
सुनि गिरा सोहाई उठ सोदाई जिमि वरते कोइ आवै ॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुरधेनू ।
विधि हरि हरनायक सुरनरदायक प्रणतपाल सुखदेनू ॥
जो शम्भुहु भावै मुनिजन ध्यावै काकभशुण्डि सुखैना ।
सोइ राम अनूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरि नैना ॥
अस वचन विनीता परमपुनीता सुनि प्रकटे भगवाना ।
सुखसदन घनश्यामं लखिशतकाम लाजत नीरजपाना ॥
शशिमुखग्रीवसीवा द्विजकम्बोधा अधरअरुणशुकनासा ।
नवअम्बुजलोचन रिपुमदमोचन रदकपोल हरिहासा ॥
भूषण मणिजाला उर वनमाला भाल तिलक उरभारी ।
मुनिकुण्डललोला मुकुटअमोला भृकुटी धनु अनुहारी ॥
कटि कसे निषङ्गा कर शारङ्गा पीत वसन लपटाये ।
करि कन्ध जनेऊ कच शुभ तेऊ त्रिविधसुगन्ध लगाये ॥
त्रिवलि नखतञ्चीरा नाभि गँभीरा उदररेख त्रय राजै ।
राजिवदोउचरण मुनिमनहरणं जिन ध्यावत अघभाजै ॥
जो सब अंग मोहैं वामें सोहैं आदिशक्ति सुखखानी ।
जेहि अंश ते उपजैं अगणित प्रकटें उमा रमा ब्रह्मानी ॥
दोउ रूप अनूपा मनु शतरूपा थकटक रहे निहारी ।
पुनि गिरे सुजाना दण्ड समाना वपुकी दशा बिसारी ॥

दो० बहुरि तीन कन्या भईं, सकल सुलक्षण खानि।
देवहुती अवकूति अरु, परसूती ये जानि ॥
मनुने मे मनुन मनुराया * तेहिते मानुष नाम कहाया
राज्य करत बीते बहु काला * यकदिन कीन्ह विचार भुवाला
विषय करत चारिउ पन गयऊ * तदपि न इन्द्री निरपित भयऊ
भक्तिविमुख सुख दुःख समाना * असविचारि वन कीन्ह पयाना
नारि सहित नृप नैमिष आये * हषि गोमती माहिं नहाये
तहां विप्र हरिदेव प्रवीना * कनकलतायुत नारि नवीना
करहिं तपस्या भगवत हेता * अशनवसन तजि अवशनिकेता
लागे करन तहैं तप आपू * द्वादश वर्ण मन्त्रकर जापू
गौर श्याम सिय राम स्वरूपा * धरैं अहर्निश ध्यान अनूपा
कन्दमूल फल कछुदिन खाये * पुनि सब त्यागि नीरपर आये
षट सहस्र सम्बत जल पीनो * पुनि गलितपात सोउ तजिदीनो
वर्ष सहसदश भक्ष्यो समीरा * पुनि सोउ तजिदीन्हो मतिधीरा
मन अभिलाष यहै दिनराती * प्रभु कहँ देखि जुड़ाऊं छाती
निर्गुण निराकार निरखेदा * नेति नेति ज्यहि गावत बेदा
ब्रह्मा विष्णु महेश सुभेषा * जासु अंशते होत अलेषा
दो० सोइ प्रभु सेवा बश रहत, कहत निगम असगाय।
जो यह सत्य तौ पूजिहैं, मम अभिलाषा आय ॥
तो०छं० इमि वर्ष दशहज्जार। रहे दोउ विन आधार ॥
कृशगात नातनवारि। नहिं नेक मानी हारि ॥
हं०छं० लखि तप अतिभारी। हरि अज त्रिपुरारी ॥
चलि मनु ढिग आये। मृदु वचन सुनाये ॥
यु०छं० मांगहु वर सुत सोई। जो इच्छा मनु होई ॥

मनु कछु कहत न भयऊ। पुनिपुनि फिरि कै गयऊ॥
चौ० छं० ॥ प्रभु जगस्वामी । अन्तर्यामी ॥
निज जन जान्यो । नन्य पिछान्यो ॥
च० छं० ॥

तब भै नभ बानी सुनु नृप रानी मांगहु जो बर भावै ।
सुनि गिरा सोहाई उठे मोटाई जिमि बरते कोइ आवै ॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुरधेनू ।
बिधि हरि हरनायक सुरनसहायक प्रणतपाल सुखदनू ॥
जो शम्भुइ भावै मुनिजन ध्यावै काकभुशुण्डि सुखैना ।
सोइ राम अनूपा श्यामस्वरूपा देखौ मैं भरि नैना ॥
अस बचन बिनीता परमपुनीता सुनि प्रकटे भगवाना ।
शुभतन घनश्याम लखिशतकामं लाजत नग्जपाना ॥
शशिमुखछबिसीवा च्छिगुकग्रीवा अधरअरुणशुकनासा ।
नवअम्बुजलोचन रिपुमदमोचन रदकपोल हरिहासा ॥
भूषण मणिजाला उर बनमाला भाल तिलक उरभारी ।
श्रुतिकुण्डललोला मुकुटअमोला भृकुटी धनु अनुहारी ॥
कटि कसे निषङ्गा कर शारङ्गा पीत वसन लपटाये ।
करि कन्ध जनेऊ कच शुभ तेऊ बिबिधसुगन्ध लगाये ॥
नख मञ्जलछवीरा नाभि गँभीरा उदररेख त्रय राजै ।
राजिवदोउचरणं मुनिमनहरणं जिन ध्यावत अघभाजै ॥
जो सर्व जग मोहै बाये सोहै आदिशक्ति सुखखानी ।
जेहि अंश ते अघटै अगणित प्रकटै उमा रमा ब्रह्मानी ॥
दोउ रूप अनूपा मनु-शतरूपा यकटक रहे निहारी ।
पग गिरे सुजाना दण्ड समाना वपुकी दशा बिसारी ॥

प्रभु तुरत उठायो हृदय लगायो फेरेउ शिर निज हाथा।
मागहु वर सोई जो मन होई सुनि बोले नरनाथा॥
पदपद्म तुम्हारे देखि हमारे सब पूजे मनकामा।
लालसा जु एका है मँगिबेका कहत लगत भय तामा॥
जानत तुम स्वामी अन्तर्यामी पुरवहु मम अभिलाषा।
सब सकुच बिहाई माँगहु राई नहिं अदेव प्रभु भाषा॥
बोले महिपालक तुमसन बालक इनमम चहौं पतोहू।
बिपचिक इव जानो ईश न मानो देव यहै करि छोहू॥
दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि, पुनि बोले सुरराव।
आपु सरिस पहौं कहा, मही होब सुत आय॥
शतरूपा ते कह्यो बहोरी * देवि मागु वर जो रुचि तोरी
जो पति मागा सोइ प्रिय मोहीं * मानो मैं ईश्वर करि तोहीं
सुनि मृदु गूढ वचन छलहीना * कह प्रभु जो माग्यो सो दीना
अब तुमदोउ ममआयसु मानी * बसो जाय सुरपति रजधानी
तहँ कछुकाल रहेउ सुखपाई * युग त्रेता जब लगिहै आई
तब तुम ह्वैहौ अवध भुवारा * तहँ होब मैं तनय तुम्हारा
इच्छा मय नर देह बनाई * अवतरिहौं अशनयुत आई
करिहौं चरित अनेक प्रकारा * जो सुनि नर ह्वैहैं भवपारा
असकहि पुनि प्रभु द्विजपहँआये * मागु मागु वर वचन सुनाये
नारि समेत विप्र अस भाषा * देहु नाथ वर यह अभिलाषा
दो० इनसमान कन्या मिले, तुम समान जामात।
यह वर दीजे कृपाकरि, और न चाहिय तात॥
एवमस्तु कहि कृपा निधाना * बोलत भे सुनु बिप्र सुजाना
त्रेता जनक होब तुम सोई * नाम सुनयना इनकर होई

नव तव तनया शक्ति हमारी * ह्वै है अशन सयुत चारी
मैं जामात्र मिलब तहँ जाना * अस कहि भे प्रभु अन्तरधाना
मनु शतरूपा द्विज द्विजनारी * बसे जाय चहुँ स्वर्ग मँझारी
जन्म महि अवतरिहैं वर लागे * सो चरित्र वर्णब पुनि आगे

हि० छं० ॥

यह इतिहास जौन मैं कही । लोमश रामायण महँ सही ॥
पद्मपुराण साखि पुनि भारे । सुनिकर कोइ सन्देह न कारे ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतब्रह्माकीउत्पत्तिअयोध्याकीउत्पत्तिस्वायम्भुव-
मनुकथावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्याय ॥ २७ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णों सुखसंहिता कछु, बिष्णुपुराण बखानि ॥

कह शौनक शम्भू मनु पाछे * कौन राज्य केहि कहिये आछे
बोले मुनि जब नृप वन गयऊ * तब उत्तानपाद पति भयऊ
तिनते ध्रुव ध्रुवते सुत दूना * कछु दिन पाछे ह्वैगा सूना
लखि बिरञ्चि प्रियव्रते लयाये * कीनि राज्य भलि प्रजा रिझाये
सात पुत्र तिनके भे चीन्हें * ताते सात द्वीप करि दीन्हें

दो० जम्बू और पलाक्ष है, शालीमल कुशचारि ।
क्रौंच संकलाद्वीप पट, पुष्कर सात बिचारि ॥
साबार अन्तर जानिये, इन द्वीपन में तात ।
खारक्षीर दधि मधु मदिर, इक्षु जल सागर सात ॥

जम्बू द्वीप तासु बिस्तारा * योजन लच्छ केर निरधारा
जम्बूफल तहँ नदी बहावे * ताते जम्बू द्वीप कहावे
सेमेरादिदे गिरि बहु रहई * गङ्गादिक सरिता बहु बहई

नृप अग्नीध्र तहां भे चण्डा * नवसुत करिदीन्हे नवखण्डा
दो० ईला रमणक हिरणिकुर, हरि बृप किंपुरुपाल।
भरत माहि उपद्वीप बहु, भद्रास ध्वजमाल॥
सौ योजन का देश बनावा * सबै देश का मण्डल गावा
नवशत मण्डलका यकखण्डा * विष्णुउपासी बसन अखण्डा
तामें चहुवर्णन के नामा * द्विज नृप बणिक शूद्र अभिरामा
जम्बुद्वीप के चहुँ दिशि हेरा * क्षारसिन्धु लखयोजन घेरा
ताके आगे द्वीप पलाशा * उभयलाख योजनकर आशा
तामें पाकरि बिटप सोहावें * ताते द्वीप पलाश कहावें
इध्मबाहु तह के नृप हेरे * भये सात बालक तिन केरे
जवे सुभद्र सान शिव रासा * क्षेम अभय अमृत हरिदासा
ताते सात खण्ड करि दीन्हे * सरितहुगिरिद्रुममधि धरि दीन्हे
दो० तामें बिप्रै हंस कहि, क्षत्रिहि कहत पतङ्ग।
वैश्यहि बुध शूद्रै वदत, त्याग अपर बहु अङ्ग॥
ताके चारों तरफ हैं, सागर दर रस केर।
द्वै लख योजन में तहां, तरणि उपासक ढेर॥
ताके अग्र शालमलि द्वीपा * चारि लख योजन कर दीपा
द्वै सहस्र योजन बर तामें * सेमलतरु खगपति गृह जामें
द्वीपशालमलि त्यहि वहनामा * यज्ञबाहु नृप तहां रहावा
सात सुवन तिनके भे चीन्हे * तिन हितसातखण्ड करि दीन्हे
ऐरायन अविज्ञान सुरोचन * समर सोम परिभद्र बिमोचन
दो० तहँ बिप्रै बद श्रुतधर, नृपै वीजधर भाव।
बैश्यहि बोलत वशधर, शूद्रहि दुग्धधर गाव॥
तेहिके चारों तरफ है, सागर मदिरा केर।

चारि लक्ष योजन तहां, चन्द्र उपासी ढेर ॥
तेहि आगे कुश द्वीप जु अहई * आठ लाख योजन श्रुति कहई
तेहिमाँ कुशाकर विरमोगारा * रुद्र सहस योजन का गावा
शूर हिरण्यरेत तहँ केरे * सात पुत्र भे तिनके हेरे
नाभिगुप्त स्तम्भि वसुमाना * वस्तुविवत वस्तुव्रत जाना
तेहिने सात खण्ड करि दीन्हे * सातें गिरि मर्यादा के लीन्हे
दो० तहँ ब्राह्मण को कुशल कहिं, चत्रिहि कोविदकाम ।
वैश्यहि अभिजित वस्तु है, शूद्रहि कोकिलनाम ॥
तेहिके चारों दिशि रह्यो, घृत को सागर पूरि ।
आठ लाख योजन तहाँ, अग्नि उपासी भूरि ॥
क्रौञ्चद्वीप तेहि आगे आहै * सोरह लक्ष योजन तह गहै
क्रौंच विहंग रवि तेज सुहावा * क्रौञ्च द्वीप तेहिते कहवावा
घृतपृष्ट तहँ के नृप जाना * तिनके भे सुत सात सुजाना
मधुरुह भाजीष्ट सुधामा * मधुरुह लोहित वनपति आमा
सात खण्ड करि तेहिते वाटे * मर्यादा हित गिरि तस पाटे
दो० तहँ विप्रहि पुरुषा कहत, क्षत्रिहि ऋषिभाराय ।
वैश्यहि भद्रा भनत हैं, शूद्र देवक गाय ॥
ताके चारों तरफ है, षोडश योजन फेर ।
क्षीरसिन्धु तहँ के मनुप, उदक उपासी ढेर ॥
शाकद्वीप तेहि आगे सोहा * बत्तिसलक्ष योजन कर जोहा
तहँ शाकन फेर तरु अहई * शाकद्वीप तेहिते सब कहई
मेधातिथ तहँ के नृप धीरा * सात पुत्र तिनके भये वीरा
चित्ररेफ पूत्रमान पुरोजव * धम्रनिरत बहुरूप मनोजव
तिनहिं सातखण्ड करि दयऊ * सोई नाम खण्डन कर भयऊ

दो० तहँ विप्रै बद बालजी, छत्रिहि कहत अमीर।
वैश्यहि भाषत बिरुजकर, शूद्रे धारक धीर॥
ताके चारो तरफ है, दधिकर सागर नीक।
बत्तिस लख योजन तहां, पवन उपासी ठीक॥
ताके आगे पुष्कर द्वीपा * चौसठि योजन केर समीपा
पुष्कर का तरु तहां रहावै * ताते पुष्कर द्वीप कहावै
इन्द्रदवन राजा तहँ केरे * रमन धातुकी मुन युग हेरे
तिनहित उभयखण्ड करिनावे * गिरि तरु मर्यादा हित राखे
दो० तहँ विप्रै पारस कहत, छत्रिहि भनत भुजङ्ग।
वैश्यहि बोलत भरथरी, शूद्रै भनत कुरङ्ग॥
ताके चारों तरफ है, सिन्धु शुद्ध जलकेर।
चौसठि लख योजन तहा, ब्रह्मउपासक ढेर॥
चिन्तामणिछन्द॥ ताके आगे परै भूमि। रातीमाटी केरि भूमि॥ पौने सोरह लाख हेरि। ताके आगे हेमकेरि॥ गोपालछन्द॥ आठ करोरि चन्तालिस लाख। योजन जानहु एकपाख॥ लोकालोकी आदि अद्र। औरहु वीसन आहि भद्र॥ वीरछन्द॥ अब तात। सुनु बात॥ नभकेरि। मखहेरि॥
दो० जाम्बू मध्य सुमेरुयक, लख योजन परमान।
तामधि इकइस लोकहैं, सो सब करौं बखान॥
कुं० बासुकि भूतरु यमसुदत्त, किन्नर ब्रह्मराक्षेश।
राक्षस कालरु चित्रगुपित, योगिनि गन्धर्वदेश॥
योगिनि गन्धर्वदेश, सुअर्यम महत तपसुजन।
मध्य सुदिव्य सुनाग, देवपिप्पल विशुकर्मन॥

विशुकर्मादिक छांड़ि, अहैं औरो नाना पुर ।
पावक पवन पुरारि, ब्रह्म वैकुण्ठ दिवासुर ॥
इकलख योजन भूमिते, है ऊंचा रविलोक ।
सहस बहत्तर योजन, तेहि बिमानकर ओक ॥
तेहि बिमानकर ओक, उदयकृत इन्द्रपुरी जहँ ।
धर्मपुरी मध्याह्न, अस्तमव वरुणपुरी महँ ॥
अर्धलाख योजन रहै, धनदपुरी उत्तरेक ।
इकइससहस्र योजन छस, चलै पलकबिच एक ॥
अरुलख योजन भानुते, है शशिलोक उछार ।
योजन अरतालिस सहस, मे ताको बिस्तार ॥
मे ताको विस्तार, एक लख पर मङ्गरपुर ।
तेतालिस हजार, माहि बिस्तार तस्य फुर ॥
यहिबिधि इकइकलाखपर, वसैं ग्रह नखन अनेक ।
बर्णै जन रघुनाथ किमि, सबन अहै हैं एक ॥

यह इतिहास कह्यों जस जानी * अब पूछो सो कहौं बखानी
सुनि शौनक बोले हरषाई * हाथ जोरि चरणन शिरनाई
दीनदयाल वचन सुनि तोरे * अति आनन्द भयो उर मोरे
तृप्त न होत श्रवण मम स्वामी * सरितसमूह सिन्धु जिमिगामी
तेहिते मोहिं निज किङ्कर जानो * अब सरयू की कथा बखानो
प्रकटी किमि भूलोकम आई * को लायो सो कहौ बुझाई
सुने सूत मुनिवचन बिनीता * रामकथापर प्रीति पुनीता
धन्य धन्य कहि बारहिं बारा * बर श्रोता मैं तुम्हें निहारा
सुनो तात सरयू जिमि आई * उतपान में सो कहौं बुझाई
ब्रह्मा कहँ जानत संसारा * जिन सिरज्यो जगकर बिस्तारा

तिनके भवन तीनि रहैं दारी * सन्ध्या स्वग्ति और सावित्री
तिनके तनय मरीची भयऊ * नाम प्रेमजा प्रिय विधि दयउ
सुत मरीचके कश्यप जानो * दशत्रिय तिनके नाम बखानो

गेलाछन्द ॥

प्रथमै अदिती अमर कोटि तेंतिस जिन जाये।
दिति के दैत्य अपार नाग कद्रुम के गाये॥
विनता सुत खगनाथ चन्द्र सोमावति केरे।
सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे॥
पादवती जो सत्राव लक्ष पर्वत की माता।
दमावती सुन ऋषै अमोघा खग संजाता॥
इराते तृण वृक्ष जौन लागत परकाजै।
नखरेखासुत मेघ कोटिछप्पन उपराजै॥
तिनके अमृतवृष्टि किहे सब जग सुख पावत।
कश्यपते भै सृष्टि सकल श्रुति ऐसे गावत॥

तोमरछन्द ॥

श्रीकश्यप के सुत भानु। द्वै नारि तिनके जानु॥
छाया प्रभा अस नाम। बिश्वकर्मजा अभिराम॥
युग पुत्र छाया जाय। यमराज शनि दुखदाय॥
शनि बहिनि यमुनानाम। यम भयहरणि प्रदकाम।
प्रभा के अश्विनीकुमार। प्रकटे हरण रुजभार॥
तिनके तनय मनुभूप। शुचिरेखा नारि अनूप॥
तिनके तनय इक्ष्वाकु। जिनकी न प्रजा विश्वाक॥
सरयू नदी तिन आनि। भूपर बहाई जानि॥
केहि भांति लाये नाथ। विस्तार बरणौ गाथ॥

कहु सूत अवध भुवाल । इक्ष्वाकु जे जेहिकाल ॥
बैठे भवन एकबार । नृप कीन रुचत विचार ॥
पुर पास सरिता होइ । तौ लहै सुख सब कोइ ॥
दो० गृह स्नान सो अधम है, मध्य कूपकर होइ ।
उत्तम सर अवती करै, उत्तम उत्तम सोइ ॥
सो० असमन मभुक्ति नृपाल, गुरु वशिष्ट पहँ आयहू ।
नाइ कमलपद भाल, कहतभये निज कामना ॥
मुनिवशिष्ठ हियहर्षित भयऊ * दोनमिलि गाकन्या दिगगयऊ
बोलतभये नदी गुरु चहिये * कहा ना मिलै कृपाकरि कहिये
कहनन्दुनी सुनहु मुनि ज्ञानी * सुना एकही कहौं बखानी
एकसमय बैकुण्ठ मँझारी * बैठे नारायण युत नारी
महादेव हरि दर्शन हेता * आये तहँ गिरिसुता समेता
नारदादि सनकादि मुनीशा * चतुरानन सुमनस सुरईशा
सबहिन आइ आइ शिरनायो * प्रभु आदर करिकरि बैठायो
सभा देखि शङ्कर अनुरागे * लागे करन नृत्य हरि आगे
नारद बीना तहाँ बजावैं * ब्रह्मादिक सुर राग गवावैं
छयो राग रागिनी छत्तिस * सप्तगुण ग्राम सप्तस्वर बत्तिस
ताल मृदङ्ग तँबूर सितारा * बाजन बढ्यो विनोद अपारा
देखि नृत्य रीझे भगवाना * बोले हर मागहु बरदाना
कह पशुपति जो दाया कीजै * तौ मोहि भक्ति आपनी दीजै
सुनि शङ्कर के वचन मुरारी * बोले दीन नयन भरि बारी
सोइ जल पातभयो मुनिराई * लीन कमण्डलमहँ विधि धाई
तीरथ भयो गुप्त सो रहई * लावहु जाय ब्रह्मपहँ अहई
दो० सुनि वशिष्ठ हरषितभये, गये पिता के लोक ।

मुख शोभा तहँ कर निरखि, भे मुनि विगतविशोक॥

ब्रह्मभवन पुनि देख्यो जाई * कहि न जात कछु तासु निकाई
चतुरानन के दर्शन कीन्हे * भाल तिलक पर नेह जु लीन्हे
धरे कमण्डल अस सोहायो * ललित वशिष्ठ चरणन शिर नायो
विधिहू ध्यानमाहिं लवलाना * बैठि गये तह मुनि परवीना
वर्षसहस्र सपन चलि गयऊ * तब अज ध्यान निवारत भयऊ
मुनि विलोकि हंसि हृदय लगायो * कह्यो तात केहि कारण आयो
तब वशिष्ठ मृदुवचन उचारे * नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे
तिनके पुर ढिग सरिता नाहीं * तेहिते मैं आयो तुम पाहीं
अब महराज दया करि सोई * दीजै जेहि मोकों यश होई
सुनि विधि दिय कमण्डल नागे * चल्यो प्रवाह मग मुनि धायो
गगन ते गिरि भइ [illegible] * गिरि सुमेरु [illegible] बागा
[illegible] * [illegible]
सो जल गिरी [illegible] * [illegible] नाम बखाना
पुनि [illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible] तप [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible] वशिष्ठ [illegible]
[illegible] * [illegible] वशिष्ठ [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]

बोले हरि हलकारहु पाथा * अवहीं निकरि चलै तव साथा
तब वशिष्ठ जग्य जाय हलोरा * चली निकसि सरयू बरजोरा
गिरि पुर ग्राम धाम करि पावन * वहीं अवधतर आइ सुहावन
दो० सुनि नृप पुरवासिन सहित, आये अपगातीर।
पूजन कीन्हों बिविध बिधि, दीन दान भय भीर ॥
आय आय सुरबधुनयुत, कीन्हेनि तहँ अस्नान।
नाम धरे त्रय नयनजा, सरयु वशिष्ठी जान ॥
दरश परश मज्जन करत, हरत पाप अति गाय।
अन्तकाल हरिपुर बसै, रविसुत भय मिटिजाय ॥
सरयू की उत्पत्ति इमि, मुनिन कही रघुनाथ।
केहु पुराण मे वदत बुध, है रघुपति पद पाथ ॥
कामाछन्द ॥ बांय। पायें ॥ केरो। हेरो ॥
तोमरछंद॥दोउभांतिमङ्गलमूल। मोहिं देहु ह्वै अनुकूल ॥
सियरामनाम अघोर। सुमिरों सदा तवतोर ॥

इति श्रीविश्रामसागरसतमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतमानोद्दीपनखण्डप्रमाणश्रीसरयूउत्पत्ति
वर्णनोनाम अष्टाविंशोऽध्याय ॥ २८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
शिवकृत अंगिनिपुराणमत, कहौं भागवतखानि ॥
सुनि शौनक बोले शिरनाई * गङ्गा कौन भांति महि आई
केहि विधि उतरानि भें सो गाथो * प्रभु प्रभाव कछु वरणि सुनाथो
कह्यो सूत नृपसगर जो भयऊ * जिनबहुभांति प्रजहिंसुखदयऊ
तिनके केशी सुमति द्वै नारी * पुत्र बिना निन रहे दुखारी
इकदिन नृप दोउ त्रियन समेता * वन तप करन गये सुत हेता

कौन कठिन तप तीनिहु भानी * बरम्बूहि बोले भृगु बानी
केशी कह्यो पुत्र इक दीजे * एवमस्तु अतिसुन्दर लीजे
मागहु कहन सुमतिने लागे * साठिसहस सुवन तिन मागे
वर दै भृगु आश्रमै सिधाये * वधुन समेत भवन नृप आये
असमञ्जस सुत केशी जायो * शिशुनकेमिससोविपिनसिधायो
सुमतिके भे सुत साठि हजारा * घृतघटमें कीन्हो प्रतिपारा
वीर महा रणधीर सक्रोधी * मारे असुर सकल जिन शोधी
एकबार नृप मखकर साजा * कीन्ह्योतहँलिखिछाड्यो बाजा

दो० इन्द्र ताहि गहि कपिलके, पाछे बाध्यो जाइ।
रखवारे नहिं दीख तब, कहिनि भूपते आइ॥

सुनि सुत रहे सुमतिके जेता * चले सकल ढूंढनके हेता
सात द्वीप नवखण्ड मझायो * श्यामकरण को खोज न पायो
तब लागे महि खादन सोई * तीनि दिशा दिशि डारिनिजोई
पुनि ढूंढत उत्तर दिशि आये * तहां कपिलमुनि ध्यान लगाये
पाछे अश्व बँधा लखि मानी * बोले सगर सुवन कटुवानी
पकरि तुरङ्ग आइ में आना * हमैं विलोकि धरेसि वकध्याना
सुनि मुनीश करि क्रोध निहारा * सब यकसंग भये जरि छारा
समुझिबूझि विषपान जो करई * कहो तात सो काहे न मरई
इहां शोच मन कौन भुवारा * भे बहु दिन नहिं फिरे कुमारा

दो० तब असमञ्जस के तनय, अंशुमान कहँ बोलि।
कह्यो खबरिले विपिनकी लखिहयलावहु खोलि॥

सो० सुनत चले हरषाय, जहँ तहँ खोजत नगर बन।
मिले गरुड़ मग आय, कही कथा सब जिमि जरे॥

कारकछन्द ॥

अस खबरि पाइ। जलनिधि नहाइ ॥
तिल उदक दीन। पुनि गवन कीन ॥

मंधुताछन्द ॥

खगनाथ सुत तहँ आयऊ। मुनि चरण शीश नवायऊ ॥
करि विनय आशिष पायकै। हय लै चले हरषायकै ॥

तोमरछन्द ॥

यह वनते सुनु तात। परमार्थकी यक बात ॥
जो गङ्ग आवे भार्थ। तो होहि पितर कृतार्थ ॥
सुनि अंशुमान निहोरि। कह गरुडते करजोरि ॥
अब गङ्गकी उत्पत्ति। कहिये कृपा करि सत्ति ॥
आवे महीपर जासु। तरिहैं पितरमम आसु ॥
बोले गरुड हरषाय। उत्पत्ति सुनु कहौं गाय ॥

त्रेतायुगमें बलि मख ठयऊ * इन्द्रलोक लै मो मनु भयऊ
तब हरि हिय विचार अस कीन्हा * प्रहलादे मैं यह पद दीन्हा
सो बलि लेन चहत करि यागा * तेहिहित वामन तन अनुरागा
वामन आशुर केहि कारण * भे प्रभु सो कहिये अहिचारण
मागन केर हेतु हरि जाना * तहिते वामन भे भगवाना
मागन मरण उभयमम अहई * मान बडप्पन नेह न रहई

सो० तृणते लघु तूलाइ, तूलहुते लघु याचकहु ।
कत न उड़ावत वाइ, मागनकर भय मानिकर ॥

याते हरि वामन तन भयऊ * अदितिकेजठरजन्म आलयऊ
यज्ञोपवीत भयो जब जाना * भिक्षा हेत चले भगवाना
बड़दानी सुनि बलिपहँ आयो * बहुप्रभुता मुख बरणि सुनायो

बलिबिलोकियकटकरहि गयऊ * अग वपु कनहु न देखन भयऊ
कह बलि मागु जो भावै तोहीं * पग तान पृथ्वी दै मोहीं
मम समान दाना नहि तुमते * मांगत बना न मागहु अबते
बामन कहा सुनहु नरपाला * द्विज तोष चाही सब काला
दो० असन्तोष द्विज दोषयुत, सन्तोषी नृप चारि।
सहलज्जा गणिका अधम, निरलज्जा कुलनारि ॥
कहा शुक्र महिपाल सुनु, ये हैं श्रीभगवान।
छलन हेत आये तुम्हें, देहु न इनकहँ दान ॥
दो० छं० ॥
जो भगवान कह्यो तुम येहैं। हौंनदेहौं दलिकै नहि लेहैं ॥
ताते यहै हितहि ते दीजै। नाम चली धनलैकहकीजै ॥
शुक्रकहापुनि सुनहु भुवारा। अवतेमानहु वचन हमारा ॥
द्रव्यहीन नर व्याकुल रहई। सर्व ठौर मन्दादर लहई ॥
बिनापराध मित्रजन माखे। प्रियस्नेहकरिवचन न भाखै॥
तेहिते धनकी रक्षा ठानहु। द्रव्ये ते सबै वश मानहु ॥
कहबलिदेनकह्यो इनकाअव। जोनहिदेहुँतो धर्म नशैसब ॥
झूठसमान न पातक आनजू। बोलतभेधनिशुक्रसुजानजू ॥
धी०छं० श्रोतु ब्यौर। पांच ठौर। झूठ कही। दोष नही ॥
दो० निज प्रियते पुनि ब्याहमे, धनहित सङ्कटप्राण।
गोद्विज हिसामे कही, झूठ न दोष प्रमाण ॥
जिनकर रक्षन लोक सब, असुर हते जिन हाथ।
तिनकर मागत भीख अब, किमपि न दीजै नाथ ॥
अवनिरवानिधनतनसँग सबहीं * पुनिअससमयमिली नहिं कबहीं
असकहि करन सकलप लागे * प्रबिशे कवि करवामहँ आगे

कस्यो सांग हरि डाभचलायो * फूटि आंखि सकलप करायो
तब बामन निज देह बढ़ाई * पग भू जह्न लोक ध्रुव जाई
स्वर्गभयो कटि शिवपुर पेटू * रविसुत लोक हृदय जा भेटू
कण्ठ आय तप लोकहि भयऊ * आनन सत्यलोकमहँ गयऊ
ऐसो दीर्घ रूप हरि कीन्हा * पुनि पृथ्वी नापन मन दीन्हा
दो० तलअतलबितल तलातल, रसातल पाताल।
सप्त पतालन एक पग, नापे कृष्ण कृपाल॥
प्रथमे भू दूसर भुवर, तीसर स्वर जन चारि।
पञ्चम सत्र छठा महर, पुनित्रिभिलोकनिहारि॥
सात स्वर्ग ये जो मैं बरणा * सो सब नापे दहिने चरणा
ब्रह्मलोक जब हरिपद गयऊ * चाहिचलाक धाइ सो लयऊ
धरेउ कमण्डलुमहँ चतुरानन * गङ्गा भई रहत जग जानन
तप जो करहु गङ्ग महि आनै * तब तुम्हार पुरुषा गति पावै
गङ्गा की उतपति अस जानो * बामन कृत अब सुनत बखानो
द्वैपग सकललोक जब भयऊ * एक पग बाकी रहि गयऊ
बलि बामन पग पीठि नपाई * रीझि कहा मागो बर राई
जो प्रभु मोपर किरपा कीजै * यही रूप निज दर्शन दीजै
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई * राज्य सुतल को दीन्हो जाई
द्वारपाल है श्रीभगवाना * रहत सदा तहँ सब जग जाना
याही ते हरि सन्मुख ठीका * कृपा कोप छल तिनकर नीका
दो० बड़े बड़ेन ते छल करहि, जन्म कनौड़े होय।
वृन्दा श्रीपति शिरछलै, गति बामन बलिजोय॥
यह सब चरित गरुड़ जब गावा * अशुमान सुनि अति दुख पावा
पुनि खगनाथ गये हरिपासा * आये अशुमान निजबासा

दोरि मगर उर लीन लगाई * खनरि सकल पुनन कै गाई
यज्ञ कीन्ह भूसुर मनमाने * कछुदिनरहिगृह पुनि अकुलाने
राज्य सु अंशुमान कह दयऊ * आपु तपनहित गौर बन गयऊ
अंशुमान के भये दिलीपा * तिन्हें थापि बनगे नरदीपा
भागीरथ दिलीप के सूनन * भे जेहिनाम चारिदिश भुवन
तिन्हें राज्य दे बन अनुराग्यो * करितपकठिन तहँ तन त्याग्यो
भागीरथसुत ककुथ भयऊ * दे तेहिं राज्य आप बन गयऊ
लागे तप गङ्गा हित करना * रविसन्मुख ठाढ़े इकचरना
सहस वर्ष बीते विधि आये * मागु तात वर वचन सुनाये
कह नृप जो किरपा प्रभु कीजे * तो गङ्गा महि आवन दीजे
बोले अज हम छाडब जवहीं * जाई गङ्ग रसातल तवहीं
तेहिते अब शम्भुहि अवराधी * मागहु वर ते रखि हैं साधी
सुनि नृप दिव्यवर्ष शिवध्याये * मागहु वर हर आइ सुनाये
गङ्गा रोकिलेहु करि दाया * कीन कबूल गङ्ग सुनि पाया

दो० जाउँ रसातलसहितशिव, जटा बढ़ायो ईश।
छाड्यो अज इकबर्षलों, रही भुलानी शीश॥
ध्यायो नृप गाख्यो जटा, भई धारा तहँ तीन।
सुरपुर गङ्ग पाताल इक, रही महीपर पीन॥
सुरपुर मन्दाकिनि कहत, परभावती पताल।
गङ्ग कहाइँ अवनिलखि, बोले मलिन नृपाल॥
हे सुरसरि हरि भक्त जे, रहिहैं समस्त बेकार।
तिनके तन स्पर्श से, नाशी पाप तुम्हार॥

सुनि समोद नृप गग सिधाई * स्वच्छ करत पुर सागर आई
तरे पितर भागीरथ केरे * अजहुँ उधारत पतित घनेरे

याहिविधि मुनि गङ्गा महिमाई * जासु महातम बरणि न जाई
दशसहस संवत तप करई * मख व्रत दान नेम आचरई
सकल पुण्य लै तुला चढ़ावै * गङ्ग महातम सम नहिं पावै
सुरमुनि मनुज सिद्ध बहुनाना * गङ्गा के व्रत सबहिन ठाना
हरिजन भाव बहुत विधि राखै * प्रभु का पादोदक श्रुति भाखै
जिमि घनसोप्यावोप्यातमखावै * तिमि गङ्गा कलि पातक धोवै

दो० इच्छा अघ शतजन्म के, पारवा अघ शत दोय।
मज्जन जन्म सहस्र के, हन्ति गङ्ग कलि जोय॥

जोपै कुअर शौच न होई * तो हरिधाम बसै नर सोई
वैश्यकेर बालक इक मेरेऊ * कप्फन की रज मुखमें परऊ
भयो न भूत गयो सुरधामा * देखि सिद्ध कीन्हों परनामा
विप्र एक गणिका रत जाना * अन्तकाल निकसै नहिं प्राना
मारमुखा मुख थूक्यो आई * तजि तन बरया विष्णुपुर जाई
पक्षी गिलो मृतक है नारा * मिट्यो तासु सकल भयभारा
गङ्ग महातम अहै अपारा * थकैं कहत मुख शेष हजारा

गीतिका छन्द ॥

कहि थकैं शेषसहस्रमुख मैं एकका वर्णन करौं।
निज बुद्धि माफिक कह्यों कछु तवहेतु हरिपद उरधरौं॥
ते धन्य सुरसरि तीर रहि लाह नाम नित्य नहावहीं।
रघुनाथ ते तन त्यागि कै परधाम निश्चय जावहीं॥

सो० नाथ नाथ रघुनाथ, मागत दीजै जननि मोहि।
जन्म जन्म तव पाथ, पावों गावों राम गुण॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतगङ्गालीलावर्णनोनामैकोनत्रिंशोऽध्याय ॥२९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं ब्रह्मपुराण को, अब इतिहासबखानि ॥
सुरसरिमहिमाअगमसुनि, बामनकथा रसाल ।
पुनि शौनक बोलत भये, नाइ सूतपद भाल ॥

प्रभु आनन्द भयो अति मोरे * सुनि इतिहास सुधारस बोरे
इक लालसा और उर जामी * सो अब पूरण कीजे स्वामी
एकादशी की उतपति कैसे * भइ जगमाहिं बखानो तैसे
सुनत सूत बोले सुख पाई * भली प्रश्न कीन्ही ऋषिराई
सबसुखकारी हरणि अघभारी * पार होत भव सुनि नर नारी
सोइ इतिहास सुनावों तोहीं * जसकछु समुझिपरी उर मोहीं
सतयुगमाहिं असुर इक भयऊ * मुरअसनाम सबनि दुख दयऊ
शङ्खासुर सुत पितु बध जान्यो * तब बन जाइ तहा तप ठान्यो
पद्मासन ढिग आइ बखाना * मागु सुवन निजरुचि वरदाना
बोला सुनि सुरमुनि मनुजादा * श्रीधर हर लोकप सहपादा
जहँलगि सृष्टि रची तुम होऊ * हमते समर न जीते कोऊ
एवमस्तु कहि ब्रह्म सिधायो * सुर वर पाइ वेश्म निज आयो
भुजबल जीति सकलमहिपाला * पुनि दल साजि सुरनपर चाला
भयो युद्ध अति खेचर हारे * शक्र सहित भागे भयमारे
दनुजराज लखि अतिहरषाना * बैठारे तहँ आपन थाना
दिगपालन पर बहुरि सिधारा * जहा तहा भइ मार अपारा
वरुण कुबेर काल यमराई * लै लै जिय सब गये पराई
सकललोक तपबल वश कीन्हे * निज सेवकन वास तहँ दीन्हे
तब सुर सहित इन्द्र शिव पासा * आइ नाइ शिर हाल प्रकासा
नाथ असुर भय देव दुखारी * कहिं उपाय मिटै दुख भारी

कह हर श्वेतद्वीप तुम जावो * कथननाभिकहँ बिपति सुनावो
शम्भुवचन सुनि सुर सुरईशा * आये तुरत जहां जगदीशा
सन्मुख ह्वै लोचन भरि वारी * हाथ जोरि अस्तुति अनुसारी

तोटकछन्द ॥

जय जय जगदीश अजीशपते । करुणारससागर शुभ्रमते ॥
जय दीनदयाल कृपाल प्रभो । तवपूरिरह्योजगमाहिविभो ॥
जबहीं जब दुःख हमैं जु परेउ । तुमहीं तब संकट नाथ हरेउ ॥
अब निशिचर एक भयो मुर है । सुरदलनिदारि लियोपुर है ॥
दिगपाल सबै मिलि देवहरी । भय त्रासित आइ पुकारकरी ॥
तेहिते अब नाथ कृपा करिये । दनुजै दलि सो दुखको हरिये ॥
सुनि दीनगिरा चटविष्णु तबै । करिहौंकलिकोपननाशसबै ॥
कहियो विधि साजि चले दलको । दिगपालन देवनकेहलको ॥
यह सुद्धि निशाचर पाइ चलो । लै सेन सुसन्मुख आइ रलो ॥
नभ पूरि रह्यो रज रोरकरै । पर आपन बीच न बूझिपरै ॥

चामरछन्द ॥

इत उत वीर जयति जय पुकारि धावहीं ।
चक्र बाण शक्ति शूल भिण्ड लै चलावहीं ॥
शीश पाणि पायँ भूमि खण्ड खण्ड ह्वै गिरैं ।
उट्ठि उट्ठि रुण्ड तोरि मारु मारुकै भिरैं ॥

तोमरछन्द ॥

पुनि चल्यो मुर बलवान । करि क्रोध काल समान ॥
करं धनुष शर झरि लाय । सब चले देव पराय ॥
सुरनाथ जूझन लाग । रण त्रासित इन्द्रहु भाग ॥
हरिका मस्यो सुरभूप । भय विष्णु क्रोध सरूप ॥

हरि चक्र मार्यो ताहि । नहिं कीन्हि तनिकौ आहि ॥
तरज्यो तमीचर धाइ । शठ हरिहि मारिसि आइ ॥
यहि भाँति युद्ध करत्त । भई सहस बरषैं गत्त ॥
मुनि सिद्ध हाहा कीन । तजि समर विष्णुहि दीन ॥
भागत निशाचर नाथ । धावत भयो हरि साथ ॥
श्रम बिनुल बद्री आइ । प्रविशे गुहा महँ धाइ ॥
रह सिंहवत अस नाम । योजन तरणि बढताम ॥
यकद्वार तामधि तात । सुर दीख विष्णुहि जात ॥
लै संग निज भट सर्व । प्रविश्यो गुहा युत गर्व ॥
दानव बधनके लाय । प्रभु कीन एक उपाय ॥
भये आप निद्रावस्थ । कन्या भई उर तस्थ ॥
बल विपुल तेज अपार । है जगत जेहि आधार ॥
तन दिव्य पट भुज चारि । अलकार आयुध धारि ॥
प्रकटी जो माया आदि । जेहि डरत शिव ब्रह्मादि ॥
लखि दनुज करिकै क्रुद्ध । लागो करन तहँ युद्ध ॥
प्रकटी दशौ दिशि आगि । कित जाहि दानव भागि ॥
इमि भये सब जरि छार । निकसी सुगन्ध अपार ॥
भा शकुन इन्द्रहि नीक । आये गुहा साबीक ॥
कियो कन्दरा परवेश । सुर नारदादि गणेश ॥
देखी सबै जगमात । बैठी प्रफुल्लित गात ॥
बासव सहित अनुराग । अस्तुति करन तब लाग ॥

मदनमोदकदण्डक ॥ जयति जगजननि अघहरनि सर्व मनमगनिकर अयुध बर चक्र असि शूल धरणी । सर्व गुणभवनि दुखदवनि दानव सुरभि व्याधजन पग्रहरि

विश्वरूपा ॥ शंख चक्र लसित अभयहस्ती फलि कालिका मालिका धनु परशुधरस्वरूपा । भूत प्रेत प्रेत वध शाकिनी डाकिनी छिद्दि छिन भाल सुभ स्वरूपा ॥

दो० यहि विधि अस्तुति इन्द्रकरि, श्रवन सुने निदान ।
धरणि सुमन जयजयति सुर, तबजागे भगवान ॥
सुरसुरपतिदिक्पालमुनि, विनयकिहिनिमयमानि ।
दैत्यअसुरवध विष्णु तब, दीन्ह मन हरषाति ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ कियो देवि कल्यान देवन केरो । अहै मांगिये जो चहै चित्त तेरो ॥ कहा शक्ति मरदो मैं तपते तुम्हारे । असुर दुष्ट पावन करो सर्व मारे ॥ सुनो नाथ मोको नहीं चाहि जावे । कृपाके सो दीजे तुम्हें जान भावे ॥ तथा विष्णु यह लोक मेरे में माहीं । एकादशी शरीरि तुमै नाम लाहीं ॥ नवो निधि सांसिद्धि फल तुर्न दाता । सुनावो सदा मय हिरण्याक्ष घाता ॥ रहै धर्म पूजै तुम्हें वेषधारी । मनोकामना पाइहैं नर औ नारी ॥

दो० याहि प्रकार वरदान दै, हरि भे अन्तर्धान ।
उतपति एकादशी की, इमि मैं कीन बखान ॥

यह शौनक गह कहाँ बखानी * कौनी भांति रहै व्रत ज्ञानी
सुनि मुनिवचन मन सुखमाना * तान सुनो अब बरत विधाना
एकादशी व्रत कीन जो चाहै * दशमी ते अस नेम निबाहै
मसुरी, मास काम तिय संगा * कोदव चणक शयन परसंगा
अल्प अहार बार इक करई * मधु अन्न शाक दुर्वा परिहरई
उठे एकादशि होत बिहाना * शुचिकरि मज्जनदिकतअस्नाना
केशव की पूजा पुनि ठाने * षोडश भांति भजे भगवाने

काम क्रोध मद लोभरु माया * तस तोय मद मैथुन जाया।
निद्रा हास्य मदशंत बोलं * तजि रदधावन झूट न बोले
राति जागरण करै सुजाना * सुनै कथा हरिकीरनि गाना
प्रातक्रिया करि विप्र बोलाई * यथाशक्ति सनमानै भाई
तैलामिष पराव पुनि भोजन * मैथुनादि तजि द्वादश सो जन
यहि प्रकार जो करै विधाना * ताकर फल सुनिये दे काना
दो० काशी सेवै अब्दशत, अचवै वारि केदार।
उभय सहस गोदान दे, तीरथ अटै अपार॥
होम यज्ञ करि शत सहस, विप्र जेमावै कोय।
एकादशी व्रत के रहे, सम नहि कोई होय॥
सो० जो व्रत सहित विधान, रहै राखि विश्वास उर।
आवै अन्त विमान, बसै विष्णुपुर जाइ सो॥
रोलाछन्द॥
निराहार फल पूर्ण दुग्धते आधा रहई।
फल अहार चतुरांश कन्दते अठवा लहई॥
करै उदर भरि अशन अंश शतका फल पावै।
उभयवारते सहस अंश फल निगम बतावै॥
एकादशी के दिवस अन्न खावै जो कोई।
अथवा देवै काहु दोष ताको बहु होई॥
बरतकरण परिहरै रहै विषयारस लीना।
ग्रास ग्रास पर परत ब्रह्महत्या तेहि चीन्हा॥
दो० दशमी वेधी ना रही, करी द्वादशी वर्त।
पचालिस तक चाहिये, सठियानी पुनि हर्त॥
सो० वरष एकके माहि, एकादशी चौबिस परै।

सुनौ स्रवनके नार्य, फल समेत वर्णन करौं ॥
अगहन असित एकादशिकेरा * शयनबोधनी नाम निवेरा
विप्र कोटिशत ज्योति जेमावै * यहि व्रतसम फल सो नहिं पावै
मार्गपक्षसित मोक्षद नामा * जो रहि पुत्त पाव हरिधामा
तेहिपर यक इतिहास बखानों * ब्रह्मपुराण केर तुम जानों
गोकुल नगर रहे एक राजा * वैखानस अस नाम बिराजा
नरक परा पितु स्वप्ने देखा * जागत भा उर खेद विशेखा
राजकाज सुख नीक न लागे * मनविचारिकेहिविधि दुख भागे
पुरुषा जासु अधोगत होई * जीवत वृथा पुत्र जग सोई
असकहि मुनिअध्याश्रम आयो * करि प्रणाम निजशोच सुनायो
कहिऋषि तव पितु ते इकबारा * ऋतुवर्त्ता प्रिय भोग बिचारा
सुनि रतिदान दीन नहिं राई * तेहि अघ पर्यो अधोमुख जाई
दो० मार्गशीर्ष सितपक्ष की, एकादशी व्रत स्वच्छ ।
करिदीजै फलदान तेहि, लहै पिता तव मोक्ष ॥
सो० सुनि नृप मन्दिर आइ, करि व्रत दीन्हो दान तेहि ।
पुण्य परम गति पाइ, जय कहि सुर वर्षे सुमन ॥
रहै जो व्रत जस रीति, पावै अन्त विमोक्ष सुख ।
पढै सुनै करि प्रीति, बाजपेयफल सोउ लहै ॥
सत्य झूठ की बात, जानै निगम कि रामजी ।
मोहिं हरि हेत सुहात, अधिकनाम कलिकामतरु ॥
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराम-
सनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्षशयन-
बोधिनीमोक्षदाकथावर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।

कहाँ वामन पौराण मत, ब्रह्मवैवर्त बखानि ॥
कह शौनक कहिये ऋषिराऊ * पौषअसितव्रत केर प्रभाऊ
कहा नाम किन पूजन कीन्हा * सुनि सुमन्त्र अस बोले लीन्हा
सुफला नाम अहै यहि ताता * जाने अजानि किहे फलदाता
करै सहस जो कन्या दाना * तुले न यहि व्रत रहे समाना
यहिपर एक सुनो इतिहासा * महिषम नृप चन्द्रावलिवासा
तासु पुत्र बड़ भयो अधर्मी * लम्पट चोर मद्प हतकर्मी
सुनि नरेश बन दीन निकारी * करै निबाह बिहग मृग मारी
पौषकृष्ण हरिबासर बारा * मिला न कछु त्यहि दिवस अहारा
क्षुधित रह्यो चल दल तरसोई * निद्रा लुब्ध भई नहिं कोई
व्रतप्रसाद ते भा मन पावन * जान्यो आपुहि बशलजावन
आइभवन पितुपद शिर नायो * समय सनइ राजपद पायो
अनजाने व्रत कर फल ऐसा * जानि किहे नहिं जानो कैसा
जो यह कथा सुने या गावे * कन्या दान दिहे फल पावे
इति श्रीपौषकृष्णएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, पौषशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब म्वहिं देउ सुनाय, सुने सुमन्त्र बोले हरषि ॥
यहि कर नाम पुत्रदा कहिये * अवशि पुत्र फल धारे लहिये
लक्ष्मी नारायण हित सेवै * सयम नियम पूर्व लखि सेवै
याहपर एक कहौं इतहासा * केतुमान नृप भाद्र निवासा
तेहिके तनय न एकहु भयऊ * यकदिनकार बिचार बन गयऊ
देखे तहँ खग मृग तरु नाना * मटत मिले मुनि सोम सुजाना
करिबिनतीनिजदुख सबकहेऊ * सुनिमुनिमब्रवांत जस चहेऊ
पौषशुक्ल व्रत पुत्रद नामा * करहु जाइ पूजी मनकामा

भवन चाहु धन कीन्हेउ पृथा * हरिप्रसाद सुत लहेउ अनूपा
जो यह कथा सुनै अरु गावै * सुत सम्पति नानाविध पावै
इति श्रीपौषशुक्लएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह्यौ शौनक शिरनाय, माघकृष्ण हरिव्रत कथा।
अब म्वहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
षट्तिल नाम षटतिला अहई * करै मन नेम निरन्तर दहई
तिल पिण्डन में हरिहि पधारै * विविध भांति पूजा अनुसारै
तैल गात्र तिल विप्रै देवै * ताम पुण्य सुरपुर सुख लेवै
याहि पर एक इतिहास बखाना * रहै पूर्व शशि ब्राह्मण जाना
नाना नेम करत सो ठानै * नाज देन भिक्षा नहि आनै
कोऊ चिन्ता हरि आगे आई * दान्ही मृत्तिका द्विज रिसाई
अन्तकाल त्यहि पुण्य प्रतापू * लहा स्वर्ग शुचिमन्दिर आपू
तहँ धन धान्य कछू नाहि देख्यो * आपहि महामन्द करि लेख्यो
हरि मत दवनजुत ते भार्गा * एक षटतिला पुण्य दुरि मार्गी
दरशा हेतु तत काहू दयऊ * ऋद्धि सिद्धि सब ताके भयऊ
जो यह कथा सुनै वा गावै * तस्य अवश्य पुण्य सरसावै
इति श्रीमाघकृष्णएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिर नाय, माघशुक्ल हरिव्रत कथा।
अब म्वहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
माघशुक्ल हरिबासर केरा * जया नाम अघ हरत सबेरा
याहिपर एक बरणौं आख्याना * इन्द्र अप्सरा रहै छविवाना
नितित सो हरि आगे जानी * मालगन्धर्व देखि लोभानी
निरखि निलज्ज शाप नृप दयऊ * होहु पिशाच जाय हय भयऊ
यनाय रहै सहै दुख नाना * माघशुक्लव्रत किहेनि अजाना

हरिप्रसाद गे स्वर्ग यानचढि * इमि भविष्यउत्तर भावतिपाढि
जो यह कथा सुनी वा कहीं * करी कृपा तेहिपर प्रभु सही
इति श्रीमाघशुक्लएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय फाल्गुनकृष्ण हरिव्रतकथा।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
विजया नाम याहि श्रुति गावै * याके रहे विजय नर पावै
अवधनगर नृपदशरथ के सुत * पितुबच बनगत बन्धुवधूयुत
तहँ जानकी हरी दशकन्धर * मिलि रविसुतहि चढ़े लै बन्दर
दधितटआपु अनुज मनठयऊ * बकदालय ढिग पूछन गयऊ
नाथ कहौ केहिविधि रिपुजीती * सुनि मुनिबर बोले करि प्रीती
दो० फाल्गुनकृष्णाविजयअस, नाम एकादशि केर।
करहु जाय तेहि कृपाते, जितिहौ शत्रु घनेर ॥
सो० आय कीन व्रत राम, रणचढि मार्यो दशमुखहि।
सिय सोदरयुत धाम, पहुँचत पायो रामपद ॥
कल्पभेद यह बात, बद अस्कन्दपुराण इमि।
पढ़ै सुनै जो तात, सो न सहै यमत्रास पुनि ॥
इति श्रीफाल्गुनकृष्णएकादशीमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, फाल्गुनसित हरिव्रतकथा।
अब म्वहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
आमर्दकी नाम यहि जानो * गोशत दिये अधिक फल मानो
धात्री तरु पूजे मनलाई * देइ दान बहु विप्र जेंवाई
हरिसुमिरनजन भजन प्रकाशै * आधि व्याधि दुख दारिद नाशै
याही व्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा * तस्य प्रसाद लह्यो सुखसीवा
राजा नल दमयन्ती रानी * यहिव्रत करि भइ विपदा हानी

आमर्दकै भान दुर्वासा * नृप पतन करि भये निरासा
जो यह कथा सुनै या गावै * पुष्कर मज्जन कृत फल पावै
इति श्रीफाल्गुनशुक्लआमर्दकीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, चैत्रकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अब स्वहि देउ सुनाय, मुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
पापमोचनी याहि कर नामा * शुभगति लहै किये विश्रामा
यहिपर एक इतिहास बखानो * भविष्योत्तर पुराण को जानो
च्यवन पुत्र मेधावी नामा * करै तपस्या विपिन अकामा
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो * हावभाव करि आय डिगायो
रमत बरष बीत्यो पचासी * बोली अह जाव नभवासी
कहमुनिएकक्षण जानि डोली * होत प्रात जायो मुनि बोली
कै वर्ष की नव रात्रि प्रमाना * मुनिहि चेत तब भा दुखनाना
दीन्ह शाप तोहि है अचरणी * होहु पिशाची नष्टगकरणी
मुनि कम्पित है चरणन नई * कीजै कृपा भूल बड़ि भई
कह ऋषि चैतकृष्ण उपवासै * करु हरिवासर ते अघ नासै
मुनि अप्सरा कीन व्रत भारी * है पावन सुरलोक सिधारी
जो यह कथा सुनै या गावै * चन्द्रायणव्रतकृत फल पावै
इति श्रीचैत्रकृष्णपापमोचनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, चैत्रशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब स्वहि देउ सुनाय, मुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
कामद नाम एकादशि येहा * करत हरत जेहि कलुष सनेहा
याहिपर एक सुनो इतिहासा * पुण्डरीक नृप सुतल निवासा
गन्धर्वी ललिता त्यहि तीरा * क्रीड़त करो नृपति त्यहि भीरा
मदनातुर है गान बिगारा * दीन शाप निशिचरवपु धारा

पतिगतिलाखिलज्जितबिलसानी * किकरामि को गन्धक ठानी
एकदिन कानन कीन पयाना * विद्याशिखर मिले मुनि नाना
पूछे ते निज विपति सुनाई * तिन कह कामद व्रत करु जाई
सुनि व्रत दान ताहि करि दयऊ * राक्षसत्व गत गन्धर्व भयऊ
चढ़ि बिमान निजपुर पगुधारा * सुनत कहत अघ दहत अपारा

इति श्रीचैत्रशुक्लकामदामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, वैशाखेसित हरिव्रत ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

नामवरूथिनिपरि मुनिगाइनि * सबसुख राममक्ति वरदाइनि
विप्र पुत्र एक यह व्रत करेऊ * जात जागरण हरिमग धरेऊ
बोला द्विज लौटतमोहि खावो * शपथ खाय हरिमन्दिर आयो
करि जागरण आन तहँ गयऊ * व्रतप्रसाद मृगपति तजि दयऊ
अन्त समय हरिपुर गा सोई * कहत सुनत गोशत फल होई

इति श्रीवैशाखकृष्णवरूथिनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, वैशाखशुक्ल हरिव्रतकथा ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

मोहनि नाम काम फलदाई * विष्णुचरण मैत्रे चितलाई
षोडश भाति महित अभिलाष * करे प्रदक्षिण जग श्रुति भाष
विष्णुहि चारि श्री हरिकाहीं * रविहि सात चक्रय गरुचाहीं
हरि ढिग झूठ विवाद न ठानै * गजभाले पादुका न आनै
अग्र पृष्ठ उपदेशि वामा * करै न जप तप होम प्रणामा
यहिविधि द्वादश दोष बराई * हरिहि भजे सब पाप नशाई
यहि पर एक इतिहास बखानो * कूर्मपुराण जेहि तुम जानो

दो० श्रीरघुनाथ बशिष्ठ ते, कह्यो स्वप्न के माहि ।

देखत हौं मैं दशमुखै, भयवश सूझत नाहिं ॥

कहौ सोव्रत जेहिकरि अघजाहीं * सुनि बशिष्ठ बोले प्रभु पाहीं
राम राय तव धारणा करई * कैसे कलुषी भवनिधि तरई
प्रश्न लोकहित किहेउ कृपाकर * सित बैशाख रहो हरिबासर
सब दुख दोष देत करि हानी * सुनो एक इतिहास पुरानी
सरस्वती तट सोमवती पुर * बसै बैश्य धनपाल नाम चुर
तासु तनय बड पापी भयऊ * तस्कर जानि काढि तेहि दयऊ
धूर्तकर्म करि दिवस बितावै * जहा तहा गहि पीटो जावै
नृप भय बहुरि बसा बनजाई * खग मृग तहके बधकरि खाई
यकदिन जाह्नवी चलि न्हायो * कौडिन्याश्रमलखि शिर नायो
महापातित मैं किमि अघ नासै * कह मुनि करु मोहनीमुपासै
सुनिव्रत रहत दहत अघभयऊ * दिव्य देह ह्वै हरिपुर गयऊ
जो यह कथा कहै वा गावै * सो अन्त अश्वमेधकेर फल पावै

इति श्रीवैशाखशुक्लमोहनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो॰ कहे शौनक शिरनाय, ज्येष्ठकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अब म्वहिं देहु सुनाय, मुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

ज्येष्ठअसितव्रत अपरा नामा * दोषदलनि दायक मनकामा
यक इतिहास सुनो श्रुति कहै * सत्यवती यक ब्राह्मणि रहई
हरिमिलनेहित ज्याहियाहि पूछै * केहिलावे तजि आमदबृच्छै
लखि लालसा तासु लालच माने * बोले सत्यवती मानै मुनि
ज्येष्ठकृष्ण अपराव्रत रहऊ * मिलीसो पति जाहि तुम चहऊ
करनलागि व्रतसहित विधाना * द्विजन ब्यवाय देइ बहुदाना
तनु तजि अन्तकाल जहिं जोई * भई आइ सत्यभामा सोई
इ पकरन लौं पुण्य एक दिन * बूझेसि आगनि यहीकहीतिन

अस अपराव्रत भूधृत गावै * पढत सुनत गोशत फल पावै
इति श्रीज्येष्ठकृष्णअपरामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, ज्येष्ठशुक्ल हरिव्रत कथा।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनिसुमन्त्र बोले हरषि॥
यहि व्रत नाम निर्जला सेवे * हरि पट धेनु विप्र कहँ देवे
दुवादशी दिन पारन करई * सो नर यमयातना न भरई
वरण्यो व्यास भीम ते याही * अन्नअशन नहिं व्रतदिन चाही
यहि तन सो चण्डाल समाना * मरे लहे दुर्गति दुख नाना
बोले भीम करिय कस ताता * वृषभ उदर अन रहा न जाता
तो तुम एक निर्जला कीजे * बारो मास केर फल लीजे
मुनि विधि करन वृकोदरलागे * जातभये हरिपुर तनु त्यागे
जो यह कथा सुने वा गावै * गया पिण्ड दीन्हे फल पावै
इति श्रीविश्रामसागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतचतुर्दश
एकादशीमाहात्म्यवर्णनोनाम एकत्रिंशोऽध्याय ॥३१॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
वरणों विविधपुराण की, पुनि इतिहास बखानि॥
सो० कहशौनक शिरनाय, असित अषाढ़ हरिव्रतकथा।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि॥
महा पुनीत योगिनी नामा * यहि व्रतरहे होइ सिधि कामा
याहिपर यक इतिहास बखानो * विदित वैवर्त केर तुम जानो
अलकापुरी यक्षपति पाली * बटुकहेम रह तिनकर माली
तस्याङ्गना मृगाक्षी नामा * अत्यासक्त रहै वशकामा
शिवपूजन कुवॆर नित जाहीं * यकदिन सक पहुँचायसि नाहीं
तब धनपति निजअनुग पठावा * रमत देखि तहँ आय सुनावा

सुनि कुवँर बोले धरि रोसा * गुरु हेलन कृत देइ भरोसा
यहि अघ कुष्ठ होइ अठादस * कहतै भयो गयो कानन तस
सहि कष्ट तब मन पछिताई * मार्कण्डेय लखि विपति सुनाई
कह मुनि योगिन्याएपवासे * करु जेहि पुण्य कुष्ठ तव नासे
सुनि व्रत करत भयो वपुनीका * कहत सुनत सुखप्रद सबहीका

इति श्रीआषाढकृष्णयोगिनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहँ शौनक शिरनाय, सितअषाढ हरिव्रत कथा ।
अब मोहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

हरिशयनी यहि नाम अनूपा * ज्यहिधरि हृदय तरिय भवकूपा
मिथुनस्थ अब हरिहि सोवावै * तुलाराशिगत बहुरि जगावै
तस्य पुरः चतुराब्द कि मासा * करै नेम, रहै बरत उपासा
मृदुबादी होवै गुडत्यागी * पुष्प तैल गन्धव सौभागी
कटुक कषाय तजै छविवन्ता * रविगनमयहरि सुमिरणसन्ता
रक्त कपट ताम्बूल नेवारे * पदाभ्याङ्ग वसु वाहन द्वारे
माहतापि नृप होय विशोका * पय दधि तजै जाय गोलोका
तजै अन्न सो सुरपुर वासै * स्नान ते अयननके अघ नासै
हरिमन्दिर मार्जनी जो करई * दीपदान लेपन अनुसरई
काम क्रोध मद लोभ गँवावै * सो सायुज्य मुक्ति नर पावै
गाहतेहि भांति देइ जो दाना * सो प्राणी होवै धनवाना
नृत्य गान कृष्णालय करई * सो नर भक्ति लहै वर बरई
अम्बरीष पतनी पद्मावति * पुरह रही हरिमन्दिर गावति
दीन लगाय चून निजपानी * तेहिफल भई अवधकी रानी
करि हरिभक्ति गई प्रभुधामा * बहु पुरनकर मारेउ कामा

कहत सुनत तेहि प्रभुनिजजाने * इमि नारदी पुराण बखाने
इति श्रीआषाढशुक्लदेवशयनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, श्रावणतम हरिव्रतकथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

श्रावण कृष्ण कामिकानामा * सेवत दोऊ लोक विश्रामा
पूजे विष्णुचरण चित लाई * तासु पुण्य कछु बरणि न जाई
गङ्गा गया गोदावरि पुष्कर * वाराणसि प्रयाग मज्जे नर
अन्न पटादि दानदे सोई * यहिव्रत सरिस तदपि नहिं होई
पुण्य बढावनि स्वर्ग निसेनी * यक इतिहास सुनो सुखदेनी
सुभग सुमन रुकमागद बागा * आवें लेन सुरी सह रागा
यक दिन एक रहिगई भूमा * वृतन्ताऊ करि लाग्यो धूमा
सुनिनृपमाली ते तह आवा * देहु पठाय स्वर्ग मोहिं भावा
केहि विधि तव सुकृत सरसाई * कामद व्रत दीजे यक राई
कह नृप यहां न जानें कोई * कौन अजान लयावो सोई
तब नृप नगर पिटाई डौंडी * सुनिआई यक बनिकहि लौंडी
दीनदान व्रत लहि सुरनारी * चढ़ि विमान निजलोक पधारी
देखि प्रभाव करन नृप लाग्यो * सुतत्रिय प्रजनसहित अनुराग्यो
छलि मोहनी कठिनवरुयाचा * तदपि तज्यो नाहिं हरिव्रतसाचा
प्रणविलोकि हरिदर्शन दीन्हेउ * खलमोहनिहि थूकली कीन्हेउ
इमि ब्रह्माण्डपुराण बखानें * कहत सुनत अघनाशत मानें
इति श्रीश्रावणकृष्णकामिकामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, श्रावणसित हरिव्रत कथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

श्रावण शुक्ल पुत्रदा नामा * लहै पुत्र यहि करि अभिरामा

यहिपर एक इतिहास भनीता * माहिष्पुर रह नृप महिजीता
पुत्रहीन कछु रुचै न नेका * द्विजन संग बनगा दिनएका
तहां मिले लोमश वलाना * पूछे ते बोला है दीना
तनु ताहि कुपथ न पग हमधारे * केहि अघ भयो न पुत्र हमारे
कहमुनि पूर्व वनिक तुम रहेऊ * धर्मवान यक दिन जल गहेऊ
तृषित सवत्स पेत रहै गाई * पान नाहि तुम मारे भगाई
तेहिअघअंगज मिल्यो न ताँजे * अब पुत्रदा एकादशि कीजै
सोइ श्रवण सुनत गृह आयो * कीन्हो व्रत प्रताप सुत पायो
जो यह कथा सुनै वा गावै * गङ्गा स्नान किये फल पावै
इति श्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, भाद्रअसितहरिव्रत कथा।
अब मोहि देहु सनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
अजिता नाम अस्य प्रदप्रेमा * हृषीकेश पूजै युत प्रेमा
यहिपर सुनु इक कथा पुरानी * नृप हरिचन्द्र रहे बड दानी
विधिवश राज्य भ्रष्ट भे नारी * सुत निय देह गई बिकि जाकी
दुर्गत जन मृत चले प्रहारी * बोले लखि गौतम दुखभारी
अजिता व्रत करौ हरिचन्दा * मिटै सकल दुख होइ अनन्दा
सुनि महिपाल तहे व्रत कीन्हा * सुततियराज्य बहुरि हरि दीन्हा
जो यह कथा सुनै वा गावै * दश गोदान दिहे फल पावै
इति श्रीभाद्रकृष्णअजितामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, भाद्रव सित हरिव्रत कथा।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
यहि हरिवासर पद्मा नामा * सबदुख हरणि करणि सुखधामा
अहिपर एक कहौं इतिहासा * मान्धाता नृप अवधनिवासा

धर्मवान गोजीत अमानी * प्रजाअशङ्क बसैं तहँ जानी
तीन वर्ष जल मेघ न दीना * भए लोग सब सुख ते हीना
नृपहु दुखित है कच्छ सिधाया * मिलिअङ्गिरहि सो कष्ट सुनाया
कह मुनियक वृषली तप करई * तेहि अघ माहि जलबूँद न परई
करु हत ताहि आज जल बरसे * हिंसा कर्म न वर जग भरसें
तोहि ते देहु धर्म उपदेशा * नभसित हरिव्रत करौ नरेशा
भले नाथ कहि पीही आई * प्रजजन हित भै वृष्टि अघाई
सहमन्त्रित सुन लख्यो नरेशा * कहत सुनत तेहि मिटन कलेशा

इति श्रीभाद्रपदशुक्लपद्मामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनक शिरनाय, आश्विनकृष्णाहरिव्रतकथा।
अब मोहि देहुसुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरपि ॥

नाम इन्दिरा यहि सुख देनी * नरक निवारण स्वर्ग निसेनी
तापर एक कहौं इतिहासा * इन्द्रजीत नृप महिपर बासा
सविता तस्य अधोमुख रहेऊ * नारद आय भूपते कहेऊ
कह नृप किमि होइहि निस्तारा * बरत इन्दिरा रहो तुम्हारा
देहु ताहि फल करि नृप दयऊ * त्यागि अधोमुख हरिपुर गयऊ
जो यह कथा सुनै वा गावै * नैमिषक्षेत्र अटे फल पावै

इति श्रीआश्विनकृष्णाइन्दिरामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनकशिरनाय आश्विन सितहरिव्रतकथा।
अबमोहिदेहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरपि ॥

पापाङ्कुशा नाम यहि जानी * अशुभकर्मनाशिनि-सुखदानी
सुनुइतिहास कृष्ण जिमि कहेऊ * चेतन नाम विप्र यक रहेऊ
विद्या चित गर्वित नहिं सूझै * आप समान न आनहि बूझै
दो० विद्या आदि प्रमाद धन, शक्ति सुपर दुख हेत।

खल सुसाधु विपरीतकरि, ज्ञान दान सुख हेत ॥
विद्या विद्याहरण हित, पढत होत खल ठूंट ।
चल्यो निकामन मीनको, घुसि आयो गृह ऊट ॥
सो० यकदिन सोवत माहिं, कहेउ मनष यक नगर में ।
भूप रहेउ है नाहिं, चलु तहँ मिलिहै राज तोहि ॥
चल्यो हर्षि बश मोह, मग नद लखि लाग्यो हलन ।
मध्यनगर सह कोह, चावत जाग्यो सहित दुख ॥
करि विचार कुम्भजपहँ गयऊ * तिन उपदेश यथोचित दयऊ
पढ़ै सुनै का फल सुन येही * करि विवेक हरिपद चित देही
दो० दशरथनन्दननन्दनचरण, कमल अमल अनुराग ।
कोनवढ्योवादहिपढ्यो, मढ्यो मोह मद दाग ॥
अतेन्द्र काल मगर तुम देवा * मध्य वयस मह लोभ विशेखा
प्राप सकुला करि अघ जारा * हरिपद भजि परलोक सुधारा
कौन आइ व्रत बुद्धि प्रकामी * सुमिरन करि भा हरिपुरवामी
जो यह कथा सुनै या गावै * व्रतफल चतुरअंश सोट पावै
इति श्रीआश्विनशुक्लपापाकुशामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, कार्तिककृष्ण हरिव्रतकथा ।
अब मोहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
रमर्णा नाम रहे जो कोई * सो नर इन्द्र समीपी होई
याहि पर एक सुनै आख्यानै * नृप मुचुकुन्द भले व्रत ठानै
सुता तस्य शशिभागा नामा * शोभनपति आवा पितुधामा
क्षुधित अशननिजनारितेमागा * सुनतकहेउ पतिते शशिभागा
आज अहै हरिवासर नाथा * पशु पक्षी कोइ लहै न पाथा
होत हंस गति कौन अकाजू * बड़ भाग मृत्यु पाई आजू

भावीवश त्यागे न्यहि प्राना * हरिपुर गा चढि सुभग विमाना
बहुन कहा कहिये विस्तारी * व्रतप्रभाव सब पुरी उधारी
जो यह कथा सुनै वा गावै * अन्नदान दीन्हे फल पावै
इति श्रीकार्तिककृष्णरमणीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, कार्त्तिकसित हरिव्रतकथा।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
परबोधिनी नाम यह नीकी * दायक सकल कामना जीकी
यहिव्रत सरिस अपर व्रत नाहीं * अघतमजिमिविलोकिरविजाहीं
जनक नगर इक रूपा रहेऊ * हरिनिशि जागिमित्रमग चहेऊ
तेहि प्रमाद मन भइ गलानी * तजिास देह भजि शारँगपानी
वितदस्तानिल भय सुखवाला * नृत्य गान व्रत करै रसाला
सहित सनेह जपै हरिनामा * ब्रह्मचर्य अस्थित हरिकामा
व्रतप्रसाद सोइ गोपकुमारी * भई अधिक गिरिधरै पियारी
वृन्दावन विहार जग जाना * इत्य वदति स्कन्दपुराना
कार्त्तिक में सुनै सुमन चढावै * हरिहि तासु फल वरणि न जावै
देवोत्थानी हरिव्रत गाता * सुनत कहत फल लहत पुनीता
ये चौबीसो नाम बखाने * एकादशी के जो मम जाने
विधिवतकरि हरिसुमिरण करई * गोपद इव भवसागर तरई
गीतिकाछन्द ॥
भवतरै गोपद सरिस जो शुचिनेम करि व्रत ठानई ।
पावै वरत षटत्रशफल जो कथा सुनै बखानई ॥
कलिकाल पापपयोधि जपतप योगमख आश्रम तजै ।
रघुनाथदास प्रतीतितै सतसंग करि रामै भजै ॥
दो० रामभजन बिन कर्म जो, सोसब तुच्छ लखात ।

यथा शुद्ध दशगुण मिल, अङ्क गत्र नहिं जान ॥
एकादशी वरदानि तोहि, मानु याचि सब कोइ ।
लहो कामफल देहु मोहि, राम चरण रति होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरे सर्वशास्त्रसारे श्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृते चतुर्थे एकादशीमाहात्म्यवर्णनो
नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ ३२ ॥

दो० सुमिरि राम सिय मारुत, हर, गणप गिरा सुखदानि ।
कार्तिक माहात्म्य कथा, कहौं इतिहास बखानि ॥

पुनि शौनक बोले मृदु बानी * केहि विधि भई तुलसिका ज्ञानी
विष्णु शीश धारी केहि हेता * कहो कहौ प्रभु कृपानिकेता
कह्यो सूत मुनिवर सुखदाई * विष्णुपुराण कहत इमि गाई
तुलसी नाम रही यक नारी * तेहि हरि हेत कीन्ह तप भारी
है प्रसन्न आये भगवाना * बोले माँगु माँगु वरदाना
देखि रूप बोली कर जोरे * पति ह्वै सदा रहौ उर मोरे
सुनि लक्ष्मी तापर कर कोहू * दीन्हा शाप विटप जड़ होहू
कमलहिं शाप दीन तेहि एहा * बसहु जाइ तुम नीचन गेहा
सुनत वचन तुलसी से कहेऊ * विटप होउ तुम मम प्रिय रहेऊ
मैं धरि शालग्राम शरीरा * रहिहौं सम्मुख सदा तव तीरा
प्रथम गण्डकी कामिनि यक रूरे * तप करि माँगि गाभ बसिय सदा उर
मैं कह सरित होउ यहि भोरे * शिलारूप बसिहौं उर तोरे
एक कल्प इमि श्रुति गाई * दूसरि विधि अब सुनो सुनाई

गीतिकाछन्द ॥

इकबार शिव मगजात सुमिरत नाम तहँ वासव रहेउ ।
लखि कहेउ योगी होहु ठाढ़े चितै भव मारग गहेउ ॥

तब इन्द्र दर्पित धाइ आइ रिसाइ अस बोलत भयउ ।
माने कँहा नाहिं मोर तैं शठ हेरि हम नन चलि दयउ ॥
सुनि वक्र बचन महेश क्रोधित नयनतीसर ते तहां ।
प्रकटो अगिनिकी ज्वाल तीक्षणजरन हरिलाग्योमहां ॥
है विकल बासव गिरेउ चरणन त्राहि त्राहि पुकारेहू ।
लखि दीन शम्भु कृपाल पावक तोयनिधि महँ डारेहू ॥
त्यहि धूहदते तहं भयो बालक सिन्धु सुतकरि पालेऊ ।
विधि आइ कीन्ह्यो कर्म मानहुं धरि जलंधर चालेऊ ॥
गतकाल कछु भा तरुण वृन्दा नाम नारी पायऊ ।
सो कालनेमि कि सुता मन बच कर्म पतिपद ध्यायऊ ॥
दो० भयो जलंधर प्रबल अति, जीतिजगतवशकीन्ह ।
निशिचरपतिह्व निशिचरन वासजहां तहँ दीन्ह ॥
एक दिन सभा बैठ रहे सोई * सकल समाज आपनी जोई
गह कबंर देवि अस कहई * शीश नोरि केहि कारा अहई
रो०छं० ॥
सुनो नाथ इक समय देव दानव सब आये ।
मथ्यो सिन्धु गिरि डारि रत्न चौदा तहँ पाये ॥
कामधेनु गज अश्व कल्पतरु विष शशि जानो ।
धनुष धन्वन्तर कम्बु रमा रम्भा पहिचानो ॥
कौस्तुभमणि वारुणी सुधा ये चौदा कहेऊ ।
दिये बांटि हरि सुरन मास मधु अमृत भयऊ ॥
तेहि हित श्रीभगवान मोहनीरूप बनायो ।
निकट आइ सुर असुर उभय पातिन बैठायो ॥
बाटन लागे आपु सुरा दैत्यनकंह दीन्हों ।

देवन पायो पियुष तहां उठि मोहू पीन्हों ॥
रविशशी दिहिनिवताइ विष्णुकाच्या शिरमोरा।
देवासुर संग्राम भयो सागरतट घोरा ॥
ऐरावत सुरधेनु कल्पतरु रम्भा चारी।
लैगे वासव स्वर्ग सम्पदा सकल तुम्हारी ॥
सुनि निश्चरपतिदूत सूतढिग तुरत पठायो।
जाइ कहा चरदेहु वस्तुजो दधिकी लायो ॥
दूत वचन सुनि शक्र कह्यो जा निजपति तीरा।
लेइआइ अब वस्तु होइजो अति वलवीरा ॥
करि महिमय लराज प्रीति नरभावरपखडा।
अब आवै यदि समर करौं तेहि तन शतखण्डा ॥
दूत जलंधर पास आइ सब हाल सुनावा।
यातुधान सुनि कोपि कटक लै आतुर धावा ॥
अमरावती गरेरि इन्द्र बहुकीन लराई।
मरै न मारे असुर सुरनयुत गयो पराई ॥
तब हरिसन्मुखजाइ विविधविधि विनयसुनाई।
दुखित जानि भगवान दनुजते कीन लड़ाई ॥
भे व्यनति कछुकाल समरलखि रीझि मुरारी।
कह्यो जलंधर मांगु होइ रुचि जौन तुम्हारी ॥
जो मोपर परसन्न नाथ दीजे वर येहा।
कमला के संयुक्त बसौ तुम हमरे गेहा ॥
एवमस्तु कहि कृष्ण कीन तेहि गृहा निवासू।
शोभा तिहुँपुर केरि आइ तहँ कीन प्रकासू ॥
तब वासव ह्वै विकल गये चतुरानन तीरा।

कह्यो सकल दुख रोइ सुनत विधि दीन्हों धीरा ॥
नारदते तब कह्यो जलंधर बली अपारा ।
मरण तासु शिवहाथ अपरते मरी न मारा ॥
जो शङ्करते वैर करै तौ सुर सुख लहहीं ।
सुनिनारद पितु वचन दनुज जहँ आये तहहीं ॥
लखि मुनि दीन अशीश नाइ शिर नृप बैठारा ।
बोलो बीणा धरण आजु कितते पगुधारा ॥

सुनि नारद बोले निजकाजू * हम कैलास गये रहे आजू
तहा करत त्रिपुरारि निहारा * शीश जटा उर नरशिर हारा
नग्न अमङ्गलरूप विशेखी * तहा नारि यक सुन्दर देखी
इन्दुबदनि मृगनयनि विराजै * रति शतकोटि देखि छविलाजै
जाहिके वर ऐसी त्रिय होई * तेहि समान जगमें नहिं कोई
सुनि नारदके वचन सुरारी * लीन राहु का तुरत हँकारी
बोला शठ शङ्करपह जाऊ * कह्यो देहु त्रिय जो भल चहऊ
त्रिप्र राहु शङ्कर पहँ आवा * निजपतिकर सन्देश सुनावा
सुनि महेश किया क्रोध कराला * कीरतिमुख प्रकटेउ ततकाला
गदापाणि हग अतिभयकारी * डरपि राहु बहु विनय उचारी
सुनि पशुपति तब दीन बचाई * आवा जहा निशाचर. राई
सब वृत्तान्त तहा कर कहेऊ * सुनि सागर सुत उर अतिदहेऊ

गीतिकाछन्द ॥

उर दह्यो तुरतै सयन सग अपार लै शठ धायहू ।
बहु होत अशकुन गुनत नहिं सो शम्भु सन्मुख आयहू ॥
षटवदन आदि गणेश भूत पिशाच भिरै प्रचारिकै ।
द्रुम अस्त्र शस्त्र चलाइ एकहि एक डारत मारिकै ॥

कोउ परे कहरत घायवस कोइ शीशविन जहँ तहँ फिरैं ।
कोउ मारु मारु पुकार कोउ यक वाण लागत महि गिरैं ॥
यहि भांति कीन्हीं युद्ध शिव शशिमास तब हहरयो हियो ।
ह्वै अमित गिरिजानाथ हरिको ध्यान समरै में कियो ॥
नाथ हरो मम सङ्कट भारी * तुरतें प्रगट तहँ मुरारी
बोले हरि तुम सुनो पुरारी * पतिव्रता है याकी नारी
तेहिप्रभाव खल जीति न जाई * करहु कि काहि न कोटि उपाई
ताते यहि थाड़ो कछु बेरा * मैं व्रतभंग करौं तेहि केरा
असकहि यती स्वरूप बनायो * गुहा निकट वृन्दा के आयो
उदित भूमि तह द्वारे पाई * बैठे आसन रुचिर बनाई
तेहिरजनी रज निशिचरनारी * देख्यो स्वप्न भयंकर भारी
मनो जलधर खर आरूढा * मुण्डित शिर गा दक्षिण मूढा
चौंकिपरी व्याकुलअतिशोचा * प्रातभये गृहकाज न रोचा
क्षण द्वारे क्षण भीतर जाई * यती बिलोकि विष्णुपहँ आई
शीश नाइ निजस्वप्न सुनावा * कह हरि सुरहित अवसर पावा
सुनु वृन्दा पुराण अस कहई * अस स्वप्न दुखदायक अहई
तव पति समर शम्भुकर आजू * मरी अनन्द करी सुरराजू
तेहिक्षण माया करधरशीशा * गिरा आइ आगे तेहि दीशा
विविधविलापकिहिसिपतिचीन्हा * जरिहौं संग चिता रचि लीन्हा
कह हरि वचन मानु यकमोरा * तौ अवहीं पति जीवैं तोरा
रुण्डमुण्डधरि वसन ओढाई * सुमिरो निजमत धरी अढाई
यहउपायकरिसुनि तेहिकिहेऊ * वानअर्द्धधरि दृगपट दिहेऊ
उठ्यो जलधर माया केरा * वृन्दहि तब सुख भयो घनेरा।
मायाधीश चरण शिरनाई * गई तुरत निज मिलें लवाई

कादि अशन कछुताहि खवाई * पांडे दोउ परयङ्क बिछाई
कीन विहार छूट मन तासू * भयो तेजहत दनुज उदासू
तब शिवसमर जलन्धर मारो * गिरभुजजहँ बृन्दा तहँ डारो
माया का पति गयो बिलाई * मर्म जानि तहँ हरि दिग आई

घत्तीछन्द ॥

विष्णु चीर । देखि धीर ॥ क्रोध कीन्हि । शाप दीन्हि ॥

बरवैछन्द ॥ छल्यो मोहि तुम धरिकै यती स्वरूप ।
होउ मनुज अब जाय चराचर भूप ॥
तहां मोर पति होइहि प्रबल मुरारि ।
यही रूप धरि हरिहैं नारि तुम्हारि ॥

दो० अस कहि चिता सवारि वर, बैठि जरी पति सङ्ग ।
तासु भस्म लै रमापति, लपटाई निज अङ्ग ॥

सो० इहाशक्र सुखपाइ, सुरगण मुनि दिग्पाल मिलि ।
उमानाथ पहँ आइ, लागे सब अस्तुति करन ॥

तोटकछन्द ॥

प्रणमामि भवंभवभयशमनं । करुणामृत सिन्धुकलिदमनं ॥
निरपुण्यगुणाधमककरणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
अविकल्पकलानिधि बेदविभु । सर्वज्ञ सदा परमीश प्रभुं ॥
चिद्काशक नित्य निरावरणं । जय श्रीशिवसंकटके हरणं ॥
निरवश निराश्रय सायपुप । अयलाखंडपारअजाश्रद्रुत्र ॥
शतशीलगुणाकरक अरणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
अतुलित बलवीर्य सिरक्षबरं । गुणज्ञान गिरा गोतीतपरं ॥
मदमोहनिशा दरणं तरणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
हरिकुन्दकपूर समानतणं । सब भस्म विभूषित भूरिगणं ॥

छवि केन्द्रप कोटि दिवाकरणं । जय श्रीशिव संकटकेहरणं॥
मृदुमौलि जटामधि गङ्ग वसै । वरबाल सुधाकरभाललसै॥
त्रयत्र्यम्बक शूलकरं धरणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
उरमुण्डस्त्रकाम्बरव्यालचमं । श्रुति कुण्डललोलकपोलभ्रमं
शुकघ्राण शरीरनमिन्दुवरण । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
डमरूकर कण्ठ भु गछजै । चरणाम्बुज चिन्तत दुःख भजै॥
भव आरण नारणकारणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
सुर सन्तकवन्धजगोपलनं । भवभाववनागहरि दलनं ॥
भुजदण्डप्रचण्ड क्षय करणं । जय श्रीशिव संकटकेहरणं॥
वृषभव्यवाहनभूतिमिशं । गिरिनन्दनिराजितबामदिशं ॥
प्रणपालक घालक दुष्टजनं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
नहिं ध्यावत जीवतुम्हें जबलों। दुखपावत जावतहैतबलौं ॥
जग औढरदानि उमारमणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
रघुनाथ कहे सुनि क्रोधगयो।तुरत गौरिश प्रसन्न भयो ॥
सिद्ध रुद्रएकादश जोपि पढ़े । दुखदैन्यनशै सुखभूरि बढ़े ॥
यहिविधि विनय कीन्ह असुरारी * तब तिन ते बोले त्रिपुरारी
सुनहु सकल सुर वचन हमारा * विष्णुकृपा मैं निशिचर मारा
चलौ चलौ अब तिनके पासा * आये चलि जहँ रमानिवासा
अमरण यतारूप प्रभु देखी * पृथक पृथक करिविनयविशेषी
रहे अधोमुख तब भगवाना * मनहि माहिं देवन सनमाना
हरिगति देखि सुरन दुख पायो * तब महेश विधि युक्ति उपायो
बोलि उमा पद्मा ब्रह्मानी * कह्यो प्रसन्न करहु हरिजानी
सो० प्रभु अनुशासन मानि, गईं तिहूं भगवान पहँ ।
ले आरति निज पानि, कीन्हों हरिगुण गान कछु ॥

पुनि भार-ी भस्म जल लयऊ * धरयो मही तरुधात्री भयऊ
देवि भवानी वेमे टाना * यतीवल उपजी जग जाना
फनि इन्दिरा सोइ उपाया * अजगन्धा तुलसी तरु पावा
शीतल छाह सुगन्ध लही जब * ह्वै प्रसन्न हरि खोले दृग तब
वृन्दा तनु तुलसी भे आई * हर्षि विष्णु निज शीश चढाई
श्रम निशाचरपति अन कीन्हा * हरिख्याल ताहि उत्तमपद दीन्हा
देखि देव छवि हने निशाना * तुलसिहि अतुलपूज्यअनुमाना
विष्णुप्रयाकालकलुषनिकन्दनि * जयजयजयतुलसी जगवन्दनि
तब प्रभु सब देवनने कहेऊ * परमप्रीति वृन्दावश भयऊ
तेहितनु पाय तुलसि कर रूपा * गयो विरह सुख भयो अनूपा
लक्ष्मावास हृदय मम अहई * तुलसी सदा शीशपर रहई
जो मन कम याहि सेवन करिहैं * सो कृतान्तपुर पाँव न धरिहैं
दलकरि प्रीति जो ममशिरराखी * तुलसी मिश्रितभोजन चाखी
दीपदान देई जो कोई * कोटि यज्ञफल तिन को होई
कण्ठ लग्न जो तुलसी धारी * सो सब काल शुद्ध बिन वारी
तस्य दरश भे जानहु मेरो * करों सदा हों जन उर डेरो
तुलसी धारि करी शुभकर्मा * बढी सो अधिक कोटिगुणधर्मा
नर वा नारि जो ममब्रतधारी * सो तुलसासककर अधिकारी
तुलसी सदा नाम मम ध्यावे * तासु पुण्य कहि कोपे जावे
दो० तुलसी धारकमात्र जो, होई भक्ति विहीन।
सोऊ पूज्य है विप्र कहँ, और कहा नर दीन॥
कु० तिलक दाम धरि देखिके, करी जो निन्दा तासु।
सो मलेच्छ जाता अशक त्यागी सङ्गति तासु॥
त्यागी सङ्गति तासु दोष नत लागी भारी।

ज्यों हरहट के सङ्ग, जाइ कपिला गो मारी ॥
मारी गो जिमि जात, तिमि यमगण दहैं दुखदिलक।
प्रमुदित ह्वै जो सुनै सोउ जान्यो दुष्टनको तिलक ॥
दो० तुलसी स्रक धारे विना, करी जो भोजन श्रन्न।
पन्न श्रपावनि पापमो, लह्यो न जनु नरतन्न ॥
जेहि श्रादर मैं देउँ जग, तेहि निदर श्रस कौन।
भूपवचन परिहरि प्रजा, बसे कि सो सुखभौन ॥
श्रीमुख बानी शीशधरि, गे सब निज निज थान।
कातिक महातमकी कथा, यह मैं कीन बखान ॥
इति श्रीविश्रामसागरसत्यमतश्रागरअयउनागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतश्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनानाम
त्रयोदशोऽध्याय. ॥ २२ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
वर्णों भारत की कथा क[illegible]कनुनान्तबखानि॥
सुनि शौनक बोले मृदुबानी * राययुधिष्ठिर मख जब ठानी
तामें अचरज भयो जु कौनू * मोकहँ नाथ सुनावो तौनू
करहंसछन्द ॥ हँसि कह्यो सूत । जब धर्मपूत ॥
कृत करणलाग । दै बलिविभाग ॥
तब सब मिलि बोले श्रमियानी * पूरण मखभइ केहिविधिजानी
घण्ट एक तब कृष्ण बधाया * भोजनकहँ द्विजनपुलबुलायो
जेइ विप्र सरिका जब लयऊ * घण्ट निप कछु शब्द न भयऊ
बोले कृष्ण प्रणत हितकारी * यज्ञहीन भइ भूप तुम्हारी
ताही समय नकुल इकआवा * लोट्यो तहँ जहँ द्विजनअचावा
भयो न सर्व वपुष हरि तासू * तब तौ मन कारलान उदासू

बहुरि पुकारे सभामहँ कहई * मिथ्या यज्ञ भूप तव अहई
विप्र एक मेतुवा मख कीन्ही * तेहिसम अपरयज्ञ नहिं चीन्हीं

दो० सुनत सभाके लोग सब, नकुलै निकट बुलाय ।
पूछ्योद्विजमखकिमिकरी, सो अब कहो बुझाय ॥

तब तब अचरज रूप लखाई * सुनि न्योरा बोला हरषाई
मेतुवायज्ञ भई जेहि राना * कहौं सुनो नृपसुनि करि ध्याना
द्विज एक कुरुक्षेत्रमहँ रहई * नाम शिलोचन तेहि सबकहई
पूत पतोहू अपना नारी * चारिहुनका हरिभक्ति पियारी
शीला की वृत्ति करि तन पोषै * प्रथमै साधु विप्रकहँ तोषै
यहिविधि करत गये बहुकाला * एकबार तहँ परो दुकाला
पशु पक्षी सब भये दुखारी * लङ्घन करैं निकर नर नारी
कठिन विप्रहूको अनि जाई * बीनन जाइ अन्न नहिं पाई
चुनिचुनि धरत मासयुग गयऊ * तीन पाव तब इकठे भयऊ
सोइ भुजाइ मेतुवा बनवायो * तामें चारिउ भाग लगायो
धर्म वैष्णव रूप बनाई * आये तुरत जहां द्विजराई
देखि शिलोचन पद शिरनायो * आदर करि आसन बैठायो
चरण धोय मेतुवा धरे आगे * कितने धर्म खान तब लागे
आपन भाग जोइ जब लीन्हा * क्षुधा न मिटी लखेउ द्विजदीन्हा
सोउ खाय पर तृपित न भयऊ * तब द्विजसुतनारि निजलयऊ
चतुर्नारि पतिसों बाते जानी * बोली बचन धर्मरसानी
है पति भाग मोर तो रागे * क्षुधित न जाइ नाथ सो लागै

दो० साँची प्रीति पितानि कै, सोऊ भाग द्विज दीन ।
भयो न पूरण मन्न लखि, बोला पुत्र प्रवीन ॥

रोलाछन्द ॥

अहो पिता अब भाग मोर ले सन्त देहू ।
करहु परण यह पूर जाहु चह तन धन गेहू ॥
सुत यद्यपि तुम बडे तदपि मोहि पालन योगू ।
भयों वृद्ध मैं तुम्हें अबै करना सुख भोगू ॥
ताते पोषहु देह जियो बहु वर्ष लग जेहि ।
धर्मविना जो जिये पिता जग मृतकजानि तेहि ॥
सधै धर्म तन गये ताहि जीवत पहिचानो ।
असकहि दीन्हो भाग भक्त खाये न अघानो ॥
पुत्रवधू जियजानि दीन निजभाग मगन होइ ।
भयो तृप्त तब सन्त वचन बोल्यो ऐसे मोइ ॥
हे द्विज मैंहो धर्म लेन आयो नव अन्ता ।
देखि गयो हिय हारि नहीं कोउ तुमसम सन्ता ॥
अब तजिकै मृतलोक बसो चलि हरिपुर भाई ।
घटी न तुम्हरी पुण्य और दिन दिन अधिकाई ॥
ताही समय विमान देवगण तहँ ले आये ।
जयजय कहि सुर सुमन सुमन द्विजपर बरषाये ॥
लीन्हो चढुन चढ़ाय जाय हरिपुर महँ राख्यो ।
देख्यो धर्मप्रताप किहे एमा फल चाख्यो ॥
जित अँचवा रहै अतिथि तहां मैं निकस्योधाई ।
भयो अर्द्ध तनु स्वर्ण सर्वजल रहा न राई ॥
गी० छं० ॥ हमरी उमिरिमहँ और दूसरि यज्ञ वैसी ना भई ।
जहँ हों लखों फल अछत आधी देह हरिकी ह्वैगई ॥
तब ते फिरें बहु तीर्थ यज्ञन सर्व काहूना कियो ।

इहनौ यही उरधारि लाव्यो मेटि नहि खोटपनदियो ॥
दो० सुनि न्याराके बचननृप, शोच कीन्ह मनमाहि ।
पूछिनि प्रभुते यज्ञ यह, पूरण भय कत नाहि ॥
सुनत कृष्ण बोले हरषाई * यहो भेद मैं कहौ बुझाई
याहेमभा न वैष्णव नहिं आयो * ऋषिसमूह मिलिजहँतहँलायो
जो तुम कह्या भक्त ये नाहीं * है परिजात गर्भ इन माहीं
कुल विद्या महत्त्व छवि ज्वानी * पाच कोटि ये भक्त के जानी
इन ते भक्ति न नेरे आवत * अतिसुकुमारि देखि डरपावत
तेहि त निरअभिमान जो होई * पूरण चहो जेवावो सोई
ऐसे भक्त कहाँ हम पाई * तवपुर हो तो देहु बताई
बालमीके श्वपचा बड़ साधू * लावहु जाइ सहित अहलाधू
सुनि प्रभु वचन युधिष्ठिर धाय * करि सन्मान भवन लैआय
परसे अशन द्रौपदी नाना * सो सब भक्त एकमहँ साना
पश्चालो लाख कृत अनुमाने * सूपच रस स्वाद का जाने
तेहि जेंवत पर घण्टा बाजा * एकै बार खुशी भा राजा
बासुदेव मन विस्मय आना * बारक बार शब्द सुनि पाना
ग्रास ग्रास पर चहिये बाजा * अस विचारि बोले यदुराजा
सभालाग सब सत्यहि भाख्यो * यहिअवसर दुराव जनिराख्यो
क्षोभकीन्ह केहि हृदय विशेखा * बड़ि मान्यता भक्त के देखी
निज उर बान द्रौपदी कहेऊ * सुनि हरिउचहु दोषनइगहेऊ
जलदल ध्यान पुराण ते होई * सुर नर मुनि पूजन सबकोई
तुलसी स्वच्छ चहै तह जामै * तिमिममजन पावन सबठामै
बरत नाभ्क हरिवासर अहई * नदीबाभ्क सुरसरि श्रुतिकहई
देहवाभ्क जिमि रमानिवासा * बरण वाभ्क तिमि मेरे दासा

अम्बुतकुल निजजन्म निरीक्षा * मातृयोनि जनु लीन परीक्षा
ताने ऐसी कबहुँ न कीजै * चलो भक्त ते पूछे लीजै
सत्रामोलि आइकही असिबानी * डारउ क्यों एकहि मह सानी
बोले भक्त भोग भगवाना * लागि गयो सब भयो समाना
पावत परत स्वाद अनुमानो * यहि ते मैं सब डारे साना
सुनि जन वचन हर्ष उरछयऊ * भक्त जेइँ जब अचवत भयऊ
नकुल जाय परसाद सो पावा * सकल शरीर स्वर्णकर भावा
सकल समाज देखि अस कहई * अमित प्रभाव भक्ति कर अहई
द्वादश कोटि रहे द्विजभूरी * श्वपच भक्त ते भै मख पूरी
बहु मुनि थे पम्पासर कच्छा * शवरी पदरज ते भा स्वच्छा
कुम्भजव्यास आदि मुनिनाना * हरिभाज को नहिं भयो महाना
तब सुजाति रिपु पूछे लीन्हा * केहिगुणजन तुमकहँ वश कीन्हा
सुनहु धर्मनन्दन करि नेहा * मोहिंजनसमनाहिं प्रियनिजदेहा
तब पुर परमभक्त यह नेमा * सुनहु तासु बरणों जप नेमा

गीतिकाछन्द ॥

जप नेम संयम करहिं ध्यान अमान सदा रहावहीं ।
सम शील सत सन्तोष दया विचारि क्षमा गहावहीं ॥
छलहीन इन्द्रीजीत उर वैराग मद मोहै तजै ।
गत काम क्रोधरु लोभ भय मोहिं छोडि आनै नाहिं भजै ॥

दो० ममगुणगावत पुलकितन, ममजनसों अतिप्रीति ।
तेहिते मैं वाहि वश रहत, अभ्यागत की रीति ॥
यहि प्रकार रघुनाथ हरि, भाष्यो भक्त प्रभाव ।
सुनत युधिष्ठिर के भयो तब भक्तन पै भाव ॥

सो० पुनि बोले कर जोरि, वर्णाश्रम के धर्म प्रभु ।

सुनने की रुचि मोरि, भक्तिसहितसो बरणिये ॥
वीरछन्द ॥
सुनिप्रश्न । वदकृरन ॥ द्विजधर्म । करकर्म ॥
दो० सन्ध्या मज्जन होम जप श्रुति पठनार्चन देव ।
क्षमा तोष द्विजधर्म यह, अभ्यागत की सेव ॥
क्षमातेजबलअचल कलि, अति उदार द्विजदास ।
ये गुण क्षत्री केर फुर, उर मेरो विश्वास ॥
आस्तिकबुद्धि विनीतव्रत, दानोद्यम आरम्भ ।
ये लक्षण नर वैश्य के, विप्र भक्त निरदम्भ ॥
तिहु बरण की सेव करि, जो पावै सो लेइ ।
सत सन्तोषी कपट बिन, शूद्र धर्म है येइ ॥
मिथ्यावाद अशौच अरि, नास्तिक कुटिल कठोर ।
ये लक्षण नर नीच कँ, कामी क्रोधी घोर ॥
सत्य क्षमा परस्वार्थ रत, शठ मद मार कुकर्म ।
तृष्णा बिन चहुं बरण के, ये साधारण धर्म ॥
अपने अपने धर्म करि, अन्त अमरपुर जाइ ।
बरणभ्रष्ट भोगै नरक, अब सुन आश्रमराइ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इन, तिनहुनको विधिएक ।
गर्भाधानादिक सकल, संस्कार कर नेक ॥
कु० जनो भय गुरु पास रहि, पढ़ै श्रेष्ठ पद सेइ ।
दण्ड कमण्डलु मृगचरम, माल मेखला देइ ॥
माल मेखला लेइ, वेशनख बिन्दु न त्यागै ।
सन्ध्योपासन शौच, करत नीनो अनुरागै ॥
रागै नाहिं जगमाहिं, लघुअशनकर रत्यागना ।

ब्रह्मचर्य के धर्म, ये ममसम मातें गुरुजनां ॥
ब्रह्मलोक जो चहैं तौ, रहैं यही पथ माहि ।
कामी कामिनि केर सँग, भूलेहु ठानें नाहि ॥
भूलेहु ठानें नाहि, चहैं जो होन सकामा ।
तौ श्रुति पढ़ घर आइ, करै युवती अरु धामा ॥
धाम मांझ जप दान, मख करत रहै श्रुतिधर्म ।
यज्ञ करावन दूत, ग्रहण वेद पढ़ावैं ब्रह्म ॥
पर ये तीनों आइ इमि, जिमि पावक को नीर ।
ब्रह्मतेज नाहिं रहत है, तेहि त्यागत मतिधीर ॥
तेहि त्यागत मतिधीर, सिलोकरि तन निरबाहै ।
ममसुमिरण ममध्यान, अन्त मेरो पद लाहै ॥
लाहै क्षत्री यह करैं, पालन सबको बरि ।
रण सन्मुख मरि जाय, नाहिं घर घर उपरि ॥
गृहवासी को धर्म तिन, करैं पांच मखमेव ।
प्रथमपाठकरि ऋषिजजप, बहुरि होमकरि देव ॥
बहुरि होम करिदेव, भूतबलि श्राद्ध ने पतिर ।
अन्न नीर ते अतिथि, कहां शत्रु कहँ मीतर ॥
मित्र मानि सब काहु, समझि काहुइ न दुखावै ।
मिथ्या जानै जगत, कुटंब पन्थी ठहरावै ॥
मिले न मुद गत शोच, रहै पाहुन समतामी ।
करै सदा मम भजन, तरै सो यसि गृहवासी ॥
जब जाको विपदा परै, वैश्य वृत्ति सो लेइ ।
जब मिटि जावै आपदा, तब आपनि गहि लेइ ॥
तब आपनि गहि लेइ, एक सुत भेव न जानै ।

चहौ रहै घर माहिं, मुक्ति अस गेही पावै ॥
पावै सोइ तमद्वार, होय जो जग आसक्ता ।
मैं मैं करि कुल सजै, भजै नहिं मेरो भक्ता ॥
भक्ता के गुण नाहि, आहि उर खल लक्षण सब ।
अन्तसमयपछितात, जात किरतान्त तीर जब ॥
यहिविधि वरष पचास रहि, तब जावै वन माहिं ।
ऋतु ऋतु को तप करै तहँ, कचनख नाखै नाहि ॥
कच नख नाखै नाहि, निरस है भोग बिसारै ।
कन्द मूल फल खाइ, पौप प्राणायम धारै ॥
धारै बलकलबसन, रमनहित आवै ऋधिसिधि ।
हुवै न वानप्रस्थ, केर लक्षण है यहि विधि ॥
बन बसि होइ पवित्र मन, तब लेवै सन्यास ।
दण्ड कमण्डलु धारिकै, करै इकान्त निवास ॥
करै इकान्त निवास, क्षुधाहित पुरमें आवै ।
द्विजघर चुटकी सात, मागि सरिसरतट जावै ॥
जाइ करै तहँ पाक, प्रथम कछुभाग निकारै ।
की देवै लखि पशुहि, किंतौ स्यहि जलमा डारै ॥
डारै पगमग देखि करै, मम सुमिरणशुचितन ।
यह लक्षण संन्यास, नहीं तौ भेषबकतवन ॥
दो० परम धरम सन्यास करि, लहै परम पद हंस ।
परदशाविधिके विप्रलखि, लेइ तीन कर अंस ॥
कुं० तत्वज्ञान जब होत तब, छूटि जात सब मान ।
यद्यपि हृदय अतिबुधितदपि, बरतै बाल समान ॥
बरतै बाल समान, ध्यान मेरो मन माहीं ।

क्षुधा तृषा तप शीत तिन्हें कछु व्यापै नाहीं ॥
नहिं मद माया मोह, भय निरंकार एकमत्व ।
जीवत मृतक समान, यह परमहंस करतत्त्व ॥
दो० परमपददायक धर्म यह, परमहंस पद श्रेष्ठ ।
जो ये लक्षण होयँ तनु, भयो जानिये श्रेष्ठ ॥
हे नृप जे मम भक्त हैं, रहित बासना चित्त ।
तदपि करैं शुभकर्म कि, जग कल्याण निमित्त ॥
जैसे सविता के विषे, अन्धकार नहिं लेश ।
तदपि करत परकाश जग, परसुखहित उपदेश ॥

कह नृप भक्तन के शुभकर्मा * कहहु दया करि नवौं आरि धर्मा
मुनिगिरिवर बोले लखि मर्मा * सुनहु भूप भक्तन की गर्मा
मेरी कथा सुनें अरु कहई * सहित सनेह नाम मम गहई
पूजा में अति निष्ठा धारें * विविध भाँति अस्तुति विस्तारें
बन्दन करें प्रदक्षिण देई * साष्टाङ्ग चरणामृत लेई
सब भूतन में मोको जाने * मम जन तेहि मेरो तन माने
मेरे हेतु करें सो करें * मो बिन जौन नाहिं परिहरें
मेरे हेतु अरथ सब त्यागें * आठहु भोगन ते बैरागें
योग यज्ञ जप तप व्रत दाना * शयनासन भोजन जल पाना
इत्यादिक सब मम हित करहीं * जाते अन्तर सो परिहरहीं
सदा आप को माहिं निवेदे * प्रेमशस्त्र ते ग्रन्थिहि छेदे
मुक्ति भुक्ति की करें न आसा * तिनके हृदय सदा मैं बासा
ऐसी जब मम भक्तिहि लहाऊ * तब अवशेष न कछु रहि गयऊ
प्रेम भक्ति हृदय जेहि नाहीं * ते सब धर्म अधर्म कराहीं
भक्ति सुतन्त्र चारि फलदाना * सकलजीवसुखप्रद जिमि माता

विरति विवेक ज्ञान विज्ञाना * होत तुरत त्यहि करत सुजाना
सोइ शुचि साधु सुघरवर सोई * यस्य भक्ति मम किंचित होई
जिन ममभक्ति हृदयमह धारी * सब सुधर्म्म के ते अधिकारी
दो० वरणाश्रम कर मानयदि, तबतक श्रुतिकरदास।
बरणाश्रम ते त्यक्त जे, श्रुति ऊपर तेहि वास ॥
ज्यहिकरि होत प्रसन्न मैं, बिनही श्रम अतिहाल।
सो भाष्योनिज भक्तिसुनि, पुनि बोल महिपाल ॥
हे प्रभु जो सब धर्ममय, हैं तव भक्त अखेद।
कर्म उपासन ज्ञानकत किये त्रिकाण्डी वेद ॥
एके कस सिद्धान्त न राना * सोऊ भेद सुनिये प्रभु भाना
जाको जस देख्यो अधिकारी * त्यहिहिन तेसी बात बिचारी
जिनजगजालझूठकरि जान्यो * ब्रह्मलोक तक दुख अनुमान्यो
बहुरिहु ताके उद्यम त्याग्यो * विधिनिषेधविनरहिं अनुराग्यो
तिनको ज्ञान योग अधिकारा * अस्थिर है मम करे विचारा
अरु जिनके समता दृढ़ नाहीं * राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं
परम सगुण मुनिके मुखमाने * मेरो भजन सत्य करि जाने
तिनकहे भक्तियोग सुखकारी * तरें आपु तारें संसारी
अरु जे विषयन के आधीना * तिन के उद्यम में लवलीना
कथासुनन को नहिं अवकासा * नहिं ममभजन केर अभ्यासा
तिन के कर्म योग सुखदाई * रहे न भूलि निषेधे भाई
जो शुभकर्म तजे अस गेही * सो राम श्वपच न छुइये तेही
तनमें जोर न घर में दाना * नृपसारिकार कि लहै कल्याना
जे तत्पर तिनहुन मा राहीं * ते अतिशय उत्तम प्रिय मोहीं
फलइच्छा जो सकल मिटावै * अन्त समय ममलोक सिधावै

दो० बहुत जन्म जप योग तप, धर्म ज्ञानरत होइ।
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्ति लहै मम सोइ॥
करै कृपा मम सन्त जब, तब नहिं दूजे ठौर।
गुरु सो मेरो रूप है, सब देव शिरमौर॥
दशकर्म में ब्रतबन्ध में, तीरथ होम सराध।
षटस्थान गुरु विप्र है, शिक्षा गुरु ममसाध॥
सुनिगिरिधर के बचनबर, हरष्यो भूप सुजान।
एकादश असकन्ध मत, यह मैं कान बखान॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतयुधिष्ठिरयज्ञवर्णाश्रमधर्मद्वारभक्तिसाधन-
वर्णनानामचतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥ ३४॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
स्वसनमसुचय आदि बहु सतमत कहौं बखानि॥
सो० पुनि शौनक शिरनाय, बोले द्विजपद नाइशिर।
नाथ कहौ समुझाय, सतसंगतिमहिमाकछुक॥

सुनत सूत बोले मुद पाई * सतसंगति सम कछु नहिं भाई
सौ सहस्र सम्बत तप करहीं * अयुत गज्ञ नित उठि अनुसरहीं
चान्द्रायण ब्रत आदि अपारा * करै योग जप दान निहारा
जहँलग है तीरथ फिर आवै * क्षण सतसंग सरिस नहिं पावै
तात स्वर्ग सुख मोक्षहु केरा * धरै तुलापर एकहि बेरा
सतसंगति लवभरि करै कोई * तेहि सम सुख दूसर नहिं होई
निस्संशय जानहु यह भाई * सत्य महातम गम दोहाई
गङ्गा पाप ताप शशि हरहीं * दारिद दूरि कल्पतरु करहीं
साधु संग मो जो मन लावै * ततकालै तिहु ताप नशावै

दोइ घरी यक घरी सोहाई * हरि के जन तिष्ठ जहं आई
तीरथ सकल तहाई जानो * मही तपोवन सोइ पिछानो
दो० सन्तन की बाणी सुनै, प्रेम सहित जो कोइ।
गङ्गादिक सब तीर्थ फल, बिन अस्नानहिं होइ॥
अन्तकालहू जाके पासा * भक्त अकामी करे निवासा
ब्रह्महत्यामय पापी होई * भगवत धाम पाइ है सोई
सतसगति भवनिधिमहं नावा * चढै सो पार हो सतिभावा
साधु सग ते शीतल होई * जन्म मरण छण मे जाइ खोई
साधु सगते पातक जावै * ज्यों पावक ते शीत नशावै
सतसगति गति पलटै ऐसे * पारस ते लोहा हरि जैसे
अधमहु साधु सग जो आवै * पावन हो वेद अस गावै
ज्यों अपवित्र नीर मनु सङ्गा * गङ्ग मिलत पावन ह्वै गङ्गा
तिलसँग फूल फुलेल कहायो * साभरि भयो खेत जो आयो
नीर क्षीर की सगति पाई * वर्णमिट्यो सोइ मोल बिकाई
वृक्ष अनेक भाति के कोई * मलयागिरि सँग चन्दन होई
बेनु करील होन नहिं जानौ * सारहीन हतभाग्य पिछानौ
ऐसे जे नर भ्रष्ट अभागी * बैठे साधुन ढिग अनुरागी
सगतिफल लागत नहिं कैसे * नागबेलि बिच रमसर जैसे
जिनके भक्ति बीज उर छायो * सतसगति जल जनहो पायो
ऊगत तुरत सुनहु मुनि तामें * अमीवृष्टि ते नभ नहिं जामें
उदय दिनेश सबहिं लखिपरहीं * पै उलूक गीदर निशिचरहीं
ताते सतसगति का करहीं * जो नर बचन हृदयनहिं धरहीं
जिनजिन बचन सन्तकरमाना * तिन तिन का ह्वैगा कल्याना
सो सब बरणि कौन पै जाहीं * तदपि कछुक बरणौं तुमपाहीं

अजामील शठ पातक धामा * साधुसमागमिलि लहेउ अरामा
बाल्मीकि मुनि भे मुनिराई * सप्तऋषिन की संगति पाई
छिन सुदर्शा द्विज यक भयऊ * लहि गोपकरण सम तरिगयऊ
दो० महादेव का संग करि, कीर भयउ मुनि भेव।
चेतन ह्वै पुनि उड़ि गयो, भयो आइ शुकदेव॥
व्याससङ्ग नारद का कीन्हा * तपनि मिटी भे शीतल चीन्हा
पामरसंग च्यवन का पायो * क्षपनसहित सुरलोक सिधायो
व्यासपुत्र के सग समाजा * भे भवपार परीक्षित राजा
पांच हजार यज्ञ सुत जवने * नारद सग जाइ बन गवने
विप्र एक गृह दुखपर दीना * भिक्षाहेतु जात तन छीना
वैश्य एक निकस्यो मदभरेऊ * रथका रज लाग द्विज गिरेऊ
मरनलाग तापर करि क्रोधा * मातालि देन चले तब बोधा
तुरतै धरेउ सियार शरीरा * आगे चलि ब्राह्मण के तीरा
बोले विप्र शोक परिहरहू * नेक विचारि हृदयमह करहू
दुख सुख हानि लाभ संयोगा * कर्मन ते पावत सब लोगा
जो जस करै सो तस फल पावै * आनहिं विरथा दोष लगावै
यद्यपि हम पशुयोनि मझारी * ऐसा शोच करहिं नहिं भारी
करगयहीन न मगर ठानों * जो कछु होइ भावई मानों
यद्यपि हम कछु धर्म न करही * तद्यपि प्राणघात नहिं चरहीं
जीव बधे बड पातक जाना * ताते विप्र देहु जनि प्राना
देखो तुम विचारि मनमाहीं * नरतन सम तन दूसर नाहीं
जासु विवश सचराचर सोहा * नरक स्वर्ग अपवर्ग अरोहा
ताते हरि सुमिरण करिलेहू * दोह कुबुद्धि याहि तजिदेहू
तन छूटेपर बड दुख पावै * नहिं जानी केहि योनि समावै

ब्राह्मण तन तैं उत्तम पायो * जगतसुखन लगि वादिगँवायो
खानपानहित द्विज नहिं आयो * तप के कारण ईश पठायो
दो० सुनिजम्बुक के बचन द्विज, करन लग्यो तपजाइ।
मिटिगे सब दुख अन्त महँ, वस्यो स्वर्ग सुखपाइ ॥
अस सतसंग अहै मुनिराई * गई तुरत द्विजव्याधि नशाई
अवरसुनहु विविसुनयकभयऊ * जाजलिऋषितपहित वन गयऊ
कीन्ह तपस्या तन सुधि टारी * खगन कीन घर जटा मँझारी
अण्डा दै पंक्ति फूटि उड़ाने * शिरते निकसत जाजुलि जाने
तबऋषिके उपज्यो अभिमाना * मोहिंसमानतप कियो न आना
तुरत भई नभवाणी टेरी * तुलाधार सम तप नहिं तेरी
समता भक्ति जासु उर आई * रहत बनारस देखो जाई
मुनिजाजुलिऋषि तुरत सिधाये * तुलाधार बनिया घर आये
देखि कीन सनमान अपारा * चरण धोइ आसन बैठारा
पूछ्यो कयहिहित आयहु आजू * आज्ञा होइ करौं सोइ काजू
कह ऋषियश तुम्हारसुनिमोहीं * भा सुख अब कछु पूछब ताहीं
मैं वन तप बहुकाल कमावा * तुम्हरी सममरि ना सुनपावा
कौन धर्म तुम साधन अहऊ * सो हमते किरपाकरि कहऊ
तुलाधार कह रामहिं ध्यावों * रामहिं के गुण मुख ते गावों
काय बचन मन सन्तहि सेवों * विप्र व्यवसाय दान बहु देवों
ताकर फल तनको नहिं चाहों * अरपौं हरिहि सुमारग गाहों
चारिखानि जहलगि तनधारी * सबमहँ व्यापक एक मुरारी
यह विचारि सबको शिरनावों * ऊन्च नीच नहिं मनमें लावों
दुखी दारिद्री होइ जो कोई * सेवों ताहि नरायण जाई
डांडी पकार घाटि नहिं देहू * झूठ न कहौं पराश न लेहू

काहूहि शत्रु मित्र नहिं मानों * मैं मेरी तेरी नहिं आनों
आय हर्ष न गये विषादा * दुखसुखसम नहिं करों बिवादा
जोमन के मारग नहिं बहऊ * पाचहु बिषय प्रहारे अहऊ
वारि हरि मीन कुरङ्ग पतङ्गा * एव एक वश बिसरत अङ्गा
सबकी वश सो किमि सुखपावे * त्यहि ते मो मन दूरि रहावे
काहुइ दुख देवों नाह पावों * राम नाम निशि वासर ध्यावों
याते शान्ति बसी उर आई * दुरमति भ्रम सब गयो नशाई
निजदुखनिजगुण कहा नचाही * तुम पूछेउ मैं वरण्यों ताही
कहमुनिशान्तिकवनविधिआवे * सुनहु निगम यहि भांति बतावें
दो० सात भूमिका ज्ञान की तिनबिन होइ न ज्ञान।
ज्ञानबिनानहि शान्तिसुख, सो अब करों बखान॥

कुकुभाछन्द॥

प्रथम भूमिका है शुभ इच्छा दूसरि जानु विचारै।
नित्य वस्तु हिरदय लै राखै और अनित्य निवारै॥
तीसरि तन मानसा कहावै तन मन इन्द्री रोकै।
चौथो सत्यायुत सब जग में आतम एक विलोकै॥
पञ्चम अंश शक्ति निजरूपं तामें निश्चय आने।
छठई नाव पदारथ तेरे होत बद्धि लगहानै॥
सतइ तुरी भूमिका जानो मैं त्वैं ज्हा न रहई।
सप्त भूमिका ये कहवावें बिन गुरु ना कोइ लहई॥
ये साता साधन बनि आवै * उपज ज्ञान शान्ति तब पावै
जबते शान्ति बसै उर आई * काम क्रोध मद जाहिं नशाई
दूरै बासना रहै नहिं कोई * भय कलेश संशय जाय खोई
समाचित रङ्क राव बड़ छोटा * समाचित घर बन सज्जन खोटा

समचित शीत उष्ण बरषाना * कञ्चन मृतिका नारि पखाना
समचित मातु बन्धु सुत दारा * मम अरि मित्रहु अपन परारा
ब्रह्मानन्द मगन नित रहई * जीवनमुक्त सोई नर अहई
परमहंस यह ज्ञान कहावत * रामकृपा ते कोइ कोइ पावत
अति दुस्तर मारग यह भाई * वरणत सुलभ करन कठिनाई
ताते जान चतुर नर अहई * तजि सब रामभक्ति यक गहई
ज्ञान बिराग आपही आवै * गोसँग ज्यों घृत बच्छहु पावै
ताते मुनि तुमहू अस करहू * ज्ञानभक्ति हिरदयमहँ धरहू
सो० जे कोइ भक्ति बिहाय, ज्ञान हेतु बहुश्रम करहिं।
मानहुँ तजि सुरगाय, आक दुहै पय लागि शठ॥

महारामायणे श्लोकौ ॥

ये केवला द्वैतमतानुरक्ता श्रीराममूर्तिं विमलां विहाय । ते वै मदान्धा हृदये स्वमूर्तिन्त्यक्त्वा यजन्ति प्रतिबिम्बकुम्भम् १ ये रामभक्तिममलां सुविहाय रम्यां ज्ञाने रता प्रतिदिनं परिक्लिष्टमार्गे । आराम्महेन्द्रसुरभीं परिहृत्य मूर्खा अर्कम्भजन्ति सभगे सुखदुग्धहेतुम् ॥ २ ॥

सो० ज्ञान ते पर पद जाइ, करै निरादर हरिचरण ।
गिरै सो पुनि तम आइ, भ्रम रहित नहि जन कबहुँ ॥

भागवते ब्रह्मस्तुतिश्लोकौ ॥

येऽन्येऽरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धय. । आरुह्य कृच्छ्रेण परंपदं तत. पतन्त्यधो नादृतयुष्मदङ्घ्रय. १ तथा न ते माधव तावका. क्वचिद्भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदा । त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो ॥ २ ॥

दो० न सो पुराण न संहिता, न सो काव्य इतिहास ।
न सो शास्त्र तीरथ बरन, जहा न हरिहर दास ॥
योग कुयोग सखादि गुण, अवगुण ज्ञानाज्ञान ।
त्रिशविथा बिपति सुख जहँ न राम रतिमान ॥
नारदादि सनकादि मुनि, अज शंकर शुकदेव ।
लोमशभृगुसबशानबिधि, भक्ति करत है तेव ॥
मुनिजाजलिऋषिहरषितभयऊ * ज्ञानभक्ति हिरदय धारि लयऊ
तुलाधार कहँ गुरुकरि जान्यो * जैसे गरुड भुशुण्डिहि मान्यो
बसी शान्ति उर भर्म नशायो * तब नभ बानी को शिरनायो
ऋषि सब जग में ब्रह्म निहारो * अस सतसङ्ग प्रभाव अपारो
दो० ब्रह्मजीव जग वृक्ष है, सतसंगति फलसार ।
चरचा अमृत रस भरी, बीजहु तासु मँझार ॥
बीजहु तासु मँझार हैं, इमि भाषत श्रुतिअङ्ग ।
जो चाहे हरि दरश सो, करै सदा सतसङ्ग ॥
पियुष पताल न पाइये, पियुष न चन्द्र मँझार ।
पियुष मिलत सतसङ्ग मे, इमि कहै अमृतसार ॥
ताते जन रघुनाथ नित, करु सतसङ्ग बिचारि ।
प्रभुपद बढ़ै सनेह ज्यहि, जन्म मरण जाय हारि ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतजाजलितुलाधारप्रसङ्गबर्णनोनामपञ्च-
विंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं समुच्चय की कथा, कछु एकादश जानि ॥
बहुरि सूत बोले हे ताता * जाजलि केरि कही मैं बाता

अपर सुनहु यक नहुष भुवारा * भयो इन्द्रपद लेन विचारा
सो यज्ञन करि चढ्यो विमाना * इन्द्रलोक सूनो मुनि काना
वृत्रासुर मारि सुरेशा * त्यहि हत्या ते दुरे नदीशा
नहुष जाय सिंहासन बैठा * प्रभुता पाइ आइ मद पैठो
सहस बरष कीन्ह्यो सुरराई * इन्द्राणी ढिग कबहूँ न आई
तब नृप तासों वचन सुनावा * अब म्वहिं इन्द्र जानु सतिभावा
सुनत शची अतिशय दुखपायो * ध्यायो गुरुहि तुरत ढिग आयो
शशिना निज विपात सुनाई * दीन देखि मुनि युक्ति बताई
नृपते तुम अस जाइ सुनावो * आवाहन चढ़ि ममढिग आवो
शची आइ नरपति ते कहेऊ * सुनतनहुष अतिशयसुखलहेऊ
षटज आदि द्विज लीन लगाई * चढ़ि पालकी चल्यो हरषाई
कामातुर ह्वै कहेसि रिसाई * सर्प सर्प चलिये ऋषिराई
सुनि अगस्त्य तब दीन्हों शापा * होहु सर्प तुम अपने पापा
दो० त्यहिक्षण उतरि पर्यो पद, कर्यो वचन परकास।
शाप दूरि कब होइ है, कहो जानि निजदास॥
कह अगस्त्य द्वापर के अन्ता * प्रकटी धर्मतनय यक सन्ता
सो आई तुम्हरे ढिग जबहीं * चरण छुवत निस्तरिहौ तबहीं
कौनभांति हम जानब ताही * कुम्भज कह्यो चिह्न इकआही
पूछउ ज्ञान उतरु जब पायो * जानि तासु पद शीश धरायो
असकहि मुनि पुनि चले सिधाई * भये सर्प नाहुष तब आई
गिरि कन्दरा रहे बहु काला * हिरदयउठै अगिनिकीज्वाला
बड़ कष्ट करि द्वापर पायो * बनोवास पाण्डव जब आयो
द्रुपद स्वयम्बर रच्यो अनूपा * जुरे तहां दिशि दिशिके भूपा
तब खगपति ते कह्यो गोपाला * पण्डव कहँ लावहु ततकाला

आज्ञा शिरधरि गरुड सिधाये * कुन्ती पुत्र पांचौं जन लाये
सो गुरुतरि तिन्हैं बैठाई * कृष्ण पास आये खगराई
लगे तृषा लागि तहँ जानी * भीम से कह्यो जाइ जलआनी
देखि तडाग निकट चलि गयऊ * चापगाइ थाह निकसत भयऊ
योजन एक कुणप विकराला * उरग नहीं जनु मृत्युकाला
पूछेउ पास भीम के आई * कहु जगमहँ जीवत को भाई
जो कोइ मनुष होइ बलवाना * सुनि अहिलीन्ह्यो ताहि अज्ञाना
लेन पठयो फिर मुखझारी * पुनि युधिष्ठिर जानि अवारी
पठयो नरहि सरहि चलि आयो * देखे सर्प अस बचन सुनायो
को जीवत जगमहँ नर सोई * रागविद्या जाके कर होई
समुझि सो ज्ञानहीन धरिखायो * तब नकुलै महिपाल पठायो
समानिकाछन्द ॥ ताल तीर गे जबै । नाग बोलि
यों तबै ॥ जीव धन्य कौन है । रूपवान कौन है ॥
बीरछन्द ॥ सुनि सर्प । करि दर्प ॥ मुख बाइ । गयो खाइ ॥
पुनि युधिष्ठिर कह सहदेऊ * लेउ जाइ भाइन कर भेऊ
गये तीनि जन एक न आयो * नहिं जानी कौने बिलमायो
तब सहदेव निकट सर गयऊ * अजगर देखि कहत अस भयऊ
जीवत जगमें काहि पिछानी * विद्यावान होइ जो प्रानी
भक्तिविहीन ज्ञानावन चीन्ह्यो * तुरत निगलि सहदेवहि लीन्ह्यो
बहुरि युधिष्ठिर आपुहि आये * चतुश्रवा लखि वचन सुनाये
कितवार्त्ता अचरज का भारी * पन्थ कौन मोदित नर नारी
यह प्रश्न का उत्तर दीजै * तेहि पाछे नृप नीरहि पीजै
धर्मतनय बोले हरषाई * सुनो यथामति कहौं बुझाई
दो० भट्टी मोह कृशानु रवि, धवनि श्वास मद दारु ।

निशि दिन वन दरवीचरप, क्रम कुट काल लोहार ॥
जीव सार सम कुटत जाई * यह वार्त्ता मो मन माई
सुनि पन्नग प्रसन्न यति भयऊ * ततक्षणउगिलिभीम कहँ दयऊ
चारि खानि जहलगि तनुधारी * जलचर थलचर नभचर नारी
मरण एक दिन सबकर होई * शेष रहे अचरज है मोई
सुनी भुजङ्ग बात यह जबहीं * उगिलिदिहिमि पारथकानबहीं
पन्थ सो जाहि महाजन धावे * नकुलं उगिलिदिहिसितबचावे
दुसरे दिन बहु भोजन पावे * परवश होइ न अन्नण रहावे
भजे राम तजि काम कुकर्मी * सोइनर मुदित न सगार भर्मी
कृपा बहिर्मुख शनसम प्रानी * होइ न यनविधि सब गुणखानी
अस गुनि मुनि सहदेवै दयऊ * बहुरि राव ते बोलत भयऊ
महाराज वचनामृत तोरे * सुनि आनन्द भयो अति मोरे
अब निजचरण शीश ममधरहू * दीनदयालु कृतारथ करहू
कारण कौन भाल पग राखी * हमने भेद कहो मो भाखी
पूरब भेद नहुष सब बरना * विप्रशाप जेहिविधि निरतरना
मुनिनृपयहिंशिरचरण छुवावा * मैं अनहानि दिव्य वपु पावा
आयो तुरत विमान समीपा * चढि हरिपुर का गयो महीपा
अस सतसङ्ग प्रभाव घनेरा * जेहिलगि गा दुख नाहुष केरा
और सुनो एक मर्द्दा साहू * रह धनहीन दीन सबकाहू
धनहित उद्यम केहिसि अपारा * होइ नफा नहि घटा निहारा
करजकाढि युगवृषभहि लायो * नाहिपरि जोतन गेत सिधायो
मगमा वृषभ गाँनि मचलाई * भागत परे ऊँटपर जाई
माचिबीच गर्दनि के उरझी * उनमत उठ उठो नहिं सुरझी
सो० चले घसीटत वृषभ दोउ, भये मृतक अधिराइ ।

लखि मंत्री सोचन लग्यो, महि तन शीश नवाइ ॥
ताहीं क्षण दत्तात्रय आये * दुखित देखि असवचन सुनाये
अहो तात मत धीरज नाहीं * वृथा शोच करि क्यों तनु दाहीं
दुख सुख कर्म भाव हाथा * कैस मिटे लगी सो माथा
तेहिते चतुर शोच नहि करहीं * होनहार मोइ हिरदय धरहीं
बिन दातव्य द्रव्य नाह पावै * देश विदेश चहौ फिरि आवै
पूरब पुण्य होय जो भाई * बिन आरम्भ मिलै धन आई
बहु नर उद्यम हीन हयाना * ते धनवन्त दुखी बुधिमाना
पाछिल धर्म जानिये आना * और तासु जौने सरि याता
आदौ दान दियो नहि ऐसो * अब चाहत मन मिलौन कैसो
तेहिते उर संतोष धारौ * तृष्णा हानि दुष्ट निवारौ
नहिं कछु सुख संतोष समाना * चौविस गुरु करि हम यह जाना
दो० सुनि मंत्री बोलत भयो, मुनिपद शीश नवाइ ।
कौन कौन गुरुकिहेउ प्रभु, सो मोहि देउ सुनाइ ॥

बीरछन्द ॥

मुनिदत्त । निजुमत्त ॥ मृदुबोलि । कह्यो खोलि ॥

तोटकछन्द ॥ प्रथमै गुरु जानौ भूमि कियो । तेहिते जु क्षमा अरु शान्ति लियो ॥ जल दूसर सर्व पवित्र करै । जिमि मज्जन जीव के पाप हरै ॥ गुरु तीसर वायु अमल अहै । मम त्यो गति सन्त समान बहै ॥ मृग चेदहिं गुरु गुनितान मेरे । तोइ भाति बिषय सुख चित्त हेरे ॥ शशि पञ्चम आतप ज्यो हरहीं । हरिके जन शीतल त्यों करहीं ॥ छठयें रवि ज्यों रस सर्व अहै । न लिपै परि त्यों जग सन्त रहै ॥ अभके

समतागिनि आज्य परे । निघटे तिमि कामिनि भोग करे ॥ नभ अष्टम पूरणब्रह्म तथा । नवसानँद-दाजन वृक्ष यथा ॥ दशमोदधि आय घटं न बढ़े । जन त्यों सुख दु ग्व समान बढ़े ॥

भवर यकादश निरनि सुपासू * पुहुप पुहुप की तेइ सुवासू
नाहिं त्रृन का दोष विचारै * कर्हिं मन्त नेहि रीति थहारै
कीटहि श द सुनावत ऐसो * सो है जात शृङ्ग लै तैसो
द्वादश अहि नहि भौन बनावै * तेसहि भक्ति बसै जह पावै
तेरहा गुरु हाथी कहु कीन्हा * कामविवश परवश भा चीन्हा
तब ते काम नेवारन भयऊ * रामचरण पङ्कज चित दयऊ
मकर चौदहो रसना स्वादा * आमिष गयो सहित अहलादा
सुखनहिं भयो गयो पुनि प्राना * नन्यो सकलग्ग रुचत पिजाना
दशशल्शलभ दियाकी ज्योती * देखत जरत मती ज्यों होती
तेसे नर लगि तिय फसि जाहीं * सो निचारिहो देखत नाहीं
जेहि देखौं नेहि आतम जानो * और न दूसर नेदहि आनो
पांडश चील्ह एक लै मासू * उन्न भई महमोर अवसू
बहुत विहग ताहि पहुआयो * दी यो छाडि तेरे सुग पायो
तबते चित संग्रह नहि करइ * जहा तहा निरन्द विचरई
सप्तदशो गुरु अजगर माने * निगलत्व शाने मौह माने
अष्टादश गुरु वेश्या एका * बैठी परि शृङ्गार अनेका
एकोदाग व्यसनी इक आशा * है रीज्ज गाथ लेन निराशा
तुरन पिङ्गला भज अवाशी * मन देखत निशिक्षण सोनारी
युगलयाम रजनी चलि गयऊ * देखना त्याग बोध तब भयऊ
आशात्यागि भजेसि भगवाना * यही आन मैं दिरदन स्वाना

दो० गुरु बीसवां बानकर, दीख बनावत तीर ।
भूप गयो तेहि अग्र ह्वै, महित शब्द अति भीर ॥

बधहु धाय पूछा यहि आंग * नृप गा मं न सुनी कछु शोरा
तहँ मैं सिखेहु यान का भेदा * रहौं लीन निजि जग के सेदा
बिशम मिथुन कपोना भयऊ * बिपिन कपोनी अण्डा दयऊ
फोरे सेः बड़े शिशु भयऊ * इकन्नि बधिक देखि गहिलयऊ
आये दोउ लिहे मुख चारा * पुन बिना घर सून निहारा
बधिक तीर देखे अकुलाई * गिरी कपोनिनि जालहि जाई
देखि शोच अतिकीन्ह बिहङ्गा * कमा आपहु सब के सङ्गा
अनिबल मोह देखि मैं जाना * तबने तज्यो भज्यो भगवाना
गुरु इकसवां मकरी भाई * पूरन नाक निगलि फिरि जाई
ऐसे, ईश जगत करि सोई * अन्न आपुमह लेत समोई
उभय बिंश जानहु मधुमाखी * रग रम आनि इकट्ठे राखी
खाइनि नहिं निजकाज न कीन्हां * आइ छोड़ाइ आनही लीन्हां
तसहि कृपण द्रव्य को पाई * पुण्य न करहि सकहिं नहिं खाइ
बिबिध भांति राखै महि गोई * करहि भोग तेहि आनहि कोई
तेहिने सग्रह करा न दामा * नृपभय चोर बटन ठग तामा
गुरु तेइसवां कन्या जानहु * तासुचरित अब सुनहु बखानहु
करन सगाई युग जन आये * मात पिता नेहि घर नहिं पाये
कन्या तब कीन्हेउ सन्माना * आप लगी पुनि कूटन धाना
चुरी खटकत भई गलानी * डोरेसि फोरि कछुक निजपानी
द्वै लगरहीं खटक नहिं जाई * एक राखि कृश्मि हराई
तबने सोइ सीख धरि चित्ता * एकाएक रहौं मैं नित्ता
बहुतन संग कलह में आवे * एकाएक परम फल पावे

चौबिसवां गुरु किहेउँ शरीरा * जेहिं लगि सब नर साहत पीरा

दो० पालत पट रस स्वाददै विविध बसन पहिराइ ।
तेल फुलेल लगाइ नित, सेवा करी बनाइ ॥

सो० अन्त समय की बार, संग न चालै एक पग ।
और सकल परिवार, सो आपन किमि होइ है ॥

आपन तन जान्यो नहिं जबते * करनलग्यो निजस्वारथ तबते
निज स्वारथ सोई कहवावै * जो कछु रामभजन बनिआवै
भजनबिना जीवहिं सुख नाहीं * बिधि हरिहर समीप चहु जाहीं
चौबिस गुरु करि जो मत पायो * सो मैं तुमकहँ सकल सुनायो
सुनि मद्रौ उर उपज्यो ज्ञाना * जगत झूठकरि तबहिं पिछाना
मुनिपद शीश नाइ बन गयऊ * जपतपकरि तन त्यागन भयऊ
हरिपुर बसेउ जाय दुख खीशा * अस सतसंग प्रभाव मुनीशा
कह शौनक यक संशय मेरे * दत्तात्रयी पुत्र किन केरे
यहो भेद प्रभु देउ बताई * सुनत सूत बोले हर्षाई

सो० अत्रय ऋषिकी नारि, त्रय देवन कर अंश लय ।
कीन्ह्यो पुत्र विचारि, नाम धर्यो दत्तात्रयी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमद्रौदत्तात्रयीसंवादचौबिसगुरुवर्णनोनाम
षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं समुच्चय चरित कछु, कछु जैमिनिमत आनि ॥

बहुरि सूत बोले करि नेहा * धन्य धन्य शौनक तव नेहा
जो पूछेउ मो बरणि सुनावा * और सुनो सतसङ्ग प्रभावा
सबते अधिक ज्ञान यह पावन * पुत्र पिता संवाद सुहावन

विप्र एक कश्यप अस नामा * मेधावी सुत अति अभिरामा
ज्ञानवन्त ममता उर नाहीं * यकदिन प्रश्नकिहँसि पितुपाहीं
पिता कहौ काकर तप करिये * जाते भवसागर को तरिये
कह कश्यप सुन वेद पढ़ीजे * ब्रह्मचर्य करि गृह सुख कीजे
वानप्रस्थ बहुरि सन्यासा * धारण करि कीन्यो बनवासा
जप तप योग यज्ञ तह ठान्यो * यह करतव्य है तुम्ह बखान्यो
सुनि मेधावी उत्तर दीन्हा * मृत्यु विवश हम सबकहँ चीन्हा
जब चाहे तबहीं महारे * बाल वृद्ध नहि तरुण विचारे
सो किहिविधि चहुँआश्रमकरई * अमर होइ सो हिरदे धरई
लोमशादि मुनिचिरंजिवथाहीं * टूटत रोम कलप के माहीं
तेऊ डरत मृत्यु ते भागे * लोहड़ा रहत शीश आँधाये
और सुनो पाण्डव मखसाजा * कीन्ह्यो जब तब छाड्यो-बाजा
अर्जुन कृष्ण हम वृषकेतू * चले सकल रक्षा के हेतू
दक्षिण सिन्धुपार जब गयऊ * द्वीप एक बन देखत भयऊ
तहँ वकदालभ ध्यान लगाये * सबन जाइ मुनिपद शिरनाये
चरण छुवत वकदालभ जाना * नयन खोलि कीन्हा सनमाना
लागे कहन चरित हरिकेरे * बहुविधि जो निजनयनन हेरे
दो० चित्रकोटि चत्रलाख पुनि, उभय सहस्र अवतार।
भये दाशरथि राम के, मेरी दृष्टि अगार॥
सुनि अर्जुन बोले तिनहीं ते * तुम्ह यहा कितने दिन बीते
कह मुनि सुनहु तात मन लाई * आदिहि ते सब कहौं बुझाई
निमिष अठारह काष्ठा जानौ * तीस काष्ठकी कला पिछानौ
तीस कलाकी होत मुहूरति * तीस मुहूरति का दिन पूरति
पन्द्रह दिवस केर पखवारा * उभय पाख का मास विचारा

बारहमास निगत जब होई * तेहिका बरस कहत सब कोई
सत्रह लाख अठाइस बरषा * सतयुग रहत सकल सुर हरषा
बारह लाख छानबे हजारा * त्रेता रहत सुखी संसारा
दो० आठ लाख चौंसठ सहस, द्वापर रहत समान।
चारि लाख बत्तिस सहस, वर्ष रहत कलि जान ॥
चारि सहस युग बीतत जोई * तब ब्रह्मा का इक दिन होई
राति तेतनहीं तब विधि स्वावे * सृष्टि धरे उर कल्प कहावे
तीस कल्प बीतत अजमासा * बारह मास बरस परकासा
ऐसे बरस एक शत जाई * तब लगि ब्रह्मा जीवन भाई
मरे पितहि परले ह्वै जावे * ब्रह्मकल्प सोई कहवावे
म्हहिं देखत एते दिन भयऊ * ब्रह्मा बीस नाश ह्वै गयऊ
एक बार ब्रह्मा इक आये * चारि भुजा मुख चारि सोहाये
करतल चारि वेद तन पीना * रामचरित गावत लवलीना
मोते कहिनि ध्यान तजिदीजे * हमते कछुक चतुरता कीजे
तेहि समय बाँडर इक आई * हमैं वाहि ले चला उड़ाई
उलटत पलटत नाघत खण्डा * देखा जाइ आन ब्रह्मण्डा
तह विधि बैठ आठमुख सोहा * आठ भुजा वसुवेदहु जोहा
का भवान विधिते निधि भाखा * ब्रह्मअह इत्य मुनि माखा
दो० अबतककह्योसोकह्योपर, अब न कह्यो अज नाम।
ब्रह्मा ये मय आठ मुख, जेहि करतल सबकाम ॥
इतनीकहत पवन पुनि घूमी * उभय लपेटि चली नभ भूमी
उहाते उड़त आन मह गयनू * सोरह मुख विधि देखत भयनू
पुनि बत्तिस चोसाठि छानावा * दुगुन दुगुन मुखका विधि पाना
जेहि देखा सोऊ उड़ि जाई * गगन पार सब निकसे जाई

दो० तहां पुरुष इक दीख वर, जेहि तनु अतिविस्तार।
बदनअनन्त अनन्तभुज, वेद अनन्त अपार॥
कीन वन्दना तिन सनमाना * सब अज्ञान का गा अभिमाना
कछुक बार रहि आयसु पाये * फिरिनिजनिजआश्रमकहँ आग
सुनि अर्जुनअतिशयसुखपावा * बहुरि जोरि कर बचन सुनावा
हे प्रभु कत उजारमहँ रहहू * शीत उष्ण बरषा शिरसहहू
लेव्यो इक मन्दिर बनवाई * सुनत बचन बोले ऋषिराई
लघु जीवन जग कौने हेता * धन सन्ची अरु करी निकेता
मृत्यु खड़ी शिर सन्मुख हेरै * जब चाहै तबहीं सुरा गेरै
जो कोइ सुरी चढावा जावै * जगा रहि गये कौन सुख पावै
सुनो पिता ऐसे जे अहई * तेऊ डरत मृत्यु ते रहई
औरन की अब कौन चलावै * जो नित जन्मि जन्मि मरजावै
तेहिते तात मोह तजि देहू * करहु रामपद पङ्कज नेहू
निशिवासरऋतुजेहिविधिजावै * त्यों तुम्हरी नित आयु सिरावै
देखत जात सचेत न होवै * दहने महल माहिं कत सोवै
प्राण अन्त कछु बनै न भाई * उठी हाट जिमि वस्तु न पाई
श्लोक—यावत्स्वस्थमिदं देहं यावन्मृत्युश्च दूरतः।
तावदात्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किं करिष्यति॥

गीतिकाछन्द॥

सुनि पुत्रके अस वचन विमल विराग कश्यपके भयो।
दोउ त्यागि तृणसमधामधनसुत वास बनका चलिदयो॥
जप योग संयमसहित करि हरिभक्ति तन मन जीतिकै।
गये अन्तसमय विमान चढ़ि प्रभुधाम रस्यो प्रतीतिकै॥
सो० ऐसा है सतसङ्ग, जाके करते अघ नशत।

लागत हरि का रङ्ग, भागत संशय शोक भ्रम ॥
और सुनो विश्वावसु नागा * मन्दालसा सुता छुठि भागा
तालकेतु लेगा हरि ताही * ऋतुध्वज गालवमखगतचाही
बध करि ताहि सुतासांइ लीन्हा * विश्वावसुहि आय पुनि दीन्हा
ब्याहयुक्ति निज नृप ते ठानी * गहिपग बोली कुँवरि सयानी
तीनि बचन मोहिं देवें नाहू * ताके संग करब हौ ब्याहू
इक तो जो मम द्वारे आवे * भगत विमुख जान नहिं पावे
दूसर मोहिं जीवन नरनाहा * करे न अपर रवनितग ब्याहा
तीसर जो बालक हो जावो * द्वादश सम्बत गहीं खेलावो
असप्रणकठिनसमुझिमनमाहीं * अवनऊ मोहिं वरी केहु नाहीं
रतिध्वज बचन देइ तहँ परखी * धृमसुतहि लाये घर घरखी
कछुक काल बीते सुत भयऊ * चारेउ का नहिं कवहू दयऊ
आपु खेलावे निज अरु रानी * देइ ज्ञान तनु मे यहि भांती

श्लोक ॥

शुद्धोसि बुद्धोसि निरञ्जनोसि संसारमायापरिवार्जितोसि ।
संसारस्वप्न त्यजमोहनिद्रा मन्दालसा वाक्यमुवाच पुत्रम्॥

बडे भाग सो नरतनु पावो * सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गावो
ताहि पाय निज राम न ध्यावा * तिग जीवन जग वादि गँवावा
ताते सुत हरि सुमिरण करहू * ज्ञान विराग हृदय महँ धरहू
क्षुधा तृषा सुख दुख अहंकारी * काम क्रोध मद मोह नेवारी
सुत पितु मातु बन्धु अरधङ्गी * ये सब हैं स्वारथ के सङ्गी
अन्त समय कोउ काम न आवे * बीचहि मिले बीच बिलगावे
तिन्हें त्यागि वन गवनहिं फांजे * अहनिश रामरसामृत पीजे
क्षण क्षण तेरी आयु सिरानी * ज्यों करतल जल निकसत सानी

काल अचानक सब का मारै * बाल वृद्ध नहिं तरुण विचारै
ताते बालपनहिं ते चेतौ * वेगि लगावो हरिपद हेतौ
दो० बहु प्रकार मन्दालसा, दीन सुतै उपदेश ।
भयोज्ञानहिरदयविमल, गयो विपिन मुनिवेश ॥
सो० यहि भांतिन षट बाल, पठये बन उपदेश करि ।
सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोले विलखि ॥
हे भामिनि सुनिये मम बाणी * भये वृद्ध हम तुम दोउ प्राणी
बालक बन पठयो सब आछे * करै राज्य को हमरे पाछे
तेहि ते यहि राखौ गृहमाहीं * बारबार बिनवौं तोहि पाहीं
सुनि पतिवचन पुत्र घर राख्यो * नाना ज्ञान वहु नहिं भाख्यो
पर नित शोचहि करै अपारा * परी नरक यह पुत्र हमारा
तब एकयन्त्र बाँधि भुज दीन्ह्यो * बिपति होइ यामें मोहि चीन्ह्यो
कछुदिन बीते दोउ मरिगयऊ * पाछे अलर्क राजा भयऊ
भ्रात बन्धु गये ते आये * तजहु राज बहु दोष सुनाये
सो महीप मानेसि नहिं राई * बलरा मागन दीन लड़ाई
दो० तब ते काशीराज पहँ, फिरिआर्दी भे आय ।
निज निज हीसा देनकहि, लाये ताहि चढ़ाय ॥
कछुकदिवस अलर्कनृप लरेऊ * भयो शसित तब रण परिहरेऊ
गयो भागि बनविपति बिचार्यो * खोलि मुद्रिका ताहि निहार्यो
दो० जगतजाल में मति परै, केवल दुख यहिमाहिं ।
सत्य कहौं सतिभांतिकहौं, सुतसुख सपन्यो नाहिं ॥
सो० रामबिमुख नर जौन, कियो न संगति तासुकी ।
साधु संग सुख भौन, मिलत ज्ञानहरिभक्तिजहँ ॥
दो० खग मृग किन्नर नाग नर, दैत्यासुर समुदाइ ।

युग युग में जे तरे ते, सकल साधुसँग पाइ ॥
अस मुद्रिका मांझ जब देख्यो * सोजन दत्तात्रय का लेख्यो
पलोचरणनिजविपतिसुनायो * मुनिवर बहुविधि ज्ञान सिखायो
गयो मोह सुख भयो अपारा * करि हरिभक्ति भयो भवपारा
अस सतसंग अहै अधिकाई * गइ कुगंम भवव्याधि नशाई
ताते साधु संग नित कीजे * मन क्रम त्यागि कुसंगति दीजे
कु० भक्तिलता सतसंग जल, सत्रधा पल्लव पाय ।
शाखा ज्ञान विराग गुरु, लघु क्षमादि समुदाय ॥
लघु क्षमादि समुदाय, प्रेमसो सुमन सुहावन ।
हरि प्रापति फलमधुर, महादुख दोष नशावन ॥
प्रथम अगाते रक्षिये, बडे भये नहिं शक्ति ।
वैभे रहे कर इमि कहे, कल्पलता हरिभक्ति ॥
दो० जन्मे कन्या जनक ते, रहे जनक के गोद ।
होइ पुत्र तब विधिसुखद, इमि कहे भक्ति विनोद ॥
प्रभु पयोधि धन सन्त है, हरि हरिजन यों मान ।
मुशकिलते रघुनाथ इमि, करत साधु आसान ॥
इति श्रीविश्रामसागरसर्वमतसागरअभवजागरश्रीरघुनाथदास
नामसनेहीकृतपुत्रपितासंवादअलर्कप्रसंगवर्णनोनाम
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सांख्यशास्त्रमत कहौं कछु, कछु वेदान्त बखानि ॥
सुनि शौनक बोले हरषाई * सतसंगति महिमा प्रभु गाई
और एक वर्णो इतिहासा * जेहिते होइ ज्ञान परकासा
मगनजान गर भूपति गहे * नीतिमान परजे बहु चाहे

तेहि के पुत्र अग्र देश केरा * मर्यो मृतक सो अनमन घेरा
राजा शोक कीन अतिभारी * प्राण तजन की ठान बिचारी
तेहि अन्तर लोमशऋषि आये * नृपहि दुखित लखि वचन सुनाये
हे नृप शोक करो तू काहे * तेरो सुत नहिं तैं पितु आहे
सुत शरीर पर तव आगे * रोवत मृतक जान के लागे
जन्मै मरै न भयो न होई * निज स्वरूप अचल है सोई
शस्तर काटि सकै नहिं ताही * पावक जारि सकै नहिं जाही
नीर भिजोय सकै नहिं ताको * मारुत शोषि सकै नहिं ताको
ऐसो याहि आतम कहु जानो * मनमहँ तासु शोच मति आनो
ताको मृतक कहै जो कोई * महा मूढ़ अज्ञानी सोई
नाशवन्त है देह पिछानो * जीवात्मा अविनाशी ज्ञानी

दो० देह अङ्ग न्यारे करो, जेहि तक होत विनाश।
उतपति भय जेहि भाँतिन, करन नरक को वास॥

प्रथम अलख अव्यक्त अपारा * इच्छा करि पुरुष उपजारा
पुरुषेच्छा ते प्रकृति प्रवेशा * प्रकृति ते भयो महातत्त्व देशा
महातत्त्व ते भो निरकारा * निरकार ते प्रणव विहारा
प्रणव ते भये तीनि गुण राऊ * सत रज तामस प्रकट प्रभाऊ
त्रयगुण की माया आराधी * जिनते भौ तनु अनित उपाधी
सतते वासुदेव चित जानो * और चौदह देव पिछानो
रजगुण ते ब्रह्मा पुनि भयऊ * दश वायु इन्द्री दश जयऊ
तामस ते शिव जानो राई * आदि शक्ति कारण लखाई
अहं ते भो अकाश लहि पोला * उपज शब्द गगन जे बोला
नभ ते भई पवन अस्पर्शा * ताते भुक रूपहि हरषा
अग्नि ते जल रसना रस चाहे * जल ते पृथिवी गन्ध जो ताहे-

यक ते एक प्रकट ह्वै थाई * जब सिमटै सब जाइ समाई
दो० सतरजतम बुधिचितअहं, शब्द अस्परश रूप।
रसनगन्धमिलिगाठिपरि, तब उपज्यो मन भूप॥
तेहिंदे अन्तःकरण नृप, गने जात हैं चारि।
मनबुधिचितअहँकारअब, बिरती कहौं विचारि॥
ज्ञान विचारि शील विश्वासा * धीरज निश्चय मतिवृतिभाषा
सुरति चपलता आगन उमगा * राग आदि चितवृत्ति प्रसगा
मैं तैं मान मलिनता दोषा * अहङ्कार की बिरति सरोषा
दुख सुख भय संकल्प विकल्पा * लाज उच्चाटनमनवृति थल्पा
एक वस्तु बहु नाम कहाये * अन्न चून जिमि रोटी गाये
अब इन के इन्द्रिन के देवा * जे जे हैं बरणौं सो भेवा
कुकुभाछन्द ॥
मन के देव चन्द्र बुधि ब्रह्मा बासुदेव चितकेरे।
अहङ्कार शिव दिशा करण के नयन भानु सुर हेरे॥
रसना वरुण त्वचाके मारुत नासा अश्विनि जानो।
मुखके अग्नि इन्द्र हाथनके देव गुदा यम मानो॥
लिङ्ग देवपरजापति सिरजत चरणन विष्णु विराजे।
चौदह देव रहत यहि तनु सँग नित निर्भय ह्वै गाजैं॥
दो० नारी चौदह सहस हैं, यहि शरीर के माहिं।
तिनमा चौबिस मुख्यहैं, सब कोइ जानत नाहिं॥
कमलनाभि ते दश उरध, दशै गईं अध जान।
युग दक्षिण उत्तर उभय, तिनमा दश परधान॥
तिन दशहुन के नाम बखानौं * जहँजँह बसैं सोऊ तुम जानौं
बायँ इडा पिंगला दायें * मध्य सुषुमना तीनि गनायें

बामं चक्षु गन्धारी रहई * हस्ती जिह्वा दहिने अहई
पूषा कर्ण दाहिने अहई * पुनि यशस्विनी बायें सहई
नाभी माहिं अलम्बक राजै * कहुलि नासिकामाहिं बिराजै
मुख अस्थान शङ्खिनी केरा * ये नाड़िन के नाम निबेरा
दश पवनौ हैं यहि तनु माहीं * निज निज थलमें सोउ रहाहीं
प्राण पवन हिरदयमें बासा * जेहितेनिशिदिन निकसतश्वासा
गुदा अपान नाभि सामाना * कण्ठ उदान सर्वतनु व्याना
नाग बायुते उठै डकारे * कूरम नयनन पलक उघारे
देवदत्त आवै जमुहाई * किरकिल छींक लगावै भाई
मुये धनजय देह फुलावै * ये दश पौन शरीर रहावै
दो॰ इन्द्रिय दश तत्त्व पांचते, प्रकट भई यह जानि।
उभय उभयसों प्रीति है, सोऊ कहौं बखानि॥
मुखते कहन श्रवण यक सुनई * त्वचा पाणि अमपरसै गुनई
नयन चरण ते प्रीति रहावै * नयन कर्म पद लग पहुंचावै
रसन उपस्थ भोग दोउ चाहैं * गुदा नासिका नेह निबाहैं
मन इन इन्द्रिनके सुख लागी * भूल्यो ब्रह्म क्रान्ति सबभागी
ताते भयो दीन मतिहीना * मन बासा अब कहौं प्रवीना
हिरदयबीच कमल यक अहई * पखुरी आठकेरि तहं रहई
जेहि दलपर मन बैठन धाई * तब तहँ तैसी बिरति लखाई
पूरब दल पर जब चलिजावै * दया धर्म धीरज उपजावै
दल अगनेय माहिं पग धरतै * क्षुधा तृषा निद्रालस बरतै
दक्षिण मद मत्सर छल छोहा * अहंकार उपजै अरु कोहा
नयऋति दलै माहं हठमाया * आशा तृष्णा शङ्का गनाया
पश्चिम दल समता उपजावै * आनंद निरभय चित्त रहावै

बायव उच्चाटन संतापा * भय लज्जा वरते डर पापा
उत्तर ग्लपर जब मन तिष्टा * हँसी विनोद काम की चिष्टा
ईशाने सुधि बुधि संतोपा * क्षमाशील सत विरति अदोषा
मन आठौ पखुरिन पर धावै * पवन समान वार नहिं लावै
तेहि मनका रोकन कोइ सन्ता * पकरि खगानन चरण अनन्ता
नातरु जगत सिन्धु महँ भञ्जा * बाढ़त कर्म वीचिकन सञ्जा

कुं० और सुनो तत्त्व पाच ते, जो प्रकटे तनु माहिं।
काम कोह मद मोह भय, बोलन नभ ते आहिं॥
बोलन नभते आहि, वायु ते बाढ़ै काया।
बल करना मुनि चलन, परसि संकोच बताया॥
पावक ते आलस क्षुधा, तृषा नींद सँग ब्योर।
जलते मेदरु रक्त कफ, विन्द पसीना और॥

दो० महीतत्त्व ते जानिये, अस्थि मास अरु चाम।
नारी रोमा सबं मिलि, भा शरीर बेकाम॥
तनु झूठा झूठा करन, झूठा सब संसार।
तनु सचा सच्चा जगत, सच्चा कर्म विकार॥

तनुमें तुर्य देह है मूला * व्यापक सूक्ष्म लिङ्ग अभूला
तिनकी चारि अवस्था फुरिया * जाग्रत स्वप्न सुषोपति तुरिया
बानिहुँ चारिभाति की करी * पग पशन्ती मध्य बैखरी
दश इन्द्री अरु पाचो तत्त * तिन ते तनु अस्थूल अनित्त
बाल युवा वृद्धापन रोगा * मारन जागत सोवत योगा
मग आगन नर दार निहारा * थूल सग ये लगे विकारा
जाग्रत तासु अवस्था जानो * नैनन जो कछु करत पिछानो
दो० दशौ वायु अरु तीनगुण, पांच मातरा आस।

चौदह स्वर अन्तःकरण, यामे करत विलास ॥
पांच तत्त्व इन्द्री दशो, और पांच मैग बाय ।
सतगुण हू दश देवता, सोइ रहा सुख पाय ॥
सोतन स्वर दोष कन जोड़ * लिङ्ग देह तुम जानों सोइ
लिङ्ग देह जे तत्त्वन केरा * तो में तुमने करों निवेरा
प्राण अपान समान उदाना * व्यानबायु सत रज तम जाना
अन्तःकरण चारि स्वर चारों * पाच मानग सोउ निहारो
बीस तत्त्व ते लिङ्ग शरीरा * स्वप्न अवस्था तासँग बीरा
जीव नाम ताही को परही * लिये मना सोई अवतरही
कर्म करत तस भोगन भाई * स्वर्ग नरक महिमण्डल आई
सो० जन्म मरण सुख शोग, क्षुधा पिपासा जानिये ।
ये पट ऊरमी रोग, जीव सग लागे रहत ॥
लिङ्ग शरीर नाम तब पावै * जब नर अजपा में मन लावै
अजपा कि जो सांस्मि उसासा * सुमिरे नाम सहित विश्वासा
स्वास लेन रो तजा मकारें * जागत सोवत नाहिं बिसारै
होइ बामना तब सब नासा * मिले ब्रह्ममहँ जिमि जलवासा
आनँद प्राण मनोमय कोसा * तिनहु केर तनु सूक्ष्म पोसा
अधिक नींद सोवे जब प्रानी * रहे न तासों कछु पिछानी
सूत्रातमा प्रकाशित भापाने * तस्य अवस्था आहि सुषोपति
तीनि अवस्था ना सत चीन्हा * सतमग तुरिया नित्त नवीना
ईश्वर जीव भेद मिटिजावे * तुरी अवस्था सोइ कहावै
कोइ कोइ सन्त लहत है याको * लक्षण सुनो बतावों ताको
प्रेम विवश तनकी सुधि भूली * गदगद कण्ठ रोम रहे फूली
कहु उठि चलत बैठि कहुँ जाई * कहुँ नाचत करताल बजाई

बोलत बचन औरको औरा * समुझि परत मानहु मतिबौरा
जर्द वदन तनु चढ़त न मासू * नहिं लागत जेहि क्षुधा पिपासू
सूझि परत नहिं पर्वत गाऊ * को हम कहा जात केहि ठाऊ
समचित शत्रु मित्र नर नारी * समचित पुत्र पिता महतारी
हां तू बन्धु गई सब खोई * त्याग अत्याग तहां नहिं कोई
दोष अदोष मिटी भ्रमकाई * निज स्वरूप सुख रहे समाई
मन चित अहंकार नहिं जावै * बुधि पहुँचतपहुँचत नशिजावै

दो० जैसे पुतरी लोन की, दधि थाहत गलि जाइ।
त्यों आतम के खोजते, सुधि बुधि जात हेराइ॥
ज्यो सूरज के तेज ते, देखि परत रवि जात।
त्यों आतम के तेज ते, आतमरूप लखात॥
ऐसो मत जिनका मिल्यो, ते नर जीवनमोष।
ज्यों चाहे त्योंही रहे, तिन्हें न दोष अदोष॥

चारि अवस्था वरणि सुनाई * जहं जहँ बसैं कहीं सो गाई
जाग्रन को चक्षुन में बासा * लिङ्गदेह कर कण्ठ निवासा
कारण तनु हिरदे महँ राजे * तुरी अवस्था गगन विराजे
परमातमा ब्रह्म को जानो * सबते पृथक् जो आदि पिछानो

दो० पुरुष प्रकृति महतत्त्व तिरं, औंगुण अन्तःकर्म।
इन्द्री सुरतत वायु तनु, इनते परे जो ब्रह्म॥
परकाशक चर अचर का, परमात्मा सो एक।
जैसे बहु जल कुम्भ में, रविलखिपरतअनेक॥
आदिअन्त मधिमीरा सोइ, पश्यति जे मतिधीर।
जिमि मृतपात्र अनेकविधि, बसनतत्त्व गोक्षीर॥

श्लोक ॥

एकं च रूपात्रमनेकरूपमेकं च क्षीरम्बहुवर्णधेनुः ।
सुवर्णमेकम्बहुभूषणानि चैक परात्मा हि शरीरभिन्न. ॥

दो० सो शरीर अनित्य है, नित्य आत्मा ब्रह्म ।
तू ताही को अंश है, भूल्यो द्वै के भर्म ॥
जैसे मन्दिर कांच के, जातभयो कोइ श्वान ।
आपनि छांही देखिकै, भूंकत भा हैरान ॥
जैसे मूरख सिंह ने, आपन रूप निहारि ।
कूदि परेउ जलकूप में, दूजो भर्म सम्हारि ॥
यथा शचान उड़ान नभ, निकसा जहँ गचकाच ।
निजतनुछांह विलोकिजड, टूट सग्न भय च्वाच ॥
तेरे ही अज्ञान ते, दूजो भापत आइ ।
ज्यो बिच फूटी आरसी, मुखबहु परत लखाइ ॥
अपने ही अज्ञान सो, सब से कीन्हो बैर ।
तेरे दुख तोको भयो, और न दूजो गैर ॥
ताते तूही एक है, नित्य अखण्ड अनूप ।
जीवग्रन्थि को छाडिकै, लखौ आपना रूप ॥
काम क्रोध मद मोह भय, राग द्वेष अभिमान ।
मैं तैं हिंसा शोक श्रम, जीव लक्ष परमान ॥
जब तक इनके बश रहै, गाहै गोमन नाहि ।
तबतक सपनेहुं ना मिलै, निजस्वरूप के माहिं ॥
जीव धातमें कर्म है, परमातमा विराग ।
जानि राखौ यहि भेद को, जानत ज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञानमत, तीनि वेद के माहि ।

जो ततपर है तिन विषे, कहियत ज्ञानी ताहि ॥
ज्ञान भानु हरिभक्ति चख, कर्म मुकुर ले हाथ ।
देखि परै निजरूप तब, कहत दास रघुनाथ ॥

गीतिकाछन्द ॥

शुभकर्म ज्ञानरु भक्ति तिहुं विन जन्म मरण न छूटई ।
चहुंजाइ सुरपुर नागपुर महि निरत यमगण कूटई ॥
सुनि भूप ऋषिके वचन क्षिप्रै पुत्रशोक विहाइकै ।
लागे करन जप योग सयम ज्ञान मुक्तिहि पाइकै ॥

दो० कह्यो सूत शौनक सुनो, ऐसा है सतसङ्ग ।
सेनजीन नृप ब्रह्म में, भयो लीन तजि अङ्ग ॥
सत्य दृढावन मोक्षप्रद, कुमति हरण त्रैशूल ।
सतसगति असजानि नर, कस न करैं सुखमूल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसेनजीतप्रसङ्गवर्णनोनाम
अष्टत्रिंशोऽध्याय ॥ ३८ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि ।
श्रीहरिवंश पुराण की, कहौं अब कथा बखानि ॥
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ।
सतसगति महिमा कछुक, कहिये और कृपाल ॥

कह्यो सूत सतसग समाना * और न दूसर वस्तु जहाना
जो सतसंग करै मनलाई * उपजै ज्ञान मिटै भ्रमकाई
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई * सतसगति करि पावै सोई
जप तप योग करै अन दाना * सतसंगति बिन लघुफलजाना
सतसंगति क्षणमात्रहु होई * तेहिसम तुलै न तपलखकोई

सुनो एक इतिहास पुरानी * जाते परै महातम जानी
मुनि वशिष्ठ यकबार सुभाये * गाधिसुवन के आश्रम आये
विश्वामित्र बहुत सनमाना * रहे तहां कछु दिन सुखमाना
चलन लगे जब विधिसुत गेहा * कीन विचार गाधिसुत येहा
पूजा इन्हें दीजिये काहा * जेहिते सुखी जाग ऋषिनाहा
लाख बरष जो तप मैं साधा * तेहिमां मुनिहि देउँ अब आधा
करि सङ्कल्प दीन ऋषिराई * पाइ वशिष्ठ चले हरषाई

दो० यक दिन विश्वामित्रहु, गे वशिष्ठ के भौन।
तिन दीन्ह्यो सतसंग फल, उभयघरी कर जौन ॥

गाधिसुवन मुनि कह्यो रिसाई * मैं तोहिं तप दीन्ह्यों अधिकाई
तेहिसमयुगलघरी किमिकीन्हो * न्यावचुकावन दोउचलिदीन्हो
आये शम्भु तीर कैलासा * तिन पठयो ब्रह्मा के पासा
तब दोउ ऋषी ब्रह्म पहँ गयऊ * सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
चतुरानन अस कहा विचारी * जाहु दोउ हरि पास सिधारी
सुनिविधिवचन दोउ मुनिनाथा * जाइ विष्णुपद नायो माथा
गाधिसुवन बोले हरषाई * नाथ न्याव इक देहु चुकाई
हमरे भवन गवन इन कीन्हा * जसकछु बना सो आदरदीन्हा
बिदा होत तप सहस पचासा * इन दीन्ह्यों मैं सहित हुलासा
हौं चलिआयो इन के धामा * कछुक दिवस कीन्ह्यों बिश्रामा

दो० चारि घरी सतसङ्ग इन, कीन्ह्यो स्वप्न सँस्कार।
तेहिमाते युगदण्ड मोहि, दीन्ह्यों चलतीबार ॥

दुइ मा तें का है अधिकाई * यहँ न्यार मन देउ चुकाई
सुनिमुनिवचन विष्णुअनुमाना * ऋषिसतसग अगाध न जाना
जो मैं बहुविधि कहब बुझाई * तबहुँ न इनकी संशय जाई

असमनसमुझि कह्यो श्रीनाहू * दुइ मा एक शेषपहँ जाहू
तिन कर लावहु इहा लिवाई * पुनि प्रभुसहित चले हरषाई
जाइ शेषपहँ भाग्यो हाला * कह अनन्त जो तुम यहिकाला
धरेहु धरणि दुइमा ते कोई * देउँ चुकाइ न्याव मैं सोई
कहऋषिलाखवरष तपकीन्ह्यो * तेहिमा अर्ध बशिष्ठे दीन्ह्यो
आधा रहा हमारे पाहीं * तेहि तप तेज मही रहिजाहीं
धरेउ शीश शेष शिर टाला * सधी न दिति ऋषिभये विहाला
तब विधिते हरि कह्यो बुझाई * सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई
चारि घरी स्वप्ने के माहीं * साधुसग कीन्ह्यों बहु नाहीं
दो० उभयघरीऋषिकादिन्ह्यों, रही उभय मम पास।
ताके फल बल भूमि यह घटपर करौ प्रकास॥
सुनिसिरखींचिलीन्ह अहिराऊ * महि रहिगे सतसग प्रभाऊ
सगप्रताप देखि अधिकाई * गाधिसुवन तब रहे लजाई
योग तपस्या त्यागन कीन्ह्यो * सतसगति मैं तन मन दीन्ह्यो
अस सतसग अहे ऋषिराई * और सुनो अब कहौं बुझाई
द्विज इक रहा बडा अविचारी * तस्करकर्म करे सहि गारी
सो इक दिवस नर्मदा पासा * गयो तहा निवसैं हरिदासा
तिनकी चोरी करिवे हेता * बसतभयो निशि सन्तनिकेता
कथा भई कछु बार तहाहीं * अनमन बैठिरहा तिन पाहीं
जब रजनी बीती युगयामा * तब हरिजन कीन्हेनि विश्रामा
सोवत जानि विप्र अरु गाई * चोरी करन लाग हरषाई
लखियमराजक्रोध अति कीन्हा * बोलि दूत अस भाषे तीन्हा
यहि भक्तनकी कीन्हेसि चोरी * लावहु बेगि नरक महँ बोरी
वह द्विज है सन्तन के ठाई * ताहि लेन कौनी विधि जाई

कह्यो धर्म जौनी विधि पावो * तौनी भांति यहां तक लावो
सुनत दूत यक तबक भयऊ * हरिजनधाम तहां चलि गयऊ
मन्दिर निकट रहा लगिवाटा * निकसा द्विजचोरय भरि काटा
जलपत जानि सन्त सब धाये * चरणोदक तुलसी मुख नाये
राम राम कहु राम बखाना * दूतनं माहिं मुक्त भे प्राना
मुद्गर मारि डारि गरफासा * दूत ले आये यम के पासा
लखि द्विजधर्म तेल औटायो * बरन कराह माझ डरवायो
भयो सनेह सुरभिसम ताहीं * करै अनन्द परा तेहि माहीं
बहुरि बरत खम्भा भेटवायो * शीतल भा गोला औटायो
पिघल सीसभा धर्मा समाना * अमियनागर्भ शलिलकुशाना
लोहाकाट सुमन सम भयऊ * तब तो डारि नरक महँ दयऊ
विष्टा पीब कीट सब भागा * धर्मराज लखि अचरज लागा
करत विचार मनहिमन लाये * ताहि समय ऋषि नारद आये
बोले वैवस्वत कर जोरे * नाथ एक बडि सशय मोरे
यह पापी अति चोर लबारी * ताहि दीन हम सासति भारी
याके दुख कछु भयो न राई * सो कारण मुनि जानि न जाई
दो० धर्मराज के बचन सुनि, बोले ऋषि हरषाइ ।
८ याहि मँगायो कहा ते, सो मोहि देहु बताइ ॥
तब रविसुत सब हाल बखाना * जेहिविधि सन्तन दिग ते आना
सुनि यमबचन कहा ऋषिराजू * बड अपराध कीन तुम आजू
सन्तमहातम तुम नहिं जाना * जिन्हैं बखानत बेद पुराना
जगमहँ नाहिं होइ सन्तसमाना * जिनवश सदा रहत भगवाना
दासी शिशु मैं पाइ उछिष्टा * विधिसुतभयो ऋषिनमहँ शिष्टा
बूझेहु हरि ते सग प्रभावा * तिन मोहि जलचरपास पठावा

देखन मरउ धरेउ वपु आना * पुनि शुकगई पठयो भगवाना
सोऊ निज शरीर तजि दयऊ * तब नृपसुनते बूभन भयऊ
देखत आवा दिव्य विमाना * तेहि चढ़ि बोला सुवन सुजाना

दो० प्रथमै मैं जलचर रह्यो, जहां दरश तुम दीन।
तेहि फल पायो कीरतनु, तहौं कृपा तुम कीन॥
शुकतनु तजि नृपसुत भयों, पुनि भे दरश तुम्हार।
अब नभजात विमान चढ़ि, इतना लखा हमार॥

सो० सम्भाषण अरुपर्स, करै धरै जो नेय उर।
तस्यसुकृतफलमर्म, कहिनसकतश्रुति सहसमुख॥

सुनि मोरे मन आनद दाता * सन्तप्रभाव अमित लखि पाता
रहे विप्र यह निकट पाता * तुम अहि वनि का री ग आसा
सो मुनि राम गम जब देग * काहे न आवे दिन तोहि वेग
अबन कहा मानि मम लाज * गाको पंड धाम हरि दीजे
अस शौनक मतंग प्रभाता * वड़ पार्यो परधाम सिधाना
नारदपुराण कर ।हाता * वह मै तुम ते कीन प्रमाना
नलिनी दलगत जलला जैसे * नर जीवन है चपल तैसे
क्षण ही मज्जन मगान करई * तेहि नौका चढ़ि भवनिधि तरई
चहुंयुगचहुंश्रुति रहा लोई * विन सतमगति तरै न कोई

हरिगीतिकाछन्द॥

सतसंग विन नहि तरत भवनिधि दान व्रत वर यहु करै।
अस जानि जे नर चतुर करि सतसग हरि नाम रै॥
जग आइ नर तनु पाइ सपनेहु साधु के ढिग ना गयो।
तेहि जानिये पशुसरिस मानुष देह सब तो का भयो॥

दो० साधुन के सतसंग की, महिमा अगम अपार।
बरणी जन रघुनाथ कछु, निजमति के अनुसार॥

इति श्रीविश्रामसागरभवमनश्रागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसत्सङ्गमाहात्म्यवर्णनानाम
एकोनचत्वारिंशोऽध्याय॥ ३९॥

दो० सुमिरि रामप्रिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
कहौं नवम अस्कन्ध मन, कछु ब्रह्माण्ड बखानि॥

बहुरि सुत बोले मृदु बानी * सुनो कथा कवि कहा बखानी
एक बार गणराज प्रवीना * आपन दूत बोलि सब लीना
कह्यो कि मृत्युलोक के माहीं * तुम्हरा कोउ दुखद्वे नाहीं
एके बात यह जाने रहियो * साधुन का कर कबहुँ न गहियो
ये तो हैं परमेश्वर प्यारे * रहें गम कर नाना धारे
बन्दत सबही पञ्च मनाहीं * स्वर्ग रसातल भूतल माहीं
स्वर्गदेव अहितन अनुसरहीं * मनुज पूज्य महि निजहित करहीं
तहि जो तुमहु करिहु पापा * तुरत दृष्टि ते शीघ्र नशापा
जो मम आगाने चलो भलाई * ता न कहायो सनहि जाई
साधु दुखद ते बैकुण्ठ पावैं * तब अस दुखन नाश ह्वै जावैं
जिन जिन बैर भक्त सो ठाना * पापनि दुख बहु सुनो प्रमाना

दो० हिरण्याकुश प्रह्लाद ते, दुर्योधन पञ्चालि।
कंस उग्र रावण अनुज, भे सुकण्ठ अरु बालि॥

दुर्वासा ऋषि बहु दुख पावा * अम्बरीष ते बैर बढ़ायो
नृप नृगने गिरगिट जग जाना * श्वपच भक्तसो मरयो माना
धृष्टबुद्धि ना आपुइ मारा * चन्द्रहास का मरन विचारा
सुरति सुधन्वा ते , रास ठानी * शंखलिखित दुखआवे भे हानी

सुनत दूत बोले कर जोरी * कहो नाथ विस्तारि बहोरी
केहि विधि दुर्वासा गे जारे * धृष्टबुद्धि गे केहि विधि मारे
नृग गिरगिट भे केहिविधि आई * पृथक पृथक सब कहो बुझाई
कह रवितनय कहौं मति यथा * प्रथमैं अम्बरीष की कथा
राजा अम्बरीष बड़ साधु * तिन के उरमें प्रेम अगाधु
सब मन कृष्ण चरण में राखे * मुख ते रामकथा नित भाखे
करसों हरिमन्दिर बर भारे * नयनन ते प्रभु रूप निहारे
शिरसि श्यामपद करत प्रणामा * रसने प्रिय प्रसाद प्रभुनामा
श्रवणनि सुने चरित हरि केरे * अपरकाज के जात न नेरे
कहँलगि कहौं चरित मैं तिनके * व्यजनाहरिहि डोलायो जिनके
तिन के भवन गये दुर्वासा * ता दिन व्रत नृप रहे उपासा
ऋषिहि देखि भूपति सुखपायो * दीन निमन्त्रण सबै टिकायो
रैनि जागरन करि उत्साहू * होत बिहान उठे नरनाहू
प्रातक्रिया करि आइ महीशा * जान्यो दुवादशी पल तीशा
बूझा गुरै बोले का कीजै * पारन हम अब केहिविधि लीजै
मुनि की पूजा है युगयामा * होत विरोध किहे दोउ कामा
भृगुमुनि कहा शिला हरिधोई * करहु पान कछु दोष न होई

दो० गुरु की आज्ञा पाइकै, नृप चरणोदक लीन ।
दुरवासाऋषि जानि तहँ, आइ क्रोध अति कीन ॥

रे नृप हमैं निमन्त्रण दीन्हे * तोहीं प्रथम पान जल कीन्हे
क्रोध अगिनि तें तवकुल जेता * करउ भस्म शठ तोहिं समेता
असकहि पटक्यो जटाबिशाला * प्रकटी तुरत अगिनिकी ज्वाला
सन्मुख चली भूप के जबहीं * नरपति रामहिं सुमिरेउ तबहीं
चल्यो सुदर्शन चक्र कराला * अगिनिखाकरिमुनि तनचाला

भागे ऋषि गे अज शिर नाई * तेहि क्षण बृहद ब्रह्मपुर छाई
कीन्ह विनय ब्रह्मा बरियाई * हरिद्रोही को सकै बचाई
तब गो ऋषि शङ्कर के पासा * देखि शम्भु अस वचन प्रकाशा
पढ्यो पुराण सहस सब वेदा * जान्यो नाहि भक्तन कर भेदा
महाप्रलय महँ बचत न कोई * तबहु न नाश भक्त कर होई
अचल धाम साकेत बिहारी * निवसत तहां दिव्य वपुधारी

मार्कण्डेयपुराणे सदाशिववाक्यं दुर्वाससं प्रति ।

श्लोक ॥

महति निलये ब्रह्मन् ब्रह्माण्डन्तु जलप्लुतः ॥
न तत्र नाशो भक्तानां नर्येषां च विशिष्यते ॥ १ ॥

तातें जाहु यहाते भागी * नाहिन जरी नगर मम आगी
तब बैकुण्ठ गये दुर्वासा * व्याकुल गात वचन परकासा
हे ब्रह्मण्य देव आरतहर * शरणपाल पूरण करुणाकर
हाय, हाय प्रभु लेहु बचाई * चक्र सुदर्शन देहि जराई
सुनु द्विज कहा रमापति टेरी * म्वहि नहि शक्ति बचावनकेरी
है यहि विधि अगणितगुण मेरे * भक्तवत्सलता के सब चेरे
यथा तमारि तेज के पासा * दीपोगण नहिं करत प्रकासा
भक्तन पराधीन हौं कैसे * पक्षी बन्यो डोरि महं जैसे
साधुन मेरो उर अस कहेऊ * निन तजि सपद्द जात न रहेऊ
दारागार पुत्र अपताना * तन धन मोह मानि कल्याना
सकल त्यागि मम शरणै आवैं * ते हम ते कैसे तजि जावैं
प्राणते अधिक भक्त प्रिय मोहीं * दुर्वासा समुझावों तोहीं
तिनने बैर कीन्ह तुम जाई * भागो यहां न रहे भलाई
होत कसूर मोर कछु भाई * तो मम कहे माफ ह्वै जाई

सदा दास मम की रखवारी * फिरहि चक्र को सकै उवारी
ताते जो निज चहौ उवारा * तो फिरि जाउ भूप दरबारा
बड़े दयालु दीन दुखहारी * देखन तुम कहँ लैहै उवारी
ऐसे वचन कहे जगदीशा * सुनिऋषिचले काटिजनशीशा
अम्बरीष ढिग पहुँचे जाई * भे शीतल नृप लीन बचाई
पद पखारि भोजन करवाये * तिन पाछे उठि आपहु पाये
दो० लज्जित ह्वै ऋषिराज तब, कीन्हों तप बन जाइ।
भावे सो वर मागिये, कह्यो रमापति आइ ॥
दुरवासा बोले विहँसि, यह वर दीजै मोहि।
दशसहस्र अंबरीष हीं, जन्म वरनकहँ होहि ॥
सो० सुनि बोले भगवान, अम्बरीष मम भक्त है।
सो न धरी तनु आन, देन कह्या सो लेहु तुम ॥
जन्म हजार आन के जोई * मम अवतार एकसम होई
ताते अम्बरीष हित लागे * दश अवतार धरब हम आगे
सहजस्वभाव प्रणत अनुरागी * नरतनु धरेउ दासहित लागी
अस प्रभु प्रणतपाल को आही * भजिवयोग्य भजिय जगजाही
अपर देव आपे वर देवें * आपे मरण मागि मुद लेवें
रामभक्ति बिन केवल ज्ञाना * सोउ निरस श्रमसाधन नाना
जैसे विना पुरुष की नारी * केहिते दुख निज कहै विचारी
पदवैलन्द परे जो पाऊ * तो ताको परलोक न ठाऊ
सौभागिनी करै क्रम खोटा * तऊ ताहि बड़ि पतिकी ओटा
गोपी गोप पाण्डु सुत पांचा * कौन कुकर्म करत तिन याचा
कृष्ण कृपा सब ठा जय पाई * यश ऋषभ निज देह जराई
दो० भगवतगीता में कह्यो, अर्जुन ते गोहराय।

भक्ति योग छीजै नहीं, सबदिन बर्धत जाय ॥
अष्ट भये पन्थी सरिस, कौन पन्थ में वास ।
भोरभयेमुनि चलिमिलयो, तिमिसाको ममदास ॥
दैवी माया गुणमयी, महा दुरत्यय पास ।
मम आश्रय है अघमसो, बिनप्रयास तरिजात ॥

इति श्रीविश्रामसागरअम्बरीषकथावर्णनानाम
चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४० ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं जैमिनिकी कथा, कछुनृपनीति बखानि ॥

पुनि यमराज कह्यो मृदुबानी * अम्बरीष की कथा बखानी
अब सुनु दूसरि कथा सुनाऊ * भूप एक केरलपति नाऊ
तिन के तनय भये चन्द्रहासू * मूलनक्षत्र जन्म भा तासू
कछुदिनबादिविपति आनजागी * शशिहासे धाई लयभागी
कुन्तलपुर कुन्तलय नरेशा * जेहि नृप राज कर देइँ हमेशा
तस्य देवान धृष्टबुधि नामा * रही आइ धाई तेहि धामा
करि किङ्कर पालत सुत सोई * तिनकर भेद न जानत कोई
गहि बिधि भये बरष घटकेरे * बुद्धिमान अतिरूप घनेरे
तेहि यकादिन ब्रह्मभोज प्रकासा * जुरे अपर तँग शशिहासा
विषया नाम सुता निज लीन्हे * बैठ देवान विप्रद्विज चीन्हे
यहि कन्या का याही बालक * बरी निशाप कह्यो उद्दालक
अहमुतापति यहि बिधि चाही * दुष्ट बोलि बन पठयो ताही
जाइ दूरन्तर बोले सोई * लेउ धाइ जो तुम्हरे होई
पिता मात पाये इत आयो * तिन हमका बध हेत पठायो
है यक बोली सुखद हमारी * मनिलीजे पुनि डारो मारी

रहे गगटकीसुन मुस वीचा * पूछ्यो मानस शिरकरि नीचा
दो० तदाकारह्वै हतन हित, दई नयन की सैन।
लखिजल्लादनकेकठिन, भई दया उर ऐन॥
हरिप्रेरित रघुनाथथल, बोले आपुस माहि।
ऐसो सुन्दर बाल यह बधन योग्य है नाहि॥
छठी आगुरी कर रहै, काटिलिहिनि सोइ चीन्ह।
शशिहासे बनछाडिकै, जाइ देवानै दीन्ह॥
सो० छाहँ किहे खगभाल, चहुँ दिशि बैठे घेरि मृग।
आयो इक महिपाल, नाम कुलिन्द अपुत्र सोइ॥
चन्द्रहास लग्नि लीन उठाई * प्रमुदित मनहुं रङ्क निधि पाई
गा लै भवन कीन उतसाहा * दिहेसि दान जाको जस चाहा
निजसुतसमुझि पढावतभयऊ * पुनि नृप राजतिलक सो दयऊ
लागे करन राज हरषाई * पालहिं प्रजहि सुखी सब भाई
मन क्रम करे भक्ति हरि केरी * सन्त समागम प्रीति घनेरी
गृह गृह प्रति हरिगुणगथा होई * रामनाम सुमिरन सब कोई
जो कोइ भक्त भवन चलिआवै * करि प्रणाम आसन बैठावै
षोडश भांति पूजि मनमानै * हरि हर जन में भेद न आनै
एक बार निज कटक बनाई * सुदिन साधि नृप चढा बजाई
जहं तहं परी मारु नृप जीते * कोइ कोइ आइ मिले भयभीते
सब सों राम भक्ति कबुलाई * करन कहै तब देवै जाई
यहि प्रकार नृप जीति बसाये * पुनि निजपुर चंदनावति आये
पिते पूछि अरु मानि बडाई * नृप कुन्तल पै चौथि पठाई
पहुँचे भृत्य भूप दरबारा * दीन देवान खजाने द्वारा
सो० उतरे ताही धाम, हरिबासर तेहि दिन रहै।

राम राम सियराम, कहिनिशि कीन्हो वासखब ॥

भोर भये जागे सब प्राणी * आइ देवान कही कल्याणी
काकुलिन्द राजा तब पायो * हाइ हाइ करि राति बितायो
बोले सेवक राजै कोई * मरा कहै मरिगा सोइ होई
हमरे नृप कर सुत अस भयऊ * सब भूपनते कर निज लयऊ
इन्हैं जानि जन चौथि पठाई * सुनि देवान मन सशय आई
सुत कुलिन्द के रहै न कोई * भयो कबै सुनि बोले सोई
भूप शिकार गयो यक बारा * मिल्यो तहा यक सुभग कुमारा
आनि भवन सुतमानि पढ़ायो * दीनराज्य निन भक्ति बढ़ायो
सुनि देवान बिस्मय उपरेजा * सोइ न होइ जेहि मारन भेजा
तुरतै गयो महीपति पासा * हाथ जोरि अस वचन प्रकासा
नाथ सुता मम भई सयानी * नृपसुत यक टहरत बर जानी
जो राउर की आज्ञा पावों * मह देरि निज नगनन आवों

सो० सुनि नृप आयसु दीन, तुरत भवन निज आयहू ।
बोलि मदनसुत लीन, कहेसि जाव बरखोजहित ॥

ह्वै तयार चन्दनावति गयऊ * चन्द्रहास लखि आदर दयऊ
धृष्टबुद्धि सोइ बालक देखा * बहुरि बिचारेउ मरण विशेखा
दुखद दुष्ट अहि मत्यधीना * रालवशहिन बिधि कछु न कीना
ऊपर हित अन्तर कुटिलाई * बोला बचन निकट बैठाई
खरच भूरि तुम्हरे लघु लाभा * बहुरि चहन मोहिं देनै काभा
जो इहवा आवे मम वस्ता * तो करिदेहु तुम्ह मे सस्ता
कह चन्द्रहास कौन बिधि आवें * तुम बिन वहा न कोऊ पावै
तातें तुमही जाउ सिधाई * चीन्हत वहा तुम्हे मम भाई

चामरछन्द ॥

और एक काम धाम लोग याग यों कही।
जात चन्द्रहास को पठाय दीजियो सही॥
देखिबे कि लालसा देखाइ देइ आइये।
कन्दही मदन तेजु वेगि मांगि लाइये॥

असकहि खलरक चीठी कीन्हों * तामे यह श्लोक लिखि दीन्हों

श्लोक ॥

विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मदन शत्रवे।
कार्याकार्यं न कर्तव्यं कर्तव्य किल मे प्रियम् ॥१॥

लै खत चन्द्रहास चलि भयऊ * मारत हय कुन्तलपुर गयऊ
भूप वाटिका देखि सोहाई * उतरि नहान्यो सर सुख पाई
हरिपूजन करि बसन बिछावा * बांधि अश्व सोये तेहि ठावा
ताही समय महीपकुमारी * सखिन सहित आई फुलवारी
चम्पक मालिनि नाम सुधन्या * विषया नाम देवान कि कन्या
चन्द्रहास को देखि लोभानी * पाग पत्र खोल्यो निजपानी
बांचि पितहि खीझी मनमाहीं * मारन योग कुंवर ये नाहीं
काजरु पांछ दगन ते लीन्हो * विष जहँतह विषयालिखिदीन्हो
शम्भु शिवा बारे ते सेई * होहु प्रसन्न मिलै वर येई
छबिमय मूरति हृदय बसाई * नृपजा सहित भवन निज आई
चन्द्रहास जागे लखि यारा * आये क्षिप्र देवान दुवारा
भेंटि मदन कर पाती दीन्ही * बाचि वेगि बड़ आदर कीन्ही
तुरत पुरोहित लीन्ह बोलाई * दई ब्याहि विषया सुत पाई
हरषित युवतिन मङ्गल गावें * विप्रन दान विविध विधि पावें
बाजैं बाजन राग मिलावैं * नाचैं नटी चटपटी लावैं

दूसरे दिवस देवान सिधावा * बेगवन्त निजपुर का आवा
भाटन कीरति-विरचि सुनाऊ * श्रवण सुनत जनु लागत घाऊ
भवन जाय सुत दूलह देख्यो * राग रङ्ग बहु भाति परेख्यो
जरे अङ्ग सुत बोले रिसाना * किहे कहा जस तव परवाना
बांचि पत्र शिर पीटन लागा * लिख्यो कहा मैं मन्द अभागा
पुनि मारन हित रचेसि उपावा * सुना अनाथ रहे मोहिं भावा
चन्द्रहास यद्यपि पग परेऊ * तद्यपि दुष्ट दया नहिं करेऊ
दो० दुष्ट न छांड़त दुष्टता, कैसो होय अधीन ।
ज्यों जल कोमल में चलै, जोंक बक्र प्रतिलीन ॥
पुनि नृप दरबार पठायो * आपु उभय जल्लाद बुलायो
बोला जाउ शक्तिमठ दोऊ * डारेउ मारि जो आवै कोऊ
तब शठ चन्द्रहास ते बोला * आवहु पूजि देवि कुल मोला
सुनत चले करतल धरि थारा * तेही समय कुन्तले भुवारा
बोला गुरु ते शिश नवाई * होइ सुगति जेहि कहो उपाई
कहगालवऋषिसिखहुनिर्लाजै * राजसुता चन्द्रहासै दीजै
सब सों नेह गेह तजि राई * सीतापति सुमिरो वन जाई
सुनिनृप कहा अबै कोउ जावै * चन्द्रहास मम पास ले आवै
मदन विचारि तुरत उठि धायो * पूजन जात पन्थ में पायो
बोला चलो भूप बोलवाया * देइ राज्य काज निज आया
शिष्याछन्द॥देवी पूजे हौं जावों । राजापै कैसे आवों ॥
थारी सोको लावोजू । राजासीरा जावो जू ॥
देवी पूजै मदन सिधाये * चन्द्रहास राजा ढिग आये
देखत ब्याहि सुता निज दयऊ * राजतिलक करि वनको गयऊ
इहां मदन गे शक्तिनिकेता * दुष्टन मारा खड्ग सचेता

धर ते मुण्ड विलग करिदीन्हे * अस फल खलसंगति के चीन्हे
दो० दुष्टसंगती जो करै, ताहू को दुख होय।
देह जीव खोरियाघरी, शिर रसना मति जोय॥
देखि हाल काहू कही, धृष्टबुद्धि सो जाय।
आयनिरखिसुतशिलाशिर, पटकिमरा कहिहाय॥
जो जनका अनभल तकै, सोइ जाय शठ खीश।
ज्यों रजते मारै रबिहि, उलटिपरै निजशीश॥
चन्द्रहास सुनि यह सब हाला * निरवैरी सम सन्त कृपाला
आयो चलि देवी के धामा * कीन शांक लखि नृत्य प्रणामा
बोली ये दोउ शत्रु तुम्हारे * मरी क्रोध करि आज सँहारे
मानहु वर जो तुम्हैं सोहाई * देहु मातु फिरि इन्है जियाई
छप्पयछन्द॥
तस्कर के कुल धर्म दुष्ट के कुल गम खाना।
किरपिन के कुल दान मूढ़ के कुल विज्ञाना॥
कसबी के कुल लाज शान्त कुल नर कामिनि के।
व्यसनी के कुल द्रव्य धाम कुल खल भामिनिके॥
हिंसक के कुल दया दिल कपटी के कुल मित्र सग।
कहै रघुनाथ सनाथ इमि हरिजन के कुल शत्रु जग॥
दो० दुर्जन तजै न दुष्टता, सज्जन तजै न हेत।
कज्जल तजै न श्यामता, मोती तजै न श्वेत॥
सुनि जियाय देवी दोउ दीन्हों * सन्त सताये कर फल चीन्हों
कीन राज जल पङ्कज नाईं * दीनि भक्ति भुव मे फैलाई
है न जनै नृप दवजल जारै * यथा भूप तस प्रजा प्रचारै
जो यह कथा सुनै वा कहई * धन वृधि होय हर्ष मे रहई

फल जैमिनि में अनुविधि राखा * याते हौं संक्षेपै भाखा
देखो हरिजन ते करि द्रोहा * आपुइ दुख पायो बश मोहा
असिहरिभक्तिमुखदइफलभागी * तनु धरि करै सोइ बड़ भागी
दो० यस्य न विद्या दान तप, जप न शील गुण धर्म ।
ते मनुष्य महिभार हित, प्रकटे नाहक ब्रह्म ॥
इति श्रीविश्रामसागरेश्रवणतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतचन्द्रहासआख्यानवर्णनोनामएक-
चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं सुनहु अर्जुन, कछु धर्मोत्तर जानि ॥
पुनि रविसुत दूतन ते कहेऊ * चन्द्रहास गण सुनि तुम लहेऊ
और सुनौ यक भयो भुवारा * नाम निरग जानत संसारा
चक्रवर्ती नृप जानि निदाना * ठानै धर्म अनेक विधाना
हरि विषाण खुर रजत मढ़ाई * जलजसूम गुहि बसन ओढ़ाई
सुरभी सहस विप्र कहँ देवै * तेहि पाछे जल अर्थहिं सेवै
तेहिपुर श्वपच भक्तयक रहई * देवक नाम ताहि सब कहई
सुजन जानि हरि दाया कीन्ही * कामधेनु तेहि का प्रभु दीन्ही
पुरवासी विप्रन लखि पाई * आइ भूप ते बात चलाई
भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ महाराज है डोमके एक गाई। नहीं दूसरी तासमा भू लखाई॥ सुनी स्वर्गके माहिं है धेनु ऐसी । न जानी श्वपचने लही भाँति कैसी ॥ भलीभाँति ते जो इसे दान देवे । सखे कोटिहूते परे पुण्य लेवै ॥ सो वाते गऊ आनि विप्राहि दीजै । अमित्पुण्यको फल इसी थोर लीजै ॥ महीपाल सुन्तै हिये लोभ कीन्हो । कही

मोल लावो अभी दाम दीन्हो ॥ गये विप्र बोले विकल धेनु तेरी । जु बेंचौ कहा है नहीं गाय मेरी ॥ प्रभूकी अहै भोग पथ को लगावो । बचे जोनि जूठन्मह्‌ ताहि पावों ॥ भयो क्रोध विप्रै गयो भूप पारी । कह्यो नाथ शूपचके है मान भारी ॥ गऊ को दुहै क्षीर घृत आपु खावै । तुम्हें लेत जानी प्रभू की बतावै ॥ पशू शूद्र नारी शठं ढोल यावत । विना दण्ड दीन्हें नहीं ठीक आवत ॥

दो० कह महीप विप्रहु सुनो, शूपच है हरिदास ।
ताहि सतावै सोइ जो, चह निरय को वास ॥

ताते हौं न सतावन साधू * पुण्य करत होई अपराधू
बोले विप्र बहुरि हरपाला * स्वारथरत अधर्म की चाला
सुनहु भूप यह है चण्डाला * कहा भयो पहिरे गलमाला
श्वान खाल गङ्गाजल होई * ताहि पवित्र कहैं नहिं कोई
क्षीर धरे मद्भाजन माहीं * होन कबहुँ सो पावन नाहीं
तैसे भक्ति शूद्र की राजा * ताहि सताये कछु न अकाजा
मानहु पितर विप्र सुर गाई * होत महाफल जिन सेवकाई
यहिविधि द्विजन कहा समुझाई * सुनि नृपके मन दुर्मति आई
बुद्धिमान कैसा होइ कोई * कहे सुने ते मति भ्रम होई
तब नृप सेवक ते अस भाषा * लावहु छोरि धेनु करि माषा
आयसु पाइ तुरत जन धाये * बरबस सुरभि भक्त की लाये
भक्त द्रोह लाख धीपति आपू * द्विज मुख नृपै देवायन शापू
निज अपराध प्रभु जात बचाई * भक्त दोष सो नहिं सहिजाई
सोइ सुरभी, अरु गऊ हजारा * दई विप्र कहँ एकै बारा

मुदित महीसुर ल्यायो धामा * फिरि आई सुरभी नेहि ठामा
दूजे दिन नृप दान जो कीन्ह्यो * सहस संग ताहू को दीन्ह्यो
हाँकि विप्र निजभवन सिधावा * हेरत फिरत प्रथम जेहि पावा
बोला प्रथम मोरि यह गाई * दूसर कहै आज मैं पाई
झगरत गे ये दोउ नृप पामा * क्रोधित ह्वै अस वचन प्रकासा
रे नृप तू अति है अन्याई * धेनु दिहेसि फिरि लिहेसि फिराई
बोले भूप क्रोध जनि कीजे * सहस धेनु यहि बदले लीजे
बोला प्रथम विप्र सुनु राई * मैं तो लेब यहै निज गाई
अपर देउ तुम कोटि समाजा * तदपि होइ नहिं यहिसम राजा
दूसर कह्यो मोहु का कहई * देकै दान लीन अब चहई
दुविधा परि नृप शोच बढ़ावा * मूड हलावत वचन न आवा
शीश तोर गिरिगिट सम कापा * गिरिगिट होउ हमारे शापा
कह नृप वचन अमोघ तुम्हारा * होई किमि उद्धार हमारा
करुणा करि सो देउ बताई * सुनि विनती बोले द्विजराई
द्वापर युग यदुबंश मँझारा * कृष्णचन्द्र लैहैं अवतारा
सुनु नृप तिनके चरण सनेहा * छूटी तब गिरिगिट की देहा
असकहिद्विज निजमन्दिरगयऊ * कालपाइ यमगण गहि लयऊ
लैगे दूत धर्म दरबारा * पाप पुण्य का कीन विचारा
पुण्य ते पाप भयो अधिकाई * प्रथमै कहा भुगतिहौ राई
बोले भूप वहुत जो होई * प्रथमैं मोहि भोगावो सोई
इतना कहत न लागी बारा * गिरिगिटका तनु धर्यो भुवारा
द्वारावती निकट इक कूपा * लाग्यो रहन तहां नरभूपा
दिव्य बरषशत जब चलिगयऊ * तब अवतार कृष्णकर भयऊ
बालचरित कर कंसै मारी * बसे आइ द्वारका मँझारी

तहँ इक दिन प्रभु यदुन समेता * आये वन शिकार के हेता
लागि तृषा सब भे दुखारी * हूढ़हु जल अस कह्यो मुरारी
खोज करत पावा सोइ कूपा * किरिकिल देह धरे जहँ भूपा
लागे सब काढ़न यदुवीरा * तबहुँ न निकसै अधम शरीरा
विप्रशाप अरु हरिजन कोपा * निकसै किमि पापन ते तोपा
यदुन आइ तब हरिते कहेऊ * सुनि आये जहँ नृग नृप रहेऊ
वाम चरण असपरस्यो जबहीं * दिव्य स्वरूप भयो नृप तबहीं
देखि चरित बोले यदुराई * को तुम अहौ कहौ सो गाई
कह नृप मैं हौं निरग नरेशा * जाकर दान विदित सब देशा
महिरजजलकणनभ उडुजाना * गनिन जातजिमिनिमिममदाना
कह हरि कीन्ह्यो दान अपारा * कौन हेतु गिरिगिट तनु धारा
तब नृप सब वृत्तान्त सुनावा * जेहिकारण गिरिगिट तनु पावा
दो० दान विभूषण लोक में, दान स्वर्ग सोपान ।
दान दलै दुख दोष नहि, दानसरिस हितुआन ॥
सुनि बोले गिरिधर करि छोहा * अस जनि कह्यो भक्त ते द्रोहा
मम जन मोहि प्राण ते प्यारे * सदा रहत जे शरण हमारे
करहुँ सदा मैं तिन की रच्छा * सग संग फिरौं यथा गोवच्छा
ममजनादिशि तिरछे लख कोऊ * लेहुँ निकारि तासु दृग दोऊ
जो मम जनहि चलावै हाथा * डारौं काटि तासु कर माथा
जो मम जन ते वैर बढ़ावै * देहुँ मिटाइ रहन नहिं पावै
पाप मास सम्बत त्रै पाचा * मध्य विनाश बचन मम साचा
तेहि पाछे यमदुख चौरासी * खर कूकर शूकर तनु पासी
जो मम जन की सेवा करई * मानहु मम सेवा अनुसरई
यद्यपि हौं स्वतन्त्र सब भाती * तदपि रहत जनवश दिनराती

भक्त हमारे बान्धव प्यारे * हम भक्तन के बन्धु पियारे
मेरे भक्त गुरू हैं मेरे * हां गुरु उन कर मैं मम चेरे
जहँ ममभक्त सकल सुख तहवा * गङ्गादिक तीरथ सब जहँवा
मेरे भक्त लगत जेहि प्यारे * ते वल्लभ हैं परम हमारे
विषयिउ भक्त होइ जो कोई * अहै पवित्र तबहुँ जन सोई
जिमिमाशिशुहि सँवारिस भीती * देत डिठौना तिमि मम रीती
भक्त दोष जो मन में लावै * सो नर नीच निरय दुख पावै
कीट पतङ्ग आदि जो कोई * मुक्तिक्षेत्र सब की गति होई
वैष्णव द्रोही सुगति न पावै * आगम शास्त्र वचन अस गावै

श्लोक ॥

मुक्ति कीटपतङ्गानां सर्वेषामिह देहिनाम् ।
मुक्तिक्षेत्रमिदं प्राप्य वैष्णवे द्वेषिणां विना ॥ १ ॥

भक्तन की निन्दा जो करई * सो नर शूकर कोल लखि परई
निन्दा विष्ठा उदर न भरई * साधुन को पावन नित करई
जो वैष्णव की करै बड़ाई * निश्चय सो भवनिधि तरिजाई
वैष्णव परम धर्ममय जानो * परम धर्ममय वैष्णव मानो
वैष्णव परमाराधन हेरे * परम गुरु वैष्णव सब केरे
वैष्णव सगति करै जो भोजन * विमल होइ कलिमलते सो जन
वैष्णव कर चरणामृत पावै * कोटि जन्मकर पाप नशावै
सन्त उछिष्ट सहित जो खाहीं * ब्रह्महत्यादि पाप नशि जाहीं
श्वपच होइ मम भक्तिहि करई * सोइ उत्तम सोइ भवनिधि तरई
ताको दानै तासों लीजै * मोहि सम ताकी पूजन कीजै
भक्ति हीन जो होइ कुलीना * पण्डित जप तप ज्ञान प्रवीना
वाके सब गुण जानहु ऐसे * मृतक देह के मण्डन जैसे

दो० विचरत सन्त जो अवनिपर, तीरथ पावन हेत।
देखि डरें जो जगत को, तिन्हैं परमसुख देत॥
सो० संसृतिसिन्धु अपार, तामधि बूड़त जीव सब।
तिन्हैं उतारनहार बोहित सन्त स्वरूप मम॥
मेरो संग सन्त को जानो * सन्त संग मेरो करि मानो
हे नृप मैं अरु वै द्वै नाहीं * मैं ही हौं सन्तन के माहीं
काहुइ अश तनु धरि उद्धारों * काहुइ सन्तरूप ह्वै तारों
सन्तन के चरणन की रेनू * मुक्ति भुक्तिदायक सुरधेनू
भक्त कहैं सोई मैं करहू * सन्तन के हित नरतनु धरहू
भक्त मोहिं हैं परम पियारे * सुनि नरेश नव बचन उचारे
प्रभु तुम जेहि आपनजनकहऊ * जिनकेविवशदिवसनिशिरहऊ
तिनके लक्षण मोहिं सुनावो * जिनकी महिमा निजमुख गावो
है प्रसन्न बोले प्रभु तत्क्षण * सुनहु भूप सन्तन के लक्षण
परम कृपालु द्रोह नहिं जानैं * क्षमावत अरु सत्य बखानैं
निन्दारहित द्वन्द्व उर समता * पर उपकारी सुहृद न ममता
आये काम बुद्धि थिर रहई * इन्द्री जीति नम्रता गहई
अल्प अशन एकान्तनिवासी * सदाचार समहन मैं वासी
शीतलचितयुत विरति विचारा * धर्मसहित निज रहित विकारा
दयावन्त षट् ऊर्मी जीता * मोह मान अपमान धर्तीता
ज्ञान मानप्रद परम प्रवीना * परसुख सुखलखि परदुख दीना
मित्र मित्र हित मित्रहि लावैं * तेहि प्रकार नित मोको ध्यावैं
चारि प्रकार मुक्ति नहिं लेहीं * सब तजि मम सेवा मन देहीं
दृढ़ विश्वास न लोभ न रोषा * यथालाभ तामें सन्तोषा
जो कोउ चलि शरणागत आवैं * ज्यों त्यों करि तेहि ज्ञान उपावैं

अनघ अजाति अशत्रु अचाही * आसन त्रासन सद्‌गुण माही
प्रेम नेम दृढशान्ति स्वरूपा * समचित सुख दुख निर्धन भूपा
दृष्टिपूत करि महि पग धरहीं * वस्त्रपूत जल पानहि करहीं
सत्यपूत करि बचन उचारैं * मनसि पूत करि कारज सारैं
यद्यपि वेद रूपमय गाये * वर्णाश्रम के धर्म दृढाये
सोउ शुभाशुभ ते सब तजहीं * काय बचन मन मोकहँ भजहीं
मम आधीन सदाही रहई * साधन को बल भूलि न गहई
मोहीं को करता करि मानैं * अपनेहु उर आपा नहिं आनैं
दो० बैठे जहँ जब सन्त मिलि, सात पाच इकठौर ।
तह मम बात चलावहीं, औरे न चरचा और ॥
कोउ कह दश अवतार मुरारी * धरे सकल सुन्दर सुखकारी
मीन बराह कमठ पहिचानौ * नरहरि बामन भृगुपति जानौ
रामचन्द्र नंदनन्दन लीने * नवम बौध निकलङ्की हीने
दशमा द्वै अवतार विशाला * मनमोहन रघुपति नंदलाला
इन युगमा को बड़ सुखरासी * केते तव रघुनाथ उपासी
दो० राम हमारे बडे हैं, लघू तुम्हारे कान्ह ।
केहिविधि जाने जाइ निज, प्रभुता करो बखान ॥
प्रथम सोमकुलकृष्णतव, शशि सम तेज प्रकास ।
भानुबंश श्रीराम जी, रवि समान द्युति भास ॥
जन्म समय श्रीराम के, भयो महा आनन्द ।
तब बसुदेव दुराइ कै, डारि गये गृहनन्द ॥
राम हमारे भूप हैं, रैयत तुम्हरे लाल ।
यशुमतिसुत नाथे वृषभ, राम अस्थि धरु ताल ॥
चक्री न मोह्यो देस सिप, असुर न मोह्यो कोइ ।

मातु न मोही बाधती मोहा युवतिन लोइ ॥
सो० युवतिन की यह रीति, पुरुष मनोहर देखिके ।
करहि वाम बग प्रीति, बहुरि बजाई बासुरी ॥
दो० मोहन हमरे राम हैं, कछू न करतब कीन ।
देवदनुजमुनि नाग नर, मोहि विलोकत लीन ॥
जो कह्यो केकयि दीनमन, तासु भेद घटि जात ।
कह्यो संहिता में सुनौ, एक समय सुरनात ॥
बचन बद्ध करि मातु ते, कह्यो चतुर्दश वर्ष ।
राजसमयमोहिदियोबन, सोइ कीन्हो तजि हर्ष ॥
करुहि माखो कृष्ण तब, सो नरपति दुखदाय ।
रावण बश सुर नरअसुर, ताहि बध्यो रघुराय ॥
वेदवती दशशीश ते, कह्यो रहै मैं तोहि ।
तव पुर पैठि विनाशिहौं, हेतु गई तेहि सोहि ॥
कृष्ण छोडाये मातु पितु, निज निजका सबलोग ।
राम नेवाजे देव मुनि मनुज आन तजिभोग ॥
प्रथम खबरि लगवाइके, कूबर दीन सुधारि ।
चरण परसि पावन करी, रघपति गौतमनारि ॥
जरासन्ध के समर मा गये भागि गोपाल ।
पीठि न दीन्ही रण विषे, काहुह राम कृपाल ॥
चोरी कीन्हीं कृष्ण तव, परभामिनि में प्रीति ।
राम न बोले झूठ कछु, भूलि न चले अनीति ॥
ब्रजपति विधिरूप भेपकर, हरेउ मान अवधेश ।
विष्णु अङ्क भृगुनाथ हू कीन्ह सुवश विशेश ॥
कृष्ण गोबर्द्धन कर धरेउ, यह सेवक को काम ।

सोइ कारज सब कपिन तें, करवायो श्रीराम ॥
कृष्ण पान दावानलहिं, नाथ्यो काली नाग ।
राम सेतु करि अरिसमर, अमित निवारे नाग ॥
विप्र सुदामा मित्र से, तन्दुल लै धन दीन ।
राम कपीश बिभीषणहिं, दुरदिन में नृप कीन ॥
सरबस दीन्हो गोपिकन, तदपि लख्यो यदुराउ ।
ऋणी भये हनुमान के अस रघुबीर सुभाउ ॥
कृष्ण शरण उद्धव भये, पुनि पठये तप हेत ।
तिन्है हमारे राम जी, राज परमपद देत ॥
दश सहस्र दशसै बरष, कीनि अवधबसि राज ।
फिरियादी बक श्वान द्वै, भे इततोदिशिसमाज ॥
अहिमहि अशासु अनुजसिय, दीन्होजगहितत्यागि ।
आपु स्वपुर गे यान चढ़ि, कृष्ण सकृत शरणागि ॥

अस हैं राम हमारे स्वामी * अखिलरूप के कारण नामी
अपर कहैं सिद्धान्त हमारा * पूरण हैं सकलौ अवतारा
समभत में सब एकै अहई * रूप धरे चौबिस श्रुति कहई
हैं सब एक कनक जिमि यद्यपि * होत न राशि रतीसम तद्यपि
बोले अपर सकल श्रुति सारा * राम नाम है इष्ट हमारा
सुखदायक दुख पातक हरता * सब इष्टन को पूरण करता
ब्रह्म बहा बिन रामा होई * रा बिन रघुपति कहैं न कोई
मा बिन महादेव हा कहिंगे * रेफ बिंदु बिन प्रणव न लहिये
कृष्ण रहित रा कसन कहावै * महावीर बिन मा न रहावै
रा बिन राधा धा रहि जावै * आ बिन सीता सति कहावै
दुर्गा रमा शारदा भयरी * गवरि गणेश आदि हरि गयरी

करि विचार देखें बुध कोई * राव मन्तन महँ अन्तर दोई
जीव यथा लघु तेहि बल जागे * देव सरिस फल देत जो मागे
जेहि जाने बिन कछू न जाने * पशु समान तेहि बेद बखाने
नाम विवश है रूप सदाहीं * रूप नाम बिन आवत नाहीं
बिना नाम पुर धाम न पावे * जानत नाम कहत मिलिजावे
अगुन सगुन युग ब्रह्म कहावे * सुखप्रद परि नामे नहिं पावे
दो० ब्रह्मसो व्यापकसकलघट, आनँद अमल अखण्ड ।
तदपित्रसितजग जीवसब, सहतविविधविधिदण्ड ॥
प्रीतिसहित जो नापकहँ, रटै राखि विश्वास ।
यहां सदा सुख में रहै, अन्त रामपुर बास ॥
निरगुन ते बड़नाम यश, सो मैं कह्यो बुझाइ ।
अब सरगुन तेकहत हौं, सुनो सुजन मनलाइ ॥
रामरूप धरि असुर-सहारे * सुर नर मुनि सब किये सुखारे
नाम जपत ते सुखी सदाहीं * योगन के दुख देखि मिटाहीं
कृष्णकुणपधरिगिरिकरलीन्हेउ * ब्रजबासिन की रक्षा कीन्हेउ
नामजपत अहिपाते माहि लीन्हें * भुवन चारिदिश रजसम चीन्हे
राम कामअरि कर धनु भञ्जा * भृगुपतिसहित नृपन मद गञ्जा
नामरासिक तृण सम ससारा * तोरहि कलि खिसिआइ बिचारा
कृष्ण एक दावानल पीन्हा * ग्वाल बाल सब बाहर कीन्हा
नामसुमिरिशिवविषकियेपाना * जड़जीव जेहि सब जगजाना
राम गीध शबरी मुनिनारी * ह्वै प्रसन्न भव भय ते तारी
नाम सुमिरि शठ तरे अपारा * अजहू जपन होन भवपारा
दो० राम सुकण्ठ बिभीषणै, दीन्हि राज निजकाज।
नामसुमिरिसज्जनतजहिं, वातसरिस जगमाज ॥

राम सिन्धु मा सेतु करि, भये पार लै सैन ।
नाम सुमिरि हनुमान गे, कूदि पियो घटजैन ॥
रामराघवाहिरथानिधनि, कीन्हि राजि बसिबास ।
नाम जपत युत मोहवृन्द, होत बिनहिश्रम नास ॥
राम काम करिअनघ द्वन्द्व, अवध जात लै धाम ।
नाम उधारत तिहुँ भुवन, जो सुमिरे सहसाम ॥
हनुमत्संहितायां हनुमद्वचन श्रीरामं प्रति ॥

श्लोक ॥

राम त्वत्तोधिकं नाम इति मे निश्चिता मतिः ।
त्वयैका तारितेऽयोध्या नाम्ना च भुवनत्रयम् ॥

अस है इष्ट हमार महाना * शिरधरि सन्तहिन कीन प्रमाना
जे अबूझ ते बाद बढ़ावैं * जाननहार महासुख पावैं
एक कहैं सब है अभिरामा * नामरूप अरु लीलाधामा
यहि प्रकार की बातैं कहही * मेरे हित आपस महँ लरही
सो बातैं मोकहँ अति भावैं * सुनौं जाय मैं तिन के ठावैं
जैसे विपुल सुतन की बानी * सुनिहरषत पितु निजसबजानी
तैसे मैं सुनि सुनि हरषाऊं * जाई जहा तहं तहं चलिजाऊं
दो० प्रेम प्रशंसा विनय युत, बेग वचन ये आहिं ।
तेहिसे होत अनन्द उर, कुर उर लागत नाहिं ॥
भक्तन के लक्षण सकल, सुखद सुनाये तोहि ।
जिनकरिकै पक्षी सरिस, निजवशकीन्हेनिमोहि ॥
सुनि नरेश अतिशय सुखपायो * सन्तनपद पुनि पुनि शिरनायो
देवदूत तेहि अवसर बीरा * लै बिमान आये नृप तीरा
कृन्ना चरण शिर नाइ नरेशा * चढ़ि विमान गवन्यो सुरदेशा

गीतिकाछन्द ॥

सुरलोक गयन्यो भूप नृप तसकूप के दुख नाशेहू ।
लखि देव वरपि प्रसून प्रभु तब यदुन ते परकाशेहू ॥
करि दान वश अभिमान के नृप द्रोह हरिजनने ठयो ।
तेहि पाप पायो ताप द्विजकी शाप दरशन ते गयो ॥
अस जानि मन अनुमान कबहु सन्तको न सताइयो ।
बनिपरै कीजै सेव नाहि बनिपरै तौ शिर नाइयो ॥
यहि भांति के सुनि वचन यमके गणन अतिसुख पायहू ।
शिर नाइ दण्ड उठाइ तब सब मृत्युलोक सिधायहू ॥

दो० सन्तन को उतकर्ष जो, कहै सुनै नित नेम ।
बढ़ै भाव भजन विषे कहै रघुनाथ सुक्षेम ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतनृगप्रसङ्गसन्तगुणवर्णनोनाम
द्विचत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४२ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि ।
धर्मशास्त्रमत कहौं कछु, मनुस्मृति जु बखानि ॥

सुनि सन्तन की बिपुल बड़ाई * पुनि शौनक बोले शिर नाई
नाथ कहौ अस कौन उपाई * जा करि जीव सुखी ह्वै जाई
कौन देव क सुमिरण छूटै * जेहि ते पितर नरक ते छूटै
कौन देव है सब फल दानी * सुनत सूत बोले मृदु बानी
शौनक सुनो सत्य मोहि पाहीं * राम समान आन सुर नाहीं
जिन के सुमिरण ते सुर सारे * बिन प्रयास ही होत सुखारे
जिमि तरुमूल निषेचन माहीं * तरु पात पत्र सब हरियाहीं
अमजियजानसकलांबादासा * रामहिंभजहिं तजहिं सब आसा

तीन प्रकार भजन हरिकेरा * व्याससुवन शुकदेव निवेरा
निष्कामी जो रामहिं ध्यावै * तासु विवश प्रभु आपु रहावै
मोक्ष कामे करि कोइ सेवै * ताको राम मोक्षपद देवै
सर्व कामकरि सेवै दासा * ताकी हरि पूजइ सब आसा
ऐसे प्रभु के शरणै आई * जासु कृपा अनुकम्पा गलाई
अपर देव सों करि दुःखा * होइ प्रसन्न देहिं जग सुखा
जो सबविधि बने न कोई * कोपि विनाश तासु करे सोई
तातें नारायण मम देवा * नहिं तिहु काल अन्य यह भेवा
दो० सर्वशास्त्र अवलोकि कै, पुनि पुनि कीन विचार ।
ध्यान योग मङ्गलकरन, हैं रामैं तत सार ॥
जो निज पितर चहैं निस्तारा * तौ हरिभक्ति करै विस्तारा
जैसे कोशल महीपति गाये * सुनि शौनक पुनि वचन उचारे
हे प्रभु केहि प्रकार नर हारी * तारे पितर कहौ विस्तारी
कहहुमुनि भक्ति करी हरिकेरी * बोले सूत सुनो मनु केरी
कौशलपुर एक धर्ता कहऊ * कास नाम नाम नृप रहऊ
अन्तसमय यमगण चलि आये * मारि बांधि निजलोक सिधाये
शोधि भानुसुता लेखा लीन्हा * पुनि दूतन कहँ आयसु दीन्हा
भागे जाय नरक डर येहू * चौदह लाख वर्ष दुख देहू
व्यासहु पर नरक द्विज लाये * पीव रक्त जामें कृमि छाये
चाप्यल षोडश योजन केरा * सोरह योजन गाहर निवेरा
धरे जीव सूखे उठानहीं * एको पल सुपास जहँ नाहीं
तेहि महँ नृप कहँ बेहाला * जारहिं मध्य आन्ह के ज्वाला
ऊपर यमगण मारहिं भाला * इमि त्रासु नृप मारे हराना
ताही नरक मांझ नृप कै * पुरखा रहैं प्रगाढ़ि ढेरे

भूपहि लखि रोदन निज ठाना * सुनि महीप अस वचन बखाना
को तुम हो जो हमहिं निहारी * लागेहु रोदन करन पुकारी
हे नृप हम हैं पितर तुम्हारे * तुम हो पुत्र हमारे प्यारे
बोले भूप बहुरि निज पाहीं * काहे परेउ नरक के माहीं
की तुम दान कबहुँ नहिं कीन्हा * की तुम विप्रनकहँ दुख दीन्हा
की सन्ततिहिं बोलेहु कटुबानी * बोले बहुरि पितर सुत जानी
दीन्ह पुत्र शय्यादिक दाना * गज रथ बाजि पालकी नाना
पूजे देव बिपुल बहुभाती * विप्र जेवाये दिन अरु राती
ये सब कीन्ह द्रव्य पर आनी * ताते भई पुण्य की हानी
जीव मारि बहु कीन्ह अहारा * ताते पावा नरक अपारा
जीव बधे कर पातक भारी * गावत वाचे कोविद श्रुतिचारी
पुनि गुरु ते हरिमन्त्र न लीन्हा * ताते नरक बास यम दीन्हा
जेहि प्रभु नखशिरा देह सँवारी * जहँ तहँ रक्षा कीन्हि हमारी
तासु भजन हम कीन्ह न भूली * काहे न पुत्र अर्थामृग झूली
अब लग रही तुम्हारी आसा * कबहुक है है हरिके दासा
तब हमार होइ निस्तारा * बसब जाइ सुरलोक मँझारा
सो तुमहू हरिभक्ति न कीन्ह्यो * आइ निरयमहँ बासा लीन्ह्यो
कह नृप जो अब छूटन पावहु * तौ तुम का सुरलोक पठावहु
है हरिभक्त भजहु भगवानहिं * जाते पावहु पद निर्बानहिं
सुनि बोले यमगण रे बज्ञा * प्रथम कयों न रँगेहु हरिरङ्गा
अब यमजाल परेहु जब भाई * तब हरिभजन केरि सुधि आई
जैसे कोउ गृह जनक लागे * कूप खनावत अति अनुरागे
परत धार जिमि अंकुर बरावै * होत युद्ध गढ़ नींव धरावै
तथा तुम्हार मनोरथ कारन * असफहि लगे नरक महँ डारन

तेहि अवसर इक हरिजन आये * तिनहि देखि यमके गण धाये
पद शिरनाइ कीन्ह अतिआदर * लाये येरस्वत ढिग सादर
देखि कृतान्त उठे हरषाइ * करि दण्डवत लीन्ह उरलाइ
कनक सिंहासन आसन दीन्हा * पद पखारि पादोदक लीन्हा
धूप दीप करि दोउ कर जोरी * लागे अस्तुति करन बहोरी
देखि प्रभाव नृपहु ढिग आवा * रामभक्त सो विनती लावा
नमो नमो तुम पतितन तारन * नमो नमो प्रभु विपतिनिवारन
नमो नमो तुम पर उपकारी * मोहिं नरक ते लेहु उबारी
सुनि विनती भे सन्त दयाला * रविसुत से बोले ततकाला
याको छाडि काम ते दीजे * इतना कहा हमारो कीजे
करहिं जाइ हरिभक्ति नरेशा * मिटहिं जाहिते सकल कलेशा
सन्तन कहा मानि यम लीन्हा * तुरतहि छाडि नरेशहि दीन्हा
ऐसे हैं हरि भक्त कृपाला * सहज निकासिनरकतहिंनिहाला
छूटि भूप मृतलोकहि आवा * मृतक देह निजप्राण समावा
देखत नृपति भे लोग सुखारे * सकल कहैं बड़भाग हमारे
दो० तब महीप यमलोक की, कथा कही सब गाइ ।
जेहिबिधि देखे पितर निज, दीन्हो सन्त छोड़ाइ ॥
यमपुर हम निज नयनन देखा * बिन हरिभक्त महादुख पेखा
ताते भक्ति करब अब हमहू * जाते नरक न जाइ कबहू
विप्र बोलि शुभ घरी शोधाई * केहि दिन शरण राम की जाई
पत्रा लखि द्विज बचन उचारा * प्रातहि गुरुमुख होहु भुआरा
अस सुनि भूप दान बहु दीन्हा * करिसनमान विदा तब कीन्हा
जब ते नृप हरिशरण बिचारी * तब ते भे सब पितर सुखारी
बैठे निकरि नरक के पासा * कहैं कि सुत होइ हरिदासा

कब हम जाब अमरपुर माहीं * अस कहि हुलसहि हँसहि उठाहीं
दो० तावत भरमन पितृ जग, पिण्ड हेत हर बार।
यावत कुल में कृष्ण कर, भक्त न होत कुमार॥

पद्मपुराणे श्लोक॥

तावद्भ्रमन्ति संसारे पितरः पिण्डतत्परा।
यावत्कुले सुतः कृष्णभक्तियुक्तो न जायते॥

स्कन्दपुराणे॥

पचन्ति नरके पितरो नृत्यन्ते च मुहुर्मुहुः।
सद्वंशे वैष्णवो जातः स मे त्राता भविष्यति॥

इहा पुरोहित कीह विचारा * सब विधि गा रोजगार हमारा
जब राजा हरि का जन होई * ज्योतिषमन्त्र न मानी कोई
नहिं अब धेनु बेड़ाई कबहीं * पाच सात का दई हमहीं
सुनी ज्ञान जब सन्तन केरा * भा नहीं बचन तब मेरा
हरिसेवा में मन चित देई * आन देव को नाम न लेई
तातें सो अब करौं उपाई * जाते होइ न वैष्णव राई
मुनिबोली द्विजभामिनि तबहीं * नृप के भवन जाहु तुम अबहीं
रानी ते अस कहउ बुझाई * शय्या निकट राउ नहिं आई
सुनि द्विज लै पञ्चाङ्ग सिधाये * तिसरे पहर भूप गृह आये
रानी लखि उठि माथ नवाना * आशिर्बाद दीन बैठावा
पत्रा खोलि कहा द्विज बाता * फेरो बिधि तुम्हार अहिवाता
सब बिधि बना रहै तब साजा * पै अब चाहत होन अकाजा
कौन अकाज भूप जो काल्ही * लेई गुरुदिक्षा प्रण पाल्ही
तब तुम्हार सब भाति अकाजा * राजपाट सब छोड़ी राजा
भक्ति ज्ञान में मन चित लाई * घरको काम सकल बिसराई

तुम्हरे निकट न आई कबहीं * थाले होंहिं तीरथ जब तबहीं
ताते करहु यतन तुम सोई * जाते भूप न वैष्णव होई
तीनि सखा कीजै सो गावहु * नृत्य मोहनी मंत्र चलावहु
करि कटाक्ष मोहो नृप आजू * काम विवश लखि छांडै काजू
विप्रहि विदा द्रव्य दै कीन्हा * अपना रूप रचन मन दीन्हा
जहँ लगि तियन केर शृङ्गारा * अरु अङ्ग अति सकल सवारा
निशा पाइ पति सेज सिधाई * हास विलास कीन्ह सुख पाई
जब अनङ्गवश नृपहि जाना * पकरि खूंट करि बचन बखाना
स्वर्गलोक ते तुम फिरि आयहु * हमहिं न कछु दीन्हेउ सब पायहु
बोले नरपति मांगहु प्यारी * जो कछु इच्छा होइ तुम्हारी
विधि हरि हर की साखी दीजै * तौ हम कन्त मांगि वर लीजै
तब महीप सौगंदन केरी * खाई सौंह हरषि बहुतेरी
सुनि बोली पति यह वर दीजै * जहँ राज नहि भक्ति न कीजै
भक्ति किहे वह होत कुसंगा * ताते मैं बरजत हौं राजा
दान पुण्य भल करहु भुवाला * अमर फल पावहु ततकाला
सुनि महीप बोले अकुलाई * बनेहु न मागन वर दुखदाई
जप तप यज्ञ दान बहु करहीं * भक्ति ज्ञान बिन जाय न तरहीं
किहिनि दान निज मति बिसराई * ते गिरगिट अहि गज भे आई
ताते अब मोहि आयसु दई * कीजै भक्ति परम फल येहू
रानी सुनि पुनि बचन उचारा * प्रथम कियो बाचा तुम हारा
देखहु शिवि दधीचि कस कीन्हा * बाचा बश आपन तनु दीन्हा
नृप हरिचन्द्र बड़ रजधानी * बाचा भरिनि डोमघर पानी
मयूरध्वज जिनकी महि माटी * बाचा बश दीन्हेनि शिर काटी
असुर गयासुर श्रापित अहई * बाचावश्य अधोमुख रहई

दशरथ देन कह्यो बरदाना * बचन न तजहु तजेहु सुत प्राना
विष्णु बचन चपलामत हारा * तेहि ते आपन ऋषिसुत मारा
सो तुम छाड़त निजमुखभाखी * ब्रह्मा विष्णु शिवहि करिसाखी
परेहु भूप दुबिधा महं कैसे * गहिमुख साप छछूंदरि जैसे
तजहुँ भक्ति तौ नरकहि जैहौ * बाचा तजे अधिक दुख पैहौ
यहिविधिनिजमनठानिजोआनी * दीन्हिसि छाडि भक्ति अज्ञानी
दो० कल्पलता तजि मूढ़जिमि, किंशुक लावै कोइ।
सोइ कीन्ही नृप क्वासहू, समुझै चहुँ भक्त होइ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतराजाक्रासआख्यानवर्णनोनाम
त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
बर्णों भारत की कथा, रुचिरान्यो मत आनि॥
तजतहि भक्ति दूत यम केरे * पुरिखा बहुरि नरक महं गेरे
ऊपर से मुदर शिर दयऊ * त्रिंशित योजन भीतर गयऊ
जब उछरत तब मारत धाई * कह कि अब क्यों उछरत आई
जेहि सुतकी तुम आश लगाई * द्विजरानी तेहि छला बनाई
दो० जानिबूझि नृप रामकी, दीन्हिसि भक्ति, बिहाइ।
आ तुहि परिहै मन्दमति, यही नरक मो आइ॥
यह सुनि नरकी करहिं पुकारा * केहि खल भयो पुत्र हमारा
द्विज हत्या ताके शिर दीन्हा * बैष्णव होत मने जेहि कीन्हा
तेहि सम पापी अपर न पावा * हरषमाहिं जेहि हमैं रोवावा
ऐसे बचनसकल मिलि बोलहिं * उछरहिं कबहुं कबहु शिर खोलहिं
तेहि अवसर तहँ नारद आये * नरान्न ते अस बचन सुनाये

परे अधोमुख पतित अपारा * तुम काहे यह रूप पुकारा
है मुनि हमरे कुल नृप जासा * होन चहत रहे हरिदासा
दीन्हों वरजि ताहि अब सोई * तेहि ते हमें महा दुख होई
अजहूँ जो ताको समुझावै * कोटि यज्ञ कीन्हे फल पावै
मुनि नारद के आगा दागा * नरकिन ते अस वचन सुनाया
जो मैं सुत समुझावौं तोरा * सत्य वचन नहिं मानी मोरा
जे नर नारि हवें जगमाहीं * सन्त कहा ते मानत नाहीं
क्यों कि भजनहिन नरहिं अबोधा * समुझै नाहिं भक्तन का बोधा
नरकिन कहा सुनहु महराजा * ऐसे वचन न बोलो राजा
अधम देखिगा दशा हमारी * सुनते अस्तुति करी तुम्हारी
जो कुजाति नहिं मानहि वाता * नरक खोदि देखावहु ताता
गाड़ै बांच आजेर के माहीं * मोहर भये नृप जानत नाहीं
इतना सुनि मुनि तुरत सिधाये * देखि भूप के मन्दिर आये
मुनिहि विलोकि दण्डवत करेऊ * हाथ जोरि अस्तुति अनुसरेऊ
धन्य आजु हम धन्य मुनीशा * तुम्हरो दरश दीन जगदीशा
जीवहि दुरलभ वस्तु अनेका * दुरलभ सन्त समागम एका
अब भोजन का कहिये भेवा * केहि विधि मिले रसोई देवा
कह नारद आदिजिनि केरा * ससि विष्टासम जल मधु हेरा
शास्त्र न जानि केहू की गाँथे * पद्मपुराण वचन अस गाथे

गौरीतन्त्रे श्लोकः ॥

कृष्णमन्त्रविहीनस्य पापिष्ठस्य दुरात्मनः ।
श्वानविष्ठासमन्नान्नं जलं च मदिरासमम् ॥१॥

पद्मपुराणे ॥

अवैष्णवास्तु ये विप्राः चाण्डालदधमास्स्मृताः ।

तेषां सम्भाषणस्पर्शसोमपानादि वर्जयेत् ॥ २ ॥

स्कन्दपुराणे ॥

अवैष्णवगृहे भुक्त्वा पीत्वा वा ज्ञानतोऽपि वा ।
शुद्धिश्चान्द्रायणे प्रोक्ता इष्टापूर्त्ते वृथा सदा ॥ ३ ॥

राममन्त्र तुम सुना न काना * आज्ञा मागत कोने ज्ञाना
नरतनलहि हरिभक्ति न कीन्ह्यो * झूठे जगत माहिं मन दीन्ह्यो
देख्यो तुम नृप यमपुर सासति * तदपि हृदय नहिं आई दहसति
बड़े भाग ते छूटन पायो * इहा आइ पुनि ज्ञान गवायो
प्रसवसमयजिमित्रियपति त्यागै * दुख बीते फिरि तासों पागै
तेहि प्रकार तव मति भइ राजा * जानिबूझिनिज किहेउअकाजा
पुरिखा देखि नरक महँ आयहु * भक्तिकौलकरि सुधि बिसरायहु
बोले भूप सुनहु मुनि ज्ञानी * रूप सँवारि छला मोहि रानी
मागिसि बर करि कौल करारा * कहिसि करौ जनि भक्ति भुवारा
तब मैं ताहि बहुत समुझावा * वाके मन तनकहु नहिं आवा
बाचा की मुनि कानि बिसारी * तेहि ते हम हरिभक्ति बिसारी
कह नारद सुनिये नृप भेदा * नारि सुभाव कहत अस बेदा
रहित अचार बिचार बिहीना * परम भयाकुल छलबल पीना
चञ्चल बुद्धि चपल अवगाही * सदा अकच्छ लागि सुख स्वाही
श्रवण नासिका भेद अभङ्गा * बिगत प्रसाद मलिन सब अङ्गा
इतने अवगुण नारि मँझारा * कस न करे नृप तव अपकारा
दुष्ट नारि मत मानै सोई * तव सम जगचेर जो होई
जे जे भे भामिनि बस राजा * तिनसबहिनकी भयउ अकाजा
शाशि श्रीत्रृषि विधि सुराई * अपर प्रसङ्ग सुनो मन लाई
कुण्डल नाम रहे द्विज एका * उग्र बुद्धि घर द्रव्य न नेका

निर्धन जानि तासु की नारी * नित उठि देहि हजारन गारी
इकदिन द्विज निजपुस्तकलीन्हा * उठि परदेश पयाना कीन्हा
तेहि मग इक तड़ाग लखिपावा * करिमज्जन शिर तिलक लगावा
पुनि हरिकथा कहन द्विज लागा * बावी मध्य रहै इक नागा
तेहि हरिकथा सुनी सुख माना * तपनि मिटा कछु हृदय जुड़ाना
लागे करन विसर्जन जबही * श्रावा निकट निकसि अहि तबही
मोहर एक धरि बोला बानी * को तुम अहउ कहउ सुखदानी
कुपडश्च कहा बिप्र हम होई * निरादर जानत सब कोई
निर्धि धनकृपा परमदुख पायन * अब धनहित परदेश सिधायन
बोला सर्प दूरि जनि जावो * हम को हरि की कथा सुनावो
मोहर एक देबे नित तोही * काहुइ पे न बतायहु मोही
यह सुनि द्विजमन हर्षितभयऊ * निस्टहि राम लाभ करि दयऊ
लाग सुनावन विविध पुराना * पावहि एक मोहर नित दाना
भा धनवान महल बनवावा * सुभग बाजि निजद्वार बँधावा
भूषण बसन अनेक प्रकारा * पहिरे आप सहित सुत दारा
यक दिन भवन परोसिनि आई * बोली करकस ते हरुवाई
तुमतो रहिउ दुखित धन हीना * किन तुमको यह सम्पति दीना
बोली बिप्रबधू सुनु माई * को जाने कहँवा पति पाई
जो तुम ते पति भेद न गावा * तौ केहि काम बाम धन पावा
पुरुप नारि ते अन्तर करई * तौ सम्पति पावक महँ परई
तेहि ते पूछेहु आसु सँभारी * अस कहि चली गई सो नारी
द्विजभामिनि तब रही रिसाई * दीन्हेसि अमरष सकल चलाई
द्विज पुस्तकपढ़ि घर जब आवा * दुखित देखि असबचन सुनावा
कौनि व्यथा तोरे मनमाहीं * सो सब कहउ प्रिया मोहिं पाहीं

कैयो वार विप्र जब बूझा * बोली तब तुमका नहि सूझा
रहेउ रङ्क अब सम्पति लहेऊ * कितसों हम ते भेद न कहेऊ
सुनि बोला द्विज शिर करधारी * याही हित कीन्हेउ रिस भारी
भूषण सजहु तजहु मन खेदा * सुनो कहउँ मैं धनकर भेदा
पुर दक्षिण है एक तड़ागा * तेहि तट रहत हवै यक नागा
दिनप्रति ताहि पुराण सुनावों * मोहर एक तहँवा मैं पावों
इतना सुनि उठि भोजन कीन्हा * पनि सुत तिन्है जेंवावे लीन्हा
निशा पाय द्विज सोवनलागा * बोली सुत ते करि अनुरागा
सरके निकट आशु तुम जावो * सर्पहि मारि द्रव्य खनिलावो
सुनि पोथी कुदारि गहि लयऊ * भोर होत सर के तट गयऊ
तक्षक दीख विप्रसुत आवा * लखि कुदारि मन शोच बढ़ावा
कीन्ह विप्र जब कथा प्रसंगा * निज बानी ते सुनहि भुजंगा
तब द्विज विविध रागिनी फेरी * तदपि न लागि ध्यान तेहि केरी
दो० करन बिसर्जन लाग जब, तब निकसा सो व्याल ।
मोहर एक चढ़ाय कै, बहुरि फिरा ततकाल ॥
भीतर भवन हलन नहि पावा * ऊपर दुइ कुदारि चलावा
कछुक पूछ कटिगै अहि केरी * काटेसि घुमरि मरा तेहि बेरी
इहा विप्र जाग्यो परभाता * सुत कित गा पूछी यह बाता
बोली त्रिय कछु कामहि गयऊ * सुनि ब्राह्मण के विस्मय भयऊ
उठा तुरत द्विज अहिढिग आवा * मृतक तहा निज बालक पावा
रोदन कीन्ह लीन्ह उर लाई * कीन्ह क्रिया विधिवत घरआई
कछुदिन बादि सर्पढिग आया * धरि धीरज अस बचन सुनायो
आय पुराण सुनहु यजमाना * केहि कारण हमते दुख माना
बोला अहि अब सो रस गयऊ * जब ते तुम बनितहिकहि दयऊ

तुम्हरे सुतकर शोच अपारा * हमरे लूम कर दुख भारा
तहि ते जाहु घूमि निज धामा * अब हम ते तुम ते नहिं कामा
यह सुनि विप्र पलटि गृह आवा * सुतकर दुख कछु धनदुख पावा
देखहु भूप नारिबश भयऊ * द्रव्यलाभ सुत दूनहु गयऊ
जैसे विप्र कीन्ह निज हानी * तेहि प्रकार तव मात बौरानी
दो० भगवत भजन छोडाइ निज, धर्म दृढावै कोइ।
ताहि त्यागिये शत्रुसम, परमहितू किन होइ ॥
तज्यो पिते प्रह्लाद मा, भरत विभीषण भाइ।
गुरुबलि ब्रजबनितावरनि, भे सब मङ्गलदाइ ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतव्यासनारदसंवादकुण्डलप्रसंगवर्णनानाम
चतुश्चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४४ ॥
दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
महभारत सद्ग्रन्थ की, कहौं इतिहास बखानि॥
अपर सुनो परसंग सुनावों * जनचिर या रूप लखावो
जब भारत कर भा आरम्भा * चले पाण्डुसुत गाडन खम्भा
दो० बोले तब सहदेव से, प्रमुदित चारो भाइ।
होइ जीति केहि भांतिसों, भाइति देहु बताइ ॥
कह सहदेव सुनहु बलवाना * प्रथमै उन ते कौन बखाना
अब तुमका केहि भांति बताई * तेहि ते शकुन सुनहु यक भाई
सांचिर पुरुष जो पावो * ताहि आनि कुरुक्षेत्र गड़ावो
ऐहै चलि जम्बुक तहँ दिनते * सकल भेद तुम पैहो तिनते
यह सुनि ढूढन भीम सिधाये * घूमत एक नगरमहँ आये
तेहिपुर रहत रहै यक तेली * सुनहु तासु की रीति नवेली

बैठी पलग तासु की वामा * अपना करहि धामकर कामा
झारि पांति घर जल भरिलावे * कूटि पीसि पुनि अशन बनावे
ताहि पवाय खाय तब अपना * बहुरि करै सब टहल अलपना
एक दिवस गै आगि नुझाई * रविदिन मागि फिरा नहिं पाई
तब बनिता बोली ता केरी * है पग लाग महाउर मेरी
जो तुम कन्ध चढ़ावहु मोही * आनि देउँ मै पावक तोही
सुनतहि लीन्हेसि कन्ध चढ़ाई * चला मुदित मन लाज बिहाई
मागे जाय अग्नि जेहि द्वारे * ताल बजावहिं बालक सारे
प्रमदा सब हाँसि हँसि असबोलें * भले आगि ये मगन डोलें
कोउ निलज्ज कहि देंय गारी * कोउ कहँ नीच डारिदे नारी
करहिं कुबुद्धिनिः हिबिधिबाता * हमें न अस बर दीन्ह बिधाता
पुरुष दोख पुरुषन ते कहई * ये दोऊ निलज बड अहई
जो इमि होती नारि हमारी * डरतेन ताहि जानते मारी
एक कहै अस देव न करई * दुष्ट नारि नर पाले परई
दो० दुष्टा भार्या मित्र शठ, उत्तर - दायक भृत्यु ।
सर्पसहित गृहबास रिपु, सबल सो जीवत मृत्यु ॥
यह सब चरित भीम जब देखा * जनाचेर निश्चय करि लेखा
नारि उतारि ताहि धरि लायो * कुरुक्षेत्र के माहि गड़ायो
आपु रहे छपि चढ़ि तरु डारा * आये तहँ तब बहुत सियारा
दो० तेहि तेली के अग सब, सूँघे एक सियार ।
बोला मांस अशुद्ध है, हम नहिं करब अहार ॥
जो हम याको भक्षण करिवे * कोटिन वर्ष नरक महँ परिवे
तब जम्बुक सब पूछन लागे * है अशुद्ध केहि कारण पागे
सुनि जम्बुक तब उत्तर दीन्हा * यहि कबहू शुभकर्म न कीन्हा

नारिहि के डर डरत महाना * हरि गुरु मनपद शीश न नावा
नहि तः शिर अशुद्ध है भाई * जानिबूझि हम केहिविधि खाई
श्रुति अशुद्ध गुरुमन्त्र न लीन्हसि * दृगमलीन जनदरश न कीन्हसि
मुख अशुद्ध हरिनाम न टेरेसि * गर अशुद्ध तुलसी नहिं गेरेसि
कर अशुद्ध कछु कीहेसि न नाना * उर अशुद्ध दण्डवत न ठाना
उदर अशुद्ध प्रसाद न खाइसि * पग अशुद्ध तीरथ न सिधाइसि
सुनि सियारमुख बोला नाना * कीन्हो तुम अशुद्ध सब गाता
हमैं लागे हैं भूख अपारा * कस काहे यत करी अहारा
तब जम्बुक सब गिरन प्रबोधा * आजके दिन मन करहु समोधा
कालिह युद्ध होई यहि ठावें * लायहु पल जितना मन भावें
पालिहि अस्त्र शस्त्र विधि नाना * जूझि हैं बड़े बड़े धर्मवाना
सबका कीन्हे जिनकर मामा * होइ हमहि देवपुर बासा
पुनि सियारमुन बोले बाना * का जीता का हारी ताता
जम्बुक कहा जाति हैं सोई * प्रथम राजा रापि है सोई
सुनि यह शकुन भाम घर आये * बलकन सहित सियार सिधाये
देखहु नृप तियके बश भयऊ * डर करि रामभक्ति तजि दयऊ
जम्बुकहू नहिं मानिनि ताहीं * तेसी गति नृप तुम्हरी आही
अतिअकाज रानी तव कीन्हा * भक्तिमाहिं बाधा करि दीन्हा
करे कहा अबला कर मोई * तोहिं समान पतित जो होई
यह सुनि राजा बहुत लजाना * माथ नाइ अस बचन बखाना
सांचहु मैं निज कीन्ह अकाजू * अस प्रभु नाम सुनावहु आजू
नारद कहा तयारी कीजै * तब तो राम मन्त्र हम दीजै
यह सुनि नृप मन्त्री हँकरावा * भीतर बाहर भवन लिपावा
कुम्भ पुरान सकल करि दूरी * नूतन कलश धरे जल पूरी

विप्र बैष्णवन सकल बोलाये * गुरुमुख होत जानि सब आये
भई भीर नृपद्वार अपारा * बाजहिं ताल मृदङ्ग सितारा
गध्रव करहिं रामगुण गाना * लखि समाज भूपति हरषाना
तब बोले ऋषि ते कर जारी * अब का आयसु होत बहोरी
कह नारद रानी ढिग जावो * ताहू ते आयसु ले आवो
जो न मुदित मन आज्ञा दही * लाग्यो मारन तुरतै तेही
दो० भले नाथ कहि भूप तब, गे रानी के पास।
बोले आयस देहु अब, होई हरि के दास॥
सुनि रानी अस वचन उचारा * नृप हरिगा है ज्ञान तुम्हारा
हम तुमका बहुबिधि समुझावा * तदपि तुम्हार मन नहिं आवा
इतना सुनि नृप मारन लागा * बोली तुरत सहित अनुरागा
हे पति मैं यहि बिधि परकासा * हमहूं तुम होई हरिदासा
बैष्णव कन्त अबैष्णव नारी * ऊंट बैल कर जोत बिचारी
पुर के लोग सुनत डर पाये * गुरुदिक्षा हित सब चलिआये
तब नारद अतिकरुणा कीन्हा * बाहुमूल रामायुध दीन्हा
ऊर्ध्वपुण्ड्र पुनि तिलकलगायो * द्वादश मन्त्र सहित सो न्हायो
धरयो बहुरि हरि मिश्रितनामा * पहिराई तुलसी की दामा
तेहि पाछे कछु आहुति कीन्हों * राममन्त्र महिपालहि दीन्हों
दो० राममन्त्र गुरु बदन ते, जहि उर करहि प्रवेश।
होत शुद्ध सो तुरत इमि, कहत संहिता शेश॥
सर्व मन्त्र ते अधिक है, वैष्णव मन्त्र अखेद।
बिष्णु मन्त्रहू ते अधिक, राममन्त्र बद बेद॥
ब्रह्महत्या गुरुतल्पगा, स्वर्ण चोर मदिराप।
सर्वन्येव बिहंसि अघ, राममन्त्र को जाप॥

जब हरिमन्त्र सुना नृप काना * पुरिखा सब चढ़ि गये विमाना
पुनि रानी को मन्त्र सुनावा * तेहि पाछे आवा सोइ पावा
तब नृप द्विजन दक्षिणा दीन्हा * सब बिधि तोष सबनकर कीन्हा
सो शोभा सुख बरणि न जाई * रही भक्ति सब पुरमा छाई
जहँ तहँ होहिं चरित हरिकेरे * जपैं नाम सब साझ सबेरे
कह नारद मैं देखों जाई * तब पुरिखन केमी गति पाई
सुनिमुनिबचनबिदानृप कीन्हा * तब सातो गगरा कहि दीन्हा
तब पितरन हैं माहिं बताये * असकहि ऋषि यमलोकहि आये
दूतन ते अस पूछा जाई * नरकी व कित गये सिधाई
सुनि दीन्हेनि उत्तर यमदूता * रामदास भा उनकर पूता
तेहि ते वे सुरलोक पधारे * छूछे परे हैं नरक हमारे
सुनि नारद के भा सुख भारी * आये चलि बैकुण्ठ मझारी
बैठे रहे तहां यमराजा * दूतन सहित आपने काजा
जब मुनीश हरिपद शिरनावा * तब प्रभु ऋषिते वचन सुनावा
आये हैं रविसुत फिरियादी * कहैं कि हम बैठे हनु बादी
नारद भक्ति दृढ़ाइ तुम्हारी * खाली कीन्हेनि पुरी हमारी
जग महँ सब होइ हैं तव दासा * को आई फिरि हमरे पासा
तेहि ते अब हम जाब न तहवां * पापी सब आवत हैं जहवां
केतनौ मैं इनका समुझावा * तदपि न मानत मोर मनावा
कह नारद हम कीजै काहा * जेहि ते मानि जाइ यमनाहा
बोले धर्मराज तुम जाहू * जगमें भरमायो सब काहू
जेहि ते रामभक्ति तजि सारे * आवहिं तब सबलोक हमारे
कहैं नारद हम ते नहिं होई * कोटि उपाय करहु किन कोई
तुम चाहो भरमावो जाई * हरिहू कहा भला है भाई

जे होइ हैं दृढ़ भक्त हमारे * ते नहिं लगि हैं कहे तुम्हारे
तजिहैं भक्ति मोरि नहिं कबहीं * सुनि चलिभे रविके सुत तबहीं
आये भूप काम के आमा * नाउतरूप बना यक तामा
लाग हलावन दोउ कर शीसा * अपर बजावहिं बाजन बीसा
कौतुक देखि लोग जुरिआये * माथ नाइ अस बचन सुनाये
किमि होवै हमारि कुशलाता * देहु बताइ कृपा करि दाता
बोला जो चाहो कल्याना * तो तुम सेवहु बीर मसाना
पूजहु शक्ति भक्ति करि भारी * पावहु तुरत पुत्र धन नारी
की भैरव मरही का सेवो * अजया पुत्र महिष बलि देवो
इनते मन वाञ्छित फल पैहो * जेहि कोपिहो तेहि तुरत नशैहो
खेतरपालहि पूजहु कोई * तेहि ते विघ्न न कबहू होई
पाचहु पीरन मे मन देहू * जिनते मनवाञ्छित फल लेहू
महावीर है शङ्कर देवा * मिलहि न कछुफल इनकी सेवा
दानवति वहु है जग माहीं * को जानहिं फल मिलै कि नाहीं
रामभक्ति जो वेदन गाई * सो तो है अतिशय दुखदाई
जो नर हरि की भक्ति प्रकाशै * सुत मित नारि तासु की नाशै
रोग भोग बहुभाति सतावै * जह निकसै तहँ हँसी करावै
यहि विधि कष्ट सहै बहुकाला * तब कबहू हरि होइ दयाला
तेहिपर ताहि कछू नहिं देहीं * मूरख यहि मत का मन देहीं
सुनि सुनि दूतन की अस बाणी * द्वार ते विमुख भये बहु प्राणी
रामभक्त जे रहे सुजाना * तिन तनको विश्वास न आना
जे मतिमन्द विषयरस पागे * ते प्रभु का तजि पूजन लागे
वनितन का देही इमि सीखा * गलिनगलिन मिलिमागहु भीखा
लूटि बजार भक्ति कहँ पूजो * मिटहिसकलदुखसुख नित भूजो

काहुइ यन्त्र मन्त्र सिखराये * काहुइ भूत चढ़ाय छुड़ाये
काहुहि दीन्ह सुवा सुत नाती * काहुहि दीन्हेनि धन बहुभाँती
एकहु बात करहु फुर होई * सफल सन्तकारि मानहिं सोई
दो० यहि विधि जग भरमाइकै, गे यमपुर यमदूत ।
सोई रीति संसार में, अजहू है कह सूत ॥

छन्द ॥

कह सूत अजहू रीति सोई रही जग में छायकै ।
सच मानि नर सब करत जेहि ते परत अघ में आयकै ॥
मतिधीर जे गम्भीर जन ते झूठ मन में जानिकै ।
तजिमर्म नानाधर्म हरि की शरण में सुख मानिकै ॥
दो० रामभक्ति दृढ़ करन हित, हरन भर्म तमरूप ।
बरणी जन रघुनाथ तेहि, यह इतिहास अनूप ॥

इति श्रीविश्रामसागरसतमतसागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतराजाकासकथावर्णनोनाम पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
भक्तिरस मत कहौं कछु, पातञ्जलि जु बखानि ॥
कह शौनक नवधा भगति, कहौ योगसुत मोहि ।
जो बरण्यो ऋषि व्यासते, सोइ सुनावो तोहि ॥
श्री जैव शिष्य नारद कर राजा * बोला तब हित सहितसमाजा
नाथ भये सब शरण तुम्हारी * बिन गुरु होत न दृढ़ता भारी
जिमिशिशु अम्बु दूधबिन पान्हें * मैर न भेद चीणता लान्हें
कह नारद सुनु नृप असङ्गा * हैं हरिभक्ति केर नव अङ्गा
दो० श्रवण कीरतन अस्मरण, पदसेवन अरचन्य ।

बन्दन दास्य सख्यात्मनय, यदन नव ये गन्य ॥
दर्शाई प्रेम लक्षणा जानो * पृथकपृथक अस सफलबखानो
जो हरिकथा सुनै मन लाई * तासु श्रवण मग हरि उरआई
यसि पङ्कज अघ नाशैं कैसे * शरदकाल जलमल हरै जैसे
विषयी बिरत विमुक्तहु माहा * हरिगुण सुनन सबनकहँ चाही
बीतराग हरि चारत त कामा * है करि को: कि लहै कहु शोभा
अज गिरीश योगेश्वर आदा * अपर भय ज म्नाने श्रुतिबादी
रामचरित सुनि काउ न छक दा * अब न रुचै तेहि जानहु मन्दा
जो नर हरिगुण सुनैं न काना * सो खर ऊँट कोल सम श्वाना
भयो निरादर भाजन भारी * तेहि ते श्वान कथो निरधारी
असद वात बहुविध क परणा * चरत ऊँट सम ताते बरणा
बहै भार गृह का दिन राती * तेहि ते खरसम कथों कुजाती
अमित अनन्द कथा के माहीं * श्रवण समेत सुनै को नाहीं
दो० प्रवरा चातक हस शुक, मीन मक्षिका बैल ।
श्रोता द्वादश भाति के, मधुसृ हतसचुरशैल ॥
द्वादशे में षट उत्तम जानो * अपर अधम अब दो। बखानो
अन्य मान दग लोग अधीरा * पद छेदक असमञ्ज शरीरा
वादरासक निद्रावश मानी * विन विश्वास अहित अज्ञानी
रुद्र दोष बिन श्रोता होई * चरितामृत तब पावै सोई
ताते भूप दोष तजि सारे * सुनो कथा हरि की निरवारे
दो० कथा प्रीति ते सफल है, मोक्ष हेतु को कर्म ।
कथारहित जो कृत करै, सो केवल पयशर्म ॥
श्रवण परीक्षित भलकरि जाना * अब सुनु कीर्तन भक्ति सुजाना
प्रभु के जन्म कर्म बहुतेरे * मङ्गलप्रद जे अहं घनेरे

शङ्का रहित तिन्हें जो गावें * सो निश्चय अभिमत फल पावें
नारदादि ऋषि जहँ लग रहेऊ * मनु हर हरिगुण तवहिन कहेऊ
रामचरित वरण्यो मो बानी * सुभग मन्य शुचि मङ्गलखानी
हरिचित विक्रम आदि मनथम्भा * इमाप अंक द्वादश अस्कन्धा
वक्ता पाँच प्रकृति के जाना * रवि शशि उडु मणिदीपसमाना
वक्ताहू में दो इक होहीं * तजि ये याग सुनावो तोहीं
पक्षपात धनचाह अधीना * श्रोता नहिं समुझै परवीना
प्रश्न करै तेहि उत्तर न देवें * मारवस्तु गुनि तर्क न लेवें
मूर्ति बाधि के वचन उचारै * मूरख सो फँसै उर धारै
प्रेम प्रतीति प्रीति बिन रोगा * पूछन बात करै अति रोषा
बहुत पाप श्रोता जस कहहीं * तब ऐसे वक्ता शिर परहीं
दो० पढ़ि गुणि वेद पुराण हरि, भक्ति न कीन्ही स्तार।
ज्यों पशु चन्दन भार धरि, भरमत जेहि नेहिद्वार॥
श्लोक आदिपुराणे॥
यथा खरश्चन्दनभारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।
तथा च विप्राः श्रुतिशास्त्रयुक्ता सद्भक्तिहीना खरवद्वहन्ति॥
दो० ज्यों विधवा के शीश में, सोहै नहि सिंदूर।
गुण चतुराई रामबिन, त्योंहीं जानो कूर॥
गावै विधवा अपन कहि, बनरा दुलहिन केर।
पतिसुख लहै न स्वप्नहू, तिमिहरिजन बिनफेर॥
विद्या गोधन वेद चहुं, भक्ति दूध जब भक्ष।
पावै बरतावै तनुज, तँह किल्लन बिनयक्ष॥
तेहिते रसिक अनन्य है, कहै राम गुणग्राम।
तब पावै शोभा यथा, वलितचन्द्रनिशियाम॥

कीर्तन शुकमुनि भलकर जाना * अब सुनु सुमिरन भक्ति सुजाना।
श्रीपति को सुमिरन जो करई * गोपद इव सो भयनिधि तरई
गणिका यमन गयन्द अजामिल * और आदि कविकटुअधरे किल
विषयिन भजै विषय को पावैं * रामै सुमिरि राम ढिग जावै
विधि हरि हर गणपति अहिराई * सुमिरन ते पाई प्रभुताई
हरि सुमिरन सब सुखको मूला * हरि सुमिरे नाशै सब शूला
हरि सुमिरन कीजै जिमि गाई * चरताफिरत शिशुविसरि न जाई
हरि सुमिरन कीजै जिमि कामी * तजि हिय होत नारि अनुगामी
हरि सुमिरन कीजै जिमि लोभी * निशिदिन रहै द्रव्यहित छोभी
हरि सुमिरन कीजै जिमि चातृक * गनै न हानि लाभ निज मातृक
रामनाम जिन सुमिरन कीन्हेउ * तिन जन सकलधर्मकरिलीन्हेउ
राम नाम जिन हिरदे धारा * तिन का कहा करै संसारा
राम नाम कर सुमिरन साचा * जेहि याचे जग होइ अयाचा
बहुत जन्म को पुण्य विहीना * राम नाम मुख जात न लीना
दम्भौ ते जो नाम उचारै * पावक सम अघ तूलहि जारै
शत्रुभाव करि जो कोउ ध्यावै * सोऊ होय मुक्त श्रुति गावै

दो० भृङ्गी भय ते कीट ज्यों, होत भृङ्गतन अन्त।
तैसे अरि अघ त्यागि वपु, धरत रूप भगवन्त॥
राम नाम के बीच में, मनका देहु मिलाइ।
करि हरिसम रघुनाथ सो, सहजमाहि छुटिजाइ॥
कलिके कलुषी नरन नहिं, आन धर्म अधिकार।
राम नाम इति वर्ण युग, जपि ह्वैहैं भवपार॥
ते बडभागी जीव जे, कलियुग मे हरिनाम।
सुमिरैं सुमिरावैं सुजन, सकल कृतारथ धाम॥

पाप सहस्र हरि नाम में, इतनी शक्ती आहि ।
जितनी पापी नरन को, पाप करन की नाहि ॥
चण्डाली जो राम इति रसना करै बखान ।
तासों बोलिय बोलिये, साक्षिय श्रुतिपरिमान ॥
श्रुतिः ॥ यश्चाण्डालो रामेति वाच वदेत्तेन सह सं-
वसेत्तेन सह संवदेत्तेन सह सम्भुञ्जीयात ॥
दो० रामनाम कलि कामतरु, कहत सकल श्रुतिसाध ।
लहै काम फल जो धरै, डर तजि दश अपराध ॥
सो० दश अपराध सो कौन, नाथ कृपाकरि वर्णिये ।
सुनो कहौं मैं तौन, सनकन्नादिना भाषि जस ॥
कुं० गुरू अवज्ञा एक करि, जन हरि निन्दा ताप ।
गनै ब्रह्म में भेद पुनि, करै नाम बल पाप ॥
करै नाम बल पाप, नाम परताप न जानै ।
बिन सरधा उपदेशि, दोष पुनि शास्त्र न मानै ॥
मानि ठगि रघुनाथ, भजै निज इच्छा करु उर ।
ये दश तजि अपराध, जपै नय नाम फल गुर ॥
दो० ताहिते तुमहूं दोष तजि, जपहु नाम निश्शङ्क ।
भललोक सुख नाहि हवै, और कहा नृप रङ्क ॥
सहित दोष निरदोषहू, राम नाम जो लेइ ।
तबहूं ताकी भाग्य की, को अस उपमा देइ ॥
सुमिरन भल नाम प्रह्लादा * अब सुनु सेवन भक्ति मरादा ।
सेवन भक्ति कीन श्री जाके * नहि तु बसौ विशद उरताके ॥
दो० देव यक्ष, गन्धर्व नर, असुर इतर कोइ होइ ।
जो सेवै हरिपद कमल, सब सुख पावै सोइ ॥

हरिपद सेवन बिन मनज, जहा जहां चलि जात ।
तहां तहां भययुत रहत, मृत्यु न छोड़त खात ॥

तेहि ते रामचरण नित सेवो * अर्चन भक्ति छठी सुनि लेवो
परमानन्द दानि हरि पूजा * इहि ते सुगम उपाय न दूजा
केवल हरि अर्चन के कीने * लहत तोष सुर सकल प्रवीने
जिमि सींचे जर सब तरु तापे * हरित न होइ पान जो पापे
मुख ते अशन प्राणही पावे * सब इन्द्री तिरपित ह्वै जावे
प्रभु आनन्दसिन्धु सुखधामा * करुणाकर परिपूरण कामा
सो निज पूजा चहै न कबहीं * निज कल्याण हेतु करै सबहीं
हरिहि पूजि पूजित है येहू * पावे सुख सपात निज गेहू
ज्यों निजमुखतिलकादिलगावे * सोइ दर्पण प्रतिबिम्ब सुहावे
श्रीपति मान चहै बिन मानी * सहै न करहु मान अज्ञानी
प्रभुकर मान करै नर जबहीं * हरिहु ताहि सम्मानत तबहीं
प्रभु आदरेउ धन्य नर सोई * ताह सम बड़भागी नहिं कोई
सकल देव गनि ताहि सराहै * चरण रेणु तेहि पावन चाहै
ऐसो है हरि पूजन ताता * पुनि पंगरे फेरि नहिं आता
दम्भ सहित मद दुष्ट धनादी * करहिं यजन सो श्रम सब बादी
जल अंकुर दल दूब चढ़ावें * निर मद सो उत्तम गति पावें

दो० मारु दारु हरि चित्र पवि, पुरट मनोमय रत्न ।
ये प्रभु प्रतिमा आठ विधि, पूजे जन करि यत्न ॥

तोटकछन्द ॥

हरिपूजन षोडश भांति कही । प्रथमे आवाहन कीन चही ॥
पुनि आसन पाद्यर्घाचमनं । अस्नान पटाहुति सूत्रतनं ॥
शुचि चन्दन पुष्प सुधूपदिपं । नैवेद्य तँबूल बिनय अधिप ॥

परदक्षिण षोड़श भांति इथं । चरणासनतागनकोटिविथं ॥

दो० जल दल चन्दन चक्र दुग, घण्टशिला हरिताव ।
अष्ट वस्तु मिलि होत है, चरणामृत सुखदाव ॥
फल चरणोदक लिहे कर, कहँतक करौं बखान ।
भूमि परे पातक नथा, अथसुनु दीपविधान ॥
चारि चरण युग देश कटि, मुखमण्डल इक बार ।
सत चक्र सर्वाङ्ग पर, इमि आरती उतार ॥
श्रीहरि पूजा अमित फल, परमपुण्य सुखदानि ।
ताते सन्तन कीजिये, प्रीतिसहित हितमानि ॥
अब सुनु दूसरि विधि कहौं, जाहि करत सनकादि ।
अगजग रूप अनूप हरि, आसन देहु अनादि ॥
पादपुष्टता अर्घ आपि, शुचि सनेह अस्नान ।
वसन विनय मन्त्र सद्गुण, चितचन्दन मिकशान ॥
धूप वासना दीप निज, बोध हरे अविवेक ।
अशुभाशुभ तूला नवृत, गोयनिका अनेक ॥
विरति बलिकारि अर्पिये, विविध भाव नैवेद्य ।
प्रेम तांबूल सुगन्धपन, पाइ मिटत भवभेद ॥
सदन सत्य पर्यङ्क पर, रामहि शयन कराइ ।
क्षमा दया परिचारिका, तत्र सुदेह लगाइ ॥
यहि विधि जो पूजन करै, हरै सकल सन्ताप ।
निरवर्ती की रीति यह, केवल हरि का जाप ॥

पूजन भले कीन्ह पृथु राजा * पूरब पश्चिम मनक समाजा
छठई वन्दन शक्ति अनूपा * प्रभुवन्दन सब का सुख रूपा
दुइ कर जोरि कर जबहीं * मङ्गल सो नर पावत तबहीं

सुकृत जीव हरि सन्मुख आवै * मन वच क्रम करि शीश नवावै
सो हरिधाम मोक्ष सुख लहई * इमि भागवत माहि विधि कहई
सकृत प्रणाम प्रभुहि कर कोई * तेहि सम दश अश्वमेध न होई
दश अश्वमेधी पुनि जगजावै * कृष्ण प्रणामी बहुरि न आवै
मग खसि गिरे व्यथावश परई * विवश नाम हरि बन्दन करई
तासु महाअघ सचित नाशै * प्रीतिसहित फल कौन प्रकाशै
बन्दन कीन दान पति आछै * अपर भये वह आगे पाछै
दो० हरिप्रणाम महिमाअमित, को करिसकै बखान।
तेहि ते बन्दन राम की, करहु मानि कल्यान॥
सतएँ भक्ति दास्य अस नामा * दास भाव है सेवै रामा
तासु नाम सुमिरत अघ जरई * जासु चरणजल भवरुज हरई
जासु कटाक्ष चहैं विधि ईशा * भजैं जाहि सनकादि मुनीशा
तेहि प्रभु केर दास जब भयऊ * कौन कर्म बाकी रहि गयऊ
तिन का कछु न चाही करहीं * दास भये पुर स्वारथ सबहीं
दास भाव बिन जरनि न जाई * इमि दुर्वासा कह्यो बुझाई
जो यावत हरिजन नहिं तावत * सुकृत सदन रागादि चोरावत
दास भये धन हर्ता जेते * लगहिं भक्ति सावन महँ तेते
भगवत हेत सकल व्योपारा * होत सुखदश्रुति मिटत विकारा
दास सरिस प्रिय प्रभुहि न कोई * रघुपति तिलकमाझ हम जोई
बैठे जहँ सब सबबिधि चीन्हा * तिलक दास हनुमानै दीन्हा
दो० काय बचन मन कर्म करि, सो अरपै भगवान।
बिधि निषेध नहिं नाथवश, दास भाव सो जान॥
नारायण को दास जो, भयो न लहि वर वृत्ति।
जियनसोशचममकहनइमि, पाराशर अस्मृत्ति॥

अष्टम भक्ति सखत्व कहावै * रघुपति सखा परमसुख पावै
नन्द गोपिका अरु ब्रजवासी * भये मित्रता करि सुखरासी
निशिचरपति सुग्रीव निषादा * भये सखा करि रहित बिषादा
अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहै * राम सखा सुख ते सुख लाहै
अपर सखा कोउ जाइ विदेशा * तेहि वियोग दुखहोइ अँदेशा
अन्तरयामी राम कृपाला * निकट रहत सन्तन सब काला
अपर मित्र में अस गुण नाहीं * जस गण है रघुनन्दन माहीं
यहि ते सब सुख तुच्छ विचारी * श्यामसुन्दर ते कीजै यारी
मन मलीन पूरब कृत दोषा * पुनि नामै डारत करि रोषा
ताते सम्रांत पुनि पुनि लहई * किमि उद्धार होइ श्रुति कहई
जिमि कोइ केतु पकरि नद गहेऊ * किमि उतर फिरि फेनुइ गहेऊ
बासुदेव बोहित सुखधामा * सकल विश्वदायक विश्रामा
जबलग तिन में प्रीति न करई * तबलग कर्मसिन्धु नहि तरई

दो० प्रभुपद प्रीति सो होतही, मिटत त्रिविधदुखदोष ।
सकल सुसाधन कर फल यतनै करिय न मोष ॥

नवईं भक्ति सुना मोहिं पाहीं * आतम अर्पण सम कोइ नाहीं
जो निज देहादिक प्रभु पासा * करै समर्पण तजि सब आसा
सो निश्चिन्त रहत सब काला * तासुफिकिरि प्रभुकरत कृपाला
जिमिकोइवृषभअश्व निजबेचै * तासु यतहित करत निशोचै
राम मया भाजन सो अहई * हरि ऐश्वर्य मोक्ष ते लहई
तर्कशास्त्र अरु नय विविचारी * अहै जीव कहँ सब सुखकारी
ते सब निगम नीति अनुकूला * करै भली विधि नहिं प्रतिकूला
परम पुरुष श्रीपति गुणसागर * अन्तरयामी राम उजागर
तिन का आतम करै निवेदन * तौ सब साच जानिये वेदन

तन मन हरिहिहि अर्पण कीना * तौ धर्मादिक फल परवीना
गुणातीत सोइ अहै विवेकी * नृपबलिकेरि टेक जिन टेकी
दो० तेहि ते सर्वसु अर्पिके, निर्भय हरिगुण गाव।
आखिर इक दिन छूटिहै, अब सुनु शरणप्रभाव॥
देव पितर ऋषि भूतकर, ऋणी अहै सब कोय।
हवन श्राद्ध अध्ययनबलि, कर नित तब मुच होय॥
नाहितसबबिधिकर्मतजि, गहै शरण हरि करि।
तब छूटै ऋण पाप कोइ, तेहि तन सकै न टेरि॥
अथवा ऋण दीन्हें विना, रहे ब्योहर आधीन।
सोनरइमि दिनभरै जिमि, ऋणीधानिकबशदीन॥
याते कृष्ण कृपाल के, युगपद सब सुखदानि।
परम कृपालय जानिकै, शरण गहौ प्रण ठानि॥
जे नर रामचरण सुखकारी * शरण गह्यो जब दृढ व्रतधारी
प्रबलकाल तेहि लखिइमिकहई * यह अब हमरे वश नहिं अहई
दो० देखौ सुर नर असुर अहि, किन्नर खग गन्धर्व।
काल कलेवा ह्वै रहे, ब्रह्मादिक जग सर्व॥
बचत न कोई काल ते, उहै तरु आवल दए।
करतग्रास बड़वाग्नि ज्यों, यों कह योगवसिष्ट॥
ऐसो काल कराल सो, डरत जासु ढिगि देखि।
जे हरिशरण न गहैं ते, शठ सम पशुके लेखि॥
प्रेमलक्षणा प्रेम करि, रहत न देह सँभार।
दशधा भक्ति कहाव सो, यह सब ते अधिकार॥
दश भक्तिन महँ एकहू, जिन राखी उर धारि।
सोइ वल्लभ श्रीरामकहँ, कहा पुरुष कह नारि॥

सन्तदास अरु शिष्यता, पुनि वात्सल्य शृंगार।
जलमहिमरभुक नभसुये, भक्ति पञ्च रससार ॥
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरिमाथ।
कह्यो भक्ति के अङ्ग सब, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसकलशास्त्रग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतनवधाभक्तिवर्णनोनामषट्-
चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
योगशास्त्र मत कहौं कछु, हंसोपनिषद जानि ॥
चौ० भूप बहुत सुख पाई * निज गुरु सों सत्पन्थ बताई
पातञ्जली शास्त्र के माहीं * कह्यो योग विधि सो मोहिं पाहीं
कहैं मुनि भले सुनो मनु लाई * तपन स्वरूप हरि कहौं बुझाई
दो० आठ अङ्ग हैं योग के, यम नेमासन साधि।
प्राणायाम प्रत्याहार अरु, धारण ध्यान समाधि ॥

प्रथम यमअङ्ग ॥

सत्य अहिंसा, पुण्य धृत, क्षमा अचाह असङ्ग।
ब्रह्मचर्य निरभय भजन, गुणभुक थिरयमअङ्ग ॥

द्वितीय नेमअङ्ग ॥

शौच धर्म जप तप अतिथि, हरि गुरु सेव संतोष।
सोम तीर्थ उपकार पर, निर्छल नेम अदोष ॥

तृतीय आसनअङ्ग ॥

चौरासी आसन कहे, तिनमा उभय विशाल।
एक पद्म इक सुद्धमनि, सो साधे शशिभाल ॥

चतुर्थ प्राणायामअङ्ग ॥

चतुर्थ प्राणायाम करै, षट चक्कर को शोधि।
मूलाधार स्वाधिष्ठान पुनि, मनिपूरक को बोधि॥
चौथा अनहद चक्र कहि, पँचवा नाम विशुद्ध।
छठवां आज्ञा समुझिकै, जपै मन्त्र रा शुद्ध॥
पूरक में षोडश जपै, कुम्भक में चौंसट्ठि।
रेचक में बत्तिस कहै, हरै हरे जनि हट्ठि॥
ज्यों ज्यों ठहरै पवन उर, त्यों त्यों मन्त्र बढ़ाय।
कुम्भक आठ प्रकार की, सनो कहौं अब गाय॥
प्रथमैं सूरज भेदनी, पूरै पिंगल वात।
रेचै बायें रोकि कछु, हरै वायु रुज गात॥
उभय उजाई पवन की, पूरि धरै उर माहिं।
इँडा ते रेचन करै, कफ रुज लेधर जाहिं॥
तीसरि शीत जो कारणी, पेच घ्राण ते पौन।
सीसी कहि मुख ते तजै, भजै क्षुधा तिरषौन॥
चौथि शीतली पूरई जीह बदन ते प्रान।
रोंकि निवारै नाक तेंहि, करै वृद्ध ते ज्वान॥
पँचई भास्त्रिक श्वास ते, भरै तजै अति शिघ्र।
थके करै रवि शशि ठहरि, मिटै त्रिविध रुजविघ्र॥
छठी भ्रामरी भृग धुनि, भरै श्वास ते वाय।
रेचै ताही शब्द ते, मन चञ्चल ठहराय॥
सतईं मूर्च्छा नाम को, सुमिरै श्वास उसास।
प्रभुहि मिलावै दुख हरै करै पेट दुख-नास॥
अठईं केवल जो कही, प्रथमै मन्त्र गनाय।

सो कुम्भक मो श्रेष्ठ है, जिमि मनुषन में राय ॥

पञ्चम प्रत्याहारअङ्ग ॥

पञ्चम प्रत्याहार जो, बिषय ओर मन जाइ।
घेरि लगावै ध्यान में, ज्यों निज सुत को माइ ॥
तब आपुइ बश होइ है, जिमि बनियाँकर भून।
तदपि सजग रहिये सदा, रिपु सम जानि कपूत ॥

षष्ट धारणाअङ्ग ॥

षष्टम धारै धारणा, पाँचों तत्वन केरि।
प्रथमैं गुरु गोबिन्द की, प्राण पवन हिय हेरि ॥
काल ज्ञान तेहि लखै जो, बरण्यो बिबिध प्रकार।
चक्षु चक्र छाया पुरुष, दीप गन्ध ध्रुवतार ॥
भ्रू अदिष्टि नौ दिन जपै, घ्राणअलख दिन सात।
तालू लौं जपि पाच दिन, एक रसन सुख बात ॥
अरनय बिबिध प्रकार की, हैं सुरही में लेखि।
जो सब समुझा चहै तौ, लेइ स्वरोदय देखि ॥

सप्तम ध्यानअङ्ग ॥

सतवां अङ्ग है ध्यान का, सोउ चारि विधि मीत।
पदस्थ पिण्डस्थ रुपस्थ वा, चौथा रूप अतीत ॥
पदस्थ जो श्रीराम के, चरण कमल उर लेइ।
नखशिखलौं छवि निरखि पुनि, पायँन मे मन देइ ॥
करते करते ध्यान यह, हरि को प्रापत होइ।
कीं कुम्भक करि प्रणव युत, जापत पावै सोइ ॥
दूजा ध्यान पिण्डस्थ है, शोधै पिण्ड सरोज।
अमर गुफा चढि युक्ति ते, त्रिवलीको लहै खोज॥

रूपस्थ ध्यान तीसर सदा, चितवै भृकुटी ओर।
लखै ज्योति उडुमाल शशि रविप्रकाश सब ठौर॥
चौथा रूपातीत सो, ध्यान शून्य का होइ।
करत शून्य है आपहू, रहै न भवरुज कोइ॥

अष्टम समाधिअङ्ग॥

अठवां किहे समाधि के, आपा जात नशाइ।
ध्याता ध्यान जु एक है, मिलै तुरी में जाइ॥
अष्टाङ्ग योग जो मैं कह्यो, सो तुम समुझेउ तात।
अब सुनु जो षट कर्म मैं, प्रथमैं कीन्हे जात॥
प्रथमैं तानो नाक ते, डारि दुहू मुख ओर।
दूजा धोती झीन पट, निगलि निकारै कोर॥
तीजा वस्ती गुदा ते, नीर खैंचि तजि देइ।
चौथा गज जलयुक्ति युत, रोचि उदरभरि पेइ॥
पँचवां न्योली कर्म ते, नलैं बिलोई जाहिं।
छठवां त्राटक दृगन की, पलक लगावै नाहिं॥
अब सुनु मुद्रा पंच बिधि, प्रथम खेचरी होय।
मुख मं तासु निवास है, चढ़वै जीभ बिलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास।
प्राण अपान जुदी जुदी, करि देवै यक पास॥
तीजी मुद्रा चाचरी, बसै दृगनबिच सोपि।
नासा आगे दृष्टि धरि, देखै अचरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी, करत श्रवण में बास।
ज्ञान सुरति यक होत है, अनहद शब्द प्रकास॥
पँचई मुद्रा उनमुनी, बस सो दशयें द्वार।

पावै सिद्ध समाधि तहँ, होय वासना क्षार ॥
बन्धन चारि प्रकार सुनु, महाबन्ध पुनि मूल ।
जालंधर उड्यान चहु, हरै हृदय की शूल ॥
योग क्रिया रघुनाथ सब, वरणी मति अनुसार ।
गुरुबिन सधत न समुझि तेहि, कीन्हों नहि बिस्तार ॥
योग तपस्या के किहे, मिलै ऋद्धि अरु सिद्धि ।
तिन में चहैं न चतुर मोहू, अब सुनु तिनकी वृद्धि ॥
प्रथमैं अणिमा लघु करै, दूसरि महिमा मोट ।
तीसरि लघिमा तृणसम, गरिमा करै बड़ोट ॥
पँचई प्रापत चह तहां, फिरि आवै अतिहाल ।
छठी प्रकाम सु चनु धरै, सतई ईशता जाल ॥
बशीकरन सिधि आठवीं, करै चहै तेहि वश्य ।
रामभजन बिन बादि अब, मुनुयककमनिधिदृश्य ॥
महापद्म अरु पद्म पुनि, कच्छप मकर मुकुन्द ।
शंख खर्ब नीलाठवें, नवई निद्धि जु कुन्द ॥
ऋधिसिधिभई तौ क्याभयो, जो न भज्यो रघुवीर ।
खग बहु उड़त अकाश में, कृमि बहु नॉघत नीर ॥
लोक रिझाये हानि बड़ि, लाभ तुच्छ सन्मान ।
वाह वाह कहि भाड़ के, सर्प डसतर्गे प्रान ॥
तेहिते त्रयबिधि कीजिये, हरि को सुमिरन सार ।
सत्य सत्यमिति नाथ फिरि, कहौं सहित विस्तार ॥

चौबोला छन्द ॥

सुनु सुमिरन की बात कहौं अब तोहिंरे ।
जेहिते इन्द्रिन सहित अचल मन होहिंरे ॥

पद्मासन को करै न तो सिध जानिकै।
मेरुदण्ड सम राखि चिबुक उर आनिकै॥
नासापर की दृष्टि त्रिकुटी ठाम को।
सुमिरे सांस उसास रामही नाम को॥
रटतो मिलै मिठास श्वास आगे परै।
अग्नि फूल से प्रथम पुरह लागत करै॥
कछु दिन में लखिपरै दीपकी ज्योति जु।
पुनि तारन के माहँ बिन्दु द्युति होति जु॥
सनइर सनइर सोम सूर बहु देखई।
सहस कमल पर परम आतमहिं पेखई॥
बडी बिरह की लाय पाय सखरासही।
झिलमिल झिलमिल जगत तेज में भासही॥
ज्यों जलनिधि में बूडि बिलोकै साहि जू।
दशदिशि दरशै जलै और कछु नाहि जू॥
बाजै अनहद नाद तहा दशभांति जो।
बरणौं तिन की रीति रहनि है जाति जो॥
प्रथम भँवरगुञ्जार अङ्ग पुलकावई।
पुनि सुनने पर नाद सु आलस आवई॥
तीसरि धुनि सुनि शंख प्रेम पीडा जगै।
चवै अमल सुनि घण्ट शीश घूमन लगै॥
पञ्चम बाजत ताल अमी बरसावही।
षष्ठ मुरलि तजि कण्ठतरे सोइ पावही॥
सप्तम भारी सुनत व्है छबिमूर की।
अन्तरयामी होय लखै गति दूर की॥

अष्टम झकनि मृदङ्गनाद अनहद सुनै।
अपर न जानै कोइ काल यह तिहुँगुनै॥
नवम नफीरी सुनत अगोचर होइ जू।
पहुँचै तहाँ चलि जाय न देखै कोइ जू॥
पुनि होवै अस्थूल दशा सब देव की।
दशई केहरिनाद सुनत अहमेव की॥
गाँठि कठिन खुलि जाय होय सो ब्रह्म ही।
सत चित आनँदरूप मिटैं सब कर्म ही॥
जिमि हिम हिलिमिलि उदधि कहावै उदधिही।
होय वारि सँग वारि रहत जो संगही॥
करै सदा यह ध्यान बैठि एकान्त मे।
अल्प अशन अनुरक्त रहै रम शान्त मे॥
लाहित निज पग पानि मूदि नवद्वार को।
सुनै सुरत ते शब्द अनेक प्रकार को॥
भाषत जन रघुनाथ सनेही राम के।
भये यही करि सन्त निवासी धाम के॥
जो चाहै हरिभक्ति भजै अवतारसों।
करै ध्यान सब अङ्ग समुझि गुरुद्वारसो॥
जपै इष्ट को नाम प्रेम मन ठानिकै।
सदा सर्वगत ईश सर्बको जानिकै॥
सुन्दर श्यामस्वरूप हृदय उर आवही।
ब्रह्मलोक का मुख न तब तेहि भावही॥
अन्त भावना सरिस लहै भगवन्त को।
प्रभुताकर प्रभु पुनि प्रतिपालक सन्त को॥

अल्प इष्ट को अल्प भूरिको भूरि है।
चाहवन्त को निकट चाह बिन दूरि है॥
कहत उपनिषद् बेद सो ईश अपार है।
जो जन करणी कर करणिही सार है॥
करणी ही है ऋद्धि करणि ही सिद्धि है।
बिन करणी नहि होत किसीकी वृद्धि है॥
ताते जन रघुनाथ सुकरणी कीजिये।
अशन बिना नहि होत तृप्त सुनि लीजिये॥

दो० मिफत करै को खाड़ की, धरै न मुख अभिराम।
लहे स्वाद रघुनाथ किमि, तिमिसुमिरनबिननाम॥
हरिसुमिरन कीन्ह्यो नहीं, कैसे मुख सरसाय।
हरदी जरदी तब चढ़ै, जब भरदी भलजाय॥
सुमिरन बिन जानै कहा, कोइ हरिनाम प्रभाव।
जिमि माणिकके मोलको, मानिक परखै पाव॥
कुटिल कृतघ्नी क्रूर ते, रामतत्त्व जनि गाय।
अन्धे कर हीरा परी, देई दूरि चलाय॥
रामतत्त्व गुरुभक्त ते, कहिये जानि कृतज्ञ।
पदिक पारखी लेइगो, होइ न क्योंकर अज्ञ॥
बेदरु शास्त्र पुराण कर, कहेउँ जो व्यापकतत्त्व।
अब सुनु भाषों स्वल्प में, तिन सबहिनको तत्त्व॥

कु० चारि वेद के अङ्ग षट, प्रथम सूत्र व्याकर्ण।
शिक्षाज्योतिष छन्दविधि, पुनि निरुक्त निजवर्ण॥
पुनि निरुक्त निजवर्ण, वेद के चहुं उपवेदा।
ऋग का आयुर तस्थ, चिकित्साशास्त्रअभेदा॥

यजुर्वेद, धर, धनुर्वेद, तत युद्ध शास्त्र कहि ।
साम कर गन्धर्व नस्थ, संगीत शास्त्र सहि ॥
दो० सही अथर्वण को अरथ, शिल्पशास्त्र युत धारि ।
अपरमिमांसा आदि हैं, है षटशास्त्र बिचारि ॥

चरपटछन्द ॥

तत्वमसी कहै सामवेद । ब्रह्म जीव है प्रकृतिभेद ॥
प्रज्ञा नद ऋग्वेद वयन । शिव स्वयं आनन्दअयन ॥
अहं ब्रह्मास्मि पद यजुर भाखि । चेतन सबमेंहै भरतसाखि ॥
अयं आतमा अथर्वण आह । मेरो सब कोइ भरत चाह ॥
सकल वाक्यको यही अर्थ । ब्रह्म जीव माया अनर्थ ॥
अब सुशास्त्र मत सुनु सुजान । जेहि विधि मुनिवरकरतगान ॥
दो० प्रथम मिमांसा शास्त्रके, जैमिनि मुनि आचार्य ।
धर्मविषे रघुनाथ भनि, स्वर्गादिक फलकार्य ॥
द्वितिये वैशेषिक शास्त्र, तस्याचार्य कणाद ।
शून्य पदारथ ज्ञानफल, भावाभाव विवाद ॥
न्यायशास्त्र गौतम ऋषय, भाष्यो तर्क बिशेखि ।
प्रमाणादि षोडश अरथ, बोध प्रयोजन लेखि ॥
चतुरथ पातञ्जलि लियो योगशास्त्र सुखमूल ।
बिषयनिरोधनचितबिरति, नाशकर्मक्षित शूल ॥
पंचवां शास्त्र जुसांख्य के, कर्त्ता कपिलयोगीस ।
प्रकृति पुरुष निर्णय बिषे, हेतु त्रिबिधदुखखीस ॥
षष्टम शास्त्र वेदान्त के, आचारय मनिव्यास ।
ब्रह्म जीव की एकता, विषय मोक्षफलनास ॥
सो० सर्ग, त्रिसर्ग, स्थान, पोषण ऊति मनोतरपि ।

मुक्ति निरोध इशान, आश्रय देशपुराण मत ॥
दो० वेदस्मृति पुनि संहिता, आगम निगम पुरान।
एक वाक्यता सबनके, वेद्य एक भगवान ॥
एक नगर के बहुत पथ, सरल सूध चलिजात।
अन्त प्राप्ति एकै नगर, त्यों शास्त्रन की बात ॥
वेद शास्त्रन सहित जो लखै काव्य की रीति।
तो न होय सन्देह कछु, ज्यों पुत्रन को प्रीति ॥

अरिल्लछन्द ॥

चौहटहाट समान बेद चहुं जानिये।
विविध भांति की वस्तु बिकत तहँ मानिये ॥
जो जेहि रुचै सो लेइ देइ धन धाम को।
परिहां। लीन्ह्यों जन रघुनाथ रतन हरिनामको॥
पावन पर्वत सरिस वेद अरु शास्त्र है।
बिबिध भाँति की धातु रहत तिनमाञ्च है ॥
जो जेहि रुचै सो लेइ भले हित मानिजू।
परिहा। सन्तन लीन्ही भक्तिमणिनकीखानिजू॥
दो० वेद बिपिन बूटी वचन, हरिजन किमि आकार।
खरी जरी तिनके कने, खोटी गहत गवांर ॥
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
इतिहासायन ग्रन्थ यह, पूर कीन रघुनाथ ॥

गीतिकाछन्द ॥

रघुनाथ गुरुपद माथधरि कह्यो रामयश हित मानिकै।
कल्याणकर्ता पुण्यमत तो पापहर्ता जानिकै ॥
कहिहैं जे सुनिहैं सहित नेह बिदेह गति पैहैं सही।

मनकाम करुणाधाम को शुचि नाम सो दृढ़करि गही ॥

दो० रामचरित गावत सुनत, विघ्न करत जो कोइ ।
जन्म जन्म तेहि उदर में, रोग जलधर होइ ॥
विश्रामोदधि ग्रन्थ में, तीनि अयन हैं तात ।
इतिहासायन कृष्णायन, रामायण सुखदात ॥

प्रथमायन परमान गनाई * उनइसमै सत्तारि चौपाई
दोहा छमै पचास सोहाये * उनहत्तरि सोरठा गनाये
कुण्डलिया चौबिस पहिचानौ * नाटकछन्द अठारह जानौ
ककुभा चारि मालिका दोई * अष्टपदी तेरह हैं जोई
तोमर उनइस चरपट साता * हरियक आठ भुजङ्गप्रयाता
सुनि मधुभार सगपिया बारा * रोला मनु अश्लोक अठारा
बरवै तीनि रुवैया चारी * युगपङ्कज वाटिका निहारी
शशि समानिका यचमुन्दरी * दोधक तीनि सुप्रिया दुन्दरी
इकइस छप्पय तारक चारी * है छब्बिस गीतिका करारी
हरिगीता कुकरहन मराली * चिन्तामणिमञ्जु हरिणिगोपाली
श्रीमान्मल विजय हरिलीला * निशिपालिका मनोहर शीला
श्री अमृत गति अमृत युक्ता * एक एक में छन्दै मुक्ता

दो० अर्धभुजङ्गी प्रयुता, करपा द्वै द्वै धीर ।
शशिमुख दीपक पादकटि, चारिचारि पुनि वीर ॥
शील चतुष्पद हंसकल, उभय अरिल्ल आसान ।
चारिसहस पुनि पांचशत, हैं श्लोक प्रमान ॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन, जो कछु कीन बखान ।
विश्रामोदधि के विषे, सो जानौ श्रिद्धान ॥
विद्धन बिन जाने कहा, विद्धन को पैश में ।

जैसे बंध्या मेहरी, प्रसवपीर को मर्म ॥
दुर्जन देखै दोष पर पेखै नहिं गुण शील ।
जक्ष सुन्दर के महल में, खोजत छिद्र पिपील ॥
संस्कृत प्राकृत पारसी, विविध देशके बैन ।
भाषा ताको कहत कवि, तथा कीन मैं पैन ॥

इति श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेश्रीरामायनलवकुशसमाप्तम् ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृत

कृष्णायनखण्डप्रारम्भः ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ नमो शारदा नारदा ज्ञान-बुद्धिं । नमो गुहगणेशं हर बिघ्नसिद्धिं ॥ नमो राम घनश्याम कामं स्वरूपं । नमो जानकी जक्तमाता अनूपं ॥ नमो भारतं जय लषण शत्रुघ्नारी । नमो केसरीनन्दनं सुक्खकारी ॥ नमो दीनदानी सदा शिव भवानी । नमो बिष्णुकमलं नमो ब्रह्मबानी ॥ नमो मीन बाराह नरसिंह कूरम् । नमो बावनम्परशुरामातिशूरम् ॥ नमो कृष्ण बलाविर्ष्यभानं किशोरी । नमो कालिके देवत्रयतीसकोरी ॥ नमो सारयू राज्ञभू भानु वंसं । नमो वेदव्यासं निगम हर्णभ्रमं ॥ नमो ऋद्धिआशी सहस बुद्धिराशी । नमो सन्त आनन्त मुक्तिप्रकाशी ॥ कहत दास रघुनाथ युग हाथ जोरे । करो सर्ब ऊपर कृपादृष्टि मोरे ॥

दो॰ जाते कृष्ण कृपालु के, कहौं चरित चित चोर ।
अर्थअमितआखरनमित, होइ रमित लखिथोर ॥

रामभक्ति की सुनि प्रभुताई * पुनि शौनक बोले शिरनाई
नाथ बचन नर अमी समाना * तृप्त न होत उदधि मम काना
तेहि ते अब करुणा करि गावो * कृष्णचरित कछु मोहिं सुनावो
सुनि सुमन्तु बोले हरषाता * भलो प्रश्न कीन्हो तुम ताता

सुनो कहौं हरिचरित सुहाये * जौन परीक्षित ते शुक गाये
सो सब करि संक्षेप बखानो * आदिहि ते तामें मन आनो
द्वापर कृष्ण लीन अवतारा * कीन्हें चरित अनेक प्रकारा
कलि आवत गवने निजलोका * सुनिपाण्डवनकीनअतिशोका
राज्य परीक्षित को सौंपाई * अपना गले हेवारे जाई
विष्णुरात जब ते नृप भयऊ * परजनकहँ बहुबिधिसुखदयऊ
एकदिवस का सुनो हवाला * बिजयहेत निकसा महिपाला
दो० एक ठौर देखन भयो, वृषभ एक यक गाय।
भयवश भागे जात दोउ, यक नर मारत जाय॥
तेहि के चिह्न नृपन के ऐसे * करतब करत नीच जन जैसे
तब तौ भूप निकट चलिगयऊ * वृषभ धेनु ते बूझत भयऊ
को तुम अहो जात कित भागे * यह को है मारत केहि लागे
कह्यो वृषभ मल निश्चय नाहीं * बोली तब सुरभी नृप पाहीं
ये हैं धर्म धरणि हम आनू * कलि के भय ते भागे जानू
कलिमल मलिनकरी सब भानी * बरणाश्रम के धर्म न जानी
विप्र सुमारग पग नहिं देहैं * बेचिहैं वेद धर्म दुहि लेहैं
विप्रन कुग्रन्थ निरत दिठियारे * वेहि अवलम्बहिं ग्रन्थ बिचारे
क्षत्री छलयग कलिमलमूला * बचक विप्र वेद प्रतिकूला
वणिक महाजन गाढ़ मुनामा * बचन मधुर अति करतब बामा
शूद्रगहिन निज धर्म विचारू * अशुभ जीरका अशुभ अहारू
धर्म सुतीरथ मन्त समानी * तहँविशेष खलिकुटिल बिरानी
काई सुरसरि बिमल तड़ागा * फूलब फरब समय बिन लागा
तिनकरफल पुनि दुर्गत दुकाला * बिबिधब्याधिबश जीवबिहाला
सुकृती लघु जीवन खल नाना * दाता निधन कृपण धनवाना

याचक बहुजग कोइ इक दानी * होइहैं अगणित याचक ज्ञानी
भूमि बीज बिन षटरस स्वादा * पाट थोर बड़ बाद बिबादा
नृप सरोष सब प्रजा दुखारी * कबहुँ मिटी देव सब गारी
काल कर्म महिपाल अधीना * बरणत बेद माहिं मतिहीना
प्रीति सकारण अकारण कोहा * करब मातु पितु गुरु ते द्रोहा
दोहगासुतिय सोहागिनि चेरी * गुनब जाति अच्युत कुल केरी
ठाकुर क्रूर सचिव मतिहीना * ह्वै हैं पुरुष नारि आधीना
धनी कुलीन गुणागर सोई * धनी सुसाधु यदपि खल होई
मातु सुशील सुजाति सुजाना * धनबिन सहिहैं दुख अपमाना
सुकर्ता बिपुल सुनी नहिं कोई * गुरुशिष अन्ध बधिर मति होई
उपदेशक आचरण मलीना * बेचिहैं धनहित नाम नगीना
सतुर चोर भट जे बटपारी * सब नरनारि सुमन रुचिकारी
गिरही रङ्क यती धनवाना * शूद्र पुराणिक विप्र किसाना
निरबल साधु सकल खलकामी * दामसुजानि नीच जन स्वामी
मृत्तिका पात्र अभूषण केशा * परिकर बसन बिछौना शेशा
गठिल कुभंचक सिद्ध शरीरा * परधन पचव ते बड़ धीरा
जीवन थोर दुराशा भारी * सत्य कहब ते होब लबारी
चलिहैं सुरुचि अनेकन पन्था * होइहैं लुप्त सुभग सद्ग्रन्था
सोइ सद्ग्रन्थ जहां हरि नामा * धर्म बिवेक भक्ति अभिरामा
सुत पितु दूषक कर बिन ब्याहे * पुनि रिपु होब नारि सुख चाहे
दो० तीस वर्षकी आयु नर, होइहैं कलि अधिआहु।
अष्ट अब्द की कामिनी, जनमी सुन पतिपाहु॥
सुकवि कुसंग अरुचि मतसङ्गा * तुलसिहिं हँसब सराहब गङ्गा
पतिबिरोध परपति रत नारी * पण्डित बाजब परम लबारी

काथे करि शाखों शब्द बखाना * निन्दहिं हरि हर बेद पुराना
तजि कुल कुटुँब होब बैरागी * तिनहुँन माहिं ईर्षना लागी
वेष विशद बानन में शूरा * भक्ति भजन में कादर कूरा
जो कोइ हरिसुमिरन परकासी * करिहैं सबमिलि तिनकी हासी
गाजा चरस तमाल उड़ाई * होई कलि तेहिकेरि बड़ाई
जोतिहैं हर नहिंके इक बर्द्धा * रही न नेकु धर्म की सर्द्धा
विद्या बणिज कृषी सेवकाई * होई फल लघु श्रम अधिकाई

दो० तरु बड़ झाऊ विटप सम, सुरभी अजा समान ।
मेघ बर्षि हैं ओस सम, बये न जमि हैं धान ॥

कलि के दोष कहे कछु गाई * सुनहु जे अहैं गुनौ सो राई
कलियुग मनकर पातक नाहीं * पुण्य पुनीत मनोरथ माहीं
वाचक पाप जाइ पछिताये * सरयू सरि हरिपदजा न्हाये
काया ते पातक जो होई * बिन भोगे छूटत नहिं सोई
सतयुग देश ग्राम त्रेताहीं * द्वापर कुल कलि में कर जाहीं
कलि में रामभक्त तनु धरिहैं * ते बहु जीव कृतारथ करिहैं
रामभक्ति करि करि नर नारी * भवसागर तरि हैं यह भारी
काल कर्म गुण प्रकट स्वभाऊ * भक्तिसमीप जात नहिं काऊ
कृतयुग जो गति ध्यान किंहे तें * त्रेतायुग मख दान दिंहे तें
द्वापर युग हरि पूजन ठानी * पावत रहे जौन गति प्रानी
सो गति कलि हरिके गुण गाये * पैहैं नर जपि नाम सुनाये
कलि केवल परमारथ हेतू * राम नाम भवसागर सेतू
साधन नाम सिद्धफल नामा * जाहि न अनीतिनादि निधिबामा
धर्म चारिपद कलि यस्लाना * जेहि तेहि भांति किहे कल्याना
जब शुभपन्थ सकल मिटि जाई * तब कछु हरि अवतरिहैं आई

सुनि नृप कोपि चला कलिओरा * रे खल नाय सुने नहिं मोरा
तब कलि डरपि चरण मे परेऊ * बहुतभांति अस्तुति अनुसरेऊ
जो कछु आयसु होइ तुम्हारा * सो हम कीजे याही बारा
जबलग हम जग राज कराजे * तबतक आपन अमल न कीजे
देहु मोहि अस्थान बनाई * जहँ हम बसनृ कटकयुत जाई
द्यूत चोर गणिका मद्यपाना * कनक बसहु इनते अस्थाना
सुनि नृपमुकुट बैठ सुलपाई * सुरमति मिटी असुरमति आई
चला भूप कछु तृषा सताबा * शृङ्गी ऋषि के आश्रम आवा
ध्यानस्थित त्रै लै मनअनुमाना * हमै देखि ठानेसि बकध्याना
मृतक सर्प धनुकोर उठाई * कण्ठ लोटि चल्यो हरषाई
सुन्यो सुवन शृङ्गीऋषि केरे * आवा तुरत पिता के नेरे
दो० पन्नग कण्ठ बिलोकिकै, दीन्हेसि शाप रिसाइ।
सतयें दिन नरपाल को, काटि तक्षक जाइ॥
काढि उरग तब पितहि जगावा * भूपति को वृत्तान्त सुनावा
शाप दीन सुनि अति रिसियाने * कीन्ह निपट अकाज अयाने
जेहिके चलत निविघ्न सुरकाजे * ताहि कि यहां दण्ड अस दीजे
शुचि सेवक कछु चूकै कबहीं * चतुरस्वामितेहितजत न तबहीं
दमवान जाइ नृप ऐसा * नहिं जानियत अब आवै कैसा
असकहि ऋषिचालिभ चित चेता * भूपहि बोध देन के हेता
यहां महीपति मुकुट उतारा * तब मन शोच कीन्ह अधिकारा
कौन कर्म कीन्ह्यौ मैं आजू * हेहि कछु बड़ दोष अकाजू
जो याकर फल मोहि विधाता * देइ अबत तन तौ भलिबाता
तेहि अवसर ऋषि पहुचे आई * लखि नृप परो चरणअकुलाई
भोले ऋषि भई तुम्है शरापू * सजग होउ अबहीं ते आपू

कह नृप अति बड़ दोष हमारा * मोरेहि मा तव तनय निवारा
नृप तुम कछु अपराध न कीन्हा * होनहार है परबल चीन्हा
सुर मुनि दनुज नाग नरमाहीं * हानी टारि सकत कोउ नाहीं
हिरण्यकशिपु दशकन्धर कंसा * औरो भये भूरि जिनि चंसा
जीवनहित बहु किहिनि उपाई * काल पाइ कोउ बचे न राई
गरुड़ कपोत चह्यो बचायो * अजगर के मुख में धरिआयो
होनहार जो सुन्दर होई * तौ जग मारिसकै नहिं कोई
कनककशिपु प्रहलादे त्राटा * सो नरसिंह टारि बहु टाटा
बालि बधन सुभावै चाहा * कुहा बैरकरि कीन्हिनि बाहा
चन्द्रहास को सब जग जाना * सो कीन्हेसि करि यत्न दिवाना
अम्बरीष पर रिस अति कीन्ही * मुनिवर कौनि बड़ाई लीन्हीं
सचिव सुवन्धु चह्यो जराया * शङ्खलिखित फल आपुइ पावा
सुरुचि चह्यो ध्रुवबरहि विनासा * रामकृपा अविचल भयो दासा
पांडुसुतन कहँ बहुत सताइनि * दुरयोधन कछु की है पाइनि
ब्रह्म अस्त्र तब ऊपर प्रेरा * द्रोणपुत्र का कीन्हेसि तेरा
जाकी मौत निकट जब आवै * तेहि रजु केर सर्प ह्वै जावै
तेहि ते होनहार है जेती * नीकि जनूनि होति है तेती
सन्त चहैं कछु देहिं मिटाई * अपर न टारि सकै कोइ राई
असकहि ऋषिनिजआश्रमआये * भूप तुरत सुनि सहज सुभाये
राजकाज तजि सकल प्रवासा * आइ कीन गङ्गातट वासा
व्यास पराशर आदि मुनीशा * जुरे आइ तहँ बहु अवनीशा
कोउ कहै करो भूप गोदाना * कोउ मुनि बरत बतावे नाना
दो० तेहि अवसर शुकदेव जी, आये नङ्ग धड़ङ्ग ।
ताल बजावत बाल बहु, डारत लै रज अङ्ग ॥

शुकहिं लखि जे रहे अघाई * ज्ञान वृद्ध लखि भे सब ठाढ़े
आसन दीन भूप सनमाना * आपन जन्म धन्य करि जाना
बोले बहुरि जोरि युग पानी * कहो भक्त की बात बखानी
हे नरेश मन शोच न कीजै * नृप खट्वांग बात चित दीजै
उभय घरी में भइ गति जाकी * तुम्ह सप्तदिन जीवन बाकी
हरि चरितामृत पान कराई * तुम्हें तारि देहौं मैं राई
असकहि कहन भागवत लागे * लागे सुनन भूप अनुरागे
प्रथम कछु कामना देखाई * पुनि प्रभुचरित कहे हरषाई
जगउत्पति अस्थिति संहारा * ब्रह्मनिरूपण ज्ञान उचारा
भक्ति योग वैराग विवेका * भा अस्कन्ध समापन एका
तब दूजे में लाग लगाना * पुनि कछु योग कृपाकरि गावा
विधि नारद की कथा बखानी * चौबीसों अवतारहि जानी
जगउद्भव कहि पूरण कीन्हा * तब अस्कन्ध तीसरो लीन्हा
ऊधो मिलन प्रभास सिधाना * कह्यो विदुर मैत्रेय सवादा
सप्त विकार महिन ब्रह्मण्डा * रूप विराट कहन भे अखण्डा
सूक्ष्म थूल काल की करणी * पुनि ब्रह्मा की उत्पति बरणी
बधि हिरण्याक्ष धरा जिमि आनी * वाणी की उत्पत्ति बखानी
शम्भू मनु शतरूपा केरी * कही कथा त्रैसुता निबेरी
पुनि कर्दम का कह्यो विहारा * नव कन्यन ते सृष्टि अपारा
देवहुती अरु कपिलक ज्ञाना * बरणि चौथ अब करत बखाना
दक्षयज्ञ जेहि विधि भइ भङ्गा * सतीमरण कर कह्यो प्रसङ्गा
ध्रुवचरित्र पुनि तिनकर वंशा * कही कथा पृथुकेरि प्रशंसा
पुनि प्राचीन मखै जिमि कीन्हा * कहिनि सीख नारद जो दीन्हीं
तुरै पूजि पञ्चम गहि पानी * बरणी प्रियव्रत केरि कहानी

ऋषभ केर अख्यान सुनावा * भरत मृगी करि जो दुख पावा
पुनि जड़भरत रहूगण ज्ञाना * कथो भूप भा नारि अजाना
द्वीप सिन्धुगिरि सरिता धरणी * रवि शशि उडु मर्यादा बरणी
ज्योतिचक्र पाताल प्रमाना * बरणे नरक महादुख नाना
षष्ठम अजामील इतिहासा * धर्म दूत सवाद प्रकासा
दो० सहस एकादश पुत्र वर, दक्ष किये उत्पन्य।
नारद ज्ञान सुनाय कै, विपिन पठाये धन्य॥
तव तिन साठि सुता उपजाई * तिन ते सृष्टि भई अधिकाई
कश्यप के जन्मे सुत नाना * सुरगुरु हरि का बैर बखाना
बिश्वरूपने बध बासव कीन्हों * हत्या लागि बाटि जिमि दीन्हों
इन्द्र वृतासुर युद्ध बखाना * नहुष भये जिमि पन्नगयाना
चित्रकेतु की कथा सुनाई * भे उनचास पवन जिमि आई
सप्तम कहि प्रह्लाद चरित्रा * वरणाश्रम के धर्म पवित्रा
अष्टम कहे मन्वन्तर चौदा * गज नारद की कथा मसौदा
कूरम कर अवतार सुनाइनि * सागर मथत रत्न जिमि पाइनि
अमर असुर सुरमच्छ कहानी * बलि वामन की कथा बखानी
नवम माहिं रविवंश बखाना * नृप की कथा कीन तहँ गाना
च्यवन शकु की कथा सुनाई * अम्बरीष की कीन बड़ाई
सगर भगीरथ अनि मनभाये * रामचरित प्रमुदित कछु गाये
निमि प्रसग निरणय जग केरी * परशुराम की कथा निबेरी
दो० रविशशिवंशमिलाप कहि, इला बुद्ध सयोग।
धरणी शतनु की कथा, पुनि ययाति कर भोग॥
पुनि यदुवंश कहा बिस्तारी * जामे प्रकट भये गिरिधारी
दशये कहा कृष्ण अवतारा * बकी शकट तृणावर्त मारा

यमलार्जुन तिनका गति दीन्हीं * वत्सबकासुर जिमि बधकीन्हीं
कंसनिधन विद्या जिमि पाई * जरासन्ध की कही लड़ाई
रुक्मिणि हरण द्वारके आये * औरो चरित दशम बहु गाये
ग्यारहें कह्यो यदुनकर नासा * नव योगेश्वरजनक बिलासा
हरि उद्धव को ज्ञान सुनायो * दत्तात्रय द्विज का यश गायो
बहुरि भये प्रभु अन्तर्धाना * सो चरित्र सब कीन बखाना
द्वादशयें युगलक्षण गायो * निकलङ्की अवतार बनायो
होई सम्भलग्राम अभिरामा * विष्णुदत्त ब्राह्मण के धामा
दलि मलेच्छ पुनि सतयुग होई * कुमत सकल की जाई खोई
उत्पति तीनि तरह की भाखी * परलय चारिभाति की राखी
दो० इतनी कथा सुनायकै, शुक मुनि कीन्ह पयान ।
तुरतै अहि काट्यो नृपहि, आयो दिव्य बिमान ॥
चढ़ि नरेश हरिलोकहि गयऊ * जय बानि देव करत सब भयऊ
तब शौनक ते मुनिवर ज्ञानी * जनमेजय की यज्ञ बखानी
बेदन की शाखा उपशाखी * मारकण्डेय की परलय भाखी
द्वादश रवि की कथा सुनाई * सूतम सकल भागवत गाई
जो नर पाठ नेमयुत करिहैं * तासु दोष दुख आपनि हरिहैं
दो० श्री गुरु देवादास के, चरण कमल धरिमाथ ।
अखिलभागवतकेर मत, बरण्यो जन रघुनाथ ॥
पुनि शौनक बोले शिर नाई * नाथ सकल भागवत सुनाई
अब अभिलाष एक उर आई * कृष्णकथा सुन्दर सुखदाई
दशम बहुरि किरपाकरि गावो * करि बिस्तार पूर्वार्ध सुनावो
औ उत्तरार्ध नाथ तुम गावा * इतिहासन महँ सो सुख पावा
तहि ते बालकृष्ण लीला अब * कहौ मोहिं करिकृपा नाथ सब

केहि कारण प्रकटे गोपाला * केहि विधि मार्यो कंस भुआला
बहुरि रुक्मिणी मङ्गल गावो * भा विवाह केहि भांति बतावो
औरहु किहिनि चरित बहुतेरे * सो सब बरहु देव हित मेरे
बोले सूत सुनहु मुनि ज्ञानी * प्रथमै ते सब कहौं बखानी

इति श्रीविश्रामसागरसतमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासराममनेहीकृतकृष्णायनप्रबन्धवर्णनोनाम
प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
भारत मतकरि कंस की, उत्पति कहौं बखानि ॥

नगर एक मधुपुर अस नामा * कालिन्दीतट अति अभिरामा
उग्रसेन रहे नाथ भूपा * पवनरेख रमणी रतिरूपा
देवक उग्रसेन को भ्राता * तिनहुं कियो मनोहर गाता
इक दिन उग्रसेन की नारी * सकलशृंगार किहिसि छवि भारी
सखिन संग लै उपवन देखन * गई पृथक है लागी पेखन
तेहि अवसर दानव इक आवा * भूपरूप धरि हाथ चलावा
बोलो पति ऐसो मन कीजै * दिनगति किहे पुण्य सब छीजै
तेहि माना नहिं कछु अपयोगा * बरबस किहिसि ताहुसँग भोगा
तेहि पाछे निज वपु प्रकटावा * नृपपत्नी लखि वचन सुनावा
रे खल नीच छले तैं मोहा * कोहसि शाप देनिहौं तोहा
बोला मैंहौं दनुज जुझारा * कालनेमि है नाम हमारा
सतयुग समर विष्णु जेहि टाना * शाप न देहु लेहु वरदाना

दो० तुम्हरे हमरे अंश ते, होई बालक एक ।
महाप्रतापी भुजबली, जीती भूप अनेक ॥

राखी असुर निकर बलभारे * बिन भगवन्त मरी नहि मारे

सुनत प्रसन्न भई तब रानी * आई जहँ सब सखी सयानी
हँसि बोली आनिता तब ऐसे * विगलित भये बसन तब कैसे
आवा कपि यक निकट हमारे * आइन भागि तासु भय मारे
तेहि ते अब चलिये निजधामा * सुनि आई गृह निजनिज बामा
गर्भ अवधि सुखसहित बिताई * माघशुक्ल कुज तेरसि आई
जन्मा सोइ बालक अधराती * भये उपद्रव नाना भाँती
उग्रसेन बहु द्रव्य लुटाई * कंस नाम बुध गखिनि आई
भा जब बड़ा बालकन सङ्गा * खेलन जाय करे तहँ दङ्गा
धरि कूप भरन जल देरे * भुजबलमत्त न काहुइ लेखे
मगध देश यक रोज सिधावा * जरासन्ध सों जाय हरावा
तिन के रहीं सुता जुग आछी * लावा नित पग्गि सहसाछी
दो० नाम अस्ति प्रापति मनहुँ, मन्मथ की करवाल ।
लग्यो करन सुखसदनबसि, तिनयुत कंस भुवाल ॥
एक दिवस भूपति ते बोला * नाहीं करिहौ राज्य अतोला
अस कहिकीन्हिसि बंद अमाना * अपना करन राज्यसुख लागा
असुर मगावी विपुल बटोरे * जे रिपु समर मुरे नहिं मोरे
तिन्हैं संग ले यक दिन आना * जीतिनिकर नृपपुर फिरिआना
अगर सुनी देवक की बारी * नाम देवकी रहै कुमारी
तिन की ब्याह करन के काजा * खोजनायँ बर जहँ तहँ राजा
सूरसेन के सुत वसुदेऊ * सबहिन कही उन्हें बरिदेऊ
दो० तब नरेश वसुदेव को दीन्हीं सुता बियाहि ।
दोउदिशि भा उत्साह अति, सो कापै कहिजाहि॥
हय गज स्यन्दन हेम पट, रत्न अनेकन दीन ।
याचक सब परितोषिकै, बिदा बरहिनि कर कीन ॥

पठवन चला आपु सुखमानी * तेहि छण भइ गगन इमि बानी
याहि कन्या के बालक होई * अठवा सुत मारी नृप तोही
सुनि नृप उतरि केश गहिली हो * खङ्ग काढि मारन को कीन्हो
तब बोले बसुदेव पुकारी * प्रमदा बध पातक है भारी
तेहि ते याहि छाडि नृप दीजै * बोला तुम कछु शोच न कीजै
आगे तरु विषफल फलै कोई * डारै ताहि काटि भल सोई
यहि हति तुम्हें परणिहौ आना * सुनि बोले बसुदेव सुजाना
नृपकछुतवभगिनीनहिं घालक * रिपु तुम्हार है इनकर बालक
जबही सुत प्रकटी जगशाई * देहौं तुम्हें तुरत मैं लाई
सुनि विनती दीन्हिसि तबन्यागी * आये दोउ निजगृह अनुरागी
कछु दिनगये समय जब आवा * प्रथमें पुत्र देवकी जावा
लै बसुदेव गये नृप पासा * जानिसि है साचे हरिदासा
बाल बिलोकि दया उर आई * कहिसि शोच निजसुत लैजाई
तेहि अवसर नारद तहँ आये * छिप्र निधनहित वचन सुनाये
कस कहा लरिकाई कीन्ह्यो * जानिबूझि निजरिपु तजिदीन्ह्यो
सुनि महीप असवचन उचारा * अष्टमसुत है काल हमारा

दो० तबनारद लिखिबक्रगाथि सकल भये बसु सोइ ।
को जानै नृप शत्रु जो, प्रथमै आवा होइ ॥

असकहिकसशिशुहिधरिमारेउ * यहिविधि षट बालक सहारेउ
तब देवकी महादुख पावा * मनहीं मन श्रीपति को ध्यावा
कस बश मम कीन्हेसि खीशा * यह बिपदा हरिहौ कब ईशा
बढे पाप पृथ्वी गरुआनी * शिव बिरांचि ते बिनती ठानी
सब मिलि गये जहा भगवाना * अस्तुति करत भये बिधिनाना
सुनि बोले लखि दीन मुरारी * निर्भय होउ देव मुनिझारी

अहिहों मैं नरतन अब आई * हरिहौं सकल भूमि गरुआई
पुरिहौं पुर मनोरथ सब के * भाव विवश कारज जब तबके
आयसु सबहिं दीन पुनि एहु * गोकुल जन्म जाइ तुम लेहु
वेद अचैन धा दीन रुनाई * गोपी होउ सकल तुम जाई
पाव रजाय सबन सोइ कीन्हा * आपु बोलि निजमायहि लीन्हा
दो० कह्यो देवकी के गरभ, है सतवां मम अंश।
ताहि रोहिणी के जठर, करिआयो निरशंश॥
सुनि सोइ करत भई हरिहांसा * जाना सवन गर्भ भा नासा
अष्टम बास आपु हरि लयऊ * बदन प्रकाश चन्द्रसम भयऊ
अंग सुगन्ध बढ़त छवि नाई * कंस दिठिमि लखि बदि डराई
गेरे हथकरी निगड़ पग तारे * जड़ि कपाट पहरू बैठारे
तिनते फहसि होय सुत जबहीं * सुनि तुम हमैं जनायो तबहीं
एहिविधि गये कछुक दिनबीती * जेहि हरिप्रकट सुनहु सो रीती
भादौं मास पक्ष अँधियारा * उडप रोहिणी अरु बुध बारा
तिथि अष्टमी रैन अँधियारी * झिमिकाझमिकिरपतबरबारी
प्रभु आगमन जानि सुर आये * करि विनती पुनि गगन सिधाये
खुलिगे सकल पटल के तारे * भे निद्रावश सब रखवारे
अरु बसुदेव देवकी दोऊ * छूटि गये बन्धन ते सोऊ
जब प्राचीदिशि शशि हरषाना * प्रकट भये तब श्रीभगवाना
क्षीरसिन्धु गोलोक निवासी * शोभासदन सकल सुखरासी
शीश बसत श्रुतिकुंडल लोला * उरविशाल बनमाल अमोला
शंख चक्र गद पद्म बिराजै * मणिभुजचारि निप्रपद भ्राजै
दो० पीत बसन उपवीत उर, राजत नयन सरोज।
अंगअंगपर रघुनाथजन, वारत अमित मनोज॥

लखिवसुदेव ब्रह्म कहँ चीन्ह्यो * अंजलि जोरि दंडवत कीन्ह्यो
पुनिउठि कह्यो तुम्हैं मैं जाना * परमपुरुष हौ तेज निधाना
परम ज्योति अद्वैत अविकारी * निर्गुण ब्रह्म त्रिगुण तनुधारी
कंसासुर त्रासत निशि भोरा * हरहु नाथ मम संकट घोरा
पुनि मुनि प्रभुहि देवकी जानी * बन्धु त्रासयुत विनय बखानी
अहो पुराणपुरुष अविनाशी * निजानन्द निर्गुण गुणराशी
काल व्याल ते मनुज डेराने * सर्व लोक कहँ जात पराने
तजत न मृत्यु जहा चलिजाई * निरभय होत कतहुँ सो नाहीं
तव पद पद्म प्राप्त जो होई * पदरजा सुख पावत सोई
मृत्यु डेरन लागी तब ताही * सेवन चरणकमल जो आही
ऐसे तुम मम उदर निवासी * हे नरलोक बड़ी उपहासी
बोले तब श्रीपति सुनु माई * जेहि ते तव मन संशय जाई
पूरब जन्म मोहिं तुम मोरी * याचेहु बर तुम सम सुन होही
भक्तवछल मे विरद विचारा * भयउ आइ तोहि तनय तुम्हारा
कंस महा खल सुनते आई * तो मोहिं गोकुल देहु पठाई
यशुमति के उपजी मम माया * लावहु तहि उठाय करि दाया
कछु दिन नन्दभवन करि लीला * मिलब तुम्हें पुनि बन्धुसमीला
अस कहि शिशु ह्वै रोवन लागे * दोउ मातु पितु अतिअनुरागे
नार बेनार समेत उठावा * लै बसुदेव चले तम छावा
कालिन्दी जब लगे मँझावन * यमुना बढी छुवन पद पावन
गुलफ जनु कटि गरतक आई * शिर धरि ठाढ रहे टरपाई
लखि प्रभु पाछे पाउँ पसारा * परसि बहा सुरवनतक धारा
उपर शेष सहसफण छाये * उतउन हरि तरि गोकुल आये
प्रावेशे महरि भवन के माही * प्रकटी सुता निहै सुधि नाहीं

शिशु सोवाइ तिन आगे दीन्यो * लै बालक गवन पुनि कीन्हो
तिमिर मिलत बहुरि पट लागे * बन्धन परे पौरिया जागे
सुनि कन्या का रुदन जाना * सो सुत नृप ते जाय बखाना
सुनत कंस आपु चलि आवा * तब देवकी बहुत समुझावा
तदपि न खल मानिसि पग्नौनी * लाइसि श्रानि सुता बिपरीती
पटकन लाग शिलापर नीचा * करते तड़पि गई नभ बीचा
बोलत भई कंस नर हन्ता * प्रगट हांपुका है कहुं अन्ता
सुनि नभगिरा उठा अकुलाई * गिरा देवकी के पग धाई
मैं अपराध कीन सुत मारे * हानहार सो टरत न टारे
कंस ज्ञान उपदेशत कैसे * दीप प्रकाशत आनहि जैसे
कह देवकी सुना हे भाई * निजकृत कर्म न तोरि लगाई
जो जस करै सो तस फल पावै * बिन समझ परदोष लगावै
दुख सुखप्रद जग में नहिं कोई * मनमाने कर सम्भ्रम होई
यह सुनि उठि निजमन्दिर गयऊ * सचिव बोलि अस बूझत भयऊ
कहो कहा अब करिके होई * जन्मा कहुँ अन्त अरि सोई
बोले दुष्ट सुनो महराजा * याव। नो है सहज इलाजा
दो० एक वर्ष के भीतरा, जो सुत जनमें होइ ।
डारहु मक्कल मराय तुम, आपुइ बचो न सोइ ॥
सुनत आज्ञा नि असुरसमूहा * कहाँ कि मारहु शिशु करिहूहा
चले जहाँ नह आयसु पाई * लागे करन पाप अधिकाई
यह इतिहास कहीं मनमानी * अब गोकुलकी सुनो कहानी
रोदन नहिं जब कीन मुरारी * जागी महरि शोर सुनि भारी
बालक देखि परम सुखपारा * गोमय चन्दन भवन लिपावा
गोपुर कलश विचित्र धराये * नवलवधुन मिलि मङ्गलगाये

ध्वज पताक तोरण पुरछाये * देवन हरषि सुमन बरषाये
नन्द सहस दश धेनु मगाई * विप्रन कहँ दीन्हीं हरषाई
मुदित नारि नर बीथिन डोलैं * जयति जयति जयसुतकी बोलैं
उड़त गुलाल सकल तनु साँचा * मारग मध्य मची दधिकीचा
बाजहिं बाजन नाचहिं नारी * हँसि हँसि देहिं नन्दकहं गारी
नारदादि सनकादि मुनीशा * कौतुक लखत फिरत ब्रज ईशा
बहुत कहांतक कहौं उछाहू * प्रकट भये जहं त्रिभुवननाहू
जातक कर्म बेद विधि कीन्हा * बहुबिधि दान याचकन दीन्हा
पुनि ले नन्द छीर दधि छेनू * कंसै देन चले मिलि नेगू
मधुपुर आइ चढ़ाइनि भेंटा * सबन कहा इन के भा बेटा
बहुत नीक कहि भीतर तेरे * तहँ बैठाइ गयो उठि डेरे
तुरत लिहिसि पूतनहिं बुलाई * आवहु मारि नन्दसुत जाई

दो० चली तुरत नवनारि बनि, साजि तन भूषण चीर ।
जहर उरोज लगाइ कै, आई यशुमति तीर ॥
पुरपतनी भौचकि रहीं, रूपवान लखि तासु ।
बिन बूझे आसन दयो, बरणिभागिनिजआसु ॥

सो० लालहिं लखि दुलराइ, देखि दुचित्ती महरिको ।
लीन्ह्यो गोद लगाइ, दीन्ह्यो मुख विषसहित कुच ॥

लागे पियन कृष्ण करि जोरा * भागी करत छुड़ावत शोरा
लीन्हेसि खैंचि प्राण पुर पासा * योजन डेढ़माहिं बपु भासा
दीन्हीं गति जननी की ताही * को कृपालु अस भजिये जाही
कौन पुण्य या कीन्ह्यो भारी * जाने पीन्ह्यो दूध मुरारी
रतन दाम दुहिता बलि केरी * बावन बपु छवि लखि बहुतेरी
मन मे चहिसि पियावौं छीरा * सोइ इच्छा पूजी यदुबीरा

कृष्ण तासु कुचपर इमि राजैं * जिमि वनिशिशु गिरिशृङ्गविराजैं
भयवश लोग निकट नहिं जावैं * दूरिहि ते पाषाण चलावैं
हाइ हाइ करि यशुमति धाई * लिहिनि लला हि ललि गोद उठाई
भवन आनि दीन्ह्यो बहु दाना * कह्यो बचायो हरि भगवाना
पुरवासी सुनि देखन धावैं * बकिहिं बिलोकि विधिहिं शिर नावैं
करि रक्षा मोहन तन फेरी * कहे कि केहुइँ दिहेउ मति फेरी
यहां नन्द नृप आयसु पाई * मित्रै मिलन चले हरषाई
कुशलप्रश्नकहि करि सनमाना * बोले पुनि बसुदेव सुजाना
कालाधीन देह नहिं नेमा * निठुरि मिले सम अपर न छेमा
भल कृपा करि दर्शन दयऊ * अतिसुख मिला सुना सुत भयऊ
जाहु बेगि निज मन्दिर ताता * करत फिरत तमचर उतपाता
रक्षा करत सुतन की रहियो * करुणादृष्टि राम की चहियो
गोकुल आइ दीख सोइ हाला * लगे बतावन सब नर बाला
खण्ड खण्ड करि ताकर अङ्गा * जारत कढ़ी सुगन्ध प्रसङ्गा
एक दिवस कागासुर आवा * पकरि तासु शिर तोरि बहावा
पूर्व विप्रबाढ़ी यह रहेऊ * भइ गुरुशाप भुगति गति लहेऊ
जन्म नक्षत्र परा पुनि आई * पूजन हित न्यौते कुल भाई
श्यामहिं शकट तरे पौढ़ावा * महरि काम में चित्त लगावा
गई भूलि मोहिं निपट बिसूरा * मारी लात शकट भो चूरा
सुनिलरिकनमुखनितुअरुमाता * दौरि लगाइनि पुत्रहि गाता
अचरज मानि कहे नर नारी * टरी कान्ह की करिवर भारी
तृणावर्त तेहि पाछे भेजा * प्रभुहि परे देखा सुठ सेजा
गरू गोपालहि लखि महतारी * जागाते दिहिसि रहे तहँ प्यारी
बौंडर है कीन्ह्यो अँधियारा * लीन्ह्यो गहि गा गगन मझारा

गरु भये प्रभु सरा न भारू * गिरा महीनल गा सहारू
दसथभन नृप पगडुर देशा * दुर्वासा दत मिट्यो कलेशा
छातीपर खेलत सुत पाइनि * नन्दमहरि निजभाग्य मनाइनि
बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हा * गोपवधुन तब लेता लीन्हा
दइउ दीन सब के वर वारा * तुम्हें काम है बहुत पियारा
चौथेपन देख्यो सुत आसी * तदपि न प्रीति प्राणसम राखी
कहै रघुनाथ निरखि प्रभु ओरी * थकित होहिं जिमि चन्द्रचकोरी

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतश्रीकृष्णजन्मउत्साहपूतना-
कागासुरतृणावर्त्तबधवर्णनोनाम
द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशमकी रहसि कछु, कृष्णखण्ड की आनि ॥
कभू महरि मुख चूमिके, बदन पयोधर देत ।
कभू झुलावत पालने, कभू लाय उर लेत ॥

यहि सुखमें कछु काल बितायो * अन्नपराशन को दिन आयो
नन्द बहुत सामा मगवाई * मधु मेवा पकवान मिठाई
सादतिसग्रभि श्यामसुखदीन्ह्यो * बिप्रबन्धु पुनि भोजन कीन्ह्यो
दिन दिन वढन लगे हरि कैसे * शुक्लपक्षकर निशिकर जैसे
प्रकटी तनु आनि चञ्चलताई * गहैं न एको क्षण थिरताई
अगिनिकीशिशुरनखींश्टगारण * धरतकरत तह महरि निवारण
वत्सपूछ गहि कभू भगावें * पुरजन पकरि मातु ढिग लावें
एक दिवस आये द्विज एका * किहिनि रसोई सहित बिवेका
पुनि तह भोग लगाइनि ओटा * पावत दीख नन्द का ढोटा

कह्यो महरि न बहुरि कराई * मोग लगत पुनि पहुचे आई
तब यशुमति दशनी मुनिनेह * धनि धनि मोहिं बोलावत येह
दो० यहि झूठे संसार को, भावत झूठी भक्ति।
फुर अहिलखि रघुनाथजिमि, आगाहितियासुशक्ति॥
कछु दिन गये गर्गऋषि आये * नामकरन वसुदेव पठाये
लखि ब्रजपति पूज्यो बहुभाँती * कहिनिजभाग धन्य दिनराती
सुर ससि दुखप्रद तुम सुखदाता * आजु गोद देहु दोउ भ्राता
संकर्षण बलभद्र रामा * कहे नाम अग्रज के नामा
वासुदेव अरु कृष्ण कन्हाई * इनके नाम अपर बहु राई
मातुलरिपु परनियरन जोग * हरिहैं निलज निडर बरजोग
नातु निम गोपालन करिहैं * अभिमानिनकी अहमिति हरिहैं
मात पिता को आनन्द देह * नृप समसहित जगतयश लेह
अंत फल बहु कहि सुनाई * आये भवन नन्दिगा पाई
एक दिवस खाई हरि माटी * लरिकन कहा महरि सुनि डाटी
मुख पसारि देखरात भयऊ * उदरविलोकि बिसरि तन गयऊ
देखा सकल बिरच मुखमाहीं * कोनि सो बात जो वाम नाहीं
सुर नर असुर नाग नभचारी * रवि शशि उडुसरितगिरदानिभारी
स्वर्ग नरक यम काल निहारा * विधि हरि हर बैकुण्ठ निहारा
इहिबिधि सकल वस्तु दिखराई * मृदिलीलिनि पुनि मदन कहाई
चकित भई स्वप्न मे देखा * साचो साच कि नयनन पेखा
भा विवेक इत ईश्वर चीन्हा * बहुरि कृष्ण मायावश कीन्हा
कहे रघुनाथ धन्य ते प्रानी * जे ऐसे प्रभुसो रति मानी
इक दिन इक ग्वालिनि घरजाई * लागे माखन ग्वाल चोराई
निज परछाई मुकुर लखि बोले * तुमहू खात कहो जनि खोले

सुनि मृदुबचन हँसी सोइबाला * भीतर ते भागे नँदलाला
इकदिन गये अपर घर बारा * छींके ते नवनीत उतारा
ताहिक्षण धनिआइनिचलिआई * बाले तासों बचन बनाई
कूदन रही एक मजारी * मैं उतारि कीन्हीं रखवारी
भले करत तुम दोष लगावा * जानि पड़ा अबहीं कलि आवा
तौहिं तब कहा खाय तुमलेहू * मोहिं नीक नहि लागत यहू
इक दिन गे इक भवन महारी * सौंके लखि दधि पेंदी फोरी
आवत तासु बचन सुनि चीन्हा * निकसे तुरत पकरि तेहिलीन्हा
पूछत भइ कस भागे जाहू * बाले तब तेहि ते सुरनाहू
काहये कह दुख मैं दुख होई * भै नरमुण्डित की गति सोई
दो० स्वेदज दुख बिन कच भयो, लग्योघाम अकुलाइ।
धस्यो बाग शिर बेल फल,गिस्योअधिकदुखपाइ॥
मैया मोहिं उठि मारन धाई * तेहि आयउँ तव भवन लुकाई
तहँ देखी दधि खात बिलारी * सोइ डर इहौंते भागेन प्यारी
सुनि तेहि दीन तुरतही छाँड़ी * दौरि उतारसि आइ दुधाँड़ी
यक दिन धाम अपर के गयऊ * माखन घट लै भागत भयऊ
ते सब दिनप्रति देहिं उरहना * महरि न मानै तिनकर कहना
इक दिन गे कमला के धामाह * धाइधरिसि तेहि देखतश्यामाह
गोपी कहे चला जहँ माई * नित की कसरि निकारी जाई
बाले श्याम मोहिं नहिं शङ्का * बिनकीन्हें नहि लगत कलङ्का
यशुमति निकट देखावन लाई * भये तासु पति तुरत कन्हाई
बोली महरि भईहसि बौरी * खसमैं पकरि देखावन दौरी
पतिमुख लखि लज्जित ह्वै भागी * कह्यो कहा मैं मन्द अभागी
इक दिन पकरि लै आई आना * ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा

खात खसम सुन सब के चीन्हा * हमरे पुत्र निबल करि लीन्हा
यक दिन प्रभु सब सखा बुलाये * तिन ते कौतुक बचन सुनाये
अहो मित्र गोपिन घर चलिये * खाय दधि भाजन दलिमलिये
जो वे मिलि पकरैं बरजोरी * तुम सहाय हूज्यो तब मोरी
यक्मति लखिकोउमकनजूटी * निमिशुधिरयेन विहँगगाछूटी
एक्मते हू पगुल अन्धा * बच्यो अग्नि ते चढि पर कन्धा
असकहि कृष्ण चले अभिलाषी * लागे सब सखा भल भाषी
बदहिं परस्पर सुनिये मीता * चलत महीपर लागत भीता
एक कहैं तुम कादर भारी * हम हरिहैं करिहैं कह नारी
अपर कहैं भागब भय देखी * शून्य सदन प्रविशे इक पेखी
सोन खाइ अरु कपिन लुटाई * निकसि गये तब सो तियआई
देखि विनाश करन भइ शोरा * दिनहीं में को आगो चोरा
निकट जाइ बोली इक बाला * मैं पठन देख्यो नदलाला
मन में मैं पुकारों तोहीं * गुझी केहु करिदीन्हीं मोहीं
इतने में ताहू के धामा * हरि गोरस खायो घनश्यामा
लगी पुकारन घर जब आई * नाहक मैं तव भवन सिधाई
कोउ कोइ बीच्र जबर के परई * लोमाडे सम दुख सोऊ मरई
दधि माखन पकवान अनेका * खाइगयो राख्यो नहिं नेका
पुनि काहू के मन्दिर धसेऊ * देखिलीन तेहि सबका असेऊ
कह हरि साधु हमारे आये * बाबा भोजन हेत टिकाये
मैया मोहि पठयो तव तीरा * मागिलाव दधि माखन छीरा
आये हमैं भई बड़ि बारा * मागों कामों शून्य अगारा
सखा बुलावन आये अबहीं * चलो चलों तैं आई तबहीं
जो चित चहै देहु अनुरागी * धन्यभाग परस्वारथ लागी

साऊ सिंह सम चरित रहावे * भाग्यहीन लखि मृतक न खावै
लाल बदन की सो सुनि वानी * बोली हँसि मनमें सकुचानी
प्यारे जो ऐसी है बाता * तो मेरो सो तुम्हरो ताता
संचित घृत दधि माखन छीरा * हरषिनआनि धर्‌यो हरि तीरा
चले सबन के शीश धराई * लागे सब मिलि चोहट खाई
यह कौतुक सब गोपिन देखा * वञ्चक धूर्त छली अति लेखा
बोली एक तासु घर आई * आजु भली तू गई ठगाई
सुनि सो कहत भई हे बाला * मति बौराय गयो लै लालो
जाय श्याम ढिग बोली बानी * झूठ बखानि वस्तु कत-आनी
लाल कही हम झूठ न भाषा * मैं महन्त ये सब शिषि साषा
ढीठ जानि सो मारन दौरी * भागे दखिमुख मारि हथौरी
यक दिन गये भवन मे आना * जडि कपाट लागे दधि खाना
ताही क्षण धनिआइनि आई * टेरत बार बार अकुलाई
कह्यो श्याम मत टेरन देहू * निरभय वस्तु खाइ तुम लेहू
तेहि जब द्वारखुलत नहिं जानी * तब पर मांगि निसेनी आनी
भीति लगाइ चढी छत जबहीं * कृष्ण खोलि पट भागे,तबहीं
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई * लगी देखावन सखी बोलाई
यहिर कहत भयो यह दाहू * कहो इहा किमि करिय निबाहू
जो यशुमति ते जाइ पुकारे * लखि नदान तह हमहीं डारे
दो० जिमि अबूझ नृप के रहै, बातन केर निआउ ।
यतिहि चढ़ावत सूरिपर, चढ्यो बात सुनिराउ ॥
जो प्रथमें मोहिं होतो ज्ञाना * मेरे घर आयो है कान्हा
तो गहि भवन यशोद लौती * सुतकी सब लीला दिखरौती
तब जागी मम साथिन रामा * बीते समय वृद्ध किस-कामा

यक दिन गऊ कान्ह पकरि लुटाया * इन नैननि मृदु वचन सुनाया
तुम्हरी क्या लगौ मुन मोरे * देहु अशीश करौ सब छोरे
मेरहु प्राण ते बहुत पियारो * बिन अपराध जान नहिं मारो
निज नयनन देखिहौ जब मोरा * देहौ दण्ड धरहु मन धीरा
पैर दण्ड तुम कछू न माने * यक दुइ वर भभकी दे दाजे
नृप बिन शीश भीति बिन सारे * बिगरि जात सुत बहुत दुलारे
नारि निपुण नर बातने लागे * मूप बजाय सुतर न भागे
दो० यक दिन मैं गृह एक के, बैठे देख्यो ताहि ।
पाछे तें मूंदे नयन, सो साँगे को आहि ॥
बूँदे नयन सब सखन सों, लै गोरस समुदाय ।
गये निकरि जब दूरि तब, आपहु भगे खिसाय ॥
जिनके घर नहि जाहिं ते, खिंघते कहँ निहारि ।
कब ऐहैं हमरे भवन, ख़ैहैं माखन चोरि ॥
तब ताही के मन्दिर जाहीं * अतिनिर्भीक दाँय माखनमाहीं
खटक सुनत तुरतै भजि जाहीं * उरहन कं मिस देखन आहीं
सुनि सुनि श्यामवदन की बाना * प्रमुदित होइ बात सोइ ठाना
एक दिवस मिलि गोप लुगाई * भवन आइ बोली सुनु माई
अबै तो कान्ह चरम पट करै * करत रहत छल बल बहुतेरे
बड भये धौं करिहैं काहा * यही अँदेश बड़ो है राहा
चितवत जोहितनमृदु मुसक्याई * मो बिन मोले जात बिराई
इटी बस्तु फिरि ताहि न छाडै * माखन हित सब के घर माडै
करि नाना बहु भाँति बहाना * को धौं गुरु मिला नहिं जाना
थैर बच्छ ताजि धेनु पियाई * सोवत लरिकन देत जगाई
दो० कसूं अँधेरे भवन में, आपौ रहत दुराय ।

पाछे दीप जगाइ कै, भाजत ताल बजाय ॥
बोलीं महरि सुनो हे भैया * तुम्हरे विधि दीन्ही बहु गैया
दधि माखन भावै सो खाहू * परघर कत चोरन को जाहू
माखनचोर कहैं सब नारी * सुनि तोकों नाहिं लागत ख्वारी
फिरत धरावत मेरो नामा * मातु न देत होयगी धामा
पर अनाज कीन्ह का पावत * नाहक निर्मल पितहि लजावत
मातु वचन करि श्रवण कन्हाई * बोले तब नम्रता जनाई
हे मैया मैं खेलन जाहू * काहू के घर कछु न खाहू
ये मोहिं पकरि लै जावैं * नाचि भेष करि संग पिसावैं
कबहू गोमय हेल धरावैं * कबहू घरकी टहल करावैं
कबहूंक छुरिमिलि ठाढी होहीं * गावैं आपु नचावैं मोहीं
मागि गुलचन मेहनति लहीं * तेहि पर आय उरहना देहीं
दो० न्याय कहत बुध वाम का पलटत लगै न देर।
तियछलख्यो पति कुपथ में, पतिहि करेडतेहिजेर ॥
हमहू निरबल विप्रसम, करैं काल गुदरान।
आखिरआहि रघुनाथभनि, हैं न भेक कर जान ॥
औरौ सुनौ कर्म इन केरे * मले सुअक्ष अक्षमा मेरे
कबहुंक पकरि भिजावैं पीठी * कबहुं तकैं निरछी करि डीठी
कबहुंक हमैं द्वार बैठाई * आपु सहित पति पौढ़ै जाई
सुनि बोली गोपी मुसक्याती * सुनो महरि निज सुतकी बाती
कहती हौ जाननि कछु नाहीं * भरे सकल गुण इन के माहीं
तुम्हरे निकट साधु नै दोसै * हैं खोटे अति विश्वा बीसै
झूठ कि मीठ मान की मूर्ती * कपट रहन गढ़ दिया मूर्ती
दो० सुनारहे कोउ चतुर नर, नृप की भेटिप्रमान।

यचि आयो वर अनत इन, तेहि के काटे कान ॥
सुनि यशुमति कह सहित सनेहा * तुम जानों की जानै येहा
तुम्हरी इन की बात अगूढ़ी * बूझ न परत मोहिं मति बूढ़ी
यक दिन महरि श्याम को लैकै * परी पलंग पर तकिया दैकै
लागी कहन कथा सुखदाई * जिमि अवतार लीन रघुराई
बाल बिनोद बिवाह उछाहू * बिपिन गवन भूपतिकर दाहू
भरत सनेह लषण सवकाई * काहे खरदूषण केरि लड़ाई
कहेउ जानकी कर हरण जब * कह धनुशर कहि कृष्ण उठे तब
यशुमति डरपि उछग लगायो * बोलि सयानेहि फूक डरायो
कबहुँ करावैं भोजन नाना * कबहु शृंगारैं रूप निधाना
कबहुँ वस्तु मागैं हठ ठानी * जेहि तेहि भाति देति सो रानी
कबहु धेनु रचि पसरु चरावैं * कबहु भूप बनि नीति सिखावैं
दो० जाके कुल की रीति जस, गहत शिशुहि सोइ बाट ।
नृपसुत सुन्नी के भयो, तहउँ टटे नृप ठाट ॥
यक दिन कह्यो मातु मोहिं दाऊ * ग्वालन निचवहु तालि जाऊ
मासे कहैं मोल को लीन्हों * नन्दबदलि बसुदेवहि दीन्हों
मात पिता गोरे तैं कारो * वे सूधे तैं कुटिल लबारो
सुनि मा हँसि अवलम मुखचेरो * मैं जननी तव तैं सुत मेरो
बहुरि कहेउ मोहिं बिपिनलवाई * कहि दाऊ आवत कुलल्याई
हौं हरि रोइ भगत तव तीरा * सलहू न नेक धरावत धीरा
बोली मातु बुरो नैं जानै * फिरि क्यों खेल तासु संग ठानै
अब तैं कहो रहब घर माही * तौं मैं पकरि पिटावौं ताही
तब कछु कान्ह न उत्तर दयऊ * कहँ रघुनाथ हरषि उरलयऊ
ब्रह्मादिक यशुमति मुख देखैं * सर्वाराज्य धन करि लेखैं

कह नृप कौन धर्म इन कीन्हा * कृष्ण बाललीला सब दीन्हा
कह शुक बसु बसु द्रोण प्रधाना * धरा सप्रिय राधे भगवाना
विधि आये तिन तें इन काहा * सर्वाराध्य होइ शिशु लाहा
एवमस्तु कहि विधि तेहि भावा * नन्द महरि सोई सुख पावा
प्रथम रहे दशस्यन्दन भ्राता * अब लाहेउ निखवरसुखताता

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतकृष्णदाविचारविवाक्यविलास-
वर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं दशम की रीति कछु, ब्रह्मबवर्तक जानि ॥

यक दिन सुनो नन्द की रानी * मथत रही दधि लिये मथानी
पृथुकटि अति उत्तम पट धारे * तापर किंकिणिजाल सँवारे
सुत अनुराग स्रवत कुच क्षीरा * कर बर,कुण्डल लोल शरीरा
श्रमकनतनप्रकटअति लसहीं * सुमन मालती शिरतें खसहीं
आइ कृष्ण तह भोजन मागे * मथि लीजै तब दीजै लागे
ताही समय दूध उतराना * दौरी तुरत उतारन जाना
तब प्रभु निजमन कीन्ह विचारा * हमते भा पय बहुत पियारा
गहि पाथर मेटुकी मह दयऊ * फूटि सकल गोरस बहि गयऊ
यशुमति देखि क्रोध कियो भारी * श्रम करि पकरत भई प्रचारी
ऊखल में पुनि बाधन लागी * रँगी युगांगुल रजु पुनि मागी
यहि प्रकार रसरी बहु जारी * युगअंगुल घटि रही बहोरी
गोपी खडी कहैं सब नेरे * देख्यो आजु चरित सुततेरे
अबनक कहो मोर सुन सूधा * काढत आजु छटीकर दूधा
जाना श्याम मातु खिसियानी * लीन बधाय एक रजुमानी

दो० करत यहूं धम्माल नद, महरि मुदित मन होइ।
यमलार्जुनकी सरनि करि, चले घसीटत सोइ॥
धनपति के सुत जानिये, नलकूबर मणिकण्ठ।
नारद केरे शाप ते, भये दोऊ तरु ठण्ठ॥
जलविहार युवतिन विषे, देखि नगन मनवार।
छोड विटपकाहि पुनि कह्यो, हरि करिहैं निस्तार॥
निकसे प्रभु तिनमध्य में जाइ * उखरत गिरत गिरे अरराइ
दिव्य पुरुष प्रकटे तहँ दोई * लागे करन विनय इमि सोई॥

रोलाछन्द॥

जयति जयति जगदीश ईश तव चरित अनन्ता।
सुनत कहत थकहिन कहत इमि सब श्रुति सन्ता॥
जयति मच्छ वपुधरण सत्य व्रत प्रलय देखावन।
जय वराह बनि नाथ कनकदृग दलि महिलावन॥
जय कूरम गिरिधरन रतन चौदह उद्धारन।
जय नृसिंह हति हिरण्यकशिपु प्रह्लाद उवारन॥
जय वामन बलि छलन चरणनख सुरसरि पावन।
जयति परशुधर सहसबाहु अरि विप्र रिझावन॥
जयति राम सुरसुखद सन्त मुनि दशमुख गञ्जन।
जयति कृष्ण कंसारि असुर भगनारत रञ्जन॥
जयति बोध श्रुति दोष दनुजकृत पुण्य छुड़ावन।
जयति कलकी निधन नीच क्षिति करिहौ पावन॥
जयति व्यास वेदार्थ शोधि कृत विविध पुरानै।
जय पृथु पृथ्वीदुहुन पूजि प्रतिमा सब ठानै॥
जयति हंस विधि सुतन प्रश्नकर उत्तर दीन्हो।

जय शम्भू मनु आदि अजय जिन परघट कीन्हों ॥
जयति ऋषभ अद्वैत मार्ग जरि कुधन देखाई ।
जय हय गरदर दनुज मारि निगमान्यो राई ॥
जयति धेनुप्रद काम प्रकट भे मुनिजन काजे ।
जय ध्रुव करि हरिभजन अचल अस्थान बिराजे ॥
जयति धन्वन्तरिरूप जगत रोगै निरवारक ।
जय बद्रीपति शक्र केर मद मान प्रहारक ॥
जयति कपिलसुत सगर दहन गङ्गा दधिवासी ।
जय दत्तात्रय ज्ञान भक्ति बैराग के राशी ॥
जयति देव ऋषि जानि रमापति इच्छा ठानै ।
जय सनकादिक ब्रह्म निरत रघु मुनि सुख मानै ॥
जय इति चौविस वपुष धस्यो निज भक्तन हेता ।
औरौ होत असमाप मापि को पार्व तेता ॥
दो० जय प्रभु याही रूप मम, हृदय बस्यो छबि सिन्धु ।
शीश नाइ रघुनाथ निज, लोक गये दोउ बन्धु ॥
जासु नाम जग जालते, टेत विनय भ्रम छोरि ।
सोइ प्रभुजनवशमातुकी, तजत न बाधी डोरि ॥
खग मृगादि शठ शापुते, कीन्हे अधिक महान ।
अस प्रभुको निजईशता, तजि राखी जनमान ॥
छनियशुमतिनिरखतिदिगआई ॰ बन्धन छोरि लिहिनि उरलाई
कौरनिआदि लगी सब ग्वाला ॰ गोरस हित बाँधे भगवाना
धन गोरस अरु जन्म तुम्हारो ॰ जाने सफल ताहि तुम गारो
रामजननि कछु कह्यो न तेहू ॰ मैया न लिय दाम न देहू
नारी सकल नन्द घर आये ॰ सुनि यशुमतिरों बहु सिखाये

तवसवहिन मिलि कौन बिचारा * इहां होत हैं विघ्न अपारा
चलौ वसी वृन्दावन माहीं * सकलसुपास सहित सो आहीं
चले सकल वृन्दावन आये * वसे सुथल जेहिका जो भाये
श्रीवृषभानु खबरि यह पाई * सहित समाज रहे तहँ आई
वृषभानुकुँवरि नन्द घर आवै * नंदलाल कीरतिपुर जावै
बालक प्रीति परस्पर देखी * तात मात सुख लहे बिशेखी
तहां एक दिन नन्दकन्हाई * गये खरिक लगवावन गाई
आई तह वृषभानु दुलारी * नाम राधिका छवि अधिकारी
जासु अटर ते भयो बिराटा * दीन चलाइ कृष्ण तेहि डाटा
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई * भली बात व्रज बिहरत सोई
जाके नयनन मध्य निहारा * चौदह रत्न दशों अवतारा
चारिचारि खग मृग फल फूला * लखत जासु वपु देखि समूला
दो० भजतविविधअवतारजब, बहुत जन्म करि यन्त्र ।
तब राधापद मिलत इमि, कह हरि लीलातन्त्र ॥
जे राधा राधा अस कहई * राधे कृष्ण तिनके वश रहई
हरि ब्रह्माण्ड पुराण मँझारी * कह्यो राध आराध हमारी
तेहि प्यारी को जब हरि देखा * भये मुदित इत प्यारिउ पेखा
तेहिछण झुकि आये घनकारा * नन्द दीख जब आत अँधियारा
राधा ते बोले घर जाहू * श्यामै दिहो सौंपि सबकाहू
कर गहि चलत भई धरि धीरा * आये दोउ यमुना के तीरा
तहँ लखि माया की प्रभुताई * मणिमन्दिर शुचि सेज सुहाई
श्याम सहित पर्यंक पधारी * परत पेखि तेहि तरुण बिहारी
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजै * मानुष जन्म पालि सुख लीजै
इतनो कहत स्वयंभू आये * सुनि समस्त सामग्री लाये

मङ्गलमय मण्डप तहँ छायो * वेद रीति सब कर्म करायो
विधिवत ब्याह होन तब लागा * गावैं सुरी सहित अनुरागा
कन्यादान विधाता दीन्हा * विधिवत कृष्णचन्द्र सो लीन्हा
सबविधिब्याहिचलनजबलागे * टारहु भूमि भार वर मागे
कहि जब गये भये प्रभु यौवन * पूज्यो प्रिया मनोरथ को मन
बालरूप ह्वै पुनि गृह आये * श्रीजयदेव चरित ये गाये
इकदिन कृष्णवृभिन्नअच्छा * ग्वालन साथ गये लै बच्छा
लागे विपिन चरावन जबहीं * आयो असुर बच्छ बन तबहीं
कृष्ण पूछ गहि महि दैमारा * मरिगा जब तब सबनै निहारा
एक दिवस यमुना के कूला * रहे चरावत बच्छ समूला
धरि बकरूप बकासुर आवा * लिहिसिलीलिश्यामहिंसहचावा
दीनोसे उगलि अगिनउरजारी * निकसे तुरत चोच गहि फारी
बल बिलोकि सकल हरषाने * गावत गुण निजघरन तुलाने
इक दिन खेलत रहे मुरारी * आवा निकट प्रलम्ब मुरारी
खेलन लाग बालकन सङ्गा * जब तब करै सबन ते दङ्गा
जानि गय बलदेव कुमारा * पकरि ताहि पुहकर तै मारा
दिव्य रूप ह्वै हरिपुर गयऊ * मुनि दुर्लभ कैसे पद भयऊ
इन के पूर्व जन्म कर हाला * कहा सोऊ तुम सुनो भुवाला
बक प्रलम्ब केशी बत्सासुर * गन्धमदन गंधर्व के सुत फुर
मुनि दुर्वासा शिष्य किये सब * हित उपदेश दियो तिनको तब
पद्म सहस बरत तुम धारौ * बिष्णुलोक में जाइ बिहारौ
लगे करन सो धरि उरमाहीं * हरि में प्रीति जनन में नाहीं
मिले न तब शिव हारि लाये * दीन्हो शाप उमा लखि पाये
होउ असुर तुम चारौं भाई * पतिमुख कृष्ण करुणा आई

बोली हरि कर मृत्यु पैहो * असुरयोनि तजि हरिपुर जैहो
तेई असुर है यह गति पाई * अब सुनु अपर कथा सुखदाई
इकदिन सखन सहित नँदनन्दा * रहे विपिन फादन फरफन्दा
तहँ अहिरूप अघासुर आवा * इक इक योजन अङ्ग बनावा
बदन पसारि रहा तिन तीरा * करि विचार प्रविशे सब वीरा
श्याम गये जब तब मुख चापा * बाढत भये कृष्णकरि दापा
उदर फारि पुनि बाहर निकसे * सखनसहित विषधरलखि विकसे

दो० भूप वान्तिकापुरी को, पुण्यकार मृगबद्ध ।
कौन देखि गौतम दियो, शाप होइ असरद्ध ॥
करी बीनती भांति बहु, वारे तन धन प्रान ।
दीनदुखितलखिलोलमुनि, बोले ऋषि सुजान ॥
एहैं जब गोलोक ते, ब्रज मे कृष्णकुमार ।
मृत्यु पाइ तिन हाथ ते, होई तव उद्धार ॥

सोई भयो अघासुर आई * अपर कथा सुनिये ऋषिराई
एक दिवसगे पुलिन मभारा * निजनिज भोजन सबनउतारा
लगे खान स्वाद मुख गाई * सो सब चरित देखि विधि आई
चहुँदिशि उडुगन बाल अनन्ता * मध्य विराजत शशि भगवन्ता
देत श्याम सब को सब श्यामैं * तब तौ ब्रह्म रह्यो दुविधामैं
जिमि भुशुण्डसँगखलत गेहा * भये भ्रमित तिमि कृत संदेहा
ये अवतार कवन विधि आहीं * सबहिन की जूठनि जे खाहीं
हमहुँ बिवाहु गयन इकबारा * अब कछु चहीं प्रभाव निहारा
अस बिचारि बछरा हरि लेगे * ढूढन चले कृष्ण सब हरिगे
बालनहू को तब हरि लीन्हा * जगनाश्याम चरित अज कीन्हा
तुरत वच्छ बालक रचिलीन्हें * ब्योका त्यों कछु जान न चीन्हे

माता करैं अधिक अस्नेहा * धेनु पियावैं तजि नव गेहा
सन्तत करैं चरित प्रभु सोई * जाना राम अपर नहिं कोई
बर्षएक यहि बिधि चलि गयऊ * इतउतलखि अज बिस्मित भयऊ
पुनि सब बाल लखे हरिरूपा * सेवत पद बिधि भव सुरभूपा
ब्रजबासी सब बिबुध समाजा * बहुरि दीख प्रभु आप बिराजा
वस्तु गई सो चिन्ता भारी * लज्जित ह्वै अज हृदय बिचारी
दरशे अति मेरो अज्ञाना * त्रिभुवनपति तिनते छल ठाना
निकट आइ शिरनाइ बिधाता * लागे करन बरण पुलकाता
नमो नमो त्रिभुवनपति स्वामी * नमो सकल जग अन्तर्यामी
श्याम शरीर पीत पट काधे * गुञ्जाभूषण दोउ कर बाधे
बिम्बाधर आनन छबि सीवा * जलजमाल कौस्तुभमणि ग्रीवा
शीशमुकुट श्रुतिकुण्डललोला * अङ्ग अङ्ग प्रति बसन अमोला
अरुण अमि पदुमाक्ष बिशाला * करिकरभुज तिलकावलि भाला
कुञ्चित कच नासिका सुहाई * बेणु बादपर पालक गाई
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा * भयो अनुग्रह हेतु हमारा
अहै सो इच्छामय बपुमाहीं * पञ्च भूत की रचना नाहीं
असिसमर्थ्यनहिं मोहिं मँझारी * जानी महिमा अगम तुम्हारी
यावत अस बपु हृदय न धरहीं * आतमरूप बिचार करहीं
तावत ज्ञान परिश्रम आही * अस बिचारि बुध त्यागत ताही
सुनिय सदा यशबिमलतुम्हारा * साधुनमुख निकसत जो सारा
काय बचन मन तुम को ध्यावैं * तुम्हरे जन मन में अतिभावैं
जीवनमुक्त अहैं ते प्रानी * जे तव पदपङ्कज रति मानी
यद्यपि हौ तुम स्ववश अजीता * तद्यपि इन तुम को प्रभु जीता
तावत हैं रागादिक चोरा * यावत गृह के बन्धन घोरा

तावत मोह निगड़ परे सोई * यावत कृष्ण न तव जन होई
भक्तितुम्हारि सकलसुखदानि * है कल्याण करन मन भावनि
तेहि तजि केवल बोधहि लागी * करत यत्न अनुदिन अनुरागी
तिनकर रहत परिश्रम शेखा * तरु अस्थूल सघन कस लेखा
हो स्वतन्त्र तुम अपनी माया * करि विस्तारत भुवन निकाया
तुमही शोभित हो जगभूपा * सृष्टिकाल तहँ ब्रह्मस्वरूपा
तुम जगपालन काल मुरारी * संहारण हित तुम त्रिपुरारी
भूरजकन नभ नखत जे आहीं * कालपाइ मापति होइ जाहीं
हितकारी तुम्हरे अवतारा * तिनके चरितनकेर न पारा
तेहिते करुणा दृष्टि तुम्हारी * है सब पर सामान्य मुरारी
आपन कीन कर्म हैं जैसे * अनायास भुक्तत नर तैसे
नमस्कार तिनको बड़भागी * जिनकर मन तवपद अनुरागी
ते अनित्य भवसागर एहा * तरत बत्सपद सरिस सनेहा
तुम अनादि मैं आदि अजानी * मायापति ते माया ठानी
तुम्हरे आगे का मैं तनका * बृहद समूहकेरि जिमि कनका
कहँ मम सात विताकी काया * कहँ तुम अगणित अण्डउपाया
सकल सृष्टि तव उदर मँझारी * तेहि ते क्षमिये गुनह हमारी
बाल गर्भ गत चरण चलावै * मातु शोचि अपराध न लावै
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी * है तुम से उतपत्ति हमारी
जब मैं नाभिकमल ते भयऊ * तब फिरि ताके भीतर गयऊ
वर्ष एक शत खोज्यों तोरी * तबहु न देखिपरेउ तुम मोही
तप करि तहँ देख्यों तव रूपा * कोटि भानुसम तेज अनूपा
तमकरि अन्धचन्दु अभिमाना * तुम ते पृथक ईश मैं जाना
तुम मम नाथ दास मैं तोरा * क्षमहु देव अब अवगुण मोरा

दगा योग्य मैं अहौं तुम्हारी * ईशन के तुम ईश खरारी
सुनि बिनती चतुरानन केरी * पोछे दग प्रभु निजं पट फेरी
जाहु धाम कह कृपानिधाना * तजि मद मोह तर्क बिधिनाना
सुनिअजपद्रजधरि शिरगयऊ * बच्छ बाल लै आवत भयऊ
जहँतहँ धरि निजलोक सिधाये * बरष बटोरि कृष्ण तब आये
बोले बालक सुनिये ताता * तुमबिन नहिं खावा दधिभाता
लागे बहुरि सकल मिलिखाना * बिधिछलबल काहु नहिं जाना

गीतिकाछन्द ॥

जाना न काहू मरम भोजन खाय अस बोलत भये।
फल ताल लागहै सब सखा मिलि खान के हित बलगये॥
धरि रूप रासभकेर धेनुक असुर यक तहँ आयहू।
पग पकरि पटकेहु बिटप पर बलराम सबहुन पायहू॥

सो० बलिसुतसहसिकनाम, हरिजन बनअप्सरालखि।
भा मुनिथल बशकाम, दीन शाप उद्धार कहि॥

दो० सोइ यह धेनुक असुर, भयो गयो गति पाइ।
मातन ते रघुनाथ सब, कही कथा घर आइ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
राममनेहीकृतकृष्णबलबन्धनयमलार्जुनउद्धारराधिकाबि-
वाहनब्रह्माबच्छहरणधेनुकबधकरनकथावर्णनो
नामचतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

दो० सुमिरिरामासियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
कहौं दशम की रीति कछु, गर्गअदित मतआनि॥

बाल चरित बरणे अतिपावन * और सुनो जे हैं मनभावन
इक दिन रामै भवन बिहाई * अपना गरे चरावन गाई

पहुँचे जब कालीदह तीरा * पियत भये गो बालक नीरा
मरे तुरत पुनि कृष्ण जियाये * सुरभिन निजनिजबच्छपियाये
लागे खेलन गेंद कन्हाई * चढे बिटप शिशु मारिसि धाई
उछरि गेंद कालीदह गिरेऊ * ताहीं सङ्ग कूदि प्रभु परेऊ
गये सपदि काली के तीरा * निरखि चिपटिगा सकलशरीरा
निचुकि चढे ताके शिर कूदी * गरुये ह्वै डारे फन खूँदी
चला रुधिर मुख चखुन तेरे * शिथिल अङ्ग भे बिन मद केरे
नाथि लीन तब कृष्ण कृपाला * बिनवत भई तासु की बाला
नौमि कृष्ण भञ्जन भयभारी * नटवर बेष सुभग सुखकारी
पति अपराध छमिय भगवाना * मोहबिवश महिमा नहिं जाना
सुनि बिनती बोले यदुराई * रमणक देश बसहु अब जाई
है हम ते खगपति ते रारी * अनन गये डरि है सो मोरी
सब अहि देत रहे भोजन तेहि * बसरीपर हम दीन न हित यहि
भिरत भिरेन हमहु धरि धीरा * हारि पराय दुरेन यहि तीरा
इहां शाप सौभरि ऋषि केरी * तेहि ते गरुड़ करत नहिं फेरी
कबहुँ बैठि तरु उगिली मार्जारि * कह मुनि पुनि आवत जेहां जरि
मेरो चरण चिह्न तव माथा * लखि अब बोलनिहिं खगनाथा
दो० पूर्व जन्म को भूप तैं, मदबश ममपद माथ।
लिह्यो छिद्यो ताजिशिरसितेहि, भयोसर्पमदमाथ॥
इहां निकट ठाढे ब्रज लोगा * रोदन करहिं सकल बश शोगा
यशुमतिनन्द न धीरज धरहीं * सङ्कर्षण उपदेशहि करहीं
धरहु धीर गुण गुणि मनमाहीं * कतहुँ जाइ कृष्णहिं भय नाहीं
तेहि अवसर उछरे यदुनाथा * काली सहित चढे तेहिं माथा
लागे करने निरत पुनि कान्हा * हरषे सकल मिले जनु प्राना

उतरे जब तब अहि शिरनाया * कुटुबसहित रमणकहि सिधावा
कृष्णहि सब भेटे पुरवासी * तात मात प्रमुदित चरदासी
तेहि दिन रहे सकल तेहिघाटा * असुर एक यकटोरे ठाटा
चहुँदिशि झाखर रुधि बनाई * तेहिवनदाहिमि आगि लगाई
भये बिकल सब शरण पुकारे * कारि दव पान तुरन्त उबारे
रोहित चिह्न न नेकु लखाना * आये भवन करत गुणगाना
तेहि अवसर वरषा ऋतु आई * सचराचर सब के सुखदाई
निज निजगृह सब छावनलागे * जिमि चेतहिं बुधजरपनआगे
उमड़िघुमडि नभ जलधर आये * दान देन जनु सुधनिक धाये
बगुल पाति सोहत यहि भाती * जिमि सुकृतिनउर टेकसुहाती
निर्तहिं मोर मुदित घन देखी * गृही विरक्त जिमि हरिजन पेखी
बरषत जलथल अलभय चीन्हे * जिमि सम्पति रघुपति के दीन्हे
भई कीच नर चलत निहारी * जिमि सज्जनजगमाहि बिचारी
बोलन दादुर नहि अलसाना * जिमि शठकरत अकारण बाता
तडितचमाकि फिरि जात निलाई * जिमि जगतनधनसुततियभाई
बहुरि नीर आवत सरमाहीं * जिमि सद्गुण सब सज्जनपाहीं
दो० जोतहिंबवाहि किसानमहि, ऋतुकर बीजप्रमान।
जिमिशुभसाधनकरिकराहि, युगकर धर्मसुजान॥
अविट पाइ तृणसकुल जमा * विषयसगाजिमि बहुविधिकामा
विविध जीव अकंट महि आई * प्रजा बढत जिमि नृपवर पाई
जरत जवास आपने दोषा * जिमि कुलनाशहोत द्विजरोषा
फलफूलिविटपअवनि झुकिआये * जिमि सुसाधुसुखसम्पति पाये
लागत मधुर बचन पिककेरे * जिमि हरिचरित सन्तमुख तेरे
प्रकटत कबहुं छिपत इमिभानू * यथा सुसग कुसगति ज्ञानू

दो० बरष्यो जल पर ना जम्यो, ऊषर में तृण कोइ।
हतभागिनि के ज्ञान जिमि, कथौ सुने नहिं होइ॥
चलीं क्षुद्रसरिता उमडि, जिमि थोरे धन नीच।
अचल होत जल जलधि महँ, यथा जीव हरिबीच॥
द्वै महिना की वृष्टि ते, भयो अन्न सम्पुष्ट।
राम नाम के रटे जिमि, होत भक्त जन तुष्ट॥

यहि विधि वरषाऋतु के माहीं * वनवछरू तिनमम कुटलाहीं
कबहु तोरि फल लेतं गोपाला * बोलें कबहुँ द्विजन की बोली
कबहु करैं षटपद गुञ्जारा * कबहु कीश बनि कूदहिं डारा
कबहू यक ह्वै वेणु बजावैं * देवनारि तन सुधि बिसरावैं
गौ वृषभादि विपिन पशु जेते * मुखतृण दाबि सुनैं धुनि तेते
वत्स नहे मुख थन राहजावैं * नचहिं मोर मुद थोर न पावैं
खग-सब शब्द सुनै अनुरागे * यमुनाजल बहि सकत न आगे
आतप ते पावस ह्वै जावै * पावस से आतप दरशावैं
उठे फूलि तरु शिला पसीजै * मुनिजन सकल प्रेमरस भीजै
व्रजवासी सब रहे निहारी * फरकिउठहिंशिरशिवशिरधारी
वन्द कहिं जय तव मन लागे * प्रमुदित ह्वै निज कारज लागे
यक दिन श्याम सखनयुत भाये * चलत चलत मुञ्जावन आये
चहुँ दिशि ते दावानल लागी * जाइ कितै गो बालक भागी
शरण भये तव नयन मुँदाये * दलै सब दव बाहर आये
मास -दिवस भरि गोपकुमारी * देवी की पूजा अनुसारी
कात्यायनी कृपा अब कीजै * नन्दसुवन हम का पति दीजै
खात पियत अरु सोवत जागत * हरिपरिहारचित अन्त न लागत
अजहु जासु मन होइ मगनरस * कृपासिन्धु हरि होइँ तासु बस

दो० यक दिन सब करती रहैं, यमुना मे अस्नान।
चीर हरे तहँ आइकै, औचट श्याम सुजान॥
लटकाये पट कदम कि डारी * मागहिं सबमिलि गोपदुलारी
चीर देव तुम्हरो हम तबहीं * जलते बाहर ह्वैहौ जबहीं
निकसीं सब कर तब करिओटा * बोले बिहँसि नन्द के ढोटा
दोउ कर जोरि बिनय रबिकीजै * करत भई सब तब अब लीजै
पूजेहु तुम जेहि हेत भवानी * सो हम प्रकट भयन बरदानी
जबतक जग की लाज न खोवै * तबतक मोहिं न प्रापत होवै
रासकहि अमित बनाये अङ्गा * कीन्हीं केलि सबन के सङ्गा
कमला ललिता बिमल बिशेशा * चन्द्रावलि सुखमादिक शेशा
जब तब सब के सदन बिहारी * जात कहत यक एकहि प्यारी
शयन बयन सुनि गोपिन केरे * करि आदर आवहिं चलिनेरे
यक दिन गे राधिका निकेता * बैठारिनि निज ढिग करि हेता
श्यामबदन लखि आपनिछाहीं * अपर नारि जानी मनमाहीं
कीन मान हरि नेह जनावा * दूती बनि बहुभाति मनावा
कबहू बैठैं पनिघट जाई * काहू को शिर धरैं उठाई
काहू कर घट डारैं फोरी * ते यशुमति ते कहैं निहोरी
यक दिन दधि बेचन के हेता * चलीं सकल ब्रजबधू सचेता
सखन सहित यदुनन्दन हेरी * मारग बांच लिहिनि सब घेरी
दीजै दान जान तब पैहौ * हठ कीन्ह पाछे पछितैहौ
डगर डगर मे चलहु कन्हाई * समुझि न लागै बहुत मोटाई
शिरपर कस कबहु सुनि पाई * सकल तुम्हैं बांदिमाहिं डराई
कसहि मारि मिलैहौ चारा * उग्रसेन को करहु भुवारा
हरिहौ सकल भूमिकर भारू * याही हितभा मम अवतारू

मूढ बात मत बोलो लाला * धेनु चरावत फिरत बिहाला
लकुटी हाथ कमरिया काँधे * मांगि खात दधि सब के राँधे
तुम ईश्वर बनत हौ ठाढे * बातन ते नहिं भूपति होई
यह पुरवी पुनि आहिर गवारी * तुम का जानो भृति हमारी
ब्रह्मा शिव ध्यावें नित हमहीं * ऐसी दशा भई मिलि तुमहीं
तुरत चतुर्भुज रूप देखावा * लखि विश्राम सबनके भावा
बोली सब हम हैं तव दासी * भावै सो कीजै अविनासी
प्रमुदित कीन विहार विहारी * फिरि आइ निज भवन निहारी
दो० एक सखी उनमत्त ह्वै, टेरै व्रज के द्वार।
लै कोइ श्याममोल दधि, लीन्हीं नन्दकुमार ॥
अति बहुकेलि गोपिकन केरी * मंसीय मै कछुक निरेरी
सुनहु एकदिन एक ठियाने * गये चरावन सखा भुलाने
चौबे करत रहे तहं यागा * पठये लावहु मागि विभागा
जाय सखन जब भोजन मांगे * सुनि कटुबचन कहन सब लागे
आये घूमि रहिनि सब बोले * अवतुम जाउ तियनढिग बोले
द्विज बनितनते भाषिनि जाई * विपिन भुखाने राम कन्हाई
तुम्हरे ढिग पठइनि है हमरो * सुनि आनन्दभयो अतिसबको
विविधभांति के भोजन कीन्हे * छिप्र चली थार कर लीन्हे
आइ कृष्ण के आगे राखे * प्रेमसहित सबहिनमिलिचाखे
एककर पति रोकेसि धाई * पतितजि मिली प्रथमसो आई
दरशन पाइ छकित भइ सारी * कहनभये तव विपिन विहारी
जाहु भवन अब देरहु न लाहू * तव सेवा करिहैं तव नाहू
सुनि संवाद आपने अस्थाना * तव सब द्विज लागे पछिताना
हमरे सरग यज्ञ धिरकारा * धिक हमरे मलबुद्धि विचारा-

धिक बिद्या पढिवों सब जानो * धिक हमरे जप तप व्रत दानो
धिकुल मद्अभिमाननिष्ठमन् * होः कृष्णते विमुख जो मयन्
धनि पत्नी ये हरि मनभावन * इन्हें परशि हम हैहैं पावन
धेनु चराय जाई जन धामा * अवलोकहिंछवि मिलिसबवामा
कात्तिकवर्णी चतुर्दशि आई * घर घर व्यञ्जन कराहि लोगाई
यशुमति भोजन विविध वनाये * कृष्णचन्द्रलखि वचन सुनाये
आजु कौन उत्साह तुम्हारे * सुरपति की पूजन है प्यारे
ब्रजवासिन के इष्ट बिडोजा * जासु कृपा सुख बाढत रोजा
बर्षत जल तृण जामत जाते * चरत धेनु पय प्रकटत ताते
रहियो दूरि छुयो जनि लाला * रूसि रहैगो देव विशाला
बोले मनमाहन सुनु माई * याम हरि की कौन बड़ाई
ईश रजाइ जाहि भय जोई * शिरधरि सदा करत सब सोई
कोइ सिरजै पालै सहारै * कोइ वरषै करषै कोइ जारै
इन्द्र कहा करि सकत विचारा * नोक जवून हाथ करतारा
बहुदिन ते पूज्यो सुरराई * काहुइ कबहु दिहिसि कछु आई
तोहि ते अब छाडो सुर दूजा * गोवर्धन की ठानहु पूजा
जाहेके ऊपर धेनु चरावत * सदा ताहि तुम सब बिसरावत
निकट रहत सब ते बड देवा * तेहि तजि करत आनकी सेवा
जबहीं तुम पुजिहौ मनमाना * ह्वै प्रसन्न देई बरदाना
याही बात चतुर्भुज रूपा * कही स्वप्न में पुरुष अनूपा
निज निज कर्म बचनका अग्रा * ताते तुम्है चही गोरक्षा
सब ब्रज मे यह बात प्रकासी * कौसल करन लगे पुरवासी
सब के मन आई सुनि लीजै * जो कछु कृष्ण कहैं सो कीजै
श्याम समान हितू नहिं कोई * प्रभुताई निज नयनन जोई

मुनिसब निजनिजआश्रम आई * शकटन में सब सौज भराई
नानाविध पकवान मिठाई * विविध मूल फल फूल खटाई
मालन शाक अनेक सोहाये * जोनि जोनि सब शकट सिधाये
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * चले सकल मन आनँद भारी
बाजे बाजन विविध प्रकारा * गावहिं गीत वधू मिलिसारा
पहुंचे जब गोवर्धन पाहीं * टिके सब त्रय योजन माहीं
समाचार सुनि जहं तहँ तेरे * आये औरौ लोग घनेरे
कार्तिक सुदी प्रतिपदा के दिन * बोले कृष्ण नन्द ते यहि छिन
प्रथमैं तुम पूजो गिरिराजा * तेहि पाछे सब गोपसमाजा
पूजत भये नन्द हर बागे * पाछे सकल चढावन लागे
प्रकटे कृष्णरूप धरि दूजा * थूल विशाल अनेकन भूजा
श्यामशरीर मुकुट शिर नाका * कुण्डल माल मनोहर हांका
पीतवसन पहिरे सुठि भागा * नचु चपल अलकैं जनु नागा
लागे खान उठाइ उठाई * लखि हरषे सब लोग लुगाई
तिनते कृष्ण कहत में तबहीं * देखे तुम ऐसे सुर कबहीं
जो प्रत्यक्ष तव पूजन खाना * तुम्हरी कृपा मिले अब ताता
ललिता सखी गई मन जानी * गारा सं बोली मृदुबानी
देखो श्याम केरि चतुराई * आपु पुजावत आपहि खाई
दो० भली बस्तु रघुनाथ सोइ, जो लागे हित श्याम ।
नतरु भई बादिहि गई, ज्यों पानी के दाम ॥
एक सखी गृह भोग लगावा * कर पसारि ताहू कर खावा
भोजन करि बोले प्रभु याहीं * मागहु वर जो भावै जाहीं
जो जेहिच्छा-सोई तेहि मागा * बोले नन्दसहित अनुरागा
नाथ देहु वर यह मम कामा * नीके रहैं कृष्ण बलरामा

सुनहु नन्द तव पुत्रन केरा * सदा होय कल्याण निवेरा
सहित समाज रहौ तुम आछे * एक बात होई मम पाछे
ताको तुम तनकौ मत डरियो * जो कछु कृष्ण कहैं सो करियो
असकहि दिहिनि वाटिपरसादा * अन्तर्धान भये सहलादा
हनुमत वचन लागि यदुराई * परसि परब तजि दीन बड़ाई
दो० सेतु करत भा पूर सुनि, दीन्ह्यो व्रजमें त्यागि।
मिलनदरशन मोहितोहिं, द्वापरमें थक लागि॥
ऐसे प्रभु निज जन की बानी * करत साच सुनि को न प्रमानी
जयति जयति कहि करत बड़ाई * आये पुर लखि लोग लुगाई
तब वासव अति कोपत भयऊ * बोलि मेघ परलय के लयऊ
व्रजबासी सब गये मोटाई * देइ दहाड़ सहित गिरिजाई
टूक टावर के कहे हमारी * दिहिनित्यागिमखगिरिहिजोहारी
कौनि बात बडि बरनि सिधाये * बन वृत बात नज व्रज आये
घेरि घुमरि जल छावन लागे * सकल गोप हरिपद अनुरागे
तुरत गोवर्धन लीन उठाई * व्रजपर दिहिनि छत्रसम छाई
नख पर धरे देखि व्रजनारी * एक एकते कहैं विचारी
चोरि चोरि तब माखन खायो * सो सखिश्यामकाम अब आयो
यशुमति कहै निहारि निहारी * सब पर शक विपति यह डारी
केहू नहि गिरिराजहि धारा * हमरे सुत भारू कह टहरा
लेहु लेहु अब ते कोइ लेहू * लाल हैं नेक उसासी देहू
हौं अहीर को है कछु दाया * तब मोहन मातै समुझाया
सप्त दिवस मुदिरन बनपीटा * काहू के तन परी न छींटा
त्रिभुवनपति जिनकर रखवारा * को परिसके तासु अपकारा
वृतसब घन चालेगये लजाई * सहसग्रक्ष सुनि उठा उराई

आयो तुरत कृष्ण के पासा * चरण नाइ शिर बचन प्रकासा
नमो कृष्ण भजन महि भारा * अखिल लोक नायक करतारा
जगतपिता गुरु अज भगवाना * रजक धर्म दलन खल नाना
मैं अपराध कीन अति भारी * क्षमहु नाथ अब चूक हमारी
जाना नहीं तुम्हें मैं ईशा * ताते करन चह्यो व्रज खीशा
जो जाति कछु पावन होई * मिले न ताहि करै रिस सोई
हम तुम्हार सब भांति बसाये * कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये
बोले कृष्ण तजहु सब शोका * धेनु समेत जाहु निज लोका
भोग्यो निज अधिकार सदाहीं * भूले मोहि बहुरि सुख नाहीं
आये सुरपुर आयसु मानी * दखि प्रभाव सभा हरषानी
सब मिलि कहैं कृष्ण हैं रामा * इन्द्रहु जासु करत परनामा
गोवर्द्धन की आहि कुमारी * भुज नृपति यशुमति महतारी
कहैं रघुनाथ चरित हरि केरे * भवसागर के बोहित बेरे

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
-रामसनेहीकृतकृष्णायनेचतुर्मासाचीरहरणदानलीलागो-
-वर्द्धनलीलावर्णनोनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरासुखदानि।
कहौं दशम स्कन्ध की, रहसरीति कछुजानि ॥

इन्द्रहि श्याम स्वर्ग पहुंचायो * व्रजवासिनलखि अतसुख पायो
बसे बहुरि सब निज निज गेहा * यक दिन तहां चरितभा येहा
नन्दहि वरुणदूत लै गयऊ * कृष्ण जाय पुनि लावत भयऊ
सुनी सबन प्रभुता अभिरामा * अब सुनिये जिमि जीत्यो कामा
यक दिन देख शरद उजियारी * बन में आवत भये मुरारी
हरिहिन गुनि ऋतुगणतहँआये * सफल बिटप नाहिं जाहिं गनाये

डोलत त्रिविध पवन सुखदाई * लखि तहँ प्रमुदित है यदुराई
तिरभङ्ग है वेणु बजाई * सुनि गोपी सब आतुर धाई
दो० कोइसुत तजिकोइ सेजतजि, कोइभूषण कोइचीर।
कोइ पयतजि कोइपाकतजि, आईं जहँ बलवीर ॥
बोले लखि ब्रजराज तुम, कौन नरक को काम।
सासु ससुर पितु मातुपति, तजि आइउयहिठाम ॥
तेहिते अबहीं जाहु पराई * सुनि गोपी बोलीं अकुलाई
यह तो दोष नाथ तेहि लागै * अपर पुरुष ते जो अनुरागै
हमरे पति तुमहीं महराजा * यामें करो कौन की लाजा
त्रिभुवननाथ प्राणपति देवा * फुर मिलि तजिये झूठी सेवा
जो इमि रहे हिये निठुराई * क्यों वशी तुम फूंकि बजाई
आवे कोइ आसरा लगाई * लागै दोष देइ दुदुराई
तेहिते नाथ रहस अब कीजै * सूभे मूर जवाब न दीजै
विलपत रुदत वदत इमि बाला * देख्यो कृपासिन्धु छनि जाला
माया ते तब कह्यो गोपाला * रचहु रहस मण्डल ततकाला
योजन पांच माहिं अभिरामा * रचत भई बंशीवट धामा

गीतिकाछन्द ॥

छविधाम वंशीवट जहां मणिजटित कंचन की मही।
तहँ रासमण्डल रच्यो मोहन जात सो कापै कही ॥
नव सात सहस जु गोपिका सजि साज सब ठाढ़ी भई।
यक एक के मधि एक मूरति काम की शोभामई ॥
रघुनाथ तिनके बीच जोड़ीं राधिका नँदलाल की।
बरु एक रूप अनेक कीन्हे खबरि नाहिं यहि हाल की ॥
मिरदङ्ग ताल सितार बहु मुरचङ्ग वेणु सरङ्गिका।

सुरमन्द बाजत बाँसुरी गति मिलत उठत तरङ्गिका ॥
करजोरि निरतत छोरि कहुँ मुखमोरि शिर नाँचे करैं ।
पगभूमि पटकनि बाहु झटकनि ग्रीव लटकनि मनु हरैं ॥
मृदु हँसहिं हेरहिं घुमरि झुकि गति घुघरुन की लावहीं ।
ततताथेई ततताथेई ततताथेई कहि गावहीं ॥
कोइ डारि कर गर श्याम के मुरली छिनाइ बजावती ।
कोइ तान पूरन कान्ह सँग कोइ पकरि उर चपटावती ॥
हँसि लेत गोद उठाय मोहन हाथ थनानि पै धरैं ।
लखि देव नभ परसून बरषैं हरषि सब जै जै करैं ॥
मणिकण्ठ वर वनमाल वर शिर मोरमुकुट विराजहीं ।
पटपीत किंकिणि काछनी कटि कान कुण्डल छाजहीं ॥
अँगअङ्ग प्रतिबहुविधि विभूषणअलकश्रमकन झलकहीं ।
पदकञ्ज नूपुर वेणुकर मुखपान भर छवि छलकहीं ॥
यहिभाँति नाचत गोपिका सब थकित ह्वै झुकिझुकिरहीं ।
काहि माल पायल चन्द्रिका खसिपरी नकबेसरि कहीं ॥
अति असित लखि नँदलाल तिनपर सुपट पवन ढुरावहीं ।
उरके विभूषण हार वेनी कमल कर सुरझावहीं ॥
अस प्रीति के वश श्याम लखि सुरअङ्गना मनमें कहैं ।
धनि धन्य गोपी धन्य जिनके संग हरि क्रीडत रहैं ॥
करजोरि हृदय निहोरि विधिते कहैं यह वर दीजिये ।
हम होहिं दासी व्रजवधुन की कृष्णपद रत कीजिये ॥
दो० कृष्णहि साकृत करत जब, देखत सब व्रजवाम ।
मनमें भा अभिमान तब, है हमरे वश श्याम ॥
जानिलये सो मद भगवाना * तुरत भये तहँ अन्तर्धाना ।

जेहिपर होत अधिक अनुकूला * दलत तासु हरिमद दुखमूला
एक सखी का कर गहिलीन्हा * गोपीवेश संग वन कान्हा
त्यहितबनिजमनमाझविचारी * मैं हौं श्यामहिं बहुत पियारी
बोली पग ते चला न जाई * लेहु मोहिं निज कन्ध चढाई
लीजे चढि बैठे मुसक्याई * चरण उठावत गये हेराई
बिन प्रभु बाल बिकल भै कैसे * जलचर बिनजल व्याकुल जैसे
शोचत हरिहि न पावत बामा * बिकल पुकारत आरत नामा
हे व्रजराजराज दुख मोचन * हे गोपीपति वारिज लोचन
चरण शरण मैं दासी तेरी * कृपासिन्धु लीजे सुधि मेरी
यहि बिधि रुदतपरी तम्बाला * पाछलिनका अब सुनो हवाला
रुदत फिरहिं सकल उनमरना * जडजीवन ते बूझहिं रता
हे बट हे पाकरी करीला * तुम देखे मोहन गुणशीला
हे चलदल हे नींब पियारी * तुम कितहू देखे बनवारी
हे रमाल हे पनस सुजान्हा * तुम आवन देखे इत कान्हा
हे जामुनि हे गूलरि तूता * तुम देख्यो यदुपति के पूता
हे दाडिम हे कुन्द चमेली * तुम देखे गिरिधर अलबेली
हे गुलाब बेला कचनारा * हे बदरी हे हरसिहारा
हे नींबू चैअरून सरीफा * तुम देखे गोपाल हरीफा
मोमसिरी के कदम तमाला * तुम देखे नरहरि नन्दलाला
दो० हे कृष्णा उष्णा द्विजा, पथ्या क्रमुकाकन्द ।
हे वेरवालगूल अक्ष, तुम देखे नँदनन्द ॥
यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे * भेटि भेटि पूछे हरि हेरे
जब न कछू उत्तर तह पावैं * निदरि तिन्हें बासहि गरिआवैं
हे बशी तें बडा गँवारी * अपने कुलकी रीति बिगारी

सवैया ॥

वेमगदापग अंधन को तुम चालिवो आछेनहू को निवारेउ ।
वे जलथाह बतावत हैं तुम प्रेम अथाह के बारिद पारेउ ॥
वे वरवास बसाइ भले तम बास छुड़ाइ उजारिमे डारेउ ।
को कहिये हरिकी बेसुरी तम आपन बंश को नाम बिगारेउ ॥

दो० बिरह बह्नि तो में भरी, है तू बशी सांच ।
फूंकि फूंकि हरिगहतपरि तदपि आगुरी नाच ॥

जो तैं श्याम ते न हितानी * तो परपीर जाइ किमि जानी
आगे चलि सो सखी निहारी * भेटि कह्यो कित गये बिहारी
त्यहि तब आपनि कथावखानी * कित धौ गये हमहु नहि जाना
बोली तब ललिता मुसकाई * श्यामसंगिमसखिनिदर न काई
कह राधिका श्याम का कीन्हा * केहअभिमान दुख नहि दीन्हा
विधिहरि गर्व बिपुलविधि देखे * शङ्कर भये कामवश लेखे
लोमश लखि सियराकी माला * बसे बिपिन में दशरथलाला
नारद बानर कर मुख पावा * चामर कर हनुमान बंधावा
हरिके कहे कथा नहि सुनेऊ * गरुड भुशुण्डि पुरहशिर धुनेऊ
दशमुख दराप पराजय पाई * कुश ते निज बलराम डुभाई
ज्ञान गर्व सनकादिक परेऊ * शाप देइ जग में अवतरेऊ
गिरे ययाति स्वर्ग ते भूमा * गजवश ग्राह बहुत दिन झूमा
गिरिधारि गुणधा नमामभदूजा * हरी नरय गोवर्द्धन पूजा
तापस धरी शिला शिर फेरे * जरे पङ्ख सम्पाती केरे
वसु वशिष्ठ मुनिने मद कीहा * तहि गाङ्गेय मनुजतन लीन्हा
द्रुपद द्रोण ते अहमिति ठानी * भइ तेहि अर्धराज्य की हानी
विद्यामद जब कीन्हि विमाते * सिर कटि रम्भ जराये ताते

शुक्रसुता अरु नृप तिय ओड़ी * मद ते भइ शरमिष्ठा लौंडी
करि कन्दर्प दर्प तनु जेरऊ * जह्नु पान गङ्गाकर कंजऊ
दो० प्रभुहि दुखितलखि लपणके, भयो गर्व तेहि ठाम।
बिछुरत नारि सनेह बश, जरत निवार्‌यो राम॥
त्यहि ते श्यामहि दोष न दीजै * जस मद किह्यो तेन फल लीजै
बोलीं अपर सखी चलि के अब * रहस करो मिलहैं मोहन तब
आइ सबन कीन्ही सोइ रचना * विविध भांतिके बोलैं बचना
कोई कृष्ण बनी कोइ प्यारी * आदिहि ते लीला बिस्तारी
लागीं प्रेम सहित जब गावन * तुरतहिं प्रगट भये मनभावन
अपर कर्म तुष्ट चिरकाला * प्रेम ते प्रकट होत ततकाला
छवि अनपार सकै को गाई * लखि ब्रजबधू उठीं हरषाई
काहू प्रीतम कर गहि लीन्हा * काहू बाहु कन्ध निज दीन्हा
काहू कटि पट पद उर धारे * तृप्त न हों अस बचन उचारे
महाराज तुम व्यास बनो अब * सशय चित हम प्रश्न करें सब
तीनि भांत प्राणी जग बीचा * यक उत्तम मध्यम यक नीचा
बिन सेवा जो करै सनेहू * उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू
सेवा लखि जे प्रीति बढ़ावै * ते मध्यम की पदवी पावै
अधम अनन्य दास बिसरावै * बिन सेवा तेहि कौन चलावै
इनके लक्षण कहो बुझाई * जेहि सुख लहैं रु सशय जाई
गूढ गिरा सुनि गोपिन केरी * कृपासिन्धु बोले हँसि हेरी
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावैं * ते सुकृती उत्तम गति पावैं
उभय इये जहँ स्वारथ जानो * तहा न धर्म सनेह पिछानो
जो सेवा लखि अरु बिन सेवा * प्रीति न करैं सुनो तिन भेवा
तिन महँ जानो चारि प्रकारा * आतम राम एक निरधारा

दूसर जानहु पुरुष कामा * लहैं बरतु तदपि निष्कामा
तीसर अतिशय मूढ़ बखाना * भलअनभलजेहि परत न जाना
चतुरथ गुरुद्रोही दुख पावै * जो शठ कृत उपकार मिटावै
तुर्य सुनत गोपी मुसक्यानी * समुझि श्याम बोले मृदुबानी
अहोप्रिये तुमजस चितआन्यो * तथा मांहि कबहू मति जान्यो
मोहि सेवक प्रिय प्राण समाना * करौं वियोग तासु हित जाना
लखत रहौं मुख रुख जबतबही * तुमते उऋण नहीं मैं कबहीं
तजि दुर्जन गृह बन्धन घोरा * कीन्हो आय भजन तुम मोरा
कौन वस्तु असि है संसारा * जाहि दिये होई उद्धारा
दो० यहि प्रकार के बचन सुनि, पुनि गोपी हरषाय ।
लागी सोइ लीला करन कृष्णसहितसुखपाय ॥
कीन्हीं विविध भांति ते क्रीडा * सोइ बरणत मोहि लागत व्रीडा
भै यामिनि अरधारधि केरी * शिथिल भईं सब भामिनि केरी
आईं भवन होत भिनुसारा * वरणा कछु है चरित अपारा
जो यह चरित सुनै तजि मोहा * लहै सो प्रेम भक्ति सदोहा
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतकृष्णरासलीलावर्णनोनामषष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरासुखदानि ।
बरणौं श्री भागवत की, कथा मनोहर जानि ॥
रहसचरित सुनि कह्योनृप, श्रुतिअविहितयहबात ।
कही हरी परतिय बरी सत्यसनौ सोद्दतात ॥
समरथ को नहिं दोष कछु, रवि बुध गङ्ग समान ।
जिमिविषकीन्ह्यो पान हर, पंचसकत कोउ आन ॥
सो० भावबश्य भगवान, कृपासिन्धुनिष्कामचित ।

तजि कुतर्क मतिमान, सुनोचरितहरिकेसुखद ॥
केहु भांति हरि पद चित लावै * श्याम आप मो निश्चय पावै
यक दिन सुनो गोप मिलि सबै * गये रहे हर पूजन करै
तहाँ एक आयो चलि नागा * नन्दराय को लीलन लागा
परो शोर हरि मारो लाता * छुवन भयो विद्याधर ताता
करि दण्डवत कथानिज भाषी * गा सुरपुर उर मूरति राखी
एक दिवस मोहन ब्रजबाला * करहिं केलि आवा तेहि काला
शङ्खचूड़ धनपति कर दूता * लै भागा यक सखी अभूता
बधकरि हरि तेहि त्रियसो लीन्ही * छीन सुभग मन रामहि दीन्ही
यक दिन कंस असुर यक प्रेरा * आवा धरि वृषु विरषभ केरा
उद्धत फिरत उजारत द्वारा * पकरि सींग तुरंत प्रभु मारा
पुनि केशी आवा हयरूपा * देखि डरे ब्रज लोग कुरूपा
घर बाहर निकसे कोइ नाहीं * तब गिरिधर आये तेहि पाहीं
दो० लाग चलावन चरणदोउ, पकरिलीन्ह पगश्याम ।
ठिहिनिकेकिशतधनुपपर, गिराजाइ जनु धाम ॥
पुनि रिसकरि धावा मुखबाई * कृष्ण दीनि निज बाहु चलाई
बाढ़ी भुजा तलफि मरि गयऊ * लखि सब ग्वालनकेसुखभयऊ
यकदिन श्याम सखनके सङ्गा * खेलन रहे तहां धरि अङ्गा
बालक बान व्योमासुर आवा * सखन लाग न जाने पावा
बूकवान शिशु यक एक उठाई * राख गिरिगुफा दुरादरि जाई
तब यदुनाथ गये जिय जानी * लरि मारा तुरंत अभिमानी
सुनिसुनि बध सुभटनकर काना * तबमुगो नृपति अतिअकुलाना
बोला सकल सभा ते ऐसा * रिपु बध हित अब करिये कैसा
कहत भये सब मंत्र सेयाना * लेउ बुलाय यहां दोउ भ्राता

एहि रङ्गभूमि चलि जबहीं * मल्लयुद्ध करि मारब तबहीं
सुनि बार्ता भूप मन भाई * तुरत लिहिसि अक्रूर बोलाई
मधुवन जाउ तात मम कामा * लावहु बोलि कृष्ण बलरामा
धनुमख देखन के काजा * कह्यो बोलाइनि नृपवर राजा
नृपहि साजि निज स्यन्दन दीन्हा * करि बहु बिनय बिदा पुनि कीन्हा
क्षत्रिक बली नयो दगि भागा * चढ़ि अक्रूर चले ब्रज आगा
करत विचार आजु हरि चरणा * देखिहों जाय सकल दुखहरणा
अंकुश कुलिश सहित जलजेखा * पावन चिन्ह शम्भुध्वज रेखा
प्रथम शीश मैं नावब जाई * तबहिं मोहिं उर लेइ लगाई
दाहिने मृग बिलोकि हर्षाने * करत मनोरथ मन नियराने
लिन्ह ललामत निर्मल नासा * परमानंद प्रिय त्रिभुवन पावा
त्यागि पग रथ ते तहिं बागा * लागे लोटन और सभागा
थापि परे कृष्ण पद पावन * निरखे हर्षे धेनु चरावन
मूंदहि पादप सम निज जानी * तिनके तर बिहरें सुखदानी
चालें न सकत नतसरि न परेखी * दृगजल बहत चहत कब देखी
प्रेम निचारि कृष्ण बलरामा * लै गौवें आये तेहि ठामा
परे चरण अक्रूर निहारी * उर लगाइ तब लीन बिहारी
रूप निहारि छकित भये नयना * अतिसुख दीन बोलि मृदुबयना
लाये भवन हरि युत लीन्हा * नन्दमहरि बड आदर कीन्हा
गृह बिछाइ सुभग बैठाये * षटरस भोजन महरि बनाये
जेंवत भये बैठि सब संगा * अँचै बहुरि आये परजंगा
बोले तब दम्पति हरषाता * गमन करन हित कीन्ह्यो ताता
नृप के कहन रहन नहिं राखा * पठवा भूप हमें अस भाखा
सहित गोप नन्दहिं लै आवो * दधि घृत क्षीर जहाँतक पावो

पुनि धनुमख देखन के काजा * हरि हल गहि बोलाइनि राजा
सुनि अस वचन बाण सम लागे * यशुमति दीख काल जनु आगे
बोलत भई विकल ह्वै बानी * हे अक्रूर भूप मन ठानी
तहा कहो मम बालन केरा * कौन काम है जो नृप टेरा
वहा चही भुमबल निज माहीं * त्यहि ते मोसुत जैहैं नाहीं
बोले कृष्ण जाब मैं माई * धनुषयज्ञ देखी नहिं काई
आवब बेगि बबा के साथा * असकहि निठुर भये यदुनाथा
विकल महरि बहुबचन बखाने * एको अङ्क रहत नहिं जाने
ब्रजपति ते बोली बिलखाई * लायो सङ्ग फेरि द्वउ भाई
यहिविधिभई सकलनिशिनाशा * कृष्ण पिता ते बचन प्रकाशा
लै दधि दूध चलौ तुम आगे * गोपन सहित सखा सँग लागे
चले नन्द शकटन चढ़ि गोपा * बाल वृन्द पथ तक सचोपा
कछुक बार बीते द्वउ भ्राता * रथ पर भे सवार हरषाता
त्यहि क्षण शोक रहा पुर छाई * महादशा कछु बरणि न जाई
ब्रज बनितन जब सुना हवाला * धाई सब ह्वै निडर बिहाला
आइ निकट बोलीं किन जाहू * चलहु घूमि जो निजभल चाहू
सुफलकसुत इनका का कहिये * नीति विचारि मष्ट ह्वै रहिये
दो० कामदार कामी कृपण, कन्या मांगन लोय।
ये परपीर न पेखई, होनी होय सो होय॥
सुनि गोपिन के बचन बिहारी * समयसाज सुरमुनि हितकारी
बोले बिहँसि बनजकर जोरी * एक अरज अब सुनिये मोरी
धनुषयज्ञ कबहू नहिं पेखी * जो तुम कहो तो आई देखी
सुनि सब के मन करुणा आई * आवहु देखि कहैं अकुलाई
चले तुरत रथ हाँके बिहारी * सकल चितसी रहीं निहारी

पादप ओट होइ रथ जबहीं * एक एक ते भागे तबहीं
देखो वो हरि को रथ जाई * कमलनयन कर पट फहराई
भइ नम गर्द परी नहिं देखी * फिरी सकल मन शोच विशेखी
पुनिपुनिनिरखहिंदिशिबनमाली * यह वृषभानुसुता सुनु आली
क० पछिहिक चितवत नैन मम बारबार, पाछे न परत पग काहि मन दीजिये । पवन न भई हां पताकहू अबर नाहिं, रथ के न भई अङ्ग कैसी अब कीजिये ॥ धूरिहू न भई हरि तन लागि जाती संग, खगहू न भई जो उड़ाय दर्श लीजिये । आई निलखान जिमि माखी मधु जात छांरि, जियो नहि जात पै दरश आश जीजिये ॥
गोपिन की कछु बिरह बखानी * अब सुफलकसी सुनहु कहानी
कृष्णहिंललि युवतिन आधीना * तब अक्रूर बिचारहि कीन्हा
इन्हें सुन्यो हम हैं अवतारा * गोपिन के बश निपट निहारा
यहि प्रकार की संशय आनी * जानि गये प्रभु अन्तर्यामी
लागे जब अक्रूर नहाई * यमुना में निजमूर्ति दिखाई
जल भीतर जब डुब्बी मारी * देखि परे तह रासविहारी
शिर निकारि पुनि रथपर पेखे * कयो बार गही विधि देखे
भये निमग्न द्वऊ कर जोरी * दिव्य दरश तहँ दीख बहोरी
सेवत सुरमुनि सिद्ध बिधाता * लागे बिनय करन पुलकाता
नौमि कृष्ण अद्वय अबिनासी * व्यापक ब्रह्म सकल घटवासी
मायात्यक बिरज बागीशा * श्रुतिकह सर्व पाणि पदशीशा
यहिबिधिकीन्ह बिनयबहुजबहीं * भये अदृश्य बहुरि हरि तबहीं
व्याकुल ह्वै आये रथ तीरा * कह हरि कियो स्नान गभीरा

तब सुफलकसुतगहिदोउचरणा * बोले प्रभु मैं तुम्हरी शरणा
तव प्रभाव प्रथमैं नहिं जाना * तेहिते मैं अभाव मन आना
करत नाथ तुम लीला कैसे * बहुविधि स्वांग सलूका जैसे
तब प्रभु दानपतिहि समुझावा * चल आय मधुपुर नियरावा
सुफलकसुत बोले कर जोरे * प्रथमें चलहु नाथ गृह मोरे
आउब एक दिवस तव धामा * अस कहि उतरिपरे त्यहि ठामा
सहित समाज रहे पुरवासा * तेहि दिन तहा भई निशिनासा
दो० भोर भये प्रभु नन्द ते बोले प्रेम जनाय।
मधुपुर आई देखि अब, सखन सहित दोउ भाय॥
आवडु देखि तात हरुगाई * काहू ते जनि करो लराई
आयसु पाउ चल हरषाता * श्रीरामादि रसा सँग भ्राता
नवल नारि सम पुरी निहारी * भये मुदित नख शिख श्रृंगारी
जात रजक ने कहा कन्हाई * दे हमैं वर पट पहिराई
बोला निज मुख देखो नीरा * भूप वसन तुम जानि अहीरा
सुनि बलभद्र निरन करिडारा * पाट निपट नि जनअनुहारा
दरजी वायक नाम विलोकी * वसन साजि तन भयो अशोकी
आगे मिला सुदामा माली * रचि पहिरायनि हार सुजाली
लीन्हिसि माग कमलपद प्रेमा * ज्ञान विशुद्ध भक्ति दृढ नेमा
आगे लखी कुवरी जाता * कसहि खवारि लगावन गाता
कहत भये तेहि ते यदुराई * देहु हमारे खवरि लगाई
छकितभई छविदेखि गोपालहि * निरभयखवार लगायसिभालहि
तब मोहन पग ते पग चापी * चिबुक सुकरगहि ऊपर थापी
मिटिगा तुरतहि कूबर तासू * भया दिव्य तनु विमल प्रकासू
बोली चलहु नाथ मम गेहा * रोरे योग्य भयो वपु एहा

पुरण प्रीति देखि कर जोरे * कह्यो अपर दिन आउब तोरे
आगे चले नगर की नारी * अवलोकहिं छवि चढी अटारी
भूषण पट पहिरे विपरीता * कोइ अंग अघट कोइ अगरीता
एक एक ते प्रमुदित कहई * ये देखो यशुमति सुत अहई
इनसम सुभग न कोउ ससारा * जनि गोपी सग कियनि विहारा
कोइ बसुदेव देवकी केरे * कहत दुराइनि यशुमति सेरे
चहुँविधि विनिपूजी निज इच्छा * श्रवण चित्र अरु स्वप्न प्रतिच्छा
एक कहैं अब कस कुचाली * मल्लयुद्ध हित बोलसि आली
कहँ मुष्टिक चाणूर विशाला * कहँ ये मृदुल नन्द के लाला
अपर कहैं वल में आनमारी * विपुल असुर इन डारि मारी
भले प्राण कसहु के हरहीं * आपु राज्य मधुपुर की करहीं
यहि विधि आपुस मे बतलाई * बरसैं सुमन जहां चलिजाई
कोइ लक्षण नायक के तूला * दक्षिण धृष्टसग अनुकूला
द्वादश हाव भाव कोइ करहीं * निजस्वरूप कोइ रतिमद हरही
सखाजो रसिक शिरोमणि केरे * निरखहिं तियन भांति बहुतेरे

कुं० कोइ स्वकीय परकीय कोइ, कोइ सामान्या नारि।
वय. सन्धि मुग्धा कोई, मध्या प्रौढा चारि ॥
मध्या प्रौढा चारि, कोई श्रेष्ठा अनश्रेष्ठा।
कोई ज्ञाता ज्ञात, कोई ज्येष्ठा आज्येष्टा ॥
कोइ धीरा आधीर, लक्षिता कोइ गुसायन।
मुदित बिदग्धा कोइ, कोइकुलटाअनुसायन ॥
कोइ उत्कास्वाधीन,बासशय्या कोइ दुखिता।
कलहन्तरिता कोइ, विप्रलब्धा कोइसुखिता ॥
कोइ खण्डिताभिसारिका, आगतपतिका होइ।

प्रोषितपतिकाधीनपति, गर्वित देखी कोइ ॥
यहिविधिलागियुवतिनकेलक्षण * आपस में बनलाइ प्रतक्षण
रङ्गभूमि आये यदुराया * शक्रधनुष गहि तोरि बहाया
मारि निकोरे रहे रखवार * आये बहुरि टिके जहँ सारे
नन्द गोद ले अशन कराये * पुनि सुनिदोउ भाइन समुझाये
दो० करौ अचगरी मति इहां, निरदै नृप को गाउं ।
भले तात रघुनाथ भणि, सुखमन औरै ठाउं ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतश्रीकृष्णमथुराआगमनवर्णनो
नामसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं दशम स्कन्ध की, केशव कथा बखानि ॥
रजकनिपातन धनुदलन, असुर शरण बरजोर ।
सुनि जहँ तहँ रघुनाथजन, परो नगर में शोर ॥
यह सब खबरि कंस जब पाई * तबतौ अधिक उठा अकुलाई
लीन्हेसि बोलि मल्ल बलभूरी * आवें तब तुम डारो चूरी
द्वार कुवलयागज ठढ़िआवा * अयुत नागबल तामें पावा
कहिसि महावत ते गोहराई * प्रविशत तें डारे चपवाई
असुर सकल बैठाय ठिकाने * आपु बैठ उत्तम मसाने
तब बोलवाऽसि राम गोपालू * नन्द सहित सब आवें ग्वालू
समाचार सुनि सकल सिधारे * आये रङ्गभूमि के द्वारे
बोले कृष्ण टारिये पीला * सुनि तेहि दृष्टि सामने ढीला
लागे ताहि खेलावन दोऊ * दूरिहि ते देखत सब कोऊ
कबहुँ तर ऊपर चलि जावें * कबहुँक पाछे ताहि हटावें

एक बार हलि मुष्टिक मारा * गिरा अवनि करि घोर चिकारा
मल्लक निधनि हनुमान मनऊ * राम डारि एक रद लयऊ
रक्तश्रवहि तउ भये सुभंता * जेहि नख गात तैस तिन देता
मलन मल्ल निधन रनरूपा * गोपन सजन गूरन नरभूपा
पितुन शिशु कोविन्द विराटा * भोजराज निजु कालहि जाटा
योगिन तत्त्व वैष्णवन इष्टा * वाम कहीं भावना विशिष्टा
बैठे सकल सुमानन पाँ * बोला तब मुष्टिक ढिग आई
हे बल कृष्ण आगाई आओ * भूपहि निजजन दिखरावो
मम तव धर्म यहै है ताता * नृप प्रसन्न करौ लहु बाता
बोले प्रभु जानत सब कोई * मल्लयुद्ध नित भेद न होई
जो विचार बिन नृप करहीं * अपयश सकल ताकी मिटि जाहीं
देखें ताहि महाभय लागे * कहँ कुशल नहीं उठि भागे
हम बालक तुम गिरि समाना * कुश्ती केर मर्म हम जाना
पुनि गाव दो चाणूरहि * करि विधि लरिये संग तुम्हारे
तुमे कहा भगवान इतही * खेलत रहत पुलिन में नितहीं
सखा बाच पाँह कल्याता * ठाढ़ भये तब दनो भ्राता
हरि चाणूर भिरे भुज ठोंकी * मुष्टिक राम चाप रिस रोकी
लागे लरन पेच करि नाना * लचकनकहि हरिपद मुरमाला
अति सुकुमार देखि पुरनारी * कहहिं दुहूँ अनेकन गारी
हाय वृद्ध के दया न आवत * मृग सिंहन कर युद्ध करावत
सभा मध्य ऐसो कोउ नाहीं * मधुआवत कहहि छुटि जाहीं
इतने माहि कृष्ण चाणूरहि * पटकि दीन महि मरा हजूरहि
देखि राम मुष्टिकहि पछारा * शल तोशल तब भये तयारा
पकरि तुरत तिन्ह तेहि त्यागे * अपर मल्ल सब दोनन भागे

बोला कस निगरि भय पाई * कबहु नगर बाहेर दोउ भाई
दो० नन्दसंग जे गोप हैं, लूटि लेउ तुम भारि।
उग्रसेन बसुदेव को, अबहीं डारो मारि॥
सुनत कृष्ण ढिग पहुचे जाई * पकरि शिखा महि दीन गिराई
काढे प्राण घसीट घसीटी * डारे सकल निशाचर पीटी
लखि सुर हर्षि सुमन बरषाये * रङ्गिलावन यमुनातट ल्याये
तहँ विश्राम कीन मन भावा * सोइ विश्रामघाट कहवावा
पुनि पुर आइ पिता अरु नाना * छोरि बन्दि ते अति सनमाना
आपु आपु को धूगना दीन्हीं * मात पिता की सेवा कीन्हीं
सुनि बसुदेव देवकी हरे * गोद लगाइ सकलमुख करे
दीन्हीं उग्रै राज बहोरी * तब यदुपति बोले कर जोरी
कीजे राज्य कृपाकरि आपा * हमरे हैं ययाति को शापा
तरुण अवस्था पिताह न दयऊ * ताहते यदुकुल महिनिन भयऊ
कीजे तुम निधरक सुखभागी * मैं लेहों सब काम सँभारी
बहुरि नन्द ते बोले आई * ग्वालन सहित आपु ब्रज जाई
हम कछुदिन रहिके यहि आमा * आवब चले तुम्हारे धामा
निजसुत सरिस हमैं तुम पाला * तेहिते नहिं बिसरब तिहुँकाला
जननी ते कहियो परनामा * बिसरिजाइ जनि गिरिधरधामा
हम तिनको बहुभाति खिझावा * उनके कबहु अभाव न आवा
गोपिन ते कहियो कुशलाता * कछु दिनमें ऐहैं दोउ भ्राता
सुनि,असबचन नन्द दुखपावा * ठगिसे रहे बचन नहिं आवा
श्रीदामा बोल्यो तब बानी * कृष्ण कहा तब बुद्धि हेरानी
अपने मात पिता को त्यागी * परघर रहिहो केहिन लागी
कौन वस्तु कमती घर तेरे * जो नौकरी करो नृप केरे

धरवैहौं निज पितुकर नामा * तेहि ते चलौ आपने धामा
भल कीन्ह्यो जो कंस मारेउ * उग्रसेन कर काज निवारेउ
राज्य पगाइ देखि लोभान्यो * यही एक अनरथ मन आन्यो
जो सुख है हमरे व्रज माहीं * सो सुख तीनिलोक मे नाहीं
तन धन जाइ जाउ बरु प्राना * तबहू ह्वै परवश नहि रहना
बोले कृष्ण तात तुम भाखी * सोइ सत्य हम हिरदे राखी
पर यह राज्य न है पर केरी * सब प्रकार तुम जान्यो मेरी
आगे चलहु सकल तुम आहे * राहित गा र हम अ.वत पाछे
सुनत गोप व्याकुल भे कंसे * गदमणिहानि फणिकके जैसे
यद्यपि पट पट बहु पहिराये * तदपि विरहवश एक न भाये
तब प्रभु करि उच्चाटन दीन्हे * चले सकल मन आनँद कीन्हे
आये जब वृन्दावन माहीं * यशुमति दीख कान्ह बल नाहीं
लागी करन विलाप घनेरा * नन्द कह्यो कछु जोर न मेरा
जो जो यदुपति कहा सो गावा * तदपि न मनमे धीरज आवा
दो० यहा कृष्ण बलराम कहँ, यदुपति दीन जनेउ ।
पुनि पठये दोउ पढ़नको, पुर्यवन्तिका भेउ ॥
आये चलि सदीपन गेहा * लगे पढ़ावन सहित सनेहा
प्रथम वेद विधि ग्रा त्रिचारी * पुनि पढाय विद्या दशचारी
कुं० ब्रह्मज्ञान यक जानिये, उभय रसायन कूर्य ।
तीसर स्वर धारण निपुण, बेदपाठ है तूय ॥
बेदपाठ है तूर्य, पञ्च ज्योतिष पहिचानौ ।
छठी कहत व्याकरण, धनुषविधि सप्तम जानौ ॥
जानो बसु जलतरण, नवम वैद्यक दिशि कृषिपर ।
रुद्र कोक रवि वाजि, चढ़न तेरही जु नृत्यकर ॥

बोध चतुरई चतुरदश, विद्या पाय अशर्म।
पढ़ी कृष्ण रघुनाथ अब, कहत कलानिधि मर्म॥

चामरछन्द॥

बाद्य गीत नृत्य नाट्य लेख बज्र बेधनं।
तन्दुला मेपालि रङ्ग कार्यपर्पिक धन॥
पुष्प तल्प गन्धर्व कल्प दन्तचपल राग जू।
दाम धर्णि सेज कर्णि बारि बाद्य बाग जू॥
नीर घात चित्र जात माल इन्द्रजाल जू।
पट्ट पानि भूषणानि ग्रन्थ कीट भाल जू॥
पाककार कौचुमार बीन बेणु योग जू।
कर्ण बेधनी शृंगार पानरस प्रयोग जू॥
सूचिकर्म धातुमर्म सूत्र कीडि नोलि जू।
वाकदक्ष कवललक्ष दुष्ट वंचि कालि जू॥
ग्रन्थपाठ छिन्नकाठ नृत्यज्ञान दायकं।
काव्य पूरकं नेवार रज्जु रीति नायकं॥
तर्क रीति वास्तु प्रीति स्वर्णकार कार जू।
रङ्ग ज्ञान वृक्षवान मेख मुर्ग मार जू॥
कीर शालिका प्रलाप शत्रुधी उचाटनं।
केशमार्ज्जन मक्रर्ष मुष्टि यस्तु डाटन॥
देख भाषिनी मलेच्छ फूल सदनानि को।
यन्त्र मन्त्र का विरोध मानसी पिछानि को॥
पिङ्गला विधान को शशोस कार्यसाधनं।
छल उपाय रक्षकाय जयद देवरायनं॥
धूत खेल बाल मेल और बैर तापन।

कामदादि कृतविचार सर्वसार कोमल ॥
चौंसठै कला कहीं मुनीश आदि नाम जू ।
सो लियो विश्राम सिन्धु मध्य देवदास जू ॥

चौंसठि दिनमें विद्या सारी * पढ़त भये श्रीकृष्ण मुरारी
विद्यानिधि विद्या अभिलाषी * सम्प्रदाय की सीमा राखी
विदा होन चौले हरि जेहू * गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहू
कहत भई तब गुरुतिय बानी * पुत्र हमार दीजिये आनी
बूड़ो मुनि सागर में गयऊ * पंचजन्य कहँ मारत भयऊ
मिला न तब कीन्हो पछितावा * चले बहुरि यमपुर में पावा
दीन आइ गहि बालक श्यामा * लहि अशीश आये निजधामा
भक्तवत्सल त्रिभुवनगोविन्दपति * सब उर अन्तर्यामी श्रीपति
एक दिवस कुबिजाके गयऊ * आनि अद्भुत गृह देखत भयऊ
विविध वस्तु संयुक्त सोहावन * धूप दीप मणिगन मनभावन
चन्दनमय उपधान विशाला * पानदान पुनि विपुल मसाला
श्यामहिं देखि उठी हरषाई * आसनमहिं उठि सेजहि लाई
आपु सुतनु पट भूषण साजके * सन्तखड़ी षोडशविधि सजिके
प्रथम समागम समुझि लजानी * अपर अलि गहि प्रभुपहँ आनी
अपरदिन कतिकहिं संग भगवाना * रमे कृपा करि कृपानिधाना
कोक कला करि मग्न विहारी * काम व्यथा ताकेरि निवारी
पुनि प्रसन्न ह्वै वचन उचारे * रहौ कछुक दिन संग हमारे
प्रभु प्रेमासक्त रूप न गुनके * वचन विचारि प्रीतियुत उनके
एवमस्तु कहि निज गृह आये * उद्धव सहित तन्त्र गुण गाये
शूर्पणखा रामहिं लखि मांहीं * काम सहित कुबरी भइ सांहीं
कौनेउँ भाव प्रभुहिं जो ध्यावै * लहै सही फल मृषा न जावै

दो० जो कछु लीला जगत में, सो सब रघुपति केरि।
कला अंश कहुँ स्वयवपु, धारिकरत हिय हेरि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतकृष्णखण्डकुबरीगृहआगमनो नामअष्टमोऽध्याय ॥ ८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरासुखदानि।
भँवरगीत हरिमीत मत, शुक कृतकहतबखानि॥

हे नृप जानि यदुन मे श्रेष्ठ * सखा श्याम को भाग्य बरेष्ठ
शिष्य बृहस्पतिको बड ज्ञानी * कृपासिन्धु ब्रजकी सुधि आनी
तिन उद्धव कह लीन बोलाई * ज्ञान मान सोतन मन आई
बोले तात जाहु ब्रजमाहीं * लावहु खबरि मिली सुधि नाहीं
नन्द बबाके गहियो पाऊ * बिसरि जाइ जनि हमगे नाऊ
पालागन मैया ते कहियो * कृपा करत बलकन पर रहियो
गोपिन ते सुठि योग संदेशू * बरण्यो तुम तजि सकल अंदेशू
जो वै कहैं बचन सुनि सहवो * करि बिवाद पुनि जरी न दहवो
चरणपरसि चढि रथहि सिधाये * ब्रजरवि अस्तसमय चलि आये
रज मण्डित पुर सुरभिन पाछे * नृप डोलत सग बोलत आछे
राम कृष्ण गुण गाव पुरजन * ध्रुप दीप कार पूरित लखिवन
प्रमुदित ह्वै प्रबिशे पुरमाहीं * खबरि पाइ निज पुरन पाहीं
पुर नर नारि परम सुख माना * राम कृष्ण आवत हैं जाना
वैसे स्यन्दन बृषभ बिशाला * बंस मुकुट पीतपट माला
निकट जाइ उद्धव को चीन्हा * हरण शोक मनमें तब कीन्हा
नन्द पँवारि पहुँचे सुनि जबहीं * निकसि महरि आइ ढिग तबहीं
श्याम सखा लखि चरण पखारे * सुन्दर अष्टशिला बैठारे

मुदित बनाय अशन करवाये * अँचवन करि जब सेजहि लाये
तब यशुमति बोली जल डारी * हैं नीके बल कुञ्जबिहारी
पालि पोषि हम कीन्ह बड़ेरे * बाजत पुत्र देवकी केरे
जबते गये सुधिहु नहि लीन्ही * धाइउ के नाते तजि दीन्ही
लीन्हें छीनि आय बसुदेऊ * तब ते तात न आने केऊ
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं * दासी ह्वै सुख देखन चहतीं
बैरी भये कुटुम्बी मेरे * जान न दीन्हेनि निरखि निबेरे
शूल होत नवनीत निहारी * मोहन के मुख योग बिचारी
प्रातै खात रहे दधि रोटी * को अब देत होइगो ओटी
कीन्हि चरित लाल मन मोई * सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई
निशि न नींद दिनलगत न भूखा * हन्त बदन ब्रजपति कर रूखा
गौ न स्रवैं पय तृण नहिं चरहीं * बछरनसहित सकल हुकरहीं
बालक तरुण जरठ सब लोगा * भये क्षीण तनु श्यामवियोगा
हम आपनि किमि दशा बखानी * दीन्हों काढि नयन निजपानी
ऐसे दुख देने को रहेऊ * तो कत दावा ते निरवहेऊ
इन्द्र कोप ते नाहक राखा * गिरिहि छाड़देते करि माखा
कठिन शोक निशि बासर घेरा * दीन लाल करि मधुपुर डेरा
जीवत सकल दरश के लागे * पुनि स्वइ देखब हरि आगे
कह्यो तात कब ऐहैं भैया * कब मोहिं गोहरैहैं करि मैया
अब चाहिकै दधिमथत मथानी * कब मागिहैं माखन हठठानी
एक दिवस मैं रिसवश बाधा * सो सुधिकार दुखहान अगाधा
ऊधो जाइ धावैं घर अपने * अब कबहु नहिं बाधव सपने
माखन खात न बरजब रोसी * उरहन देन न सुनब परोसी
जलसुतारिजापति कर लाला * तासु मातु सब पद्मव नाना

मैं जानत सुख तिन्हैं न होई * ढाठ राखन ह्वैहैं सब काई
काह करौं परवश भे ताता * कहुं कहुं गुणहुं होत दुखदाता
शुकसारिक जो पढ़त नाहीं * तौ कत परत पींजर माहीं
शब्द बेध शर जो न चलावे * अन्धशाप कत दशरथ पावे
रविशशि जो नहिं करत प्रकाशा * तो सतत कत फिरत अकाशा
जो न होत रघुपति कै दाया * तौ वन दुख कत सहत निकाया
जो न लाल को आवत जान्यो * तब दवे ते वचन बखान्यो
जो रखनी हो हम पर नेहू * तौ सुत पठइ हमारे देहू
जो कोइ कठिन लाड़ लड़ावै * तदपि लाल हमते सचु पावै
तुम्हरे पुत्र सही सुनु माई * एकबार मुख जाइँ देखाई
याहीविधि बचन कहत बहुभाये * तेहि क्षण नन्द द्वारक ते आये
भेंट उठि उद्धव पुलकाई * लीन्हें निज आसन बैठाई
लागे बूझन कुशल सबाके * हैं वसुदेव देवकी नीके
नीके रहत कृष्ण बलरामा * कछुआगमनकरहिं निजधामा
तोतल वचन बोलि सुखलागी * बड़े भये सुख दीन्हेनि त्यागी
एनहू ते कछु बना न जाना * जगतपिता बालक करिमाना
कोमल चरण खरु अधिकाई * तहँ उनते हम गो चरवाई
उन बाहू मे कबेउ न रोषा * गुणगहि उखमाङ्गिराये दोषा
हरि की बात हरी ते बनई * थोरेहि में जरि उठतै मनई
दो० नामलेइ जेहि यवतिको नहिं सुहाइ मुनि तासु ।
रामजानकी के कहे, तुष्ट तेहि पर आसु ॥
याहीविधि नन्द करत पछितावा * तब उद्धव अस वचन सुनावा
अहो नन्द यशुमति तुम दोऊ * शील सुकृत की मूरति होऊ
क्योंकि राम कृष्ण भगवन्ता * प्रणतपाल दुष्टन के हन्ता

त्रिनके चरणकमल चित लाया * याहतेंआधक न कछु श्रुतिगायो
हौंराह आपु सुमिरत हौ जैसे * तन मन धन वारणु करि तैसे
तुम ते तात न बाहर कोऊ * बेचौ जहा बिकै तहँ दोऊ
जब तब बात तुम्हारी गावैं * कहन कहत गद्गद ह्वै जावैं
चलत कहिनि पालागन बाता * उऋण न हम तुमते पितु माता
प्रनिपालन तुम कीन हमारा * होइहै युगयुग सुयश तुम्हारा
देखो त्रिभुवन पति गिरिधारी * चाहत करुणादृष्टि तुम्हारी
बातन हाः दोष केहि भाती * जाको रहै सकल सुखजाती
हरिगुण कहत भई निशिनासा * बोले द्विज अलिलीन सुबासा
दधि जोरि गृह गोप लुगाई * लगा मथन दधि हरिगुण गाई
दो० तब उद्धव वृषभानु पुर, चले रजायसु पाइ ।
मारगमें अवलोकि रथ, मिलीं गोपिका आइ ॥
गिरिधर की अनुहार निहारी * बोलीं तब गोपन की बारी
आप गवन इत किनने काहीं * जानि परत मोहन सुधि लीन्हीं
बोले तब उद्धव हम आये * मधुपुर ते व्रजनाथ पठाये
परम मित्र है कृष्ण हमारे * हम हैं उनके बहुत पियारे
सुनि सब बैठि गईं तेहि ठौरा * बोलीं कहो कान्ह कर ब्यौरा
उद्धव नन्दनन्दन हैं नीके * हम सबहिन के जीवन जीके
कब अइहैं कछु कहिनि बखानी * शोभा शील गुणन की खानी
गिरि अरि सुत रिपु पुरी सिताई * अजहु नहि आये सुखदाई
उद्धव हम सब श्याम बिहीना * बिकलरहतीजिमिजलबिनमीना
निशि न नींददिन अशन न भावै * नयन पलकसम कलप बितावैं
हरि बिन सेज भयानक लागे * कारागार सरिस गृह जागे
शीतल मन्द सुगन्धित बाई * लागत मनहुं अग्नि ते आई

बिरहमदि सब अङ्ग जरावत * जरि न जात लोचनजलनावत
हम ते श्याम करी है ऐसे * बधिक करैं पक्षिन ते जैसे
प्रथमें प्रीति आपही जोरी * पाछे नाव माझसरि बोरी
तुम उद्धव आये भल कीन्ह्यो * हम सबका अवलम्बन दीन्ह्यो
सुनियत रहे सन्त परमारथ * करतरहत सोइ दीख यथारथ
दो० सजन स्वारथी नरन की, स्वारथही तक प्रीति ।
खगमृगजार असारलखि, तजतसुथलसिखिरीति ॥
बहुरङ्गी जित तितहि सुख, यक अङ्गीकर अन्त ।
जिमिगणिकानिधरकरहत, दहतसती बिनकन्त ॥
तिमि उद्धव हरि हम को जानैं * श्याम चहे मानैं नहिं मानैं
सुनि उद्धव गोपिन की बानी * योग सदेश न सकत बखानी
सुफलक सुत पगी कठिनाई * उत आज्ञा इत प्रेम अथाई
धरि धीरज पुनि काढ़ी पाती * बोले बाचि जुड़ावो छाती
हम ते नाहिन बनी बनाई * चितवन गली छुवत जरिजाई
आपु कृपाकरि बाच सुनावो * श्याममुखामृत बचन सुनावो
सुनि उद्धव तब बाचन लागे * लागीं सुनन बैठि सब आगे
गोपी सकल सुनो मम बचना * भूलहु माति माया की रचना
जो कुछ गो गोचर मे आवै * मायाकृत सो थिर न रहावै
छाडि देहु तेहि ते असनाई * निरगुण ब्रह्म जपहु मनलाई
पूरण है सब घट में सोई * कौनसे ठौर जहा नहिं होई
पाच पचीस तीन घट तेरे * पृथक रहत पुनि बिमलबसेरे
सो हम तुम तुमसे अरु मोसे * क्षणहूमात्र बियोग न होसे
आत्म आत्म से हम प्रकटावें * पालन करि पुनि नाश करावें
रचत सकल निज माया जाते * कार्य अन्त पुनि कारण ताते

आरज तजि कारज मनलावो * जेहि ते सकल परमपद पावो
निरमल नीर भरा नत नेरे * भरन पियास न नेहि बिनहेरे
तजि कुसंग एकान्त पर्मांजे * द्वादश सयम नियम करींजे
सूक्षम भोजन स्वल्प पियासा * करहु त्यागिबहु भोग बिलासा
पद्मासननिरमल करि मनका * शोधन रहो सदा निजतनका
पूरक कुम्भक रेचक करहू * उलटि ध्यान त्रिकुटीको धरहू
सोहं शब्द माहि चित राखो * मन ते सकल कामना नाखो
दशप्रकार अनहद सुनि पावो * कौतुक विविध देखि हर्षावो
यहि विधि योग ज्ञान जब गावा * तब गोपिन अतिशै दुखपावा

दो० यथा बैद औषध करै, बिन पहिचाने रोग।
सो औषध लागै नहीं, उलटि बढ़ै तेहि शोग॥
तेहि अवसरइकमधुपतहँ, आयो करि गुञ्जार।
बैठि गयो राधिका के, चरणकमल लखिसार॥

तब सब गोपी मधुपर टारी * लगी कहन उद्धव ते सारी
मधुकर तुम परते उडिजाहू * श्याम शरीर निठुर सब आहू
पहुँचत तहां फूल जहँ फूले * रूखी लखत जात नहिं भूले
रूप रहसि सब गिरिधर केरी * है तेरे मे गुण न हेरी
आई बधी पियाचन चीरा * डारिनि नाहिं मारि बलबीरा
शूर्पणखा रघुपति पह आई * नाककान तेहि लिहिनि कटाई
बलि बावनहिं सुमर्पण कीन्हा * तबहु तासु तनुबन्धन कीन्हा
व्याहुकिहिनि हरि हरजा गारी * पुनिआपुहि मिलि ठानिनिहारी
कोयल सुतहि काग प्रतिपाले * ऋतुवसन्त तेहि तजि उड़िचाले
उरगै दूध प्रीति ते प्यावै * उलटि अमी सो बिष ह्वैजावै
केचुलित्यागिनसुधिफिरिलीन्ही * तैसे श्याम हमैं तजि दीन्हीं

यामें भूल न उन की भारी * कारेन की करनी है कारी
परकट जिन कीन्हे युग ताता * क्यों न कहें यहि विधिकी वाता
तथा तुमहु कछु अघटित नाहीं * रूप छुड़ाइ महावत छाहीं
उद्धव श्यामाहुँ लाज न आवत * तेहिपर सुनियत दत कहावत
हमका ज्ञानयोग लिख भेजा * आपु रहत कुबरी की सेजा
जिमि गणिका निज कसवें टानें * औरेन सें वैराग वखाने
तेहि के वचन कहो को माने * तैसे श्याम देत हैं ज्ञाने
यक तौ अन्धकूप मे डारी * हेरत पन्थ न परत निहारी
तेहिपर तुम निज ज्ञान सुनावा * मानहु मुख ऊपर ते तावा
उद्धव तुम हो चतुर सुज्ञानी * देशकाल लखि कहिये बानी
जाके मलै अनल सगता्वे * तेहिके कहा गरल लगवावे
हम वनितन को चाहिय भोगा * तिनका आय सिखावन योगा
धरत मरालन सुत शिर मेरू * जिन ते चलैं न पगभरि सेरू
उद्धव कछु तुम्हरी न लगाई * सङ्गति वेर दोष लगिजाई
रस लम्पट गिरिधर न लवारा * क्यों न होउ तिनसगखुवारा
कुं० लम्पट की सगति किहे, द्वादश गुण नशि जात।
प्रथमसत्यपुनिस्वच्छता, अरु सयम की बात॥
अरु संयमकी बात मानव्रत माया जानों।
शम दम दया सुबुद्धि, लहन शीलता पिछानो॥
प्रभुता यश नहिं रहत, बसत हिरदयमहँ कम्पट।
कपिल वचन बुध जान, करत नहि संगति लम्पट॥
दो० जो कहो ऐसे पुरुष ते, क्यो तुम कीन्हो प्रीति।
कर्म लिखा तेहि काकरै, जरै शलभ की रीति॥
प्रेमिहिं मरन न लखिपरै, करै हरषि तनु अर्प।

जिमि गजकुरँगपतङ्गअलि झप पिकपरिवासर्प ॥
मित्रहि चैन न मित्र बिन, कैसो करै बिगार ।
जिमि गृह जारै अग्नि पुनि, होत अग्निको प्यार ॥
बोली अपर सखी सानलेइ * नाहक दोष श्यामकर देइ
उनमें कछु लम्पटता नाहीं * प्रीति पाय परवश ह्वै जाहीं
तदपि रहत निर्गुण विशेखा * पद लहि यमुनामें तुम देखा
जो कहो अबको प्रीति न होनै * रहत न कोउ इकरंग हरदममें
जो कोइ है प्रभुता अगानै * ते परवेदन सुनै न जानै
देखो शशि घर माहिं करी * सोये ताहपर जाय मुरारी
अब नँदनन्द भये महराजा * जो कछु करैं उन्हें सब छाजा
दिन प्रतिपानकमरिम सोहावन * कला अपर सखा यहि भावन
प्रभुता को कछु लाग न होई * धेरी सग गई माति खोई
कैसो चतुर द्वार किन कोउ * नाचमग करि बिगरत सोऊ
परम प्रवीण कैकयी रानी * चार तक्ष ते मति बौरानी
गृह जल गदगद पवन समाना * पाइ कुयोग न को बिनशाना
ऊधव ब्रह्म सबै तुम कहेऊ * अबहीं नगो कि आगेहु रहेऊ
कुं० ऊधो जब जब पापते, उठति धरणि अकुलाइ ।
तबतबक्योसुरमुनिसकल, हरिहि पुकारत जाइ ॥
हरिहि पुकारत जाइ, आप किन धरिधरि रूपा ।
हरै विश्व को भार, होई जो ब्रह्मस्वरूपा ॥
तेहि ते बद विवाद, त्यागि कहिये पथसूधो ।
बिन प्रभ सेवक भाव, तर्यो भवनिधि को ऊधो ॥
माया चाक्र मदान्धकरि, भुषित भो जेहि ज्ञान ।
सोहं अस्मि ब्रह्म सो, पुनि पुनि करत बखान ॥

पुनि पुनि करत बखान, कुत्र ऐश्वर्य मतीते।
कुत बिभुता कुत भूमि, कत्र सरवश गतीते॥
तेहि ते ब्रह्म न जीव, अहौ तुम सुखबशकाया।
बुन्द कहै मैं सिन्धु होइ, किमि बिन हरिमाया॥

दो० जो कहौ पृथ्वी ब्रह्मसम, घटसम जीव अनेक।
ताहि लखौ वा ना लखौ, अन्त होव सब एक॥
एक भयो तो क्या भयो, पुनि नहि गदीकुखाल।
तेहिते नाम्नावाद तजि, भजो नन्द को लाल॥
उद्धव तस्कर कथद में, परो कहै हो भूप।
तो का छूटै करम बश, त्यों तुम ब्रह्मस्वरूप॥
ईश्वर आप स्वतन्त्र है, जित चाहै तित जाइ।
सर्वशक्ति जाके विषे, भाव सरिस दरशाइ॥
सोहं सोहं जपत हैं, जहँतक अगजग जीव।
राम कृष्ण सुमिरे बिना, लहै न कोई पीव॥
उद्धव तुम्हरी बात इमि, जिमि रोगी हितमाड़।
जो जेवत हैं सेर भरि, सो किमि होवै चाड़॥
कर्मयोग तब तक करै, जब लक प्रेम न होइ।
प्रेम पाठ पढि क्यों पढ़ै, कक्का किक्की सोइ॥
उद्धव तुम्हरी बात सुनि, भयो न हमरे रोष।
अपनोइ खोटो दाम तो, परखैये का दोष॥

चौ० अपर सुना हम ऐसा * कहत श्याम है ब्रज धों कैसा
गोपिनको सुनि नाम लजाहीं * चितवतु लखि सकुचत आहीं
भूलि गई माखन की चोरी * खात रहे घर सकल ढिंढोरी
जो यह बात रहे मनमाहीं * तौ कत निहनि रहस हमपाहीं

प्रथम ज्ञान विराग सिखावत * जिहि ते कछु मनहु मे आवत
जब हम रंगी श्याम के रङ्गा * तब लिखि पठवा ज्ञानप्रसङ्गा
मधुकर को तजि सुरसरिवारी * कूप खोद जल पीवे खारी
को तजि आक दुहै को बोरा * को तजि पारस मांगे कौरा
को तजिश्यामसगुणमणिचारू * खनन फिर कलि अगुणपहारू
रूप रेख कछु जाके नाहीं * तो का करब शून्यके माहीं
अगुण सगुण गुण ब्रह्मकहावत * सो तेहि भजत जाहि जो भावत
दो० यथा विरोचन कुमुद दोउ, है विराट के नैन।
काहुइ भावत दिवसपति, काहुइ शशिमे चैन॥
तेहि प्रकार हम श्याम उपासी * हैं सबही विधि उनकी दासी
मुक्ति भुक्ति हमको नहि चहिये * प्रेम भक्ति किरपा करि कहिये
जो केवल ज्ञान कहे बिन नाहीं * तो चलि जाउ बनारस माहीं
हमरे तो मन एक रहावा * गयउ श्यामसंग बहुरि न आवा
को अब अगुण ईश अवराधे * को एकान्त मे आसन साधे
तलफत दृग बिनलखे किशोरा * को चितवे भृकुटी की ओरा
जरत रहत निशि बासर अङ्गा * कान्हे बिन गिरिधरण प्रसङ्गा
तुम जो कहत हरि हिरदयमाहीं * शीतल हमें करत कत नाहीं
ब्रह्म अंश कैसे हैं कान्हा * माते भुवन उदर मे नान्हा
मुख पसारि दिखरावत भयऊ * तबका ब्रह्म पृथक रहिगयऊ
कारण ते कारज है नीका * यथा कन्द ते दूर रस फीका
कारण अगर रहत है संगा * कारज अतर बिकत सो महँगा
तुमही कारण मे मन लावो * हमें श्याम में प्रीति दृढावो
जो हरि तजिपरिघासहिचन्हीं * तो हमहू जप योगहि करहीं
दागहि हम मीन तजि मोती * तो हमहू सब ध्यावें ज्योती

जे रणशूर तेग ताज दवैं * तौ हमहू तुम्हरा मत लवैं
अडल विहंग महि बैठें हारी * तौ हमहू निर्गुण मत धारी
जो चातक सर कर जल पावैं * तौ हम ब्रह्मरूप तजि ध्यावैं
पशु पक्षी निज टकहि न रहीं * हम मानुष कैसे परिहरहीं
ऊधा तुम विरही हो नाहीं * नहीं दास नहिं मित्रन माहीं
विरही मीन जलहि अनुरागे * बिछुरत प्रीतम के तनु त्यागे
दास भाव पपिहा में जाना * विन स्व ती जल करै न पाना
गरजि तरजि रवि डारत मेहा * तदपि बढ़त दिनप्रति नवनेहा
मित्र कमल विन लखे तमारी * तुरत जात है सम्पुट मारी
मधुकर हम चातक सम अहई * बिना श्याम हम और न चहई
या तन को विधि फेरि बनावै * तबहू मोहन मोहन लावै
जो त्वच काढ़ दुदुभी साजे * सोऊ लाल लाल कहि बाजे
गाडि देइ मृतिका ह्वै जावै * विरछ फूल फल उचरें नामैं
मुये अङ्ग की है यह रीता * जीवत किमि छूटत है प्रीती
वाला अपर भली विधि हेरे * कठिन लोग हैं मधुपुर केरे
जिनकी भगति पारै नदलाला * सोवत भयो योग कर हाला
हमहू को आय बहकावन * फूकन चहत सुमेरु उड़ावन
मधुकर आपन योग दुरावो * हम पूछै सो बयाण सुनावो
ब्रजमें कब ऐहैं बनवारी * कब हरिहैं चूनरी हमारी
कब दधिदान मांगिहैं रोकी * हमहू अब हठ करब न कोकी
करिहैं रहस केलि अब आई * खैहैं माखन कबै चुराई
कब बजाय मुरली मन म्वैहैं * कब दुरिके हमरे घर स्वैहैं
जेहि सुखहिनहम भइनकनौड़ी * सो सुख अब लूटति है लौंडी
कीन्हासि कौन तपस्या भारी * ब्याहते पा.स पति गिरिधारी

फेर अब सुनव हमारे लागी * दीन्हों श्याम कूबरी त्यागी
कहियो मधुप श्याम ते जाई * कहा गई ब्रज की चतुराई
किहे सनेह सयानप दुक्खा * रहत न सुगनि सयानप सुक्खा
हम युवतिन कहँ लिखत विरागा * आप पर चेरी के रागा
अपना गुरू भय सयोगी * केहि प्रकार हम होई योगी
जो गुरही निज मद न चीन्हा * तिनशिष्यनको कव सुख दीन्हा
जो गुरु कुटुंबजाल में बांधे * तें शिष्यके किमि काटे फांदे
जो गुरु काम क्रोध में जरई * तो शिष्यको कव शीतल करई
जो गुरु है तृष्णावश लासी * तो शिष्यको किमि करै उदासी
जो गुरु है पाथर की नावा * सो शिष्यका कव पार न पावा
जो गुरु को कछु पढ़ि नहिं आवै * तो शिष्यको केहि भांति पढ़ावै
त्यहि ते आपु दशापर आवै * तव हमको लिखि योग पठावै
त्यहि ते कछु लागे उपदेशा * करहि सकल योगी कर भेशा
जो जल जरन आपही लागे * तौ तजि मीन कहा को भागे
लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना * विसारे गयो उद्धव को ज्ञाना
करत भयो गुरु गोपिन केहां * पढ़न इक अनन्य मन तेहां
रहे मास छः तिन के पासा * देखन डालैं कुञ्ज विलासा
भे मधुवन की प्रीति बहोरी * बोल्ग गोपिन ते कर जोरी
तुम सब अहौ प्रेम की खानी * क्याहेविधि हम उनकर्ण बखानी
चातक मीन चकोर मृगाऊ * चारण किहिनि तुम्हार स्वभाऊ
हम ते जब तब प्रीति तुम्हारी * वर्णत रहे मुदित बनवारी
उद्धव हम तनु कोटि बनाई * करैं गोपिकन की सेवकाई
तबहूं कछु उद्धार न मानी * ऐसी मम सेवा उन ठानी
ज्ञानके मिस तिन मोहिं पठावा * क्यों तजि हरिरूपहि पावा

अब करि कृपा देहु वर एहू * बढ़ै कृष्णपद नित नव नेहू
खग पशु विटप लता तनुपाई * जन्म जन्म ब्रज बसियै आई
तुम्हरे चरण कमल की धूरी * प्रापत होइ भाग ते भूरी
दो० जो मैं कीन्ही ढीठता, हरि को आयसु मानि।
करेहु क्षमा अपराध सो, अनुग आपनो जानि॥
उद्धव तुम जानत सुखदायक * हम है कौन बड़ाई लायक
लोक वेद तजि करतब ठाना * त्यहिते निन्दत सकल जहाना
तुमहीं तात सराहन योगा * क्षमावन्त सबभांति बिशोगा
हम अहीर बहुभातिन केरे * कहे कठोर बचन बहुतेरे
तुम्हरे मान न तनकहु आवा * धन्य धन्य जननी जिन जावा
उद्धव कृपा श्याम की चाही * निरुद्वन्द्व दारि उभय भल आही
दो० बनबरही वारिद वियत, लक्षान्तर रविपद्म।
विलसकुमुदशशिसुखलहत, लखिसनेहनिजसद्म॥
बिन सनेह उपजरि बिशेषी * युग अगुल श्रुति परत न देखी
चिरजीव रहें दोउ भाई * मधुपुर करहिं राजसुख पाई
उद्धव हमरे दोउकर लाडू * मिलतो अनिभलदूरितजिआहू
जो न मिलव तबहू भलजानो * भयो सुयश तिहुँलोक पिछानो
कह हम जाति वरण कुल हीना * श्रुतिमर्याद सोउ तजि दीना
कहँ हरि श्रीपतिपालक सबरे * सो सबविधि कहवावत हमरे
इत उत फिरि फिरि ब्रजहाभावें * जिमि परिन्दा दनुगपर आवें
सत्यबचन तन झूठ न आहीं * हरि निजजन बश सदा रहाहीं
यह उद्धव अब आज्ञा दीजै * तो हम गमन मधुपुरी कीजै
तीनि दिवसकर आयसु भयऊ * त्यहि के भाँति मास षट गयऊ
हमरी सुधि न बिसारव देवी * सब बिधि जानि आपनी सेवी

बिछुरन विरह सबन के जागा * कीन्हेनि निदा सहित अनुरागा।
रथचढ़ि चलि निजआश्रमआये * समाचार यदुनन्दन पाये
पदत्रान भगे द्रुत यदुनाथा * आये भवन तुरत त्यहिसाथा
भेटे श्याम सखे मन लाई * बूभत में व्रजकी कुशलाई
सुनि उद्धव तव बात प्रकासी * तुम बिन दुखितरहत व्रजबासी
एक दिन आनो दरश दिखाई * सुनत वचन बोले यदुराई

गीतिकाछन्द ॥

यदुनाथ बोले सुनहु उद्धव बोटा बासी जे अहैं।
तिन पास मैं निन रहत हौं वे नेक न्यारे ना रहैं ॥
मम श्याम वेदन की ऋचा हैं गोपिकन के दुख कहा।
मुनि हैं जे कहि हैं चरित तिन के नाशि हैं सकट महा॥
जो कही रहत वियोग क्यहि हित सुनहु सोउ निकामहू।
यक दिन गयो यक सखीघरहौं हाररा खिसि दामहू॥
तहँ आइ प्यारी चहत प्रविशो सखा रोकत रिसठई।
मोहि मिलहिं हरि शतवर्ष तोहिं त्यहुँ कही सोइ सांइं भई॥
सो० यद्यपि हौं निन तीर, तदपि न देखत शापबश।
धरिहौं विविध शरीर, करन चरित बहुभांतिके॥
दो० उद्धव गोपिनकेर कछु, कह्यो ज्ञान दृढ़ नेम।
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ, बढ़ै इष्ट पर प्रेम॥
प्रेम बिना पावै नहीं, प्रीतम को दीदार।
ताते जन रघुनाथ ते, कह उद्यापन सार॥
प्रेम न बारी ऊपजै, दिये न आवै दाम।
प्रेम जगत रघुनाथ तब, जब सुमिरै हरिनाम॥
इति श्रीविश्रामसागरे कृष्णागमनगोपीउद्धवसंवादेनवमोऽध्यायः ९॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
दशमस्कन्ध भागवतकी, अब कहौं कथाबखानि॥
गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा * पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो * बाध देय कुन्ती को आवो
असमय परे पाण्डुसुत छोटे * परवश परि सुखलहत न पोटे
चल पाण्डु घर आये साई * देखि मिली कुन्ती उठि रोई
आसन देत भई अनुरागी * पूछन गति नेहर की लागी
नीके हैं पितु मातु हमारे * भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे
करत कबहुं सुधि भानकरी * देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी
सुनि बोले अक्रूर बिहारी * सुखी सकल सुधिकरत तिहारी
काहिनि कृष्ण फूफूसे कहियो * चिन्ताकछु चितमें जनि गहियो
आवत हैं हम कछु दिन माहीं * चली गयार तिनकी तब नाहीं
पुनि धृतराष्ट्र पास चलिगयऊ * सुहृदवचन जस बोलत भयऊ
पाण्डु मरे तुम गद्दी पाई * पालहु सबहि एकसम भाई
चले अनीति अयश जग पैहो * देह तजे ध्रुव नरक सिधैहो
करै जो पाप सुमात भ्रम पाई * त्यहि फल होत ताहि दुखदाई
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे * यत रहत हैं सबही न्यारे
खलभल पाप परत शिर अपने * त्यहि ते पाप करेहु जनि सपने
इमि बहु कह्यो तासु हितबानी * सुनि धृतराष्ट्र न हिये समानी
बोला तबै अन्ध बेमाना * होई जो करिहैं भगवाना
दो० यहि विधि सुनि समुझाइ पुनि, पँचहुँन का दुखहेरि।
विदा भये धृतराष्ट्र ते, आये मधुपुर फेरि॥
समाचार यदुपतिहि सुनाये * त्यहि क्षण अपरनिमकुटिआगे
ग्यधट्टि उभय कंस की बामा * मगध देश आई पितुधामा

बिबिध भांति ते रोदन कीन्हा * जरासन्ध सुन धीरज दीन्हा
यदुन सहित सब हरि बलरामा * पठवों कस निकट तब नामा
अस कहि दल तेइस अक्षौनी * लेके चला प्रबल है होनी
अक्षौनी द्वै भांति बखानी * लघु दीरघ सोउ दीजै जानी

लघुअक्षौहिणीप्रमाण ॥

ककुभीछन्द ॥

यकइससहस आठसौ सत्तरि रथी होइ जहँ जानौ ।
तेतनेही गजनाथ अश्वपति छांछठि सहस पिछानौ ॥
एकलाख नव सहस तीनिशत साढ़ पदर जोहै ।
जनरघुनाथ बिचारि कहत तब एक अक्षौहिणि होई ॥

दीर्घअक्षौहिणीप्रमाण ॥

दो० अयुत नाग त्र अयुत रथ, योधा लख दशलक्ष ।
तुरग कोटिछत्तिस कहत, पदचर यह दिरघक्ष ॥
आइ मधुपुरी लीन्हिसि घेरी * सुनि पहुँचे हरिबल न्यहिवेरी
देखते कहनलगा कटुभावा * बन्धबाधक मुनि वचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीतिनिधाना * हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निर्ज बहुबार कम के टारे * अपन पाप गये पुनि मारे
परअपकार किहे दुख भारी * खनत गाढ़ तेहि कूप तयारी
त्यहिपर आपु चढ़े अतिरोसी * हानछाडि कछु लाभ न होसी
दो० कीन्हि कुनह विनगनह जिन,तिन सुख सुना न पाव ।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु, अत्रसुत नृगराव ॥
त्यहिते स्वपुर जाहु फिरि अपने * वंला मूढ़ सायु भय कहते
शूर संमुख नहिं सुयश सुनावें * पुरुषारथ करि प्रकट देखावें
जानो काल निकट तव आवा * ताते बोध बिपर्यय पावा

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
दशमस्कन्ध भागवतकी, अब कहौं कथाबखानि ॥

गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा * पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो * वाध देय कुन्ती को आवो
असमय परे पाण्डुसुत छोटे * परबश परि सुखलहत न पोटे
चले पाण्डु घर आये साईं * देखि मिली कुन्ती उठि रोई
आसन देत भई अनुरागी * पूछन गति नैहर की लागी
नीके हैं पितु मातु हमारे * भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे
करत कबहुं सुधि भा.न करी * देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी
सुनि बोले ब्र र बिहारी * सुखी सकल सुधिकरत तिहारी
कहिनि कृष्ण फूफूसे कहियो * चिन्ताकछु चितमें जनि गहियो
आवत हैं हम कछु दिन माहीं * चली गयार तिनकी तब नाहीं
पुनि धृतराष्ट्र पास चलिगयऊ * सुहृदबचन जस बोलत भयऊ
पाण्डु मरे तुम गद्दी पाई * पालहु सबहि एकसम भाई
चले अनीति अयश जग पैहो * देह तजे ध्रुव नरक सिधैहो
करें जा पाप सुमात भ्रम पाई * त्यहि फल होत ताहि दुखदाई
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे * अन्त रहत हैं सबहीं न्यारे
खलभल पाप परत शिर अपने * त्यहि ते पाप करेहु जनि सपने
इमि बहु कह्यो तासु हितबानी * सुनि धृतराष्ट्र न हिये समानी
बोला तबै अन्ध बेमाना * होइ जो करिहैं भगवाना

दो० यहि विधि सुनि समुझाइ पुनि, पँचहुँन का दुखहेरि ।
विदा भये धृतराष्ट्र ते, आये मधुपुर फेरि ॥

समाचार यदुपतिहि सुनाये * त्यहि क्षण अपरनिमझुकिआगे
रथचढि उभय कन की बामा * मगध देश आई पितुधामा

विनय भांति ते रोदन कीन्हा * जरासन्ध सुन धीरज दीन्हा
यदुन सहित सब हरि बलरामा * पठवौं काल निकट नव नामा
अस कहि दल तेइस अक्षौनी * लेके चला प्रवल हैं होनी
अक्षौनी द्वै भांति बखानी * लघु दीरघ सोउ दाजै जानी

लघुअक्षौहिणीप्रमाण ॥

कुकुर्भा छन्द ॥

यकइससहस आठसौ सत्तरि रथी होहिं जहँ जानौ ।
तेतनेही गजनाथ अश्वपति छाछठि सहस पिछानौ ॥
एकलाख नव सहस तीनिशत साढ़ पदर जोई ।
जनरघुनाथ बिचारि कहत तब एक अक्षौहिणि होई ॥

दीर्घअक्षौहिणीप्रमाण ॥

दो० अयुत नाग त्रै अयुत रथ, योधा लख दशलक्ष ।
तुरग कोटिछत्तिस कहत, पद्चर यह रिपक्ष ॥

आइ मधुपुरी लीन्हिसि घेरी * सुनि पहुँचे हरिबल त्यहिबेरी
देखते कहनलगा कटुभावा * बन्धबाधक सुनि वचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीतिनिधाना * हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निज बहुबार कंस के टारे * अपन पाप गये पुनि मारे
परअपकार किहे दुख भारी * खनत गाद तेहि कूप तयारी
त्यहिपर आपु चढ़े अतिरोसा * ह्यानछांडि कछु लाभ न होसी
दो० कीन्हि कुनह विनगनह जिन, तिन सुख सुना न पाव ।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु, अत्रसुत नृगराव ॥
त्यहिनें स्वपुर जाहु फिरि अबते * बंला मूढ़ साधु भय करते
शूर सुमुख नहिं सुयश सुनावैं * पुरुषारथ करि प्रकट देखावैं
जाना काल निकट तब आवा * ताते बोध विपर्यय पावा

कह हलधर यह सब कोइ जाने * लानक मनई बात नहिं माने
कुं० सुर तुष्टत हैं भक्तिते, द्विज तुष्टत लखि दान।
सुहृद तुष्ट उपकारलखि, खल तुष्टत पदत्रान॥
खल तुष्टत पदत्रान, प्रीति ते तुष्टत नारी।
सेवावश शुचि स्वामि, साधु आदरबश भारी॥
नृपतुष्टतगुणगणकथन, रिपुतुष्टत भुजबल प्रचुर।
त्यहिते यहिपरतोषिये, समरयुद्ध करि सुरेसुर॥
सुनत जगसुत उठा रिसाई * डारहु मारि सेन कहँ राई
चहुँदिशि घेरिलीहेनिरिपु कैसे * गनिहि धूम घन पावक जैसे
लागे चलन विविध हथियारा * शक्ति शूल असि बाण कुठारा
इत उत भिरत गिरन कोइ लागे * कोइ भट मरत मुरत कोइ आगे
चढ़ी अटारिन पुरनर नारी * लखि लखि शोच करें अति भारी
कोइ छण इमपि खेलाये योधा * पुनि दोउ चक्र कन्ग मे क्रोधा
छणमें दलि सब सैन सो भाई * जरासंध [illegible]
त्यहिते बहुरि लयाजे पापी * यहाँ रुधिरसरि सरित अनापी
रथ सुरेत भुज मीन समाना * शिर कच्छप गज ग्राह प्रमाना
कच सेवारसम धनुष तरङ्गा * आयुध पंक विटप जनु भङ्गा
भैरव चर्ममणि कङ्कणधारी * प्रगटी सरिता कुन्तविहारी
देदे ताल योगिनी नाची * प्रमथनको परधीरी मार्ची
गृद्ध गीध गोमाय पलाले * छाड़त मृद करावाो डोलै
इमि दलदलि प्रभु मधुरहि आये * मागधसून विजय गुणगाये
बरषि सुमन सुरपुर नर नारी * बहुबस करे आरती उतारी
मगधाधिपकी लुठि जो आई * सो सब यदुपति गाम पठाई
नृप जो जाहि दीन सो लयउ * मनियामन्त मम चरिनोंमयऊ

जरासन्ध निज नगरहि ""वा * दलबटोरि पुनि लरन सिधावा
दो० तेइस तेइस अक्षौहिणी लै लै थकइस बार।
आयाचढ़ि बलकृष्ण सब, करत भये संहार॥
यह यश कालयवन सुनिपावः * तीनि करोरि यवन लै धावा
तब विश्वकर्मा ने यदुराई * सागर बीच ",ी धनवाई
द्वादश योजन मथि हेमालै * त्रिविध बनास कालतिहुँ चालै
चौहट हाट सुगन्धन झिरको * लागे जह तहं फाटक खिरकी
दामिनिसो पताक फहराहीं * जल थल बरणि जात सो नाहीं
बन उपबन बाटिका अनेका * रतन सुसर्व एक ते एका
सोवत यदु सब तहा पठाये * अपना राम यवनपह आये
कृष्णे जब देखिसि निज आगे * काढि खड्ग धावा प्रभु भागे
धवलागिरि कन्दर मे जाई * मुचकुन्दहि पट दीन ओढ़ाई
आनु रहे छिपि सो चलि गावा * पीताम्बरलखि चरण चलावा
दो० जो नहि जानत जासु गुण, सो शठ निदरत ताहि।
सबजगपूजहियतिहिजिमि, श्वान देखि घरिखाहि॥
लागत लात खोलि दृग दयऊ * कालयवन तुरतहि जरिगयऊ
दरश दीन तब यदुपति आई * जटित वसन भूषण छवि छाई
अद्भुतरूप निरखि नृप बोला * नाथ अहो तुम कौन अमोला
की ग्रयदेवन मे कोउ होउ * की रवि अग्नि चन्द्रमा कोऊ
पूजन के तुम योग गोसाई * मही निशिदिन तव शिरनाई
मोहि जगाय जरा कोइ प्रानी * भयो हमार परमहित जानी
कह प्रभु हे नृप प्राणपियारे * जन्म कर्म मे बहु विस्तारे
नाम अनन्त न सख्या कोई * गनत थके बहु कविता सोई
मेरेउ जाति गनने को नाहीं * कहत सुनत ऋषि भवतरिजाहीं

अब जनहित भजन महिभागा * भयो आइ वसुदेव कुमारा
कंस आदि बहु शत्रु निपाते * यवनेशहि लायो तेहि नाते
रिपु जराऊ पुनि तुम्हैं निहारेउ * एक पंथ द्वै कारज सारेउ
अब बरु मागु रुचै जो तोहीं * नाथ भक्ति दीजै निज मोहीं
मैं निद्रा विषयासन वारिकै * वादि बयस खोई अवतरिकै
तब प्रभु भजन भाव समुझाई * पुनि बदरीवन दीन पठाई
कह नृप कौन रह्यो बड़भागी * बोले व्यास सुवन अनुरागी
नृप मुचकुन्द अवध के जानो * पर उपकारी एकहि मानो
कीन्हि देवतन केरि सहाई * बहुदिन गये रहा कोइ नाहीं
इन्द्र मुदित ह्वै कह बर लाजै * बोल्यो महिप मुक्ति मोहिं दीजै
भूपति मोक्ष कहा हम पावैं * एतो हरि के पास रहावैं
तो फिरि नींद घनेरी देहू * जेर जगावै सो सुनि लेहू
सुनि तिन एवमस्तु कहि दीन्हा * तबते यहां शयन इन कीन्हा
दो० निद्रहि कस सुख सेज महि, कुपितहि कह घट शुद्धि।
कामिहि कस भय लाज जग, क्षुधितहि कस बल बुद्धि॥
सोवत कालयवन पग मारा * त्यहि अरअधम भयो जरिछारा
पुनि प्रभु गे मधुपुर मिलि दोऊ * मारे मुसलमान सब सोऊ
तेहि क्षण जरासन्ध चढ़ि आवा * रामकृष्ण सो दल लखि पावा
लरे कछुक पुनि भागत भयऊ * गौतमगिरि ऊपर चढ़ि गयऊ
घेरा योजन केर निहारी * जरासन्ध तब दीन पजारी
निकरि द्वारके गे दोउ भाई * हूगा भूधर भसम बनाई
जाने जरासन्ध अरजाना * आवा बहुरि भवन हर्षाना
इहां सकल यदुवंशिन काहा * चहौ कौन हलधरकर व्याहा
शहर अरुणपती रैवत भूपा * तासु सुता रैवती अनूपा

ताके मरा दीन भा ब्याहू * येद विगान गृहिन उत्साहू

दो० संसकार जाकर जहाँ, मिलत सो ताहि विशेषि ।
मैना की कन्या वरी, द्वापर स भर लेषि ॥

इति श्रीजरामन्थसम्बर्गनोनामदशमोऽध्याय ॥ १० ॥

दो० सुमिरि रामप्रिय मन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
नीतिसहितरुक्मिनिविहरण हरिकृत कहत बखानि ॥

अब विवाह रुक्मिणि कर सुनहू * रमन सुभगे कृष्ण हरि उनहू
कुण्डिनपुर भीष्म नृप हेरे * जनमी एक सुता तिनकेरे
रुक्मिणि नाम ज्योतिनि गरा * मन गणधाम श्यामपति भाला
दिन दिन कन्या बर्धत कैसे * शुक्लपक्ष कर चन्द्रा जैसे
खेलन सङ्ग सखिनके लागी * इक दिन यक बोली अनुरागी
रुक्मिणि तुं नित खेल विगारा * लुकनिकिशोर करत हजियारा
सुनि हँसि गृहगमनी सुखपाय * गृहिनर तह नारदऋषि आये
देखि रूप गुण मन में जाने * कृष्णचन्द्र से आइ बखाने
कुण्डिनपुर महँ भीष्मकुमारी * रुक्मिणि ह सो ये।गविहारी
तबते बनी हृदय पति मुरारी * सुनहु कथा पुनि कुण्डिनपुरकी
यकदिन सुयश याचकन गावा * कृष्णकेर भूपति सुनि पावा
तब निजभवन गवानत भयऊ * सुनिरुक्मिणिनिजउरधरिलयऊ
रहत भई सकल अवशा * बरिहों मैं हरी के मशा
यकदिन भीषम देखि विचारी * भई विवाहन योग कुमारी
सब भाइन ते पूछेसि बोली * बरिये काहि रुक्मिणी खोली
तब सब लोगन भूप गनाये * नाना देशन के बहि भाये
तब आय याचक नृप केरा * रुक्मसेन बोला चहि बेरा
तात रुक्मिणी कृष्णहि दीजै * नवल नात बसुदेव ते कीजै

सुनि नृपसहित सकल पुरवासी * बोले बात कही इन खासी
सेवक सुत बड छोटहु जानी * हितकी बात कहे सो मानी
आदिपुरुष जिनके घर जनमे * मारिनि कंस असुर बहु बन मे
को मिलिहै इनते बल भाई * सुनि बोला बड पुत्र रिसाई
बोलहु वचन संभारि सुनीती * जानत तुम न कृष्ण की रीती
षोडश वर्ष नन्द के राहा * तब अहीर सब काहू दाहा
ओढी कामरि गाय चराई * जातिहु तासु न जानी जाई
कोऊ नन्दकेर सुत गावै * कोऊ यदुपति कर बतावै
अबतक भेद न काहू पावा * यह धौं कृष्ण कौनको जावा
प्रभुता वेश न लेश मवासी * उग्रसेन की करत खवासी
दो० तिनके सङ्ग बिवाह करि, कहो मिली फल कौन ।
लायकत्त कीन्हो चही, वैर प्रीति अरु गौन ॥
लोभसोभलजह फलअधिकाई * चाटे ओस पियास न जाई
नगन न्हाय सो काह निचोवै * ज्यहि धन नाहिं सो का कोउ खोवै
त्यहिते भूप चंदेरी केरा * है शिशुपाल प्रतापी हेरा
ज्यहिघर परमपराते गादी * आवत होत राज्य नहिं बादी
ताको ब्याहि रुक्मिणी दीजै * कृष्णकर अब नाम न लीजै
सुनिनृप सहितलोग पछिताने * रहे साधि चुप सकल टराने
सबल शत्रु नृप नीच गोसाई * इनते हठ कीन्हे न भलाई
मरसते न कही हरि गाथा * गिरि खोदे पर पाथर हाथा
अस मनगुणि गमनेकहिंशीशा * जबर कि राह कहत फुर शीशा
तब तहं रुक्म बोलि बटु लीन्हा * लगन शोधाइ पठै पुनि दीन्हा
जाइ विप्र शिशुपालहि दीन्हा * टीका बड भावते लीन्हा
दो० यदपि कह्यो बहु भीष्म नृप, चह्यो कृष्णको देन ।

तदपि न बूझेउ बैरथल, लालच ग्रसित सुखेन॥
तब शिशुपाल ब्याहहित फूली * लोकवेदविधि करी समूली
देकर भेट बिदा करि ताही * न्योत्यो बडे बडे नृप चाही
आइ विप्र भीषमे सुनावा * बडी धूमते आवन तावा
बेगि ब्याहकी करहु तयारी * तुरत गुणीजन लीन हँकारी
अतिविचित्र माडौ तनवावा * मङ्गल गान सकल पुर छावा
एक सखी बोली मृदुबानी * रुक्मिणि भई बडी तुम रानी
अस सुनि कहत महीपकुमारी * मन बच कर्म मोपति गिरिधारी
विप्रहि विप्र बोलि यक लीन्हा * लिखिके पत्र तासु कर दीन्हा
दीजे जाइ कृष्ण के हाथा * बहुरि उन्हें लायो निजसाथा
तौ मैं बड तुम्हार हित मानौं * रारदीन कृष्णपति जानौं
यह सुनि चला द्वारके आवा * कृष्णचन्द्र को पत्र दिखावा
महाराज सुनि सुयश नवीना * तबते मैं तुमको पति कीना
मिलन केर आशा दृढभावा * वेदनहू याही विधि गावा
जाकर प्रेम सत्य है जामें * सो त्यहि मिलत न संशय यामें
अबम्वहिं लेन चहत शिशुपाला * जिमि मृगपतिकरभाग शृगाला
त्यहिते सत्यवचन अबिनासी * कीजे मोहिं आपनी दासी
जो नहि लेहौ खबरि हमारी * तौ तन त्यागब शपथ तुम्हारी
दो० जिमि रघु रक्षी सुरभिवन, रक्षी मृगपति मेख।
त्यहि प्रकार म्वहि रक्षिये, प्रणतपाल प्रभु लेख॥
ऐसे वचन बाँचि बनवारी * आवा भरि नयनन में बारी
तुरत उग्रते आयसु लीन्हा * रथचढिगमन सहित द्विजकीन्हा
पहुँचे जब कुण्डिनपुर जाई * उतरे भूपति की फुलवाई
त्रि० देखी बनवारी जनु तपनारी अचल अगारी थिर न रहे।

परिरहत दिगम्बर पुष्पदती वर निरखि रूप नर मोहलई ॥
लहै गर्वित गर्भे दिनप्रति अर्भै अर्पत सर्वै पर्स करे ।
परसत पतिपावै तदपि सुहावै सवति न भावै भाग्य बरै ॥
बोलहिबहुबोलानिजनिजटोलाधरिधरिचोलाविपुलसखी ।
श्यामहि जनु सारी रही हँकारी हर्षित प्यारी प्रेमलखी॥
इहा रुक्मिणी करत बिचारा * अजहू नाहिं आये करतारा
पुनि पुनि चढि महलोंपर जावै * चहुँदिशि चितै विकल फिरिआवै
इतने मे द्विज आइ बखाना * मनहु लह्यो जल शालि सुखाना
प्रमुदित ह्वै दीन्हों बरदानू * जाहु सदा रहिहौ वनवानू
बहुरि कह्यो हरिने उर धरियो * देवीपूजन मे स्वहिं हरियो
पाछे ते आये बलदेऊ * छपन कोटि यादवा तेऊ
सुनिमहिपालमिलनचलिआवा * सो सबहाल रुक्म सुनि पावा
बोला नृपते ऐसे रिनक्रा * येनं इहा बलायो इनका
जहा जात तहं करत बखेरा * भीषम कहा कछु मोहिं न चेरा
तिसर पहर नगर दोउ भाई * आये लाख कहे लोग लुगाई
जस गुण रूप तैस सम्बन्धा * जिमि मुठि सोने माहिं सुगन्धा
इनके दरशमाहि सुख जैसो * पुक्षिन माहिं न होई ऐसो
दो० गौर श्याम सुषमासदन, बदन विलोचन चारु ।
सहित वसन भूषण बसहु, उरसि अहै जिमि हारु ॥
यहिविधिकहिमबहिनसुखधारा * शिशुपालहि तब रुक्मजनावा
अब सब खबरदारते रहना * आये है उपाधि के गहना
तब शिशुपाल समूह सिपाही * पठे दिये रक्षाहित ताही
इत उत गई कनात तनाई * देवीपूजन कुवरि सिधाई
सग सखी माहिं त्रिधि बाग * कीन्हे तन षोडश शृङ्गारी

कुं० मज्जनपट अञ्जन तिलक, स्रक कुण्डल ताम्बूल।
चेमरि अँगिया किंकिणी, कङ्कण पायलमूल॥
कङ्कण पायलमूल, सुनूपुर कुंकुम बेनी।
यह षोडश शृङ्गार, त्रियनके औरहु श्रेनी॥
श्रेनी मानहु मदन, केरि निकसी मदगञ्जन।
शोन साथ रघुनाथ, करत मुनि मुनिमनमञ्जन॥

रोलाछन्द॥

कोइ पद्मिनि सुकुमारि लाजयुत सहित सुगन्धा।
कोइ चित्रिनि सम रूप चहत उपबोध प्रबन्धा॥
कोइ शंखिनि युत रोष दया बिन बेगि प्रचारै।
कोइ हस्तिनि बड उदर पयोधर कमर करारै॥
कोइ स्वकीय सुख दुःख माहिं निज नाथहि जानै।
कोइ परकिय परपुरुषकेर सँग छिपिकै ठानै॥
कोइ गुण रूपागम प्रेम बश कोइ रस छ्पावै।
कोइ सामान्या द्रव्य लोभवश प्रीति बढ़ावै॥
सन्धिमय कोइ अंकुच जनति यौवन कोइ मुग्धा।
कोइ ज्ञाता अज्ञात वपुष वय भोग निरुग्धा॥
कोइ मध्या सामान्य कामयुत लाज जनावै।
कोइ प्रौढा परवीन अधिक रसकेलि सुहावै॥
कोइ धीरा हतव्यग कोई अधीर रिसासी।
कोइ ज्येष्ठा पतिपीय कनिष्ठा कोइ कम चहती॥
कोई गुप्ता गति अलख कोई परतीति लक्षिता।
कोउ मुदिता मिलमिलन विदग्धा कोइ सुरक्षिता॥
कोइ अनुशयना दुखित जासु संकेत नशान्यो।

कोइ कुलटा अतृप्तचित्त चिरठौर लोभान्यो ॥
कोइ स्वाधीना स्वबश कीन नाहँ निजगुणते।
कोइ उत्का के हेत न आयो प्रीतम सुनते॥
बासकशय्या कोइ कन्त को आगम देखै।
कोइ कलहन्तरितादि निदरि करि शोच विशेखै॥
कोइ खण्डिता अपर पास लखि पतिहि रिझावै।
द्विज लब्धा कोइ जौन पतिहि सङ्केत न पावै॥
कोइ अभिसारिनि आपु जाइँ, की हरिहि हँकारै।
प्रवृत्तिपतिका कोइ जासु पति गमन विचारै॥
कोइ प्रोषितपतिकाहि कन्त परदेशम जाको।
आगमपतिका कोइ होइ उतकण्ठा ताको॥
कोइ दूखिता दुखित होत लखि बाधक जानै।
कोइ गर्वित पतिरूप अधिक कोइ जठर प्रमानै॥
आई करत कलोल सकल देवी के पासा।
पूजन कीन्ही कुँवरि कृष्णकी करि उर आसा॥

दो० और सखी जे सगकी, करि प्रणाम कहैं बात।
यहि कन्याको कृष्णपति देहु दयाकरि मात॥
पूजन करत न पतिहि जब, परयो महिपकुमारि।
लगी करन अतिशोच तब, यहिविधिहृदयविचारि॥

कुं० बीसन बुडकी मै दई, मुकता लग्यो न हाथ।
सागरकेर न दोष यह, निज अभाग रघुनाथ॥
निज अभाग रघुनाथ, नाथ ऋतु सबहि फुलावै।
पात न लहै करील, ढीलको ताको गावै॥
गावत सुनै न बधिर, भानुद्युति तमचुरदीसन।

रहत-गन्ध बिन केतु, मलयढिगयहिविधिवीसन॥
मन चाहतहै मिलनको, मुख देखन को नैन।
श्रवणचहतसुखप्रदसुन्यो, श्यामसुंदर के वैन॥
श्यामसुँदर के वैन, सैन बश होन न पावत।
हाय दई का करौं, यतनएकौ न लखावत॥
आवत एक प्रतीत, अहैं प्रभु प्रणत पालघन।
शरण समुझि सुधि लेहैं, लेहैं पुनि लेहैं टीकमन॥

दो० यहिबिधि मनमें ठीक दै, चली चहूँदिशि हेरि।
इतने में हरि आइ तहँ परदा दीन्हो चेरि॥
कुँवरि कुँवरको रूपलखि, भे मूर्च्छित भट सर्व।
कर गहि रथ बैठारि प्रभु, चले गाजि नृप गर्व॥
जोरावरते नहि चलत, छल बल बुद्धि उपाइ।
टटकन टरे न गाज जिमि, मेघन ते मृगराइ॥

इति श्रीरुक्मिणीहरणवर्णनोनामएकादशोऽध्याय ॥ ११ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
नीतिसहित रुक्मिणिकथा, हरिकृत कहत बखानि॥

यहि विधि जब श्रीकृष्णमुरारी * हरि चलिभे भीषमक कुमारी
तबतो जरासन्ध अस कहई * धिग धवी हम सबको अहई
जिनके जियत गोप नृपनारी * हरिलैगो जिमि शिवहरिनारी
यशी पुरुष कहँ अपयश होई * मरण नीक भल जियब न सोई
असकहि गहि आयुध सबदौरे * धरु धरु मारु मारु कहि बौरे
इत हलधर यादव लैधाये * भिरिगे ठौर ठौर भट पाये
पैदर ते पैदर हयते हय * रथिनते रथी जुटे गयते गय
छूटे चक्र बाण बिकराला * तोमर परशु शक्तिसम काला

मुद्गर शूल भुशुण्डि सुहाई * पुनि कृपाणते मची लराई
कोटिन मुण्ड धरणिपर गिरहीं * धरधरु कहि कबन्ध बहुफिरहीं
भूत प्रेत योगिनी कराला * मुदितभये खग श्वान शृगाला
यहिविधि सैन नृपनकी नाशी * शलशब्द कीन्ह्यो बलराशी
दो० जरासन्ध शिशुपाल दोउ, गये तुरतही भागि।
धीरज दै शठ रुक्म तब, चढा रुक्मिणीलागि ॥
जैसे पाखीकी दशा, देखत पांखी आन।
तद्यपि कूदत दीप में, अस विमोह बलवान ॥
आगे बढि कृष्णहि ललकारा * जात कहा करि विघ्न हमारा
रह्यो डहॅकि कदरनके बीचा * जानहु आजु आपनी मीचा
अस कहि निकट आय प्रभुपाहीं * मागिसि गदा माफ उमहीं
पकरि कृष्ण शिर काटनलागे * कह रुक्मिणी जोरिकर आगे
बन्धु भीख मोकहॅ प्रभु दीजे * इतना कहा चेरि कर कीजे
मोछ मुडाइ राखि पुनि चोटी * पाछे बांधि लिहिनिनिजजोटी
कटक निधनि आये बलभाई * सनोमान करि दीन छुडाई
बोले हरिते उचित न कीन्ह्यो * बन्धु विरूप विरचि दुख दीन्ह्यो
राजा सुन दुख पावा होई * लघुमति हम कहब सब कोई
बन्धु करे जो बनकर कामा * तदपि न हतिये हित परिनामा
जो बहुलाग कुमगम होई * तदपि न कीजे सगरि सोई
होइ धनी धनरहित जो कीजे * तदपि ताहि लघुप्रकृति न लीजे
जो न होइ बल देन को दाना * तदपि न तजिये सम सनमाना
घटे प्रीति जो मित्रते कबहू * मुखते उघरि न जृटिय तबहू
जोनिशिदिवस न हरिभजिपये * तदपि न साझ प्रात विसरये
जो नर नारि होइ दोउ त्यागी * तदपि रचिये निमि तृणआगी

परहित करत प्राण जो जाई * तदपि न तजिये कबहुं भलाई
दो० रारि रोग रिपु अग्नि नृप, करन तपोधन व्याल ।
जो ये होवैं लघु तदपि, सजग रहिय सबकाल ॥
वणिक वाम बैरी बिकल, व्यसनी चुगुल अजान ।
करैं कोटि सौंहैं तदपि, इन विश्वास न आन ॥
जो कामी नर कृपण कहि, करै आपनी रिन्द ।
तदपि अकार्थ न दीजिये, विद्या विन्दरु जिन्द ॥
जो सुर भूसुर साधुकी, लखै न सेवा भाव ।
तदपि न निन्दा कीजिये, नाहि सुनिय करिचाव ॥
उत्तम विद्या नीचते, मिले जो दीन्हे मान ।
तदपि तासुते लीजिये, शिरपर धरि अहसान॥
जो कबहूं सतसंग ते, उदय होय बैराग ।
तदपि एकहीबार कुल, धर्म न कीजे त्याग ॥
जो सब तीरथ मिलै करारी * तदपि न तजिय हरिपद बारी
जो कबहुं गुरु रहे रिसाई * तदपि निहोरि चूक बखशाई
जो धन हीन विद्या लघुंऊरी * पढ़ि तदपि लीजे निजहेरी
जो शुचि दास कबहुं फिरिजाई * तदपि ताहि है नर्म मनाई
जो अपने ते बनै न नेकी * तदपि अपर की करत न छेकी
जो श्रुतिशास्त्र मुखागर चाहिये - पढत सुनत नित तदपि रहिये
जो अति कष्टहु ते सतसंगा * मिले तदपि नित करिय प्रसंगा
सुर सुत त कछु कहै न यद्यपि * करिये अदब मान लगि तदपि
दो० कवि बुध गुरु तिय सुत सुहृद, द्विज मरमी शठ भाय ।
जो यह करैं अनीति कछु, तदपि तरह दैजाय ॥
पुनि रुक्मिणि ते गिरा उचारी * तजहु शोच निजवश विचारी

क्षत्रीकुल विधि अस निरमायो * अवनिरवनिधन धामलोभायो
भ्राते भ्रात हते करि कोहा * भूपकने अस पातक मोहा
सो गुण हम में एकौ नाहीं * सबकर हित चाहैं मनमाहीं
हिन्दू प्राण ते प्रिय अधिकाई * शलभ जरे नहि दीप लगाई
बहुरि विवाह आठ विधि केरे * धर्मशास्त्र में मुनिन निबेरे
दो० ब्राह्म दैव परजापती, आर्ष असुर गन्धर्व।
राक्षसबहुरि पिशाचअथ, सुनहु ब्याह विधि सर्व॥

कुकुंभीछन्द॥

सालङ्कार दान कन्या को ब्रह्म कहावै सोय।
दान दक्षिणा मे कन्या को देत देव सो होय॥
तुम दोउ मिलि सब धर्म करौ कहिदेइ प्रजापति जानौ।
लै द्वै धेनु देत दुहिता जो सोई आर्ष परमानौ॥
सुप्त प्रमत्तनकी कन्यनको हरिबो सोइ पिशाचा।
बरै कुँवरि बाधि बन्धु सो राक्षस नृपै परत यह राचा॥
ह्वै सकाम कन्या कर पकरै ब्याह सो गान्धर्व कहिये।
असुर अनीति प्रीति नहिं पौरुष यह उत्तमहि न चहिये॥
त्यहिते हम क्षत्रीके बालक * कीनि अनीतिनिजकुलघालक
सुनि वैदरभी अति सुख पायो * मोहजनित विषाद बिसरायो
रुक्म लाजवश भवन न गयऊ * निज दासन ते बोलत भयऊ
पहिले पुरते बात जो कहिगे * कृष्णबिन मुख न देखावें चहिगे
ताही ठौर नगर यक ठारा * नाम भोजकट तासर धारा
सब जानी सनमानि बताई * रह्यो तहां इन नारि भलाई
इन शिशुपाल कह्यो बिलखाई * अब हम जाब न निजपुर भाई
हँसी कि बात कही नहि जाई * मुररीचन्द चले पुर आई

जरासन्ध कह भूपन तीरा * हानि लाभ रहते हैं वीरा
हम नहिं प्रथमैं इनते हारे * पुनि दोउ बन्धु शैलपर जारे
त्यहि ते तात तजहु गति मनकी * दारुयोषिता सम गति तनकी
समुझिसोकविपुलशोक न गहई * वर्तमान सब वर्तत रहई
मूरुख गई वस्तु को शोचै * द्रव्य पाय जेहि धर्म न रोचै
मूरुख करी कृत्य को मानै * हित की बात न मनमें आनै
मूरुख पन्थ चलत मे खावै * मूरुख हसन माहिं बतलावै
मूरुख शठने करै बिबादा * खरचै द्रव्य वित्तते ज्यादा
मूरुख करै सबल ते बैरू * मूरुख बल राखै अनगैरू
मूरुख बिन मतलब कटु बोलै * मूरुख पाप अपर के खोलै
मूरुख द्वै बिच तीसर फादै * मूरुख बात वाम की कादै
मूरुख निर्धन के धन धरई * मूरुख वृद्धमाहिं तिय बरई
मूरुख बहिनि सार सँग भेजै * मूरुख जाट पराई सेजै
मूरुख कर्म क्रिया ते हीना * मूरुख चलै न पति आधीना
मूरुख मद मागत मे करई * मूरुख प्रीति जोरि पुनि लरई
मूरुख निजमुख निजगुणगावै * मूरुख बालक मुहँ लगावै
मूरुख त्यागी ह्वै धन जोरै * मूरुख बिन मतलब फल तोरै
मूरुख दखल देई बिन जाने * गहै चपलता गुरु अस्थाने
सब ते बड मूरुख त्यहि चीन्हा * नरतनजिनहरिभजन न कीन्हा
त्यहि ते तुम मूरुख के लेखे * मिली न मिली वस्तु अनमेखे
यहि बिधि सब भूपन समुझावा * तब लजात निजभवन सिधावा
पहुँचे कृष्ण द्वारका तीरा * सुनिकै उग्र लई बहु भीरा
आगे लिहिनि धूम ते आई * राजमहल लाये सुख पाई
कीन्ह बिवाह वेद विधि तेरे * लागे रहन सकल सुख मेरे

कह नृप रुक्मिणि पूर्व मँझारी * करी पुण्य ऋमि कौनिउँ बारी
दो० तीनि अंश ते जानकी, लिन रहैं अवतार।
बेदवती स्वइ रुक्मिणी, सतिभामा महिभार ॥
कृष्ण रुक्मिणी केर शृंगारू * कहत शेष नहिं पावहिं पारू
तो मैं किमपि कहाँ मतिथोरी * पाय पिपील कि सागर बोरी
कछु दिन बादि रुक्मिणिजायो * बालक नाम प्रद्युमन पायो
शोभासदन मदन अवतारा * हरि प्रतिबिम्ब मनहु अतिप्यारा
दो० सम्बर राजा पवन है, हरिलैगा रिपु जानि।
दीन्हेसि डारि समुद्र महँ, लील लीन मीनानि ॥
धीमर मीन पकरि रवर लीन्हा * जाइ भेट सम्बर को दीन्हा
चीरत सुत निकसा महिपाला * सौंपि दीन्ह रतिका तेहिकाला
पाच वरष का भा जब बाला * भेद पाइ सम्बर को मारा
लै रतिसङ्ग द्वारके आये * मानहुँ प्राण रुक्मिणी पाये
भा तब आनँद सहित बिवाहू * वसी सदन रति सह नरनाहू
दो० श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
कृष्णायन यह अयनको, पूर कीन्ह रघुनाथ ॥
द्वितिया अयन कहौं समुझाई * पन्द्रह से पचास चौपाई
दोहा इकसे सतहत्तर जानों * सोरठ चारि सोउ पहिचानो
रोलाछन्द नवै हैं सोई * नवं कुंडलिया यामें जोई
कुकुभाछन्द तीनि हैं भ्राता * तीनि गीतिका यामें ताता
दो० भुजँगप्रयाता एक है, एक सवैया छन्द।
एक कवित्त चामर सुयक, एक - त्रिभङ्गीछन्द ॥
इति श्रीरुक्मिणीमङ्गलवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥
इति कृष्णायनखण्ड समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृत

रामायणबालकाण्डप्रारम्भः ॥

श्लोकः ॥

वपुवनजविनीलं लोकलावण्यधामं
सुखनिधिसमशील लोहिताक्ष विशालम ॥
करधनुशरधारी कौटक पिङ्गवस्त्र
विधिहरिहरसोश जानकोश नमामि ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं ब्रह्माण्ड पुराणमत, रघुपति खण्ड बखानि ॥
श्रीगुरु देवाराम के, चरण कमल धरिमाथ ।
बर्णत सीताराम गुण, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥
कथाअलौकिक कुशलसुनि, करै न मन सदेह ।
राम अनन्त अनन्त गुण, कतहुं होयगो येह ॥
हाथ जोरि बोले वचन, पुनि शौनक अभिराम ।
क्यहि कारण अवतार जग, लीन परात्पर राम ॥

सो० मुनि सुमन्त सुख पाय, बोले सुनिहरिगुण सुनहु ।
जो बरणे गिरिराय, गिरिजाप्रति सोई कहब ॥

एक समय कैलास मझारी * बैठे रहे उमा त्रिपुरारी
मन प्रसन्न शंकर कर जानी * बोली शिवा जोरि युग पानी
राम सच्चिदानन्द निकेता * नरतन धरनि नाथ क्यहि हेता

कीन्हेनि चरित कौन विधिकेरे * सो सब नाथ कहो हित मेरे
ज्ञानहु तेपि श्रवण सुख भारी * सनकादिक जहं रमे बिचारी
सुनि शंकर बोले मृदु बानी * धन्य धन्य तुम धन्य भवानी
राम चरित पूछेउ सुखदाई * सो अब सुनो कहों में गाई
कौन चहत लीला हरि जबहीं * ठाढ करत हैं कारण तबहीं
जैसे बिशिख चलावै कोई * प्रथमै धरत निशाना सोई
उभय देव जाने अभिमानी * अरिकरि शरण भये भयमानी
तीसर हेतु मनुहि वरदाना * दीन रहे प्रभु कृपानिधाना
तूर्य युद्ध जानकिहि देखावन * पञ्चम जग विराग उपजावन
षष्ठम मुनिजन सुमिरण कीन्हा * भक्तवछल लखि दरशन दीन्हा
सप्तम देखि धरम की हानी * अष्टम प्रीति जनककी जानी
नवम बचन बिधि के बहुतेरे * कीन्हे चहैं साच त्यहि तेरे
दशम दशानन सबै सताया * बचन हेतु प्रकटे रघुराया
यहि विधि हेत हजारन जानो * इतनेही हित जन्म न मानो
पुनि गिरिजा बोली कर जोरी * राम कथापर प्रीति न थोरी
नाथ कहो केहिविधि जगदीशा * बपुधरि निधन कीन्हदशशीशा
केहिविधि भवन बसे सुखकारी * सुनि लागे तब कहन पुरारी
दो० इक रावण जय बिजय में, युगल जलन्धर आप ।
तीसर रावण शम्भुगण, चतुरथ भानुप्रताप ॥
यहिविधि कल्पकल्पप्रति रावन * होत करत हरि वपुधरि पावन
य्यहि कारण साकेत विहारी * प्रकटे तासु कथा सुनु प्यारी
नाम प्रताप सखा प्रभुकेरा * महि अवतरेउ आइ प्रभु प्रेरा
सत्यकेतु नृप केकय देशा * तस्य भवन जनु उयउ दिनेशा
नाम प्रतापभानु बलधामा * कीन्ह राज रिपुदल अभिरामा

एक बार बन गयो शिकारा * तहां कपटमुनि असुर निहारा
तिन्है सोम वश चीन्यो नाहीं * गुरु बनि दियेसि पाक घरमाहीं
नरपल अशन भई नभबानी * विप्रन शाप दीन्ह दुख मानी
राक्षस होउ कुटम्ब समेता * ते जह भये सुनो सो हेता
ऋषि पुलस्त्य सुत ब्रह्मा केरे * रहे करत तप मेरु के नेरे
तहँ तृणविन्दु राजऋषि रहेऊ * कन्या तासु कांतिकर अहेऊ
सखिन सहित सोदिनप्रतिआवै * कलरव मुनिके निकट मचावै
मुनिवर ध्यान बनै नहि राई * तब पुलस्त्य अस कहा रिसाई
आसपास जो इहँग आवै * प्रमदा पुत्रवती ह्वै जावै
कन्या गई रही अवधाना * जब तृणविन्दु ध्यान करि जाना
तब सो सुता मुनिहि करि दयऊ * त्यहिते विश्रवा को सुत भयऊ
बड़ो भये पितु आयसु पाई * करन लाग तप कानन जाई
दो० भरद्वाज मुनि के रहै, कन्या सुयशा नाम ।
विश्रवसहिवरि दीनतिन, नेह सहित अभिराम ॥
तिन के भये कुबेर विधाता * कीन्हेउ नारि यक्षपति ताता
तदपि एलाबिल दिनप्रति आई * करहि मातु पितु की सेवकाई
यहि विधि बीते बरष हजारा * तब कुबेर निज हृदय विचारा
जो मम पिता अपर तिय करहीं * तो दुनहुन की सेवा करहीं
मयदानव याच्यो अभिरामा * माया दुहि सुवशा नामा
तिन के हित निज दूत पठावा * सुनि मयदानव वचन सुनावा
भिखि भिक्षा मागन चाहीं * हम निजसुता विवाहब ताहीं
औरो वचन कहे कटु नाना * दूत धनद ते आइ बखाना
सुनि कुबेर निज सैन बटोरी * चढ़े तहाँ भै मारु न थोरी
तासु निसिचरहि जीति यहि रीती * दीन्ही पितहि बराति सह प्रीती

विविध भांति कीन्ही तिन सेवा * देखि प्रसन्न भये मुनि देवा
साझ समय लीन्हेंनि रतिदाना * यद्यपि मुनिवर दोष बखाना
भई गर्भ सद्युत यहि भावा * जन्म समयकर अवसर आवा
उलकापात होन तब लागे * गर्जे मेघ समय बिन आगे
रविशशिग्रहण पवनचलिजोरा * दिन की राति भई अति घोरा
कांपि उठी महि देव डराने * सब विप्रन के पेट पिराने
दुष्ट मुदित मुनि भये मलीना * अग्नि तेजहत नख द्युति छीना
उदित केतु नभ जम्बुक बोले * श्वानदल कोरलव बाध खोले
प्रथमे सुत देवी युग जाये * रावण कुम्भकर्ण कहवाये
कहुँ कहुँ कहत केकसी माता * सो जय विजय समयकीबाता
भये सुबला के सुत पाछे * त्रिजटा अग्र विभीषण आछे
माया सुत जन्मे कर लेखा * खरदूषण त्रिशिरा सुपनेखा
जब कछु भये सयाने नीचा * करैं उपद्रव कानन बीचा
खग मृग एकहु बचन न पावैं * तपत मुनिन कहँ जाइ सतावैं
दो० मारन मोहन वशकरन, उच्चाटन अस्तम्भ।
आकर्षण सब भांति के, पढे सदा करि दम्भ॥
निश्चर प्रथम सुरन रणभाने * बचे ते रहे पताल दुराने
तिननिजवश अवनिपरजान्यो * छिपिकरि आवागच्छ सुटान्यो
यकदिन दनुज पूज्यअसकहेऊ * करहु तपस्या जो सुख चहेऊ
अमर बिना जग स्वप्न सरीखा * लागे तपन सकल सुनि सीखा
अर्ध अग्नि रवि दिशि दगदयऊ * दिव्य सहसदश सवत गयऊ
महाकठिनतपलखि बिधिआयो * दशमुखखललखि बाग बुलायो
बैठे गिरा तेहि जीह मँझारा * तब विरञ्चि वर माग उचारा
बोला सुनि रावण हम नाहू * नरहरि तजि न मरें कर काहू

एवमस्तु कहि अज तहं आये * जहां विभीषण ध्यान लगाये
सुजन जानि बोले अनुरागी * भावै सो लीजै वर मागी
कह्यो विभीषण दोउ करजोरी * हरिपद प्रीति बढै प्रभु मोरी
एवमस्तु कहि पुनि धरि धीरा * पहुंचे कुम्भकरण के तीरा
दो० ताहि देखि बागीश निज, मनमें कीन्ह विचार।
जो यह नित भोजन करी, नाशी सब संसार॥
सो० करि यहि भांति विवेक, प्रेरि गिरा फेरी उपल।
मागेसि बासर एक, जागहुँ सोवहुँ मासषट॥
कहि तथास्तु बहुरि विधि डोले * खर दूषण त्रिशिरा ते बोले
तिन मागा हम होंइ वीरा * अंतसमय जाईं हरि तीरा
देखि सो त्रिजटा शीश नवावा * होइ प्रीति हरिपद वर पावा
पुनि लङ्किनी नवायो शीशा * बोले तब त्यहि ते बागीशा
शाखामृग तुम का जब मारी * तब छूटी यह देह तुम्हारी
दिव्य रूप धरि हरिपुर वासा * होइ तब निश्चर कर नासा
यहि विधि विधि सबका वरदीन्हा * पुनि निज लोक पयानो कीन्हा
दशमुख जो अजते वर पावा * प्रमुदित ह्वै सो कविहि सुनावा
कह्यो शुक्र ह्वैगे बडि भूला * नर बानर क्यों तज्यो समूला
बोला कौन चूक इन लागी * डरे वृथा तृण दारुहि आगी
अस कहि लाग करन ठकुराई * निश्चर निकर रहे तहं आई
दो० मयतनया मन्दोदरी, हेमाते संजात।
वरि दीन्ही तेहि रावणै, समुझि सबल भलनात॥
नारि मनोहर पाइकै, उठा अधिक हरषाइ।
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि, व्याहे पांचो भाइ॥
सानदलि वृकदत्त कुमारी * सो भइ कुम्भकरण की नारी

नगदन्ती केहरि मल जाई * सो बल्लभा विभीषण पाई
रम्भल के कन्या मैं बरणी * खर दूषण त्रिशिर की घरणी
बनितन सहित सो पावा भाई * करहिं भवन सुख शोक बिहाई
यकदिनदशमुख पितुपहँगयऊ * त्यहिक्षण धनपति आवत भयऊ
बैठे धनद पितहिं शिरनाई * मुनि कीन्हो आदर अधिकाई
कछुक काल रहि आयसु मागी * गये कुबेर भवन अनुरागी
आदर अधिक पिताकृत देखी * रावण उर भा कोप विशेखी
खलन केर ये लक्षण आहीं * परप्रभुता लखि जरि बरि जाहीं
उठि ऋषि ढिगते मन्दिरआवा * जननी ते वृत्तान्त सुनावा
त्यहि तब कहा धनद ये अहहीं * कञ्चन की लङ्का में रहहीं
चारो तरफ सिन्धु है जाके * अमरपुरी नहि सम सरि ताके
सो लङ्का तव नाना केरी * बसै आपु मम पितहि खदेरी
सुनि दशमुख अति उठा रिसाई * दल लै लङ्क गयेसि जाई
प्रथम कुबेर युद्ध अति कीन्हा * पुनि है श्रमित त्यागिगढ़ दीन्हा
भागत देखि निशाचर राई * लीन्हेसि पुष्पक यान छिनाई
लङ्क बिलोकि परमसुख मानी * कीन्ही तहँ रावण रजधानी
यथायोग्य पुनि निशिचर नाहू * दीन्हे भवन बाटि सब काहू
तब कुबेर निज कुटुँब समेता * अलकापुरी बसाइ सचेता
आपु गये सुरपति के तीरा * सकल व्यवस्था कही अधीरा
सुनि सुरेश सब देव बुलाये * हनि निशान लड़िहे चढ़िआये
दशमुख लै निकसा कटकाई * होइ इन्द्र ते लगी लराई
अस्त्र शस्त्र छूटैं विधि नाना * अगणित असुर होइँ बिन प्राना
बासव कोपि बज्र यक मारा * गिरा मृगेन्द्र तब अवनि मँझारा
निज गज ते तनु मर्दन लाग्यो * मानहु अमित जानि अनुराग्यो

कुम्भकर्ण तब गिरेउ प्रमादी * व्याकुल भयो अदिति सुत भारी
रविसुत सेन विचल निजजानी * भपटि दण्ड मारेउ उर तानी
रावण अनुज दण्ड गहि लयऊ * सहजे निजमुख मेलत भयऊ
राखि उदर शठ सोवन लागा * षट महिना बीते पुनि जागा
दो० भयो तासु उरदाह तब, उगिलि दिहिसि यमदण्ड।
तमकि लीन महिषेश पुनि, मारेउ दण्ड प्रचण्ड ॥
लागत शिर त्यहिपीर न व्यापी * भयो नींदवश पुनि खल पापी
तब हरि हने दण्ड अधिकाई * सोवत सो अजहु सचुपाई
मुरछा ते तब रावण जागा * पुनि देवन ते जूझन लागा
लखभुजदण्ड धनुशर लीन्हे * मारि विबुध सब व्याकुल कीन्हे
लखि दिग्गजचिक्करिदिग आये * धनुष बाण सब काटि बहाये
गहेसि तिन्हें तब भुजा पसारी * मरिदीरदन दशन पग्चारी
दशमुख के उर लागहि कैसे * शिला माझ बिन फर शर जैसे
लखि रावण तन की कठिनाई * तब सब दिग्गज चले पराई
पवन इन्द्र तब गे विधि पासा * शीश नाइ सब हाल प्रकाशा
कह विरञ्चि सुनु शक्र सुजाना * रावण है तपबल बलवाना
त्यहि ते तुम जनि करहु लराई * गिरिखोहनमा जाहु पराई
सुरन सहित सुमिरहु करतारा * बिन हरि को दुख मेटनहारा
स्रष्टा वचन सुनत मनमाने * देवन ने तब याइ बखाने
सखि पुरन्दर की लरि काना * सबहुन गिरिनन कीन्ह पयाना
जाय दशानन सैन समेता * शोधिसि देवन केर निकेता
जो सुर पुर धर माग्य पावा * निहँ पकरि निजलङ्कहि आवा
रावण लङ्कहि गा सुनि काना * बसे अमर पुनि निजनिजथाना
सुरपुर विबुध बसे सुनि पावै * तब खल दल लै आतुर धावै

रहैं सजग जब आवत जानैं * भागि जाहिं सुर समर न ठानैं
एक दिवस अहमिति अधिकाई * श्वेतद्वीप में पहुँचा जाई
दो० युवतिन ते बोला बलकि, कहा गये सुर बङ्क।
तिन्हैं जीति संग्राम में, तुम्हैं जाहुँ लै लङ्क॥
सो० सुनि इक जरठ रिसाइ, पकरि पछारि उछारि नभ।
दीन्हेसि सिन्धु बहाइ, ह्वै अचेत निकसा सुतल॥
पुनि धरि धीर टेकि भुजबीशा * बलिदिगजाय नवायहु शीशा
वैरोचनसुत आदर दयऊ * कुशल बूझि तब बोलत भयऊ
तव प्रमाद सब आनँद होई * सुर सन्मुख ह्वै सकत न कोई
तुमहूँ निज शत्रुहि गहि लीजै * चलि महिलोक राज निज कीजै
कहबलिकनककशिपुके मण्डन * पहिरिलेहु तुम सुनद्वलखण्डन
लाग उठावन उठा न कोई * याही पौरुष ते जय होई
जिन ये अलसब अङ्कन धारे * ते भट ग इक चणमा मारे
तेहि ते भवन जाहु लै प्राना * चला तुरत मनमाहि लजाना
वामन दीख जात अभिमानी * लीन वगट शिशुन के पानी
मारत लात जात गरिआनत * निज निज द्वार फिर ठेलानत
दीन देखि प्रभु दीह छुड़ाई * पम्पापुर तब गर्जा आई
प्रथमे. बालि बहुत समुझाना * सुनेसिनतब गहि बगलचपाना
सन्ध्याकरि घर वापिसि आनी * छोरि दीन लखि तारा रानी
तब हरिपुर रेवातट गयऊ * सहसबाहु तह क्रीडत रहयऊ
जलअस्तम्भकिहिसितेहिजाना * पकरि पाणि हयशाले आना
शिरन दीप धरि नृत्य कराना * सुनि पुलस्त्यमुनि जाय छुड़ाना
लज्जित ह्वै कुलगुरु ढिग गयऊ * निज वृत्तान्त सुनावन भयऊ
कह कवि नर हरि दिहेऊ बराई * तेहिते तुम बर विजय न पाई

तासु शोच चित धरहु न ताता * मैं जो कहौं करहु सो बाता
अनुसर निज उर शिवपद धरहू * जप तप जाल माल मख करहू
अभिमत वर शङ्कर ते लीजे * विश्व सुअशकरिपुनि सुखकीजे
सुनि गुरुते गो सिन्धुसमीपा * लाग करन तप दनुज महीपा
बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा * मालयज्ञ में पुनि मन दीन्हा
वर्ष पांचशत निज कर लीना * हूने शीश पावक के बीचा
यहिविधि मखकृत देखि पुरारी * कहेउ मांगु वर रुचि अनुहारी
सुनि वाणी बोला दशभाला * अजरअमर मोहि करहु कृपाला
कह शङ्कर सुनु वचन हमारे * विधिके अङ्क टरहिं नहिं टारे
त्यहिते जो तप कीन्ह्यो भारी * तुव तन बल होइ अधिकारी
शीश समर्पि दियो तुम मोहीं * दश ते कोटि देव मैं तोहीं
शिव वर अचल पाइ मनभावा * हर्ष सहित निज मंदिर आवा

हरिगीतिका छन्द ॥

आवा भवन निज चटक साजि सुरेश पर धावत भयो ।
सब भागि हरि बैकुण्ठ तजि लखि क्षीर दधिबलिदिगयो॥
सोइ पहिरि भूषण सकलतनमनमाखि कोपपतिपुरढयो ।
सिखि चालि जोरी मित्रता सुनि सहस्रभुजहू सोइ कयो॥

सो० अमर नाग नर यक्ष, गन्धर्व किन्नर वरसुता ।
जीति वरेसि परतक्ष, वचे न लागे हाथ जे ॥

इति श्रीविश्राममागरसत्रमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतरावणोत्पत्तियरुयुद्धविभवजयपराजयवर्णनो
नामप्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं वृहद सम्मत कछुक, कोकिल काव्यबखानि ॥

यहि विधि रावण विगतवियोगा * करै लाग सुर दुर्लभ भोगा
पल भक्ष अरु मदिरा पावै * सतत सुर मुनि मनुज दुखावै
मयजहिं यनिकृत रुचै न लेशा * जब तब करै नीति उपदेशा
सो सिख दशकंध नहिं भावै * नीच नीचहीं कर्म सुहावै
एक दिवस नारद तहं आये * प्रथम दशमुख सभा सिधाये
दण्ड दोय तासों रुचि गाई * पुनि मयजा घर गे ऋषिराई
करि प्रणाम सबविधि सनमानी * आसन दै बोली मृदु बानी
देव देखि मोहिं निजपति करणी * संशय होत जात नहिं बरणी
ताकर होई कौन हवाला * त्रिकालज्ञ प्रभु कहौ कृपाला
बोले मुनि तप बल त्रिपुरारी * करन ओर करिहैं सुख भारी
पुनि सुर मुनि हित त्रिभुवनराई * सूर्यवंश अवतरिहैं आई
पितुनिदेश करिहैं वन पावन * तिन की रमणि हरी तब रावन
लङ्कहिं जब जगदम्बा आई * तल सरिस कपि लङ्क जराई
सेतु बांधि ऐहैं प्रभु पारा * कुटुंब सहित करिहैं संहारा
होब सुखी सुरविप्र समाजू * करिहैं अभय विभीषण राजू
असकहि कुम्भकरणढिग गयऊ * सुनि मयजा उरअतिदुखभयऊ
करि विचार मन राखिसि गोई * हरि इच्छा होई सो होई
कुम्भकरण तेहि अवसर जागा * मुनिहिंदेखि उठि चरणनलागा
कछु हरिगुण ऋषि ताहि सुनाये * पुनि मुनिवर विधिलोकसिधाये
कुम्भकरण पुनि सोवत भयऊ * यहिविधिकछुकवालचलिगयऊ
विपुल पुत्र भे रावण केरे * सब विद्या बल बुद्धि घनेरे
वारिदनाद जेठ सुत ताका * प्रथम जासु सुभटन महँ शाका
सो जब बीस अब्दकर भयऊ * तब तप करन हेतु बन गयऊ
वर्ष सहस्र किहेसि तप भारी * आय शक्ति तब गिरा उचारी

मांगु तात वर निज मन भावा * मेघनाद अस बचन सुनावा
बानरोर सब साज समेता * देहु एक मोहि कृपा निकेता
जेहिपर चढ़ि अरि मैं मदाना * जानहु सकल बीर बलवाना
सुनि स्यन्दन तब दीन्ह देरी * बोली बचन जानि निज सेवी
यहि रथका तुम धरेउ छिपाई * अतिरण कठिन परे जब धाई

दो० तब यहि पर आरूढ़ है, जायहु ब्योम मंझार।
युगलयाम करि युद्ध तहँ, जितिहौ सुभट अपार॥
जो त्यागी द्वादश बरष, नींद नारि अरु अन्न।
सो सुतमारी तोहि जग, अपर न मारी जन्न॥

सुनि शिरनाइ मुदित गृह आवा * रथहरि गिरिपुनि वनहि सिधावा
तप करि बाल लिभि गयनरे * समर समग्र भग होय न मेरे
एवमस्तु कहि गे गिरिराई * पुनि आवा गृह शोच बिहाई
एक दिवस ल सुभट अपारा * सुरपति के बन टनिसि शिकारा
सुनि वासव मन बहुत गिमाना * चढ़ि ऐरावत कीन पयाना
मेघनाद लखि चाप चढ़ाई * मारे शर मजि के बहु धाई
लागत शर विद्रुम करि अंगा * धाया पटल मरे तहँ यांथा
पुनि गज भ्रपटि धरयो तेहिगयऊ * वारिदनाद तुण्ड गहि लयऊ
सुरपति मारे बज्र घनेरे * लागत मनहु कुसुम कारि केरे
नाग सूँड़ तेहि छाड़ी नाहीं * लावा गहि लङ्कहि पितु पाहीं
देखि पराक्रम निज सुनकेरा * दशमुख के सुख भयो घनेरा
बोलि सकल बाजन बजवाये * उत्सव करि बहु रत्न लुटाये
लङ्कहि गो हरि विधि सुनिकाना * आये जहँ रावण बलवाना
हंसारूढ़ विधातहि देखी * दशमुख उर भा हर्ष बिशेखी
पुत्रसहित उठि नायो माथा * दर्शन दे मोहिं कियो सनाथा

अब सो कहौ आयो जेहि हेता * तब बोले अज कृपा निकेता
वारिदनाद धन्य बल धामा * अब ते इन्द्रजीत भा नामा
शक्रहि देउ अमरपुर जाई * अब तुम ते नहिं करी लराई
ब्रह्म बचन सुनि कह्यो सुरारी * बचन तुम्हार सकै को टारी
कहिसि जाउ सुरपति निज गेहू * प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू
तब विधि बाण शक्ति य रूदयऊ * निष्फल होब न असकहिगयऊ
सुनि घननाद बहुत हरषाना * नागलोक तब किहिसि पयाना
जहँ वासुकी तहां चलि गयऊ * देखि नगर अतिगर्जत भयऊ
सुनिधुनिअहिपति व्याल बटोरी * आइ घेरि लीहेनि चहुँ ओरी
दोउ दिशि ते शर छूटन लागे * भींजे सकल रुधिर ते वागे
चौदह दिन तहँ भई लराई * तब सब पन्नग गये पराई
रहे अकेले अहिपति जाना * गहिसि झपटि लघुदामसमाना
तुरतहि निज लङ्कहि ले गयऊ * रावणका दरशावत भयऊ
पुनि लावा निज मन्दिर बीचा * बाधेसि सेज सिरहने नीचा
वासुकि उर भइ पीर अपारा * तब फणीश अस बचन उचारा
दण्ड चहो सो हम से लीजै * जीवत मोहिं छाडि अब दीजै
कह घननाद सुनहु अहिनाह * कन्यादण्ड देहु घर जाहू
उरगराज तेहि जानि प्रचण्डा * देन कही निज दुहिता दण्डा
सुनि घननाद छाडि तब दयऊ * हर्ष वासुकी के कछु भयऊ
लै आये निज लोकहि ताहीं * दीन सुलोचनि सुता विवाही
अतिसुन्दरि घरनी जब पाई * आवा तब लङ्कहि हरषाई
मात पितापद शीश नवावा * पुनि पत्नीयुत निज गृह आवा
लाग करन सुख शोच बिहाई * अपर सुनो अब ताकर भाई
अक्षयकुमार सघन बन गयऊ * महाकठिन तप साधत भयऊ

सहस्र वर्ष बीते हरि आये * मागु तात वर बचन सुनाये
तब तेहिं कहा सुनहु भगवाना * देहु मोहिं यक तीक्षण बाना
जेहिते रण रिपु जीतहु भारी * दै कर शर अस कह्यो पुरारी
येहि बिशिखै लै घर सुतजाहू * कपियक तजि जितिहोसबकाहू
सुनिसमोद निजमन्दिर आवा * त्यहिक्षण मन्दोदरि सुत पावा
चौंसे व्यालयुत सुनि बिबुधारी * रावन योग न मनसि बिचारी
श्वानानन ते कहेउ बुलाई * आवहु याहि गाड़ि कहुं जाई
दूत दाबि नैर्ऋत्य सिधावा * पृथ्वी खोदि तोपि तरआवा
रघुपति चरित करनहित आगे * मरा न सो बालक तेहि लागे
खायसि खनि माटी यकमासा * पुनिगा निकरि नीरनिधि पासा
त्यहिलखिराहु जननि अनुरागी * भवन लाइ निज पालन लागी
यक दिन तहां शुक्र चलिआये * बोले पुत्र कहां यह पाये
छाया गृहणि कह्यो तब आई * ज्यहि विधि उदधितीरते लाई
दनुज पूज्य पुनि बचन उचारा * यह है रावण केर कुमारा
आदिहि ते सब चरित सुनाये * अहिरावण धरि नाम सिधाये
निज उत्पत्ति सुनी त्यहि जबहीं * कूदिपरा सागर महं तबहीं
निकसा तुरत बितलमहं जाई * तहां रहै अहिपुरी सुहाई
सत्तरि योजन बसत ललामा * चामीकरके अति सुठि धामा
दुर्वाकर तहँ रहै गुवारा * सो बासुरी केर सग सारा
तासु पुरी लखि कौतुक नाना * पुनिगा जहँ नित होत पुराना
तप प्रभाव तहं सुनि अधिकाई * सपदि बिपिन पहुँचा हरषाई
बनमें लखी नदी यक बहई * कामदना देवी तहँ रहई
सुथल समुझितहंध्यान लगावा * सबत चौदह सहस बितावा
सबबिधि देखि समाधि अडोली * बरब्रूहि तब देवी बोली

अस वचन सुनि बहु करजोरी * मांगिसि वर करि विनयनहोरी
अमरन ते अधिकी सुख करहू * जीतहु त्यहि ज्यहिके सग लरहू
दो० शेश महेश दिनेश सुर, ईश अजेश अनन्त।
मरौं न काहू हाथ सैं, होउँ निशाचर कन्त ॥
पितहि कीन्ह अपमान हमारा * सोऊ मोहि याचै यक बारा
सुनि देवी बोली सुनु ताता * करिहौ तुम बहु विधि सुखगाता
त्रेता शेष समय दशशीशा * याची तोहिं जोरि भुजबीशा
मारी तुम्हैं न कोउ जग माहीं * त्यहिरु मम बाचा वश नाहीं
त्यहि प्रभुते जनि किहेउ कुचाली * तौ न अजर अमर कहिचाली
रहनलाग तहँ दनुज कुमारा * अनगिनत खग मृग कर अहारा
यहिविधि वर्ष पाचशत बीती * तब खल करनलागु अनरीती
विविध बेषधरि अहिपुर जाई * अज गज हय खर डारहि खाई
एक दिवस दर्वाकर राजा * चलनगये त्यहि सहित समाजा
अहिरावण करि कठिन लराई * दीन्हे सकल नाग बिचलाई
तब दर्विक अनन्त पहँ गयऊ * सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
सुनि बोले करि शेष विचारा * अहिरावण तप बल अधिकारा
त्यहि ते नहिं ऐहौ वरिआई * कन्या दे मिलि राहौ जाई
तब दर्विक बुलवावा ताही * दीन्ही विधिवत सुता बिवाही
कुन्दनि नाम पाय वर नारी * हरितनि ते तब गिरा उचारी
अब सब होउ बिगत सदेहू * करिहौं मैं कानन महँ गेहू
अस कहि कामदना ढिगआवा * योजन सहस्र नगर बसावा
असुरन सहित रहै त्यहिमाहीं * करनलाग सुख सागिन जाहीं
बासव चरित जौन मैं गावा * आदि रमायण मैं सो पावा
जो रिपु कर प्रभाव कह कोई * सो त्यहि घातक पर यश होई

त्यहिते राम लषण हनुमतकर * वरण्यो वीर्यन असुरनकर बर
यहिविधि सुत दशकन्धर केरे * भये भूमि रिपु देवन केरे
जो सबहिन के चरित सुनावो * बाढ़ै कथा पार नहिं पावो
औरो, निकर निशाचर बीरा * मेघनाद आदिक रणधीरा
गजमुख खरमुख करिवर नादा * जम्बक माल कुमुदकर बादा
कुलिशदन्त श्वानानन पापी * धूम्र केतु शूकर सुखदापी
कुम्भ निकुम्भ अकम्पन शूरा * केश प्रकेश महिष भयकूरा
कूटमहस्त समान न रोषी * तारा कूरन रखन भय दोषी
खर दूषण त्रिशिरा मनिअन्धा * वक विराध अतिकाय कबन्धा
कालनेमि सुबाहु मारीचा * ऊर्ध्वकेश मञ्जारा नीचा
धूम्रकेतु लवणासुर मारे * एक एक जग जीतनहारे
इन सब के सयुत रणभाला * करें लङ्क बसि राज बिहाला

इति श्रीविश्रामसागरेमेघनादअहिरावणविजये
द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बृहद रमायण कहौं कछु, कौशल चरित बखानि ॥

एकबार सग लै भटकाई * विश्वविजय हित चला बजाई
फिरि आना तीनो पुर माहीं * सन्मुख समर धीन कोउ नाहीं
तब रावण मन कीन गुमाना * हमसम सुभट न जगमें आना
तब सब शोभा लिहिसि बुलाई * आदर करि निज ढिग बैठाई
त्रिभुवन भेद लेन के हेता * पठन लाग्यो देश निकेता
निशिचर अर्ब पचास समेता * बाशर्मार पठवा खरकेता
सारद देश दशानन गयऊ * नब्बे अर्ब असुर संग दयऊ
मकरेशा परलाटक दीन्हा * खर्ब सवार असुर संग कीन्हा

मझारा मालवै पठावा * उभय अर्ब तमचर लै धावा
बकवक्त्र निशिदग्णाधीरा * खर्ब अढाई सेग लै बीरा
मारवाड करकानन वींचा * आय रहा अधमाधम नीचा
भेषासन भट लै दश अर्बा * चला कलिङ्ग देश सह गर्बा
गेरह अर्ब असुर लै तारा * वङ्गदेश कहँ मुदित सिधारा
वीस सहस्र अस्थि भष लयऊ * अरुण मृत्तिका देशहि गयऊ
अर्ब ऊर्ध्व कच नरभष पाई * मगह देश आवा हरषाई
चौदह अर्ब खुर्ज नख पाये * मुख विष लै गुजरात सिधाये
असितकोटि षोडशखल लीन्हेउ * आरब देश पयाना कीन्हेउ
अयुत कोटि भट लै मारीचा * सङ्ग सुवाहु ताडका नीचा
गाधिपुरी ढिग कानन भारी * रहे आय तहँ खल अघकारी
लक्ष अठारह सहस छियासी * लवणासुर लै खल बलरासी
घन बन कोलपुरी के पासा * हर्ष सहित तहँ कीन्हेउ बासा
मन सहस्र लै भट बलवाना * दण्डक वन इन कीन पयाना

दो० प्रथमैं खर दूषण उभय, तीसर त्रिशिरा वीर ।
चौथ बिराट कवन्ध कहि, पञ्चम सब रणधीर ॥

शत शत योजन बन बिलगाई * रहे कटक लै पाचौ आई
यहिविधिसकलदेश दशशीशा * दीन्हे बांटि अधम रजनीशा
जहँ तहँ विविध बेष धरिचरहीं * हिंसा करत न नेकहु टरहीं
कौनिउ बात कतहु लखि पावैं * तुरत आइ रावणहि सुनावैं
भुजवलविश्वस्ववश करिराखा * सुभट स्वतन्त्र न एकहु राखा
मण्डलीकपात पाय प्रकासा * कीन्हिसि सकल देव निजदासा
आयसु जासु दिहिसि करि गोई * सन्तत सभय भजै तेहि सोई
सादर वेद विरञ्चि सुनावैं * दर्शन देन पुरातक आवैं

यम प्रतिहार पाक भय करई * शक्रा पत्र छत्र शशि धरई
झारन्दार पवन बलगासी * महामृत्यु धोवत पग दासी
वरुण कुबेर नाग नर देवा * आय करैं सब यहिविधि सेवा
एकबार कैलासहि गयऊ * सुमन समान सुकर धरिलयऊ
मनहुँ जोखि भुजबल थलराखी * आवा भवन गवन अभिलाखी
यहि प्रकार बीते बहु काला * एक दिवसवर सुनहु हवाला
घननादादि रहैं जे बीरा * तिन्है बोलि बोला रणधीरा
सुनो रहे सुर शत्रु हमारे * ते तो भे सब विवश विचारे
विष्णु विबुध दिशि बारकबारा * आये तहँ मैं मुष्टिक मारा
शत योजनपर गरुड समेता * गिरे जाइ फिरि फिरे न खेता
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ * अबतक रहिहैं दुरे दुखेऊ
अब यक बचा रहत भगवाना * जाहि जपत मुनिसन्तसुजाना
सो न परत कहुँ दृष्टि हमारी * त्यहि जीतन हित बात विचारी
साधुनवश सो रहै श्रुति गावै * जो वे अर्पन सो वो पावै
त्यहिते सन्त सतावो जाई * जप तप करन न पावैं भाई
जब ह्वैहै यहि बल ते हीना * तब तउ मिलिहै आइ अधीना
तब मरिहो की छाँड़िहों देखी * कीन चहों रिपु स्ववशविशेखी
सुनि धाये जहँ तहँ तमचारी * लागे करन उपद्रव भारी
योग यज्ञ कोइ करन न पावै * विप्र धेनु जन धरि धरि खावैं
हरि हर घर पुर देहिं जराई * श्रुति पुराण कोउ सकै न गाई
जे जन दान पुण्य परकासैं * पकरि ताहि खल बहुविधि त्रासैं
जेहि विधि होय धर्मकै हानी * सोइ करैं अहनिशि अभिमानी
बाढ़े पातिन पाप समुदाई * तबसों अवनि उठी अकुलाई
धेनु धाम धरि गइ विधिलोका * कहतभई निज विपति सशोका

धीरज दै अज कह्यो बुझाई * यामें कछु नहिं मोरि बिसाई
तेहिते सकल देव यकबेरी * करहु सप्रेम विनय प्रभुकेरी
दीनदयालु दीनजन जानी * करब कृपा मिलि अस्तुति ठानी
जय जय जय जगपतिसुखकारी * जय जय करुणासिन्धु मुरारी
जय जय मायारहित अनन्ता * जय जय दुराधर्ष भगवन्ता
जयजय अविगत अलखअनूपा * जय जय सतचित आनँदरूपा
जय जय वेद भूमि उद्धरता * जयजय विश्व सन्तहित करता
जय जय सृष्टि उपावनहारे * जय प्रभु सङ्कट हरो हमारे
रावण असुर देत दुख भारी * पाहि नाथ हम शरण तुम्हारी
इमि अमरन जब विनय सुनाई * भइ गिरा नभ गगन सुहाई
दो० अब सब निरभय होउ सुर, भूसुर सन्त सुभाय ।
तुम्हरे हित कोसलपुरी, धरिहौं नरतनु आय ॥
कौसल्या दशरथ भवन, लै स्वच्छन्द अवतार ।
करि तहँ बालचरित्र पुनि, मरिहौं शत्रु तुम्हार ॥
सुनि नभगिरा सकल दुखदाता * हरषे सुरमानि सहित विधाता
तब ब्रह्मा देवन ते भाखा * अब सब होउ जाइ मृगशाखा
हरि हित सकल विविध हरषाई * धराभये कपि भालु जग आई
जो अवतार सबन के कहऊ * नहिं अभ पार नहिं लहऊ
रहे पूरि महि गिरि बन नाना * प्रभु मारग चितवें बलवाना
यह सब चरित सुना त्रिपुरारी * जन्मतही हत करब बिचारी
बसन सकल गमनरा रविवर्मा * ते का सविह माहि बिचर्मा
तदपि सजग रहत पा हाना * त्रिगनसुन्दरि बहु तहँ थाना
उन्नति मग्या आदि कछु होई * चरि सम्मन पहुँचाव सोई
भये दिलीप भूप जब आई * जानि अमर सब निरे टाई

सुनि रावण बल देखन आवा * द्विज लखि सब रानिन बैठावा
पूजत पद प्रकटेसि निजरूपा * भागी भवन भीमभणि भूपा
तब रावण सरकूनइ आयो * अर्चन तन्दुल नृपति चलायो
पुञ्ज दोगन ते तब कहेऊ * धनुहि हगि इक मारन चहेऊ
सुमिरत सर्पादि शालहा औरे * शत शर हू लागे हरिकेरे
सुनि दशमुख मनअचरजआवा * देखा जाय मृगक वन पावा
रघुकि प्रताप गयो निजधामा * नृपन हाल कहा नृप बामा
दो० रावणकृत सुनि अवधपति, चगुलभरि जललीन ।
पवनसन्त्र पढ़ि क्रोध युत, दक्षिणदिशितजि दीन ॥
भये बिशिख दशलाख लखि, कह नृप लङ्कहि जाहु ।
सहित त्रिकूट समुद्र महँ, आरिफिरहुतेहिनाहु ॥
सो० चले पवनगति सोरि, जात उलटावन लग ।
मयतनया कर जोरि, दीन दुहाई नृपतिकी ॥
इहां न कोउ नृप आहिं, सुनिआये माहिपालढिग ।
अकनि कह्यो गुरुपाहिं, यह मुनि रही चपाइ अब॥
इमि दशसहस वर्ष चलिगयऊ * रघुराजा तब परचो दयऊ
मारुत बाण दहन गृहलागे * बानिता विनय वचन सुनित्यागे
बहुरिभय अज अवनिप कानन * माझदेखि रणरच्यो दशानन
अनिल अस्त्र ते कटक समेता * दीन ताहि पहुँचाय निकेता
तेजवान लखि रहा नृपादि * तेहि पाछे भे दशरथ राई
दो० दशसहस्र रविकर लखैं, दशौं दिशा रथ जाहिं ।
दशशिररिपु प्रकट सुवन, कहिये दशरथ ताहि ॥
सुनि रावण निजदूतमुख, मांगि पठायो दण्ड ।
हरिहर प्रेरे भूपकाहिं, जड़्यो कपाट प्रचण्ड ॥

जो रावण पट लेइ उघारी * तौ हम कर देई निज गारी
मन्दिर द्वार गये सब मूँदी * रहा उघारि असुरपति खूँदी
टसक्यो पट न भटक सु बमारे * मिली मार्ग मयजा करजारे
तब रावण नभ बात विचारी * विपिन जाइ कीन्हिसि तपभारी
वरब्रूहि ब्रह्मा जब भाखा * बोला तब दशमुख अभिलाषा
दशरथ नृप बीरज ते सोई * जगमें पुत्र न प्रकटै कोई
सुनि स्रष्टा मन मं दुख माना * एवमस्तु कहि कीन पयाना
तब दशमुख कोसलपुर गयऊ * कौसल्यं हरिलावन भयऊ
सहित मँजूषा सागर जाई * रावन मच्छ दिहिसि सौपाई
चतुरानन धरि रावण रूपा * लाये मागि सुता सोइ भूपा
वनमें धरि विधि गे निजलोका * तहँ सुमन्तु पट खोलि विलोका
कन्या ते बोले मृदु बानी * तुमहो किनकी सुता सयानी
तब कौसल्या गिरा उचारी * हम हैं कोसलराज कुमारी
नहिं जाना को बन में लावा * सुनि सुमन्तु तुरंत उठवावा
ते आये कोसलपुर तामा * रोदन होत रहे नृपधामा
जाय मँजूषा भूपहिं दीन्हा * जेहिबिधिमिलातो वर्णनकीन्हा
बोले नृप तुम को हो ताता * कह सुमन्तु सुनिये प्रभु बाता
अवधपुरी नृप दशरथ नामा * धर्मधुरन्धर सब गुणधामा
चलानीति लेनिधि रघुकुलदीपा * तासु सचिव हम अहन्तु महीपा
सुनि राजा बोला कहि धन्या * तब नृपका वरिहौं मैं कन्या
तुरते नाऊ विप्र पठावा * नृप के टीका आइ चढावा
चली बरात बिपुल नरनाहा * बड़ी धूम ते भयो विवाहा
विदा कराइ फिरे सब धामा * मग खरादि राख्यो सुनि नामा
कौसल्यै पत्त मुनि शृङ्गराख्यो * शिर बरदान अभयगुरु भाख्यो

आप समरकरि असुर बिदारयो * देखित्रिजयसुर जयनिउचारयो
दो० सर्व थिरधासन सुन सुता, नाम सागरा थानि।
दीन्ही ब्याहि सुमन्तु कहँ, सुभग गर्गकुलजानि॥
दीन्ह्यो दायज विविध प्रकारा * भये मुदित मुनि सहित भुवारा
पुनि ह्वै विदा निलय निजआये * बहुविधि दान याचकन पाये
तब कैकयी सुमित्रा परनी * तिन पाछे ब्याही बहु घरनी
करहिं सदा सेवा सब रानी * पाले भूप प्रजहि मनमानी
नवसहस्र सम्वत चलि गयऊ * तब नृपके मन विस्मय भयऊ
बयपन गे चौथो अब जाना * हम पुत्र नहिं दीन विधाता
बिन बालक सुख कौने काजा * सकल जानि दुखकेर समाजा
जस बिनसर जिमि गृहबिनदीपा * तिमि बिनअङ्गजमलिनमहीपा
अहिविधिकरि विचार मनमाहीं * आये चलि वशिष्ठ के पाहीं
माता पिता गुरू बड़भाई * साधुन के ढिग आपुइ जाई
चरणनाइ शिर आयसु मागी * निज कामना कही अनुरागी
दुख सुख मन्त्र औषधी दाना * सुहृद बिना नहिं करिय बखाना
दो० सुनि वशिष्ठ बोले मुदित, भूप धरहु मन धीर।
ह्वैहैं तुम्हरे चारि सुत, गुणसागर बर बीर॥
अब तुम सुत विभाण्डके जावो * शृङ्गी ऋषै इहां लै आवो
हैं नृप निकट प्राग में आये * लोमपाद मख हेतु बुलाये
पठै अप्सरा कानन माहीं * छल करि सो लाई नृप पाहीं
रहै अवृष्टि तासु के देशा * मख कराइ भे सुखी नरेशा
ऋषिहिशापडर जेहिविधि चाही * दीन्ही शान्ता सुता बिवाही
सुनतै नृप निज मन्दिर आये * हय गज वाहन बिपुल सजाये
रही सातसै साठिउ रानी * द्वादश-तीनि तायफा जानी

मन्त्री मित्रसेन अवगाहा * सबके सहित चले नरनाहा
पुर बाहर निकसे नृप जैसे * लागे होन सगुन तहँ ऐसे
देखा नकुल निडर दधिमत्सा * विप्र तिलकयुत गोसहवत्सा
पूरण घट पटपीन निहारा * बाये मधुप करत गुञ्जारा
दीप अन्न गणिकाकृत गाना * अहिवार्ता तिय खाये पाना
नारि ससुवन फूल फल देखे * दहिने पग बग ठाढ़े पेखे
चील्ह श्वान मुखभक्ष समेता * श्रुतिधुनि आनँद होन निकेता
दहिने मृग मिल तीतर कागा * सारस मोर शोर भल लागा
खञ्जन उत्तर दक्षिण प्राची * बायेदिशि खर जम्बुक राची
मन महँ हर्ष चलतपग होई * त्यहिसम सगुन और नहिं कोई
हरि उत्पति कर कारण पाई * मानहु साच भये सब आई
यहि विधि दशरथ आगहि आये * लोमपाद मुनि लेन सिधाये
लाये निज मन्दिर सनमानी * तब नृप कृपंत बात बखानी
लोमपाद सुनि अतिसुख पावा * शृङ्गीऋषि ते जाइ जनावा
तुम्हें लेन आये अवधेशा * जाहु नाथ अब इनके देशा
राम जन्मकर आगम जानी * भूपसङ्ग चलिभे मुनिज्ञानी
अवधनगर आये ऋषिनाथा * पुरबासी सुनि भये सनाथा
सरयू तट तहँभा मख साजा * जुरे बिपुल बैखानस राजा

गीतिकाछन्द ॥

नृप सारयूके तट कियो आरम्भ जब मखकेरजू ।
सुनि रत्न नानाभांति हय गज भूप लाये ढेरजू ॥
तहँ लिये अगणित हेमघट द्विज भरें उदक ललामजू ।
यज्ञान्त के अस्नान कारक महामङ्गल धामजू ॥
अरु औषधिन को सुरस दीन्ह्यो औषधीश पठाइजू ।

विधि विष्णु श्रीसलिलेश सिद्धौ शम्भुगण सुखपाइजू ॥
दिशि पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिन्धु को वरवारिजू ।
नवरत्न खचित सुकुम्भ आये भरे सहसन भारिजू ॥
धन दियो धनद पठाइ बहु रहे यदपि इत कम नाहिजू ।
अमरेश पठये देवता सब गुप्त रक्षक ताहिजू ॥
अतिऋद्धिमें महिपाल शोभित भयो वरण समानजू ।
जब तब यथोचित कर्मकृत किय गुरुनिदेश प्रमानजू ॥
महिदेव भोजन रत्न दान सुदेइ आहुति पर्मजू ।
यजि तृपित कीन्ह्यो सुरन कहँ सब भातिनों सह धर्मजू ॥
सुर विप्र आदिक वर्ण चारो भरे मोद ललामजू ।
वसु अन्न दान महान आहुति पाइकै अभिरामजू ॥
ऋषि नारदादिक वेदविद बहु लसत वेदी पासजू ।
लखि पूर्ण मख दिन अग्निकी नृपकरी विनय प्रकासजू ॥
जय यज्ञपति तुम देवतनके वदनहौ अभिरामजू ।
तुम करत पावन जगत ताते अहै पावक नामजू ॥
हौ वहत हव्य सुकहत ताते हव्यवाह समर्थजू ।
पुनि जातवेदस नाम याते भये वेद स्वदर्थजू ॥
हरि चित्रभानु सुरेश अनल हिरण्यरेता रामजू ।
हौ स्वर्ग के तुम द्वारदाता ज्वलनशिखि सुखधामजू ॥
विभोवसु विश्वानर प्रवर्ग सुभूरि तेजस सर्वजू ।
सुकुमार सूभगवान रुद्र हिरण्यगर्भ अखर्वजू ॥
ऋषि विप्र देवत दनुज के तुम यज्ञकारक श्रामजू ।
जग धूमकेतु य हेतुहै तव पापनाशक नामजू ॥
हे सारभुक तुम देहु इसका लुमन वाञ्छित फलजू ।

करैं होम जो मन्त्र पढ़ि यह होय सोकर भल्लजू ॥
दो० शृङ्गी ऋषि तब प्रीतिते, दीन्ही आहुति सार।
प्रकटे पावक तेजनिधि, लीन्हे हविकर थार ॥
बोले रवि नृप हवि यह लीजे * यथायोग निज रानिन दीजे
ह्वैहैं बालक चारि अनूपा * जो प्रथमै वरयो ऋषि भूपा
अस कहिमे भुक अन्तर्धाना * मुनि समाज सकलौ सुखमाना
तबनृपर्लान्यो बोलि विचित्रा * कौसल्या कैकयी सुमित्रा
गुरु वशिष्ठ हवि बाट बनाये * चारि भाग भूपाल लगाये
उभय दीन कौसल्यै तहिया * तीसर भाग केकयी कहिया
चौथ भागके युगल बनाये * कौसल्या केकयी गहाये
तिनमन मुदित सुमित्रहि दीन्हे * निज निज भाग पाइ सोइ लीन्हे
यहि विधि रूपशीलगुणखानी * भई गर्भ सगुन तिहु रानी
दिन दिन तेज बढत तन जाई * मनहु उगे विधु मन्दिर धाई
सुख समेत कछु काल बितावा * रामजन्मकर अवसर आवा
भे अनुकूल सकल शुभयोगा * प्रमुदित विश्व चराचरलोगा
वन उपवन फूले तरु नाना * शीतल मन्द चलै पवमाना
ब्रह्मादिक नभचर नभ धाई * बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
गावहिं गुण गन्धर्व सुरागा * अस्तुति करहिं देवमुनिनागा
चैत्रशुक्ल शशि कर्क प्रमाना * नखत पुनर्वसु अगिननजाना
मध्य दिवस विश्रामद जानी * प्रकटे नव त्रिभुवन सुखदानी

चौबोलाछन्द ॥

चैत्रमास सितपक्ष सुपाकर वारजू।
नौमीदिन श्रीराम लीन अवतार जू ॥
नील जलद तनश्याम काम छबिकोटिजू।

अरुण अलक बिच सुमन धरे जनु ओदिजू ॥
शीश मुकुट मणि जटित जगमगत जालजू ।
श्रुतिमें कुण्डल ललित तिलक दिहे भालजू ॥
कमलनयन नासिका समेत बुलाकजू ।
जनु कवि कुज गुरु राहु बसे शुक दावजू ॥
बिम्बाधरबर बदन रदन दमकैं घनं ।
भृकुटी कुटिल कपोल गोल गहवर बनं ॥
कम्बु कण्ठ कल वचन बिशद कौस्तुभ लसे ।
उर मोतिनकी माल मनहु घनमें बसे ॥
भुजग भोग भुजदण्ड चण्ड धनु शर लिहे ।
कटि निषङ्ग सब अङ्ग अलंकृत हैं किहे ॥
परदेहीं पटपीत पिछौरी पांटकी ।
दुगल जरकसी जाम दाम अलघाटकी ॥
चरणकमल मुनि बिमल जिन्हें नित ध्यावहीं ।
अंकुशादि बहु चिह्न सदा मोहि भावहीं ॥
देखि अलौकिक रूप भूपकोशलसुता ।
बोली जय जगदीश चरित तव अद्भुता ॥
बरणि न जानैं वेद भेद बिन खेदजू ।
प्रणतपाल सबकाल कुटिलकृत छेदजू ॥
जय अनन्त सुरसन्त कन्त भगवन्तजू ।
जन मन मानस हंसबम बिचरन्तजू ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड रोमप्रति जासुजू ।
सो मम जठर निवास बडी उपहासजू ॥
तब प्रभु पूरब केरि कथा सकलौ कही ।

पुनि ह्वै बालकरूप लगे रोदन सही॥
सुनि नृपरानी सकल उठीं हरषाइकै।
कौसल्या पहँ तुरत पहूँचीं आइकै॥
दीख सवन सुखराशि सकल सौन्दर्यकी।
कीन कृतारथ हमैं कृपा गुनिवर्यकी॥
खबरि पाइ अवधेश परम आनँद लह्यो।
बाजहिं बाजन बोलि बजनिहनते कह्यो॥
आप सुमन्त समेत गये चलि धाम को।
शिशुमुख सुखद विलोकि करेउ परनामको॥
पठये कुलगुरु बोलि सहित मुनि आयहू।
त्रिभुवनपतिहि निहारि महासुख पायहू॥
करि मज्जन महिपाल लीन कुशहाथ में।
मुदित लगायो तिलक द्विजनके माथमें॥
नन्दीमुख निज पितर पुजाये हितबरे।
गुरुजन द्विज पहिराइ पात्र सबके परे॥
गा गज हय रथ हेम रत्न वाञ्छित दये।
बहुरि बन्धुवर मित्र मानमण्डित भये॥
मागध वन्दी सूत जाहि जिन याचहू।
सोइ सोइ दीन्ह्यो ताहि न कोई बाचहू॥
विप्र वैश्य नृप शूद्र निधन वा धनमये।
राम निछावरि लेन भिखारी सब भये॥
नगर नारि नर वृन्द विलोकन धावहीं।
सहज शृंगार सँवारि मनोज लजावहीं॥
अन्तःपुर धुर जाइ उतारै आरती।

निरखि पुत्र को रूप स्वरूप विसारती ॥
धन्य आजु को दिवस धन्य अबकी घरी ।
धनि रानी की कोखि जहां जन्मे हरी ॥
धन्य हमारे भाग लाग फल फूल में ।
करें निछावरि छोरि गठन अनुकूल में ॥
पुरुषोत्तम परसाद चुकै नहिं नेकहू ।
याचक ह्वै ह्वै भूप भये बहुनेकहू ॥
बाजैं बाजन विपुल अप्सरा नाचहीं ।
गावैं गन्धर्व गीत समय सुषमा चहीं ॥
देव दुन्दुभी देहिं सुमन बरसावहीं ।
मृगमद कुंकुमनीर अबीर उड़ावहीं ॥
वन्दनवार पताक केतु सजवायहू ।
गोपुर कलश सुरङ्ग अधिक छवि छायहू ॥
बालक वृद्ध जवान जहां तहँ डोलहीं ।
सुर धरि मानुषरूप भूप जय बोलहीं ॥
तेहि क्षण द्वारकेर ढाढ़ि यक आयहू ।
राजहि शीश नवाय सुवचन सुनायहू ॥
सुनि रौरेकर सुयश पैज हमहूं करी ।
निज भूषण सब देहु हुकुम गेरावरी ॥
चलत देखि बड़ पुत्र कह्यो थस टेरिकै ।
दशवर्त्ता मम हेत लयायो हेरिकै ॥
घोला मांझिल तनय तुरंग सेतीमजू ।
लायहु मम हित मांगि ग्राम गुरु बीसजू ॥
पाछे छोटा दिग्र कह्यो देह भरनको ।

जायहु महिषी मांगि बयालिस लरनको ॥
तब बोली माता मु ऐन्ही आयहू ।
मम हित नेरहु थान पालकी लायहू ॥
पानदान परधान टहलुई तीनिजू ।
सुनि नृप हर्षसमेत मौज सब दीनिजू ॥
यहिविधि दानी देखि दास रघुनाथजू ।
लीनि भक्तिवर मांगि लागिगे हाथजू ॥
जो यह मङ्गल गावै सुनै सप्रीतिजू ।
बसै सो हरिपुर जाइ मिटै भवभीतिजू ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतरामजन्मउत्सववर्णनोनाम
तृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौंभुशुण्डीचरित कछु, लोमश भणित बखानि ॥
रामजन्म के समय को, उत्सव शोभा सुक्ख ।
वरणि सकै नहिं शेष मैं, कहा कहौं यक मुक्ख ॥

जो यह नवमी रहै उपासा * सो नर बसै रामके पासा
बेद पुराण कहत सब कोई * यहि सम बरत अपर नहिं होई
जन्मस्थान दरश जो करई * सो रविसुतपुर पाव न धरई
जन्म भवन के उत्तर कोना * बीस धनुषपर महल सलोना
तामें पुन केकयी जाया * दशमी के दिन परम सुहावा
दक्षिण ओर सुमित्रा धामा * तीस धनुषपर अति अभिरामा
जन्मे उभय सुवन तिन तामें * रुचिर दिवस हरि तिसरे यामें
षट तिल यव त्रैअङ्गुल होई * चतुरङ्गुलकर मुष्टिक सोई

गट मुष्टिक का दण्ड बखाना * अष्टदण्डका धनुष प्रमाना
केकयि मदन सुमित्रा केरे * भई भीर मग मिलत न हेरे
यहि अवसर मुदमङ्गल शोभा * कहि को सके देखि मन लोभा
दशस्यन्दन उरभा सुख जैसा * वरणि सके को जग मे ऐसा
तेहि क्षण जो जन मागत जोई * ताहि देत हँसि भूपति सोई
देश देश के याचक आये * हय गय रत्न अनेकन पाये
भये रङ्क त सब धनवाना * जहँ तहँ करैं बड़ाई नाना
अतिप्रसन्न ह्वै देहिं अशीसा * जियैं सकल शतकोटि बरीसा
अवधपुरी शोभा अधिकाई * जनु देखन वर्षाऋतु आई
अगर धूम घन घटा समाना * बाजत बाजन गरजन जाना
वन्दीगण गुण वरणत मोरा * भवन बेद्ध्वनि दादुर शोरा
बरषत सुमन देवरंग भूरी * कर्दम मन कुङ्कुम कस्तूरी
विविध जीव नर सकुल राजैं * विपुल बिटपतृणहरित विराजैं
जहँ तहँ कलश दामिनी चमकैं * मन्दिरमणि खद्योनी दमकैं
मुदित धेनु सुर नर मुनि धरनी * आकु जवास असुर दृश करनी
सम्पतिपाय बहुरि पुरलाना * याचक पूरण भये तड़ागा
वचन बदत सब जहँ तहँ डोलैं * झन झन जनु झींगुर बोलैं
यह सब चरित जाय तब जाना * जब उर बसैं आय भगवाना
निज निज नगर देवगनि भूले * देखत फिरैं बीथिकन फूले
नाचहिं चपल अप्सरा नाना * हर्ष समेत देहिं नृप दाना
रत्न जटित पलना लै आवा * बढ़ई नेगु सुइच्छित पावा
कजरौटा लै दीन लुहारा * देखि भूप नग दये अपारा
मालाकार अग्र धरि डाली * पाये जलज थार भरि माली
नृपकर बालसुवनिकपमाला * मन भावत वर दीन भुवाला

यहि प्रकारते सब पुरवासी * पायनि नेगु दास अरु दासी
कौतुक देखि भूलि रवि गयऊ * मास एक कर बासर भयऊ
खबरि पाइ उर धरि नृप टोटा * बिमन गये रवि परबेत ओटा
अस्त भये रजनी तब आई * बाजहिं घर घर अवध बधाई
गई रोशनी सब पुर साजी * लागी छूटन आतशबाजी
जरे कमल फनूसैं झाड़ैं * मानहु भये न दिनमणि आड़ैं
स्वाग अनेक बिदूषक करहीं * सबनर मगन बिलोकत फिरहीं
जासु उदर बस भवन अपारा * सोवत सो प्रभु सूप मँझारा
सपनेहु जेहि मन खेद न होई * कहा कहा करि रोवत सोई
पालत बिश्व सकल सुख पावन * कौसल्या त्यहि चीर पियावत
महिमा जासु जात नहिं जानी * तिन्हैं गोद लै बैठत रानी
दो० जाहि महेश बिरञ्चि मुनि, सुमिरत ध्यान लगाइ ।
तिनके तन नित सरगरी, तेल लगावत आइ ॥
सुनौ शिवा सन्तन सुखदाई * भक्तिवछलता प्रभु दिखराई
यहिविधि बासर पाच बितायो * छठवें दिवस छठी करवायो
जाति बन्धु नृप नेवति जेंवाये * भूसुर सकल दछिणा पाये
देखि महोत्सव सुर मुनि सारे * प्रमुदित निजनिजभवन सिधारे
बरहें दिवस जो बरहों कीन्हा * पुनि बहुदान द्विजनकहँ दीन्हा
कछुकाल सुखसहित बितावा * नामकरण का अवसर आवा
गुरु बशिष्ठ नृप बोलि पठाये * बिप्रनसहित तहा चलिआये
उठि नरेश सबहिन शिरनाना * षोड़श भाति पूजि सुखपावा
लोक बेद बिधि मुनि करवाई * शिशुन सहित तिहुँ रानि बुलाई
आईं मुदित सुवासिनि सङ्गा * उमा रमा शारद धरि अङ्गा
मिलि ललनन मा गईं शशंका * देखैं बाल बिनोद हशंका

चारु चौक बैठीं सब रानी * शोभा शील सुकृतकी खानी
गोद मोदनिधि बालक लीन्हे * चितवत बड़भागी मन दीन्हे
रचा ऋचा ऋषिन उच्चारी * गणप गौरि द्विज साधु पुरारी
सब सबनिधि पुजाइ अनुरागे * गणिगुणि नामधरन मुनिलागे
दो० जासु तेज चर अचरमें, व्यापक व्योम समान ।
तासु राम अस नाम जो, सुखसागर भगवान ॥
विश्वभरतसोइ भरतभनि, भवभञ्जन गुण जासु ।
जेहि सुमिरे रिपु होइ हन नाम शत्रुहन तासु ॥
सब लक्षण युत होइ जो, जानै जिय के काम ।
रामानुजप्रिय भूमिधर, तस्य लषण अस नाम ॥
ते बड़भागी जीव जे, करिहै इनते प्रीति ।
पैहैं बिन श्रम सकल फल, जैहैं जग रिपु जीति ॥
यहिविधि सुन्दरनाम सुनि, हरष्यो सब रनिवास ।
दीन दान सनमान निज, गे मन मुदित निवास ॥
सो० पुनि कछु दिनमें आइ, पहुँच्यो प्राशन अन्नकर ।
सुनि पुरलोग लुगाइ, हर्षसहित सबसे कहैं ॥
छन्द ॥ सखि आजु श्रीअवधेशसुतको अन्नप्राशन आहिजू ।
चट चलहु चलि अवलोकिये चपचकृत चाहत काहिजू ॥
सुनि सकल साजि शृंगार आईं अमित मुद मङ्गल जहां ।
लखि ललकिलीन्यो लाइ रानिन दीन आसन जस चहां ॥
बहुभांतिके भये सकल व्यञ्जन विविध बिधि मिष्टान्नजू ।
नृप जातिबन्धु बोलाइ पठये परत पहुँचे कानजू ॥
तब कौसिला कैकै सुमित्रा सुवन निज निज उबटिकै ।
अन्हवाइ तन पहिराइ भूषण बसन सुन्दर दुपटिकै ॥

पुनि कनक थार भराइ जाउरि धरी घृत मधु लाइकै।
महिपाल लैलै मुख जुठारत उठीं युवतिन गाइकै॥
परकार पटरसकेर जहँलौं सकल अधर छुवायहू।
पुनि तनक जलते पोंछि आनन जननि ढिग पहुँचायहू॥
हिय हरपि शिशुमुख चूमि सु दरि सकल दुलरावैलगीं।
अनपार भै जेवनार निज रुचि सरस तहँरहै का टेगी॥
यहि भांति सुख दिन राति भोगत धन्य पुरनरनारिजू।
रघुनाथ कोसलनाथ सुत छविनामपर बलिहारिजू॥

दो० बरष गांठि पाछे भई, गई ढगाई बाढ़ि।
बिप्रन दीन्हीं द्रव्य बहु, लीन्हीं कीरति गाढ़ि॥
चारेहिते पति भृत्य ज्यों, राम लषणके प्रीति।
भरत शत्रुहनकी रहत, तेही तरहकी रीति॥

श्याम गौर जोरी दोउ देखी * जननि जनक सुखलहैं बिशेखी
लै उछङ्ग बहुबिधि दुलरावैं * छबि बिलोकि तृणतोरि बहावैं
रूप शीलनिधि चारो भाई * तदपि राम शोभा अधिकाई
मेचक मुदित कलेवर पीना * पहिरे पीत झँगुली झीना
उनमुग्न चिकुर चिकने सोहैं * शिर चौतनी अमोलिक मोहैं
ललित भाल मसि बिन्दु बिराजे * भृकुटीकुटिल श्रवणश्रुति भ्राजे
कठुला कण्ठ बाघनख नीका * नीरज नयन मयन शर सीका
दूँदूँ दशन कपोल अनूपा * बिम्बाधर आनन द्विजभूपा
चिबुक चारु नासिका सुहाई * लटकनकी लटकनि मोहि गाई
पङ्कज पाणि पहुँचिया राजैं * नख द्युति लालि मुकाहल लाजैं
उरबर बाल बिभूषण पेखा * नाभि गँभीर उदर त्रैरेखा
कटि किंकिणी कुधरि टग डोलैं * झुनु झुनु झुनु झुनु नूपुर बोलैं

दम्पति प्रेमबिबश भगवाना * बालविनोद करत बिधिनाना
एकदिवस करि मातु बिबेका * अशन सँवारे भांति अनेका
इष्टदेव श्रीरङ्ग सभावा * वसन ओटकरि भोग लगावा
तेहिक्षण तहँ शिशु पावन देखा * पलना निकट गई तहँ पेखा
पुनिइतलखिपुनिउत लखिपावा * कौसल्या के मन भ्रम छावा
मातहि बिकल जानि रघुबीरा * दिखरावा निज थूल शरीरा
साढे तीनि कोटि बपु बारा * कचकच प्रति ब्रह्माण्ड निहारा
अण्ड अण्डप्रति आन बिधाता * अपर बिष्णुशिवसुरदिशित्राता
अगणितरबिशशिसरिततडागा * किन्नर खग पशुनरमुनि नागा
पितर पिशाच निशाचर जाती * कालकर्म गुण नाना भाती
देखी माया सबै नचावै * लखी भक्ति जो तिन्हैं छुड़ावै
देखे द्वीप उदधि तरुखण्डा * देखी अवधि सकल ब्रह्मण्डा
अण्डकोष प्रति आपन रूपा * देखा सोइ शिशु चरित अनूपा
हाथ जोरि तब बिनती ठानी * जय प्रभु गुणातीत गुणखानी
जगतपिता तुम अज भगवाना * मैं बिन ज्ञान पुत्र करि माना
सुनि बिनती बोले रघुराई * हमैं छाड़ि केहि पूजत माई
हम तव भक्ति बिवश तव तीरा * गइउ भूमि लखि बाल शरीरा
तेहिते मैं निज भूति दिखाई * काहूते जनि दिअौ बताई
कौसल्या तब बचन सुनाया * अबमोहि जनिब्यापै तव माया
एवमस्तु कहि पुनि भगवन्ता * हुँगे बालक रूप तुरन्ता
देखि मातु फिरि दूध पियावा * ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा
कबहुँक लै पौढ़ै सुठि सेजा * कबहुँक लेहि लगाय करेजा
कबहुँक कहै नींद किन आवै * हितकरि मेरा लाल सुलावै
कबहुँक करि सब तन शृङ्गारा * पठवै जहां भूप दरबारा

देखि नरेश लेहिं उरधारी * चितवैं नर सब पलक बिसारी
जो कोई निज निकट बुलावै * प्रीति परसि ताके ढिग आवै
मुनिजन ध्यान लगावत जाही * पुरजन अछत खेलावत ताही
सब सुलभ तिनका सब तीरा * जिनपर कृपा करैं रघुवीरा
यक दिन काकभुशुण्डी तेरे * किये चरित अति अद्भुत हेरे
कछु दिनमें कनछेदन आवा * हरषि सखिनते सखिन जनावा
गीतिका छन्द ॥
सखि आजु नृपसुतकेर है कनछेदनो चलिदेखिये ।
दम दान हरिगुण गान जीवन जन्मकर फल लेखिये ॥
नव सात साजि शृंगार आईं अयन जेहि रचना रची ।
चहु भाइ करन गहाइ दीन्ह्यो मालपूरी गुरसची ॥
हरि हँसत बिहसत ग्रह्य लखि धकधकी मातनके हिये ।
भरदेत रोचन नोकते श्रुति नीर घूरे करिलिये ॥
अतिचतुर लीन्हे छेदि क्षिप्रै उठे शिशु अकुलाइकै ।
भरि नयन नीरज नीर जननी लीन हृदय लगाइकै ॥
मणि अन्न मुक्ता करि निछावरि दीन महिदेवन घने ।
पहिराइ पुरजन सकल मानहु मार रति बपु बहु बने ॥
सुर अङ्गना भी अवधवासी सरसदासी के नहीं ।
रघुनाथ उपमा देइ तब जब होइ त्रिभुवन में कहीं ॥
यहि प्रकार जब चारिउ भ्राता * बड़े भये परिजन सुखदाता
चूड़ाकर्म आइ गुरु कीन्हा * नृप बहुदान द्विजनकहँ दीन्हा
अनुजसखा सब मिलिनिजसंगे * खेलैं खेल महीपन चेरे
भूप रसोई जेंवन आवैं * जब तब मातु बुलावन जावैं
औढामर्श देखि सब भाई * बोली तब कौसल्या माई

अहो लाल हे लक्ष्मण भैया * भरत वत्स रिपुसूदन छैया
अब क्रीड़ा दिशि चित्त न दीजै * देर भई चलि भोजन कीजै
बैठे बाट बिलोकन राजा * क्षुधित भये सब सखा समाजा
इमि सुनि प्रेम वचन चलिआवैं * बैठि भूप दिग भोजन पावैं
कौनेउ दिन आवैं नहिं टेरे * जननी धरन जात तब नेरे

दो० मातहि आवत देखि प्रभु, तुमकतुमकु चलिदेत ।
झपटि गहत तब भूप पहँ, ले आवत करिहेत ॥

सुभग शरीर सुरभि रजलागी * झारि सुअञ्चलते अनुरागी
लखि नृप निकट लिये बैठाई * मिलि जेंवत तब चारिउ भाई
इत उत चितै चले पुनि भागी * अरुण अधर हँसिजाउरिलागी
पुनि आवैं जहँ बालक सारे * देखि मातु पितु होहिं सुखारे

दो० नृपरानिन कर भाग सुख, सम्पति सुयश सुभाउ ।
मैं का बरणौं एक मुख, कहि न सकैं अहिराउ ॥

खेलत देखि नारि पुर केरी * जाइ भवन भजि आवैं फेरी
पुनि घरघुमि सखिन त कहईं * जे कोइ पैवार परोसे रहईं
जबते मैं नृपतनय निहारा * तबते रुचत न जग व्योहारा
अस मन होय खेलावहि वरहु * टरौं न परिगुरुजनकहुँ डरहु
कबहुँक निकसि दुवारे आवैं * ले उछङ्ग पुरजन धरि लावैं
बदन चूमि कर राखि मिठाई * झखलखि महल देइँ पहुँचाई
कबहुँक चुनत बिहंग लखि पावैं * हाथ पसारि धरन तब धावैं
उडि जब जात करत मचलाई * शुक सारिक दे राखत माई

इति श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेविश्रामसागरेश्रीरामचन्द्र-
बाललीलावर्णनोनामचतुर्थाऽध्याय ॥ ८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं भुशुण्डी के चरित, कछु रघुबंश बखानि ॥
यहिविधि बालचरित प्रभु करहीं * देखि लोग उर आनँद भरहीं
यक दिन एक सलूका आवा * नृपके द्वार कीश नचावा
देखि राम ठानी मचलाई * कहँ कि म्वहिं कपि देहु मँगाई
भूप मँगाइ देन बहु लागे * तदपि न लेत रुदत पुनि आगे
तब नृप भाष्यो गुरुने जाई * सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई
दो० जेहि हित रोवत रामजी, सो मरकट है आन ।
सुनौ तासु उत्पत्ति मैं, तुमने करौं बखान ॥
उत्तर दिशि सुमेरु गिरि भारी * तहँ केशरी रहत बनचारी
तासु परम पतिबरता नारी * नामअञ्जनी छबि अधिकारी
तेहि यकबार कीन शृङ्गारा * ठाढ़ी गिरिपर पवन निहारा
बपुधरि तन अस्पर्श सु कीन्हा * लखि सो चहीं शाप कहु दीन्हा
बोले तब नभसुत सुनु प्यारी * मम अस्पर्श सकलतनु धारी
तेहिते मोहिं शाप जनि देहु * हम बरदान देईं सो लेहू
होई तुम्हरे सुत बलवाना * रामभक्त गुण रूप निधाना
असकहिअनिल अदर्शित भयऊ * सुखयुत कछुककाल चलिगयऊ
कार्त्तिक बदी चतुर्दशि बारा * शनिके दिन भा प्रकट कुमारा
लखि पितु मातु कीन उतसाहा * लागे पुन सेवन जस चाहा
प्रात अरुण रवि निरखि फलङ्गा * प्रमत भयो फल सरिस पतङ्गा
झपटि बज्र मारा सुरराई * चिबुक मध्य तिहि मूर्च्छा आई
देखि पवनसुत लीन उठाई * राखी राखि समीर रिसाई
चढ़े उदर सब देवन फेरे * आये तब आशुग के नेरे
करि बिनती सुर सकल सुजाना * लागे देन सुतहि बरदाना

कह ब्रह्मा होइ बजरङ्गी * लगी न मम शर शक्तिअभङ्गी
बोले बृहद जरी नहिं आगी * इन्द्र कह्यो मम कुलिश न लागी
हर त्रिशूल यमदण्ड सुनावा * बारि न बूडै वरुण बतावा
बोलीं शक्ति भक्ति लखि नेकी * वचन मोर यहि सकै न छेकी
दो० यहिविधिसबविबुधनदये, बरबरदान निहोरि ।
सुनि प्रसन्नभे श्वसन तब, छूटी पवन बहोरि ॥
प्राणदान देवन जब पाये * महाबीर कहि भवन सिधाये
हनूमान हनि दुरमति नासा * लागे रहन मातु पितु पासा
जब तब जाइ मुनिन के तीरा * डारि फोरि कमण्डलु नीरा
बिटप तोरि गिरिशिखर ढहावें * बल अतिभूरि अङ्ग धुनिहावें
ऋषिन शाप तब दीन विचारी * भूलि जाहु निज पौरुष भारी
जब जब कोई सुरति कराई * तब फिरि तुम्हरे बल है आई
रहे तहां कछु दिन हरि आसा * पुनि गे पढन सहसगो पासा
लागे पढन जोरिकर आगे * करत सुसागर उन्मुख भागे
विद्या सकल पाइ अस भाषा * मागो जो तुम्हरे अभिलाषा
बोले रवि मम सुत सुग्रीवा * ऋष्यमूक पर रहत सदीवा
तिनके तीर रहो तुम जाई * मिलिहैं तहां तुम्हें रघुराई
गुरु अनुशासन मानि विधाता * रहत भानुसुत के ढिग ताता
राम लषण बोले तिहि हेता * लेहु मगाइ ताहि धरि चेता
तुरत नृप. भट भूरि पठाये * सकल सुकण्ठ पास चलिआये
जो नृप कह्यो सो वर्णन कीन्हा * सुनि सुकण्ठ तुरते कपि दीन्हा
ले आये मन्दिर हरषाई * देखि राम उर लीन लगाई
हनूमान के अतिसुख भयऊ * मिलि लघुरूप तहां रहिगयऊ
जहँ जहँ खेलैं राम सुरङ्गा * तहँ तहँ कपि राखैं निजसङ्गा

दो० एक दिन एक शिशु अन्धको, डारी रज प्रभु पीठ ।
उरहन दै रघुनाथ तिहि, देखरायो दै दिठि ॥
एक दिवस एक बालिक आवा * बेचन हित नग नृपहि देखावा
लै रघुनाथ कूप में डारा * देहु वहै हँसि भूप उचारा
तुरते वृक्ष कूप ते जामा * लागे लाल अमोलक नामा
फरत झरत पुनि लागत भारी * लैलै जान सकल नर नारी
सात दिवस भे लूटि विशेखी * पुनि सो विटप परा नहि देखी
यह लीला लखि भूपति शाहू * चकित रहे मन परम उछाहू
एकदिन एकबधिकचलिआवा * अद्भुत पक्षी नृपहि दिखावा
देखि राम लेइनि उड़ाई * बोला खग स्वइ देहु मँगाई
सुनि प्रभु तासु पक्ष महि गाड़ा * भा तरु तुरत जमै जलडारा
दो० लागन फल फूटत तुरत निकसत उड़त विहङ्ग ।
बैठत महलन पर घरन, धावत बालक सङ्ग ॥
पुरबासिन पाले सबनि, देखे बिहँग अनूप ।
सुनि सुनि तहँ लै लगये, देश देशके भूप ॥
बधिकै दीन्हीं द्रवि बहु, भा सबके सुख सात ।
यह प्रभुता कछु बहुतनाहि इच्छा ते जग होत ॥
यहिविधि सानुज राम सुशीला * आठ वर्ष कीन्हीं शिशुलीला
जब पौगण्ड भये सब भाई * पढ़न हेतु पठये रघुराई
गुरुपद जाइ नवायें शीशा * लगे पढावन मुदित मुनीशा
पढ़न भये प्रथमै बिन खेदा * साम दाम अरु दण्ड विभेदा
मिलि सनेह कीजै रवट रासा * खान पान धन दीजै दासा
भेद सो मन लहि फेरि मिलावै * दण्ड मार दुख त्रास दिखावै
शत्रुनके लक्षण ये जानौं * तिन पाछे अस पढ़ौ बखानौं

दो० वर्ण वेद उपवेद अंग, आदिशास्त्र उपशास्त्र ।
सकल पुराणै संहिता, तन्त्र सुमन्त्र कलास्त्र ॥
निकस्यो जहां तवर्गके, अन्तक अक्षर शुद्ध ।
जान्यो तव रघुनाथ मुनि, हैं गुण विपे विरुद्ध ॥

अचिरकाल सब विद्या लीन्ही * बहुविधि गुरुहि दक्षिणा दीन्ही
भये मुदितमन पितु अरु माता * खेलन जाहिं जहां सब भ्राता
देखि लोग सब होहिं सुखारी * थकित बिलोकैं छबि नर नारी
यौवन जरठ अपर जे बारे * लागहिं सबन प्राण ते प्यारे
सुदिनसमुझियकदिन नरनाहा * दीन जनेऊ सहित उछाहा
नित्यानन्द निरोधि अपारा * घण तण बादत अवध मँझारा
पुरवासी सब ताके माहीं * रहे निमग्न सुरति कछु नाहीं
नारदादि मुनि दिनप्रति आवें * चारु चरितचहि चहुँदिशिगावें
सुनि सुर सकल सराहहिं प्रेमा * सुमन चढ़ावें हित निज नेमा

दो० यकदिन ध्यान वशिष्ठमुनि, करत वांखि महादेव ।
कह्यो विप्र करवाइके, प्रकट गोद किनलेव ॥

एक दिवस प्रभु सरयू माहीं * अनुज सखनयुत मुदित नहाहीं
असुर एक रावण कर प्रेरा * मगर रूप धरि मुखमें गेरा
निकसे सपदि ताहि हरि मारी * सुनि पुरजन सब भये सुखारी
जिनजिनके बलरु त्यहि खाये * दीन्हे काढ़ि मनहुं धरिआये
मातन दीन्ह्यो दान अपारा * गुरु प्रसाद कल्याण हमारा
इमि पौगण्ड अवस्था माहीं * किये चरित बहु बरणि न जाहीं
पुनि सब बन्धु भये कैशोरा * रूपराशि पुरजन चितचोरा
दिनप्रति सरयू करि अस्नाना * बहुविधि देइँ द्विजन कहँ दाना
कबहुँक चढ़िनिज नाउ मँझारा * खेलैं दगाजा मध्य निषारा

कबहुँक सानुज सखा सुजाना * लेलैं गेंद जाइ चौगाना
फेर फेर कन्दुक घूमत कैसे * हरिपद विमुख जीव जग जैसे
कबहुँक चढ़ि वरबाजि नचावें * पुरवासी लखि अतिसुख पावें
कबहुँक नदि ठानें घुड़दौरा * धरि निज निज माहँ यकठौरा
भरतसंग जब बाजी लागे * तब प्रभु कसि रहें निज बागे
फेरहिं सफल होंय रघुराई * जानें भरत भाव तें भाई
सुनि यकमत हय गय पट हीरा * प्रमुदित होइ पाइ सब बीरा
कबहुँक अनुज शत्रुनके साथा * बिचरहि पुर धनु शर गहि हाथा
यकदिन रजक मज्जन कृत नारी * देखन लगी तासु भरतारी
बोली वसन बिना कोइ देखी * हौं अस इन्हें छाड़ि मोहिं पेखी
तैं छातनग न अंध निहारे * परे नहिं तेहि अङ्ग हमारे
कबहुँक जाइ अखाड़न लरहीं * अनुज सखनयुत कसरत करहीं
कबहुँक गोलि निशाना मारैं * मज्जनकरि पुनि गृह पगु धारैं
देखि मातु अतिशय सुख पावैं * नृपयुत भोजन हेतु बुलावैं

मञ्जुछन्द ॥

जेवँन बैठे भूप मौलि निज सग सुवन लै चारौजी।
सहित सनेह परोसन लागीं लषणलाल महतारीजी ॥
मोहनभोग मखानेकी छबि मधुर मलाई थारीजी।
खोवा खाँड खरिक खरजूरी खाजा खुरमा खारीजी ॥
मालपुवा माधुरि मधु मिश्री मलि माखन में डारीजी।
फनी सूप पटपरी पापर पाक पिरॉक पनारीजी ॥
मोतीचूर मूरके मोदक मोदककी उजियारीजी।
सेमई सेव सैंजना सूरन सोवा सरस सोहारीजी ॥
उज्ज्वल भात भटाकर भरता भांतिभांति तरकारीजी।

मूग माष मसूरकी पहिती चनक कनक समधारीजी ॥
बरी बरीक बरा बहुविधिके बकरा कटु बटकारीजी ।
पापरि फरी फली मुनितरुकी कूपमाण्ड कचनारीजी ॥
पारवर पोह पकौरी पालक पेठा मन रुचिकारीजी ।
अरुई आलु बैंगिरती अदरख अचरा अमित अचारीजी ॥
रोटी रुचिर मिही मठारी घृत में बोरि निकारीजी ।
मेथी सरस सेमिदल सरसों सोवा शुचि सुखकारीजी ॥
चौराई तोराई तोरई मुरइ मुरब्बा भारीजी ।
कुम्हड़ौरी मुंगछौरी रिकवछ इंडहर और ढुंढरीजी ॥
खट्टी बड़ी करेला कुँदुरू केला फल फलहारीजी ।
गरी बदाम छुहारा किसमिस पिस्ता शाग अपारीजी ॥
खोवसा खीच चवेना घेवर मनसुखा गुझियारीजी ।
फेनी फूल मिसौना खिचरा स्वरतालु खवारीजी ॥
जलित जलेब अँदरसा बुरुगु दधि चटनी चटकारीजी ।
यहिविधि चारि भाँति षटरसके व्यञ्जन विविध सँवारीजी ॥
कनकथार मणिजटित कटोरिन भरिभरि धरे कतारीजी ॥
पञ्च ग्रास करि जेंवन लागे लखि हरषीं नृपनारीजी ।
शीतल जल सरयूकर झारिन पीवत बारम्बारीजी ॥
करत कौतुक भोजन दोउ बहुरि न धौके बारीजी ।
गवन अथाइ साहु अब सबने मनयो रस न गारीजी ॥
युगलस्यन्दन नन्दन सुख हस्त लागि उठे सखिहौं विचारीजी ।
अगुण आइ चन्दन करपांव पर कँगुलायो कारीजी ॥
दीन वैमल अरगजा कुमकुम लीन्हीं चपपरिहारीजी ।
भोग प्रसाद रामदासिन मिलि पायो त्रण पद्मारीजी ॥

जेहि जूठनिका सुर मुनि तरसत परसत कबहुं न टारीजी ।
सोई-जन रघुनाथ साथ धरि पावत बारहुबारीजी ॥
देव दनुज नर नाग रागयुत जन जगदीश अगारीजी ।
जो जेवनार रामकी गावै तासुखकी बलिहारीजी ॥

तोटकछन्द ॥

कबहू बन जाय शिकार ठनै। मृग आदिक साउज नाहिहनै ॥
जब शूकर नाहर दृष्टि परैं। तुरतै निज बाजिनते उतरैं ॥
लखि राम कहै हथियार धरो। यहिते अब एक हि एक लरो ॥
करियुद्ध पछारत जौन सखा। तेहि देत इनाम श्रीरामलखा ॥
निज धाम पठावत साउज सो। घर आवत गावत राउजसो ॥
रघुनाथ कहैं यहि भांति प्रभू। नवनित्य चरित्र करै बरभू ॥

यकदिन यक शूकर बन आवा * घुरघुरात प्रभु सन्मुख धावा
गहि पद पटक्यो भूमि मुजासू * छूटनभयो दिव्य वपु तासू
अस्तुति करि अस वचन उचारा * पूरव प्रभु मै रह्यो भुवारा
एक दिवस तव जन लखि पावा * वश अभिमान न शीश नवावा
निन्दाकरि निज मंदिर आयों * तेहि अपराध कोलतनु पायों
अब तव दरश दूरि दुख भयउ * अस कहि परमधाम कहँ गयऊ
यक दिन मैं नाहरते भेटा * तिहि शठ प्रभुपर कीन झपेटा
साधि बाण मारा रघुराया * तनु तजि सो हरिलोक सिधाया
यहिविधि वनशिकार मिलिजाई * पावन करै जीव रघुराई
खगमृगनिरखि निकटचालआवैं * तिन्है न कबहू भूलि सतावैं
जो उतपात करैं गति हेता * तिन्हैं देइ हति कृपानिकेता

दो० एक दिवस इक सिहने, बधी विप्रकी गाय ।
गरजत डोलै पुर निकट, कोइ पास नहि जाय ॥

सुनि रघुपतिकसि कटिपटबाधा * धनुष चढाइ पाणि शर साधा
मुदित जाइ सन्मुख ललकारा * खल हो सजग तोहिं मैं मारा
इतना सुनि सन्मुख सो धावा * पञ्च बाण मुख मारि गिरावा
तुरत भयो सो गन्धर्व रूपा * विनती करि निज हाल निरूपा
महाराज मैं गन्धर्व अहऊ * इन्द्रसभा नित गावत रहऊं
एक दिवस नारद तहं आये * नाथ चरित तव बरणि सुनाये
तेहि समाज मैं हँस्यों ठठाई * सुनि मुनि बोले वचन रिसाई
दो० सिंहनादसम करत शठ, होउ जाइ हरि हार ।
मरिहैं निश्कर रास जब, तब होई उद्धार ॥
यहि तन पायों अमित दुख, अब सब नाशे शोक ।
अस कहि पद शिर नाइकै, जात भयो निजलोक॥
तब नृप पहँ आये रघुराई * तहां विप्र ठाना मचलाई
कहत सुरभि सोई मम दीजै * भूपति भनत अपर बहु लीजै
तब राघव बोले सुनु ताता * झरि तरु बहुरि न लागैं पाता
गई बाति वय पुनि कहु आवै * समय चूकि फिरि का पछितावै
तेहिते तजहु आश तिहिकेरी * अपर धेनु लीजै बहुतेरी
तदपि न विप्र तजी हठनाई * देखा चहत राम प्रभुताई
तब प्रभु कहा लषणतें जावो * विप्र समेत तुरित गौ लावो
चढ़ि रथ गये प्रथम यमलोका * लाखे उरभा तिनके सुखशोका
षोड्श भांति पूजि सनमानी * हाथ जोरि बोले मृदुबानी
नाथ कौन हित आयहु आजू * आयसुहोय करिय रघु काजू
बोले लषण विप्र की गाई * दीजै आनि होइ जो आई
सो० सुनि बोले यमराय, पांच कोस तक अवधमें ।
जो कोई मरिजाय, सो नहि आवत धाम मम ॥

करम करत भल पोच घनेरे * तिनकर न्याय हाथ हरिकेरे
जैसे राजसभा कर फंदाई * तिहिते कछुभल अनभल होई
तासु निसाफ करै स्वइ राजा * नाहिंन कछु कुतवालते काजा
सुनि,रथचढि चलिभे ततकाला * जाइ बिलोके सकल पताला
पुनि चढि सातो स्वर्ग ढूँढ़ाये * तिहि पाछे बैकुण्ठहि आये
रहत जहां श्रीपति भगवाना * कीन दण्डवत तिन सनमाना
पूंछिते बरणा निज हेता * तिन तब कहा जाउ साकेता
योजन कोटि पचास अगारा * रहत राम इच्छा आधारा
दो० जहा न पावक पवन पवि, चन्द्र सूर्य नहि कोय ।
रहत एकरस सर्वदा, राति दिवस नहिं होय ॥
सुनि चलिभे द्विजवा स्वइ जाई * बसत रतनमय छवि अधिकाई
चारि द्वार त्यहि पुरके हेरे * बाजत बाजन भाति घनेरे
उत्तर बसत महा बैकुण्ठा * महाविष्णु जहं रहत अकुण्ठा
विरजा विमल बहत पुरतीरा * मज्जन सन्त सकल मति धीरा
ज्योति एक जहँ जरत निराशा * कोटि भानु सम तेज प्रकाशा
योगाजन जिहि सादर ध्यावैं * अन्तसमय त्यहि माहि समावैं
पूरब द्वार जनकपुर माहैं * दक्षिण चित्रकूट मन मांहैं
पश्चिमदिशि गोलोक निहारा * जहा करत गोपाल बिहारा
षोडश सबत केरि अवस्था * बपुछबिलखि को होय न मस्था
पहिरे भूषण बसन अमोला * मृदु मुसक्यानि मनोहर बोला
दो० पीतबसन बनमाल उर, कर मुरली मुखपान ।
परिकर सहित समूह सखि, सोहत इमि भगवान ॥
रहती है सुरभी त्यहि माहीं * पूछा जाइ सकल तिनपाहीं
ब्राह्मणकी कपिला इत आई * सुनि दीन्ही गिरिधरन मँगाई

मुदित मध्यसाकेते आये * मन्दिर विपुल विचित्र सुहाये
जो रचना निरखी कहुं नाहीं * सो सब देखी ताके माहीं
दिव्यरूप सब तहाकं वासी * षटविकार बिन नित्य सुपासी
आगे सीतहि देख्यो जाई * रूप अनूप अमित प्रभुताई
जासु अंश उपजे गुणखानी * अगणित लक्ष्मि उमा ब्रह्मानी
अगणित सखी करें सुठिसेवा * अगणित अली लिहे कर मेवा
अगणित अनुग करें परणामा * अगणित सन्त उचारहिं नामा
अगणित शक्ती हरिगुण गावें * तिनमा तीनस मुख्य कहावें
रो० छं० । श्रीभू लीला कान्ति कृपा योगी ईशाना ।
उत्कृष्णा भीषनी चन्द्रिका कृरा ज्ञाना ॥
पुण्या परवी कला कीर्ति अहलादिनिक्रान्ता ।
भाविन्या शोभना लम्बिनी बिद्या साता ॥
ईलानुग्रह महोदया उत्तती सुविमला ।
छाता नन्दनि शुभद सत्य सो काहित बिमला ॥
ये शक्ती तेंतीस सदा सिय भृकुटी दिशि लखि ।
करें बिरवकर काज सबनके सहससहसलखि ॥
इन सबहिनकी कीरति करणी * महारमायणमें शिव बरणी
सहित बिप्र लक्ष्मण शिरनावा * करि सनमान निकट बैठावा
प्रीतमके गुण पूछन लागी * कहे सकल लक्ष्मण अनुरागी
हाथ जोरि द्विज बूझत भयऊ * स्वामी कौन कहा तव गयऊ
हमरे पति महि अवध मझारा * लीन जाय नृप गृह अवतारा
कछु दिनमें हमहूं तहँ आई * जनक नगर प्रकटब अगनाई
सुनि शोभन अतिशय हरषाना * रामै सकल लोकपति जाना
अब तुम जनि भरमौ सब धामा * मूदहु नयन जाहु निज ग्रामा

नयन मूदि देखे तहं नाहीं * बैठे राजसभा के माहीं
बोले राम धेनु निज पायो * तब शोभन चरणन शिरनायो
धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला * धन्य तुम्हारे चरित कृपाला
प्रथमहिं मैं तव सुना प्रभावा * जड़मति मन विश्वास न आवा
ताही ते ठान्यों हठ भारी * देख्यो प्रभुता अमित तुम्हारी

दो० तव सम ईश न ईश कोइ, तव पुर सरिस न ग्राम ।
तव चरितन सम चरित नहिं, तव जु नाम सम नाम ॥

मैं प्रभु कीन ढीठता भारी * सो क्षमिये जन जान अनारी
सुनि स्तुति प्रभु बहुविधि सनमाना * नान करेड जनि अनत बखाना
भले नाथ कहि निज गृह गयऊ * पुरवासी सब हर्षित भयऊ
यहि विधि राम चरित्र निकेता * करत चारन भक्तन सुख हेता
एकदिन सुरऋषि आवत रहेऊ * मग मिलि लोमशसे असकहेऊ
चलो आजु श्रीरामहिं देखो * जीवन जन्म सुफलकरि लेखों
सुनि मुनिकह्योसहित अभिमाना * थिर हैं करों रजक [illegible]

दो० यहिविधि आवत जात बहु, विश्व त्रिपथ रघुराय ।
इनते तौ हमहीं भले, अचल ब्रह्म रहे ध्याय ॥
परब्रह्म श्रीराम हैं, हरण अखिल दुखभार ।
सुन्यो न जब तब देवऋषि, आये अवध मंझार ॥

न्यहि क्षण तहां रामकी माया * व्यापी लोमशको नहिं भाया
उमड़े सिंधु सकल दिशिनेरे * बहु अर्पे परि तिनके फेरे
प्रथम प्रलय सम बप्यो विचारा * फिरत आये प्राग मंझारा
लख्यो अक्षयवटमें हरिरूपा * कह्यो मोहि राखो सुरभूपा
बोले हरि रक्षन हित तुमको * हैं न रामकी आज्ञा हमको

इतने माहिं लहरि के साथा * अपर अण्डमें गे ऋषिनाथा
तहाँ अक्षयवट पर हरि पाई * त्यहू पछो नहिं राम रजाई
दो० इमिअगणित अण्डनविषे, गे लखि कह्यो न कोय ।
यम यातना शरीर सम, पायो दुख अति सोय ॥
तब मुनि कह्यो कि रामको, जिनकी आज्ञा नाहिं ।
लीन्हो जिन साकेतपति, जन्म अवधपुर माहिं ॥
तिनकी जाय विनय जब करिहो * तब तुम दुखसागरते तरिहो
नामरूप अरु लीला धामा * रहत नित्य ये होत न खामा
हमैं न इहे मिली कृपाला * लहरि संग पठयो तब काला
जल आवरण अवध चहुँ फेरा * तम्बू मम तानो तहँ डेरा
पुरवासी सब सुखसो जहँवा * रहत चहतनहिं दुख परा कहँवा
तब लोमश आये रघुपति पेरी * कीन्हीं विनय नमनि बहुतेरी
सुनि प्रभु सेवकने बुलवायो * रामहिं लखि मुनि शीशनवायो
कह्यो नाथ बिन कृपा तुम्हारी * कोउ भवतूनि न सकै उबारी
तुम सब नाथन के हो नाथा * जीव दशा सब तुम्हरे हाथा
चहो मशक को ब्रह्म बनावो * विधिहिमशककरोअप्रमानो
दो० असकहिलहिआनन्दमुनि, गौने निजथल फेरि ।
पंथ स्वयंशिर लखि कियो, नारदको गुण हेरि ॥
सो० राम मन्त्रको पाइ, आइ चरित रघुनाथके ।
बरणे तब कपिराइ, अस प्रभाव श्रीरामको ॥
एक दिन राम पतङ्ग उड़ाई * देवलोक सो पहुँची जाई
तहँ हरिसुत जयन्त की नारी * अतिविचित्र लखि पतंगनिहारी
दो० मनमें किहिसि विचारइमि, वासुकी अभिलाष ।

सो पुरुष कस होइधौं, हँसिगहिलीन्हेसिताहि॥
तब प्रभु हनूमान ते भाखी * देखौ क्यहिं पतङ्ग गहि राखी
तुरत पवनसुत जाइ निहारी * देहु छाड़ि निज गिरा उचारी
बाली जासु चङ्ग यह आही * दरशन तासु कीन हम चाही
ताहीते याको हम गह्यऊ * आइ अनिलसुत प्रभुते कह्यऊ
सुनि हरिकहा कहौ तुम जाई * चित्रकूट महँ देब दिखाई
हनूमान चलि तासों भाषा * दीहसिछाड़िमनकरअभिलाषा
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्ही * निशा गृहआय वियारू कीन्ही
मणिमय पलँगागयो बिछावा * क्षीरफनु सम बसन स्वहावा
कीन शयन तापर जगत्राता * प्रात जाय बोली ढिग माता
भोरभये जागहु रघुराई * मुखछबि पर जननी बलिजाई
रवि हि बिलोकि गयो तमभागी * ज्ञानउदय जिमि मोह विरागी
शशि नक्षत्र भे मलिन सुभाये * जिमि सब गुण दारिद के आये
लागे लुकन निशाचर कैसे * हरिसुमिरण ते पातक जैसे
उठे फूलि सरसिज रवि देखी * जैसे सुजन सुजन कहँ पेखी
तिनपर मधुप करत गुञ्जारा * जनु नम बपु धरि शरण पुकारा
बोलत बिहँग बिबिधविधि टेरे * मानहुँ मुनि बहु गुणगण तेरे
प्रमुदित कोककुमुद बिलखाने * हानि लाभ जिमि पाइ अयाने
अनुज सखा बोलत यहि भाती * जिमि चातक चाहै जलस्वाती
बन्दीगण बिरदावलि भाषे * याचक द्वार खड़े अभिलाषे
सुनत उठे तब अवधबिहारी * देखि मातु आरती उतारी
मित्र बन्धु स्वयकन पदबन्दे * दान पाइ याचक आनन्दे
पुनि सरयू तट जाइ नहाने * सबविधि साधु विप्र सनमाने
जहँतहँ सुनै कथा करि नेहा * करि प्रणाम आवैं पुनि गेहा

दो० एकबार रघुनाथ लैं, सग सुजन समुदाइ ।
तीर्थाटन करि सबनको, दीन्ही बिशद बड़ाइ ॥
इति श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेविश्रामसागरे रामचरित-
वर्णनोनामपञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
घटज संहिता केर मत, कहौं कछु गरुडबखानि ॥
यकदिन प्रभु लागे करन, निज स्वरूपकर ध्यान ।
पवनतनय अवलोकिइमि, मनमें कृत अनुमान ॥

इन्हैं सुना हम सबके स्वामी * ब्रह्मादिक जाके अनुगामी
सुमिरत ध्यान करत हैं सोऊ * इनहुंनके ऊपर है कोऊ
पूछत प्रभुते तिन हँसि कहा * पवनज तिमि जानें चाहा
निकटौ दूरि निबाहु न होई * जहां विघ्र न मग कछु कोई
मुँदरी दे उत्तर दिशि तेरा * कुधरखण्ड बन हले घनेरा
लोकालोक अद्रि के आगे * अन्धकार पारक थल लागे
शतसवत पर गये निकेता * मुंदिया एक मिली तहँसेता
ब्रह्म कहा मृतलोक पधारे * सह समाज गे दशरथ बारे
पुनि देखे रघुपति आसीना * बिधि हरि हर सेवत पद लीना

दो० करन दण्डवत पुनि तहा, कोई परयो न देखि ।
पीताम्बर को खूंटले, आये अवध किशोरि ॥

करत प्रणाम राम हँसि कहेऊ * आयो देखि ब्रह्म कस रहेऊ
कह कपि तुमहीं हो सबठौरा * तुमते परे न है कोइ और
बोले, प्रभु तुम पहुचे नाहीं * अनहीं फिरि आयो रवहिपाहीं
तब पवन न पट चिह्न दखारा * रघुपति कर खण्डित तस पारा
गिरेचरण कहि धनि तव लीला * जन मन रंजन शमन कशीला

दो० एक दिन पद चापत सुन्यो, इनश्रुति कहै अरूप ।
है अरूप पुनि सुनि विनय, दिखरायो निजरूप ॥
एक दिन लखन सहित रघुवीरा * खेलत भे सरयू के तीरा
विहँगरूप धरि रावण आवा * घात पाय शठ चहत उठावा
जानि राम बिन फर शर मारा * गिरा जाइ निज लङ्क मँझारा
सात दिवसपर मुरछा जागी * समुझि प्रताप लाज उर लागी
तब दूतनते कहिसि बुलाई * तपसिनते लावहु कर जाई
आयसु पाइ आइ हठ कीन्हा * मुनि भरिकुम्भरुधिरतिनदीन्हा
कह्यो जाइ रावण के पासा * यहि घट ते होई कुलनासा
गवन जाय दशमुखे सुनाई * आवहु गाडि जनकपुर जाई
शम्भुसभा श्रुतिवाद मँझारा * प्रथमै रहा जनकते हारा
तेहि गसते तहँ कुम्भ पठावा * दूत गाड़ि मिथिलापुर आवा
हरि इच्छा तहँ परेउ दुकाला * विन जल भे सब जीव बिहाला
लखि विदेह बुध लीन बुलाई * ग्रन्थ ते तिन युक्ति बताई
उदक हेतु शुभयज्ञ कराओ * कनक केर लै हल बनवाओ
जोतो अजिर सहित निजरानी * होई वृष्टि सकल सुखदानी
दो० सुनि नृप कीन्ही युक्ति स्वइ, जोतत अजिर मँझार ।
प्रकट्यो सिंहासन सुभग, अद्भुत तेज अपार ॥
चारि सखी चारों तरफ, लीन्हे मुरछल हाथ ।
मध्य बिराजत भूमिजा, रूप राशि रघुनाथ ॥
वेदवती रिपुवधनाहित, तजन होत महि अंश ।
एकरूप है प्रकट भइ, आदि शक्ति निसिवंश ॥
देखि विदेह विनय तब ठानी * भई तुरत कन्या लघु जानी
सखिन सहित सिंहासन सोई * अन्तर्धान भयो तब होई

रोदन सुनत सुनयना रानी * लीन उठाइ गोद सुखमानी
सुनि पुरजन सब भये सुखारी * देखन उठि धाये नर नारी
भूपति दान दीन विधि नाना * यथा मनोरथ जाकर जाना
दिन दिन कन्या बाढ़त कैसे * शुक्लपक्ष वर चन्द्रा जैसे
छठी बारहीं अन्न पराशन * कीन नरेश निगम अनुशासन
नामकरण दिन नाम कढ़ावा * बुधन जानकी नाम बतावा
नारद आइ धस्यो तब सीता * जगत जननि सब भांति पुनीता
सुररञ्जन भञ्जन खल हेता * प्रकट भई नृप तब संकेता
सकल लोकपतिप्रभु सुखराशी * मिली इन्हे वर जो अविनाशी
औरौ लक्षण युक्ति समेता * कहि मुनिवर गे ब्रह्मनिकेता
सुनिऋषिवचनमाल गुहिलीही * मोनिजउर सिय धारण कीन्ही
जनक बन्धुजा सखिन समेता * खेले जहँ तहँ रूप निकेता
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * लागहि सबै प्राणते प्यारी
पुनि नृप निपुण पढ़न बैठाई * अचिर काल सब विद्या पाई
यह चरित्र भाष्यो भव सेतू * अब सुनु सिया स्वयम्वर हेतू
दो० एक समय मिथिलेश अति, शंकर कर तप कीन ।
आइ कह्यो हर मांगु वर, तब नृप बोलय लीन ॥
नाथ इष्ट जो आपकर, ज्यहि श्रुति नेति बखान ।
तेहि देखौं भरि नयन मैं, यह वर देहु न आन ॥
सुनि शिव दीन्ह्यो धनुष जो, मिलारहै विश्वनाथ ।
कह्यो कि पूजहु याहिते, मिली आइ मम नाथ ॥
सुनि विदेह प्रमुदित अनुरागे * नित्यनेम करि पूजन लागे
यक दिन सिय सेवा ढिग जाई * लीले लीन्ह्यो धनुष उठाई
देखि जनक अतिअचरज माना * त्यहिक्षणतहा कठिन प्रणठाना

जो लेई शिव चाप चढ़ाई * सो नृप मम कन्या वरिपाई
लिये बोलि कारीगर भूरी * रङ्गभूमि बिरची तिन रूरी
चहुँ दिशि चामीकर अस्थाना * तासु मध्य मणिमय मञ्चाना
दशसहस्रमिलि मल्ल विशाला * लावतभये धनुष मखशाला
देश देश प्रति पत्र पठाये * सुनि सुनि भूप अनेकन आये
वन उपवन पुर पन्थ निकेता * उतरे निज निज सैन समेता
सुनि दशमुख बाणासुर आवा * प्रथमें निज निज पौरुष गावा
रावण धस्यो धनुष तब जाई * बहुविधि बलकरि रहा उठाई
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े * अतिबल कीन कढ़ा तब काढ़े
सभा मध्य करि कपट बहाना * जात भये निज निज अस्थाना
भूपहु दिन प्रति विपुल उठावें * टरै न जब तब दुन्दि मचावें
यहि विधि बीति कयो मासा * अब सुनु मुनिवर की इतिहासा
गाधिसुवन नन्दन बन रहहीं * यज्ञारम्भ कीन जब चहहीं
तब तब असुर कराहिं अपकारा * लखिमुनिवरनिजहृदय विचारा
भानुवंश प्रकटे रघुराई * लोचन सफल करहुँ तहँ जाई
लावहुँ मांगि सुभग दोउ भ्राता * ते दलि खल ह्वैहैं मखत्राता
कारकृष्ण ऋषि दिवस सिधाये * नौमीं दिन कोशलपुर आये
देखी बननि अवधपुर केरी * तीनि लोकते सफल घनेरी
पुर चहुँओर कनक कर घेरा * उपवन बाग मनहुँ मधु सेरा
वसु दिशि वसु दरवार बिराजें * आठ आठ सेनापति राजें
रहु वेद घटिका परमाना * जाहि भवन जब आवे आना
विधि हरि हर भूपति रदएका * बसत मनों धरि रूप अनेका
वापी कूप तड़ाग घनेरे * मणि सोपान मधुर मधु नेरे
विविध प्रसून विकसे बहुरङ्गा * कूजत खगगण गुञ्जत भृङ्गा

मणिमयमहल विशाल अपारा * मानहुं नभ तिन ऊपर धारा
चित्र विचित्र अनेक बनाये * कनककलशशिखरिसरनहाये
ध्वज पताक तोरण नव ठाटा * देहरी बिद्रुम कुलिश कपाटा
चहुँहट हाट फराकन हीची * बीथीसकल सुगन्धिन सींची
आवन जान निकरनर नीके * गज रथ बाजि भावते जीके
बाजन विविध भांतिके बाजैं * मत्त गयन्द अनेकन गाजैं
कतहुं मल्लगण भिरैं प्रचारी * कतहुँ गीत गावैं मिलि नारी
कतहुँ विप्र बर वेद विचारैं * कतहुँ सन्त जन नाम उचारैं
कतहुँ हंस शुक सारिक बोलैं * कतहुँ केकि पारावत डोलैं
मध्य ग्राम नृप धाम अनेका * बनानि विशाल एकते एका
भूप सभा शुचिरुचि रुचिराई * देखत बनै बरणि नहिं जाई
दो० आवैं जाइँ अनेक नृप, झुकि झुकि करैं प्रणाम।
राजत कोशलराज जहँ, सुरपतिते अभिराम ॥
उत्तर दिशि सरयू सरि बहई * अमल अपाप आप गो थहई
आप अधोगति कुचि तब चालै * ओरहि दंत ऊर्ध्वपद हालै
बांधे घाट मनोहर नाना * जहँ तहँ जांय करैं अस्नाना
निकट निवास मुनिन के रूरे * सुमन बाग तुलसिका ऊजरे
देखत मुनिवर पुरकी शोभा * सरयू तट आये मन लोभा
मज्जन कीन मुदित जल खाया * ऋषि आगमन नृपति सुनिपाया
सचिवसहित तह आवत भयऊ * करि सनमान सदन लै गयऊ
सचिवसहित तहँ आनन भयऊ * दीन्ही मुदित मुनीश अशीशा
नाये सब रानिन पद शीशा * पृथक पृथक है आशिष पाई
गहे चरण पुनि चारो भाई * चपल न्गन परिहरी निमेषी
भये प्रेमबश रामहिं देखी * बोले बचन नाय पद माथा
षोडशभांति पूजि महिपाला * बोले बचन नाय पद माथा

भूरि भाग हम तुम्हें निहारा * आपु कहौ केहि हित पगुधारा
सुनहु नरेश तपोवन माहीं * करन देत मख निश्चर नाहीं
त्यहि हित याचन आयो ताता * दीजै राम लषण दोउ भ्राता
सुनि मुनि वचन बाणसम लागे * बोले भूप बहुरि भय त्यागे
दो० याचक जन नाहक किये, जगतपिता संसार।
हित अनहित न निबाहकछु, मांगनही को कार॥
विविध यतन कीन्हे मिले, चौथेपन सुत चारि।
निपट निठुर निरमोह तुम, मागेहु नाहिं विचारि॥
कह सुकुमार सुवन मम बारे * कह गिरिसरिस असुर भयकारे
जे धनुशरगहि जानत नाहीं * ते कैसे लरिहैं रणमाहीं
राममनेह सहित सुनि बानी * है प्रसन्न पुनि कह मुनिज्ञानी
तव देखत है राम नदाने * अहहिं सबल अतिचतुर सयाने
इनकर रूप प्रताप जहाना * जानत तव गुरु सरिस महाना
त्यहिते देहु लेहु करि नामा * याही हेतु धरेउ वपु रामा
दो० तुम कहँ याचक जगतमें, बादि विधाता कीन।
सो नहि भूपण दानिके, को बरणत लघुपीन॥
यह नृप सत्य झूठ कछु नाहीं * राम प्राणप्रिय दिये न जाहीं
हम तव संग चलीं सजि राजा * तुमतें नहिं होई यह काजा
धरणि धाम धन चहो सुलीजै * केवल त्यागि राम कहँ दीजै
मोह बिवश है करत बिषादा * त्यागत निजकुल की मर्यादा
इतना कहत क्रोध उर जागा * महिपताल नभ हालन लागा
सुर नर अहि सब उठे डराई * चाहत होन प्रलय का भाई
तब वशिष्ठ मृदुवचन प्रकासा * कीजै कृपा जानि निजदासा
राजा ते बोले सुनि लेहू * बालक इन्हें मुदित मन देहू

दो० इनहीं के तपतेज बल, बधि तमिचर मख राखि।
ऐहैं अलमङ्गल सहित, सबै विजय शिवसाखि॥
सुनि नरेश तब सहित सनेहा * दीन्हे सौंपि सुवन कहियेहा॥
नाथ हाथ धर वन मग जाता * तुमहींहो इनके पितु माता॥
विश्वामित्र लहे दोउ भाई * मानहु रङ्क महानिधि पाई॥

छन्द ॥

मानो महानिधि पाय तब मुनिराय ह्वै संतुष्टजू।
बोले अहो तुम धन्य नृप निज राजनयमें पुष्टजू॥
है अर्थ सब तव सिद्ध याते धर्म रक्षति जो अहो।
पुनि सुखासीन स्वधीन दीनमलीन पथ नाहीं गहो॥
जो पूर्व पितृ पितामहादिक की रही सद्वृत्तिजू।
सो अर्थधर्म सुकाम मे तव भई नहि निरवृत्तिजू॥
मोहि देत रामहि किहेउ कष्ट सो नष्ट पथ नाहीं रहै।
रघुनाथ प्रेम विहीन कौने धर्मफल पायो अहै॥
तुम गहतहौ नहि काल कौन्यो मूढ़ मूढ़नकी दसा।
पल्लवत फूलत फलत सुरसों सर्वरस तुम्हरी रसा॥
सत शौच धीरज दया मृदु तप तोष क्षमा गँभीरहो।
निरमान मति बलवान ज्ञान निधान हर पर पीरहो॥
बशकरन भीति दिखाइ भीरुइ श्रेष्ठहित गहे बिनयहो।
समनूनको करि तेज राखत स्ववश तुम दिन दिन यहो॥
तुम भ्रात पितु गुरु मित्रको रिपु ओर लखि बध करतहौ।
अरिअन्ततक समसन्त सतति वचनप्रिय अनुसरतहौ॥
तुम मारि प्रतिपक्षीन पाछे कृपा करि कृतबोधहौ।
पुनि चपल पथको कर्म लायक देत फल करिशोधहौ॥

विश्वासहूके नरनते नाहिं रहत कबहुँ निशङ्कहौ ।
है जासु नहिं विश्वास तासों सदा शङ्कित अङ्कहौ ॥
जे चारलागक तिन्हैं करिकै चार भेजत देशहौ ।
बहुभेष धरि ते खबरि लावत लखत तेहि तुम बेशहौ ॥
तुम सदा रहत प्रसन्न सबसे निठुर कारज कालहौ ।
करि मन्त्र राखन गुप्त सन्तत सावधान नृपालहौ ॥
तुम जात दीनन दीनपै कृत कार्य रहत न साथहौ ।
निःशेष कार्य न करत परको रखत कछु निज हाथहौ ॥
तुम प्राप्तभयको देखि तासों होन अभय सँहारिहौ ।
जो कार्य आगे होइगो तेहि प्रथम लेत विचारिहौ ॥
पुनि देश काल स्वभाग्य माफिक कार्यमें मन देतहौ ।
करि साधु विप्रन तोष आशिर्वाद तिनसों लेतहौ ॥
तुम त्यागि मत नास्तिकतालस्य लसत आमद खर्चहौ ।
गज अश्व गऊ भट काम कारक आदि स्वरकी अर्चहौ ॥
अस थोर फल बहुविधि सो जानत प्रजनके पुरनामहौ ।
रघुनाथ मालाकार सम तुम करत जगको कामहौ ॥
जल अशन वनपट अस्त्र अनुपम किये बहु अर्जित सहौ ।
हैं भूप जे तव वश्य तिनको सग नित लीन्हे रहौ ॥
निरबन्धु पंगु अनाश्रयिनको करत नित पालन अहौ ।
बुध वेदनन्दनकाभिवादन करत करि लालन चहौ ॥
करलेत अनिकनते तिन्हैं घर कुशल पहुँचावत अहौ ।
रणाङ्गनमें नाहिं गहत लालच चपलता मनमें गहौ ॥
हौ लेत कारज जासुसे तेहि देत संपति भूरिहौ ।
हरिभक्त मन वच कर्म रहत अधर्मते नित दूरिहौ ॥

निज कुटुंब पाल समान सुखप्रद भये सुत निज केहरी ।
हों सकत त्यहि न प्रशसि देत अशीश जीवहु बयचरी ॥
पुत्रन हित कछु शोच न किनका * कोउ न है दुखदायक इनका
सुनिकै सकल मातु अकुलानी * करिहैं विघ्न रामजिय जानी
तुरतै प्रभु निजमाया प्रेरी * त्यहिं तन हरी प्रीति सबकेरी
दुवादशी दिन पारण करिकै * पुरवासिनको धीरन धरिकै
पहिरि बसन भूषण प्रतिअङ्गा * कटि तरकस कर शरशारङ्गा
जननि जनकपद शीश नवाई * पाइ अशीश चले हरषाई
चलन दीन हनुमानैं छोरी * कछु दिनमें बन मिलन बहोरी
कहत सुनत इतिहास हरीका * देख्यो आइ तपोवन नीका
परिवादिवस ताड़का धाई * रामहिं मुनिवर दीन दिखाई
रुकिकै प्रभु अवलोकत नारी * द्विजद्रोही बध दोष न मारी
बैरोचनजा दीरघ जिह्वा * सुरपति त्यहि मार्योलखिलिह्वा
भृगु भामिनि निश्चरहितकारी * नारायण त्यहि आपु सँहारी
परशुराम गञ्जी निज माता * तिमि तुम याहि हतो गतिदाता
गुरु आयसु सुनि नीतिनिधाना * बरजि त्रोणते काढ्यो बाना
दो० कढ़त एक धनु चढ़त दश, कर्षत भे शत बाण ।
तजत सहसतन लाग ह्वै, लक्ष गये त्यहि प्राण ॥
तनु छूटत भै सुन्दर भामा * अस्तुति करत गई हरिधामा
लखि प्रभाव मुनिमाया कीन्हीं * बिद्यानिधिका बिद्या दीन्हीं
ज्यहिते लाग न छुधा पियासा * अस्त्र शस्त्र बिधि तेज प्रकासा
पुनि मुनि ते बोले रघुराई * निरभय यज्ञ करो तुम जाई
आयसु पाइ करन मख लागे * बैठे प्रभु रक्षा हित आगे
खबरि पाइ, सुबाहु मारीचा * धावा बिपुल संग लै नीचा

गीतिकाछन्द ॥

धावा विपुल लै नीच नीचहि राम बिन फर शर हन्यो ।
शत योजनाग्र विचारि कारज पार सागरके गयो ॥
पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु जाग्यो लषण सब सेना हनी ।
हरषे सकल सुर सन्त बरषि प्रसून कहि रघुकुलमनी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्रमनआगरनगउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतविश्वामित्रमखरक्षणंनामषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
अग्निवेशमत कहौं कछु, पद्मपुराण बखानि ॥
करि अविघ्न मख कौशिक गोत. मैथिल दीन असीश ।
रहे तहां निजदूत सुनि, पठयो निरहुत ईश ॥

दूत आइ मुनिवर सुनायो * सहित राम मिथिलेश बुलायो
हेतु समुझि बोले मुनि बाता * देखन चलहु धनुषमख ताता
भले नाथ कहि कृपानिकेता * चले गाधिसुत अनुज समेता
हरि दिन एक शिला लखि पाई * कह मुनि पद प्रभु देहु छुवाई
कारण कौन सकल मुनि बरणी * गौतम श्राप पापरिपु धरणी
एक दिन इन्द्र सुरपति गयेऊ * धर्मनियम घर तिय कहँ चहेऊ
देखत रवि रथ शीघ्रहि बतायो * अधिक अहल्या मुनिहिं भ्रमायो
सुनि मुनिके तपउर तप बानी * गौतमपद वामन रति ठानी
कहेउ नाम छल तुम्हरे गेहा * भवन आय लखि कह रिस देहा
जप मुनिहित तुम जाउ हमारे * इहाँ नारि मन सब तन तुम्हारे
कहेउ अहल्याते पतिरूपा * है सब कह सहीं स्वरूपा
विनय करत आँखे हरिनाथा * तुरत भेंट होइ निरबाधा
रामपुनि सुनि कह मुनि भाखा * धनुभुनि सुनि हर्षि हरि आखा

बहुदिनते पथ लखत बिचारी * सुनि प्रभु पदरज दीनिनिहारी।
परसत चरण भई बर नारी * सन्मुख ह्वै अस्तुति अनुसारी॥

दो० जय जगदीश्वर सर्ब पर, प्रेरक प्रकृति प्रभाव।
अद्वै ब्रह्म अनादि सुर, राम अकाम सुभाव॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद, पुण्य यशाश्रित येषु।
भवधि वत्सपद परम्पद, पद बिपदा नहिं तेषु॥
जे बिषयिक जगजीवन्ध, कर्म क्रिया युत मान।
ताही के मदते छके, मायामोहित ज्ञान॥
ते नर आश्रित होत नहिं, तव पदपङ्कज नाथ।
भूली सुधि शुभ पन्थकी, बिषय कुपन्थ सुहाथ॥

इमि करि बिनय भक्ति बर पाई * हर्ष सहित पतिलोक सिधाई
मुदितसकललखिगतिअभिरामा * जाय गङ्गतट कीन्ह प्रणामा
पूछा प्रभु किमि आई गङ्गा * कौशिकमुनि कह सकल प्रसङ्गा
भूप भगीरथ तप करि लाये * पुरिखा जेहिबिधि स्वर्ग सिधाये
जासु प्रभाव मुनिन बहु गावा * सो इहवांबिनास्त्रयहि नहिपावा
मुनि ससमाज सप्रेम नहाने * स्नान दान भूसुर सनमाने
पुनि सब ऋषिन सहित रघुबीरा * पहुँचे जाइ जनकपुर तीरा

दो० देखे बन उपवन बिबिध, बापी कूप तड़ाग।
मणि सोपान पियूषजल, पान करत श्रम भाग॥
चामीकर घर सबनके, चौहट हाट अनूप।
धनिक बणिक बैठे मनहुं, धनद धरे बहुरूप॥
मिथिलापतिके महलकी, शोभा किमि कहि जात।
जहँ बिहरत श्रीजानकी, अखिल लोककी मात॥
दमयन्ती रति बिधुमती, मातरूप कुहिमात।

लाजत मदन मयङ्कलखि, सीताजूकी मात ॥
रवि ते मखि शशिशम्भुते, ज्यों पावनते गङ्ग ।
लहो अधिकछवि त्यों लही, निमिकुल सोय प्रसङ्ग ॥
जहँ तहँ टिके नरेश बहु, बलवाहन जिन साथ ।
शुचिथा अमलखिमुनिनयुत, उतरे तहँ ऋषिनाथ ॥
सो० खबरि पाइ मिथिलेश, सहित सचिवभट भूरिद्विज ।
आये जहां ऋषेश, नाये मुनिपद शिरसबन ॥
दीन अशीश निकट बैठाये * बूझी कुशल दरश तब पाये
राम लखण कर रूप निहारी * जनकसहित सब भये सुखारी
जोरि पाणि बोले मुनितेरे * नाथ कहो ये सुत किनकेरे
मुनिकुलतिलक किन्नृपकुलजाये * की दोउ ब्रह्मरूप धरि आये
इन्हें देखि मोहि भा सुख जैसा * नहि प्रियलाग ब्रह्मसुख तैसा
की भरि जन्मयोग हम कीन्हा * ताका फल विधिवत बिधि दीन्हा
कह मुनि सत्य कह्यो तुम ताता * ये प्रिय सबै जहांलग गाता
कोशलेश दशरथ बल जाका * जानत दशमुख सुरपुरशाका
तिनके तनय मनोहर चारी * लक्ष्मण राम भरत रिपुआरी
उभयगहे अवधेश निकेता * लायों मागि मिथुन मखहेता
असुर मारि मम यज्ञ कराई * पदपरसत मुनितिय गति पाई
धनुषयज्ञ सुनि तव पुर आये * भले नाथ दृग सफल कराये
निज समाज तें पुनि सुखमानी * गाधितनयकी कथा बखानी
इनकर विभव जात नहिं जाना * तेजपुञ्ज अनिकोश महाना
जासु समुझि तप तेज बिधाना * अजहूं खरत रहत सुरताना
मुनि वशिष्ठके पुत्र अनेका * जिन मारे नहिं छांडे एका
जानिस क्षत्रिकुल भे द्विज वर्णा * सृष्टि दूसरी लागे कर्णा

तपबलते जिन नदी अमाना * करी कौशिकी पुण्य महाना
गो त्रिशंकु करि गुरु अपराधा * दियो शरण ताको निरबाधा
ऐसे जिनके कर्म अनेका * सुनि मुनि बोले सहित बिबेका
दो० एक लोक परलोक नहि, अरु परलोक न लोक।
एक सुखी दोउलोक मे, तिन मा तुम गत शोक ॥
सुनहु भूप सब भूप कहावैं * निजरक्षा कोउ करि न सरावैं
तुम साधे नृप दूनहुं लोका * करतभयो सब प्रजा बिशोका
नाथ कृपा कहि सहित समाजा * आनि उतारे शुभथल राजा
षोडशभांति पूजि सहचेता * हरष सहित तब गये निकेता
दो० पुहर तीसरे कह्यो प्रभु, मुनिपद शीश नवाइ।
लषण दीख चाहत नगर, आवहु तात देखाइ ॥
आयसु पाइ चले दोउ भाई * खबरि सकल पुरबासिन पाई
बालक बृद्ध तरुण नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी
देखैं जब रघुपति बपु आई * अङ्ग अङ्ग प्रति रहे लोभाई
करहिं बात सब आपुस माही * इनसम रूपवन्त कोउ नाहीं
बिधि हरि हरहैं बिश्वबिशाला * ते मुख चारिभुजा बिकराला
मदन अतनु शशि रहत न पूरा * अपर जीव अस कोहै रूरा
कोइ कह धन्य नगर इनकेरा * सतत जहँ ये करत बसेरा
धन्य सकल पुरबासी अहहीं * जब तब जे अवलोकत रहहीं
कोइ कह धन्य मातु जिन जाये * कोइ कह धन्य दरश हमपाये
कोइ कह भागवती नृपजाई * बिधि जमका तस देत मिलाई
कोइ कह अबै कठिन है कामा * कोइ कह धनुष तोरिहैं रामा
कोइ कह ये बालक महि घोरा * देखत छोट अहैं बरजोरा
जिन मग शिला उधारी एका * मखहित मारे असुर अनेका

कोइ कह ऐसहि करै बिधाता * तौ हमका सबका सुखदाता
दो० बाणी रूप अनूपबर, बरण बाम ते बाम।
कहँ बामबिधि बिधि करी, बामदेव अनुबाम॥
कोइ कह इन्हैं भूप जब देखी * तजि प्रण करी बिवाह बिशेखी
कोइ कह प्रथम नरेश निहारे * प्रण नहिं तजी लाजके मारे
कोइ कह धर्म कर्म भल सोई * ज्यहि पाछे पछिताव न होई
कोइ कह मनमें करौ उछाहू * होई राम सियाकर व्याहू
कोइ कह जो बिधिवश असहोई * तौ कृतकृत्य होइ सब कोई
बारबार नृप सुता अैलैहैं * देखन तब जब चालन ऐहैं
कोइ कह हम चाहैं नृप ढोटा * होइ न कबहू नयनन ओटा
कोइ कह भागबड़ी असमाई * सूती मे नहि सिन्धु समाई
जो न होत बड़ि भाग्य हमारी * तौ न मिलत मिथिलापुर प्यारी
दो० फिरकीसी थिरकी फिरैं, खिरकिन प्रति नवनारि।
सिरकिनतजिरघुनाथछबि, निरखै पलक बिसारि॥
जब ज्यहि नयनओट चलिजावैं * भई हानि अस बचन सुनावैं
एक कहै तुम भले निहारे * भइ सखि बैरिनि लाज हमारे
आवत निकट बदन पट दीन्हा * भरि नैनन अवलोकि न लीन्हा
एक कहै बरबस मन मोरा * हरि लीन्हो साँवरो किशोरा
एक कहै अस जगमें काहै * इन्हैं बिलोकत जो न बिमोहै
कोइ कह सत्य बचन सखि तेरे * इन चित चोरि लिये सब केरे
अब पुनि बिधि कब दरश देखाई * रङ्गभूमि फिरि देखन जाई
कोइ कह सपनेकी निधि जानौ * बिन सम्बन्ध बादि सुख मानौ
कोइ कह जो बिधि होहि दाहिन * तौ इनते नहु उबरै चाहिन
नाहित दरश दूरि इनकेरे * अबला बपु कछु होत न हेरे

यहिविधि निजनिजमतिअनुहारी * करें बात जहँ तहँ नरनारी
शोभासागर अनुज समेता * सुलभदरश सब काहुइ देता
रङ्गरास पुनि देख्यो जाई * अति विचित्र रचना मनभाई
बालक जो त्यहि ओर बुलावैं * प्रेमविवश प्रभुत्यहि दिशिजावैं
सबके नाम कहैं मृदुबचना * तुम भलि तात देखायो रचना
दो० जाकी इच्छाते रचत, माया अगड अनेक।
सोप्रभु चितवत चकितचित, भक्तवच्छलहित एक॥
लोचन सबके सुफल करि, लषणसहित रघुनाथ।
उतरे जहँ तहँ आइकै, मुनिपद नायो माथ॥
अर्धनिशा सोये सकल, शौच क्रियाकरि प्रात।
समय पाय आयसु चले, सुमन लेन दोउभ्रात॥
त्रिभङ्गीछन्द॥
पहुँचे नृपबागा सहअनुरागा देखत लागा अतिनीका।
जामें ऋतुराजा सहितसमाजा रहतविराजा नितहीका॥
नानातरु फूले सकलसमूले मधुकरभूले गुंजारैं।
खग विविधकलोलैं जहँतहँ बोलैं जनुनिजटोलैं हकारैं॥
सरमध्यसोहाना मणिसोपाना जलचरनाना कमललसैं।
त्यहितटअतिनीकासवनसतीकाछवि जनजीकाचोरिवसैं॥
अहुत फुलवाई सकलमँझाई पुनि दोउभाई प्रेमपगे।
मालीगणजेता पूछिसचेता मुदित सुमन दल लेनलगे॥
दो० त्यहि अवसर सीता तहाँ, आई सखिन समेत।
मातु पठाई मुदित मन, गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जनकरि सर सखिनयुत, गई गौरि के धाम।
पूजि यथोचित मनहिमन, मांग्यो वर अभिराम॥

सो० एक सखी तजि सङ्ग, देखे बालक आय सोइ।
आई सहित उमङ्ग बूझेते बोलत भई॥
सुनहु सखी यहि बाग मझारा * आये हैं दय सुभग कुमारा
गोरश्याम छबिधाम किशोरा * चितवतचित चोरे जिन मोरा
रूप अनूप सखी किमि भाखी * नैन अबैन बैन बिन आखी
कह्यो एक हैं सखि सोई * जिन मोहे पुरजन सब कोई
बर्णत जहँ तहँ रूप बिशेखी * देखनयोग चलहु सखि देखी
आगेकरि सोइ सखी पियारी * चलीं सकल चहुँ ओर निहारी
बिटप ओट जब देखे जाई * गई अपनपौ सबै भुलाई
बैदेही जब रामहिं देखा * गिरीमूर्छि महि प्रेम बिशेखा
रूपाग्निशिखबिष बिछुरन लागा * जो न गिरै अग तौ नहिं लागा
धरि धीरज तब सखिन उठावा * लेहु देहु नृपसुत सुनि भावा
पुनि सन्मुख दरशे दो भ्राता * सहज सोहावन पावन गाता
दो० शारँगदृग सुखपाणिपद, शारँग कटिवपुधार।
शारँगधर रघुनाथछबि, शारँग मोहनहार॥
अद्भुत छबि देखि हर्षानी * पितुप्रणसमुझिबहुरिपछितानी
सकलसखिननिजमन असचाहा * हठपरिहरि नृपकरै बियाहा
तौ सब के मन होइ अनन्दा * अपर अधिपसँग कारज मन्दा
इत जानकिहि देखि रघुबीरा * बोले लक्ष्मण ते धरि धीरा
दो० तात तकहु छबिराशि यह, जनकसुता है सोइ।
ज्याहि हितधनुमखहोतसुनि, बटुरे नृप सब कोइ॥
जासु अलौकिकरूप लखि, सहज स्वच्छ मन मोर।
भयो छुभितनिज सौचलखि, सो गति जानै कोर॥
कह्यो लषण होतव्य जो, सो प्रथमै दरशात।

करत बात इमि ताततन, मनअटक्यो सियगात ॥
इतैसखिन लखिगहरुनिज, उर हारि मूरति लेखि।
आई गौरि निकेत पुनि, खगमृगमिसिदिशिपेखि॥
यथा पुत्र पितु ओकते, चिन्तामणि म्वहि देह।
दरशै दीरघ धामकहु, फिरि आवै कह येह ॥
कमलछन्द ॥ तिमिसीया। लखिपीया॥हितवर्ण।लगिकर्ण॥
त्रिभङ्गीछन्द ॥ जय जय भव भामिनि त्रिभुवन-स्वामिनि मृगपतिगामिनि ज्ञाननिलं। तड़िताङ्ग अनूपं अद्भुतरूप सुखद्विजभूप पाकद्विलं ॥ भुजचण्डचिकालं भृतकरवाल कृतजनपाल कामप्रद। सुरनरमुनि वन्दनि असुरनिकन्दनि भूधरनन्दनि कूटकृद ॥ जय जलजविलोचनि रतिमदमोचनि परहितशोचनि कक विधे। भव विभवप्रकाशिनि कलिमलनाशिनि स्वयशविलासिनि नीतिनिधे ॥ अतिअमितप्रभावा वेदनगावा तदपि न पावत पारकुत। विघ्नेशषड़ानन ममसतिमानन आधि सिधिशासन नेमयुतं॥ जेजे तवचरणं स्मृतिनिरण तेवर वरणं लब्धफल। पतिपदरतिलागी तियअनुरागी सो बड़भागी होतहलं ॥ अब सोपरदाया चन्सहमाया प्रकट न गायागुणजानी। सुनि इत्थ वचन गौरिसुरचनं बोलो वचनं मृदुबानी ॥
जय जय श्रीमिथिलेश दुलारी * जय जगजननि जनकमनहारी।
जय जगमगत विभूषणचीरा * तड़ित वरण वपुछवि गम्भीरा।
जय जगदुस्तर दरश तुम्हारे * धरि करुणा विचरत नृपद्वारे।
जय भवभय भञ्जनि सुखदैनी * विधि हरि हर वन्दत सुरसैनी।

पारावारपक्षिहुगति जबनाहीं * बिन तव कृपा न लगनै लहहीं
सबके पार वेद नहिं गावैं * सो तव सामरथते कर आवै
विन्ध्यगर्व गत शङ्कर यागा * रामगुरु है पथ बतायो
अस बान दृगपद ते छुन रहेऊ * इमपि अगस्त्य सहिता वहेऊ
हर महतादु दशमुखबाना * ता महिमा नहिं जात बखानी
एक नयन तव कोटिन दासी * लगन निरखि नित करै खवासी
सो तुम मातु जगत मम माहीं * निज जनजानि बड़ाई दीन्ही
चतुर राह चाहै जब जैसा * तब तहं नाच दिखावै तैसा
लहिहै नहि अशीश हमारी * पूजिहि मनकामना तुम्हारी
नारद बचन सदा उर धरेऊ * पाइ परीक्षा पुनि परिहरेऊ
सुनि सिय सकुच सहित उररामी * चली पूजि पुनिगृह अभिलाखी
सोहहिं काल जानि रघुराई * चितचाह हृद लीन बनाई
अनुज सहित आये गुरुपासा * सुमन दीन सबहाल प्रकासा
अर्चन करि मुनि बचन उचारे * होंइ मनोरथ सिद्ध तुम्हारे
सुनि मनमुदित गये दोउभाई * भा गत दिवस निशा तब आई
प्राचीदिशि शशि देखि सोहाना * सियमुखसरिस न पुनि अनुमाना

दो० बढ़त घटत नित मढ़त नभ, छिन मलीन रिपुराहु ।
सियमुखसमकिमिहोइशशि, दीन दुखद सब काहु ॥
गौरिगिरासम कहिय किमि, शैलसुता वाचाल ।
रति अनङ्गपति सिन्धुजा, चपलानुज जेहि काल ॥
छवि पयोधि गिरिप्रेम अहि, सारा सुरसर जोइ ।
हरि मथि काढ़े लक्षि जो, सोउ न सियसम होइ ॥
इहि विधिते अँगअङ्गकी, उपमा करत विचार ।
भई निशा सब नाश पुनि, देखि परा भिनसार ॥

बोले लक्ष्मण ते लखहु, अरुण उदय भे तात ।
काहुहु तौ अतिसुखद है, काहुइ दुखद लखात ॥
सुनि सौमित्र कह्यो, मृदुबानी * प्रभुप्रताप पूषण पर आनी
जिमि रवितम गञ्ज्यो करिदापा * तिमि तवबल बिदली भवचापा
उठिहैं फूलि कमल सब सन्ता * होइहैं पुरजन मुदित अनन्ता
भृगुपति गति मयकद्युति दीना * नृपगण ह्वैहैं नखत -मलीना
खलउलूक दुरिहैं तजि धीरा * ह्वैहैं चक्रवाक- यक तीरा
गूढ़गिरा सुनि प्रभु मुसक्याने * एक दिना बन जाइ नहाने
नित्य नेम करि सहित समाजा * त्यहि क्षण बोलि पठाये राजा
शतानन्द तहँ आइ बखाना * ऋषिनसहित मुनि कीन्ह पयाना
लागे लोग अनेकन सङ्गा * धाये बिपुल प्रथम महिरङ्गा
चहुँदिशि फिरत बिचार समेता * त्यहि अवसर आनन्दनिकेता
रङ्गभूमि आये दोउ भाई * जनु शोभामधि शोभा छाई
जिन जेहिभाति भावना आनी * तिन तस देखे शारँगपानी
योगिन तत्त्व नृपन नृपश्रेष्ठा * बुध बिराट भक्तन निज इष्टा
सुरननाथ असुरन समकाला * शिशुनसुहृदमनसिज बपुवाला
जनक जनकरानिन जामाता * मिथिलापुर बासिन बहुनाता
बैदेही देख्यो ज्यहि भाती * उर अनुभव तिनसो कहिजाती
सबके मन भरोस अस आया * अवशि चाप त्वरिहैं रघुराया
दो० भई भीर अति जनक लखि, सेवक दिये पठाइ ।
यथायोग्य सब काहु तिन, आसन दीन्ह्यो जाइ ॥
रङ्गभूमि मुनिनाथ कहँ, सकल दिखाई भूप ।
बोले कौशिक धन्य नृप, रचना कियो अनूप ॥
सब मञ्चनमें मञ्च यक, अद्भुत बनानि बिशाल ।

त्यहि ऊपर सब मुनिनयुत, बैठाये नरपाल ॥
धनुषध्वंस नभ रङ्गमहि, उडुगणलोग अपार ।
रामलषण गुण चन्द्र सम, ऊगे सभा मँझार ॥
चितवैं सकल रामकी ओरा * जिमिमयङ्कदिशि विपुलचकोरा
कोइकोइ नृपन नृपनते भाषा * चलहुभवन परिहरि अभिलाषा
धनुदलि सिय वरिहैं रघुराई * तुम कत तजिहौ मान बडाई
बिनहु दले पैहैं जयमाला * सुनि बोले तब कुटिल नृपाला
टूटे धनुष कठिन है व्याहू * निनभञ्जे को वरी कुमाहू
कालहु कस न होइ बरजोरा * सियहित समर करब हम घोरा
सुनि बोले तब सज्जन राजा * गाल बजावत तुम्हैं न लाजा
कनक कशिपुरवर नावकबीरा * सहसबाहु मधुकैटभ धीरा
जिनते विजय न काहू पाई * तुम जितिहौ अब बलअधिकाई
परम सुभट अवधेश कुमारा * वरिहैं सिय मथि मान तुम्हारा
जीतनहार न कोउ जग जावा * करैं चहै सो गाल बजावा
जगतपिता रघुपति कहँ जानो * जगजननी जानकिहि पिछानो
त्यहिते दुरबासना नेवारी * भरि लोचन छवि लेहु निहारी
नहिं मानौ तौ खधक जाहू * हमैं मिला नरतन कर लाहू
त्यहि अवसर मिथिलेश पठाये * सभामध्य बन्दीगण आये
भुजउठाइ बोले तहँ दोऊ * सुनहु सुभग नृपकर सबकोऊ
भवन चतुर्दश केर भुवारा * बैठे हैं यहि सभा मँझारा
जो लेई शिवचाप उठाई * सो बर विजयसहित सिय पाई
सुनि हरषे अविवेकी भूपा * कसिकासि कमर चले अहिरूपा
निजनिज इष्ट सुरन शिरनाई * हुमकि धरहिं धनु उठै न गई
बलविवेक गरुआतम शोभा * फिरहिं हारि धनुकरबशलोभा

दो० लज्जितह्वै दशसहसनृप, मिलिकरि किहिनिविचार।
लावहु डारी तोरि धनु, पुनि लखि लेब पछार॥
दश सहस्र यकसग भुवाला * रहे उठाय न नेकहु हाला
हँसन योगभे ते नृप कैसे * बिन बिराग सन्यासी जैसे
जे नृप रहे चतुर मतिधीरा * ते नहिं जायँ शरासन तीरा

गीतिकाछन्द ॥

नहिं जाय ते धनुतीर देखि विदेहबद गह्वर हियो।
सुर नाग नर नृप असुर आये सुनत जो हम प्रण कियो॥
को कहै कर्षनिकेर काहु न अवनि अल्प छोड़ायहू।
बर विजयकीरति कुँवरि पावनहार ब्रह्म न जायहू॥
त्यहिते सकल तजि आश निजनिज भवन गवनहु सबजू।
भटहीन महि कहि अब न कोई बीर ठानै गर्बजू॥
जो बात यह जनत्यो प्रथम तो नेम नहि करत्यों इदं।
किनरहे कुँवरि कुमारि कर्म न धर्म त्यागत कोबिद॥

सुनत बचन पुरजन अकुलाने * सकल सभाके नृप रुकुचाने
शरसम बचन लषणके लागे * बोले उठि रघुपति के आगे
नाथ जनकअति अनुचितभाखी * काहू की कछु कानि न राखी
तेहिते जो तव आयसु पावों * तो इनको बांगता देखावों
कन्दुकइव कर गहि ब्रह्मण्डा * धनुष समेत करहुं शतखण्डा
नाथ शपथ जो अस नहिं करहू * तो फिरि हाथ न धनुशर धरहू

दो० याहिप्रकार के बचन जब, बोले लषण सरोष।
डगमगानि महिकुधरसुनि. पायो सुर मुनि तोष॥
जनमन मुदित जनक सकुचाने * सिय समेत पुरजन हरषाने

सैनन प्रभु अनुजहि चुपवावा * सहित सनेह निकट बैठावा
तब बोले ऋषि प्रभुते वाता * अब उठि शिवधनु तोरहु ताता
उठे तुरत गुरु आयसु पाई * सहज स्वभाव चले शिरनाई
हरषे सुनि मुनिजन प्रभुकेरे * देखि विदेह कही ऋषि तेरे
नाथ रामजीते मनलोभा * त्यहिते भई अधिक तन शोभा
धनुके कर्षण योग न आहीं * बरजिलेहु त्यहिते जनि जाहीं
भूप करहु मति बिस्मय कोई * इनते कठिन कोदण्ड न होई
रामहिं चितै जनककी रानी * बोलीं बिलखि सखिनते बानी
देखो सखि यहि सभा मझारा * बैठे हैं बुधिमन्त अपारा
यहि अवसर सबकी मति खोई * उठि रघुपतिहि न बरजत कोई
गरुव कठोर कहा शिवचापा * हारे सकल भूप करि दापा
त्यहि हित अब बालकै पठावैं * हंस सुवन कहुं मेरु उठावैं
सुनि बोली गुरुतिय तिनपाहीं * तेजवंत लघु गने न जाहीं
कहँ पावक बन दहत प्रचण्डा * कहँ बामन नाप्यो ब्रह्मण्डा
कहँ रवि कहँ तम तोम बिनासै * कहँ आंकुश कहँ करिहि त्रासै
प्रणव मन्त्र यक अक्षर जाके * बिधि हरिहर सुर सब बश ताके
भृगुसुत च्यवन पेटते कढ़िकै * असुर पुलोमहि जारो बढ़िकै
बालखिल्य अंगुष्ठ प्रमाना * सुरपतिको मर्यो तिन माना
जिमि कुम्भज दधिपानपिआनो * त्यहिबिधितुम धनुरामहि जानो
सुनि भरोस रानी मन आवा * तब तहँ लखि सीता दुख पावा
कमठ पृष्ठ सम धनुष कठोरा * कहँ सांवल मृदुगात किशोरा
प्रथम जाइ धीरज उर आना * कहत तात प्रण दारुण ठाना
हे गणेश गिरिजा गिरिराई * राम भंजनपर होउ सहाई
हे पिनाक तन काज निशेखी * होउ हलुक रघुपतितन देखी

दो० जो हमरे मन क्रम वचन, गति न अपर सुरकेरि ।
तौ करिहैं भगवान म्वहिं, रघुनन्दन की चेरि ॥
इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतरामरङ्गभूमिआगमनोनामसप्तमोऽध्याय ॥ ७॥
दो० वेदनसुख रघुनाथ सुनि, करी निवेदन देह ।
बेदन मग भेदनकरौं, जो बेदनसों नेह ॥
जो निज चेरि करब प्रभु नाहीं * तौ तजि तनु मिलिहौं तुमकाहीं
यहिबिधि सियप्रणकीन्ह्योजवहीं * धनु दिशि प्रभु अवलोके तवहीं
लषण लख्यो अब चाहत तोरा * दिये सजगकरि कुधर कठोरा
आपु चापि महि व्योम सुहावा * तब रघुपति हरचाप उठावा
प्रथमसोशशिमण्डलसमभयऊ * पुनि त्यहि तीनिखण्ड ह्वै गयऊ
एक गयो नभ एक पताला * एक गिर्‌यो त्यहि ठौर कराला
गहत उठावत तोरत माहीं * रहे सब ठाढ लखा कोउ नाहीं
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू * पलमा करे निरव चहु नासू
पाछे तासु भई धुनि घोरा * रह्यो पूरि त्रिभुवनमहं शोरा
गडगडान गिरि तरुमहि खसेऊ * कमठकोल अहिपति कसमसेऊ
दिग्गज गिरन भिरन नभलागे * सुरविमान रवि चलत न आगे
चपिगे महि लखि सकलभुवारा * जनकहृदय सुख भयो अपारा
हरषे सब पुरजन नरनारी * सियहिय भा अतिआनद भारी
जय जय जय कहि सुरसमुदाई * बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
तब बिदेह रामहिं सह प्यारा * सिंहासन ऊपर बैठारा
पुनि तहं तनया बोलि पठाई * सखिन समेत सभामहं आई
पहिरे वसन विभूषण नाना * दहिने कर जयमाल सोहाना
सियशोभालखिनरुलभुवाला * भये अपनपो रहित बिहाला

रामै चकृत चितव वैदेही * कहा गये मम परमसनेही
रघुपति ढिग लिनइ सहेली * देहुमाल प्रीतम उरमेली
प्रभुछविलखि सियकङ्कनमाही * रही टेकि कर टारत नाही
धरि धीरज पुनि माल उठाई * सकुच सहित हरिउर पहिराई
देखि देखि रघुपति उरमाला * सुर नर मुनि सब भये निहाला
पुनि सियकर गहि कञ्चनथारी * हर्ष सहित आरती उतारी
सखिन कह्योपतिपद गहु बाला * छुवत न मुनिगुनि नियकरहाला
दो० पहिरे कर नवरत्न प्रिय, तियभय धरत न हाथ।
प्रीतिअलौकिकसमुझिके, मन विहँसे रघुनाथ॥
सखिनसहित पुनि चली निकेता * तब सब भूपनके गा चेता
कुटिल महीप श्वान ज्यों जागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे
कोइ कह सियहि लेहु छिनाई * कोइ कह धरि मारो दोउभाई
जो विदेह बाजे कछु लेशा * लेहु लूटि तिनहू कर देशा
सुनि अनन्त वरिसारिसमनकहीं * सांगम बन्धुभयबोलि न सकहीं
बोले तब नृप साधु सयाने * समुझि बुझि मति होउ अयाने
जो लक्षमण सुनि पैहैं कबहीं * भये न रहौ मनो तुम तबहीं
दो० वारण ते वारण कहू, होइ जु वारण नाहि।
सांगोवारण बचन रिपु, इन्ह सुवारणमाहिं॥
छवि दिमाकबल बांकपन, मानसहित तवनाक।
कीन्ही नाग अनागहीं, उंके हाक पिनाक॥
त्यहिते तजि कटुबचन उछाहू * देखो राम सियाकर ब्याहू
यहि बिधि बादै बिपुल नृपाला * अब सुनु परशुरामपर हाला
शो० छं०। गाधिराजकी सुता रूपकेशी अस नामा।
भृगुसुत ऋचि कहँ गाइ अरबदेवरी ललामा॥

भृगु बोले वर मागु उभयसुत दीजै देवा ।
यक छम का यक पितहि भले करि यश करेवा॥
हवि कर करि द्वै भाग कह्यो याको तुमखायो।
छोइं सुत द्विज प्रकृति मातुके नृपगुणगायो॥
देत भागगा बदलि बहुरि तपसी वर माग्यो ।
सोई भये जमदग्नि जननिके कौसल राग्यो ॥
तिनको सदल वशिष्ठजेवायो नन्द निवलते।
गो मागतने हारि भयो तापस त्यहि चलते॥
तप प्रभाव ऋषिराव ऋषिनमें प्रकट कहाये ।
रच्यो स्वर्ग मखहेतु मागि रम्भ जे लाये ॥
जमदग्निहि परसेन रेणुकासुता विवाही ।
भेसुतशरमें बडे परशुधर विष्णु कलाही ॥
यकदिन तिनकी मातु चित्रसेनहिलखिमोही।
कह्यो पिता शिरकाटु केहू नहिं काट्यो वोही ॥
होउ सकल जडरूप रामसुनि शीशनिपाता ।
बरलै चेतन बन्धुकरे उथाई पुनि माता ॥
यकदिन सहजसुभाय हरीगोरास हत्योत्यहि।
पितुअरिभोसुत तासुतेहीतेविपुल बारमहि ॥
विनु क्षत्रिनके करीबरी विप्रनकहँ सोई ।
रहि महीन्द्रगिरि मध्यसिन्धुतेसनतचलोई॥

इत नृप मृढनकी गलमदरी * मिटन न पाई जबतक सगरी
यहि अवसर आये भृगुनाथा * लीन्हे धनुशर फरसा हाथा
गौरवर्ण शिर जटा विशाला * अरुण नयनउर तुलसिकमाला
सहजहु चितवें जासु कि ओरा * सो जाने जिव लीन्हेसि मोरा

जहँ तहँ देखि देखि नृप भाजे * बहुतेन रूप नारि के साजे
बहुत सभय चरणन शिर नावैं * पिता सहित निजनाम बतावैं
जनक सहित सिय नायो शीशा * भृगुनन्दनलखि दीन अशीशा
कौशिक ऋषि लै दोनो भाई * मुनि पद मेले नाम बताई
रामहि देखि रहे ठगि ऐसे * बोले पुनि अनजानत जैसे
जनक पुरी केहि हेत समाजा * सीय स्वयम्बर है महराजा
आगे धनुष टूट महि देखा * बोले तब करि क्रोध विशेखा

छप्पय ॥

रे जड़ जनक बताउ धनुष कौने यह तोरा ।
सो तजि सपदि समाज निकसि आवै मम ओरा ॥
नाहिंत नृप सब मारि देश सब चौपट करिहौं ।
तीनिलोकमें ढूढ़ि तासु करमद सहरिहौं ॥
सुनि बिलखे पुरनारिनर हरखे कुटिल नरेश सब ।
हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्रीरघुनाथ तब ॥
सुनहु नाथ सब साथ प्रबल भावी लखि परई ।
जो कृत तिनके कुलिश कुलिश तिनकासम करई ॥
कहा शम्भु कोदण्ड कहा हम बालक बारे ।
होनहारकर रोष दोष शिर परयो हमारे ॥
यथा तारफल पाकिकै पतित होत खगनाम भव ।
जो भावै सो कीजिये सब प्रकार हम दास तव ॥
सुनहु राम सोइ दास सदा जो सेवा ठानै ।
करै शत्रुकर काम ताहि को दास बखानै ॥
त्यहिते हरकोदण्ड आजु जेहिं खण्डा होई ।
सहस्रबाहुसम समुझि तासु गति करिहौं सोई ॥

भृगुपतिकेर स्वभावसुनि भई सिया अतिशोचवसं।
तब तिनते मुसक्याइकै बोले लषण कुमार अस॥
सुनहु विप्र पनबाल बहुत धनुही हम तोरी।
तब न किहेउ रिस कबहुँ आजु केहिहेतु न थोरी॥
तव जननीकर पाप पाप त्रिपुरासुरकेरा।
अपर नृपनकर पाप चापचित चेति सवेरा॥
रघुपतिभुज तीरथविषे तजेसि प्राण रतिहेतु त्यहिं।
बिनसमुझे रघुनाथपर करत रोष परितोष नहिं॥
रे बालक मतिमन्द मोहि तू ज्ञान सिखावत।
सब धनुहिनकी सरिस शम्भु कोदण्ड बतावत॥
सहित रामसिय तोहिं येदि बन माझ जरैहौं।
नृप दशरत्थै मारि सकल पुरननहि रोवैहौं॥
सरते भूतल तोपिकै बहुरि तपैहौं तापबहु।
जो न करहुँ अस शिवशपथ तौ न कहावौं नामयहु॥
सुनि बोले पुनि लषण नृपा कत मारत गालै।
ईश चहै सो करै अपरते रोम न हालै॥
सब धनु एक समान कौन यामें अधिकाई।
छुवतै टूट पुरान घुनन डारा रहै खाई॥
जो नहिं प्रिय यह नामतौ लीजै अपर धराइ मुनि।
विप्रनकी कछु कमी नहि सुनि बोले भृगुनाथ पुनि॥
रे नृपबालक मन्द देखु परशा की ओरा।
ज्यहितें बधि बहु भूप छीनि छोनी बरजोरा॥
को जानै केबार सौंपि विप्रन कहं दीन्ही।
तोको बालक समुझि ढील इतनी हम कीन्ही॥

अबते परख प्रभाव मग यमजनि पितर शोवाउ निज।
नाहित डरिहौं मारि फिरि निपटहि जान न मोहिद्विज॥
हे मुनि कत हरबार देखावत मोहिं कुठारी।
फूंकनते तृण उडत उडत नहि भूधर भारी॥
जो तुम होतिउ सुभट तदपि हमरे कुल माहीं।
बिप्र धेनु सुर साधु लरत इनते कोइ नाहीं॥
बधे-पाप हारे अयश सब बिधि भला जो खाइ राम।
अस बिचारि मन मारि सब सहियतहैं कटुवचन हम॥
गाधिसुवन सुनि लेहु अहै या बालक खोटा।
जान चहत यमलोक ललित परिहरि निज जोटा॥
त्यहिते लीजै बरजि कछुक कहि सुयश हमारा।
नाहित सबके अछत आजु खल जाई मारा॥
कौशिक समुझ्यो मनविषे मुनि जानतहैं बाल ये।
अस न विचारत जगतपति हैं कालहुके काल ये॥
हँसि बोले पुनि लषण सुनत मुनि सुयश तुम्हारा।
तुम्हैं अछत को कहै अहै अस को सरतारा॥
जो न एक मुख चुके करो दशबीस मंजूरा।
ज्यहिते सब सुनि लेई सपदि ह्वै जावै पूरा॥
शूर न बरणत शूरता कादर करत कलाप घर।
समुझि परत म्वहि कछुक दिन कीन सरहँगी आपवर॥
सुनि लक्ष्मणके बचन जनक मनमाहि डेराहीं।
पुरवासी ह्वै बिकल बदै आपुसके माहीं॥
देखौ, भूपकिशोर गोर जेतनाहै छोटा।
तेतनो खोट लखात डरत नहिं मनकर मोटा॥

भृगुनन्दन करि कोप तब परशु सुधारेउ हाथ गहि।
रे बालक करु समर इत नाहित धरु धनुवाण महि॥
कहँ अनन्त यहिभांति हमें जो अपर प्रचारत।
तौ फिर दिखल्यो समर चहै सो ह्वैमा हारत॥
पूजेपर रिसकैर गुरू करपद लोपै पुनि।
पदपरिरोपै पांव नीचके करम मिट सुनि॥
बोले बिश्वामित्र तब क्षमहु जानि अज्ञानजू।
बालकके गुण दोष दोउ गनत न जे बुधिमानजू॥
सुनि बोले भृगुनाथ याहि जो अबतक राखा।
सो सब शील तुम्हार भारतेकीन न माखा॥
नाहित काटि कुठार उऋण होतउं गुरु तेरे।
तब मनमें सुख होत शोक मिटते उर केरे॥
गाधिसुवन मनमें कह्यो मुनि सम प्रज्ञ न आनकोउ।
इन्हें बिचारत खाड़मय अयसय जानत नाहिं दोउ॥
कहेउ लषण पितकेर करज जननी शिर दीन्हेउ।
गुरुकर ऋण रहिगयो चहत हमते सो लीन्हेउ॥
गये बहुत दिन बीति व्याज बढ़िगा बहु भाई।
लीजे व्योहरु बोलि तुरत मैं देहुं गनाई॥
चरहिसकतकरि अचर प्रभु अचरहि जो करि देत चर।
तासु अनुज पर परशुधर कसे सकें चलाइ कर॥
सुनो जनक मुखतनक अहै बालक कटुवादी।
मरन कहत मम हाथ चहत नहि देखन शादी॥
वेगि करो रगयोट चहौ जो याहि बचावा।
पाछे दिहेउ न दोष काल याकर चलिआवा॥

परम कठिन मम नाम सुनि गर्भ स्रवैं नृपरवनि सब।
ताहि जरावत जन्तु जड सुनि बोले हँसि लषण तब॥
सुनो विप्र जो तुम्हें नीक उतसाह न लागे।
तौ लीजै दृग मूंदि देखि श्रोह परे न श्रागे॥
नाहित बन भजि जाहु बोलि पठवा नहिं काहू।
जरत होय जो गात पैठि जलमाभ नहाहू॥
वैदहि बोलि देखाइये ज्वरकर होइ न दोष उर।
सुनि कोपे भृगुनाथ श्रति डरे नारि नर जानि फुर॥
लखि बोले तब राम कामहौ नाथ बिगारा।
मोपर कीजै रोष दोष बिन बालक बारा॥
देखि धरे धनुबाण कहिसि कटुजात सुभायन।
जो श्रौत्यो मुनिवेष परत प्रमुदित तव पायन॥
हमरे कुलकी रीति यह कालहु ते नाही डरैं।
क्षमहु चूक श्रनजानकी सन्त सदा दाया करैं॥
सुनि बोले भृगुनाथ राम रिस जावै कैसे।
श्रवहूं तक तव बन्धु बिलोकत टक्कर जैसे॥
जो न याहि फल दीन कीन करि रोष कहा हम।
गर्भ स्रवं नृपनारि निकट ठाढ़ो बैरी मम॥
बहत न करबर दहत तनु कटु कुठार कुण्ठित भयो।
किधौं बसी करुणा हिये की स्वभाव सो फिरि गयो॥
सुनि बोले पुनि लषण नाथ मैं दास तुम्हारा।
टूट धनुष नहि जुरी किहे रिस बारहिबारा॥
जो अतिशय प्रिय होय कछुक तौ करिय उपाई।
बोलि गुणी द्वैचारि बहुरि दीजै जोरवाई॥

बैठि जाहु करि कृपा अब पायँन के रिपु होउ जनि।
नयन तरेरे राम तब गे गुरुपहँ तजि कटुवकनि ॥
सुनि भृगुपति तब कोपि बचन रघुपतिते भाखा।
इत शठ विनवत मोहि भुरै उत सोदर राखा ॥
करु मम सन्मुख समर नतौ त्वहिं डरिहौं मारी।
निपटै विप्र न जानु अहौ मैं रिपुमदहारी ॥
धनुपतोरि अहमिति भई मानहुँ जीत्यो जगत सब।
सो तव अकड मिटाइहौ मुनि बोले रघुनाथ तब ॥
हे मुनि कहौं विचारि वढ़ौ जनि अब अधिकाई।
जो हम निदरब विप्र अरर को शीश नवाई ॥
परसत टूट पिनाक करव हम मद क्यहि हेता।
स्वामिहि सेवक समर कहाँ कस हेत निकेता ॥
यह प्रभुता प्रभु वशकी अभय होय तुमते डरै।
गूढ़ गिरा सुनि रामकी भयो ज्ञान परशाधरै ॥
तब बोले हे राम धनुप श्रीपतिकर येहू।
आकर्पहु गहि पाणि मिटै जेहि मम सन्देहू ॥
छुवते चढ्यो पिनाक देखि भृगुपति पछिताने।
मारहु ममगति कूट छूट शर सकल नशाने ॥
जान्यहु रामप्रभाव तब पुलकि गात युगजोरिकर।
लागे पुनि अस्तुति करन जय रघुकुलमणि मानहर ॥
जय जगदीश दयाल जयति सुर द्विज प्रतिपालक।
जय मुनि मानस हस जयति तमचर कुलघालक ॥
जय शोभा सुखसिन्धु जयति करुणा गुणआगर।
जय बल विपुल वितंस जयति रघुवंशउजागर ॥

जब जग यावत जीवकी तवपद प्रीति न होइहै।
तावत संसृत शोकते छूटि न सुखमें सोइहै॥
दो० जो मैं अनजाने कहा, सो क्षमियो दोउ भ्रात।
असकहिशीशनवाइमुनि, मुदित भये बन जात॥
हरषे लखि पुरलोग सब, बरषे खेचर फूल।
बाजेबाजन विविधबिधि, भाजे प्रति अनुकूल॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतपरशुरामगमनयात्रावर्णनोनाम
अष्टमोऽध्याय॥ ८॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
बरणौं मानस मत कछुक, नाटक चरित बखानि॥
तब विदेह मुनिते कह्यो, होय जो आयसु नाथ।
करौं सो सुनि कहगाधिसुत, भयो ब्याहु धनुहाथ॥
हरिगीतिकाछन्द॥
भयो ब्याह यद्यपि साथ धनुके तदपि दूत पठाइकै।
लीजै दशरथहि बोलि सहित बरात ब्याहैं आइकै॥
भलदेव कहि लिखि भेव दीन्ह्यो पत्रलै धावन चले।
कार्त्तिकबदी प्रतिपदा दिन लिय बोलि कारीगर भले॥
तिनते कह्यो पुर सकल साजहु सुभग भवन वितानजू।
शिरराखि मनअभिलाष लागे करनगणिनिरमानजू॥
बिरचे कनकमय रम्भ खम्भ अचम्भ मरुमणिपातजू।
तिमिथवरिधनिफणिग्रोहिलोहितसुमनमञ्जुलखातजू॥
सुर चित्र मित्र सरोजधारे द्रव्य कलि अलि धेनुजू।
असतार बन्दनवार मुक्ताहार हरित सुवेनुजू॥

चहुँओर दीपअजोर कुल किरिगुलिक चौक पुराय्हू।
ध्वज कलश चामर छत्र सौरभ परिसतरण तुरायहू॥
दो० जिमि सुरगत सोपानमणि, जटित लसे दिशिचारि।
बिधिवतकीन बितानतिमि, तिष्ठनहित नर नारि॥
कहँतक कहौं तहाकी सामा * जहँ दुलहिनि दूलह सियरामा
नृप गृह सरिस सवन निज साजे * शोभा निरखि देवपति लाजे
बसत लखि जहँ कपट सरूपा * तहँकर बिभव कि जाइ निरूपा
कोसलनगर सकल नरनारी * रामलषण बिन रहे दुखारी
कौसल्यादि कहैं नृपरानी * बीर जननि सुत बादि बियानी
राजहु के रहैं प्रिय अधिकारी * मुनि लेगयो ठगोरिसि डारी
तबते मिली न खबरि यथारथ * दलनदोष दुखप्रद परमारथ
यकुतो बन पुनि अनुगण लीन्हे * ऋषिप्रसन्नहित हमहु न दीन्हे
क्यहि पठई जो खबरि लयावे * मे दिन बहु अब कछू न भावै
त्यहि क्षण दूत अवधपुर आये * फणिदिनशुनि नृपनिरटेनुलाये
करि प्रणाम पाती तिन दीनी * लागे पढन प्रेम रस भीनी

चौबोलाछन्द॥

स्वस्ति श्री श्रीपत्री शुभ अस्थानजी।
कोशलपुरधुर, पहुंचे नृप करकानजी॥
लिखी बिदेहनगर ते बिश्वामित्रकी।
मिलि बाचने अशीष सहित सुर पितृकी॥
कुशलक्षेम तव तनय अहैं ममनाथजू।
तिनहू केर प्रणाम चरण धरि माथजू॥
रौरे पुण्य प्रताप अचल मख मग्न करी।
तारिनि पद रज डारि अहल्या अघभरी॥

मनुपयहु पुर जनक जुरे नृप भूरिजू।
गजहय पङ्कज राम सों डाख्यो तूरिजू॥
सीताहू जयमाल तिन्हैं पहिरायहू।
भृगुपति करि अभिवादन वनहिं सिधायहू॥
अब शुभ साजि बरात आइ सुत परणिये।
सुनि नृप मुद यश रह्यो सो कैसे बरणिये॥
जिमि काहू के क्षेत्र छीन सब लैलये।
है प्रसन्न तिन सहित ग्राम कैयो दये॥
धरि धीरज पुनि कह्यो जनक कैसे लखे।
महाराज कहुँ छिपत कुमुद पङ्कज सखे॥
सुनत भरत रिपुदवन दौरि आये तहाँ।
पूछत प्रिय दोउ बन्धु कुशलयुत हैं कहाँ॥
तब भूपति पत्रिका दई सो बाँचेऊ।
भये प्रफुल्लित गात अधिक सुख साचेऊ॥
लगे निछावरि देन मुकुर कानन दये।
लखि ममोद नृप सचिवसहित गुरुपहँ गये॥
दो० दीन पत्रिका वन्दिपद, वार्ता मुनि सहमोद।
कह्योकि सुकृती नरनकहँ, अवनि अम्बकी गोद॥
जिमि सब सरिता सिन्धु मँ, जाहियदपिअनयास।
तिमि सुख सम्पति आवहीं, धर्मवान के पास॥
तुमसम सुकृती पुरुष को, भयो अपर तनु धारि।
राम सरिस सुत जासु युग, कौसल्यासी नारि॥
सपदि सजाइ बरात वर, चलहु भलो कहि तत्र।
पुनि आये रनिवास सब, बाँचि सुनायो पत्र॥

भई मुदित रानी सकल, दीन्हिनि विप्रन दान।
पुरबासिनके हरष सुख, को करि सकै बखान॥
छ० करिसकै कौन बखान सरिसबिमान गृह सबहिन सजे।
रचना अलौकिक देखि निज चितलेखि चतुरानन लजे॥
नृपधाम अति अभिराम तामधि बन्यो दिव्य वितानजू।
बिधुबदनि शोभा सदनि सुन्दरि करहिं मङ्गल गानजू॥
कतहूं पढ़ैं बटु वेद कतहू बन्दिगण विरदावली।
कतहू टिके अवनीप आये नेवत नृत्य करावली॥
देखत फिरैं पुरलोग बन्दनयोग सुरमुनि गातको।
तब अवधनाथ बोलाइ सचिवन कह्यो सजो बरातको॥
त्रि० दीन्ह्योजबआयसुमन्त्रिनकायसुपायरजायसुसबधाये।
लागेहरषातहि सजनबरातहि घरणिनजातहिजोल्याये॥
कुअर बहुकारे बड़मतवारे परे पहारे लकलफैं।
गजघटा जो थाजैं जनुघनगाजैं अतिछबिछाजैं धकधकैं॥
कञ्चनकीढारी फरीश्रॅंबारी मणिमयसारी पैंचरङ्गी।
बैठे तिनमाहीं नृपहरषाहीं टेलि लजाहीं निरखङ्गी॥
बरबाजिअनेका एकतेएका चलनिबिबेका जिनमाहीं।
कबरे कोछकारे श्वेत ललारे विविधगेवारे टहनाहीं॥
छमछममछमकैं छुवतिचमकैं फरकिभमकैं पगभूमैं।
भरतादिनबीले कुँवरछबीले धनुशरकीले चढ़िघूमैं॥
गजरथ बहुतेरे अश्वनकेरे वृषभ घनेरे अति सोहैं।
सुखपाल अपारा शुतरसवारा परे बहारा मनमोहैं॥
भालेबरछारे कौंदिनवारे अनगिनतभारे फूलनाईं।
लीन्हेंबहुताजी घातहबाजी निपुणसमाजी गुणगाईं॥

सुन्दरचौपाला एकविशाला जलजप्रवाला मणिनमयो।
तामध्य विराजैं बालकछाजैं चमरढराजैं इतउतयो॥
बाजैंबहुबाजन विविधअवाजन अाछिकताजनपैधमकैं।
बांधेहथियारा वीरअपारा तुपकतयारा असिचमकैं॥
पंकवान मिठाई रुचिर बनाई शकट लदाई निजसङ्गा।
चोपै समियाना तम्बूनाना छकडनपाना अरुभङ्गा॥
रेशमगलीचा दीरघबीचा छकड़न बीचा लदवाये।
कञ्चनके थैला अतरभरैला सुमन सजैला बँधवाये॥
धनविपुलसँदूखन भेरविभूषण वसनअदूषन अतिनीके।
अप्सराअनेका नृत्यकरैका भांडभदेका दृढजीके॥
यहिभांति बराता सजिभे ताता चलीसमातानहिमगमें।
सुनिसुनिनरधावहिदेखनआवहिंशशिनवावहिंनृपमनमें॥
भयेसगुनअनन्ताहितभगवन्ता सुरमुनिसन्तातिनमाहीं।
गुरुसहितनरेशा मनहुंसुरेशा लसतविशेषा लघु नाहीं॥
क० ॥ करत बरातको पयान नरनाह जब, सुरगण आसमान देखत नहारहैं। खेढकोटिहैं मतङ्ग औ तुरङ्ग तीसकोटि, पालकी पचीसकोटि पैदर अपारहैं॥ भारघरदार सवासातकोटि ऊंटजाति, सेवक समूह पांचकोटि बाजदारहैं। रथ सवातीनकोटि दशरथरायजीके, साठि लाखनौहजार खाड़िया सवारहैं॥
दो० जहँतहँ करत निवास मग, पहुँचे पुर मिथिलेश।
लेन चले अगवान सुनि, साजि समाज सुवेश॥
कनक कलश कोपरन भरि, भोजन विविधप्रकार।
दधि चूरा भूषण बसन, लैलै चले कहार॥

बर बरात अगवानिन देखी * इत उत भये अनन्द बिशेखी
हर्षि परस्पर भे यकमेला * पुनि कछु दूरि चले बनमेला
जनु पश्चिम पर सागर भागी * आवत ताहि चला लैटारी
सकल सौंज नृप आगे कीन्ही * लीन्ही हर्षि याचकन दीन्ही
पूजन करि सबभाति सुहावा * जनवासे महँ आनि टिकावा
सुनि सिय सिद्धिनसकल बुलाई * भूप पहुनई करन पठाई
सुरपुरके जे भोग बिलासा * दिये पूरि तिन सबके पासा
सिय प्रभुता रामहि लखि पाई * अपर जनककी करैं बड़ाई
पितुआगमन जानि दोउ भाई * मुनिवर संग चले हरषाई
आये जहं जनवासे भूपा * चले बिलोकि तृषित जनु कूपा
कीन प्रणाम मुनिपद धरिशीशा * नृपहि गाधिसुत दीन अशीशा
पुनि पितु चरण परे दोउभाई * मुदित भूप उर लिये लगाई
बिप्रन सहित बशिष्ठहि बन्दे * पाइ अशीश भये आनन्दे
भरत सबन्धु मिले सुखमानी * सकल समाज भेटि हरषानी
कुशलप्रश्नकहि तिष्ठत भयऊ * सहित देव जनु मन्दिर नयऊ
नाकनटी नृत्यहि करि गाना * कौतुक करहिं बिदूषक नाना
भूप निकट सोहैं सुत चारी * मुदित भये लखि पुरनरनारी
बिधिके बेद भये कोउ कहई * अपर बदैं अब आगे अहई
दहिने दिशिहैं लक्ष्मण रामा * बायें भरत शत्रुहन नामा
धन्य भूप भल देव मनाये * जो सुत चारि मनोहर पाये
धन्य बिदेह सुनयना दोऊ * धन्य सुनासुत हम सब कोऊ
जिन सियसहित सुवन चहुहेरे * पुनि देखब बिवाह इन केरे
दो० उनतालिस दिन लगनते, आई प्रथम बरात।
रयहिते पुर आनन्दअति, सकललोग हरषात॥

निमिते विनय करैं महिभार्ता * देहु बढाय दिवस अरु राती
गये बीति बासर यहि भाता * लग्नकेर दिन जादिन आवा
हिमऋतु मार्गमास सुखमूला * ग्रह तिथि नखत योग अनुकूला
लगन शोधि विधि नारद हाथा * पठै दीन जहँ तिरहुत नाथा
गनी जनकके गणकन खोली * हर्षि कही तिन अहै अमोली
सुनि विदेह बोले सुख पाई * अवधपतिहि लै आवहु जाई
शतानन्द तब साजि समाजा * आये जहँ जनवासे राजा
कोसलेशकर विभव विलोका * अतिलघुलाग तिन्हैं सुरलोका
भयो समय पग धरिये नाथा * साजि समाज चले तिनसाथा
लखि सुरसकल सुमन बरषाये * चढिचढि यान जनकपुर आये
पुरशोभा लखि देव लुभाने * निज निजलोक सबन लघुजाने
विधिहि भयो अचरज अतिभारी * निजकरणी नहि कतहु निहारी
शम्भु कहेउ जनि भर्म भुलाहू * देखहु रामसियाकर ब्याहू
जासु किये हम तुम सबकोई * यहि पुर आजु विराजत सोई
सुनिसुरवचनसुखलह्यो विधाता * आगे दीख दशरथ जाता
सबन बीच नृप सोहत कैसे * अमरन मध्य अमरपति जैसे
चढे तुरग तरवरन माहीं * निधिकर कनक लुटावत जाहीं
चौपाले मधि रघुपति सोहैं * विधिहरिहर सुर देखि विमोहैं
विष्णु विरंचिहिं विधिभव सराहैं * बसुटगलखि दिशासुरमुनिकाहैं
बड़भागीभे चक्षु हजारा * असकहि मिले बरात मझारा
रामहि देखि नगर नरनारी * करहि आरती हाथ पसारी
आवत जानि बरात सुनयना * लागीसाज सजावन अयना
विबुध बधू धरि कपट स्वरूपा * मिली आय रनिवास भूपा
देखि सबन सनमान्यो रानी * चीन्हे बिना प्राणसम जानी

समय समुझि सब सखिनसमेता * चली मुदित बर परछनहेता
गावैं गीत मनोहर नाना * सुनि छूटें तपसिन के ध्याना
दुलहे देखि अधिक हरषानी * भई प्रेमवश प्रफुलित रानी
लोकबेद विधि करि सुखपाई * अर्घ्य देत तर मण्डप लाई
प्रीतिसहित आसन बैठारी * कनकथार आरती उतारी
मणिमयमाण्डव छबियहि भाती * दीपपरी तह अगणित बाती
भूषण बसन निछावरि करहीं * याचक पाइ मोद उर भरहीं
मिले मुदितमन समधी दोऊ * सो उपमा कहि सकै न कोऊ
देत पावडे अर्घ्य सुहाये * सादर जनक मण्डपै ल्याये
आसन दीन्ह सबहिं सनमानी * पूजे विप्रवृन्द मुनिज्ञानी
सहित बरात दशरथै पूजा * मानि ईशसम भाव न दूजा
रामचन्द्र मुखचन्द्र सुहाना * चितवैं सकल चकोर समाना
समय समुझि बोले ऋषिराई * वेगि कुवँरि अब आनहु जाई
सुनि उपरोहित की बर बानी * चलीं सियै लै सखी सयानी
पदकसना रमना रव छाई * मनहुँ मदन मोहनी सुहाई
चन्द्रमुखी तडि इव मृगनयनी * सकल मनोहर कोकिलबयनी
सियशोभा नहिं जाइ बखानी * जगदम्बिका रूप गुणखानी
आवत देखि बरातिन सीता * कीन मनहिं मन प्रणत पुनीता
सुनत सहित दशरथ हरषाने * बरषि सुमन सुर हने निशाने
पहुँची जब मण्डप बैदेही * लागे शान्ति पढन मुनि तेही
कुलगुरु गौरि गणेश पुजाये * प्रकट लेन पूजा सुर आये
सुर पुजाइ शुभआसन दीन्ह्यो * पुनि मुनि बोलि सुनयनै लीन्ह्यो
जनक सव्य दिशि सोहत सोई * मनहुँ सुकृत छवि मूरति जोई
दो० कनक कलश कोपर रुचिर, भरि पियूष निजपानि ।

लागे धोवन वरचरण, नृप रानी सुख मानि ॥
जे पद बसत महेश उर, ध्यावत मुनि जन ढेर ।
ते पदपद्म पखारहीं, धन्य भाग नृपकेर ॥
करतल जोरि कुवरि वर दोऊ * शाखोच्चार कीन मुनि सोऊ
पाणिग्रहण त्यहि पाछे भयऊ * कन्यादान भूपवर दयऊ
करि सुहोम गठिबन्धन रागी * प्रमुदित होन भावरी लागीं
मणिमयथम्भ रही छवि पूरी * निरखत मनहुं मदन रति भूरी
भये छकित सब देखन हारे * फेरा फेरि ऋषिन बैठारे
राम सिया शिर सेंदुर दीन्हा * मनहुं उरग शशि भूषित कीन्हा
पुनि दोउ यक आसन बैठारी * देखि लोग सब भये सुखारी
कह रघुनाथ तहाकी शोभा * वरणिसके जग अस कबिकोभा
दो० यनी बनी जाकी जनी, लगत जनी दधिकेरि ।
यनो वनो जाको जनो, कृष्ण जनो जनु हेरि ॥
तब बिदेह मुनि आयसु पाई * लीन्ही तीनिहु कुवरि बुलाई
नाम माण्डवी गुणमय चीन्ही * सो नृप ब्याहि भरतकहं दीन्ही
परम सुशील उरमिला नामा * सो लक्ष्मणहिं बरी अभिरामा
श्रुतिकीरति छवि जाइ न वरणी * रिपुसूदनहिं भूप सो परणी
राम सरिस भे सकल बिवाहा * त्रिभुवन में भरि रहा उछाहा
सबर सुन्दरी राजहिं कैसे * जियगुत बिभुन अवस्था जैसे
कुं० वपुप बितान बिचित्र मधि, जीव अवध अवधेश ।
जाग्रदवस्था श्रुति सुयश, बिभुविश्वक रिपु देश ॥
बिभु विश्वकरिपुदेश, स्वपनमाण्डवी बिमलमति ।
बिभुतैजक सो भरत, उरमिला उदित सुखीपति ॥
उदित सुखीपति केर बिभु, प्रागे के लक्ष्मणअढुप ।

तुरीसियाबिभु रामजी, अन्तरयामी द्विविधपुप ॥
कुवँरि कुवर अनुरूप निहारी * मुदित भये सुर नर मुनि नारी
अवधराज लखि अतिमनभाये * किधनमहित जनुचहुफलपाये
दो० अर्थ क्रिया आधीनता, धर्म कि श्रद्धा शान्ति ।
काम क्रिया करतव्यता, मोक्षकि केवल भक्ति ॥
श्रुतिकीरति रिपुहनअरथ, भरत माण्डवीकाम ।
धर्म धराणिधर उरमिला, मोक्ष जानकी राम ॥
नृप मणिदायजु दीन अति, हय गज रथ हथियार ।
भूषण पट गो रतनगण, दासी दास अपार ॥
लीन अवधपति मुदितमन, दीनजाहिजो आस ।
उबरि रह्यो याचकन ते, सो आवा जनवास ॥
तब विदेह तहँ सबनकी, बहुबिधिविनतीकीन्ह ।
सुनिसनमान्योअवधपति, मुनिन आशिषा दीन्ह ॥
पुनि दशरथ जनवास सिधाये * देवन दीख सुमन बरषाये
तब बनिता मुनि आयसु पाई * लरिकनकोहबर चली लिवाई
गौर श्याम छबि अमितअनङ्गा * ब्याह साज सोहैं सब अङ्गा
कमलनयन चितवन चितचोरैं * देखि देखि युवती तृण तोरैं
कोहबर लाय सकल अनुरागीं * लौकिक रीति करन तहँ लागीं
प्रभुइ उमा लहकौरि सिखावैं * सीता श्री शारदा बतावैं
निजकरमणि बहुरूप निहारी * प्रेम बिबश सिय सकत न टारी
हासबिलास भयो बहु भाती * पुनि आये जहँ सकल बराती
बहुरि रसोई भई तयारा * बोलि पठाये जनक भुवारा
परन पावड़े मन्दिर आये * चरण ढालि चौकिन बैठाये
सुतनसहित दशरथ पग धोये * आसन दइ सुवारन जोये

लागे ते परसन पनवारा * षटरस व्यञ्जन बिविधप्रकारा
नाना भांति पकवान मिठाई * दधि गोरस फल फूल खटाई
बरणि न जात देखि अनुरागे * पञ्च कौरकरि जेवन लागे
वधूबिलोकि लगी गरियावन * सुनहु राम दूलह मनभावन
दो० बने फिरत जो आपके, गुरुही बिश्वामित्र।
तौ क्यहिबिधि रघुनाथ तुम, कारज करौ पवित्र॥
जनकसुताके जनकको, जनक कहत सब आहु।
कौन कौन के जनक ये, याको करहु निबाहु॥
सुनियत अजकेसुत दशस्यन्दन * दशरथ दनक भे अजनन्दन
यह अबेरवपरी क्यहि भाती * समुझि परतअस सकलबराती
मुदित होय सबमुनि टमि गारी * अमुके परसो कहैं पुकारी
यहि बिधिसबहिनभोजनकीन्हा * आदर सहित आचमन लीन्हा
देइ पान पूने मिथिलेशा * जनवासे आये अवधेशा
इति श्रीरामचन्द्रविवाहवर्णनोनामनवमोऽध्याय ॥ ९ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
कहौं कलेऊमत कछुक, कोशलखण्ड बखानि॥
निशा निरखि सबसोवन लागे * बडे प्रात कोसलपति जागे
प्रातक्रिया करि आयसु पाई * चारि लाख वर धेनु मँगाई
बिप्रन का दीही नरनाहा * गजरथबाजिजाहि ज्यहिचाहा
कीन्हे याचक सकल सुखारी * यथा अभ्र दै चत्रन वारी
त्यहि अवसर नृप मन्त्री आये * करन कलेवा भूप बुलाये
उठ कुंवर पितु आयसु पाई * चढ़ि चढि घोडन चले सिधाई
कोइ अरबी जङ्गली पहारी * चिरचेचक चम्पा कधारी
कोइ कबुली अँबोज कोइ कच्छी * बोत मेमना मुजी लच्छी

कोइ किसमी भुठार फुलवाई * गर्रा गुरठ जुमिल दरियाई
श्यामकरण कुम्मैत पठानी * टावन तुरकी पचकल्यानी
मुसकी सब्ज इराकी पंषे * पीन नवीन विशाल अदोषे
सकल अलंकृत चलनि सुठीका * सबते तुरँग रामकर नीका
विश्व विमोहन हेतु बिचारेउ * बाजिवेष जनु मनसिज धरेउ
पहिरे पट भूषण तनमाहीं * चपल तुरग नचावत जाहीं
मनहु मेघयुत उडुगण दामा * जात नचावत शिपिअभिरामा
देखैं जहँ तहँ लोग लुगाई * कहैं जातहैं चारौ भाई
पहुचे जब सब जनक अगारे * कनक पलग रानिन बैठारे
बहु बिधिके भोजन धरि आगे * नेग पाइ निज जेवन लागे
अचवनकरि बैठे तिन पासा * लगीं करन तियहास बिलासा
एक सखी बोली तुव माई * क्याहे हित सुत जनमे हाँसिखाई
कह्यो राम कत बूझन येहू * निकट नरेश परीक्षा लेहू
अपर बसन करप्यो निजओरा * मिले चोर तुम सब चितचोरा
त्यहि क्षण लक्ष्मीनिधि कीनारी * सिद्धि नाम ले सखिनसिधारी
सहजानन्दनि मदन मञ्जरी * चन्द्रकला कमलाक्ष अञ्जरी
चन्द्रमुखी चन्द्रानति योगा * विमला उतकर्षिनि प्रियभोगा
चित्रा चितरेखा ईशाना * कृपा काचनी सत्या ज्ञाना
सुदक्षसा चन्द्रानानि हसी * सुधामुखी सुखमञ्जु प्रशसी
माधुर्या उज्ज्वल विशदाक्षी * चरुशीला अतिशीला साक्षी
औरौ अली अनेक अनूपा * सहित सिद्धि आई अलभूपा
रघुपतिछवि अवलोकि जुडानी * बोलीं बिहँसि हासकी बानी
सुनियत लालकाम अतिनीका * तवअम्बनि कीन्ह्यो त्यहिपीका
हम चितचोर सासु पहँआयो * तुमहीं-देखन बदन दुरायो

बोली सिद्धि रावरे भगिनी * ऋषि किमि वरींहरीनतमागिनी
कल्लोलमणजस लिख्योलिलारा * तैसे होत टरत नहिं टारा
हम नरेश सुत जनक योगीशा * भयो व्याह भावीवश दीशा
कबते राजकुमार कहाये * पाल्यो ऋषै ऋषै उपजाये
हलते भल तापस सबदिनके * बोले लाल हमहुँ सिख तिनके
बोली कलावती सिधि भगिनी * लक्ष्मीनिधि-की सारिसुलगिनी
दो० इक कुमार पुनि मुनिनसँग, रहि यहिरसकी बात ।
सिख्यो कहां ऋषितियनपहँ, की दारकादिगतात ॥
कहेउ शत्रुहन सत्यपर, तुमहुँ कुमारी आहु ।
तुम कहँ पायो ज्ञान यह, की कोइकरि असनाहु ॥
बोली चन्द्रकला कर टेकी * तुम साधुन के बन्धु विवेकी
तोरेको रस हास न चाही * परस्वारथी सन्त गति आही
हमहू सुनि असनेह तुम्हारा * दरशहेत द्वारे पगु धारा
सइउ चीन्हि बिनकहे पतीजै * तन धन ते सेवा अब कीजै
सर्प डसित को जो नहिं झारैं * लगै दोष नत मन्त्र बिसारैं
यहिविधि बदिबातैं सुख लेत्रैं * निजनिज रुचिसब रामहिंसेवैं
कहेउ सिद्धि हम नारि अपावन * पर यक गुणहु दीनजगजावन
ज्यहिते नेह करैं अनुरागी * सर्वसु जाहु सकैं नहिं त्यागी
तिमि तुमते ठानी हम प्रीती * करौं निबाह समुझि निजरीती
कह प्रभु मोहिं सनेह समाना * प्रिय न कछू यह जान जहाना
तुम प्रियप्राण सरिस मोहिंमासे * मांगि बिदा गमने जनवासे
बोलीं बहुरि जीत हम लीन्हा * दिहलफेरिमुखहम तजि दीन्हा
यहि विधि बातन सबन हराई * जनवासे आये सब भाई
इति श्रीरामविवाहकलेऊविधिवर्णनोनामदशमोऽध्यायः ॥१०॥

दो० राम रमत जो सबनसे, सब जहँ रमै सो राम।
रामहिं लखि रघुनाथजन, लहत स्ववाञ्छित काम ॥
नित नव आदर करै नरेशा * भूप चलन देत नहिं देशा
कौशिक कही जनक सुनि लीजे * बहुदिन भये विदा अब कीजे
भले नाथ कहि सभा मझारी * जहँतहँ लागी होन तयारी
सुनि निश्चय पुरजन अकुलाने * जिमि चकवाकजात-रविजाने
जनक विविध मेवा पकवाना * दीन्हे पठै पन्थ अस्थाना
बीससहस सिन्धुर सजवाये * स्यन्दन सहस पचीस सुहाये
तुरँगलाख सुरभी युगलाखा * महिषी लक्षसवाई भाखा
कनकवसन मणि भूषण भूरी * अनगनभाजन शिबिकारूरी
औरौ वस्तु अनेक प्रकारा * प्रथम पठाई अवध मझारा
तब बिदेह गुरु सचिव बुलाई * कह्यउ लयावो भूपहि जाई
सुनि मन्त्री तित जाइ सुनायो * बिदा हेत मिथिलेश बुलायो
दशरथ सुनि लै दूलह सङ्गा * तथा बरात साजि बहुरङ्गा
राजभवन गवने लखि लोगा * हर्ष शोचवश भये बियोगा
एक एकते कहैं बिशेखी * आजु लेहु भरि दृग छबि देखी
भूरिभाग बिधि दरशन दीन्हे * सो अब जात तयारी कीन्हे
भूप भवन जब पहुँचे जाई * बैठारे सबहिन सचुपाई
बिनती भई परस्पर नाना * सम समधी तिनसम को आना
जनक बिदा हित सौंज मगायो * देखि सभा सब अचरज पायो
मणिअनमोल अनेक अपारा * कनक गनै को कितने भारा
भूषण सुभग एकते एका * भरे मँजूषा चित्र अनेका
बसन, रूमपट पाट अपारे * परम रम्य अतिशय गुणभारे
भाजन मणि हाटक रजुकेरे * अतिबिचित्र बहुभाति घनेरे

मेवा चिर उत्तम पकवाना * धरे कूट इव सुखप्रद नाना
शस्त्रसकल स्यन्दन गजवाजी * शिविका शुतर सुहई नवजाती
थोरी वस्तु भाषि बहु गर्ती * हाथजोरि अस्तुति तब भाखी
हे अवधेश विमल यशकेतू * सकल काम परिपूरण सेतू
मैं निलज्ज यह सांज दिखाई * जिमि कोउ स्वर्णसुमेरहि लाई
पर प्रभु ईश बड़े जे अहहीं * निनकी रीति वेद इमि कहहीं
दास फूल फल जल जो देही * प्रभु त्यहि अधिक प्रीतिते लेहीं
अनविचारि म्वहि इदविश्वासा * पुजिहौं मम मनकी तुम आशा
सुनि नरेश निजकर शिरधारी * गद्गद ह्वै अस गिरा उचारी
करिय कहा मिथिलेश बड़ाई * जिनगग हमहु प्रतिष्ठा पाई
निजसुतनयविधि म्वहिं करलीन्हे * उभयलोक अनवधि यश दीन्हे
यारि अनराज अहै न कोई * मलय समीप कुतरु हरि होई
जोगुरु लघु लघुता न बिचारी * सोउ छोर कछु होत न भारी
मिले परस्पर कण्ठ लगाई * जयजय धन्य धन्य धुनि छाई
यथातथा विधि बिबिधिलगाने * वरषे सुमन देव सुख माने
तब विदेह लहि आनन्द भारे * निजकर सब दूलह शृङ्गारे
मणि भूषण पट परम सुहाये * नाग शिल कुवेर विचित्र रचाये
यद्यपि सब अनप्राकृत सामा * तदपि लगत लघुतनु अभिरामा
पुनि नरेश प्रभुपदमद गहेऊ * नयनन धरे केर फल लहेऊ
मन में कहन लाग सुन चारें * कन्यादान कछु करनी आहें
जो जानकी न होत हमारे * रामचन्द्र किमि आते द्वारे
विप्र वेद धुनि करि हरषाने * दान मान दे नृप सनमाने
सकल बराती तब पहिराये * यथायोग्य जो ज्यहि जस भाये
वन्दीजन गण गुणा अपारा * रुचि लखि मान दीन अनपारा

ते तहँ सकल अनूप सुहाहीं * लोकपाल लखि जिन्हैं लजाहीं
रघुपति छवि माधुरी अनन्ता * रहे देखि सुर नर मुनि सन्ता
बहुरि सुनयना धाम हँकारे * मित्र मण्डली सहित पधारे
रानिन देखि लहेउ सुखभारा * बैठारे सब करि सतकारा
दिव्यजलजमणि कनकाभरना * वसन रम्य उत्तम बरबरना
नख शिख दूलह सकल सजाये * सखन समेत विचित्र सुहाये
नारिबृन्दजिमि शशिहिचकोरी * निरखहिं प्रभुछवि पलकनमोरी
सियामातु करजोरि रसाला * कहेउ वत्स तुम दोउकुल पाला
सुनिये जीवन प्राण अधारा * विनती यह मम बारहिं बारा
भूप सचिव हम सब चरदासी * जाति बन्धु जहँतक पुरबासी
सबहिं प्राणप्रिय सुता हमारी * कबहू लागि न ताति बयारी
दृगपुतरीइव सब दिन पाली * निरखतराहिन यथामणिव्याली
तुम्हरे कर निबाहु तेहि केरा * करहु सो मोद लहै मन मेरा
अस कहि कुँवर लगाये छाती * कीन निछावरि नाना भाती
परी चरण समुझाइ सुमाये * पाइ अशीश मण्डपे आये
तब नृप विदा किये शिरनाई * जनवासे आये हरषाई
दो० अन्त पुर रानी सकल, विकल नारि लै सङ्ग ।
मणिपट दिव्य अमाभवर, सजे सुतन के अङ्ग ॥
नखशिखसाजिस्वरूपसखि, लखि वारे तन प्रान ।
चलन निकट गुणिलहैं दुख, कोटिन मरण समान ॥
सो० सासु श्वसुर गुरुदेव, भूसुर सन्त अनन्त हित ।
करेहु सुपतिकी सेव, असकहि लिहिनिलगाइउर ॥
जे मतिधीर नारि वयँ भारी * तिन मन अति कठोरता धारी
कीन्ही विलग सुता महि तेरे * रोवैं मिलैं अपर स्वर टेरे

सुनि धुनि द्रवैं दारु पाषाना * चेतन की को करै बखाना
सुता कहै मेरी महतारी * लीजे सुधि लखि दीन हमारी
सुनि महि मातु गिरी मुरझाई * दौरि रवनि टेकिनि समुदाई
शुक सारिक जे पिंजर भीरा * हाय सिया कहि तजे शरीरा
तिन की दशा अनैसी देखी * दिये संग करि प्रेम विशेखी
पुरजन विकल वियोग घनेरे * मृत्यु मिलै मांगें विधि तेरे
जनकहि देखि मिली लपटाई * हैं अधीर धरि धीर छुड़ाई
मन्त्रिन दिव्य विमान सजाये * मनहु महिप गृह अपर सुहाये
असनबसन आदिक बहुसामा * सेज पीठि लोवर सुखधामा
वस्तु समस्त अनूपम सारी * आनि यानमहँ धरी सुधारी
तिनमा आनि कुँवरि बैठाई * त्रयलख नृप जाहित सेवकाई
अरु दीन्हे बहु दास पुनीता * विकल लोग गावहिं गुणगीता
उठे विमान देखि सुर हरषे * हनि निशान कुसुमावलिवरषे
पाछे भूप चले पदचारी * पठवन कन्या प्राण पियारी
मन्त्री पुरजन जे गुण भारे * नृप सँग सकल जात मनमारे
आवत पुरपथ चले विमाना * शिविका करि हरि घेरे नाना
नगर नारि नर निरखि मनावैं * हे विधि कुँवरि वेगि फिरि आवैं
बाहर नगर रुक्यो जब याना * नृप ढिग जाइ कीन सन्माना
वत्स न रोवहु रहौ चुपाई * वेगि लेब मैं तुम्हें बुलाई
ज्यों त्यों करि धीरज उरधारा * बिदा कीन मन कष्ट अपारा
पूजि विप्र अवधेश सिधाये * मङ्गलमूल सगुन बहु पाये
जय जय कहि सुर वर्षहिं फूला * बाजे बाजन विविध समूला
नृप करि बिनय महाजन फेरे * याचक सब परितोषि निवेरे
तब विदेह बोले अनुरागी * नाथ मोहिं कीन्हो बड़भागी

कोसलेश समधिहि सन्माना * पुनि प्रभुते मिलि वचन बखाना
राम करहुँ निमि सुमुख बड़ाई * चिदानन्द तुम सब सुखदाई
सेवकसमुझिदरश न्वहिंदी यो* मनविधिते आपन करिलीन्यो
तदपि एक वर दीजे अवहू * मन तव पद परिहरै न कबहू
सुनि रघुपति श्वशुरसनमान्यो* पितुवशिष्ठ कौशिकसम जान्यो
दो० भरत लषण रिपुसूदनहिं, मिले विनय करि राय ।
शीश नाइ वर पाइ सव, बन्धु चले हरषाय ॥
कौशिक सुनिपद नाइशिर, बोले तिरहुतराज ।
नाथ कृपा तव दास के, भये सिद्ध सब काज ॥
सो० सकल मुनिन शिर नाइ, पाइ अशीष विदेह तव ।
फिरे भवन पछिताइ, प्रमुदित चली बरात इत ॥
गी० इत मुदित चली बरात बालक बाजि जात नचावहीं ।
मगलोग लखि रघुनाथ छवि निज जन्मको फल पावहीं ॥
वरबास करत निवास शुभदिन अवध पहुंचे आइके ।
पुरनारि नर सुनि सकल जहँ तहँ चले देखन धाइके ॥
नृपधाम अति अभिराम कौसल्यादि रानिन जानेहू ।
अनुरागवश हैं शिथिल मङ्गलचार पुनि सब ठानेहू ॥
दधि दूब तन्दुल तुलसिदल फलफूल घनानिशि आरती।
धरि थार रवनिअपार गावत चलीं मानहु भारती ॥
जब द्वार गई बरात प्रमुदित मातु सब परछत भई ।
करि वेदविधि कुलरीति पोंवड देत मन्दिर ले गई ॥
तहँ चारि सिंहासन सु तिन पर कुँवरि कुँवर पधारेऊ ।
पग धोइ करि आरति निछावरि विविध वस्तु उतारेऊ ॥
अवलोकि सुत अरवधुन युत आनन्दवश जननी भई ।

जिमि मूक पावै वाक्य पारस रङ्क अन्धांखी गई ॥
मिलि करैं लौकिकरीति तब सुन अस्नुषा सकुचावहीं ।
सुर पितर पूजि पुजाइ मांगैं नीकि सकल रहावहीं ॥
महिपाल बोलि बरात दीन्हे यान पट भूषण भले ।
शिर नाइ पाइ रजाइ रामै राखि उर निजपुर चले ॥
पुरनारि नर पहिराइ सेवक छकिन सब याचक भये ।
तब भूप सहित वशिष्ठ भूसुर सन्त अन्त पुर गये ॥
शिर नाइ सब अन्हवाइ रानिन विविध अशन जेंवायहु ।
करि दान आनन्दमान देत अशीष सकल सिधायहू ॥
पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर सुत सम्पदा आगे धरेउ ।
निज नेगु मांगि वशिष्ठ रामहि राखि उरधर कादरेउ ॥
तब भूप रानिन सहित विश्वामित्र की पूजा करी ।
करजोरि दीन निवास भीतर भवन निरखब हरषरी ॥
पुनि पूजि प्रियपाहुन अमरगण सुमन बरषि सिधायहू ।
सब बोलि द्विजगुरु ज्ञाति सुतन समेत भोजन पायहू ॥
गावैं वधू मिलि गीत अचवन कीन निज धामन गये ।
तब भूप रानिनने सकल मिथिलेश गुण वरणत भये ॥
भये मुदित सब तब कहेउ लरिका श्रमित उसनींदे अहैं ।
करवाइये अब शयन गे विश्राममन्दिर जहँ रहैं ॥
मणि जटित पलँग बिछाइ पट मृदु शुभ्र सींचि सुगन्धसों ।
पौढ़ाइ चारो भाइ बोलीं माइ करुणाकन्दसों ॥
किमि तात मारेहु असुरगण किमि विप्र वनिताहि तारेहू ।
किमि कठिन भञ्जेहु शम्भुधनु किमि परशुधरहि नेवारहू ॥
भे काज सब मुनिकृपा ते बलि जाहुँ भुज चापनलगी ।

परितोपि प्रभु सब मातु पुनि भे नींदवश ते रंग रंगी ॥
वर वधुनले सब सासु सोइ नागमणि सम गोइकै ।
भे भोर लागे पढन बन्दी राम जागे सोइकै ॥
करि शौच विप्रन दान दे सहवन्धु नृप जहँ तहँ गये ।
अवलोकि विधिसुत गाधिसुत सन सभायुत हरषतभये ॥
शिर नाइ बैठे गुरु पितै इतिहास मुनि लागे कहै ।
यहिभांति नित नव होत मङ्गल वरणि को पारै लहै ॥
मागी बिदा ऋषिनाथ दिति करि बिनय रघुपति राखहीं ।
समुझे बिशेषि तयार तब करजोरि नृप अस भाखहीं ॥
सुत धाम धन तब नाथ रानिन सहित मै सेवक सदा ।
प्रभु करत रहियो छोह सब पर दरश देव यदा तदा ॥
पुनि परे चरणसनेह सहित अशीष मुनि सबको दई ।
सियराम छवि उर राखि ऋषि गन चले वरणत पहुनई ॥
रघुवीर पन्द्रह वरषके पट अष्ट की श्रीजानकी ।
भये व्याह द्वादशवर्ष रहि पुर रामलीला थानकी ॥
सोहिदेवसन्तन होत सो समुझत सुखद मनभावनी ।
अविवेकवन्तन मोहमद कोविदन विरति बढावनी ॥
सियराम जन्म बियाह मङ्गल मुदित सुनहि जे गाइहैं ।
रघुनाथ तेपर कृपाकरि हरि जग हम सुखपाइहैं ॥
दो० श्री गुरुदयादास के, चरणकमल धरि माथ ।
बालकाण्ड संक्षेप करि, वरणा जन रघुनाथ ॥
रविसुतभगिनीपतितनय, तासुत जननी अन्त ।
शैलसुतापति आदि भज, कह रावबसुत सन्त ॥
इति श्रीबालकाण्डसमाप्तनामएकादशोऽध्याय. ॥ ११ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

अयोध्याकाण्डप्रारम्भ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुर, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं मानसमत कछुक, अध्यातमहि बखानि ॥
जबते आये ब्याहि प्रभु, नित नव मङ्गल होत ।
मुदित रहत पुर नारि नर, तात मात गुरु गोत ॥
इक दिन विश्वावसु तहां, कियो गान गन्धर्व ।
सुनि प्रसन्न है सुपुरतेहि, कह्यो रहन हित सर्व ॥
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन, मैं न सकत रहि अन्त ।
कह्यो केकयी बसन है, हमरे बल सुखकन्त ॥
हमरे आवत रिस करत, अस तुम गये घुटाइ ।
पठइ पत्रिका बानकर, लखि नृप रहे चुपाइ ॥
मनसे समुझे केकयी, लिखि पठये यचवक्र ।
हमरेउ लागी घात तब, हमहु देव कलङ्क ॥
लिखि पठये विश्वावसुहि, कह्यो जो काहे भूप ।
यह सत्योपाख्यान की, मैं कहि कथा अनूप ॥

यहि विधि द्वादश वर्ष बीती * एक समय की सुनिये रीती
केकयनृप सुत केकय नामा * अवध आइ कह्यो नृपते कामा
सरमुल देश हमार उजारा * त्यहिहित दीजे भरतकुमारा
गुरु निदेश सुनि भरत दीन्हा * केकयसुवन गवन तब कीन्हा
बिदा होत पर राम लषण दोउ * सचिवसुवनसगसुखानन्दसोउ
गे कछु दूरि पठै फिरि आये * सानुज भरत नगर नियराये

केकय चलि आगे लै गयऊ * लखि आनन्द मगन उर भयऊ
विप्रन ते तब होम कराना * खरमुख सुनत सैन लै आना
भरत समर करि मारो ताही * निरभय भये देश जग चाही
नेह विवश ह्वै मातुल केरे * रहत तहा सो चरित निवेरे

दो० यहां रामसिय लषण लखि, सगुन कहै यह बात।
समुझिपरत आवत भरत, भये बहुत दिनजात॥
वरष अठारह की सिया, सत्ताइस के राम।
कीन्हीं मन अभिलाष तब, करनो है सुरकाम॥
ताही क्षण तहँ देवऋषि, विधिसँदेश कह्यो आय।
पूजो प्रतिमा सहितप्रभु, बिदा किये समुझाय॥
एक दिवस श्रीअवधपति, मनमें कीन बिचार।
रामहि दीजै राज्य अब, भा पन चौथ हमार॥

गुरुहि पूछि नृप कीन तयारी * मङ्गल सामा सकल सँवारी
जो कछु नृप अभिषेकम चाही * फल फूल जल मगवायो ताही
बाजहिं पुर गहगहे निशाना * नाचनर्ती नाचैं करि गाना
सेवक सचिव कहैं नर नारी * धन्य भूप भलि बात बिचारी
प्रमुदित बदैं एक ते एका * देखहु कालि राम अभिषेका
अमरन सो उत्साह न भाई * वाणि बिघन हित बाक पठाई
नाम मन्थरा कैकयि चेरी * आइ गिरा ताकी मति फेरी
पुररचना त्यहि दीख नवीनी * पूछे ते काहू कहि दीनी
राम राज्य सुनि शरसम लागे * अनमन गई केकयी आगे

दो० मम सोदरकी राज्य जिन, वामन ह्वै हरिलीन।
करौं विघ्न तिमि मैहू अब, उयहिलागि सेवा कीन॥

यहिविधि करत बिचार कुबुद्धी * तजतआशु करि प्रथम किशुद्धी

भरत मातु बोली वा भयानी * जानिपरत लक्ष्मण तिनदयानी
हमें साल दई कत वोई * तव दुखलखि भा म्वहिं दुखसोई
परत आनि शिर ऊपर आई * सो तुम अभय जानि नहिं पाई
बीन बृहद बीते दिन आजू * पैहैं काल्हि राम युवराजू
सुनि रानी अतिशय हरषानी * लगी दैन भूषण निजपानी
जो तव वाक्य सत्य यह होई * फिरि देहौं जो मँगिये सोई
हमें रीझ तुम देहौ काहा * तुमहीं का नहिं होई लाहा
रामचन्द्र जब राजहिं पैहैं * कौशल्या तब तुम्हें सतैहैं
जिमि कद्रू विनतै दुख दीन्हा * चित्रकेतुतिय अनभल कीन्हा
सुरुचि सुनीतौ को गृह वनमें * पठैदीन सुख नाहिं सपनमें
शुकसुता शर्मिष्ठहि कष्टा * दीन कीन निजपति को नष्टा
रहित गरल मे सकल सयानी * भईं बाँझ सब शशिकी रानी
यद्यपि सबनि तव सरलस्वभाऊ * परपरिकृत्रिम करत मनभाऊ
भूपकरत तव आदर भारी * देखिसकौ नहिं सवति तुम्हारी
तव सुत पठै ननियौरे दीन्हे * लेन राज्य निजपुत्रहिं लीन्हे
सुवन सहित राखिहौ सेवकाई * नाहिंत रहिहौ पितुघर जाई
समुझि परत म्वहिं विस्वा बीसा * परी विपति सब तुम्हरे शीसा
जो कहौ राम चहत अति मोहीं * निरबल मैं रिपु मित्रहु होहीं
दो० जिमि वन जारत अग्नि तव, पवन सखा होइ जाय ।
सोइ मारुत कृश देखिके, दीप देत बुझाय ॥
सो० सुखद दुखद शशि होइ, लहि रवि वसु श्रुति चौथग्रह ।
मृगमधु जाहि विन तोइ, दहत कहत मगछलजजम ॥
त्याहिते अवहीं करहु उपाऊ * ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ
द्वै वर नृप थाती सो लेहू * सुतहि राज्य रामै वनै देहू

यकर्तौ दुखितकाज गुरु डागी * दूसर सुर संग्राम मँझारी
सुनि प्रतीनि रानी मन आई * हरि इच्छा तुम जानहु भाई
कोपभवन पहुँची तजि साजा * भावीवश आये तहँ राजा
कोपभवन मन्थरहि बनावा * सुनि नरेश मन में भय पावा
सुरपति सुहृद दनुज अरिजोई * कालहु ते न डरहिं रण सोई
तिय रिस सुनिभे कम्पित गाता * कामकृपाण निशित अति ताता
धरिधीरज रानी ढिग गयऊ * शीश परशिकर बोलत भयऊ
क्यहिकारण कीन्ह्यो रिस प्यारी * को तव दूसर है तनुधारी
दो० कहु क्यहि रङ्कहि नृपकरौं, नृपै रङ्क करिदेउँ ।
तव अरि अमरहु होइ त्यहि, वध करि पाथैपेउँ ॥
कहौ खोलि निज कोप प्रसङ्गा * भूषण सजहु मनोहर अङ्गा
ह्वै प्रसन्न चितवहु मम ओरा * आजु भयो मनभावत तोरा
ह्वैहैं काल्हि राम युवराजा * हरषसमय तुम दुख उपराजा
सुनि नृपवचन भयो दुखभारी * दिहिसिपाणि निजशिरते टारी
पुनि धरिकर बोले अनुरागी * जो भावै सो लीजै मागी
तव हित कछु न अदेय हमारे * सुनि केकयि तव वचन उचारे
मागु मागु बर जब तब कहऊ * लेन देन फिरि कछू न अहऊ
आगे देन कह्यो बर दोई * अबतक मोहिं मिले नहिं सोई
सुनि नरेश हँसि बोले लीन्हा * कबमागेहु कब हम नहिं दीन्हा
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा * वचन न जाइ जाइ बरु हंसा
झूठे दोष देहु जनि प्यारी * लेहु मागि किन द्वैके चारी
जो पति शपथ रामकी कीजै * तौ हम मागि उभय वर लीजै
हँसि नृप राम शपथ तब खाई * सुनि तिग सरिस उठी हरषाई
प्रथम देहु बर यही समाजा * भरतहि बोलि करहु युवराजा

दूसर राम धाम तजि राई * चौदह वर्ष वसैं वन जाई
सुनि नरनाह मूर्च्छि महिपरेऊ * मनहु तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ
धरिधीरज पुनि आखि उघारी * पुर. किरातिनि सरस निहारी
बोली बहुरि सुनौ नरनाहा * भरत तनय तव होइ न काहा
जासु राज सुनि भा दुखभागी * प्रथम देन कत कह्यो पुकारी
कह नृप सत्य कहौं तोहिं पाहीं * भरतराज सुनि दुख म्वहिं नाहीं
दूसर बर मागेहु दुखरासी * साचहु साच कि कीन्ह्यो हासी
त्वहि प्रिय राम रहे अति आगे * आजकठिन क्यहिकारण लागे
जो कृत बैरिहु कर उपकारा * सो किमि करी मातु अपकारा
ज्यहि दुख दुसह देत सब काऊ * मैं तोसे निज कह्यों स्वभाऊ
दो० रहै भानु बिन दिवस बरु, रहैं मीन बिन नीर।
रामबिना मम प्राण नहिं, रहिहै लुमुखि शरीर॥
कुं० नारद ऋषि प्रभाव नृप, सञ्जय सुत मलहेम।
होत जानिहरि हरिहतन, करि कछु लह्यो न नेम॥
करि कछु लह्यो न नेम, तरकितलफे पुनि भलते।
हरिपरिभव हित गोप, गृहप पाल्यो गोपलते॥
ते स्वा सिंहहि देखि, दबकिबिलमाहिंलुकान्यो।
मिल्यो सुरभिको पाप, समुझि पाछे पछितान्यो॥
पछितान्यो तिमि तुम्हैं, शोचतो परी बिशारद।
मूरख की रघुनाथ, इमपि कृत होत न नारद॥
त्यहिते पुनि मागहु म्वहिं पाहीं * रहैं राम पुर बन नहिं जाहीं
त्यहिते हमहुं बरष दुइ एका * देखैं भरत राज्य अभिषेका
सुनि बोली ओदर जनि करहू * निज कुल रीति हृदय महं धरहू
देखो शिबि दधीचि हरिचन्दा * सहे धर्महित दुख अतिमन्दा

मधुकैटभ शिर विष्णुहिं दयऊ * तिटवहुले कछु कष्ट न भयऊ
बोलि वचन जिन नहिं प्रतिपारे * कहन बेद तिनके मुख कारे
त्यहिते तजहु सत्य जनि नाथा * पठवहु जाहिं बिपिन रघुनाथा
जो न प्रात जैहें मुनिबरणा * तुमहिं अयश होई मम मरणा
सुनिपुनिनृपबहुबिधिसमुझावा * होनहार त्यहि तनक न भावा
गिरयो भूमि ह्वै विकल भुत्राला * जानेहु तियमिस आयहु काला
हृदय मनावत शम्भु विधाता * करहु कृपा ज्यहि होइ न प्राता
गुरु गणेश शारदा भवानी * रहैं राम तजि घर मम वानी
दो० भेषज सुर अभिषेक जन, नेक न निरफल जात।
कालविवश जगजालजिमि, नौचढि जल बहिजात॥
यहिविधि बिलपत भयो बिहाना * बाजे जहँ तहँ द्वार निशाना
बन्दीगण गुण गावन लागे * प्रमुदित प्रिय पुरवासी जागे
सुनि नरपतिहि न नेकु सुहाई * समर समय जिमि गारी गाई
प्रात वशिष्ठ सभामहँ आये * लखि सुमन्त ते वचन सुनाये
सदा प्रथम आवत नरनाहा * आजु गहरु भै कारण काहा
बेगि खवरि तुम लावहु जाई * चले सुमन्त परम चपलाई
गये कोप मन्दिर सुनि वाता * सभय उलगी ड्योढी साता
दो० प्रथम तरुण युव जरठ पुनि, बालक छीवा चारि।
पञ्चम यौवन विरध पट, सप्तम गौरी नारि॥
आगे जाय केकयिहि देखा * परे विकल तहँ भूप विशेखा
शीश नाइ बोले मृदुवानी * भूप परे कस निकन्द रानी
रामहि प्रथम लयावहु जाई * भूप कुशल तब बूझ्यो आई
नृप रुख पाय सुमन्त सिधाये * बमन रामके मन्दिर आये
देखि पितासम प्रभु सनमाना * पूछेते तिन हाल बखाना

चले तुरत प्रभु श्रङ्क उभारे * देखि लोग सब भये दुखारे
पहुंचे जाइ जहां नृप रानी * बोले राम जोरि युगपानी
जननिजनक क्यहि हेत दुखारी * करियतोक्रृति क्यहिहोइ सुखारी
सुनहु राम दुख मूल सनेहु * बढी न सुख यदि कढी न गेहु
हानि लाभ सुखदुख किन होई * कहिय देन त्यहि दीजै सोई
त्रिबि बर मैं मागे इनपासा * भरतहि राज्य तुम्हें बनबासा
धर्मकेतु कछु कहन न बानी * तुमने संध करो सोइ जानी
सुत सोइ जो पितुसुयश कढावै * यगश देइ त्यहि सुत को गावै
सुनि कैकयिके बचन कठोरे * बोले राम श्रमी जनु बोरे
अनिलघु बात पितै दुख भारी * अपर हेतु कछु है महतारी
भरत शपथ मैं सत्य बखाना * कारण आन मोर नहिं जाना
तब रघुपति गहि नृपहि उठावा * हाथ जोरि अस बचन सुनावा
तात तरांकितन तजहु गलानी * मङ्गल समय मोद उर आनी
जो जननी यांचे बरदाना * तामें अति हमार कल्याना
दो० यकतौ बन मुनिजनदरश, भरत प्राण प्रियराज।
पुनि निदेश पितुमातुकर, क्यहिबिधिदाहिनआज॥
ऐसेहु पर निज करहु न काजा * जानेहु त्यहिं मूढनकर राजा
मूढ़ सो सत्रह बिधिकि जानो * कहे पूर्व मनु तैस बखानो

महिपरीछन्द ॥

कहँ इमपि पूरब मनु स्वयम्भु मूढ़ सत्रह होतजू।
जन जो अशिष्यहि करत शिक्षा तौन पहिले पोतजू॥
है जौन सेवत दारदिहि धन देत दूजो तौनजू।
करि तौन तो जो रक्षि शत्रुहि कुशल चाहत जौनजू॥
है सो चतुर्थ जो कथत निजमुख कर्म कारज पूर्वजू।

जो बैर ठानत प्रबलसों है निबल पञ्चम मूर्खजू ॥
मूढ छठवों करत कुत्सित कर्म जो गुरु ज्ञानजू ।
गुण कहत श्रद्धाहीनसों सो मूर्ख सतवों ख्यातजू ॥
गुरुगोत्र तियसों करत निन्दित कर्म अठवों तौनजू ।
जो पुत्रातयगति मान चाहत नौम सो अघ भौनजू ॥
निजबीज जो परखेत डारि दशम मूरख खेदजू ।
है सो यकादश मूर्ख तियसों कहत जो निजमन्त्रजू ॥
अरु देन कहि नहिं देत जो सो मूढ़ द्वादश अन्यजू ।
जो भेद जाने बिना जलपत तौन तेरहों अन्यजू ॥
जो चतुर्दशवों मूढ़ गुणत न कर्म को फल पायजू ।
अरु पञ्चदश जो याचकनसों कहत कटु रिस छायजू ॥
जो दान भोग न करत सोरहों मूढ़ सो धनवानजू ।
निज बन्धु भागहि हरण चाहत सप्तदशम नदानजू ॥
जो लखत लोक अलोक नहिं सो मूढ़ सर्वस श्रेष्ठजू ।
सोउ पाइ ऐसो समय तजत न भजत है असपष्टजू ॥

दो० धृति शम दम शुचिता दया, मितिप्रिय वचन सुनेम ।
आनँद वर्धन शमन अघ, दोउविधि दायक क्षेम ॥
मोह दीनता भूपके, करत सकलगुण नाश ।
ताते दोउ तजि राखिये, स्वधरम महितहुलास ॥
सुत तिय तन धन धाम मोह, जामें सब स्वधर्म ।
ताते देहु निदेश मोहि, वनहिं न परिहरि धर्म ॥

सुनि नरेश अतिशय अकुलाने * मोह विवश रघुनायक जाने ।
करि प्रणाम पदपद्म मौनाये * सिर धरि हरषि सिधाये ॥
आगे प्रथम जानकी भागा * देखि गौन आगम अनुरागा ॥

बोले प्रभु म्वहिं पितु अरु माई * आयसु दीन बसहु बन जाई
धर्म हेत धर्मज्ञ नृपाला * प्रकट सुआयसु चाहिय पाला
चौदह वर्ष वास करि प्यारी * ऐहो फिरि तुम रह्यो सुखारी
सासु श्वशुर की सेवा करेऊ * नारि धर्ममा हिरदय धरेऊ
कानन भय दुख नाना रङ्गा * नाहिन लै लेन्यां निज सङ्गा
जो हठ वश चलिहौ सग त्यागे * तो गालव सम होव दुखारी
दो० गालव कौशिक केर शिषि, कह्यो दक्षिणा लेहु ।
सेवाते सतुष्ट हम, हमें तुष्ट नहिं येहु ॥
श्यामकरण हय आठशत, हठ लखि बोले लाउ ।
सुनि मुनि गयो ययातिनृप, निकट बिचारि न भाउ ॥
पूछि प्रयोजन तिन दई, कन्या सो लै बिप्र ।
नृप हर्यश्वने कह्यो यह, लेहु देहु हय क्षिप्र ॥
एक सुवन जनमाइ तिन, दीन्हे दुइ शत बाज ।
तिमि काशीशउशीनरपति, अरप्यो अर्भक काज ॥
दुइ शत मिले न तेहुपर, तब मुनि मानि गलानि ।
रोये बिश्वामित्र ढिग, अस है हठ दुखदानि ॥
सुनि बोली तब जनकदुलारी * सुनहु प्राणपति बिनय हमारी
अनुज अम्ब पितु सुत सुखनाना * प्रिय बिन प्रमदै प्रेत समाना
त्यहिबिधि नाथ मोहिं जगमाहीं * तुम बिन सुखद कतहुँ कोउ नाहीं
दो० रहै चन्द्र बिन चन्द्रिका, रहै मीन बिन पाथ ।
तौ घरमें मोहिं राखिये, बहुत कहौं का नाथ ॥
देखि प्रीति बोले चलहु, सङ्ग म्वहीं हरषाइ ।
सुनेहु लषण बनजात प्रभु, ढिग आये बिलखाइ ॥
शीश नाइ शोचत मनमाहीं * म्वहिं प्रभु सग लेहैं की नाहीं

देखि विकल बोले रघुराई * धरि उर धीर रहौ घर भाई
भवन भरत नहिं प्रियरिपुआरी * तात मातु मम बिरह दुखारी
जो मैं तुमहिं चलौं ले साथा * ह्वैहैं पुरजन निपट अनाथा
ज्यहि नृप राज्य प्रजा दुखपावै * अवशि अधिप सो नरक सिधावै
अस विचारि रहिये गृह भाई * करहु मातु पितुकी सेवकाई
भवभयहरण मातु पितु सेवा * विमुख निरय भाषत महिदेवा
सुनिलक्ष्मण अतिशय दुखपावा * पद शिरधरि अस बचन सुनावा
दो० नाथ वात जो कही तुम, ताहि करै नर सोइ ।
कीरति सुगति बिभूति तिय, तनुज जाहि प्रिय होइ ॥
मोहिं एक प्रभु तुमते नाता * अपर न जानहुं गुरु पितु माता
त्यहिते तजौ न किंकर जानी * सुनि रघुपति बोले मृदुबानी
दो० तात मातुते विदा ह्वै, आइ चलौ मम साथ ।
जाय सुमित्रा के चरण, भययुत नायो माथ ॥
बोली देखि दुखित कस ताता * तब तुहँ लषण कही सब बाता
सुनि गइ सहमि सुमित्रा रानी * धरि धीरज बोली मृदुबानी
तात राम सिय तव पितु माता * रहिहैं जहां अवध सुखदाता
जो बन जात राम सुकुमारा * तौ घर मे का काज तुम्हारा
त्यहिते बन तिनके सग जाहू * लेहु वत्स जग जीवन लाहू
मोहिं समेत भयो बडभागी * जो तव रामचरण रति जागी
करेहु तात सोइ बात विचारी * ज्यहि न रामसिय होइँ दुखारी
सुनि लक्ष्मण उठि शीश नवायो * पाइ अशीष रामढिग आयो
तब प्रभु सहित जानकी भ्राता * आये जहँ कौसल्या माता
चरण छुवत निजउर बैठारे * भई गहर कत बचन उचारे
बोले तव रघुपति सुनु माता * बनकी राज्य दीन म्हहिं ताता

आयसु देहु मुदित मन ताते * कुशल आइ पद देखिय जाते
कौसल्यहिसुनि अतिदुखभयऊ * मनहु धीनि मुखमरवसु गयऊ
बोली कराहि अपराध भुवारा * राज्य देन कहि बिपिन निकारा
सचिव सुतन तब बात बखानी * सुनि व्याकुल ह्वै बोली बानी
दो० सुरअरिने दधि भक्षते, रण वन पिता निकेत ।
हे विधि राखे मोहि तू, यही देखावन हेत ॥
धरि धीरज बोली बहुरि, तात कह्यो अतिनीक ।
पितु आयसु सब धर्ममय, बकत बेद है ठीक ॥
जो मैं कहौं रहौ सुत धरमा * बढ़े बैर शिर चढ़ै अधरमा
त्यहिते अवशि जाहु वन भैया * आयहु बेगि जाइ बलि मैया
मिग एकहु दुख जानत नाहीं * इनकर लाइ सखो बनमाहीं
मैं बहुभांति सिखावन दीन्हा * तदपि चलनहित हठप्रणकीन्हा
लषणलाल अतिशय सुकुमारे * रहन न तेउ संग जात तुम्हारे
रूप भूख मुख इनकर देखी * सहिनसकयोसुत्रिलियेविशेखी
द्वै स्वतन्त्र रन दूनो भ्राता * करेउ न कबहुं जीवकर घाता
चलेहु भाइ जितना चलिजावैं * कहेउ सँदेश इतै कोउ आवैं
त्यहिसम नारि अभागिनि कोई * भई न अहै न आगे होई
जो जननिउँ आगे दुख गेहा * तौ नहिं वरनिउँ नृपते नेहा
जान विपिन मम बालक वारे * देखि न निकसत प्राण हमारे
असकहि अवनि गिरी मुरझाई * प्रभु जननी बहुविधि समुझाई
पुनि धरि धीर भाषि सुत बच्छा * लागिकरन अङ्गन की रच्छा
रो०छं० नमो बिष्णु पद पातु जानु तिविक्रम वीरा ।
कटिहि रक्ष गोविन्द नाभि अच्युत रणधीरा ॥
गुल्म पातु पदमाक्ष उदर हरि उर श्रीनाथा ।

भुज मधुसूदन पातु कुक्षि पृथ्वीधर साथा ॥
कण्ठ जनार्दन पातु कृष्णमुखमण्डल सोहै ।
कर्णमूल बाराह घ्राण दामोदर जोहै ॥
नेत्र निरञ्जन पातु भाल लक्ष्मी नारायन ।
केशव पातु कपोल सर्वतन चक्रधरायन ॥
पूर्व पातु पुरुषोत्तम सदाग्नेय गरुडध्वज ।
दक्षिणदिशि नरसिंह पातु नैर्ऋत्य चतुर्भुज ॥
वासुदेव वारुण्य पातु वायव्य विश्वम्भर ।
राम रक्ष कौबेर्थशख ईशान गदाधर ॥
कमलनाभि अथ ऊर्ध्व पातु जल गिरिवर बावन ।
व्याघ्र सिंह ते पातु सदा शङ्कर मनभावन ॥
भूत प्रेत बैताल ब्रह्मराक्षस छलकारी ।
अग्नि चोर विष बीछि सर्प ते पातु मुरारी ॥
परविद्या उर यन्त्र मन्त्र परतन्त्र जहांलौं ।
माधव सकल निवारु मारु रुज शूल तहांलौं ॥
यहिविधि रक्षाकीनि दीनि पुनि सुखद अशीशा ॥
सहित लषण सिय चले नाइ जननी पद शीशा ॥

इति श्रीविश्रामसागरेश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेवनयात्रा-
नृपविषादवर्णनोनामद्वादशोऽध्याय. ॥ १२ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं मानस सहित कछु, अगिनिवेशकृत आनि ॥

कछुक शोचचित कछुकउछाहा * आये बहुरि जहां नरनाहा
भे सुनि बिकल सकल पुरवासी * मनहुं दशहुदिशि लागिदवासी
कर शिरधुनहिं भागिविनजानी * मन मलीन तनदशा भुलानी

कोइ कह भल न कैकयी कीन्हा * कोउ कह नृप काहेक बर दीन्हा
कोइ कह विधि चाहै सो करई * कोउ निजकर्मन के शिर धरई
कोइ कह भरतहु कर मन हारी * सुनि कर कान राखि कह कोई
लागत अघ अस किये बखाना * राम भरत कह प्राण समाना
अगिनि होइ जल नग नभफूला * भरत न होब राम प्रतिकूला
यहि विधि कहत सुनत सब धाये * विरह विकल नृप मन्दिर आये
भइ अतिभीर नृप दरबारा * बरणि न जाइ विषाद अपारा
तेहि अवसरके सुधि जब आवै * अजहुँ दरार अवनि उर जावै

दो० तब रघुवर सिय लषणयुत, नृपपद शीश नवाय ।
कह्यो विदा म्वहि कीजिये, तात विषाद विहाय ॥
निरखि भूप शिशुरूप उठि, लीन्हे हृदय लगाय ।
है वश धर्म सनेह कछु, कह्यो न रह्यो चुपाय ॥
देखि कैकयी तसकि कै, मुनिपट भाजन दीन ।
बोली पहिरहु जाहु बन, जो चाहौ हित कीन ॥
अनुजसहित वलकल पहिरि, करि पितुमातु प्रणाम ।
कृष्णपक्ष वैशाख दिन, छठे चले बन राम ॥
विप्रवधू बर केकयिहि, रहीं बहुत समुझाय ।
ते नहिं कीन्ह्यो कान तब, चलीं अधिकदुखपाय ॥
कह्यो भूप तब सचिव ते, रथपर लेहु चढ़ाय ।
बन देखाय अन्हवाय सरि, लावहु तात फिराय ॥
तुरत बाजि रथ साजि कै, गये राम के तीर ।
सुनि विनती आरूढ भे, सियासहित दौ वीर ॥
चले अवध शिरनाय सब, पुरजन लागे साथ ।
प्रभु फेरत नाहिं फिरत सो, खगमृगविकलअनाथ ॥

जाइ रहे तमसा निकट, प्रथम दिवस बिननीर।
करुणामय भे दुखित तब, देखि सबन के पीर॥
लोग श्रमित गे सोइ तब, कह्यो सचिव दे राम।
खोज मारि रथ हांकिये, नाहित बिगरत काम॥
आयसु पाय चढाय रथ, हांक्यो खोज दुराइ।
जागि लोग भे बिकल तब, जब न लखे रघुराइ॥
राम राम कहि खोजन लागे * रथकर चिह्न न देख्यो आगे
फिरि आये धृग आयुहि जानी * करदम मीन धन्यनरि मानी
राम दरश हित जप तप नेमा * लगे करन पुरजन युत प्रेमा
इहा राम सिय सचिव सभाई * शृङ्गबेरपुर पहुँचे जाई
उतरि कीन सुरसरि अस्नाना * इतने माहिं भीलपति जाना
लै फल फूल भेंट तहँ आवा * कीन्ह दण्डवत लखि सुखपावा
उठि रघुनाथ लीन उरलाई * पूछी कुशल पास बैठाई
नाथ कुशल सब बात हमारि * पदपङ्कज दुखदलन तुम्हारि
आपु कहा इत कीन पयाना * तब रघुपति सब हाल बखाना
सुनि निषाद मन भयो विषादा * बोल्यो बहुरि सहित अहलादा
तुम प्रभु होउ इहा के राजा * हम सब सेवक सहित समाजा
चलहु भवन प्रभु कह तिनपाहीं * ग्राम जान की आज्ञा नाहीं
तब शिंशपा तीर लै गयऊ * कुश साथरी बिछावत भयऊ
त्यहितर उतरि सबन फलखाये * शयनकीन पुनि सहज सुभाये
सोवत प्रभुइ निषाद निहारा * दुखित लषणते बचन उचारा
दो० जे सोवत रहैं मणिपलँग, पुरट महल के माहिं।
ते पौढ़े कुशसाथरी, बिधिजुबामक्यहिंनाहिं॥
मुनि बोले सौमित्र कछु, बिधिकर दोष न होय।

निज कृत कर्म शुभाशुभ फल, भोगत हैं सब लोय ॥
राम सच्चिदानन्द घन, रहित समस्त विकार ।
करत चरित सुर सन्त हित, धरि स्वतन्त्र अवतार ॥

भ्रम बिनारि दुख परिहरि नेहा * करहु रामपद पद्म सनेहा
मृगतृष्णा सम जग व्यवहारा * सत्सगति हरि सुमिरन सारा
तात परम परमारथ सोई * जो रघुबीर चरण रति होई
यहिबिधि रहत सुनत भा भोरू * जागे सकल सुनत खग शोरू
करि अरनाल शिर जटा बनाय * तासु सुमन्त्र तब बचन सुनाये
नाथ कह्यो स्वहिं कोशलनाथा * बन दिखाय लै आयो साथा
कह प्रभु तात सकल तव जाना * धर्म न दूसर सत्य समाना
सो मैं सत्य तजहुं किमि जानी * अयश होय पुनि धर्म कि हानी
यहि ते तात जाहु घर आजू * नाहित होइ अवध अकाजू
कह्यो पितासन बिनय हमारी * ममहित करै न सशय भारी
अनासिन ते कहियो शिरनाई * आवन सपदि फिरे द्वउ भाई
कह्यो भरत जब मन्दिर आवें * करहु राज ज्यहि सब सुख पावें
गुरु पितु मातु बचन अनुहारी * करत कछू तेहि लागि न ख्वारी
यदु जमदग्नि गयाश हरीके * चरित चारु जग प्रचुर परीके
तुम पितुसम मम बिनय तुम्हारी * करेहु सो ज्यहि नृपरहें सुखारी
अस कहि चले सबै शिरनाई * सुरसरितट आये रघुराई
मांगी नाव न केवट लावा * कहै तुम्हार मरम मैं पावा
पाहन ते कीन्ह्यो मुनि नारी * यहिते कठिन न नाव हमारी
यहि ते पलत मोर परिवारा * नाथ न जानहुँ अवर प्रकारा
सुरसरि पार जान जो चहहू * तौ श्रम कलेश कछु सहहू
लेन देहु स्वहि पदरज धोई * मानुष करण मूरि है सोई

धोये बिन न देहुं जलयाना * लषण कोपि किन मारहिं बाना
सुनि बाणी प्रभु केवट केरी * बिहँसे सिय लद्मणतन हेरी
बोले पुनि लीजे परछाली * कमटपृष्ठ लावा जल हाली
पद पखारि जल कीन्ह्यो पाना * सुरन देखि बड़भागी जाना
नाव चढाइ पार तब कीन्हा * शीश नाइ जब चाले लीन्हा
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे * बोला सहित जोरि कर आगे
तुम केवट भवसागर केरे * नदी नार के हम बहुतेरे
हमरी तुम्हरी कसि उतराई * नापित नापित की बनवाई
सुनि प्रभु ताहि भक्तिबर दीन्हा * पुनि सुरसरिमहँ मज्जन कीन्हा
करि बिनती सियनायहु शीशा * दीन मुदित मन गङ्ग अशीशा
तब प्रभु सखै कह्यो घर जाहू * बोला तब भीलन कर नाहू
जैहों जहँ तहँ तक पहुँचाई * फिरिहौं तब प्रभु कुटी बनाई
सुनि चलिभे प्रभु सहितहुलासा * त्यहि दिन भयो पन्थ में बासा
नौमी दिन तीरथपति गयऊ * तिरबेनी जल मज्जत भयऊ
बिप्रबृन्द सनमानि सिधाये * भरद्वाज के आश्रम आये
कीन दण्डवत सहित समाजा * उर लगाय बोले ऋषिराजा
आजु सुफल मम जप तप ज्ञाना * तीरथ बरत योग मख दाना
धन्य जन्म जगजीवन भारी * भयो कृतारथ तुम्हें निहारी
अब करि कृपा देहु बर मोहीं * काय बचन मन सुमिरौं तोहीं
जब तक तव पद प्रेम न होई * तब तक सुख न लहै नर कोई
अस कहि मधुर मूल फल दीन्हे * सबन सहित प्रभु भोजन कीन्हे
त्यहिनिशि रहिकरि प्रातस्नाना * मुनिहिं नाइ शिर कीन पयाना
ग्रामनिकट ज्यहि निकसहिं जाई * थकितहोहिं लखि लोग लुगाई
एक एक ते कहैं बिचारी * ये बालक बनयोग न प्यारी

दो० कोइ कह इनके मातु पितु, हैं कठोर मम जानि।
कोइ कह होयँ न होये हरि, निकसे मानि गलानि॥

कोई कह नृपसुवन शिकारी * वन बिचरत मिलिगे सुरनारी
कोइ कह बरबस भग कुमारी * हरि भागे वन भवन बिसारी
कोइ कह राम बाम लै रूरी * चढ़ि शम्भु पर बैर बिसूरी
कोइ कह विप्र शापबश आहीं * सिद्धिसमेत सिद्ध कोइ जाहीं
कोई कह ठग लिये ठगोरी * ठगतफिरत मन मतिकरि भोरी
कोइ कह ये सुकृती हैं कोई * निज परलोक सुधारत सोई
उदय भये कछु भाग हमारे * भरि नयनन जो इन्हें निहारे
यहि विधि की तर्कै करि भूरी * पूछे निजनिज जाइ हजूरी
कह्यो राम सतिबचन तुम्हारे * फलत भाग जस और हमारे
त्यहि अवसर तापस एक आवा * करि बिनती हरिधाम सिधावा

दो० मगवासिन सुखदेत इमि, उतरे यमुना जाइ।
मज्जनकरि हरि मखाहिं तब, बिदा कीन घरिआइ॥
चले लषण सियसहित प्रभु, करि यमुनहिं परनाम।
उतरे सीतहिं श्रमित लखि, बट तरुतर ढिगग्राम॥

एक अली लखि गइ निजगेहा * कहत सखिन सँ सोहित सनेहा
सखि यहि ग्राम पथिक द्वै आये * गौर श्याम छबिधाम सुहाये

दो० तिन सँग सुन्दरि एक जेहि, लखि लाजत जगसेव।
चारि सुमन फल चारि पशु, विहँग चारि श्रुतिदेव॥

सुनि पुरजन सब देखन धाये * उतरे प्रभु जहँ तहँ चलिआये
नखशिख सुभग स्वरूपनिहारी * सीताढिग आईं मिलि नारी
पूछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे * ये दोउ बालक कौन तुम्हारे
देवर लषण कह्यो सिय बैनन * निजपति प्रभुउ बतायो सैनन

कौशलपुर है इनकर धामा * नृप दशरथ के सुत अभिरामा
कारण कौन फिरत बनमाहीं * कोमल पद पदत्राणहु नाहीं
सासु सवनि कीन्ह्यो उतपाता * दिय बन बर्ष सात अरु साता
सुनिसियबचनसकलबिलखानी * बोली विधिगति जात न जानी
निपट निठुरचित करत जो भावे * नीके माहि जतूने लगावै
शशिशीतल घट बड सकलङ्की * गोमलकुबल किहिसि कटङ्की
रूख कल्पतरु जलनिधि खारा * नीचधनिक बड बिप्र भिखारी
इनकर रूप अनूपम कीन्हा * त्यहिपाछे कानन लिखिदीन्हा
जोपै इन्हें दिहिसि बनबासा * तौ कत कीन्हेसि भोग बिलासा
यहिबिधि कहिसब आपुसमाहीं * बोलीं पुनि रघुपति के पाहीं
आजु रहौ चलि हमरे धामा * आखिर रहा दिवस यकयामा
कह प्रभु हमैं दूरि है जाना * असकहि उठि बन कीन्ह पयाना
लखि सब लोग उठे अकुलाई * मनहुँ गई गृह सम्पति आई
दृगजल पूरि कहत करजोरी * फिरत करेउ इत कृपा बहोरी
हरिइच्छा जस समय बिलोकी * करब तथा थल पठये रोकी
प्रभुसियलषण जात इमि लागा * भक्ति सहित जनु ज्ञान बिरागा
मग में देखि ज्योतिषी कहई * राजचिह्न सब तुम्हरे अहई
सो बन बिचरत बिन पदत्राना * ज्योतिष झूठ हमारे जाना
बहुरि बिचार करहिं गनि आछे * होइ राज कछुक दिन पाछे
जो देखें सो सग सिधावें * धूमहि तब जन बहु समुझावें
जिन सियराम बटोही हेरे * भव दुख दूरि भये तिन केरे
अजहुँ जासु उर वह छवि आवै * निश्चय सो परधाम सिधावै
मग निवासकरि प्रात सिधाये * बालमीकि के आश्रम आये
दो० कीन्ह दण्डवत मुनिहि प्रभु, लीन्ह बिप्र उर लाय ।

लषण राम सिय रूप लखि, भये मुदित ऋषिराय ॥
कन्दमूल फल अमी सम, दीन्हे करि सनमान ।
भोजन करि परितृप्त ते, बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुरदश बरष मो, वन दीन्ह्यो महिपाल ।
सुथल बतावहु निरविघन, तहां रहौं कछु काल ॥
कह मुनि नाम नरेश शिर, धरहु करहु निजतन्त्र ।
अद्भुत चरित तुम्हार लखि, को न भूलिहै मन्त्र ॥
अकथ अलौकिक रूप तव, तर्कि सकै नहिं केउ ।
जानै सोइ करि कृपा तुम, जाहि जनावो देउ ॥
निज रहिवे हित बेश्म जो, पूछेउ सो सुनिलेहु ।
कहैं सुनै तव चरित जे, तस्य हृदय तव गेहु ॥
मन्त्रराज तव जपहिं जे, रटैं निरन्तर नाम ।
निर्द्वन्द्वी निस्पृह सदा, तस्य उरसि तव धाम ॥
परत्रिय जानैं जननि जिमि, परधन गरल समान ।
सम लोष्टा सम काचनहिं, तस्य मनसि तव थान ॥
जाति पाँति धनधाम तजि, तुम्हैं रहैं लवलाय ।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सियासहित दोउभाय ॥
जिनके मान न मोह मद, तव दासन में नेह ।
काम क्रोध कटु रहित जे, ते मानस तव गेह ॥
तव उच्छिष्ट भोजन करैं, तव प्रसाद पट लेहिं ।
बसहु तासु उर राम जे, क्षुधितहि भोजन देहिं ॥
दुख सुख समुझैं एकसम, शान्त शुद्धचित मौन ।
जगत रीति ते रहित जे, तस्य उरसि तव भौन ॥
षट बिकारमय बपु लखैं, आतम रहित विकार ।

करैं सदा सतसंग जे, तिन उर भवन तुम्हार ॥
श्रीमम गवँ गुरुचरण, नावँ द्विजपद माथ ।
वरणँ नामप्रभाव नित, तहाँ बसहु रघुनाथ ॥
तप तीरथ व्रत दान करि, मांगहिं तवपद प्रीति ।
बसहिं तस्य उर पद्म जे, चले रागरस जीति ॥
औरहु इमि बहु आश्रम अहई * बसेउ राम तुम लखि सुख तहँई
यहिअवसर ममसुथलजोचहऊ * तो चलि चित्रकूट में रहऊ
वरणत सुर मुनि सन्त विधाता * चित्रकूट चिन्तित भलदाता
भले राम कहि कीन पयाना * आइ कीन पयसरि अस्नाना
हरिदिन कामद गिरि प्रभु आये * समाचार सुर सन्तन पाये
आइ सबन पद नाये माथा * नाथ आजु हम भये सनाथा
परणकुटी युग सुभग बनाई * निज निज लोक गये सुखपाई
पुनि सुनि आये कोल किराता * कन्द मूल फल धरि धरि पाता
देहिं भेट उनहारि उनहारी * निरखि रामछवि होहिं सुखारी
करि सनमान राम बैठारे * तिन तब प्रभु ने बचन उचारे
पतितजानि प्रभु दरशन दीन्हो * हम सब धाहु कृतारथ कीन्हो
अब तुम रहैं बसहु सब मासा * सकल भाँति कर अहै सुपासा
इन तब दास सहित परिवारा * आयसु देत न करब विचारा
करि परितोष बिदा प्रभु कीन्हे * चले भवन नरगन चित दीन्हे
जबते राम बसे बन आई * तबते भयउ सकल सुखदाई
फूलहिं फलैं विटप बहुभाती * सुरतरु सम बिहरन अरिपाती
दो० करि हरि कपि वृक कोल मृग, बिचरत बैर बिहाइ ।
प्रेमविवश चलि जाहिं तहँ, जहँ रघुलाल रहाइ ॥

गीतिकाछन्द ॥

चलि जाहिं जहँ तहँ बन्धु दोउ तब देखि सुर तापस कहैं ।
ये अहैं बडभागी सकल जे प्रभुइ अवलोकत रहैं ॥
हिमशैल सुरतरु जह्नुजा गिरि गहन पयसरि देखहीं ।
तहँ भाग्य जानहिं तुच्छ आपहि तिन्हैं बडकरि लेखहीं ॥

इति श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेरामाचित्रकूटागमन त्रयोदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वरणौं मानस मल कछुक, अग्निबेशकृत आनि ॥
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे, सो मैं कह्यों बखानि ।
अब सो सुनहु सुमन्त्र जिमि, अवध गये दुख मानि ॥
केवट ह्वै हरि ते विदा, जब आयो निज ग्राम ।
देख्यो परे सुमन्त्र महि, रटै राम हा राम ॥
जाइ निषाद विषादबश, लीन्ह्यो गोद उठाय ।
चाचि चढ़ाये रथबिषे, बहुत भांति समुझाय ॥
लीन्हे सेवक बोलि निज, दीन्हे करि तिनसाथ ।
चलतनहय हिंहिनातदिशि, देखि देखि रघुनाथ ॥
इतउत ऐंचत अटत मग, लेत जो हरि को नाम ।
चितवततय हितनहरि दिवस, पहुँचे कोशलग्राम ॥
पुरप्रबेश नहिं करि सकत, तकतसचिवनिशिओर ।
जैसे जाइ चोराइ गृह, सबकर समझा चोर ॥
मनमें करत बिचार य्वाहिं, देखि पूछि हैं लोग ।
कौन उतरु देहौं तिन्हैं, नृप रानिन तब भोग ॥
निकसतनिठुर न प्राणमम, रहत कौन सुखलागि ।

धृग, जीवन रघुबीर बिन, जरत न वपु विरहागि ॥
उभय घरी निशि गत गये, कौसल्या के धाम ।
सुनि नृप उठि उर लाइ कह, कहु सुमन्त्र कहँ राम ॥
तब सुमन्त्र बोले समुझि, धीर धरहु उर नाथ ।
हानि लाभ जीवन मरण, दुख सुख सब के साथ ॥
सबको कीन्ह प्रणाम प्रभु, सीता लषण समेत ।
आपु गये बन बचन लागि, मोहिं पठै दुख हेत ॥
सुनि महिपाल बिहाल ह्वै, गिर्यो धरणि पछिताइ ।
अन्ध शापकी सुरति करि, कही सबन समुझाइ ॥
क्षत्रियबिश्व देवान्धमुन, श्रवण बध्यो जगजानि ।
तजिहौतन सुताबिरह हमि, दिहिनि शाप दुखमानि ॥
पतङ्गिका के पूछमे, सींक चलाई जौन ।
लह्यो तासु फल महामुनि, शूल तहा हम कौन ॥
कढ्यो शम्भुको लिङ्ग जहँ, जलआमन को माथ ।
मिटत कर्मबश भानुजहँ, तहँ हमका रघुनाथ ॥
सत्य कहत श्रुति कर्मबिन, भोगे छूटत नाहिं ।
रामरटनि ते मिटत जिमि, चूनापारि निशि माहिं ॥
राममात बोली बिलखि, नाथ धरहु उर धीर ।
तौ मिलिहैं सियराम फिरि, शोभ सुनिय रघुबीर ॥
हायराम सिय लषण कहि, हाय राम बश शोक ।
तृणसमहरिहितत्यागितनु, भूप गयो सुरलोक ॥
लगि लागीं रोदन रवनि, गुण बल तेज बखानि ।
बिलपहि दासी दास सब, पुरजन परिजन जानि ॥
यहिबिधिबीती रानि सब, प्रातकाल मुनि आइ ।

शोक मिटायो सबन कर, विविध प्रसंग सुनाइ ॥
कह बशिष्ठ मन धीरज धरहू * धर्म विचारि शोच परिहरहू
जो जनमत सो मरत विशेखी * देह दशा यह अघटित देखी
कनककशिपु हिरण्याक्ष सरीखे * गुणिनकेर गुण गुणियत लीखे
सगर सहसभुज आदि नरेशा * सुमिरन मात्र रह्यो अतुलेशा
जिनके रथ पहियन ते सागर * भयो सो भये कालवश नागर
पूर्व कर्म अनुसार जहाना * हरत मौत करि विविध बहाना
प्रथम सृष्टि जब रची विधाता * लहै न कोइ तहँ जीव निपाता
तब रचि मौत बधायसु दीन्हा * अयशामपुन्कित्यहि रोदन कीन्हा
आँशुन ते भय रोग घनेरे * वह विधि ये सब सचर तेरे
इन के ओट हरौ तुम प्रानी * करत सोइ विधि आज्ञा मानी
दो० मेदिनि मेरु अजादि सुर, सो इक दिन नशिजात ।
गज श्रुतिसम नर आयुचर, ताकी कौन बिसात ॥
लही बडाई भूपवर, हरिहित परिहरि देह ।
पटविकार परते परे, आतम आनँद गेह ॥
छेदिसकै नहि शस्त्र ज्यहि, पावक सकै न जारि ।
मारुत सकै न शोष यहि, वोरि सकै नहि बारि ॥
जिमि विहाइ जीरणवसन, धारत मनुज नवीन ।
तिमि देही तनु जीर्ण तजि, नूतन गहत प्रवीन ॥
आदि अन्त अव्यक्त है, मध्य जासु कछु व्यक्त ।
तेहि आतम के हेतु की, करहु कल्पना त्यक्त ॥
रोये जो मिलिजाइ त्यहि, रोवै भले पुकारि ।
जो न मिलै रघुनाथ तौ, धीरज धरै बिचारि ॥
सजन के संसर्ग ते, कस्य न मानस ताप ।

मिटी मिटतमिटिहै न सुनि, त्याग्यो सवन कलाप ॥
तेलनाव तनु राखि नृप, लिये दूत युग बोलि।
वेगिहि लावहु भरत कहँ, कहेउ न तुम कछु खोलि॥
चले चार इत पवन जिमि, उतै भरत दोउ भाइ।
दीख भयावन स्वप्न निशि, धावन पहुँचे जाइ॥

भूता दिन तहँ पहुँचे जाई * गुरु निदेश सुनि दूनहुँ भाई
चपल बाजि चढि तुरत सिधाये * कछु दिनस निजनगरहि आये
पुर प्रविशत भे अशकुन भारी * परे देखि सब जीव दुखारी
लोग मिलैं नहिं कुशल सुनावैं * गर्व व्वहारि व्वहारि सिधावैं
गे चलि प्रथम केकयी गेहा * बैठारे तिन सहित सनेहा
पूछि कुशल निज नैहर केरी * बोले भरत तासु तन हेरी
भूप कहा सुरलोक पधारे * कारण राम बिरह के मारे
दुःख कि दंत रहे युवराजू * काहे न दिहिनि किहेउँ मैं काजू
कौन काज नृपपद तव हेता * लिहेउँ दिहेउँ राम बन चेता
राम कौन सुत सवति के जानी * सवति कौन कौसल्या रानी
बोलत कस कह राम सभाई * गे बन बन्धु सहित महिजाई
सुनि महि मुरछि गिरे दोउभ्राता * कहि हा राम लषण सिय ताता
हा पितु स्वर्ग लागि प्रिय तोही * रामहिं सौंपि गयउ किन मोही
हा सिय राम लषण मम पाछे * सहिहैं दुख बन मुनिपट काछे
हृ जननी तै अस बर मागे * हरे सबल सुख एकहि लागे
जो तैं यहै रहै उर धारे * जनमत मोहिं मारि किन डारे
राम सबहि प्रिय प्राण समाना * तैं किमि तिन्हैं कहे बन जाना
भूप प्रतीति कीन भल तोरी * गरणराल बछु भइ मतिभोरी
भूप लगाउ न दोष तुम्हारा * दुखकर मूल अभाग हमारा

अस दग ओट बैठु उठि जाई * त्यहि क्षण तहा मन्थरा आई
लखि रिपुदयन लात इकमारी * गिरी भूमि हा हाय पुकारी
पकरि केश इत उत घसिलावा * पर अपकार केर फल पावा
भरत मातु लखि दीन छुडाई * कौसल्या गृह गे दोउ भाई
राममातु उठि हृदय लगाये * जनु बन राम लषण फिरिआये
रोदन करि पुनि हाल सुबरना * रामगमन बन नृपति मरना
जन्ममरणफल भल नृप लीन्हा * म्वहिंबिधिबिरचिवअवरिदीन्हा
मातु गिरा सुनि दुखरस बोरी * बोले भरत बिलखि करजोरी
मातु मृषा म्वहिं बिधि जनमावा * मम पाछे सबहुन दुख पावा
केकयिसुत अपयश अधिकाई * मातुमते म्वहिं कौन बताई

दो० जो अघ गो द्विज मातुपितु, सत तिय मारे होइ ।
जो मम सम्मत होइ तौ, म्वहिं अघ लागै सोइ ॥
शिवनिरमायल पल भखी, मद व्यभिचारी चोर ।
जो गति पावै सोइ म्वहिं, मिलै मानि मत मोर ॥
जे श्रुतिनिन्दक हरिबिमुख, सतसगति न सुहात ।
तिनकीगतिम्वहिं मिलहिजो, होइ मोर मत मात ॥
मातु भरत के बचन सुनि, बोली शुचि सुखधाम ।
रामहि प्रिय तुम प्राण सम, तुम्हैं प्राणसम राम ॥

सो० तात मातुमत माहिं, तुम्हैं कहैं मतिमन्द ते ।
सुगति लहैंगे नाहि, अस कहि लिये लगाइ उर ॥

यहिबिधि बिलपत रैनिसिरानी * होत प्रात आये मुनि ज्ञानी
करि प्रबोध भरतहिं समुझावा * उठे तुरत गुरु आयसु पावा
नृपतन डालि बिमान बनाई * राखी मातु सकल समुझाई
गन्धसार समिधै बहुलीन्ही * दाहक्रिया सरयूतट कीन्ही

पाण्डुपीर वार्ते श्रुति रीती * दीन तिलाञ्जलि सचन मर्यादा
गोरपन ग्यारासि दिनजाना * कीन भरत दशगात्र बिधाना
द्विजहिं दान दीन्हेउ बहुभाती * तिसरे दिन भइ त्यरहीशाती
पितुहित भरतकीनि जसकरणी * सो मुख सहसहु जाइ न बरणी
दो० एकादिन गुरुजन सकल, जुरे सभामधि आइ।
शोच बिबश लखि भरत ते, तब बोले ऋषिराइ॥
चामरछन्द॥
सुवन सुनि लीजिये। सयन सुख दीजिये॥
दृगन जल पोछिये। नृपहि कत शोचिये॥
छं० शोचिय द्विज निज धर्म, त्यागि जो रहे विपरत।
शोचिय नृप नयरहित, सहिततम तोप पोप गत॥
शोचिय वणिक वजाइ, पाइ धन धर्म न ठानहिं।
शोचिय तिय पिय छलनि, शूद्र विप्रहिं अपमानहिं॥
शोचिययती बिराग बिन, तियनशोचिसबभांतिभल।
सुर दुर्लभ तनपाइ जिन, भजेउ न रामहिं छांडिछल॥
शोचन योग न जनक तुम्हारे * नीतिनिरत त्रिभुवनउजियारे
प्राण पुत्र तजि राखे वचना * अकर्टा प्रेम प्रीति की रचना
असजिय जानि शोच परिहरहू * पितुआयसु सो शिरपर धरहू
तुम्हें राज्य देगे नृप आनी * पालहु प्रजहि परमहित मानी
सुरपुर नृप परितोष पैहैं * राम लषण सिय सुनि हरषैहैं
यामें दोष न निगम बताबै * त्यहि पितु राज्य देइ सो पावै
सुनि सुमित्र कौसल्या बोली * गुरु आज्ञा सुत अहै अमोली
पुनिपितुवचन जाइ बलिअम्बा * होउ तात सबरा अवलम्बा
सुनि मृदुवचन भरत अकुलाने * बोले सबन नेह बश जाने

दो० यदपि मातु पितु गुरुवचन, बिन बिचार चहिं कीन ।
तदपि मोहबश उतरु मैं, देत क्षमहु लखि दीन ॥
प्रथम पिता प्रण पूर निबाहा * रामलषणसिय बन भल चाहा
जो मोहिं राज देत बरजोरा * यामें हित तुम्हार की मोरा
मम हितसों रघुपति पद सेवा * अपर उपाय न जानहुँ देवा
हित तुम्हार हमते किमि होई * केकयि सुवन जान सब कोई
ज्यहिउदगारिसबकादुख दीन्हा * कारण ते कारज कटु चीन्हा
मनसुखमूल सरिस दुखदायक * धर्मशील चाहिय नरनायक
तेहिते सबै कहौं शिर नाई * आयसु याहि देहु हरषाई
प्रातकाल रघुपति पहँ जावों * जरनि मिटै जब दरशन पावों
भरतबचन सुनि सब हरषाने * बोले मुनि तब परम सयाने
शोक सिंधु बूड़त अवगाहू * तुम अवलम्ब दीन सब काहू
मातुमते जो तुम्हैं बनाई * सो शठ कोटि नरक दुख पाई
अवशि चलहु बनजहँ अवधेशू * गे निज निज गृह पाइ निदेशू
भरतबोलि शुचि सेवक लीन्हे * भवनभँडार सौंपि सब दीन्हे
सचिवहि दीन तिलककरसाजू * बिपिन देउ गुरु रामहिं राजू
होत प्रात चढ़ि पुरजन याना * सबन कीन बन ओर पयाना
ज्यहि राखहिं गृहरक्षा हेता * सो कह हरि बिन जरे निकेता
शुक शारिका पिंजरन बोलैं * अधिक उचाट कपाट न खोलैं
चढ़िचढ़ि रथ ऋषिद्विजनसमेता * चले सकल बन रघुपति हेता
शिबिका सुभग समूह सँवारी * चढ़ि गवनी मुनितिय नृपनारी
जेष्ठादो बिबेक कहि सादे * भरत शत्रुहन चले पयादे
भरतहिं देखि लोग अनुरागे * तजितजि यान चलन पगलागे
दो० कौसल्यादिग जाइके, कह्यो चढ़ो रथ तात ।

समुझिपरत म्वहिं असनिरबहेऊ * रामकृपा मूरति तुम अहेऊ
बालक विधिसम सुयशतुम्हारा * हरण ताप तम पाप अपारा
भरिनयननछवि निरखितुम्हारी * हम आपनि बड़ि भाग्य बिचारी
दो० सब साधन कर फल लहा, लषण रामसिय दर्श।
तेहि फलकर फल अब भयो, भरत त्वया अस्पर्श॥
सुनि मुनिबचन भरत तव बोले * पुलकि गात जललोचन लोले
नाथ मोहिं नहिं पितुकर शोचा * नहिं दुखजिय जगकहै कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शङ्का * नहिंकछुडर बिधिभयो कि बङ्का
एकहि कष्ट हृदय मम भारी * लषण राम सिय होत दुखारी
यहि आमय की औषध आवे * तब कछु और बात मन भावे
कहमुनि करहु न शोच तुम्हारे * सब दुख मिटिहैं प्रभुइ निहारे
आजु होउ तुम अतिथि हमारे * भले नाथ कहि कटक सिधारे
तब मुनि करि विचार सुख पाई * ऋद्धिसिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा * हरषीं सकल पाइ बड़ देवा
प्रथम कनकमय महल सुहाये * कैयो योजन माहिं बनाये
दीन्ह्यो वास सुरुचि सब काहू * सुभग सेज स्रक सरसउ काहू
अशन बसन बर भोग अनेका * दिये तोपि तिन यक पर एका
दासी दास अप्सरा नाना * बाग तडाग विविध पौमाना
सुर दुर्लभ सुख लहि सब लोगा * बिसरे घर बन बिरह बियोगा
भरत बिलोकि मुनीश प्रभाऊ * भयो रामपद अधिकहु चाऊ
चक्रवाक सम रैनि बितायो * प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो
बर बिराग बिप्रेन्द्र निहारी * मुदित दिये सँग सेवक चारी
आयसु पाय सुसेन सिधाये * बीचबास करि यमुनहिं आये
रघुपति बरण निरखि बरबारी * हरषत भये सकल नरनारी

समुझिपरत म्वहिंअसनिरवहेऊ * रामकृपा मूरति तुम अहेऊ
बालक विधिसम सुयशतुम्हारा * हरण ताप तम पाप अपारा
मरिनयननछवि निरखितुम्हारी * हम आपनि बाडि भाग्य बिचारी
दो० सब साधन कर फल लहा, लषण रामसिय दर्श।
तेहि फलकर फल अब भयो, भरत त्वया अस्पर्श ॥
सुनि मुनिवचन भरत तब बोले * पुलकि गात जललोचन लोले
नाथ मोहिं नहिं पितुकर शोचा * नहिं दुखाजयजगकहै कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शङ्का * नाहिंकछुडर विधिभयो कि बङ्का
एकहि कष्ट हृदय मम भारी * लषण राम सिय होत दुखारी
यहि आमय की औषध आवै * तब कछु और बात मन भावै
कहमुनि करहु न शोच तुम्हारे * सब दुख मिटिहैं प्रभुइ निहारे
आजु होउ तुम अतिथि हमारे * भले नाथ कहि कटक सिधारे
तब मुनि करि विचार सुख पाई * ऋद्धिसिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा * हरषी सकल पाइ बड देवा
प्रथम कनकमय महल सुहाये * कियो योजन माहिं बनाये
दीन्ह्यो वास सुरुचि सब काहू * सुभग सेज स्रक सरसउ काहू
अशन बसन बर भोग अनेका * दिये तापि तिन यक पर एका
दासी दास अप्सरा नाना * बाग तड़ाग बिबिध पौमाना
सुरदुर्लभ सुख लहि सब लोगा * बिसरे घर बन बिरह बियोगा
भरत बिलोकि मुनीश प्रभाऊ * भयो रामपद अधिकहु चाऊ
चक्रवाक सम रैनि बितायो * प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो
बर बिराग बिप्रेन्द्र निहारी * मुदित दिये सँग सेवक चारी
आयसु पाय सुसैन सिधाये * बाँचबास करि यमुनहिं आये
रघुपति बगण निरखि बरवारी * हरषत भये सकल नरनारी

सुनि सुरपति उर धीरज आना * बरषि सुमन पदप्रेम बढ़ावा
पूजन प्रभु भरतहि चलिआये * नय निवासकरि प्रात सिधाये
सबके उर अभिलाष विशेखी * कब सियरामलषण मुख देखी
तब निषाद गिरिवरहि देखावा * प्रेममगन सबहिन शिरनावा
सुमिरत नाम दरशकी आसा * उभयकोस चलि कीननिवासा
प्रातकाल उठि चले विशेखा * इत सिय स्वप्न प्रात अस देखा
पुरजनसहित भरत जनु आये * सासु आनविधि सबदुख ताये
सुनि प्रभु कह्यो स्वप्नभलनाहीं * कीन स्नान शोच मनमाहीं
उत्तर दिशि देखी नभ धूरी * दुरे आइ खग मृग तहँ भूरी
तबतों चकित उठे रघुराई * आइ किरातन खबरि जनाई
भरत आगमन सुनि रघुबीरा * भये प्रेमबश पुलक शरीरा
पुनि मन शोच कीन रघुराऊ * उत सुगहिन इत बन्धु दुराऊ
बहुरि समुझि मन भये सुखारे * भरत कहै महँ अहैं हमारे
दो० लषण लख्यो प्रभु शोचवश, उठे धनुष शरसाधि।
बोले सन्मुख जोरिकर, महितक्रोध अहलाधि॥
नाथ कनक रसना प्रभुताई * पावत पुरु जात बौराई
बेनु नहुष भुजमहम सुरेशा * शशिनिशकुयशविदितत्रिदेशा
अरु कृतबीर्य दक्ष गति जाई * सुरती मे नहि सिन्धु समाई
भरत साधु बड़ रहे सयाने * तेउ राज्यपद पाइ भुलाने
बिपिन यकाकी समुझि सुहाये * करन अकण्टक राज्य सिधाये
जो मनमें यह बात न आवत * तौ केहि करिहरि कटकसुहावत
प्रथम मातुमिस किहिनि खुटाई * समय पाय फल लागत आई
भरतहि आजु सबन्धु प्रचारी * नाथ शपथ रण करिहौं मारी
अतिअपमान रजहि नहि सोहै * हम नृपतनय करावधु आहै

सुनत बचन लोकप भयमानी * तब तहँ भई गगन इमि बानी
ऐसे बल है तात तुम्हारे * परत्रुध करत न कछु अविचारे
सकुचे लषण राम सनमाने * तात बचन तुम सत्य बखाने
भरत सरिस शुचि बन्धु जहाना * भयो न अहै तात तन आना
गरुड़हिं चहु रजु अहि गहिलावै * गोपद बूड़ि घटज बरु जावै
भरतहि होय न नृप मद भाई * बिनशक्तिपयनिधि इपदखटाई
गुणअवगुणमयजगविधिकीन्हा * भरत हंसजल तजि पयलीन्हा
यहिविधि इत प्रभु करत बड़ाई * उतै भरत पय सरित नहाई
सकल समाज राखि तेहि तीरा * आपु चले जहं सिय रघुबीरा
संग निषाद नाथ लघु भ्राता * बिबिध कुतर्क करत मगजाता
कैकयिसुत लखि चहै तजिदेहीं * सेवक समुझि अपन करिलेहीं
तजेहु अतजेहु मोहिं गति याहीं * शिशुतजिमातुपितहिकितजाहीं
यहिविधि टरकत बड़न अधीरा * आगे चलि प्रभु आश्रम तीरा
फूले विटप अनेक प्रकारा * खग मृग मधुकर करत बिहारा

दो० पाकरि जम्बु तमाल चुत, तामधि बटतर श्याम।
तेहितर सरितातट बनी, परणकुटी अभिराम॥
बहु तुलसी तरु सुमनचरु, रुचिर बेदिका एक।
होत कथा नित आइ तहँ, बैठत साधु अनेक॥

थल शोभा जब भरत निहारी * मिटे सकल दुख भये सुखारी
चले प्रणाम करत दोउ भाई * पहुँचे जब रघुपति पहँ जाई
उठे तुरत प्रभु जब निहारा * कहुँ धनुशर कहु तूण बिसारा
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्यो * मिलननिरखिसुरजयजयकीन्यो
प्रीतिप्रतीति भरत रघुबर की * बिधिहरिहर सुरसकहिं न तरकी
सो केहिभाँति कहौं मतिथोरी * मिले लषण ते भरत बहोरी

रामं सखहिं भेटे हरषाई * मिले शत्रुहन प्रेम बढाई
केवट लषण शत्रुहन भेटे * पुनि दोउ बन्धु सियापद लेटे
दीन अशीष सहित बैठारे * भे अनुकूल बिलोकि सुखारे
तब केवट वर बचन सुनाये * प्रभु मुनि मातु लोग सबआये
गुरु आगमन सुनत रघुबीरा * गये जहां सरितट सब भीरा
मुनिहिं प्रणाम कीन्ह दोउभाई * प्रेम समेत लिये उर लाई
विप्र विप्र बनितन शिरनावा * आशिरवाद सबन ते पावा
आरत लोग समुझि सुरत्राता * पलमा सबै मिले दोउ भ्राता
पुनि देखी सब मातु बिहाला * प्रथम केकयिहि मिले कृपाला
पदपरि प्रभु तेहि कीन सुखारी * बहुरि सकल भेटी महतारी
मिले सुमित्रहि पुनि दोउभाई * कौसल्यै भेटे अकुलाई
दो० अतिसनेह बश मातु दोउ, बन्धु लिये उरलाय।
तेहिक्षण भयो बिलाप जस, तस कापै कहिजाय॥
सो० भेटि सबै दोउ भाइ, गुरुहि कह्यो पग धारियो।
मुनिकर आयसु पाइ, उतरे जल थल देखि रुब॥
द्विजगुरु-सचिव मातु लै साथा * आये निज आश्रम रघुनाथा
सिय उठि मुनिपद नायो माथा * उचितअशीष दीन्ह ऋषिनाथा
पुनि गुरुतियद्विजप्रियपदलागी * दीन अशीष सबन अनुरागी
सासुन-सकल मिली बैदेही * लखि लखि सबै लाइ उरलेही
तब मुनीश सब का बैठाये * प्रथम कछुक हरिचरित सुनाये
पुनि नृप सुरपुर गमन जनावा * सुनि सियराम दुसह दुखपावा
करहिं विलाप लषणयुत रानी * सो करुणा नहिं जाइ बखानी
तब विधिसुत दीन्ह्यो बहुज्ञाना * सबहिन जाइ कीन्ह असनाना
दशमी दिवस रहा तेहि चीन्हा * बरत निरजला-सबहिन कीन्हा

आनहिं जो आपि आयसु दिन्हउ * सो अब ताहिनर्याति ते रिहेऊ
करि पितुक्रिया वेद विधिहीना * मदन दिवसमे शुद्ध पुनीना
सो० परमपुनीता सोइ, कोउ न जानत तासु गति।
नरनाटक कृत सोइ, करत निजानुग भावयश॥
इति श्रीविश्रामसागरेश्रीरघुनाथदासकृतेत्रयदशोऽध्यायः ॥५८॥
दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, रामपागिरा सुखखानि।
वर्णौ मानस मत कछुक, अगिनिवेशकृतआनि॥
कोसलपुर वासी सकल, सुसमन्त्र परचत पास।
यमतकसतलगुलमतलरि, नमत जगतकी आस॥
तब रघुपति गुरु ते कह्यो, नाथ विकल सबलोग।
लखिमोहियुगसमजानपल, नहिंकालसक्षणयोग॥
बोले मुनि तुम सुनहु कृपाला * प्रथम लोग सब रहे विहाला
जबते कीन्हेनि दरश तुम्हारे * तबहीं ते सब भये सुखारे
तेहिते रहन कछुक दिन देहू * भले नाथ कहिगे निज नेहू
लागे रहन मुदित नर नारा * देखि शैल सब होय सुखारी
पयसरि करहिं निकालरानाना * कन्दमूल फल लेले नाना
कोल किरात मुदित लै आवें * धरि धरि आगे शीश नवावें
देहिं लोग धन लेहि न सोई * कहें हमार भला किमि होई
तुम सुकृती हम बनचर पापी * रामकृपा भय दरश कलापी
प्रिय पाहुन तुम सब सुखदाता * सेवा योग न कीन विधाता
फल दल लेहु दीनजन जानी * रंगित सासु प्रेम पहिचानी
सुनि मृदुबचन सकल अनुरागे * तिन के भाग सराहन लागे
प्रीति बिलोकि लेहि फलफूला * सुखीहोहिं तब लखिअनुकूला
यहिबिधि लोग सकलहरषाहीं * बासर बीति पलपसम जाहीं

सबके मन इच्छा यह होई * जहँ सियराम तहँ सब कोई
सिय करि सबसासुन पद सेवा * किहिनिसुवशकोइजान न भेवा
यहिविधिअधिवासरचलिगयऊ * द्वितिया दिन सब बटुरतभयऊ
भरत वशिष्ठ राम मुनिरानी * निजमतिसरिस कहैं सब वानी
तेहिक्षण जनक दूतपुग आये * प्रभुइ देखि भे दुखित सुभाये
बूझत गुरु विदेह कुशलाई * बोले तब सुचार शिर नाई
प्रभुअबकहहुकुशल किहिलागी * कुशल हेतु सो भयो विरागी
नतरु कुशलगो अजसुत साथा * मिथिलायुत भइ अवध अनाथा
नृप परलोक सुना जब राजा * भये बिकल तब सहितसमाजा
दो० पुनि धीरज धरि अवधपुर, दूत पठाये चारि ।
खबरि कही तिन आइ तब, आपुहुचलेबिचारि ॥
किहिनि निवास न मगकहू, चलतभये दिनतीनि ।
आइपहूचे खबरिहित, तब रवाहि आज्ञा दीनि ॥
जनकागमन सुनत रघुबीरा * आनन चले सङ्ग बहु भीरा
पुरजन सुनि सब भये सुखारी * कहैंकि रहब बहुरि दिनचारी
गिरिवर देखि जनक रथत्यागा * कीन प्रणाम सहित अनुरागा
मगश्रम रवल्प न काहू पावा * मनु प्रभु पास प्रथमहीं आवा
इत उत लोग सकल नियराने * लागे मिलन प्रेमरस साने
जनक मुनिनपद नायउ माथा * ऋषिन प्रणाम कीन रघुनाथा
मिले विदेहैं बन्धु समेता * लै आये सहप्रीति निकेता
दोउसमाज मिलि भये बिहाला * रह न ज्ञान धीरज तिहिकाला
भूप रूप गुण शील बखानी * रोवहिं सकल बिकल नृपरानी
रामहिं देखि अधिक उर दाहा * हाय बामबिधि कीन्हें काहा
सुर नर मुनि सब भये दुखारी * नृप विदेह की दशा निहारी

भाइ विवश भे जनक सुजानी * यह रघुपतिपद प्रीति पिछानी
जप तप योग विरति विज्ञाना * रामप्रेम बिन व्योम समाना
मुनिवर सबहिं बोध बहु दीन्हा * रामघाट तब मज्जन कीन्हा
उतरे राम जहँ नह जल तीरा * त्यहिदिन सकल रहे निरनीरा
प्रात मवन उठि पुनि सनाना * कोल किरात बात सुनिजाना
कन्दमूल फल सरस सुहाये * भरिभरि भार भूरि भट लाये
मुनिवर पठे जनक पहँ दीन्हे * सन्तसहित नृप पारण कीन्हे
यहिविधि भे तन बासर चारी * प्रभुहि देखि सबलोग सुखारी
दो० दोउसमाज कहँ नारिनर, अब न जाय घर दूरि।
सियरघुपतिसँग रहब बन, सुरपुर ते सुख भूरि ॥
ज्येष्ठशुक्र जिष्णुगदिवस, जनकराज रनिवास।
आयहु सुनि सबकौशलहिं, जहँसियकी सबसास ॥
कौसल्या सादर बैठारी * भरत नयनजल सकलदुखारी
सियामातु बोली विधि करणी * परमकठिन कछु जात न बरणी
देखहु विधि बायस बहुतेर * मधु मराल कहुँ मिलन न हेर
जस विवाह उछाह अपारा * कहँ वह सुख कहँ यह दुखभारा
लषणमातु कह ऐसे अहई * बालचरित सम कृत जो रहई
कौसल्या कह विधिहि न दोषू * निजकृत कर्म केर सब रोषू
म्वहिं न शोच भूपति कर कोई * नहि बनजात राम सिय सोई
गूढ़ सनेह भरत कर देखी * यहाँ एक म्वहिं शोच विशेखी
तेहि ते देवि कहेउ नृप पाहीं * बहुरे लषण भरत सँग जाहीं
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई * कहि शेष पर सकै न गाई
जप तप मोसे बदे महीपा * भरत भये हमरे कुल दीपा
कनक कसौटी चढ़ि खुलिजाई * पुरुष परखिये अवसर पाई

निचरवचन सकल बिलखानी * धरहु धीर पुनि कह्यो सुबानी
लखण मातु तब कह्यो सप्रीती * देवि दण्डयग यामिनि बीती
कौसल्या कह अब थल जाहू * हमरे तनपति हाथ निबाहू
सुनि बोली अस काहेन कहहू * राममातु दशरथ प्रिय अहहू
अङ्गीकार करे गुरु जाई * तृण गिरिसम प्रतिपालत ताहीं
तबहित हरि कोउ का अनुसरई * रविसहाद कहे दीपक करई
दो० रामलषणसिय जाय बन, करि सुरमुनिको काज।
फिरि ऐहैं निज नगर तब, पैहं त्रिभुवन राज॥
याज्ञवल्क्य नारद असि काहा * झूठ न होव सत्य हम चाहा
असकहि सियहित विनयसुनाई * आई निजथल करत बड़ाई
प्रियपरिजनहिं मिलीजसिसीता * भे सब बिकल मोहमद जीता
जनक सियहि उरलीन्ह्यो लाई * बोले पुनि धरि धीरज राई
पुत्रि पवित्र दुऊ कुल कीन्हो * पावन सुयश सकल उरलीन्हो
सुनि पितुबचनसियासकुचानी * रनिरहे भल यहा न जानी
लखि रुख भे प्रसन्न पितु माता * पठ.ान तब तहं भेंटि सुगाता
सियामातु तब पतिहिं सुनाई * कौसल्या कृत भरत बड़ाई
सुनि पुलकित तन बोले राऊ * ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ
हम बशिष्ठ मुनि बहु अवगाहा * मिली न भरतबुद्धि की थाहा
योग भोग युत नय मय राऊ * किमि जानों हरिजनकर भाऊ
भरतभाग्य गुणशील विचारा * शेष कहैं पर लहैं न पारा
महिमा भरत केरि सुनु प्यारी * जानैं राम न सकैं उचारी
तो फिरि अपर सकै को गाई * चिरिया उर कहुं सिन्धु समाई
दो० लषणहि फेरहु भवन तब, कहो भरत बनजान।
जो मैं पावहुँ थाह कछु, प्रीति प्रतीति असमान॥

राम भरत कै बात प्रमाना * जानैं राम भरत नहिं आना
इमपि भरत की करत बडाई * हर्ष सहित सब रैनि बिताई
प्रातकाल करि मज्जन नीरा * जनक बशिष्ठ भरत रघुबीरा
कौशिकादि पुरजन अधिकाई * बैठे सब बटतरु तर आई
बोले तब राघव ऋषि तेरे * नाथ सहत दुख लोग घनेरे
जो आयसु मोहिं होइ गुसाईं * सो मैं करौं दास की नाईं
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा * कस न कहौ यहिबिधिमहराजा
असकहि बहुरि भरतते भाषा * कहो तात निजमनअभिलाषा
बोले भरत जोरि कर दोऊ * अवसरसमुझि कहत सबकोऊ
बैठे जह प्रभु त्रिभुवन त्राता * पुनिकौशिकमुनिउभय बिधाता
तुम प्रभु बिधिगति छेकनहारे * सचिव जनक तुम ठौर हमारे
औरहु ऋषि बैठे बहु ज्ञानी * तहहौंलघु किमि सकहुँ बखानी
जो तुम सबकर आयसु होई * सोइ हित मानि करै सबकोई
कह मुनि ममसम्मत सुनिलीजे * जो कछु राम कहैं सोइ कीजे
त्रिगुण आदिदे जहलगि प्रानी * रामरजाय सबन शिरजानी
कौशिक सचिव भरत सबिदेहा * सबनकहेउ भल सम्मत एहा
जानि राम निज ऊपर भारू * बोले पुनि मुनिते श्रुतिसारू

दो० नाथशपथ सुनि सोहजग, भरतसरिस शुचिभाइ।
भयो न है नहिं होन अब, बहुत कहौं का गाइ॥
जो गुरु पदरज शिरधरै, लोक बेद बड़तौन।
तेहि पर रौरेकी कृपा, भरत सरिस जगकोन॥

मुखपर क्यहिबिधि करौं बड़ाई * सकुचतिसुमति समुझिलघुमाई
भरते पोच कहै जो कोई * महामूढ़ पापी है सोई
मातहि दोष देइ सो मूढ़ा * जानि न जाइ ईश गति गूढ़ा

मातन में अतिप्रिय स्वइ माता * माइन मे प्रिय भरत सुभ्राता
भरत देइँ ग्यहि आयसु जोई * शम्भु शपथ मैं करिहौं सोई
सुनि प्रभु बचन डरे सुरराई * पठवत शारद सो नहि आई
तब बासव शठ पर अपकारी * निजउचाट सवन शिरडारी
जनक भरत मुनि सचिवैत्यागी * सुरमाया सो सबके लागी
मन उचाट भये सब केरे * नथ सुहात घर नथ बन हेरे
दो० बोले तब मुनि भरत ते, तात कहो अब सोइ।
ज्यहि ते यावत जीवजग, सबहिनकर हित होइ॥
सुनि मुनिते बोले भरत, देव कह्यो सतिभाव।
मैं जानत निजनाथ कर, अतिशय सरलसुभाव॥
जननि जनक सोदर सखा, सेवक सचिव परोस।
काहु न देख्यो आजुतक, प्रभुकर बदन सरोस॥
सब पर कृपा कटाक्ष लखाई * तदपि प्रीति मोपर अधिकाई
शिशुगन मे खेलत प्रभु सङ्गा * कबहुँ न किहिनि मोरमन भङ्गा
जो कछु बस्तु अनोखी पावें * मोहिं दिये बिन आपु न खावें
मैं आजतक अतिपृथु जानी * प्रभुसम्मुख कछु बात न ठानी
निशिदिन रहीदरशअभिलाखा * सो सनेह बिधि मोर न राखा
सेवक धर्म स्वामि सेवकाई * सो तजि गयो करन अधमाई
पुनि प्रभु मातु पिता गुरु बानी * परिहरि पहुचेउ पासअमानी
ऐसेउ अब प्रभु गने न राई * शरणजानि लीन्ह्यो अपनाई
ऐसे प्रभुहिं न हौं अनुसरहू * सेवक ह्वै सम्मुख हट करहू
दो० निज स्वारथहित स्वामि ते, हठै सो सेवक पोच।
जो स्वहि आयसु देहि प्रभु, सोइकरौं तजि शोच॥
सुखद बचन सुनि सब हरषाने * भरतहि धर्मधुरधर जाने

राम भरत ते वचन उचारे * तात रहत महि पुण्य तुम्हारे
जो हमहीं पर राख्यो बाता * तो अब कहौं सुनो हे ताता
जो प्रथमे पितु आयसु दीन्हा * हमैं तुम्हैं सोइ चाहिय कीन्हा
जिन गुरु पितुपतिगिरा न धारी * तिन जानहु तेहि राखो मारी
अस जियजानि मानिहित भाई * पालहु प्रजहि अवधिभरिजाई
होइहि तुम्हैं न लेश कलेशू * शिरपर गुरु सुमन्त मिथिलेशू
मइ विपिनरहि अवधि बिताई * एहौं सपदि भवन सुखपाई
दो० सुनि रघुपति के बचनमृदु, भा भरतै सतोष।
मनहुँ लह्यो फल जन्मकर, मिटे सकल दुखदोष॥
बोले बहुरि जोरि युग हाथा * तिलकसाज सब लायो नाथा
सो अब कहा करिय रघुबीरा * कह प्रभु चलहु चलो ऋषितीरा
अत्रै मुनि जह देइँ बताई * तह धरिदेहु काम फिरि आई
अस कहि चलेगये मुनि धामा * करतभये सब दण्डप्रणामा
आदर करि मुनिवर बठारे * भरत अत्रिते बचन उचारे
नाथ नीर सब तीरथ केरा * धरिय कहा सो करहु निबेरा
कह मुनि है यक कूप रसाला * लोपत सोपि न कौन्यउकाला
ताही में जल राखहु ताता * सुनि तव भरत कीनि सोइबाता
भरतकूप कहवावत सोई * पावतजल निरमल मन होई
दो० पुनि प्रभु ते बोले भरत, नाथ जो आयसु होय।
आवहु तीरथ देखि सब, राम कह्यो भल सोय॥
पाइ रजायसु चले तब, जहा जहा चलिजात।
नेम प्रेम लखि भरतकर, मुनिजन मन सकुचात॥
पांच दिवसमें सकलवन, देख्यो भरत ढिढोरि।
हरिदिन प्रातस्नानकरि, प्रभु ते कह्यो बहोरि॥

दीजै मोहिं अधार कछु, ज्यहिलखिअवधिसिराय।
सुनि दीन्हीं निजपादुका, भये मुदित मन पाय ॥
जननिजनकगुरुसचिवप्रिय, पुरजन सखासुभ्रात।
भेटि सबन कीन्हें बिदा, चले सकल बिलखात ॥
त्यहिक्षण माया सुरनकी, सब का भई सहाय।
नाहित रघुपति विरह ते, घर न सकतकोउजाय ॥
बैठे प्रभु सिय अनुजयुत, परणकुटी के माहि।
करत बडाई भरत की, इत बरणत सब जाहिं ॥
त्यहिदिनरहियमुनानिकट, उभयभील पतिग्राम।
तीसर वासा गोमती, चौथल अवधमुकाम ॥
भूतादिन आये अवध, जनक रहे दिनचारि।
जहँतहँ सबनि बसाइ के, निजपुरगये सिधारि ॥
भरतसुदिवसशुधाइके, पुनि गुरुआयसु मांगि।
सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारी अनुरागि ॥

गीतिकाछन्द ॥

बैठारि प्रभुपदपादुका शिरनाइ अनुज बुलाइकै।
सौंपाइ पुरजन मातु सब तब आपु आयसु पाइकै ॥
पुरदक्षिण ओजनएक नन्दिग्राम गुफा बनायहू।
लागेरहन फलपातभखि जग भोग सब बिसरायहू ॥
सुनि अवधसुखसुरराजलाजत धनद धनलखिरागहीं।
त्यहित्यागिदीन्ह्योभरतकिमिजिमिमधुपचम्पकबागहीं ॥
रघुबीरप्रियपुनि बन्धु त्यहि जड़ मोहिमायाकिमिसकै।
जे अहैं सम्मुख रामके तेउ तासुतन नाहीं तकै ॥
यह भरत चरित पुनीत पावनकरन मुनि बर्णनकर्‌यो।

रघुनाथ करि सक्षेप कछु बिश्रामसागर मे धस्यो ॥
कहिहहिं जे सुनिहैं मुदित तिनकी प्रीति प्रभुपदथाढिहै ।
नाशिहैं सकलदुख रामधाम न जात कोऊ भ्राविहै ॥
दो० श्रीगुरुदेवादास के, चरणकमल धरि माथ ।
भरतचरित्त सक्षेपकरि, कहा कछुक रघुनाथ ॥
सो० हरिहरजन गुण गूढ़, मूढ़ न लखैं बिमूढ़बिन ।
जिमि सश्रित आरूढ़, मूढ न जानत जीवगति ॥

इति श्रीबिश्रामसागरेऽयोध्याकाण्डेषोडशोऽध्याय ॥ १६ ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं नाटकमत कछुक, आदि रमायण जानि ॥
भरत चरित्र कहे कछु ताता * अब सुनिये रघुपति की वाता
सीता अनुज समेत कृपाला * बसत कामता पर सब काला
चहुँदिशि सघनलता तरु नाना * मनहुँ काम रति रचित बिताना
शीतल मन्द सुगन्धित बाऊ * डोलत बोलत बयकरि चाऊ
तामधि फटिकशिला अतिसोहै * उपमा देनहार अस कोहै
तहँ यकदिन प्रभु निजकर तेरे * चुनि प्रसून स्रक रचे घनेरे
सीतहि पहिराये सुखमानी * तिलककरनि किमि जाइबखानी
यहिप्रकार मिथिलेश कुमारी * प्रभुके अङ्गन सजे सँवारी
बैठे सहित सनेह जानकी * आश दोउदिशि प्रेम पानकी
करहिं प्रकाश पास मनि भारी * रही छिटिकि पूनो उजियारी
यहि निशि नारि जयन्ता केरी * आई तहँ लै सुमुखि घनेरी
रघुपति रूप विलोकि जुड़ानी * नृत्य गान कीह्यो कलबानी
मन भावन बर मागि सिधाई * सो सुधि कतहुँ जय तैं पाई
इर्षावश वायस बपु बनिकै * मारयो सियपद चगुल भरिकै
रुधिर देखि प्रभु तृण यक लीन्हा * ब्रह्ममन्त्र पढ़ि पाछे दीन्हा
त्यों त्यों भागत जात जयन्ता * त्यों त्यों बढ़त बाण बलइन्ता
दो० बज्री बेधा विरूपाक्ष, यक्षपादि सब पास ।
गयोदयो नहिं रहन क्यहुँ, किमपि जानिनिजनास ॥

सुखद दुखद द्विजात तब, जय शोयत रघुवीर।
विकलदेखिरथहि देवऋषि, कहि पठये प्रभु तीर॥
हूँ निराश दुरवासमम, आइ नाइ शिर वैन।
बोल्यो सम्मुख जोरिकर, जय प्रभु करुणा ऐन॥
जय जगजीवन जगतपति, प्रणतपाल तुम एक।
रक्षिसकत नाहिं विपति में, अपर जो ईश अनेक॥
दीनवचन सुनि शत्रु के, समुझि वाणगति भेद।
एकनयनकरि तज्यो त्यहि, जाहि न होइ फिरिखेद॥
यहि प्रकार प्रभु सहित सुपासा * शास्त मास तहँ कीन्ह्यो वासा
अवध लोग तह भेर रहावें * बीसक जाइ पचीसक आवें
तब प्रभु निजमनआन्यो ठीका * बनकर नगर गयो नहिं नीका
दो० मागि विदा सब ऋषिन ते, फारमास शुभ जान।
सहितलषण सियरामद्विधि, दक्षिण कीन पयान॥
प्रथम गये अत्रै भवन, कीन्हो दण्डप्रणाम।
लीनलाइ उर विप्र लखि, छवि पूजे सब काम॥
प्रमुदित आसनदीन शुचि, फल दल मूल पवाइ।
लागे पुनि अस्तुति करन, मुनिवर प्रेम बढ़ाइ॥
नाराचछं०। नमामि राम राघवेश देशनाथ नायकं।
महेश शेश ब्रह्म धर्म सेव्य मानदायकं॥
दयालदारिदुःख दोष दर्प दम्भ गञ्जनं।
मुनीन्द्रवृन्द भूमि साधु देव धेनुरञ्जनं॥
भजन्ति ये न ते पदारविन्दयाक्षि तर्कमं।
पतन्ति ते प्रभान्ति सश्रितादि अन्त नर्कमें॥
त्वमेक सर्व काल विश्वपालमुर्विजापति।

दद्यामि जे त्वदाश्रितं सुयोगि दुर्लभं गतिं ॥
अनूप श्यामसुन्दरं स्वरूप कोटिकामते ।
चरन्ति शक्ति सानुजं परार्थ स्वर्गनाश्रिते ॥
स्वच्छन्द सानुकूल उक्त गुन भक्तवत्सलं ।
भवाब्धिमध्यगें सदा वसन्ति बुद्धि निर्मलं ॥

सुनि मुनिविनय राम सुखपावा * तब सियमुनितियपद शिरनावा
अनसूया लखि मिली सयानी * दीन अशीश सुखद जसि रीती
उप पसारि पट भूषण काढे * जे पाये हरि ते निज गाढे
सीतहि पहिराये हित जाती * रहत नवल नित बोली बानी
सुनु स्वामिनि जगभामिनिफेरा * पतिही देव न दूसर हेरा
अन्ध बधिर किन होइ निकामा * करि अपमान पतें तम बामा
पतिव्रत करै छांडि छल जोखा * बिन श्रम परपद लहे न धोखा
तुम्हैं प्राणप्रिय राम सुजाना * यामें जगहित कीन बखाना
सुनि सिय सुखलहि नायो माथा * तब मुनि ते बोले रघुनाथा

सो० नाथ जाउँ बन आन, आयसु दीजे जानि जन ।
सुनि मुनि-परमसुजान, नाइ शीश बोले बहुरि ॥

दो० तुमसम नाथ न नाथ कोउ, सुन्दर सरल सुभाव ।
मैं सेवक कैसे कहौं, नयन श्रवण ले जाव ॥
मुनिपद पङ्कज नाइ शिर, विनयवचन बहुभाखि ।
चले लषण सियसहितप्रभु, निजमूरति उरराखि ॥

प्रभुहि चलत लखि गिरिमग देहीं * घनसुछाइ महिमृदु ह्वै लेहीं
जहँ तहँ मुनि आश्रम बहु भावैं * जाइ जाइ सबके शिर नावैं
पूजैं सकल सुकृति भव भाती * चलैं प्रातबसि सुथल सुराती
खग-जग मृगवासी लखि कहहीं * सुतिमा भवन प्रवन ये अहहीं

निदरि गये गुण कहि विभूरी * जब ते देखे पथिक इहूरी
तन ते भागत मननाचे श्रटरा * खरगोष्ठ नहि लागत लटका
यहिविधि बन नागत प्रभु जाहीं * मिला विराध असुर मग माहीं
महाविशाल रूप विकराला * हाथ त्रिशूल गहे मृगजाला
प्रभुः पेखि बोला कुविचारी * साधुभेष तुम हौ छलकारी
हरि आन्यो काहू की बामा * लिहे फिरत बनसंग ललामा
असकहि गहिसियसदहिसिधारा * लखि रघुवीर दुसह दुख पावा
दो० प्रभुइ श्रोधहिं लषण तब, छाडे विशिख कराल।
उर लागत भो विकल तजि, सिय धावा जनु काल ॥
धावत लखि त्यहि देव डराने * खग मृग मुनि ले जीव पराने
गिरिसम बपुष बेग पवमाना * फूटहिं पवि टूटहिं तरु नाना
लषण मारि तन जर्जर कीन्हा * महिगिरि उठतमरतनहिंचीन्हा
तब प्रभु मुनिशर मारि गिरावा * दिव्यदेह दे स्वपद पठावा
अस्थितासु खनि गाड़ि कृपाला * सीतै लै पुनि चले रसाला
सुरपति ले तह स्यन्दन आये * करि प्रणाम निजलोक सिधाये
विचरत प्रभु सिय लषण समेता * पहुंचे ऋषि शरभङ्ग निकेता
निरखि रामछबि अतिसुखमाना * मनहुंक्षुधितलहि अशनप्रधाना
करि हरि विनय भक्तिवर मागी * योगानल तनु तजि बडभागी
चढ़ि विमान बैकुण्ठहि गयऊ * भेदभक्ति हित मोक्ष न भयऊ
आगे मुनि बहु मिले प्रवीना * भेटि भेटि सबका सुख दीना
सो० कुम्भज शिष्य सुजान, नाम सुतीक्षण रामजन।
प्रभु आवत सुनि कान, धायो करत मनोरथ बहु ॥
दो० बिसरी तनसुधि प्रेमलखि, उर प्रकटे सियराम।
गौर श्याम बहु काम छवि, निरखिलह्योबिश्राम ॥

पुनि प्रभु तिनढिग जाइ बखाना * उठहु प्राणप्रिय विप्र सुजाना
उठत न जब जान्यो भगवन्ता * भये चतुर्भुज हृदय तुरन्ता
रामरूप जब उर नहिं देखा * उठेविकलजिमिमणिबिनशेखा
आगे सानुज सिय रघुराई * लखिहरष्योजिमि गतनिधिपाई
कीन्हि दण्डवत प्रभु उर लाये * आश्रम आनि पूजि मनभाये
करि विनती माग्यो वर एहा * बढै नाथपद नित नवनेहा
सीता लषण सहित तुम स्वामी * बसहु स्वान्त मम अन्तरयामी
एवमस्तु कहि राम सिधाये * मुनि समेत कुम्भज पहँ आये
राम प्रणाम कीन ऋषि देखी * लिये लाय उर प्रेम विशेखी
कुशल पूछि आसन बैठारे * पूजन करि मृदु वचन उचारे
आजु भयो म्वहिं आनँद कैसे * चातक पाइ स्वाति जल जैसे
बैठ प्रभु सब दिशि मुनि वृन्दा * चितवैं मुख चकोर जिमि चन्दा
कह हरि मन्त्र देहु म्वहिं वाही * ज्यहिते मुनि मारौं सुरद्रोही
बोले मुनि म्वहिं बूझत काहा * तुम्हरे भजन ज्ञान कछु लाहा
ज्यहिवश सुरमुनिअजत्रिपुरारी * सो माया किंकरी तुम्हारी
काल कराल सकल जग खाई * सो तव डर डरपत रघुराई
ते तुम बूझत मनुज समाना * दीन्हो मोहिं सुयश मैं जाना
ऐसे आप अनुग हितकारी * तिन्हें त्यागि सुर अपर सँभारी
भवनिधि पार चहैं पुनि लीना * श्वानपूछगहि जिमि मतिहीना
पर वह पार न पावै कवहीं * तिमि तवभजनविना नर सबहीं
देहु सुभक्ति मोहिं रघुराई * अब सो कहउँ बसहु जहँ जाई

दो० पञ्चवटी गुणगण जटी, टटनि टटी नटरास ।
अघटघटी दुख सुखपटी, कुटी करौ तहँ वास ॥

सो० दण्डकनृप मुनि जात, भोगोंसुनि दियशापतिन ।

गिरि बालू दिन सात, जरेउ देश सो रक्षिये ॥
मुनि अनुशासन पाइ, पञ्चवटी सिय अनुजयुत ।
आये कौसलराइ, भे प्रसन्न शोभा निरखि ॥
कुं० राम लषण सियपद परस, मिटी शाप ऋषिकेरि ।
भयो दिव्यबन बिटप तहँ, मिले गीधपति हेरि ॥
मिले गीधपति हेरि, पिताइव प्रीति बढ़ाई ।
गोदावरी समीप, रहे दल कुटी बनाई ॥
कुटी डारि जबते परे, सरे सबन के काम ।
बरणि सकै को तासु यश, जहँ राजैं नित राम ॥
आवैं तहँ अनेक ऋषिराजा * होइ सदा सतसङ्ग समाजा
एक दिवस लक्ष्मण शिरनाई * बोले प्रभु ते आयसु पाई
नाथ बात सब बिधि तुम जानौ * मैं पूछौं संक्षेप बखानौ
जग समुद्र मधि को आधारा * गुरु कृपालु पदपोत निहारा
गुरु सो जो देवै हित बोधा * शिष्य सोन जो सुनै प्रबोधा
बेधित को बिगता अनुरागी * कौन मुक्ति बिराग जिन लागी
नरक सो कौन घोर निज देही * तृष्णा त्यागि स्वर्ग गत येही
तमोद्वार कि किंकर नारी * मोक्षमार्ग सतसङ्ग बिचारी
सोवत को जग रहे जे ढेरी * जागत कि सद् असद् बिबेरी
कौन शत्रु निर्मल मीता * सोई इन्द्र जिन्हि जिन जीता
रङ्क कौन कहहि तृष्णा वाली * धनी सो जो सब बिधि संतोषी
महाअन्ध सो जो मदनातुर * निज भल करै सोइ बड़ चातुर
समाधान को कहहि श्रुति बड़ई * पक्का वचन सुनै जो नहि टरई
मृतक कौन कहहि कीरति नाहीं * जीवत जासु सुयश जगमाहीं
दीरघ रुज कि यह संसारा * औषधि तासु अमूल बिचारा

दो० कोहौं आयो कहांते, कित जैहौ का सार।
को मैं जननी को पिता, याको कहिय विचार ॥

किं अनीति जहँ वेद विरुद्धा * परम तीर्थ किं निज मन शुद्धा
विन प्रतीति को कञ्चन काता * सेवा करन योग को साता
किं ज्वर चिन्ता चितकी जानो * शठ को जो विन धर्म पिछानो
लाभ कौन बडि भक्ति हमारी * हानि न भज्यो मोहिं तनुधारी
कोवा शूर स्वभावै जीते * भूषण किं जो शील न रीते
विद्या किं जो भेद मिटि जाई * भेद अविद्या है दुखदाई
लज्जा किं नहिं करै विकारा * महावीर जिन मनहिं प्रहारा
धीरजवन्त वली अति कोवा * मुमुखि कटाक्ष न मोहै जोवा
दुख किं अनित्य वस्तु में नेहा * सुखप्रद को मम चरण सनेहा
पातक मूल लोभ लखि परई * पढन सुनन की कुपथ विसरई
त्यागी का जो मन बच काया * करि सतकर्म भजै फल पाया
सत्य बचन किं जो मोहिं लीन्हे * पण्डित किं बिकार तजि दीन्हे
मम स्वरूप जाने सोइ ज्ञानी * मूरख किं सुदेह अभिमानी
पन्थ कवनि जामें मोहिं पावै * दानी जो मम भक्ति बतावै
महा पतित को हिंसाचारी * धन्य कौन जो पर उपकारी
कोवा श्रेष्ठ निरत हरिकर्मा * नीच कौन जो करै कुकर्मा
सम्रह योग कहा शुध मेरे * जाइनि कितै कुसगति नेरे
तप किं विषयभोग परिहरई * दया जो भूतद्रोह नहिं करई
किं यमजाल सुतामस मोहा * भ्रम कहा जहँ नहिं तन छोहा
साधु कौन जाके उर दाया * हरिते विमुख करै सोइ माया
दुख सुख सम सबकाल तितीक्षा * किं विज्ञान विवेक परीक्षा

दो० हा नाहिं तनमन वचनबुधि, जाति बरण कुलएक।

[illegible] मैं, [illegible] विवेक ॥
[illegible] मैं, [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
दो० [illegible] ।
[illegible] ॥
श्लो० [illegible] ।

निष्ठा कि करिये जहँ प्रीती * लखि न अभाव होय विपरीती
रुचि कि रहित शोच सुख पावे * भाव दमादि सकल गुण आवे
आसक्ती कि प्रिय बिन देखे * रुचत न कछुतनधनकिहिलेखे
भोजन कि जग तीनि प्रकारा * उत्तम मध्यम नीच निहारा
मधुर मञ्जु मृदु सात्त्विक जानौ * तिक्त तात रजगुणी पिछानौ
भक्ष्याभक्ष्य तामसिन केरे * तिमि त्रैविधि के मनुज निबेरे
पूजा तीनि भांति की हेरी * प्रतिमा वैष्णव आतम केरी
उत्तम आतम मध्यम साधू * कछु कनिष्ठ प्रतिमा अवराधू
शान्ति सो कौन विकार विहीना * निर अभिमान ज्ञान कि दीना
वशीकरण कि कोमल बानी * मारण मन्त्र क्षमा बड़ जानी
जीव उभय कि बन्ध विमोक्षा * सहित रहिय वासना असोक्षा
भाग्य सुबाम कुमति पर केरी * जगत मान्यता आशा बेरी
परिमल कि प्रणधन कि धर्मा * करणी बिन बादे बेशर्मा
ईश्वर सबपर प्रकृति नियन्ता * बहु विधि कह्यो जानकीकन्ता
सुनि प्रभु बचन लषण हर्षाने * बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने

दो० रत्नमालमत जाल लै, भगवतगीता साथ।
रामगीत नवनीत यह, बरण्यो जन रघुनाथ॥

सो० सुनि गुनिहैं जे जीव, पैहैं परमानन्द ते।
पुनि महिमा के पीव, करिहैं तापर अतिकृपा॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतरामदण्डकवनआगमनप्रश्नोत्तरवर्णनोनाम सप्तदशोऽध्याय ॥ १७॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
बर्णौं मानसमत कछुक, नाटकरीति बखानि॥

वीरासन शरचापगहि, चहिं चहुंदिशि सौमित्र।
लगे विचारन मनविषे, रघुपति बचन विचित्र ॥
जनकनन्दनीसहितप्रभु, परणकुटी के बीच।
राजतलाजत लक्षलखि, रतिपति प्रियायुतनीच ॥
तेहिअवसररावणस्वसा, सुपनेखा तहँ आइ।
रामरूप मोहित वचन, बोली गर्व बढ़ाइ ॥

त्रिभङ्गीछन्द ॥

सुनिये नृपनन्दन सुरमुनि वन्दन मैं हौं राजदुलारी।
निज सम सुखमाते पुरुष न ताते अबतक रहिउँकुमारी ॥
तुमको जब देखा कछुमन लेखा विधिकृत यह संयोगा।
त्यहिते निज दासी करु बनवासी जो चाहौ वरभोगा ॥
सुनिसियदिशिदेखिकैकहप्रभु हँसिकैंममअनुजकुमारा।
सितितन तिनकेरी ह्वैज चेरी सोइ सयोग तुम्हारा ॥
हस्तिनितियलागकशशा न नायक दुखदायक पुखहरणी।
पद्मिनिमोहिंचारा निरस निवारा नेति नेति प्रभुवरणी ॥
तव सो गई धरणिधर पासा * कह लक्ष्मण मैं उनकर दासा।
भूपै वरणि कहे हौ रानी * नाहित जग टहलुई बखानी ॥
याते कौन सुयश सुख लाहू * त्यहिते महाराज पहँ जाहू।
सुनि पुनि गइ जहा भगवन्ता * तिन फिर पठइ पास अनन्ता ॥
बोले लखण तोहि सो ब्याहै * जो लाजा परलोक न चाहै ॥
दो० तब लजाइ प्रकटत भई, निज विकराल स्वरूप।
वदन खोह गिरिश्रृङ्गशिर, नाक कान जनु सूप ॥
बोली तुम दोउ साधु न अहऊ * परपती घरवाला चहऊ।
मोहिं देखि जो कीन्हो हासू * सो फल तुम्हें देहौं आसू ॥

सुनि सिय सभय राम गे जानी * बेद बाद नभ कह्यो बखानी
गये समुझि लक्ष्मण ततकाला * नाक कान बिन कीन कुचाला
हाय हाय करि भवन सिधाई * रुधिर स्रवत गे जहँ सब भाई
बोली धिग तव बीर प्रभावा * तिन पूछा छलकरि समुझावा
दो० सुनि खरदूषण क्रोधकरि, असुर सहस दश चारि।
लिये बोलि सँग सबचले, शस्त्र अस्त्र भट धारि ॥
कज्जलगिरि सम जिनके अङ्गा * गर्जहिं तर्जहिं सहित उमङ्गा
बाजैं विविध जुझाऊ बाजा * अशकुन होत न मानैं राजा
कोउ कह धरि मारौ दोउ भ्राता * लैलीजे ललना भलि बाता
कोउ कह निधनि न आई उनहीं * चुपरहि चहि दनुजेश न सुनहीं
यहिविधिवदतनिकटचलिआये * लक्ष्मणते प्रभु बचन सुनाये
सीतै लै गिरि कन्दर जाहू * आवा चढ़ि शिर निश्चरनाहू
लै सिय लषण गये तिहि आने * चाप चढ़ाइ चले प्रभु आगे
जिमि केशरी द्विरद दल हेरी * आइ लिहिनि बगमेल गरेरी
देखि अकेले अति सुख माना * बढ़े शमा पर जिमि परवाना
प्रभुछबि देखिछाकित सबभयऊ * खरदूषण मन्त्री ते कह्यऊ
दो० ये कोउ नृपबालक अहैं, नरबर रूपनिधान।
अस शोभा भरिजन्म हम, देखी सुनी न कान ॥
सो० यद्यपि किहिनि कुरूर्म, तदपि न मारण योग ये।
जाइ कहौ तुम मर्म, देहु नारि फिरिजाई घर ॥
आइ सचिव रघुपति ते कहा * सुनत बिहँसि बोले सुरनाहा
हम क्षत्री मन शङ्क न आनैं * कालहु तें सम्मुख रण ठानैं
सुर रञ्जन खल गञ्जन हेता * बिचरत हम बन त्यागि निकेता
जो तुम्हरे पति होइँ डराने * फिरैं न हम रण हतैं पराने

दूतन खरदूषण ते भाखा * बोला सुनि मारो करि माखा
धाये तब तमचर करि शोरा * लखि प्रभु कीन चाप टकोरा
भये बधिर पुनि धीरज धारा * लगे बिबिध बरसन हथियारा
शर तोमर तरवारि त्रिशूला * चक्र परिघ पवि शक्ति समूला
तिल समान प्रभु काटि निवारे * निज नराच सधानि पँवारे
जाइ असुर दल काटन लागे * हाइ हाइ करि भट बहु भागे
कोइ कह खरदूषण मति हीना * इनते आइ समर व्यर्हि कीना
सुनि सकोप बोले तिहुँ भ्राता * फिरी जो तेहिहौं करब निपाता
मरण जानि घूमें अनुरागी * चहुँदिशि मारु मारु रट लागी
देखि देव सब होंइ अधीरा * निश्चर निकर एक रघुवीरा
राम बाण लागहिं खर भारी * खण्ड खण्ड ह्वै गिरहिं सुरारी
शिर धरि धरौ धरौ कहि धावैं * गगन उड़ैं बहु भगन चलावैं
बहु मरिगे बहु करहत डारे * बहु कहैं कहँ पितु मातु हमारे
बहुतन कङ्क काक शृग श्वाना * भक्षत करत कटकटी नाना
अन्त्रावलि गहि बहु नभ जावैं * बिपुल बाल जनु गुड़ी उड़ावैं
भूत रु प्रेत पिशाच पिशाची * खप्पर भरे योगिनी नाची

सो० निजदलबिचलनिहारि, खरदूषण त्रिशिरादिभट ।
अगणित अस्त्र प्रचारि, प्रभुपर डारे एकसँग ॥

रघुपति सब निज शरन निवारे * दशदश त्रिशिख सबनके मारे
कहि कहि राम तजे तिन प्राणा * बिन श्रम पायो पद निरबाणा
क्षणमा सकल कटक सहारी * सुमन बरषि सुर जयति पुकारी
सीता लषण आइ शिर नावा * निरखिश्यामबपुअति सुखपावा
तब सुपनेखा गइ जहँ रावन * जनु दनुजनकी मौत भयावन
करि रोदन बोली तकि ताही * तोहिंजियत मम अशगति चाही

समुझि परत अब रही न राजू * नहिं देखत निज काज अकाजू
दो० सुनि अकुलानी सभा सब, कह रावण कहु हाल ।
केहिं काटे श्रुति नाक तव, काकर आयहु काल ॥
अनुज गिरा सुनि बोली वचना * अति अतर्क अबलाकी रचना
द्वै तपसी तपसी वन आये * सुन्दरि सुन्दरि सुन्दरि लाये
हॉलसि हॉलसि हॉलसि बोली * राम न योग न राम न जोली
दो० सोकरि कान न कान तव, करी न करी न आन ।
सो बिन कान नकान बिन, करी सो करी न कान ॥
खरदूषण सुनि लाग गोहारी * क्षणमा तिन सब सैना मारी
त्रिशिरादिकवध सुनि दनुजेशा * मनहुं जरे मम भयो कलेशा
शूर्पणखे प्रबोधि बल भाखी * भवन गयो विस्मय मनराखी
सुर नर-आदि त्रिभुवन महँ सोई * मम अनुचरं न निदरत कोई
खरदूषण मोहिं सम बलधामा * तिन्हें को मारै बिन श्रीरामा
जो प्रकटे सुर मुनि हितकारी * तौ करि बैर तरौं भव भारी
तामस तन कछु भजन न बनई * राम विमुख गति वेद न भनई
जिन नहिं निज परलोक सुधारा * तौ त्यहि बुधि बल जनमेछारा
दो० जो नृपसुत कोउ जाइ तौ, हरि लेहौं तिन बाम ।
चला अकेले यानचढ़ि, गा मारीच के धाम ॥
पूछा करि सनमान त्यहि, तात चलेहु केहिहेत ।
कही कथा दशमुख सकल, सुनि बोला सिखदेत ॥
सो० मुनिमखमँम्वहिं राम, बिनफरसारेउत्रिशिखयक ।
शतयोजन अहिठाम, आयों क्षणमा विकल ह्वै ॥
खरदूषण करि बैर, भे बिनाश ताते सबल ।
जो चाहो कुल खैर, तौ फिरिजाउ निकेतनिज ॥

सुनिदशमुखकरिक्रोध, बोला म्वाहिंसम सुभटको।
गुरु इव करत प्रबोध, चलत न आई मीचुतव॥
करि विचार रविपाथ, चलामुदितसँगमनगुणत।
मरों न राघवहाथ, चला मुदितमनसँगगुणत॥
भरि नयननछबिआज, देखिहौं प्रभुसियलषणकी।
तब होई मम काज, जब बधिहैंमृगरूपलखि॥
दो० इत सियते कह राम तुम, करौ उरागिनि बास।
जबतक करि नरचरित मैं, करौं न निश्चर नास॥
सो० स्वामि रजायसु पाइ, बेदवती बपु राखि तहँ।
आपु हृदागिनि जाइ, कीन बास हरिपास नित॥
यह रहस्य लक्ष्मणहु न जानी * मायाधीश सकलगुण खानी
बैठे प्रभु सिय परणकुटीचा * आयो तहँ रावण मारीचा
हेम हरिण ह्वै निकसा आगे * लखि जानकी कह्यो अनुरागे
हे स्वामी मृग पकरहु पारी * नाहित बनी छाल भलमारी
कह प्रभु हिंसा अघबड जाना * होनहार बश सिय हठ ठाना
भक्तबछल प्रभु धनुशर लीन्हा * आश्रम सौंपि शेष कहँ दीन्हा
अपना चले कपट मृग पाछे * आवत देखि भाग सो आछे
तब शर सजि धाये रघुराई * थकनिनवनिचितवनिम्वहिंभाई
प्रकटत दुरत लखत छबि भूरी * लैगा इमि रघुबीरहि दूरी
तब प्रभु ताहि तहा तकि मारा * हाइ लषण अस आदि पुकारा
पाछे कहि हरुगे सियरामा * तनु तजि गा मुनिदुर्लभ धामा
इत सीता सुनि आरत बानी * बोली लक्ष्मण ते छल जानी
सो० संकटबश तव भ्रात, जाहु बेगि सुनि शेष कह।
प्रभुइ न दुख कहुँ मात, तुम्हैं सौंपिगे किमि तजहुँ॥

सुनिसियवचन कठोर, कहे लग्गणकहँ लषग्गतब ।
रेखखैंचि चहुँ ओर, चले चकितचित रामपहँ ॥
दो० सूनबीच लखि रावण, यती स्वरूप बनाय ।
मागी भिक्षा सुनत सिय, लगी देन हरषाय ॥
बोला कुटिल बँधी यह भीखा * सो न लेब मैं मानो सीखा
माघ शुक्ल भूता दिन जानो * बृन्द मुहूरत मे पहिचानो
भावी वश सिय बाहर आई * चरण बन्दि लैचला उठाई
दो० जीवज्योति तन में यथा, अगिनि धूमके माहँ ।
तिमि रावणके करपरी, सियस्वरूप की छाहँ ॥
गगनजात रथ बिलपनि सीता * हा रघुपति हा नाथ पुनीता
हा करुणाकर हा रणधीरा * आरतिहरण हरहु मम पीरा
हा बलसिन्धु लषण सुखदाई * परी तात गोमर कर गाई
कहे बचन कटु रेख मँभाई * सो क्षमि करि म्वहिं लेहु छिनाई
तुम्हैं कलङ्क दीन बिन दोखा * ताकर फल पावा अति चोखा
जे पतिबचन करहिं नहिं काना * तेउ भरैं दुख हमैं समाना
हा पितु मातु दूरि तव धामा * भा केकयी केर अब कामा
पठै देउ बन देउ कृपाला * हरिपलिहि चहै बरा शृगाला
सीताकै सुनि आरतवाणी * भे सब बिकल चराचर प्राणी
गीधराज जाना बैदेही * लीन्हे जात असुरपति तेही
चला कहत पुत्री धरु धीरा * नीच मीच मैं आयों तीरा
रे रे रावण सुनु मम बाता * तजि जानकिहि जाहु कुशलाता
नाहिंत सकुल नाश तव होई * सुनि तेहि कान न कीन्यो कोई
तब खँग चपरि चोंच गहिकेशा * रथ ते महि पटका लङ्केशा
सियनिजनिलयराखिफिरिआवा * अरिकर धनु शर काटि गिरावा

शाप धपलन तन सिर धरो • गर्भिग हूँ पुनि आमि लै धायो
प्रात कहि नाहिं ये आना • नखराग मारिगिरि शोनतशाला
हमतें गहर न भयो भाँगताता • कहँ गमन भयो मयु ताता
दशराग सम कुनि भेप न पायो • रावणो सिर न छूटि गहिकाला
भग्न रथ गृध्र ठौर न पावा • रामचरण गहि प्रभुहि सुनावा
एक बार भइ मति एहा • राम निहोर छूटी देहा

दो॰ हरलिय छिलपतजात नभ, नगपर कपिन निहारि ।
छिपे डारि निजभूषणन, रघपति नाम पुकारि ॥
आगे लाग्वि सपाति मुत, गहि रथ कीन्यो छोरि ।
यहि विधि लाया लङ्क तन, बोला सिये निहोरि ॥
समुझि न शोचे नरनाहिन, इनमें कौन प्रभाव ।
पितु प्रेरित यन सहत दुख, निरबल रङ्क न राव ॥
शाकुलअजातिपुजातिपति, गतिमतिरहित सभीत ।
जटा कपाली प्रिय प्रणत, तप कोपिनकर मीत ॥
नहिं जानी कपहि कर्म करि, परिउ नरन के हाथ ।
अब जागे बड़ भाग तव, जो आहुउ मम साथ ॥
हमसम सयल न शूर कोउ, जेहि यश सुरमुनि सर्वे ।
त्यहि ते मेरी भारया, होउ त्यागि दुख सर्वे ॥
सुरकन्या कैयो सहस, मन्दोदरी समेत ।
हैं ए तेरी टहलुई, हौं सेवक कहि देत ॥
सुनि सियशोचलकोपवश, कछू न उत्तर दीन ।
तब तेहि निज ऐश्वर्यसुख, सकल देखावै लीन ॥
अधिक विकलभइजानकी, विभव नीचकर देखि ।
यथा विरहिनी दुख लहै, शरदचन्द्रमहिं पेखि ॥

सो० पुनि बोला दशशीश, देखे मम ऐश्वर्य प्रिय ।
तब सीता करि रीस, कहत भई तृण ओटकरि ॥
सुनु दुष्टन शिरमौर, विन मराल सर हंसिनी ।
निरखि काककर ठौर, मुदित होत कहुँतिमिमहूं ॥
सुनि सियवचन सरोष, डरकरि विपिनअशोकमहँ ।
राखिसि हितनिजमोष, बुरिहु वि गयेखवाइ हरि ॥

इहां लषण मृगअरि तहं गयऊ * अनुजे लखि बोलत असभयऊ
द्वादश वर्ष मास शर बीते * इहां रहत सिय तजी न रीते
आजु जनकतनया तुम खोई * कहा लषण मम दोष न कोई
आश्रम दीख जाइ बिनसीता * भये विकल जनु योषितजीता
इत उत हेरि झांकि हँसि बोली * आवहु निकसि न करहु ठठोली
तुम्हरे कहा बीन मैं जाई * अब केहि कारण रहिउ कुहाई
लषण अरोग लखी जब नाहीं * तब प्रभु मुर्च्छिगिरे महिमाहीं
कतहुँ बाण धनु पट तूणीरा * लषण उठाइ किये यकतीरा
बोले नमि हे नाथ उदारा * सुरमुनि हेतु लियो अवतारा
ज्ञाननिधान सबल युधि माहीं * भूतल मूढ मनुज की नाईं
बन्धु वचन सुनि धीरज धारा * बहुरि अश इव वचन उचारा
को बोलत लक्ष्मण तव दासा * हमको तुम राघव बनवासा
करत कहां ढूढन प्रिय प्यारी * हाहा सीते जनक दुलारी

दो० कहा लषण मिलिहै बहुरि, उठि ढूंढो बनमाहिं ।
धनुशरतरकस साजितन, पूछि चले सबपाहिं ॥
केहरिकरिकुंजदुज दखिल, सब परमारथ रूप ।
तुम देखी मम प्रियतमा, देहु बताय अनूप ॥
हे सीते जेहि नेहकहि, ताजि पितु आरज गेह ।

हठि आइउ ममसाथ अब, कहाकियों सोइ नेह ॥
भृङ्ग जलजशुककुन्द पिक, करि हरि श्रीफलकेर ।
मुदितमनहुँअरिजीतिकिन, हरौ मान इनकेर ॥
यहिविधि खोजतकुञ्जवन, गए गिरि गुफा तड़ाग ।
गये जटायू खग जहा, शोणितलखि दुखलाग॥
आगे परा गीधपति चीन्हा * हा पितु हा कहि उरधरिलीन्हा
पूछा हाल सकल तेहि काहा * ग्वहिवधि सिय लैगा खलनाहा
रहे प्राण तव दरशन हेतो * चलन चहत अब कृपानिकेता
सुनि प्रभु पद्म नयन जल ढारी * बोले पासु जटा ते भारी
हे सौमित्र आइ इनशरणा * ग्वहिलखिपलोनपितुकरमरणा
सहि न सक्यो सो ओछविधाता * पक्षिपक्ष लखि कीन्हिसि घाता
पुनि कह तात राखिये देहा * बोला तब खग सहितसनेहा
कृपासिन्धु तुम शीलनिधाना * मोहिंखगखलहि पितासममाना
अस तुम तेहि न भजै नर जोई * महामूढ हतभागी सोई
जासु नाम अगणित गतिदाता * क्स न मरहुँ तिनके कर ताता
चारिउफल न मरणसम मेरे * असकहि मुदित प्राण निजछोरे
रामरूप है अस्तुति कीन्ही * अविचल भक्तिमागिसोइलीन्ही
कहप्रभु सिया-हरण पितु तेरे * कह्यो न दुख होई सुनु मेरे
दो० तुम्हरे पुण्य प्रतापते, कछु दिनमें रिपुमारि ।
सकुल पठइहौं आइ सोइ, सुमुख कही विस्तारि ॥
भले नाथ कहि नाइशिर, प्रभुमूरति उरराखि ।
चल्यो गगनलखिसुमनसुर, बरषे जय जय भाखि ॥
पितु ज्यों दीन्ह्यो धामनिज, मृतककर्म सब कीन ।
ऐसे प्रभुहि बिसारि मन, तैं चाहै सुख लीन ॥

सहित शोक सियकी सुधि आई * बोले लक्ष्मणते अकुलाई
यावत मैं यदि जीवत ताता * तावत जीवत विश्व लखाता
नाहित सुर नर असुर समेता * करिहौं भस्म अखिल जग जेता
सुनिप्रभुवचन सभयभवकापा * लागे होन अरिष्ट अमापा
सहित शङ्क लक्ष्मणगहिचरणा * बोले अहो दीन दुखहरणा

कुं० मान्धाता इक्ष्वाकुहुभ, भागीरथ नृपनाथ ।
रघु दिलीप अज आदिदै, यावत तव पितुनाथ ॥
यावत तव पितुनाथ, लोक तिहुँ तनय समाना ।
पालत आथे सदै, सुयश सकलौ जग जाना ॥
तिनकुल करिति बर्द्धहित, प्रकटे आपु सुजान ।
सोकिमिजारिहौ जगआखिल, निरपराध श्रीमान ॥

सो० बन्धुवचन सुनि राम, लज्जितह्वै लखि लषणकहँ ।
लिये लाइ निजधाम, बोले पूरब देखि शशि ॥

कुं० लषण तकहु तरु उयेरवि, नाथ मलिन है चन्द ।
निजकुलके अकलङ्कते, तरणितेज भो मन्द ॥
तरणि तेज भो मन्द, कमल नहिं फूले ताता ।
अहोमित्र दुख दुखी, खिले कैसे जलजाता ॥
अहैंनखत प्रफुलित कुमुद, शत्रु बिपतिलखिहँसतसन ।
पुनि न दीन उत्तर चले, घन तरुतररघुपतिलखन ॥

येहिविधि प्राकृत मनुजसमाना * हूढत कीन्ह्यो पुर पयाना
मिला बिराध ताहि गति दीन्हीं * चले बहुरि शवरी सुधि कीन्हीं
पूजत फूल भरे सुख तेरे * निवसत बडभागिनि केहिसेरे
जासु भजन बल बन सुखदाता * करब देखि तेहि शीतलगाता
इहा प्रात शवरी जब जागी *लखिशुभशकुनसमुझिअनुरागी

राम लषण प्रियपाहुन मोरे * ऐहैं आजु अनुजयुत जोरे
ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी * मोसम को बडभागिनि दूजी
लहिहौं हौं प्रभु प्रभु निजबाना * दोउदिशिलाभ न लाभसमाना
दोनन राखि कन्द फल फूला * चितवत अम्ब सरिस अनुकूला
छिन द्वारे छिन भीतर जाई * प्रीति परखि पहुँचे दोउभाई
शबरी देखि परी तब पायन * सनमानी प्रभु मा समचायन
आश्रम आनि पूजि जसरीती * दिये रुचिर फल दल करिप्रीती
लगेखान प्रभु पुलकित गाता * स्वाद सराहि सराहि न जाता
मागत देत देखि सुर सन्ता * बरषि सुमन कहि जय भगवन्ता
त्रिभुवन नाथ नरेश कुमारा * पावत फल तजि अमै अपारा
असविचारि रघुनाथ अरूखे * जान्यो राम प्रेमके भूखे
अचै उठे तब शबरी बोली * हाथ जोरि दोउ गिरा अमोली
नाथ रहिउँ मैं अवगुणखानी * कीन्ह्यो तुम मुद मङ्गलदानी

दो० कहप्रभु तैं निजकर्म ते, भई श्रेष्ठ जग बीच।
जो न भजै मम चरणप्रिय, सोइ शमली सोइ नीच॥
शबरी के सुनि मुनि निकर, आये दिग अनखाइ।
पूछेउ सरवर शुद्धकिमि, होइ कहा रघुराइ॥
कहप्रभु पावन पुरुषको, परसि कीन तुम रोष।
गये स्वच्छ हित स्वच्छहू, भयो रुधिर तेहि दोष॥
अबते शबरीके चरण, धोइ तोइ ता मध्य।
देउलेउ पवित्र पुनि, करत भयो शुचि मध्य॥

सो० ऐसे प्रभु को और, जो निज लघुता ढासकी।
करै कीर्त्ति सब ठौर, तब हरि शबरी ते कह्यो॥
अब सुधि सीताकेरि, कहिये करिगामिनिसुखद।

सुनि शबरी मुखहेरि, कहेउ जाउ पम्पासरहि ॥
तहँ मिलिहैं सुग्रीव, करेउ मिताई तासुते ।
सो हितकरी सदीव, मिलिहैं हमि सीता तुम्हें ॥
याहिविधि यदि सबहाल, राम धाम गइ त्यागि तनु ।
तेहिकी क्रिया कृपाल, कीन यथोचित जननि जिमि ॥

गीतिकाछन्द ॥

जिमि जननिकी गति करै कोउ तिमि राम शबरी की करी ।
अस और कौन कृपालु स्वामी शरण जाकी अनुसरी ॥
प्रभु कहत शबरीकेर यश सहप्रीति पम्पासर गये ।
मन मुदित मज्जन कीन शोभा निरखि मुनि हरषत भये ॥

दो० भये मुदित मुनिवृन्द तहँ, मिले देवऋषि आइ ।
पूछिनि प्रभुते मोह निज, राम कहा समुझाइ ॥

सो० सकल दोष दुख दानि, जानि हर्यो अभिमान तब ।
सुमुखि शोककी खानि, तेहिते लिहेउ बचाइ पुनि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरअगउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतआरण्यकाण्डसम्पूर्णनाम
अष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं कोकिल मत कछुक, बृहद चरित्र बखानि ॥
नारद अबिचल भक्तिवर, पाइ चले हरषात ।
तब सानुज रघुबंश मणि, रिकमूक भे जात ॥
सबल पुरुष सुग्रीव लखि, डरि पठये हनुमान ।
द्विजह्वै पूछा जाइ निजु, हाल कहा भगवान ॥
सो० सुनि मारुतसुत बैन, प्रभुइ चीन्हि चरणन परे ।
लाये कपिपति ऐन, मुदित भये सुग्रीव लखि ॥
कीन मित्रता भाव, जनकसुताकी बात सुनि ।
सिय भूषण कपि राव, दिये लिये उरलाय प्रभु ॥

कह्यो लषणतें चीन्हो ताता * सुनि सौमित्र कही बरबाता
कङ्कण कुण्डल मैं नहिं जानौं * नूपुर नित पद बन्दन ठानौं
प्रभुइ दुखित लखि कह्यो सनेही * तजहु शोच मिलिहैं बैदेही
हरषि प्रीति हरि हरि पति पाहीं * तुम क्यहि हेतु बसहु बनमाहीं
तब सुग्रीव कहा सब हाला * ब्यहिहित बालि बैर प्रतिपाला
सुनि बोले अवधेश कुमारा * मैं मारिहौं रण शत्रु तुम्हारा
मित्र मित्र दुख दुखी न होई * बदत बेद श्रुचि सखा न सोई
सुनि सुभाय बोले कपि नाहू * बालि बली बधयोग न काहू
अस्थि दुन्दुभी केर समूहा * महा कठिन लागे दश यूहा
तिन्हैं एक शर बेधे जोई * मुनिवर बालिहि मारे सोई

दो० दूसर दुन्दुभि निधन सुनि, इन्द्रताल फल सात ।
पठये होइहैं सप्तदिन, अजर अमर इनखात॥
नारद आय वालि कहँ, दीन्हे गहन मँझार ।
महिधरि लगे नहान सो, करिगा भुजँग अहार ॥
हरिसुत लखि बोला बचनेहा * सात ताल जामें तव देहा
कह भुजङ्ग जो हमें उबारी * त्यहि निशिनाथ तुम्हैं सोइमारी
सर्पाकृत सो ताल बिशाला * को यकबाण ढहावनवाला
तीसर वर बासव कर साधा * रिपुवल सम्मुख पावत आधा
यहि ते वालि बधन के माहीं * आवतग्वहिं प्रतीति प्रभु नाहीं
दो० हँसिबोले भगवान तब, चलो दिखावो मोहिं ।
बेधि गिरावों सुशर ज्यहि, निश्चय आवै तोहि ॥
भले नाथ कहि प्रभुइ लवाई * दीन्हे गिरिसम अस्थि दिखाई
बेधे सकल एकहीं बाना * दशयोजन शिरराखि सयाना
नभ महितल सव तीर्थ नहाई * रामतूण प्रविशे पुनि आई
तव सुग्रीव देखाये ताला * सर्पाकृत सब ढहे कृपाला
छूटि भुजङ्ग चला जय भाषी * बरषे देव सुमन अभिलाषी
दो० प्रभुप्रभाव बल विपुल लखि, कपिपति प्रीति बढ़ाइ।
निश्चय भइ यभयबन्धुहित, बोला पद शिरनाइ ॥
सुनो नाथ तव कृपा ते, मिटे सकल मम शोक।
शत्रु मित्र दुख सुख समधि, मनकृत नहिं परलोक ॥
त्यहिते त्यागि मोह मद माया * भजब सदा तव पद रघुराया
वालि हमार परम हितकारी * मिले आइ ज्यहि आपु अधारी
मोहित बच सुनि कहेउ खरारी * मृषा होत नहिं गिरा हमारी
तव सुग्रीव जाइ पुर गरजा * चला वालि सुनि तारा बरजा

रामाश्रित सुग्रीव न जाई • यह हरिसुत सब विधि मोहि लाई
अस कहि धाया अकेल तीरा • भिरे क्रोधकरि दोनों वीरा
बालि हृदय विच मुष्टिक मारी • निकसा भाग सुग्रीव दुखारी
मैं जो कही वैसाय तुम पारी • बालि मोर रिपु कीन्ह नाहीं
कह प्रभु तुम यकरूप दोउ भाई • त्यहि भ्रम मैं मारा नहिं ताई
कृपादृष्टि लखि तुरत पियारा • सुमनमाल पहिराइ पठारा
पुनि चतुरंगिनि मिलाचित चाई • भिरे बालि भुज [illegible]
विविध प्रकार युद्ध जोरा • प्रभु देखत ठाढ़े तरु ओरा
जाना जब सुग्रीव हिय हारा • तानि बाणधर बालिहि मारा
गिरा भूमि व्याकुल ह्वै वीरा • [illegible]
प्रभुहि विलोकि पुनि उठि भागा • बोला वचन [illegible]
दो० राम तुम्हार प्रभाव बल, मैं सब सुना अपार।
 देखा धर्म किरात कर, मारघो [illegible] शिकार॥
सो० क्याहि मिलायो यहि प्रीति, [illegible]।
 [illegible] प्रीति, [illegible]॥
कह प्रभु हम निश्चय सुना • अभिमानी [illegible]
[illegible] तुम प्रीति हमार • [illegible]
[illegible] • [illegible]
[illegible] हमारे • [illegible]
[illegible] देखा • [illegible]
दो० [illegible], [illegible]।
 [illegible], [illegible]॥
 [illegible], [illegible]।
 [illegible], [illegible]॥

त्यहिते अब जैहौं हरि धामा * पर यह बर दीजै अभिरामा
कर्माधीन जहां मैं रहऊं * तहँ तव चरण नेह निरबहऊं
अङ्गद मम समान बलवन्ता * त्यहि थपिजै निज दास अनन्ता
सो० प्रभुपद शीश नवाइ, बालि गयो हरिधाम तब ।
पुरजन सुनि दुख पाइ, आये जहँ कपिपतिमृतक ॥
तारा शिर उरराखि, लागी इमि रोदन बदन ।
मैं जो रही पति माखि, मान्यो सखि न कालवश ॥
राम बिकल त्यहि जोइ, बोले करहु न शोच प्रिय ।
मिलि बिछुरत सबकोइ, आवु अकेल न सग कोउ ॥
मातु मही पितु शालि, कालरूपी कररसर समुझि ।
बोलिप्रथम पुनि पालि, लूनि खात ब्रह्मादि सब ॥
असबिचारि शोचत नहिं ज्ञानी * कर्माधीन देह गति जानी
सबदिन यक थल बसत न कोई * पथिक मेघ इव सगति होई
भूमि बियार घटादि यथाई * उपजत बिनशत बपुष तथाई
रहत एकरस धरणी जैसे * जीव अनित्य होत न तैसे
जो यह भेद न नीके जानै * सो देहादिक सत्य प्रमानै
तासु बियोग योग जब लहई * संसृतपरि भुगतै दुख सहई
ईश कृपा जब होत विशेषी * नित्यानित्य परत तब देखी
नित्य बस्तु भगवन सनबन्धी * और सकल ममता मतिबन्धी
सो० इमि बहु दीन्ह्यो ज्ञान, बोध भानु प्रकट्यो तुरत ।
मिटा तिमिर अज्ञान, लिहेसि मांगि हरिभक्ति बर॥
तब सुग्रीव रजायसु पाई * मृतककर्म सब कीन बनाई
प्रभु लक्ष्मणहिकह्योसजिसाजा * करि आवहु सुग्रीवहि राजा
जाय लषण पुरलोग बुलाये * बिप्र महाजन चलि सब आये

राज तिलक सुग्रीवहि दीहा * बालि सुतहि युवराजा कीन्हा
सब विधि सबै सील दै धीरा * सह सुकण्ठ आये प्रभु तीरा
ढिग बैठाइ दीन उपदेशा * जाहु भवन तजि सकल अँदेशा
मैं सहबन्धु शैल पर जाई * रहिहों भरि बरषा तहँ छाई
तुम युत अङ्गद कीन्यो राजू * दीन्यो जनि बिसारि ममकाजू
भले नाथ कहि निलय सिधाये * राम प्रवर्षण गिरि पर आये
प्रथम सुरन रचिकदर राखे * राम रहन हित चित अभिलाखे,
जबने प्रभु प्रविशे तहँ आई * सकलसाज सुख सपति छाई
नानारूप विराचि मुनि देवा * करहिं सदा रघुपति की सेवा
सतत होय सुभग सतसङ्गा * सशय समाधान बहु रङ्गा
निगमागम मत विषय पदारथ * कहत सुनत सम बोध यथारथ
प्राविट काल कन्द नभ घेरे * गर्जत चलत पवन के प्रेरे
जनु रविते वासव महि बोरा * ह्वै ठान्यो सगर अति घोरा
की पावस ऋतु खानि नबीली * प्रभुइ रिझावन चली छबीली
की सवत की तरुण अवस्था * की अवनी की अम्ब बिसर्था
राम अनुज ते ताकी करणी * कही जगत जीवन परबरणी
शरद सुन्दरी सुमति समाना * आइ प्रकाशी पन्थ प्रमाना
गुशत तासु गति मात विसराई * वदत बन्धु ते मोह जनाई
तात तरुत बरषाऋतु नासी * सियसुधिकछु न मिलीकटुखासी
जियत वियतकैस्यो सुधि पावों * बलकरिवयहि जीति महिलावों
जिनममहित सुख सकलविसारे * तिनबिन हम किमिहोयँ सुखारे
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा * पाइ राज पुर सम्पति दारा
दो० जो हमहूं अब बदलिकै, बधों बालि सम ताहि।
तौ सुनि सब मूरख हमै, कहैं न सके नियाहि॥

विरहवचनसुनिलषणतब, तमकि लीन धनुबान ।
लखि प्रभुपुनि परबोधिकै, पठयो कृपा निधान ॥
इत हनुमान विचार करि, कह सुकण्ठ ते जाइ ।
राम काज लहि राजसुख, दीन्हों तुम विसराइ ॥
सुनि सुकण्ठ डरि यों कह्यो, विषय हरो मम ज्ञान ।
अबते पठवहु दूतते, लैआवैं कपि आन ॥

सो० कह अङ्गद यह काम, हनुमाने ते होइहैं ।
नाहित दूरि मुकाम, चले तुरत सुनि पवनसुत ॥

पारियात्र गिरि प्रथमहिं गयऊ * गव गवाक्ष ते भाषत भयऊ
राम काज लगि मरकट नाहू * बोल्यो वेगि सहित दल जाहू
सुनि कपि असी शङ्कुशत साता * लै संग चले सुभट हरषाता
पुनि रैवत कदली बन आये * दुर्धर गजंत बचन सुनाये
सात पद्म कपि असी करोरी * लै दोउ चले तुरत हरिओरी

सो० पुनि पहुँचे बलवीर कै, सुनि कपि तेइसलाख ।
साठि सहस शत संगलै, चले करत अभिलाख ॥
धुन्धमाल गिरि पुनि गये, मिले शिखण्डी नाम ।
सुनिकपि छप्पन कोटिलै, चले कहत जय राम ॥
पुनि पहुँचे अर्जुनी गिरि, कुमदे दीन हुकुम्म ।
कपि सत्तासी लाख लै, गवन्यो चारि पदुम्म ॥
पुनिचलिआयोताबगिरि, मिले नील बलवन्त ।
सुनि कपिषोडश खर्व लै, चले बहुरि हनुमन्त ॥

सो० बंदी परबत जाय, गन्धमदन ते सब कह्यो ।
सुनत चले हरषाय, लै संग गेरा अर्व कपि ॥

पुनि पहुंचे अर्जुन गिरि जाई * तारा वखत चले सुधि पाई
नब्बे लाख सतासी कोटी * सग सकल मरकटमति मोटी
पुनि सुमेरु परबत पगु धारा * मिले केशरिहि हालु उचारा
सुनि दशकोटि लाख नव कीशा * लै सँग चले सहस षटबीशा
पुनि कैलास पुलिन्दे कहेऊ * जयअरुविजयअएडसुधिलहेऊ
सत्रह शकु कोटि यक कोरी * चग कपि चले चाह नहिं थोरी
पुनि विन्ध्याचल भूधर आयो * बाणबसन्त सुनत सुख पायो
हरिहर कोटि सहस सत लैकै * चले चपल चित चञ्चल कैकै
तड़पे बहुरि बिजय गिरिगयऊ * मिलि रति मुखते भाषत भयऊ
आठ पदुम नौ से इक्यासी * लै कपि चले सहित सरमासी
कूदे बहुरि कास गिरि पावा * मुदमयन्द ते हाल सुनावा
तिन कपि पदुम कोटियक लीन्हे * चले सपदि प्रभुपद चित दीन्हे
जामवन्त भूधर पुनि गयऊ * जामवान सुनि सागतभयऊ
धूमकेतु निज सोदर तेरे * बाण चृद यसु शंकु सुडेरे
छप्पन कोटि अपर मरु लाषा * लै सग चले भालु करि माषा
पुनि धवलागिरि आइ बिधाता * बरणा सकल द्विविद ते बाता
एक कोटि कपि लाख पचीसा * गवनै सङ्ग सूमलै तीसा
पुनि उदयाचल पनसय लहेऊ * सबांसबै सल्य ते कहेऊ
अर्बुद आठ पदुम मुनि लैकै * मरकट चले चहू चित दैकै
यहि बिधि सबै बुलाइ कपीशा * आइ सुकण्ठे नायो शीशा
यह मैं गिनती जौन गनाई * बृहद रमायण महँ सो पाई
बालमीकि मुनिपुनि कछु जानी * युद्ध काण्ड में कह्यो बखानी

इति श्रीविश्रामसागरेश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेसुग्रीवमित्रता-
रामप्रवर्षणनिवासवर्णनोनामएकोनविंशोऽध्याय॥ १९ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सब रमायणकेर मत, जो सो कहौं बखानि ॥
पवनतनय जहँ जहँ कहिआयो * कियो सो सुनिसुकण्ठमनभायो
त्यहि अवसर लक्ष्मण तहँ आये * देहु जारि पुर बचन सुनाये
डरे लोग सुनि बालिकुमारा * आइ पाय परि क्रोध निवारा
सुनि सूरज सुत उठे डराई * हनूमान ते कह्यो बुझाई
तारा सहित शेष पहँ जावो * करि प्रबोध मन्दिर ले आवो
भले ईश कहि शीश नवाई * विनती कीनि लषणकी जाई
तारा हँसि बहु बचन सुनाये * करि सनमान भवन लै आये
मिले सुकण्ठ सप्रेम प्रवीना * चरण पखारि बरासन दीना
दो० कहा लषण सियकेरि सुधि, लीन चाहिये भ्रात ।
बोलि पठाये बिपुल कपि, आवन चाहत तात ॥
असकहि शिबिकारूढ़ह्वै, आये जहँ रघुबीर ।
बैठे जनु कैलासपति, सोहत श्याम शरीर ॥
सो० देखि नवायो माथ, हाथजोरि करि विनय बहु ।
तव मायावश नाथ, जीव सदा भरमत फिरत ॥
बिषयबिबश मुनिदेव, मैं पशुकपि कामी महा ।
कीन्हे बिन तव सेव, मिटत न द्वन्द्वजनित दुख ॥
सुनि प्रभु बैठायो सनमानी * सियसुधि लीन चही सुखदानी
ज्यहिहित त्यागि जालतनुराखा * सो न भई अब तक अभिलाखा
त्यहि अवसर आये कपि यूथा * नाना वर्ण बिशाल बरूथा
शीतारक्त विसगम नाला * करधर धूलाधूल घुमोला
सात ताल सम पृथुल कराला * जिन्हैं बिलोकि लहै भय काला
सब कपि युद्ध बिशारद धीरा * स्वामी हितकारक रणधीरा

मिलि लँगूलपति आयसु दीन्हा * सबन प्रणाम रामकहँ कीन्हा
भयेछकितछवि नखशिखदेखी * धन्य भाग्य अनुराग विशेखी
राम कुशल बूझी सब केरी * बोले तब सूरज सुत टेरी
सुनहु सकल मरकट ममनाता * जाते जीव करि कुशलाता
जप तप दान ज्ञान बहु करई * बिनहरिभजन न भवनिधि तरई
दो० विद्याबुद्धि विवेक वित, धर्म कर्म भरा सोइ।
अन्तर्यामी रामप्रभु, जाते परख न होइ॥
मुख भुज कटि पदते भये, वरणाश्रम हरि सूत।
जो न भजै त्यहि चारि महँ, त्यहि जानिये कपूत॥
बरणाश्रम ते भ्रष्ट है, सोइ परत भ्रम कूप।
पुनि पावत यमयातना, निज अघ के अनुरूप॥
अस विचारि छल छाडिकै, करहु रामकर काम।
मास दिवस महँ आयहु, लै सिय सुधि अभिराम॥
आई अवधि बिताइ जो, सो पाई बडदण्ड।
गव गवाक्षते कह्यो तुम, जावो पूरवखण्ड॥
भले नाथ कहि माथ नवाये * सात पदुम कपि पाइ सिधाये
तारा बखत सुसेन मयन्दा * कह्यो जाहु उत्तर सँह नन्दा
गेरा पदुम कीश ले साथा * खोजतचले बिपिन गिरि पाथा
पुनि बसन्त शत बीर बुलाये * कह्यो जाहु पश्चिमहि सिधाये
सारह कोटि कीश लै भारी * तब अङ्गद ते कह्यो हँकारी
जामवन्त हनुमत नल नीला * सब दच्छिण दिशिजाहु सुशीला
दश करोरि वानर सँग लैके * चले सकल प्रभुपद चित देके
हनूमान जब नायो माथा * कर मुद्रिका दीन रघुनाथा
कहिनि दिह्यो सीतहि सहिदानी * फिह्यो बेगि मम बिरद बखानी

सुनि प्रभु बचन चले शिरनाई * ढूढ़त गिरि बन कपि समुदाई
अंग्रदन्त दानव यक आवा * अङ्गद त्यहि रण मारि गिरावा
मग में तृषित भये कपि भारी * बिवर देखि प्रविशे हित बारी
भवन एक तहँ बिना निकासू * बैठि वाम तप पुञ्ज प्रकासू
सबहिन जाइ ताहि शिरनावा * पूछे ते वृत्तान्त सुनावा
सुनि बोली फल दल जलखाहू * खात भये सब सहित उछाहू
पुनि आये जहँ तापस बाला * तब सो कहत भई निज हाला

कुं० हेमाप्सरा की सखी हौं, स्वयप्रभा मम नाम।
हरि आनी मय स्वर्ग ते, दुरिराखी यहि ठाम॥
दुरिराखी यहि ठाम, इन्द्र सुनि लै गयो ताही।
मैं रहिगइ यहि अयन, राखि राघव मन माही॥
मन माहीं प्रभु राखि, नाम सुमिर्यों नित नेमा।
अब कारज ह्वै गयो, भयो पारस मिलि हेमा॥
अब तुम मूदहु नयन निज, जाहु बिवरके पार।
मैं जैहौं रघुबीर पहँ, सुनि झापे दृग तार॥
सुनि झापे दृग तार, लखैं तो सिन्धु किनारे।
आपु गई प्रभु पास, बहुरि बदरी पग धारे॥
यहाबिचारहिं कीशमिलि, बादिहिबीतीअवधिसब।
मिली न सीताकेरि सुधि,प्रभुभिपरतभइमीचुअब॥

सो० सुनि कपिशनके बैन, निकसा कहिसम्पाति तब।
मिला अशन निज पैन, देखि पराने कीश सब॥
कह अङ्गद अनुरागि, धन्य जटायू सम न कोउ।
रामहेतु तनुत्यागि, गा हरिपुर हं धिग हमैं॥
अनुज नाम सुनि सोइ, ठाढ़ कहिसिकपिशपथकरि।

जानि रहे पद दोहु, मागौं अमित दशशीशवस ॥
मिलगतिवरदनदीन, जो पंथ जिमि ज्वाहि मनै ।
दूषितिदशौ सुविहीन, है गवत्तु पुर विहर सर ॥

राम कहहुँ मोर मनउभिलांगहु ॥ पुर सब कीन्ह कहौ संदेहा ॥
हार गौतम गागर हिय लगा ॥ निजनिज बस सब लाइ थाना ॥
दार जान हिय मगन न्हावै ॥ नन्दग्राम तब बसन बरानै ॥
है हनुमान आन सुखधामा ॥ हैं रघु सुमति ते रामा ॥
गये मिलवन अनुज दिखावौ ॥ दशरथहि जानि चाह निहारौ ॥
सुनि हनुमन्त हर्ष अति कीन्हा ॥ गहहु गौतम पर सन चीन्हा ॥
जीतो अवधपौ एनि ईशिं ॥ दा सब दशौ सौंति लिलारौं ॥
करौं हाथौं न्याय भारी ॥ पद पुँ धाइहुँ जनकदुलारी ॥
हरौ मन धरहु सुम ताता ॥ रामहिं देति कहौ सुखदाता ॥

गीतिकाछन्द ॥

दुखलान धर्मिमफेरि तान सुनाइये सुधि आइकै ।
रघुहि जानि गयन पीन कै गइ लखु देरि चाइकै ॥
हरि समर मारहि रावणाहि सुर माधु वन्दि छुड़ाइकै ।
भवसिन्धु तरिहैं जीव जद यह सुयश सुनि अरु गाइकै ॥
दो० सब रामायणके विषे, देख्यो जौन विचित्र ।
सोई जन रघुनाथहू, वरण्यो कछुक चरित्र ॥

इति श्रीविश्रामसागरसंवसदशागरसंगउजागरश्रीरघुनाथदासनि-,
रामसनेहीकृतेरामायणअयोध्याकाण्डसमपूर्णनाम
विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

—॥—

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

सुन्दरकाण्डप्रारम्भ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं आदिकवि कहनिकलु, नाटक रीति बखानि ॥
जामवन्त के बचन सुनि, हनूमान बलवान ।
चले लङ्क कहँ हरि दिवस, जिमि रघुपतिको बान ॥
सुर प्रेरित बल लखनहित, सुरसहि रोंक्यो आइ ।
बदन पैठि पुनि निकसिकै, चल्यो आशिषा पाइ ॥
राहुजननि रहि सिन्धुमहँ, गहि खग करै अहार ।
सोइछलजखिहनुमानतेहि, मारि भये दधिपार ॥
शिवा शापयुत शैलपर, गयो भयो नहिं बाल ।
यह नहिं प्रभुता प्लवंगकी, प्रभु प्रताप बश काल ॥
सो० गिरि चढ़ि देखी लङ्क, अतिविचित्र सुखिमनहरनि ।
फिरत असुर बहु बङ्क, चहुँ दिशि रक्षा हेतु पुर ॥
करि विचार कपिशेश, दण्डरारि वपुधारि तब ।
निशि गढ़ कीन प्रवेश, लखि बोलत भइ लङ्किनी ॥
जानत म्वहिं न अयान, मम अहार है लङ्ककर ।
सुनि मुष्टिक हनुमान, हनत मरी भइ दिव्य वपु ॥
कहत भई कर जोरि, भयो सत्य बर ब्रह्मकर ।
जाहु नगर भय छोरि, सुमिरिरामपद कपि चलयहु ॥
सब घर हेरे पौन, कतहुँ न देखी जानकी ।
गये दशानन भौन, अति विचित्र पुष्पक जहाँ ॥

दो० सबै [illegible], सबै [illegible] माहिं।
सबै [illegible] धर्म, [illegible] जात सो नाहिं॥

[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
पुनि मैं [illegible] * [illegible]
तब [illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]

दो० कह्यो विभीषण जोरि कर, सुनहु कपि श्रीरघुनाथ।
करिहैं कृपा कृपालु, जनपर जानि अनाथ॥
तामस तनु कछु भजन नाहिं, नहिं पदकमल सनेहु।
बिन हरिकृपा न दरश तव, भयो भरोसो येहु॥
यह कपि परम कृपालु प्रभु, माधव किये कपिभाल।
धाक न बुद्धि न रूप गुण, तोष हनु तिहुँकाल॥

सो० ऐसे प्रभुहि बिसारि, फिरत न परहि नरनिरयमहँ।
सुनत भयो सुख भारि, पुनि पूछ्यो पहँ जानकी॥
दीन्ही युक्ति बताइ, जो अशोकबन बिराट जहँ।
कनक बिटप मनुदाइ, नाना चित्र विचित्र फल॥
शोभित सुन्दर प्रभात, नये शिंशपा बिटपतर।
बैठी जहँ जगमात, मनहु विरह मूरति धरे॥

देखि नवायो शीश, सनहीं मन रहे बैठि तरु।
त्यहि अवसर दशशीश, अगणिततहँसंगसुमुखिसब॥
बोला जनकसुता तें बानी * सुनहु प्राणप्रिय सुमुख सयानी
मैं सुर असुर नाथ बलधामा * मन्दोदरी आदि सब भामा
मेघनाद आदिक सुत जेते * तिनकी रवनि रहत जन तेते
करहुँ सकल शुचि सेवक तोरे * एक बार निरखौ दिशि मोरे
तेरे योग सकल सुख आहीं * तृणधरि बद सीता त्यहि पाहीं
छप्पय। रे रावण जे अहैं, रामचरणन अनुरागी।
ते सुरपति चुल्लवत, लखैं ललना सम आगी॥
चिन्तामणिअश्मवत, सरिस खद्योत तमारी।
स्वर्ण मेरु लोष्टवत, भूप भृत्यवत विचारी॥
कल्पविटपतिर्नवत्तजग, राशि भारवत देह।
तो तैं काह देखावई, म्वहिं लघु लङ्का येह॥
दो० होत प्रफुल्लित कमलिनी, कहुँ खद्योत प्रकाश।
कहत बचन मर्याद तजि, हेतु आपने नाश॥
सुनि सीता के बचन वर, मनहु लगे उर बान।
काढ़ि खड्ग मारन उठ्यो, तैं मम कृत अपमान॥
सो० मन्दोदरि गहि पानि, समुझायो बहुभांति तब।
बोलि बकी अघ खानि,कहिसिकित्रासहुजनकजहि॥
मास दिवसके बीच, जो नहिं मानी बचन मम।
तौ कटिहौं शिर नीच, लज्जित ह्वै गा भवन निज॥
दो० त्रिबिधरूप धरि राक्षसी, लगीं लियै दुख दैन।
त्रिजटा तब समुझाइकै, जात भई निज ऐन॥
राम विरहवश जानकी, सबनि निहोरि निहोरि।

[illegible] शिर विपति [illegible] ॥

[illegible]

दो० सुनि सीताके वचन कपि, आयो पुरहु लजात ।
[illegible] सुमन जिमि, [illegible] सन्मुख जात ॥

कपि-रूप लखि सीय सयानी * रामदूत मैं सत्य सयानी
तिनके गुण कछु कहा बखाना * श्रीराम नाम बोले हनुमाना

छुकुभाछन्द ॥

प्रथम दया दुख देखि सकै नाहिं उभय कृपाकरि गहई ।
अनुकम्पा हित करत न स्वागत करणा कष्ट न सहई ॥
शानुराग गुण सहित दोषहू ताकी रक्षा चाहै ।

अनुक्रोश निज शरणिकेर कलि करतअ पुनि पुनि काहें ॥
दम गुण इन्द्री दमन दर्प पारिभव दानव संतापा।
समगुण सुमन विरोध बोध वपु परिपूरण निष्पापा ॥
सत्य सदा सच कहत गहत लखि प्रीति प्रतीति अपावन।
क्षमा छिद्र लखि क्षमहिं सदा प्रापति सौलभ्य सुहावन ॥
सौशिल्या तज दीन खीन बुधि सुधि शरणागत पालैं।
प्रणत विधुर वातसल्य भोगकृत प्रमुदित आपु कृपालैं ॥
सब उर फ़ुर सर्वज्ञ अघट घटनाकर शक्ति स्वरूपं।
रजकृत गणन कृतज्ञ मेरुसम सुमिरत भक्ति अनूपं ॥
गुण गँभीर रहि तीर जासुकी गति मति जात न जानी।
चतुरबिचित्र विचित्र रचत रचना अगणित विचबानी ॥
थिर सुनास गुणधाम अचल अर्पत अनहेतु उदारा।
धैर्य धार रिपुमार मोह मथि मानस टरै न टारा ॥
शूर समर सुख लहत तेज जग जीवनि निज बश राखैं।
बड बड़ कारज करत होइ श्रम स्वल्प न पद्धति नाखैं ॥
सौन्दर्याखिल अङ्ग सुभग चप चाहत चाहन डोलैं।
महामठि माधुर्य साम्य सौरभ सबते भल बोलैं ॥
भागवान ब्रह्मादि धनी बहु जाके धनते भयऊ।
सिरस सुमन सुकुमार्य आर्य आउवलि अजीत अरिजयऊ॥
शुद्ध सुवेष किशोर सौर्य मार्दव बिरक्त बिज्ञानी।
धर्म धाम निष्काम राम रघुनाथ अनाथ अमानी ॥
दो० कहिकै कहत न गहत गहि, दैके देत न काहु।
बधिकै बधत न तजत तजि, भजेहि भजत तवनाहु॥
संग सुमित्रा सुवनते, अधिक भरतमें प्रीति।

कइक बार मोसे कहिनि, कुटिल कागकी रीति ॥
सुनि हनुमान वचन बैदेही * जायो मन क्रम रामसनेही
बोली अहैं कुशल दोउ भाई * हमते तात न कछु बनिआई
सासु ससुर पति वचन निवारी * आइन संग सनेह पुकारी
अछत देह जब भयो बिछोहा * तजे न प्राण कौन बड़मोहा
यहो सह्यो दुख दुसह अभागी * जरि न गयो बपु बिरह दवागी
तेहिते तात प्रीति की बाता * जानत भूप करदम जलजाता
आरज सुवन दया के सिन्धू * सरल सुभाव दीन के बन्धू
निज दिशि देखि चहे सो करहीं * हमरे करम सदा दुख भरहीं
सुनि पवनज कहपुलकितगाता * दीन वचन कत भाषत माता
जनके दुख रघुनाथ दुखारी * तव वियोग संभव दुखभारी
ऋतु अनरोध शोध बिन पाये * ज्योत्यों इतने दिवस बिताये
नाहित कहँ रघुपति शर भानू * तम बरूथ कहँ निशिचर जानू
जो मैं हठि लै जावों आजू * बिन निदेश बिगरे सुरकाजू
दो० त्यहिते कछु दिन धीर धरु, कपिनसहित दोउ भाय।
आइ तुम्हैं ले जाइहैं, अरि हरिपुर पहुँचाय ॥
सुनिबोलीसिय कीशसब, हैं सुत तोहिं समान।
तबतौ कीन्हेउ स्वर्णगिरि, सरिस स्वतनु हनुमान ॥
सो० विन कीन्हे करतूति, कथत ताहि लघु जानिये।
कालिह कहौंगो भूति, धोइसमर सरियदनमसि ॥
मैं जु सुने कटु बैन, कहे जो निशिचर नीचने।
धरि राखे उर ऐन, समय पाय सब काढ़िहौं ॥
भइ सीतहि परतीति, देखि बुद्धि बल कीशकर।
दीन्ह अशीश सप्रीति, अजरअमरसुत होउ प्रिय ॥

सुनि कपि नायो माथ, हाथ जोरि बोल्यो बहुरि ।
छुधा लागि म्वहि मात, हर्षि कहेउ सुत खाहु फल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
-दासरामसनेहीकृतमारुतनन्दनश्रीसीताप्रतिश्रीराम-
सन्देशवर्णनोनामैकविंशोऽध्याय ॥ २१ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं आदिकबि कथनिकछु, नाटक रीति बखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय, पुरुहुत ते बर बाग ।
दशमुखदुखहित खाइ फल, कपि तरु तोरनलाग ॥
बरजत मारे असुर कछु, कछुक गये गृह भागि ।
कछुन जनायो रावणहि, सुनतलागिजनु आगि ॥

तुरत बोलि मन्त्रीसुत लीन्हा * लखि किन्नर कहँ आयसु दीन्हा
असी सहस सुभट सँग लैके * आवा निकट दुंदुभी दैके
हरषे हरिसुत सैन निहारी * बोले जय रघुनाथ खरारी
जय लक्ष्मण सुग्रीव कपीशा * लखि किन्नर मारे शर बीशा
तब हनुमतहँसितरुयक लीन्हेउ * तेहियकविशिखखण्डनैबकीन्हेउ
कपि योजन की शिला उपाटी * लक्ष बाण करि किन्नर काटी
तब बजरङ्ग रोष करि धायो * पटकि पानि शिर मारि गिरायो
पाछे अपर निशाचर मारे * भागि बचे ते जाय पुकारे
सुनि तब अक्षय कुवर पठावा * उभय लाख भट लै सो आवा
देखि ताहि गरज्यो कपि भारी * भागे हय गय हहरि पछारी

दो० साधि सकल आये निकट, कहि कहि बाणी बिङ्ग ।
कूदेहु कपि तिन मध्य इमि, जिमि मेषन महँ सिङ्ग ॥
कछुक नाय कांढे करनि, कछु मारे धरि पाइँ ।

कछुक मिलाये धूरि मँह, भूरि मगनकी नाहँ ॥
निज दलप लखि अक्षयकुमारा * लैकर खम्भ सो शीशहि मारा
लागत सो मूर्च्छा सी आई * मार नव लाखन शर धाई
भयो चन तन पूरित देख्यो * भानुकिरणजनुचहुँदिशिलेख्यो
झिटकि देह सब बाण गिरायो * गहि गिरि एक अक्षयपर धायो
आवत देखि मारे बहु बाना * दहिने करत लख्यो पवमाना
तुरत नाम गहि शिर दै मारा * सहित सूत रथ भा सहारा
ताहु रुधिर मुख पान प्रचारे * बहु रखवारे पुनि सोऊ मारे
बैठ बहुरि महल पर जाई * बोलत लङ्कादिशि गोहराई
मैं हौं कोशलेन्द्र कर दासा * बैठ लखा वन कीन्हे नासा
जासु सुभट मन होय खुशाली * आय करै सो समर कुचाली
अक्षयनिधनसुनि निशिचरराई * मेघनाद पहँ लिहिसि बुलाई
पकरि बांधि बानर कहँ लावो * मारेहु जनि सुत मोहि दिखावो
आयसु मानि चलो लै सङ्गा * आवा जहँ तहँ कपि रणरङ्गा
लखि परनज कापी तिनबीचा * मारे झिटकि अनेकन नीचा
पुनि प्रचारि नृपारिपुने भिरेऊ * मृगपतिसममहि कोउ न गिरेऊ
भरि अनङ्ग दिन भई लराई * जाना यह हरि जीत न जाई
ब्रह्मअस्त्र तब साधि चलावा * करि विचार हनुमान बँधावा
लीले लैआये जहँ रावन * देखा कपि जनु कुधर भयावन
अरुणनयन रिसवशअंगजरहीं * सभय देव सब आयसु करहीं
लखिप्रभाव कपि शङ्क न आनी * बोला तब दशकन्धर बानी

गीतिकाछन्द ॥

कपि कौन तू सुत अक्षघातक कौन बल रघुनाथके ।
रघुनाथ को खरदूषणान्तक अनुज लक्ष्मण साथके ॥

लपण को तब भगिनि जानत परशुधर मद जेहि हरेउ ।
परशुधर को सहसभुज रिपु दीप जेहि तव शिर धरेउ ॥
पठवा जु केहि सुग्रीव को हरि बालि सोदर जानिये ।
कपि बालि को तुम रह्यो जाकी काखमें सुधि आनिये ॥
किमि सिन्धु नांघे गोपद ज्यों केहिहेतु सिय चोरै लखे ।
सिय कौन कन्या जनककी तुम बाण रे जाके भखे ॥
कस बाण सोइ बलिसुवन जेहि रवहि बाधि नाच नचायहू ।
को कहत यहिविधि पन्निनी जेहि जलधि मांझ चलायहू ॥
शठ बांधि आयसि यही बादन बात यह नहिं शानहू ।
तव त्रियन लखि अब लाग पुनि तोहि देन शिक्षाशानहू ॥
दे कौन शिक्षा देत याही बैर प्रभुसे जनि करो ।
परि पाहूँ सीतहि देहु सब विन मौत जाते ना मरो ॥
को मारिहै म्वहि कर्म तेरे कौन तिनते राखिहै ।
श्रीराम करुणाधाम जब ते शरण मुखते भाखिहै ॥
मम शरण त्रिभुवन आजु तो हम शरण काकी जाहिरे ।
नहिं जाइहै तौ पाइहै फल कटुक कछु दिन माहिरे ॥
मृगनारि द्विज कपिनाहहो खरदूषणान्धक निरबलो ।
म्वहि भेंटि जब फिरि जाइहै तब बात कछु आगे चलो ॥
जब समर रुलिहैं राम तब को सुभट शायक सहिसकी ।
सुनि समुझि बूझत नाहि बीसहु नयन फूटे परचकी ॥
रे पोच कपि नहि डरत काको मोहि तू शठ है कहा ।
नहिं दीन आयसु ईश नातरु ख्याल करत्यों जस चहा ॥
रसराज तोहि करि सुभट रसयुत लङ्क खल खलतो स्वयं ।
पुटपाक करि सुरपालिहि देतो घने घर घलतो त्वयं ॥

[illegible]

[illegible]

नाराचछन्द ॥

चढ्यो गवाक्षि धाम धूम मानवो उठायकै ।
मनो अकास तें चली हुताशु की सहायकै ॥
कि राहु लोकनेक पाल चौंह सो पसारिहै ।
किधौं कलंक एक सूर मेघ सों निकारिहै ॥
किधौं सुरेश पाप को बलाय भामिनी गहै ।
बिलोकि यातुधान सो पराग में जहाँ तहै ॥
फिराइ लाइ जाइ पैन कैसने लगे परै ।
गयन्द छोरि बाजि छोरि ऊँट छोरिके खरै ॥

अनेक बाल बालकी सुतात मात बोलहीं।
बचाइ लीजिये हमैं सबै समान डोलहीं॥
अनेक नारि मारि रिंभ डिंभ कादि लावहीं।
अनेक डारि डारि बस्तु बारि लेन धावहीं॥
अनेक कन्त वीरते पुकारि बैन यों कहैं।
उठाय लेहु लाल माल जाल दे परो तहैं॥
बिलोकि देव यों कहै कपीश यज्ञसी ठनी।
सुरारि सौज लङ्क कुण्ड हाक स्वाहसी भनी॥
किधौं बिराट के सुरारि राजरोग जानिजू।
निमित्त तासु बेद ज्यों जस्यो मृगाक ठानिजू॥
मथन्ति मन्दराज की मनोज फागु खेलई।
बिराग धृत्य बोधको बिमोह बन्धु ठेलई॥
गिरैं कँगूर दूरते तबै कहै मँदोदरी।
बिहाइ लोकलाज कानि भागती न क्यों अरी॥
अरे अकम्पनातिकाय कण्टकी महोदरं।
लवाइ लेहु अक्षगाति पूत नाति सोदरं॥
अनेक बार मैं कही बुझायहू बिभीषणं।
न मानि दाढ़िजार को कुठार बंश तीषणं॥
निकेत द्वार अर्ध उर्ध्व हाट बाट में जहा।
लुकातु जाय नीर कीश तीर देखिये तहा॥
घने स्वबक्षजात के निशात स्वस्ति पावहीं।
बोलाय शेश राघवेश जानकी कहावहीं॥
बधू जो कुम्भकर्णकी पसारि पाणि भाखिये।
दुहाइ रामचन्द्र केरि मोर कन्त राखिये॥

अनेक धाइ धाइ जाइ रावणै सुनायहू।
बिचार वीर मेघनाद से बली पठायहू॥
अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आय मारने लगे।
घुमाइ दीनि बालधी पुकारि कूरसे भगे॥
सुमन्त्र जाय यों कही बड़ो बलाइ कीशहै।
निशङ्क बङ्कहू बड़ो सुनो न ऐस दीशहै॥
बिशाल ज्वाल जानि कोपि मेघ बोलि यों कही।
बुताइ देहु आगि रे बहार जन्तुको सही॥
भले सुनाय चाप आय पुञ्ज पाथ छाडेऊ।
यथा सनेह पाइ चौगुनी कृशानु बाढेऊ॥
लगे जु अङ्ग अङ्ग बाण प्राण लै भगे सबै।
निहारि रीति मालवान स्यान बोलि यों तबै॥
न आहि याहि आपि सूम आहि ईश बामता।
समीर स्वास सीयकी जु रामरोप मामता॥
बिडौज ब्रह्म बिष्णु रुद्र आदि देव जौन है।
डेरात मोहि सर्व बङ्ग ईश और कौन हैं॥
बोलाइ कालते कह्यो लंगूल लाव मारिकै।
बटोरि भूत प्रेत यक्ष दण्ड चण्ड धारिकै॥
बिलोकि बातजात घात कीनि सैन तासुको।
उठाय गाल में धर्यो पर्यो खँभार जासुको॥
समेत शम्भु भास रामदास पास आयहू।
सभीत पङ्कजासनादि बीनती सुनायहू॥

दण्डकछन्द॥ जयति श्रीबातसंजात विख्यात बल विपुल पन बाल रवि गाल धर्ता। लोक लिपिकर्त्ता

श्रुति शास्त्र विद्या निपुण निरसि संसार महिभारहर्त्ता ॥ जयति वेनरङ्ग रणरङ्ग अरिभङ्ग कृत कर्म नहिं भर्म ऋकमूक बासं । सत्य सुग्रीव सुख हेतु वृषकेतु वपु बचन मन काय रघुनाथदासं ॥ जयति गुणज्ञान विज्ञान बैराग निधि नाम वसु राम उरधाम धारी । साधु सुररञ्जनं असुरगणगञ्जन दुष्टमुखभञ्जनं विपतिहारी ॥ जयति कपि शिष्ट परमिष्ट पावक परम धर्मधुर धर्त्ता हरिदर्प हन्ता । स्वर्णशैलाभ जलदाभ विग्रह बरण अमल यश शूर बीराग्रगन्ता ॥ जयति जनकात्मजा शोच मोचन विपिन निधन निर्द्वंद्व दशग्रीव ज्ञाता । निपट निरशङ्क गढलङ्क दाहक काम क्रोध मद देवतानन्द-दाता ॥ जयति शिर श्रवण दृग देत कटि उदर कर शूल निरमूलनाभिष्ट ग्राम । पातु पूरब दक्षिविदिशि पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व अध सर्बदा सर्ब ठामं ॥ जयति परयन्त्र परमन्त्र नैवारण शाकिनी डाकिनी घोरमारी । भूत यमदूत बैताल पावक प्रेत चौर बिगबिच्छु अहिबन्ध-नारी ॥ जयति सुरसिद्ध मुनिवृन्द वन्दित चरण शरण भयहरण धृत कुधर हाथं । अञ्जनी आनि दोहाइ श्रीरामकी हरहु दुख सपदि रघुनाथलाथ ॥

दो० देहु छांडि यमराज कहँ, यही बीनती मोरि ।
परबश आयों लरन सुनि, दीन गालते छोरि ॥
जरत देखि पुर जानकिहि, भयो शोच कपिहेत ।
लागीं सौंपन सब त्रिबध, बिप्रणहि प्रीतिससेत ॥
वैदेहीकी सुरति करि, हरिहु लाग पछितान ।

पुनि अपनी दिशि देखिकै, दूरि कीन अज्ञान ॥
बच्यो विभीषण भवन अरु, कुम्भकरणकर द्वार ।
अपर लङ्क सब जारि कपि, कूद्यो जलधि मँझार ॥
पूंछ बुझाइ बनाइ लघु, वपुष आइ सिय तीर ।
कह्यो चिह्न कछु देहु मोहि, जिमि दीन्ह्यो रघुवीर ॥
सुनि सहप्रीति उतारिनिज, चूड़ामणि तब दीन्ह ।
गहवर बोली तात तुम, भले समय सुधि लीन्ह ॥
जिमिमणिविनुव्याकुलभुजग, जलबिनुव्याकुलमीन ।
तिमि देखे रघुनाथ बिनु, तलफत हौं मैं दीन ॥
कहु सुत अब कब आइहैं, दीनबन्धु यहि पार ।
देहैं राज विभीषणै, करि निशिचर संहार ॥
विजय पाइ कब राजिहैं, मोहि सहित दल माहिं ।
देव बन्दि ते छूटि कब, विनय करय प्रभु पाहिं ॥
कब धौं विधि पहुँचाइहै, फिरि कोशलपुर तात ।
भरत शत्रुहन लोग सब, कब लहिहैं मुद मात ॥
ह्वैहैं मङ्गल काज कब, पुजिहैं याचक काम ।
नखशिख कबअवलोकिहौं, रघुपति छबि अभिराम ॥
शीशमुकुटमणिगणजटित, श्रवणन कुण्डल लोल ।
जगमगात कब देखिहौं, टोपी दिये अमोल ॥
अलकैं साँची अतरसों, निकट कपोलन मुक्त ।
भरि लोचन कब देखिहौं, कुसुम कलिन सयुक्त ॥
भाल तिलक भासितउरध, भृकुटी धनु अनुहारि ।
भूरिभाग कब देखिहौं, नयनन पलक बिसारि ॥
चञ्चल चारु विशाल चिंय, लोचन मोचन मान ।

चितवत दिशि कब देखिहौं, मनको करि कुरबान ॥
कीर तुण्ड सम नासिका, लटकन की छवि भूरि ।
कब चकोर सम देखिहौं, मुख मयङ्क तृण तूरि ॥
अरुणअधर दाडिमदशन, रसन चारु मृदु हास ।
हे हरि कब अवलोकिहौं, शशि कर सरिस प्रकास॥
मधुर बचन जन मन हरण, कब सुनिहौं निजकान ।
चिबुकचारु कब देखिहौं, चितवनि अमी समान ॥
कम्बु कण्ठ तुलसी सुभग, मणि मोतिनकी माल ।
उर दीरघ अवलोकिहौं, कब त्रिवली सुखजाल ॥
भुजाबिशालकरिकरसरिस, करतल कमल समान ।
सहित विभूषण देखिहौं, कब लीन्हे धनुवान ॥
झीन झँगा पहिरे ललित, ता ऊपर पट पीत ।
कब निज नयन सेराइहौं, देखि उदर उपवीत ॥
कटि केहरि हरि करधनी, पट परदनी सुरङ्ग ।
कब पदपद्म पलोटिहौं, जानु पाणि सब अङ्ग ॥
मैं सुत कन्त अनन्तकर, जानत सरल सुभाउ ।
ताते कहत न सहत दुख, तुमते कौन दुराउ ॥
बिरह अग्निते देखि त्वहिं, शीतल भय निज देह ।
सोउ कहत तुम जान फिर, सोइ दुख सहब अनेह ॥
दीन वचन सुनि सीय के, भयो बिकल कपिराय ।
नीक न लागी अमरता, छलबलकछु न बिसाय ॥
दीन्हो मातु प्रबोध तब, होइ तुव मन जौन ।
चल्यो नाइशिर नाद करि, कूद्यो सागर लौन ॥
आवत जानि लँगूल सब, चढ़े बिटप गिरि धाय ।

देखत पहुँचे आइ हनु, कुहू दिवस सुखदाय ॥
भये छीनते पीन सब, शाखा मृग यकसाथ ।
बृहद्रामायण केर मत, कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतहनुमत्कृतलकापुरीविध्वंसवर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

दो० सुमिरिरामासिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण कहौं कछु, गीतावलि मत आनि ॥
सियैरांज्ञि वनभञ्जि पुनि, पुर जराइ मणि पाइ ।
आयो मारुतसुतहि लखि, हरषे कपि समुदाइ ॥
भेंटि भेंटि पूछा सबन, हाल कहा हनुमान ।
सुनत चले सानन्द ह्वै, जहँ सुकण्ठ भगवान ॥
मार्ग पञ्चमी शुक्र दिन, मधुवन पहुँचे आइ ।
खाये फल दल मधु सबन, रखवारे विडराइ ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहि मिलि, मुदित कहा सब हाल ।
सतये दिन आये अखिल, जहँ रघुनाथ कृपाल ॥

चरण परत भेंटे रघुबीरा * सानुज बैठारे निज तीरा
जामवन्त तब सकल बखाना * जेहिविधि काज कीन हनुमाना
सुनत समोह गोदभरि अङ्गा * हनुमानहिं भेंटे श्रीरङ्गा
उपपधारि बूझी कुशलाता * किमिसियखबरि लयायो ताता

गीतिकाछन्द ॥

किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवनसुत पदगहि कहा ।
प्रभु पासते जब चलेन ढूँढत दूरि यक सागर चहा ॥
शत योजनहि तेहि नाधि चालिस कोसतक आरामहै ।

पुनि हेमके त्रैकूट लङ्क सुबेल सुन्दर नाम है ॥
तहँ पांच लाख पषान के गृह दारु के नव लक्ष हैं ।
पुनि ताम्रके पुनि कोटि घर श्रुति कोटि रजके स्वक्ष हैं ॥
तितनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग के ।
षटकोटि तृणके वंश छदके कोटि शत बहु भागके ॥
अस्फटिकके नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र से ।
मैं दीख इतने निलयलङ्का दुर्ग शत योजन पसे ॥
दश शीश ताको ईश जाके कोपते त्रिभुवन कँपै ।
उपबाग तामें जानकी तव विरह पावक में तपै ॥
जहँ रहत तहँके विहँगनिजानिजभवननजिभजिभजिगये ।
अइ मेंट श्वास समीरते तिन फिरि न तिहुँ महँ पग दये॥
कृशगात सो जरिजात तजि दृग बारि निज हित राखही ।
तव नाम सुमिरत याम आठो और कछु नहिं भाखहीं ॥
जब प्राण मीन समान बिन जल जानि तव त्यागोचहैं ।
तब सींचि प्रभुगुण राखि त्रिजटा जाय मैं देखी तहैं ॥
शिरनाय दीन्ह्यो मुद्रिका कहि कुशल बन भञ्जन कह्यो ।
बधि अक्ष लङ्क जराइ चूडारत्न सीताते लह्यो ॥
सो लीजिये रघुनाथले निजहाथ हृदय लगायहू ।
भे प्रेम पुलकित गात शिथिल न बात मुखते आयहू ॥
सुनि शोक सीय वियोग सागर मांझ बूडन लागेहू ।
हनुमान बोहित सरिस लीन उठाइ आतुर जागेहू ॥
शीश नाइ बोले हनुमन्ता * केतनि बात करौ प्रभु चिन्ता
कहो रावणहिं दल युत मारौं * कहो आनि तव चरणन डारौं
कहो लङ्क लै सागर बोरौं * कहो त्रिकूट घट इव फोरौं

देखत पहुँचे आइ हनु, कुहू दिवस सुखदाय ॥
भये छीनते पीन सब, शाखा मृग यकसाथ ।
बृहद्रामायण केर मत, कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतहनुमत्कृतलङ्कापुरीविध्वंसवर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

दो० सुमिरिरामासिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण कहौ कछु, गीतावलि मत आनि ॥
सियैराखि बनभञ्जि पुनि, पुर जराइ मणि पाइ ।
आयो मारुतसुतहि लखि, हरषे कपि समुदाइ ॥
भेंटि भेंटि पूछा सबन, हाल कहा हनुमान ।
सुनत चले सानन्द ह्वै, जहँ सुकण्ठ भगवान ॥
मार्ग पञ्चमी शुक्र दिन, मधुवन पहुँचे आइ ।
खाये फल दल मधु सबन, रखवारे बिडराइ ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहि मिलि, मुदित कहा सब हाल ।
सतयें दिन आये अखिल, जहँ रघुनाथ कृपाल ॥

चरण परत भेंटे रघुबीरा * सानुज बैठारे निज तीरा
जामवन्त तब सकल बखाना * जेहिविधि काज कीन हनुमाना
सुनत समोह गोदभरि अङ्गा * हनुमानहिं भेंटे श्रीरङ्गा
उपपधारि बूझी कुशलाता * किमिसियखबरि लयायो ताता

गीतिकाछन्द ॥

किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवनसुत पदगहि कहा ।
प्रभु पासते जब चलेन ढूँढत दूरि यक सागर चहा ॥
शत योजनहि तेहि नांघि चालिस कोसतक आरामहै ।

पुनि हेमके अंकूर लङ्क सुबेल सुन्दर नाम है।
तहँ पांच लाख पषान के ग्रह दारु के नव लक्ष हैं।
पुनि ताम्रके पुनि कोटि घर श्रुति कोटि रजके लखहुँ॥
तितनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग के।
षटकोटि मूणके बरा छद्के कोटि शत बहु भागके॥
अस्फाटिकके नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र से।
मैं दीख इतने निलयलङ्का दुर्ग शत्त योजन बसे॥
दर्श शीश ताको ईश डाके कांपते त्रिभुवन कँपै।
उपबाग तास जानकी तव विरह पावक में तपै॥
जहँ रहत तहँके विहगनिजानिजभवनतजिभजिभजिगये।
भइ घट श्वास समीरते तिन फिरि न तिहुँ सहँ पग दये॥
कृशगात सो जरिजात तजि इग वारि निज हित राखहीं।
तव नाम सुमिरत याम आठो और कछु नहिं भाखहीं॥
नव प्राण मीन समान बिन जल जानि तव त्यागोचहैं।
तप सींचि प्रभुगुण वारि त्रिजटा जाय मैं देखी तहैं॥
शिरनाय दीन्ह्यो मुद्रिका कहि कुशल बन भञ्जन कर्यो।
बाधि अक्ष तह्ँ जराइ चूड़ारत्न सीताते लह्यो॥
सो लीजिये रघुनाथले निजहाथ हृदय लगायहू।
ले प्रेम पुलकित गात शिथिल न बात मुखते आयहू॥
सुनि शोक सीय वियोग सागर मांझ बूड़न लागेहू।
हनुमान बोहित सरिस लीने उठाइ आतुर जागेहू।
शीश नाइ बोल हनुमन्ता ※ केतनि बात करौ प्रभु चिन्त
कहौ रावणहिं दल युत मारौं ※ कहौ आनि तव चरणन डार
कहौ लङ्क ले सागर बोरौं ※ कहौ त्रिकूट घट इव फो

कहौ लाइ गिरि सागर तोपौं * कहौ पान करि जलउर लोपौं
कहौ परौं मैं देह बढाई * तापर सैन उतरि सब जाई
कहौ तुम्हैं लै सिये देखावौं * कहौ जानकी आनि मिलावौं
तव प्रतापते सब कछु करिहौं * बिन निदेश पथ पाउं न धरिहौं
ताते जो भावै सो कहहू * कह प्रभु तुम सुत ऐसे अहहू
सब विधिहौं निजमन अनुमाना * तुम सम मोर हितू नहिं आना
प्रति उपकार योग्य मैं नाहीं * त्यहितेहौं ऋणियाँ तुम पाहीं
सुनिहनुमानसकुचि असभाखा * तव प्रताप मैं था मृगशाखा

दो० धूरि मेरु गोपद जलधि, जल पावक भय प्रीति।
नाथ कृपा जापर करहु, विपरीते विपरीति ॥
सुनिप्रभु लीन लगाय उर, बोले सम्मत नीक।
माग्यो जौन रजाइ तुम, तात रहै सो ठीक ॥

पर मैं निज शायक धरि राखे * रहिहैं क्षुधित तुम्हारे माखे
अरु जगहित लीला नहिं बाढी * मिटी आह दशमुखकी गाढी
कर्मप्रधान विश्व मैं कीन्हा * देव चहैं निज बदला लीन्हा
सो सब फिरि रहिजाई ताता * ताते अब कीजे यह बाता
लै कपि भालु चलहु चढिलङ्का * देखौं मह्र कैस गढ बङ्का
कह कपि नाथ बेगही कीजै * अभिजितसमुझि कूचकरिदीजै

दो० सबदिन यह साइत सुभग, जहँ अपयोग न आन।
सुनत अष्टमी दिवस प्रभु, रविलखि कीनपयान ॥

गीतिकाछन्द ॥

प्रभु कीन लङ्क पयान जब तब धनुष निज टकोरेहू।
सुनि शब्द घोर कठोर चौके शम्भु विधि मुख मोरेहू ॥
भयो काम सकल निकाम शिरसे गङ्गधारा बहि चली।

धरि धीर हृदय विचारि निज निज काज लागे विधिभली॥
भये विकल सब दिग्पाल चौदह भुवनके वासी डरे।
दशमौलि सभय बिहाल पुरजन गर्भ तिनके गिरिपरे॥
कपि भालु ठोंकहिं ताल अति बिकराल रद कट कट करैं।
बदि बाद कूदहिं नाद करि हरि सत उपरोपर परैं॥
अति पीन परम विशाल कर गिरि बिटप धृत चञ्चल महैं।
मुख बिकट लोचन पिंग जिन्हैं बिलोकि भय कालहु लहैं॥
धरु मारु भुजा उखारु अरिदल डारु सागर तोपहूं।
तेहि दोष देखब ताहि जो तेहि हेत तनको कोपहूं॥
यहि भांति मर्कट कटक बोलत चलत मरु पंगुल भये।
शशि भानु लोपे यान नम थल धूरि पर सर पाटि गये॥
अनिमेष चहत निमेष मातलि सहस दृग अकुलानेहू।
सुनि हांक श्रीहनुमानकी पर शपन काहु न जानेहू॥
मल खात दिग्गज कोल कूरम शेष शिर हालत मही।
मुख महुरमुहुरामर्पि कर्पत गई तन करकस रुही॥
श्रीराम राजत पवन पर जिमि उदयगिरि पर रविलसै।
सौमित्रि अङ्गद कन्ध मानहुँ अग्निघर चेदा बसै॥
कससमत द्वाम मग वसत बिसयें दिवस दधितट आयहू।
उतरे निरखि जल राशि फल दल फूल सत्राहिन खायहू॥
इत रहत असुर सशङ्क जबते लङ्क-गो कपि जारिकै।
सुत सचिव रावण बोलि बूझेउ मन्त्र कहौ विचारिकै॥
सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी * कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी
जा सन्मुख सक नयन मिलाई * असकहि चला विवश औंघाई
तब सकोंच बोला अतिकाया * आयसु मोहि देहु करि दाया

अबहींतिति नर हरि बिन करहूँ * और मन्त्र का बहुत उचरहूँ
काम रूप बोला घननादा * मम प्रभाव जग जानत जादा
बिधि हरिहरबश किहेउँ जुझारू * नरबनरन हित कौन बिचारू
कुम्भ निकुम्भ दम्भ छलकारी * बोले बिभुता बिदित हमारी
कृपा दृष्टि सब देव निहारैं * देखत उच्चासन बैठारैं
भोजन हित कहियत तिनपाहीं * हम काहूकर छुवा न खाहीं
डाटत बोलि सकै नहिं एकू * कपि मानुष हम गनैं न नेकू
मत्सररूप अकम्पन कहई * हमैं जियत अस को सिय लहई
कहा उपाय करौं अब सोई * नर बानर जेहि बचैं न कोई
अपर कथा कहिये का छोभी * तब भा भनत महोदर लोभी
जो आवै अनगन्त करोरी * डारौं खाइ भरै महिझोरी
तौ कपि सहस लाख केहि लेखे * जैहैं घूमि न अब हम देखे
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी * छलकरि हरि आनौं द्वौ दण्डी
जो चाह्यो सो कीन्ह्यों पाछे * बदमकरात कपट बपु काछे
विपुल बिप्र जो मैं वरिआनी * भूसुरबनि कोइ सकै न आनी
जनिबौ करत सकृत करिकाहा * सो किमि जीत जासु नरनाहा
सुनि प्रहस्त बोला डरपाई * मम मत सीतहि देहु पठाई
नारि पाइ जो फिरि चढिआवैं * करहु युद्ध जेहि जान न पावैं
यामें नहिं अधरम की बाता * बोला तब हिंसक नरघाता
सकल बस्तु भोगन हित आवै * धर्माधर्म कहा कहवावै
करत बतकही कादर केरी * यह नहिं मारिहि सबन खँदेरी
नीति कहत हम कादर ठहरे * जाना अब तुम सोइहौ छहरे
दो० कह्यो सुमति मन्दोदरी, सुनहु कन्त मम बात।
करजामय रिपु अग्निनृप, लघु करि गने न जात॥

भुवनेश्वर सर्वज्ञ जो, गनत छोट तुम ताहि।
मींचु बेसाहत सुकर यह, भलीबात नहिं आहि॥
सुवन सचिव तव मन्दमति, कहत वचन मुख पेखि।
नगर जरत तव सवन कर, लीन पराक्रम देखि॥
तेहिते श्रीमत जानकिहि, पठइ देउ सनमानि।
नाहित दूषण बालिकी, होई गति सति जानि॥
नारि वचन सुनि मोह वश, बोला मोहिं समान।
सबल कुटुम्बी नृप धनी, परतापी को आन॥
भागत सुर जेहि नाम सुनि, सकी को ताते जूझि।
जान्यों तेहि हैं काल वश, परै न ताते सूझि॥
कहत बिभीषण नाइशिर, तेहि अनुशासन पाइ।
जो चाहौ निजभद्र तौ, सीतहि देउ पठाइ॥
तात राम नहिं नर अधिप, अखिल लोक करतार।
गो द्विज सुर महिसन्तहित, लीन मनुज अवतार॥
जप तप तीरथ ध्यान करि, जिनके दरशन दूरि।
सो प्रभु आयो अछत अधि, धन्य भाग तव भूरि॥
मेघनाद भट आदि जे, बैठे मारत गाल।
तेकि सकब धरि धीर जब, छुटिहैं बाण कराल॥
त्यहिते सकल विकारतजि, नाउ राम पद शीश।
मिटैं सकल अपराध जेहि, बने रहैं भुजबीश॥
सो० सुनि तिरछे करि अक्ष, बोला शठ जीवत यहा।
करत शत्रुकर पक्ष, जा उत कहि मास्योचरण॥
करि बिचार शिरनाइ, आयो घर निज मातुढिग।
कही कथा सब गाइ, सुनि बोली सनमानि सो॥

कहा भयो जो लात, मारी पितु सम भ्रातवड ।
इहां रहे कुशलात, वहा गये नहिं नेकु भल ॥
समुझि विमोहित वैन, चलेउवन्दिसचिवनसहित।
आये धनपति ऐन, लखिकीन्ह्योसनमानतिन॥
कह्यो सकल निज हेतु, सुनि कुवेर शोचन लगे ।
बोले तब वृषकेतु, तात किह्यो अतिनीकतम॥
दो० औषधिहित उपदेश बहु, करत न लागत जाहि ।
रुज असाधि शठ जानिकै, तजत सुजन जन ताहि ॥
पर अब शरण रामकी जाहू * सपदि मन्त्र वृझो मति काहू
सुन सुत रामविमुख जे प्रानी * भूले भव बन गज चढि मानी
आगे वृद्ध राक्षसी देख्यो * पाछे सिंह भयानक पेख्यो
तबतो गज वहँ गयो विलाई * आप कूपगृह गिरो डराई
दो० तेहितर ताक्यो काल सम, अजगर छाँडी नाहि ।
तब गहि दूर्वा आरवल, लटकिरहा तेहि माहिं ॥
तहँ सुन्दरि मधु लागि निहारी * प्रमुदित ह्वै तेहि गहेसि अनारी
सहित कटुम्ब उड़ीं सब माखी * लपटि गईं पग कटि मुखआखी
पर यक वूंद गिरिहिसि मधुपाना * सो सुख मूढ परम सुख माना
श्याम श्वेत बिधि मूषक ग्यूना * लागे निशिदिन काटन दूबा
झुकिगे जबै गिरा हहराई * तुरतै अजगर लीन चबाई
यह गति सब जीवन की जानो * बिनहरिशरण न कतहुँ ठिकानो
दो० रामशरण बिन कालते, बचा रहै भाजि आन ।
सो शठ अहि भय गरुडतजि, दादुर पक्ष लुकान ॥
राम विमुख जग जीव जे, तपत पाप भ्रमाहि ।
तेहि दुख नाशन हित यतन, वद श्रुतिमो इमि आहि॥

जिमिशिशुहितपितुरोगगद, नीरतरन हित नाव।
पालत पावत चढ़तपर, चिरकर होत अभाव॥
याते साँचे शुचि सुखद, शरणपाल रघुबीर।
केवल ताके शरण बिन, मिटै न भव भय भीर॥

सुनि सुखपाइ शिवहिशिरनावा * माँत्रिन सहित समोद सिधावा
अन्तःकरण सहित जिमिजीवा * हरि हित केदुख समुझिअतीवा
करत मनोरथ मग इमि जाहीं * शम्भु मिलन गुणिअतिहरषाहीं
अहोभाग्य मम उदय अपारा * कौन कीन अस शुभ आचारा
साधु बिप्रकरषा अस दीन्हा * कौन अपूरब तप हम कीन्हा
जो सर्बोपरि प्रभु सुख अयना * देखिहौं जाइ आ तु भरिनयना
निज जन हित प्रभु प्रकटाये * धरा भार भञ्जन महि आये
शोभा सिन्धु दरश जब पैहौं * तब का परमानन्द न लैहौं
जेहि पद पद्म भजैं सब सन्ता * बिधि हरि हर सनकादि अनन्ता
जिनके चिह्न धरा दुखहारी * रज कण परसि तरी ऋषिनारी
जासु बारिभवनिज शिर धारा * जेहि तारे जग अधम अपारा
निज पद पीठिगरत मन रञ्जा * धरिहौं मैं शिर तिन पदकञ्जा
जेहि कर कमल असुर बहु मारे * धर्म साधु श्रुति रक्षण हारे
ज्यहिकरगहि भञ्ज्यो भवचापा * परसत मिटत काल परितापा
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी * मम मस्तक धरिहैं सोइ पानी
पुंछिहैं जब तब कहिहौं नामा * नाथ होब मैं तोर गुलामा
बिन चित निज करिहौं सेवकाई * छाडि कपट हठ मान बड़ाई
पाहिरब प्रट उतर जो पैहौं * बची बचाई जूठनि लैहौं
सुनि लैहैं अपनाइ कृपाला * तब होइहौं सब भाँति निहाला
निशिदिन देखिहौंप्रभुकीझांकी * तब का रही करन को बाकी

मरतो जाइ कहा बिललाई * यह गति शम्भुकृपा हम पाई
निज दिशि देखि शङ्क मन धारै * हरषै जब प्रभु रीति बिचारै
दो० यहि बिधि करत मनोरथ, आये जहँ हरिसैन।
करि बिचार नभ दूरिते, बोले गद्गद बैन ॥
जय सर्बज्ञ कृतज्ञ प्रभु, कृपासिन्धु गुण गाथ।
शरण भये पालेउ बिपुल, अब स्वहि पालहुनाथ ॥
नाम बिभीषण असुर कुल, रावण रिपुकर भ्रात।
श्रवणसुयश सुनि शरण तव, आयों लै निज गात ॥
सुनि प्रभु बोलिसचिव तव लीन्हा * बूझ्यो यहि का चाहिय कीन्हा
कह कपिपति रिपुसोदर येहू * भेद लेन आवा गहि लेहू
कह अङ्गद आखिर बध करना * अबही क्यों न हतत है शरना
जामवन्त कह रिपुकर भ्राता * अब हमते यहिते कस नाता
सीय हरी तब क्यों नहिं आवा * देहु जान मुख प्रणत सुनावा
कह नल दूत पठे मत लीजे * ऐसेहि कैसे बिदा करीजै
उत्तम होइ तो राखहु पासा * नाहिंत हत तब नील-प्रकासा
साचेहु यह शरणागत आवा * राखिय देव मोहिं अस भावा
सभय तजे अघ लाग अनन्ता * होइ जो मात पिताकुलहन्ता
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया * राक्षस है न शरण जो आया
बलि प्रह्लाद सुकण्ठ यथाधू * जानहु तुम तिनसम यह साधू
छली न प्रभु तव सन्मुख होई * फिरे सभीत द्वारते कोई
बहुरि बात कछु कहन न पाई * बीच बिभीषण गिरा सुनाई
दो० अबतक आवत दीनके, हरत रह्यो दुखभार।
अस अभाग बड़ मोर जेहि, सुरतरु करत बिचार ॥
दीन बन्धु सुनि दीन के, बचन उठे अकुलाय।

कह्यो लषण हनुमानते, अबहीं लावहु जाय ॥
सो० लाये करि सनमान, पूस बदी भूतादिवस।
प्रभुछवि देखि जुडान, कीन्हिदण्डवतत्राहिकहि ॥
प्रभु उठाइ भेटे उरलाई * बैठे निज समीप बैठाई
पूछी कुशल कहौ लङ्केशा * दुष्ट सग सम कछु न कलेशा
बोले नाथ निभीषण भाला * सुमिरण जे तव करत कृपाला
तिन्हैं कुशल मङ्गल कल्याना * देत विरञ्चि बिनय करि नाना
जो मूरति मुनि जन मन मारी * करहिं ध्यान नहिं सकैं निहारी
तेहि भरिअङ्क मिल्यों मैं आजू * यहिते अधिक कौन सुख साजू
कह प्रभु सत्य कहौं मैं तोहीं * दास सरिस प्रिय अपर न मोहीं
जिनके हौं हित अनत न नेहा * तिन हित आय धरौं मैं देहा
अस कहि जल सागर करलीन्हा * तिलक बिभीषणके शिर कीन्हा
सुनि सुभाव लखि कपिसबहरषे * जय जय कहि प्रसून सुर बरषे
दो० जो पुर कलह कलेश करि, रावण शिव पहँ लीन।
सो प्रभुकुदिन बिभीषणहि, तृण आश्रम सम दीन ॥
ऐसे प्रभुहिं बिसारि जे, करत आन की आस।
तेशठधनहित धनिहितजि, भजत दासको दास ॥
चन्द्रोदय परबोध मत, मूलसार शुक गाथ।
बरण्यो सुन्दरकाण्ड शुभ, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुन्दरकाण्डसम्पूर्णनामत्रयो-
त्रिशोऽध्याय. ॥ २३ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौ कोकिल कहनि कछु, अग्निवेश मत आनि ॥
प्रात पञ्चमी दिवस प्रभु, पूछा सचिव बुलाइ ।
किहिबिधिउतरियउदधिसुनि, बोले निशिचर राइ ॥
नाथ आपु कर एक शर, सोखै सागर कोटि ।
तदपि नीति असि सिन्धुते, मागहु सागर वोटि ॥
कह्यो तात भल होइ हित, जो कर देव सहाइ ।
लषण बूहि शर मारिये, ईशन सोकी आइ ॥
बोले प्रभु नाहिं रुचत म्वहि, साधु अवज्ञा तात ।
त्यहिते यह करि लीजिये, पुनि वह ठानब बात ॥

अस कहि दर्भ डासि दधि तीरा * बैठ करि प्रणाम रघुबीरा
बिनवततीनि दिवसचालिगयऊ * तब प्रभु कोपि शरासन लयऊ
अग्नि बाण सधाग्यो जबहीं * लाग्यो जरन बारिनिधि तबहीं
बिप्ररूप धरि हार ढिग आवा * रतन भेंट दै पद शिरनावा
नाथ सृष्टि सब तुम्हरी अहई * त्यहि जस कीन्ह्यो सो तस रहई
अब जस आयसु होइ तुम्हारा * सोइ करौं मैं परम उदारा
कहो सुखाय जाउं यकबारा * मरिजैहैं जल जीव अपारा
कृपासिन्धु बोले हँसि बाता * कपि दल तर करो सोइ बाता
त्यहि तब कहा नील नलकीशा * तिन परसे जल तरत गिरीशा
आयसु देहु रचैं ते सेतू * मह सहाय करब तव हेतू

अस कहि नौमी दिन सो गयऊ * परारम्भ दशमी ते भयऊ
चहुँदिशि शैल देहिं कपि आनी * सो नल नील लेहिं निज पानी
रचहिं सेतु अति सुदृढ बनाई * शिव स्वरूप थाप्यो रघुराई
कह्यो महातम चिर जग हेतू * तेरसि दिवस सिद्धभा सेतू
विस्तरिय दश योजन केरा * दीरघ कोस चारिशत हेरा
प्रभु नल नीलहिं बहुत सराहा * पूज्यो भुजा सहित उतसाहा
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा * प्रभु छवि देखत जीव अपारा
राजत हनूमान के काँधे * लक्ष्मण बालितनय के राँधे
दो० विपुल चले जल चरणि कपि, त्रिपुल सेतु असमान।
जैसे भवनिधि तरण हित, कर्म उपासन ज्ञान ॥
इमि उतरत निशिदिन इकधारा * द्वितिया दिवस भये सब पारा
पाइ रजाय निकट फल खाये * तृतिया दिन सुवेल गिरि आये
कोष्ठा टालक गोपुर शृङ्गा * दशमी तक उतरे पलवङ्गा
हरि दिन रावण दूत पठाये * दल देखन शुक सारण आये
चरित्र चपल गहि मारन लागे * राम शपथ दीन्हा तब त्यागे
आये तब दशमुख के तीरा * बोला लखि कहु कपिदल भीरा
बाल विवश आये याहि पारा * होइहैं एक दिवस कर चारा
पुनि कहु रहे विभीषण भीरू * जानि बूझि भो यव कर कीरू
बहुरि भाषु तपासिनकी बाता * जिहैं निकारिदीन पितु माता
सुनि बोले शुक सारण ऐसे * सुनो कृपाकरि बूझेउ जैसे
कुं० सहस्रलाख कर कोटियक, सहस कोटिकर शंकु।
सहस शंकुकर अर्बुद, सहस अर्बुद विदंकु ॥
सहस अर्बुद विदंकु, सहस कर पद्म प्रमाना।
सो अष्टादश सुने, संग यूथप बलवाना ॥

बलवाना कपि आलसब,कालसरिसहमलखिगहस।
कहत मिलावनलङ्क तव, पङ्कमाहिं ऐसे सहस ॥
दो० आयसुमिलत न पिलतपुर, भये विभीषणराज।
तिनते सम्मत बूझिके, करत आपहू काज ॥
सुनि बोला हँसि यादि क्यों, करै बडाई भूरि।
जासु विभीषण से सचिव, परी कि तिनते पूरि ॥
तव शुक कह कछु दूरि न भारी * चढि अट्टालक लेहु निहारी
सहित सुमुखभट चरातिहिवारा * चढिदेखी कपिकटक अपारा
शुक सारण कहि नाम बताये * अङ्गदादि जे भट सँग आये
दो० वै अङ्गद हनुमान वै, वै सुकण्ठ नलनील।
वै सुखेन वं ऋक्षपति, वे दधिमुख समशील ॥
जटा मुकुट मुनिपट धरे, धनुवांण तूणीर।
अस्थित हरि मृगचर्मपर, सेवत पद बहुबीर ॥
गौरश्याम छविधाम वे, सहित लक्षमण राम।
बैठि विभीषण पुरहलखि, कीन्हेसि मन परणाम ॥
औरो कपिदल दरशिके, बोला बिहँसि निशंख।
देख्यों कौतुक कालकर, दिहिसि पिपिलिकनपख॥
इत प्रभु छत्र समेत ताकि, मार्‍यो शर यक सङ्ग।
मुकुट प्रसून गिराइ पुनि, प्रविशा आइ निषङ्ग ॥
देखि अचम्भि रहे सब लोगा * कोइ कह प्रथम भयो अपयोग।
बोला यामे अशकुन काहा * शिरहु खसे भट करें उमाहा
तेहिते शयन करहु अब जाई * चालिभे सकल रजायसु पाई
तब मयसुता कह्यो भयभीता * हे पति काल भयो विपरीता
जे तव सन्मुख सकैं न बोली * ते अब तुमते करत ठठोली

जिहि पुर सकैं बिष्णु नहिं आई * ताहि तुच्छ कपि गयो जराई
जिहि जग नाघि सकै नहिं कोई * तामें सेतु कि गिरिकर होई
जासु नाम सुनि सुर भजिजावैं * तापर कीश अशन चढि आवैं
जो सादर निज करत विलासा * सोकि जाइ किरि शत्रुन पासा
तुमहुं श्रम हठ कबहुं न ठानी * तिहिते परत बाम बिधि जानी
अबते परिहरि हठ शठताई * करहु काम किन होइ भलाई
जिहिं प्रभु मधुकैटभ संहारा * हिरणाकुश हिरण्याक्षहि मारा
जिहिं खरादि बहुभट बध कीन्हे * बालि प्राण इक बाणहि लीन्हे
सोइ प्रभु सेतु समुद्र में बाधा * बीसहु नैन होहिं जनि आधा
म्वहि समेत जगदम्बहि लैकै * पायन परहु रामकह दैकै
प्रणतपाल प्रभु कृपा अगाधू * तुरतहि क्षमिहैं तव अपराधू
बोला सत्य बचन तव प्यारी * पर इकबात न जानि तिहारी
कुं० शिव निर्मालय शीश ये, रघुपति लायक नाहिं ।
तिहिते इन्हें निवारिहौं, समर रसाके माहिं ॥
समर रसाके माहिं, प्रथम बल तिन्हैं दिखैहौं ।
प्रभु आये जिहि हेतु, तस्य मन साध मिटैहौं ॥
साध मिटैहौं तस्य मैं, आपन छांडि शरीरशव ।
मिलिहौं निज न थैवसों, यश गैहैं सनकादि शिव ॥
दो० चौसाठयुग निज बाहु बल, किह्यो अकण्टक राज ।
तिन्हें अछत अरिपद परौं, धिग कादर कर काज ॥
मम बश सकल जीव जग जेता * ते यहि भाति डरत केहि हेता
जासु बिनाश निकट जब आवै * तिहि बिपरीत क्रिया अतिभावै
अस कहि सो सोई चुप साधी * जागत निशि बीती सोउ आधी
प्रातकाल उठि सभा सिधावा * आपन बल सब भटन सुनावा

सुनि शठ सचिव सेनपति हरषे * लगे कहन कादर जन करषे

इति श्रीविश्रामसागरे रामसुवेलआगमनोनाम
चतुर्विशोऽध्याय ॥ २४ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं मानसमत कछुक, कोविलकाव्य बखानि ॥
दशमुख दशहूदिशि दरशि, दीन्हें दलपति फेरि ।
आपु जानकी पास ह्वै, आयो त्यहि थल फेरि ॥

रहा माघ पाँखा दिन प्राता * अङ्गद ते बोले सुरत्राता
बालितनय बल बुद्धि बिशाला * लङ्कहि जाहु जहाँ दशभाला
हित उपदेश दियो तुम भूमी * नहिं माने तो आयो घूमी
भले नाथ कहि माथ नवाई * चले राखि उर प्रभु प्रभुताई
पुर प्रबिशत रखवारन रोका * सुनि युवराज सबन कहँ टोका
रावणसुत विपमुख तिहि दीशा * बोला बढ़ि तैं काकर कीशा
राम केर को जाकी भामा * हरिलायो हितु अपने धामा
सोइ राम जिनके लघु भ्राता * तव फूफूका रूप निपाता
इतना सुनि तिहि पाव उछारा * अङ्गद पकरि भूमि दै मारा
देखि असुर सटके तिहि काला * एक एक ते कहैं न हाला
पुरजन चहि चटपट दै लेहीं * बूझे बिन बताइ मग देहीं
मन मे कहैं दशानन नीचू * सिय का आनी सबकी मीचू
आवा प्रथम नगर जिहिं जारा * यह धौं काह करै करतारा
जह अब निशि दिन मचीलराई * तिहि पुरबसि पुनि कौनिभलाई
आवत कपि रावण सुनि पावा * दूत पठै निज सभा बुलावा
दशमुख बैठ दीख कपि आई * सहित हस जनु गज गिरिराई
सुर मुनि असुर नाग गन्धर्बा * चितवततिहि भृकुटीदिशि सर्बा

हरि लखि उठे सकल इकबारा * बोला तब रिसकरि प्रतिहारा

छप्पय ॥

पढ़ै न क्यों विधि विनय, शम्भु कत दरश न देवै ।
जीव करै कत शोर, धर्म क्यों चरण न सेवै ॥
रहै न दूरि दिनेश, देव ऋपि स्वर लै गावै ।
यक्षन सहित कुबेर, वेर वरि क्यों नित आवै ॥
चन्दन बोलै मन्दमति, मातलिसभा न यह अहै ।
बैठि जाहु रे बैठि सब, तब रावण कपिते कहै ॥
रे वानर तू कौन, दूत हम रघुपति केरे ।
इत आयो क्यहि हेतु, अहै रक्षाहित तेरे ॥
कौन विपति शठ मोहिं, शत्रु शिरपर प्रभु आये ।
ईश कोपि रघुनाथ, जासु तुम तिय हरिलाये ॥
कौन कहत हनुमान को, जिहि तेरी लङ्का दही ।
करुणासिन्धु सर्वज्ञ सो, सुनि व्याकुल ह्वै यों कही ॥
जाव जाय कोइ जाय, धाय रावणै सुनावै ।
जिहि सिय देइ बताइ, रङ्क कर जिउ बचि जावै ॥
सुनि बोले सब सुभट, नाथ जो हम चलि जैहैं ।
उजुर करी कछु शत्रु, ताहि विन वधे न ऐहैं ॥
तब प्रभु नहि पठयो तिन्हैं, मोहि कह्यो लखि साधु सुनि ।
मोरेहु मन आई दया, निजपितुकर तोहिमित्रगुनि ॥
ताते आयों तात, बात अब मानहु मेरी ।
जाते तव भल होइ, बचै सब रैयत तेरी ॥
श्रीमद महिप सुभाव, जान अथवा विन जानेहु ।
हरिआन्यो जगदम्ब, आदि भल यहै न ठानेहु ॥

सो जसभातसभाअजहुँ, सौंतै वै निज नारियुत ।
जाहु शरण श्रीरामके, मिटिहैं सब अपराध उत ॥
रे बानर रहु चुप्प, बादि बकवाद न ठानै ।
विश्व बिदित तैं मोर, अभय परभाव न जानै ॥
सुर नर मुनि पशु नाग, जीति सब निज वश किन्ह्यों।
शिवै दियों शिर स्वकर, गिरिहि कन्दुक इवलीन्ह्यो ॥
अस मैं पुनि भ्राता सुभट, जिहि देखत दुनिया दुरै ।
मेघनाद अस सुवन जो, गहि आन्यो सुरपति धुरै ॥
कह अङ्गद सो सत्य, अहै ऐसै बल तोरा ।
पर नाहिं राघव साथ, सिंह हित जिमि गजजोरा॥
जे जे भे प्रतिकूल, परी नाहिं किसी कि पूरी ।
शठ ताड़ुका सुबाहु, मिले खरदूषण धूरी ॥
विश्वसुभट बल शम्भुधनु, हरि बैठ्यो तिहि धरि दलो।
ताकोमिल तजि मानमद, जो चाहै आपन भलो ॥
रे मर्कट मम सरिस, अहै को सुभट अनारी ।
सो कहु को तव पिता, बालि कपिनाथ विचारी ॥
रहा रहा कपि रहा, भले कहु है सो नीके ।
कछु दिनमें तहँ जाइ, कुशल पूछ्यो निज पी के ॥
रामविमुख कर जौन फल, होत सो सब नीके पढ़ी ।
जानि बूझि बातैं गढत, रढ़त मौत तव शिर चढ़ी ॥
दो० मर्म वचन युवराजके, सुनि रावण रिस रोंकि ।
बोला मुखसुरभेदहित, प्रथम सुकरम.हि ठोंकि ॥

छप्पय ॥

हे अङ्गद बलवन्त, बालिसुत तोहीं आही ।

तव सम जाके पुत्र, तासु ऐसी गति चाही ॥
जन्मत क्यों नहि मरेउ, बालिकर नाम धरायो ।
जिहि टारेउ पितु मारि, तासु शठ दूत कहायो ॥
अवते मम दल ले सकल, कपितुव करु निजराजचलि ।
हनि रन भलसुसुशत्रु जे, आठ आठ दिशि देहु वलि ॥
कह अङ्गद रे नीच, मीचवश मति वढि बोलै ।
मम मन ठानत भेद, पवनते गिरि कहुँ डोलै ॥
जासु भृत्य ब्रह्मादि, तासु हम ह्वै करि दासा ।
बोरि दीन कुल कहसि, अहसि ते निशिचरखासा ॥
तोहि कछु करत विचार नहिं, सो फल पैहै सपदि वरु ।
यावत आवत अवधि नहि, तावत भावत सोइ करु ॥
रे रे कपि जग माहि, मोहिं को है फलदाई ।
लोकपाल यम काल, नमत मोको नित आई ॥
चहौं जाहि नृप करौं, चहौं त्यहि रङ्क बनावौं ।
उजुर न करता कोइ, बहुत का तोहिं सुनावौं ॥
कह अङ्गद तैं अजित अस, सो रावण औरेवियो ।
जठर सहसभुज बालिबलि, अवधनृपन जेहि दुखदियो ॥
सुनि अङ्गद के वचन, मूढ़ लज्जित ह्वै बोला ।
बालपने की बात, गात तब निरबल होला ॥
कोशल नृप सब जीति, प्रथम अपने वश कीन्ह्यो ।
जबतें भये दिलीप, छांडि तबते कर दीन्ह्यो ॥
ताहि तजे कछु घटि गयो, भयो न मनमें एक तिल ।
विदितबरेहुशिर्वाशिवहिशिव, गिरिकरधोरेउयथाशिल ॥
कह अङ्गद का भयो, शीश जो निजकर काटे ।

बाजीगर बहु करैं, बैठि कौडी हित हाटे ॥
कहा भयो गिरि लयो, भालु कपि धारें डोलैं।
तहौं न पायो सुयश, आज रोउना सब बोलैं ॥
कहा भयो सब जग जयो, भयो न जो रघुनाथ जन।
तो सब जानो स्वप्न सम, अवनि रवनि सुतधामधन॥
कह रावण हँसि राम, दास तुमहीं जो भयऊ।
दिहिनि काल सुख आइ, लाभ यामें का लयऊ॥
तीन लोक परलोक शोक, सब तन के नासे।
मिलिहैं तौ तब बियत, जियत जब जाव इहा से ॥
तहँऊ तव सुग्रीव रिपु, तासु विभीषण केर मैं।
अपर कीश सैहैं असुर, ऐहैं तपसी घेर मैं ॥
कह अङ्गद रे चोर, बालि जिन यक शर मारा।
भृगुपति कर बल दर्प, सर्प लीले सहारा ॥
खर दूषण त्रिशिरादि, दनुज चढि बचे न भागे।
तोरि चाप सिय बरी, सकल भूपन के आगे ॥
यस्य अनग इक लङ्क दहि, चतुर अंश तव भट दले।
तिनसों तैं लरिहै कहा, गाल मारिले चहु भले ॥
कह रावण जो अहै, सरल अस स्वामि तुम्हारा।
तो पठवत किहि हेत, बसीठी बारे बारा ॥
करहि आइ कलि कर्म, धर्म जो क्षत्रिनको है।
रिपुते ठानत प्रीति, लाज नहि लागत जोहै ॥
मन कदराइ तौ जाइ फिरि, भागे को नहि हम हनै।
चढि आवै जो मौत बश, सकल कौनपनको बनै ॥
दो० शशि समुद्र बाधे कहा, अभय परे भुज बीश।

हन्है न बांधनहार कोउ, सुनि बोल्यो पुनि कीश ॥
कोरेन ज्ञान अज्ञानका, बल निर्बल कर अन्त ।
कारज ते खुलिजातजिमि, नारि कपट सुत पन्थ ॥
नारि कपट सुत पन्थ, तुम्हें हम तबहीं जान्यो ।
जब धरि तापस रूप, बिपिनसियतेछलठान्यो ॥
ठान्यो लेखा गृहप, गयो धनु रेखा पार न ।
आयों मैं न बसीठ, राम पठ्यो यहि कारन ॥

छप्पय ॥

बालि कपि सब आजु, चलौ प्रभु शत्रुहि मारी ।
कह हरि तेहि बध किहे, कौन होई यश भारी ॥
जिमि मृगपति हति मेष, शेष सर्षप शिर लीन्हे ।
तिमि लघुता लघु दान, ज्ञान मूरख कह दीन्हे ॥
यद्यपि यह जानत तदपि, क्षत्रि जाति कर रोष अति ।
तातें अबहूं दीन है, सीतै लै मिलु मन्दमति ॥
कह रावण नृप सुवन, संग सब कीश लबारा ।
प्रथम आवा एक, झूठही जाय पुकारा ॥
हमहीं दीन छुड़ाइ, धीर मैं मस्यो अक्षय सुत ।
लागिगई गृह आगि, कहिसि मैं कौन काम उत ॥
तैसे तोहू नरन को, करत बड़ाई कूर मति ।
सोको जानत छोट करि, बिश्वबिदित जो शूरसति ॥
कह अंगद मतिमन्द, द्वन्द रत बोलु बिचारी ।
कल्पबिटप सम बिटप, सकल सीता सम नारी ॥
चिन्तामणि पाषाण, सरित सर गङ्ग समाना ।
अभयदान बिज्ञान, सरिस लौकिक कर ज्ञाना ॥

पगली बातैं अकनि तव, अस मन होत हमार हरि।
तोहिं सहित सब लङ्क लै, बोरों उदधि मँझार परि ॥
कुं० शोच न शालत साधु फिरि, राज करी केहि भौन।
मोहिं जियतकिमिहोइनृप, तोहिं जियत कहै कौन ॥
तोहि जियत कहै कौन, कामवश अयशी मूढ़ा।
जीवत मृतक समान, सरुजहरिविमुखतिबूढ़ा॥
तव शोणितके तृपित पुनि, रघुपति के नाराच।
तेहिते राखत रोंकि रिस, नाहित बनत्यों साच ॥

छप्पय ॥

कह रावण जो होतहि रिस यहि विधि बल तेरे।
तौ कत करत्यो आइ चेराई पितुअरि केरे ॥
करत मातु सँग भोग शूरसत सो तप जानै।
मरत न शठ विष खाइ बात हमते बढ़ि ठानै ॥
नर बनरनकी कौन गति तीनि लोक मिलि जो चढ़ैं।
करौं समर सनमुख तभू कभू न पग पीछे परैं ॥
तब अङ्गद करि कोप पटकि दोउ भुज महि दीन्हे।
गिरा अधर मुख मूढ मुकुट कर में श्रुति लीन्हे ॥
प्रेरे प्रभु के पास धरे पवनज गहि आगे।
भूरिभानु सम तेज तरकि कपि देखन लागे ॥
राम बिभीषण के शिरसि भूपित किये सँवार तित।
देखि देव बोले विमल जय जानकिपत्ति प्रणतहित॥
तव तमचरपति तमकि कह्यो धरि धरि हरि खाहू।
मिलि मारो दोउ बन्धु बङ्क कपि कलमत जाहू॥
अब तक नीति बिचारि बचन सुनि रोष न कीन्हा।

आखिर चढ्यो कपार अधिक अधसैं मुख दीन्हा ॥
निजबल बादत बलकि बल तिनकेअहै न अलप तन ।
पर तिय पर धन पर अहित करत डरतजो छामछल ॥
कुं० तब अङ्गद कह चरण मम, जो कोइ देवै टारि ।
फिरैं राम निज धाम मैं, जाहुँ जानकी हारि ॥
जाहुँ जानकी हारि, सुनत घननादिक योधा ।
लगे उठावन भूरि भूरि, बल करि करि क्रोधा ॥
डगमगातमहिसुतलनभ, उछरसिंधुसुर बिकल सब।
बालि बलीके सुवन कर, पग नहिं हाल्यो नेकु तब ॥

छप्पय ॥

लखि रावण हिय हारि, आपु उठि कपिहि प्रचार्‍यो।
चरण छुवत तेहि देखि, बचन युवराज उचार्‍यो ॥
मम पद परे न ठीक, गहै किन हरिपद जाई ।
सुनि सिंहासन सपदि, बैठ मन माहिं लजाई ॥
कहेसि कौनपनते हसे, क्यों नाहिं डारत खाइखर ।
हँसि कोपि कुनप गहाइ निज, कहिकै चल्यो उड़ाइ अर ॥
सो० दीरघ एक प्रसाद, परपद परशत पतेहु सोउ ।
बहुरि चल्यो करि नाद, प्रभु पद नायो आइ शिर॥
दो० लखि बोलेरघुनाथहँसि, तात किहेउ भल काम ।
कह अङ्गदमम माननहिं, तव प्रभाव सब राम ॥
इति श्रीविश्रामसागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतअङ्गदरावण-
संवादोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं मानस मत कछुक, कोकिल कहनि बखानि॥

इहां दशानन अभय निशि, निवसित उरधा खार ।
लारे निरतन निर्तकी, कौतुक करै अपार ॥
राम लषण कपि भालु सब, हँसे समुझि अभिमान ।
सहि न सके सुग्रीव बिन, बूझे कीन पयान ॥
दश योजन कर बीच तहं, पहुँचे एक कुलाच ।
सिंहासनते अवनि पर, पटक्यो मारि तमाच ॥
गिरा न नीचे संभरिकै, भिरा क्रोध करि सोउ ।
कर पद मुष्टिक पंच शिर, निज निज मारे दोउ ॥
यहि विधि बाजे याम भरि, पर कोउ सका न हारि ।
लाग्यो माया करन तब, कपिपति चले बिचारि ॥

इहा न प्रभु सुग्रीवै देखा * भये शोच बश शोधि विशेखा
इतने में सो पहुँचो आई * बूझे ते सब बात जनाई
कह प्रभु अस अधिपै नहिंचाहीं * सो कछु होत रहा गहि काहीं
हम सिय लै का करतेन ताता * देतेन त्यागि तुरत निजगाता
सुनि नाशत भव कुटुँब हमारा * नाथ कृपा को मारनहारा
अस कहि पाय रजायसु सोये * उठि प्रभात पुनि हरिपद जोये
द्वितियादिनकरि कटक निचारा * लङ्का घेरो चारिउ द्वारा
पूरब दिशि नल नील बिराजा * दक्षिण सेन सहित युवराजा
पश्चिम पवनपुत्र बलधामा * उत्तर रहे अनुजयुत रामा
मध्य सुकण्ठ सोह सँग योधा * चहुँदिशि लेत बिभीषण शोधा
यहिविधि पुरनिरोध सुनिरावन * चहुंदिशिनिजभटलागपठावन
प्राची दिशा प्रहस्त पठावा * याम्या द्वार महोदर आवा
मेघनाद दिशि गयो प्रतीचा * रहा दशानन द्वार उदीचा
बिरूपाक्ष तिष्ठा मधि देशा * नारान्तक चहुं ओर प्रवेशा

निशि रात्रि संवर्त जोला * गहि गहि लोउ भालुकपिलोला ॥
अस्त्र बांधु काहि हाथ गाहि, परसु निरउ प्रास लांग।
तोमर मुद्गर शूल सब, धाये दै दै बांग ॥
बाजे दानव युद्धके, सुनि भट गने न बोध।
आवत रजनिचर चाहिकै, धाये कपि करि क्रोध ॥

गीतिकाछन्द ॥

करि क्रोध धाये भालु कपि गहि विटप परबत धननाने।
दोउ ओरते लागे चलावन अस्त्र शस्त्रादिक घने ॥
कोउ गिरत कोउ उठि भिरत कोउ पुर फिरत कोटललकारई।
कोउ दुरत कोउ भट मुरतनाहिं कोउ हटत कोउ चोंदमारई ॥
करि माथ सब रघुनाथ बल पलवग गढ़ पर चढ़िगये।
बिकलाय असुर निकाय मरेउ अपर लखि भागत भये ॥
पुर परेउ हाहाकार विपुल कुमार बनिता रोवहीं।
दुरि देहिं गारी दशमखे अघ जासु हम दुख जोवहीं ॥
दशशीश निज दल बिचल लखि सबते कहिसि गोहराइहै।
घर आइहै जो भागि सो मम हाथ मरा जाइहै ॥
सुनि सुभट मानि गलानि पुनि जानि वध दोउ ओरते।
करि युद्ध कीन्हें असित वानर भागि चले गढ़ घोरते ॥
एक एक दितिसुत दाबि कूदे ताहि नीचे राखिकै।
विन प्राण करि हरि बीर बेगे बचे आपति भाखिकै ॥
हनुमान पश्चिम ओर सुनि घननादके पग रोपहू।
रथसूत हति त्यहि बिकल करि पुनि लङ्क आय प्रचारेहू ॥
इत कपि आयो बालि बच मिलि उभय रावण गृह गये।
लागे ढहावन भवन जहँ तहँ रामगुण गावत भये ॥

कपि खेल करि डरवाइ राम कहाइ तिन्हैं निवारेहू ।
फाटे वहुरि रिपु सैन महँ अगणित निशाचर मारेहू ॥
खरभर परी सब ग्राम तमिचर वाम शिर धुनि यों कहैं ।
उतपातके घर कीश दोऊ आजु घर आये अहैं ॥
कितनेक खग गहि पटकि रावण निकट दीन चलाइकै ।
कितने फिके प्रभु पास गति तेहि देत राम बजाइकै ॥
निशि जानि आये नाथ पहँ दोउ देखि प्रभु विनश्रमकरे ।
हनुमान अङ्गद गये थल सुनि भालु मर्कट सब फिरे ॥
अतिरोप पाइ प्रदोप बल धाये असुर जय बोलिकै ।
कपि देखि भिरे प्रचारि पुनि सब चले निशिचर डोलिकै ॥
निजहारि लखि अतिकाय आदिक अनिप निजमायाठनी ।
भयो निमिपमें अँधियार सूफ न हाथ भागी कपि अनी ॥
चहुँओरते मग मिलत नहिं कच रुधिर बरपत बालुका ।
लखिराम मारेउ विशिख यक मिटि गई माया मालुका ॥
कपि रीछ पेखि प्रत्यक्ष लपटे वहुरि रिपु भागत भये ।
तव त्रसित आये रामपहँ पग परत सबके दुख गये ॥
यहि भाति वासर आठ निज निज घाट कपि कौनप लरे ।
तब कही रावण सचिवते कस करिय हत बहु भट मरे ॥
सुनि मालवन्त सुमन्त्र बोलेहु आपु जबते सिय हरी ।
तबते कियो बहु बात एकहु तात नहिं पूरी परी ॥
अबते समुझि भल जानकिहि गहि पाइँ प्रभु कहँ दीजिये ।
भये मूढ़ मारहुँ तोहिं का पर ओट मुख करिलीजिये ॥
कछु रीति पुछियत जाहि सो शठ अधिक भांति देखावई ।
जिमि कहै कोइ गिरि मेरुते झुकि जाहु आँधी आवई ॥

तेहि तुरत जान्यो कालवश रथ नाहिं उठि घरको गयो।
तब मेघनाद सदर्प सन्मुख आइ अस बोलत भयो॥
देख्यो पराक्रम कालिह मम बहु आजु को निजमुख भनो।
सुत बचन सुनि हरषान मन रण शूर सुनि करखा मनो॥
उठि प्रात नौमी दिवस रथ चढ़ि सुकृत कपिदल आयहू।
कहँ राम कहँ सौमित्रि कहँ हनुमान कहँ कपराजयहू॥
सुनि भालु कपि धाये कुधर गहि देखि सो मारनलगा।
लखि तासु बानावरी सब अकुलाइ मर्कट दल भगा॥
तब फिरे लषण प्रचारि बाणन मारि तेहि व्याकुल कियो।
जब भयो बिन रथ सूत जानिसि मारि इन मोको लियो॥
तब ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ती लषण के हिरदय हनी।
महि मुरछि गिरे अनन्त रहा उठाय करि माया घनी॥
किमि उठै जगदाधार लखि हनुमान मुष्टिक मारेहू।
पुनि लात मारि अचेत करि धरि लङ्क ऊपर डारेहू॥
निशि जानि तब हनुमान शेषहि लादि प्रभु तहँ लायहू।
लखि राम हृदय लगाइ आतहि बिरह बचन सुनायहू॥
हा ईश जगत न दीश मैं इक पोततें बिरचा रहे।
पटभक्ति भ्रयप मित्र गुणनि चढ़ाइ अब चोरा चहै॥
हा तात तजि पितु मातु बन मम बिपति थाइ बटायहू।
तिन साथ हौं सुरलोक लौं हँसि प्राण नाहिं पठायहू॥
निज कर्म निज करतूति ते तुम तात सब सुकृती जये।
मैं राखि तुम बिन देह दीरघ लादि शिर अपयश लये॥
अस समुझि भरत कठोरता मम हृदयते कुलिशै भई।
जो समुझि आप सनेह तुरतै दरकि दरज न है गई॥

पितु मरण भामिनि हरण खग बध दाहिन भुजा गँवायहू ।
सब भाति अपने बश शुचिमें कालिमा मैं लायहू ॥
जिन तुम्हें सौंप्यो मोहिं तिनसों काह कहिहौं जायकै ।
प्रियबन्धु खोयो वाम हित तेहि सदयो नाहीं लायकै ॥
कपि भालु जैहैं गिरि गुफन तन सग भोको सोच है ।
ह्वै है विभीषणकी कवनि गति यही बड मोहि शोच है ॥
दुख देखि एकत न रह्यो मम अब हेत केहि करुणा तजी ।
जेहि देत नहि उठि बोध वीरन कौन बल धनु शर सजी ॥
धन धाम सुत तिय कुटुंब जग है जात पुनि पुनि आवहीं ।
पितु मातु सोदर जन्म भरि नहिं मिलत जबते जावहीं ॥
प्रभुबचन नर अनुहार सुनि कपि भालु सब हिय हारेहू ।
तब ऋक्षपति हनुमान कहँ तेहि समय जानि प्रचारेहू ॥
कह हनुमन्त जोरि युग हाथा * लषण शोच जनि कीजे नाथा
कहो चन्द्रमै पट इव गारी * अबहीं देहुँ अमिय मुख डारी
कहो विबुधवैद्यहि गहि आनों * मौत मारि सबके दुख भानौं
कहो फोरि नभ रविहि निकारौं * रिपु तेहि द्वार राहु बैठारौं
कहो ब्रह्म हरि हर का आनी * अमर अमर बुलवावों बानी,
कहो पताल जाय हति नागा * आनों अमी कुण्ड यहि जागा
कहो देहुँ निज देहै त्यागी * अबहीं उठौं लषण घट जागी
दो० जो कछु तव मनमें रुचै, सो स्वाहिं आयसु होइ ।
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोइ ॥
पवनतनयके वचन सुनि, सहित राम कपि भालु ।
उठेजागिजिमिमन्त्रसुनि, सर्प ग्रसित द्रुम जालु ॥
बोले श्रीपति सत्य सुत, सब लायक तुम आहु ।

चाही वैद्य सुखेन है, अरिपुर आनन जाहु ॥
पहुँचे तुरत विचारि तेहि, ल्याये सदन समेत ।
तासुवचनसुनि पुनि चले, शीघ्र सजीवनि हेत ॥
कालनेमि मग मारिकै, सब गण साठि हजार ।
रोंकत लूम लपेटि सोइ, देखा जाइ पहार ॥
देखी जहँ तहँ औषधी, तब मन मांझ बिसूरि ।
लीलै चले उठाइ गिरि, दलि दशमुख भट भूरि ॥
किधौं अपत्र पलाश बन, किधौं प्रभात लखाइ ।
छांडि शम्भुगण बहुरिमग, दस्यो अवध पर आइ ॥
देखि भरत मन असुर बिचारा * बिनु फर बाण हृदय महँ मारा
कपि महि गिरत रामसुख भाखा * पवन साधि द्रोणाचल राखा
तेज तासु पुर गयो समाई * ज्यों सरिता सागर महँ जाई
दौरि भरत गहि हृदय लगावा * जाग न जब तब बिलखिसुनावा
जो रघुपति पद प्रीति हमारी * बहुरि होइ अनुकूल खरारी
तौ कपि होउ विगत श्रमपीरा * सुनि उठबैठ राम कहि बीरा
भरत रिपुहने लखि भ्रम छायो * का घर राम लषण फिरिआयो
पुनि पहिंचानि पुलकिशिरनावा * पूछा सब वृत्तान्त सुनावा
व्याकुल ह्वै बोले धिग हमहीं * प्रभुके काज न आयों कबहीं
कुसमय जानि कह्यो धरिधीरा * चढ़ि शर सपदि जाहु प्रभुतीरा
सुनि सह गर्व बैठ शर जबहीं * सुमन समान उठायो तबहीं
देखि प्रभाव उतरि कपि परेऊ * शीश नवाइ प्रशंसा करेऊ
तव प्रताप उर धरि रघुबीरा * जैहौं अतिलाघव प्रभु तीरा
भले भरत कहि बोले ताता * पाछे सुनि दुख पैहैं माता
तेहिते चलि दीजै समुझाई * आइ भवन सब कथा सुनाई

सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहि * भयो हर्ष अरु शोच बिचित्रहि
बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझेऊ समर स्वामि के काजू
पर इक कलक होत वडि ताता * कुसमय भये राम बिन भ्राता
पुनि सुभाय रिपुहन ते कहेऊ * जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ
सबविधिकियो भजन सोइसचा * नरतन को फल याही बचा
सुनत उठे मुद सहित प्रकासा * विधिवश सुढर ढरे जनु पासा
दो० अम्ब अनुज गति देखि मन, मानी सबन गलानि।
बोली रघुपति मातु तब, कँपिते धीरज आनि ॥
प्रथम भेंटकहि कह्यो इमि, कह्यो कठिन उर अम्ब।
लाल लक्ष्मणते ललित, लागत अहो कदम्ब ॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मन धीर।
कुशल जानकी लपण युत, ऐहैं घर रघुवीर ॥
अस कहि चले समेत गिरि, आये जहँ भगवन्त।
औषध कीन सुखेन उठि, बैठे तुरत अनन्त ॥
कृपासिंधु बन्धुइ मिले, मिट्योसकल दुख भार।
मुदित भालु कपिञ्जन लह्यो, समर पयोनिधि पार ॥
भेंटि सचिव बूझन लगे, बड दुख पायो तात।
कहत न क्षत मेरे लग्यो, पीर भई प्रभुगात ॥
होत पदिकके कान्ति जिमि, दुख सुख लहै सुवार।
शुक मुख जानत पाठ करि, अर्थ पढ़ावन हार ॥
विमल वचन सुनि शेपके, कहनलगे सब वीर।
राम लपणकी प्रीति के, उपमा क्षीर न नीर ॥

इति श्रीविश्रामसागरेलदमणहितविरहवर्णनोनाम
षड्विंशोऽध्याय. ॥ २६ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि।
यथाँ मानल मत कछुक, सार रमायण जानि ॥
पुनि वाही थल पवनकुमारा * धरि आये गिरि वैद अगारा
सुनि रावण मन परेउ खँभारा * प्रात लगे कपि चारिहु द्वारा
मेघनाद पुनि रथ चढि आवा * वर्षि बाण कपिदल बिचलावा
दश दश विशिख सबनके मारे * जहँ तहँ भट कराहत हैं डारे
पुनिविधिबचन लागि दोउभाई * नागफास ते लीन बँधाई
मुदित पिता ढिग लङ्कहि लावा * रावण देखि परम सुख पावा
विविध प्रशंसा करि सुत केरी * सीतहि जाइ देखाइसि टेरी
प्रभुबन्धन लखि सियअकुलानी * गरुडै तब पठयो विधि ज्ञानी
आइ सकल पन्नग बिचलाये * पुनि दोउ बन्धु कटक महँ लाये
अस्तुतिकरि सुनि रघुपतिबचना * हरिपुर गये गुणत प्रभु रचना
इहा बिभीषण हनुमत दोऊ * शोधा दल अचेत सब कोऊ
कह्यो बिभीषण ऋक्षप तेरे * है कछु चेत चलहु गे शेरे
जाम्बन्त तब बचन बखाना * कहो अहै नीके हनुमाना
सुनि दनुजेश कह्यो धरि धीरे * पूछेउ नहीं लषण रघुबीरे
तजि कपिपति युवराज समेता * हनुमानै बूझेउ केहि हेता
जो होइहै जीवत हनुमन्ता * तौ जानो सब जियत अनन्ता
जो कदापि गिरिगे हनुमानौ * तौ तुम मृतक सबन कहँ जानौ
सुनि लङ्केश सरस सुख पावा * पवनतनय चरणन शिरनावा
आयसु होइ कही सोइ बाता * लावहु चारि औषधी ताता
दो० इक विशल्यकरनी अहै, युगसांवरिनी नाम।
तीसरि संजीवनि पुरत, सधानी अभिराम ॥
सुनि मारुतसुत तुरतै धाये * आनि जरी सब सुमट जिआये

भये सबल सब गाजन लागे * देखि राम लक्ष्मण अनुरागे
हरिदिन चढि धुमराक्ष मुरारी * आइ कीन अतिसगर भारी
भये बिकल कपि भालु अपारा * दुवादशी दिन पवनज मारा
आवा बहुरि अकम्पन योधा * महासमर कीन्हिसि सहक्रोधा
तेरासि दिन गर्जेहु युवराजा * बहुरि प्रहस्त आइ रणगाजा
किहिसि मारि शर जर्जरगाता * परिवादिन तेहि नील निपाता
तीनि दिवस तब लरा कपीशा * पचम्यादिन सुनि दशशीशा
कुम्भकर्ण कहँ आनि जगावा * नानाविधि करि कुटिल उपावा
पुनि बहुभाति कराइसि भोजन * बोला सो निज कहो परोजन
कह रावण हैं मानुष आये * शत्रु समुझि हम तिय हरिलाये
सेतु बाधि उतरे यहि पारा * सुभट समूह किहिनि सहारा
मिला बिभीषण जाइ अपाना * मोहिं तोहि नहिं नेकु डराना
कपिन सहित तेहि भक्षण कीजै * सहित कुटुम्ब मोहिं सुख दीजै
सुनि घटकर्ण कह्यो सुरशाली * प्रथमपूछि किन किहेउ कुचाली
यक दिन बात जनाई थोरी * प्रकटी नाहिं सीताकी चोरी
त्रिभुवनपति सों बैर बढ़ाई * पुनि सुख चहत कहा अब भाई
ताते त्यागि कुटिलपन येहू * जगदम्बा लै रामहि देहू
जेहिते करौ सकल सुख भेरी * सुनि बोला रावण मुख हेरी
कितौ करौ चलि सगर भारी * कितौ रहौ पुनि सोइ सँभारी
नाहिंत भीरु बिभीषण जैसे * परो पाइँ रिपु पायन तैसे
मैं निजबल विरोध यह ठाना * करिहौं तिमि सब कर कल्याना
सुनि घटकर्ण काल कृत जानी * प्रभु दर्शनहित मनमें आनी
अनुज भेटि समोद सिधावा * लखि रावण बहु सुरा पियावा
करि मदपान भयो मतवारा * चला कहत कहँ भूपकुमारा

हाय हाय करि खेचर भागे * लखि तेहि मिले बिभीषण आगे
चरण परसि निज नाम बतावा * सुनि सराहि प्रभुपास पठावा
कहिनि नाइ रघुपति पदमाथा * कुम्भकर्ण यह आवत नाथा
रावण बन्धु बिपुल बल लाहू * जो त्रिभुवनमें गनत न काहू
उड़े अकाश व्योमचर मारै * धँसै पताल फणिक फण फारै
मणि उतारि लावत है कैसे * उपबन ते पुष्पन को जैसे
बिनही प्रलय प्रलय करिदेतो * जो षटमास न सूतत येतो
पर प्रभु भृकुटी कुटिल निहारी * लोप होत भव का तमचारी
सुनि कपि भालु चले करि हूहा * डारिनि तेहि शिर शैलसमूहा
सुमर्न सरिस बर्षत जिय जानी * धावा मुख पसारि दोउ पानी
कोटिन कपि चपिगे तर ताके * कोटिन कर समेटि मुख फाके
कोटिन श्रवण नाकमग माखी * निकसहिंजिमि वाबिनते पाखी
कोटिन दिशा दिशा उड़ि भागे * कोटिन प्रभुके पाछे लागे
कोटिन हनुमन्तादिक बोले * कोटिन गुणपट्ट रावत डोले
कोटिन गये समुद महँ बूड़ी * कोटिन काटि चलाये मूड़ी
आगे लखि रघुनाथैं पावा * करि प्रणाम मन बचन सुनावा
दो० ना मैं आहौं ताडका, ना मैं अहौं सुबाहु।
ना हौं धनु मारीचमृग, ना हौं खर कपिनाहु॥
मैं हौं देवनकेर रिपु, आइ करौ रण राम।
ज्यहि चढ़िआयोगर्बकरि, सो अब पूजौ काम॥
सुनि सुग्रीव लात यक मारी * पकरि तिन्हैं पुर चला प्रचारी
लखि सब हनन लगे यक साथा * सास पाइ निकस्यो कपिनाथा
श्रवण नाक कर मुख ते काटी * गयो राम पहँ असुरैं डाटी
चला रुधिर तब देखि लजाना * फिरिकपिनिकराकिंहसिबिनमाना

हनूमान निज लूम लपेटी * डारिन सिंधु माझ जिमि फेंटी
धावा तब करि क्रोध कराला * मारि कीशसब किहिसिविहाला
नारद आइ कही असि बाता * बधउ वेगि प्रभु प्रोक्त बिधाता
शीश नाइ जब कीन पयाना * तब हरि धनुष बाण सधाना
मारे शायक विपुल प्रचारी * धावा मुख पसारि गिरिधारी
लखि राघव भुज काटि गिराई * लिहिसि बामकर सोउ उड़ाई
बिनभुज गिरिमन्दर सम धावा * शीश काटि प्रभु लङ्क बहावा
लुण्ड मुण्डविन चल्योप्रचण्डा * तब प्रभु काटि न्यिे युग खण्डा
दो० देखि देव बरषे सुमन, हरषे मुनिन समेत।
मुदित भालु कपि कटक मधि, सोहे कृपानिकेत ॥
अनुज शीश लखि रावणशोचा * अशनबसन त्यहि भये अरोंचा
रोवहिं रमणि वरणि गुण ताके * चला महोदर लै भट वाके
कपिदल आइ समर अति ठाना * एको दिवस हता अनुमाना
फाल्गुन कृष्ण आदि दिन भोरा * चढा नरान्तक लै भट घोरा
नाना विधि त्यहि युद्ध मचावा * जाना कपिन काल निजुआवा
हरिबल पाइ लरत तेहि चीन्हा * फनिदिन निधनशरासनकीन्हा
तब अतिकाय आय रणठाना * अष्टम्यादिन भे गत प्राना
कुम्भकरण सुत कुम्भ निकुम्भा * आइ किहिनि दोउ युद्ध अरम्भा
लरत लरत दिन पाच बिताये * तेरसि दिवस गये दोउ पाये
तब खर सुत मकराच्छ सिधावा * कपिदल दलतलषण पहँ आवा
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना * कटै न बपु विधिकर बरदाना
झपटिलषणकहँनिगलिसिधावा * मनहु मयंकहि तुदन दुरावा
हाहाकार भयो दल भारी * निकसे लषण उदर तेहि फारी
फाल्गुन शुक्ल प्रथम दिन जूझा * भा रावणै मोह-यश बूझा

मेघनाद लखि बचन सुनावा * केहि हित तुम अस खेद बढ़ावा
जब-लग मैं जीवत सुत तोरा * तब लग करहु राज्य बरजोरा
देखौ आजु मोर सङ्ग्रामा * अस कहि चला दिव्यरथ तामा
इकअद्दश्यपुनि निशि नभगामी * आवा जहा भालु कपिस्वामी
गर्जा प्रलय पयोद समाना * सुनि कटु शब्द सबनभय माना
अस्त्र शस्त्र पुनि बर्षन लागा * मघा नखत सम असि शर सागा
गहि गिरितरुकपिजाहिं अकासा * मिलै न कोउ तब फिरैं उदासा
भये बिकल कपि भागन लागे * जहा जाइँ मग मिलै न आगे
अङ्गद हनुमान नल नीला * शेष सुकण्ठ बिभीषण कीला
औरौ दुर्धरादि जे बीरा * मारि सबनकहँ किहिसि अधीरा
पुनि अतिसमर रामते ठाना * नागफास बश भे भगवाना
जासु नाम भव बन्धनहर्ता * सो कि होइ परबश यशकर्ता
समय समान चरित प्रभु करहीं * अस बिचारि बुध भर्म न परहीं
देखा सबन बिकल घननादा * तब भा प्रकट कहत दुर्बादा
देखि ऋक्षपति चले प्रचारी * तब तेहि तीव्र शक्ति ताकि मारी
जामवन्त सोइ मारि गिरावा * चरण पकरि पुनि लङ्क पठावा
गरुड़ आइ प्रभुबन्धन काटा * भे सब सकल राम जब डाटा
गहि गहि गिरि गुरुपादप धाये * मारि सकल निश्चर बिचलाये
मेघनाद मुरछाते जागा * जाय अजयमख करन सो लागा
दो० जानि बिभीषण प्रभुहिसों, कह्यो जोरि युग पानि ।
इन्द्रजीत नि कुम्भ ले, गा मख हित रिस आनि ॥
सो० जब लगि होइ न सिद्धि, तबतक ताको मारिअपु ।
पाछे पाइ प्रसिद्धि, बेगि न जाइहि जीतिरिपु ॥
सुनि प्रभु कहा लषण ते तबहीं * जाहु तात लै कपिदल अबहीं

मख विध्वंसि पुनि मारेहु ताही * भले नाथ तव आयसु आही
अस कहि सजि धनु शर तूणीरा * चले संग हनुमंत युत बीरा
जातहि कपिन भङ्गमख कीन्हा * मारत लखि धनुहीं तेहि लीन्ही
द्वै शर जामवन्त के छेदे * तीनि बाण अङ्गद के भेदे
चारि विभीषण अङ्गन फारे * पाच विशिख पवनजके मारे
एक एक शर सबके दयऊ * पुनि लक्ष्मण पर छाड़त भयऊ
सकल अनन्त काटि महि डारे * पुनि निजबाण कराल पँवारे
आवत लखि शरभयो अलोपा * छाड़िसि बहुरि शूल करि कोपा
तुरत कीन शतखण्ड अहीशा * तबयकगिरिगहि डारिसि शीशा
रज सम करि सोऊ महि पारा * अस्त्र शस्त्र पुनि तजेसि अपारा
सो तब लषण निवारत भयऊ * यहिविधि बीति मासदिन गयऊ
महायुद्ध लखि सुर मुनि सारे * हर्ष शोचवश होइँ बिचारे
तब लक्ष्मण करि कोप कराला * छाड़ेउ एक नराच बिशाला
जातहि शिर भुज काटेउ तासू * गर्जत पुनि मारे शर आसू
राम लषण कहि सह अनुरागा * तेरसि दिवस भयो तन त्यागा
सुनि बोले अङ्गद हनुमाना * धन्य मातु तव तोहिं बलवाना
कटि तनु परेउ समर महि तामा * दहिनी भुजा गई तेहिधामा
शिर लै कीश राम पहँ आये * अनुजहिलखि प्रभु हृदयलगाये
फेरि कमलकर क्षत हरिलीन्हा * बरषे देव सुमन जय कीन्हा
पुनि रघुपति कपि भालु बिलोके * भये सकल श्रमरहित बिशोके
अरिपुर मेघनाद की नारी * पति भुज लखि मन संशय धारी
दीन्हिकमल सर कर गहिलीन्हा * लक्ष्मण की कीरति लिखिदीन्हा
कोटि कलप जो योग कमावे * सोउ न लषणकि समतहि पावे
सुनत सखिन युत रोवन लागी * आजु दशानन भयो अभागी

फेरेहु फीश मुदित पुर फेरी * छूटि वन्दि सब देवन केरी
कोइ जय लहे हमें का करना * जस्रो जगत जो आपन जरना
अस कहि भुज पालकी चढाई * आपु बैठि रावण पहँ आई
सासु श्वशुर पद शीश नवाई * रोदन करि सब कथा सुनाई
जो, पावों निजपति कर माथा * तौ रचि चिता जरहु तेहि साथा
मयतनयादि जहां तक रानी * लगीं विलाप करन दुख मानी
सुनि दशमुखहु सुरद्रुमहिपरेऊ * पुनि धरि धीर वचन अनुसरेऊ
सुमुखिसमुझिजियकरहुनशोका * प्रकट नाम याको मृतुलोका
मातु भूमि पितु बीज बेसारा * काल किसान जीव तृण भारा
पालत पुनि लूटत सोइ खाई * कौन कौन हित रोवे धाई

दो०, रह्यो न कोई रहैगो, पुनि कछु जाइ न साथ।
धन्य भाग इन सबनके, जो जूझे प्रभु हाथ॥
सब सम जानत मोहि तू, मैं हौं अतिबलवान।
देखौ कालिहि कपिन कर, मेटिहौं जाइ गुमान॥
बालिविभीषणपवनविधि, तापस नील कपीश।
इन सब शशिन सहित तव, आनौं पतिकर शीश॥
बड विमोह वश जानितेहि, कछू न उत्तर दीन।
नारदके वर वचन तब, मयजा वरणन कीन॥
ताते निजहित राम पहँ, जाहु सकल तजि शङ्क।
होइ भूप धर्मश जहँ, तहँ कोउ रहै कि वङ्क॥
बहुरि रहततहँश्वशुर तब, भय न कछू शिर नाइ।
चली यान चढि भटन युत, पहुँची कपिदल जाइ॥

सो० लखि हरषे कपि भालु, विन श्रम आई जानकी।
मिटा सकल जञ्जालु, भयोसुयशहमसबनकहँ॥

यहि विधि गई जहा रघुराई * नखशिख लखि दोउबन्धुलुनाई
कीनि दण्डवत विनय समेता * तब लङ्केश कहा सब हेता
सुनि कृपालु बोले अनुरागी * जो भावै सो लीजै मागी
कहौ देहुँ पति तोर जिवाई * भोगहु राज्य कल्प भरि जाई
सुनि सुर मुनि कपि भालु डराने * बहुरि सुलोचनि बचन बखाने
कृपासिन्धु मैं दीख विचारी * यहि मरने ते जीवन खारी
विष बदले जो अमृत पावै * लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै
ताते नाथ देहु पति शीशा * दीन देवाइ तुरत जगदीशा
दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ, लाई सागर पास ।
भई सती पति सहित पुनि, किहिसि सत्य पुरबास ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमेघनादवधसुलोचनासतीवर्णनोनाम
सप्तविंशोऽध्याय ॥ २७ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं मानस मत कछुक, सार रमायण जानि ॥
तेहि दिन भयो न समर कछु, दशमुख शोचै लीन ।
अहिरावणको याद करि, आकर्षण जप कीन ॥
दण्डचारि महँ सो तहँ आवा * रावण लखि निज हाल सुनावा
सकल सैन कपि भालुन मारी * तात रही यक आश तुम्हारी
सुनि बोला यह केतिक बाता * लैहौं लै पताल दोउ भ्राता
देहौं बलि कामद कहँ सोई * जानेहु नभ प्रकाश जब होई
अस कहि विरचि विभीषणरूपा * गयो जहा लक्ष्मण सुरभूपा
सोवत लाखि लै गगन उड़ाना * दशमुख देखि सत्य तेहि जाना
यहिविधि सो लैगयो पताला * प्रभु विन भे कपि भालु बिहाला

तब सब हाल विभीषण काहा * अहिरावण लैगा नरनाहा
रहत नागपुर जो कोइ लावे * सो सबको दे प्राण जियावे
कह हनुमान तजहु सब शोका * लैहौं प्रभुहि ढूंढि तिहुँ लोका
चले खबरि मग खगते पाई * क्षणमहँ अरिपुर पहुँचे जाई
द्वारपाल मकरध्वज ठाढा * तासु पूछ तेहि बाध्यो गाढा
पुनि लघु बनि देवीमठ गयऊ * होत होम तहँ देखत भयऊ
तब तहँ विकट रूप धरि लीन्हा * गै धँसि शक्ति सुथल थल दीन्हा
देखि सहित कुल हरषा राजा * प्रकटी देवि भवा अब काजा
नाना विधि मेवा पकवाना * आनि चढ़ावैं पुरजन नाना
पावनि वस्तु सकल कपि खाई * पुनि बलिहित आने दोउ भाई
बाजहिं बाजन गावहिं नारी * पुनि निश्चर सब होइँ सुखारी
तब प्रभुते बोले शठ सोई * सुमिरौ जो कोइ तुम्हरे होई
सुनि रघुपति तब कीन बखाना * यहि अवसर चहिये हनुमाना
मारन हित शठ भे सब ठाढ़े * घनसमान कपि गर्जेहु गाढे
निश्चर डर अस कहत विशेखी * क्रोध कीन देवी नर देखी
बहुरि गर्जि कपि वपु प्रकटावा * दोउ भैयन दोउ कन्ध चढावा
निजलँगूर कर कोट बनाई * असि लै मारहु खलसमुदाई
अहिरावण शिर काटि कुमारा * देवी की आहुति में डारा
औरौ असुर मिले ते मारे * पुनि लै प्रभुइ चलहु लखि,द्वारे
विनय कीनि मकरध्वज भाये * राज्य देइ निज सैनहिं आये
लखिकपि भालुमुखीसब भयऊ * बूड़त मनहु थाह मिलिगयऊ
हनुमाने सब लगे सराहे * कह प्रभु इन बिन को सम आहे
बोले पवनतनय शिर नाई * आपु चहै तेहि देउ बड़ाई
दो० यहा दशानने दूतमुख, सुनि अहिरावणनास।

एकादिन निज सैन लखि, चढ़ा समर बिनत्रास ॥
बाजहिंबाजन विविध विधि, अशकुन होइँ अपार ।
गनहिं न एकहु गर्बवश, महिसाहिसकत न भार ॥
निज निजनाथ केरि जयभाषी * धाये इत उत भट अभिलाषी
कपिकर मुगदल सगम भयऊ * जनु घनश्यामश्वेतमिलिगयऊ
गर्जहिं मनहुँ बाजने बाजैं * चमकहिं खड्ग छटासी राजैं
बर्षहिं बाण बूद जनु भारी * छूटैं तोप गाज जनु पारी
भयो अँधेर उडी रज कुरा * इन्द्रधनुष बहु लस लगूरा
गिरहिं सुभट मन्दिर हहराई * शोणित सरित चली उमडाई
भुज अहि कच्छप चर्म सुहावे * कुञ्जर अश्व ग्राह द्युति पावे
फिरत चक्र आवर्त अनेका * उछरहिं शीश सूसि ढिग एका
भूषण भेक उपल सम रेनू * धनुष तरङ्ग बहै पट फेनू
कर पद मीन जु केश सेवाला * दोउदल कूल बिटप रथ जाला
बहु भट बहैं चढे खग नीचा * जनु नेवार खेलहिं सरि बीचा
खैंचैं आत गीध गहि तीरा * बशी मनहु लगाई कीरा
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची * मज्जहिं मुदित योगिनी नाची
बीर विनोद लहैं सर देखी * कायर त्यागहिं प्राण विशेखी
देखि कठिन कोपेहु हनुमाना * मर्दन लगे निशाचर नाना
गज तें गज घोरन ते घोरा * खरते खर रथ ते रथ तोरा
महिष ते महिष ऊट ते ऊटा * पैदर ते पैदर दल कूटा
कोटिन कर शिर लातन मारे * कोटिन पटकि सिन्धुमहँ डारे
कोटिन हाथ पायँ बिन कीन्हे * कोटिन फेंकि गगनमहँ दीन्हे
हँसि प्रभु कहैं लषण ते हेरी * देखहु लरनि पवनसुत केरी
निजदलविचलदेखिदशशीशा * धावा लै धनु शर भुजबीशा

जहँ तहँ उड़े कीश भय पाये * यथा पात बौंडर के आये
अङ्गद हनुमदादि भट भारी * लै लै गिरि मारे यकबारी
फूटहिं पवि सो मुरै न नेका * लाग निपातन कीश अनेका
दीन्हिसिपूरि दशहुदिशि बाना * भागत कतहुँ न मिलै ठिकाना
विकल पुकारहिं जहँ तहँ ठाढे * पाहि राम लक्ष्मण दिन गाढे
सुनि लक्ष्मण धनुवाण सिधारा * सरिस आइ सन्मुख ललकारा
होउ सजग अब सुनु दशभालू * पहुँचेउँ आइ तोर मैं कालू
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहु मारे * सकल काटि सौमित्रि निवारे
पुनि छाडे निज वाण अहीशा * सूत समेत भयो रथ खीशा
शत शतविशिखदशौ शिरमारे * मनहु चले बहि रुधिर पनारे
पुनि शतशर छाती महँ दीन्हें * बीसहु भुज बरही सम कीन्हें
धावा विकल क्रोध करि भारी * विधिकीदीन्हि साँगि तकि मारी
लागत उर लक्ष्मण महि परेऊ * रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ
जेहिशिररजसमभुवनअपारा * तेहि उठाइ किमि सकै लवारा
देखि पवनसुत मुष्टिक हनेऊ * है अचेत अवनी ठनमनेऊ
प्रभु लै गयो जहा भगवाना * देखि दशानन अचरज माना
दो० चैत्र कृष्ण नौमी दिवस, अनुजै लखि रघुबीर ।
कह्यो कालके काल तुम, सुनत उठौ रणधीर ॥
पुनिरिपुसन्मुखजाइलेहि, विकल कीन शर मारि ।
लखिअचेतनिजनगरतय, लैगा सूत निकारि ॥
भवन दीख जब रावण जागा * निज सुमन्त्र कहँ खोजन लागा
रे मतिमन्द भीरु धिग तोहीं * रणते विमुख कराये मोहीं
अस कहि दशमी दिवस सचेता * लाग करन मख विजयके हेता
सुनि प्रभु भट पठये बहु आसू * करहु विध्वंस जाय मख जासू

अङ्गद हनुमदादि कपि वीरा * कौतुकही आये तेहि तीरा
लखि लागे सब मारन लाता * उठै न सो स्वारथ मन राता
तब कपि करन उपद्रव लागे * दिये छोरि हय गय मृग भागे
फारे पट बितान घट फोरे * छत्र चमर व्यञ्जन गहि टोरे
लखि मन्दोदरि उठी रिसाई * दुरी चित्रशाला महँ आई
अङ्गदहू घुसि गे तहँ फूले * बिबिध चित्र पुतरी लखि भूले
धाइ धरैं पुनि तजैं निहारी * पावै किमि सुन्दरि बनचारी
देखि हँसी सुरकन्या एका * गहत बताइ सुनारि अनेका
तिहीं दिखाई रावण रानी * असुर निकट लाये गहिपानी
भूषण बसन परे सब छूटी * कामपुरी जनु शिवगण लूटी
आरत बचन पतिहिं लखि कहई * जो जस करै सो तस फल लहई
सीतहि दियो झूठ दुख भारी * देखहु निरगति साच हमारी
नारि बचन सुनि उठा रिसाई * गये भागि कपि जहँ रघुराई

त्रिभङ्गीछन्द ॥

गे भागिकपीशा तब दशशीशा। गहि भुज बीशा धनु तीरा।
सँग सेन अपारा चलेउ जुझारा। मद मतवारा रणधीरा ॥
इत प्रभ सुर तीरा कह्यो अ गीरा मेटहु पीरा बेगि भले।
कटि कासि पटबांधा धनुशर सांधा। दलत अबाधा हेतु चले॥
लखि इन्द्र अजाना। स्यन्दन आना। पवन समाना। देखिप्रभू।
हरिदिन तेहिमाहीं चढ़िसबपाहीं कहो कि नाहीं नीकअभू ॥
सुनिसब बनचारी भये सुखारी देखि सुरारी कोप ठन्यो ।
कहि बचन कठोरा शायक घोरा तजिचहुँओरा कीशहन्यो ॥
है बिकलपराने सकलठिकाने लखिअकुलाने बिशिखभरे ।
तब राम सुजाना पावक बाना छांडे नाना सकल जरे ॥

दशमुख रिसि दयऊ रथ बिन भयऊ दूसर लयऊ क्रोधयुतं।
मुनि सरवर पाटे सब प्रभु काटे निशिचर डाटे बालिसुत ॥
कटिकटि सट परहीं पुनि उठि लरहीं बल करि धरहीं थकत लै।
कोटिन बिन माथा धावहिं साथा कहँ रघुनाथा शिर बोलै ॥
धरु धरु धरु मारू पकरि पछारू करहु अहारू कोउ न बचै।
अति चञ्चलकोशा बधवन रोशा जो बारीशा भूलि रचै ॥
आये कपि भालू जनु वपु कालू मारि बिहालू असुर किये।
नख उदर बिदारैं आंत निकारैं निज गर डारैं हर्ष हिये ॥
लखि रावण कोपा प्रभु रथ तोपा देखि अलोपा देव डरे।
हर्ष सांरि गिराये राम उठाये सन्मुख धाये क्रोध करे ॥
कर पेउ शरदाबा श्रुतितक आवा तब करवावा यों बोला।
मोर्जन हित हारू रहन अगारू राम पछारू क्यों डोला ॥
सुनि कहौं जु आहू पूछन जाहू दशशिर डाहू को एका।
प्रभु सकल बताये अस कहि धाये जाइ गिराये शिर तेका ॥
फिरि भये नवीने पुनि प्रभु बाने पुनि हर दीने पुनि काटे।
पुनि पुनि इमि जामैं राम गिरामैं दशदिशितामैं भरि पाटे ॥
जब असुर रिसाई साग चलाई लगि रघुराई आपु सही।
चहि चल्यो बिभीषन जरँ रिपु तीछिन बदत सुशीषन नीच गही ॥
अस कहि ललकारा गदा प्रहारा लगत पहारा सरिस गिरा।
मुख श्रवण निदाहा शोणित बाहा उठि करि हाहा बहुरि भिरा ॥
मारे यक एकै अस्त्र अनेकै हरिबल छेकै अमित लखा।
पवनज तब धायो मारि गिरायो प्रभु ढिग आयो राम सखा ॥
रावण हनुमाना मेरुसमाना भिरत बहाना असुर ठनै।
नभ सुर मुनि हेरी दुनहुन केरी जय जय टेरी टारि भनै ॥

कपि भालु निहारे हनुमत हारे गिरि तरु धारे सब धाये ।
लखि निशिचर भूपा धरिबहुरूपा कीश अनूपा बिचलाये ॥
भागत भट घेरहि आतुर टेरहि मुखमें गेरहि भुज बीशा ।
दुरि देव पराने बहु रिपु जाने रहे ठिकाने अज ईशा ॥
व्याकुललखिबन्दरहँसिकमुकन्दरसबदशकन्धरनाशकिये।
पुनि एक निहारा मर्कट धारा धाइ अपारा असुर छिये ॥
दो० पुनि छाडे निज बाण प्रभु, काल सरिस वध हेत ।
लागे काटन असुर के, यथा हाथ तृण खेत ॥
सो० सात दिवस दिन राति, बाजेउ घण्टा धनुष कर ।
हरि पूजा की भांति, भये सुभट सहार सब ॥
कुं० घण्टा की परमान अब, सुनु जेहि संगर बीच ।
नाग अयुत दशलाख हय, रथी डेढ़ शत मीच ॥
रथी डेढ़ शत मीच, लहै पैदर दश कोटी ।
तब यक नटै कबन्ध, कोटि पर खेचर चोटी ॥
खेचर नाचहिं कोटि, बिना शिरके निष्कण्टा ।
तब राघव के धनुष केर, बाजत यक घण्टा ॥
श्लो० ॥ नागानामयुत तुरङ्गनियुतं सार्द्ध रथाना शत पत्तीनां दशकोटिसञ्चियतमे नृत्य कबन्धारिणे । एव कोटिकबन्धनर्तनविधौ नृत्येत्तथा खेचरस्तेपां कोटिकनर्तने रघपतेःकोदण्डघण्टारव. ॥१॥ एव सप्तदिनं ख्यात स्वर्गे मर्त्ये रसातले । भवेद्भूरिभटध्वंसो रामरावणसङ्गरे ॥ २ ॥
दशमुख आपुहि जानि अकेला * लाग करन माया कर खेला
भूत पिशाच प्रेत बैताला * अमित जन्तु प्रकटे त्यहि काला
लीन्हे धनुष शिलीमुख चोखे * मारु मारु धरु बोलहिं रोखे

निर्तहिं करहिं रुधिर कर पाना * गहे कपाल योगिनी नाना
मुख पसारि दौरि हम खावा * भागे कपि तहँ देखहिं दावा
कूपर ते बरषै बहु बालू * भये थकित सब मर्कट भालू
शीष सहित कत होय खरारी * सुनि प्रभु माया सकल निवारी
देखि सुभट धाय करि ईहा * प्रकटे तेहि कपि भालु समूहा
सन्मुख चले विटप गिरिधारी * देखि अनेरा बोले हिय हारी
सब मर्कट भगे रिपु ओरा * कौन कुशल जो विधि घरफोरा
आपुइ आपु लखे नहि कोई * भागे अब कछु जीति न होई
बहुरि हरी माया भगवाना * तब तेहि रचे लपण हनुमाना
लखिकपि भालुसकहिंनहिंमारी * घेरिनि रामहिं धनु गिरिधारी
हेरे देवे कपि प्रभु हसाने * पुनि समूह शायक सन्धाने
छाइत रिपु शिर काटन लागे * जनु समूह शर ते खग भागे
रहे पूरि नभ केतु समाना * छेदे निकर एक एक बाना
लोकलोक गिरि गिरिवन जहँई * भयो राम रावण रण तहँई
सुर नर नाग सबै अकुलाने * जायँ कहा कोउ सुखद ठिकाने
मारु मारु धरु धरु शिर बोलैं * काल व्याल से खेद डोलैं
प्रभु काटत शिर बारहि बारी * मनहु अनार उड़े फुलवारी
सो० यहिविधि क्षीयात नाथ, बीते अष्ट दिवस तब ।
बोले श्रीरघुनाथ, सुयश देन हित घटजसे ॥
इति श्रीरामरावणसमरवर्णनोनामअष्टाविंशोऽध्यायः ॥ २८ ॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण केर मत, कहौं इतिहास बखानि ॥
नाथ थकित भै भुजा हमारे * तदपि असुर मरत नहिं मारे
ताते यतन करहु जेहि छाजे * कह अगस्त्यमुनि प्रभु सुनि लाजे

प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा * जासु प्रताप विदित सबदेशा
तिनकी विनय करहु कर जोरी * होइ विजय आनन्द बहोरी
सुनि प्रभु देन बडाई हेता * बोले रवि दिशि प्रीति समेता

भु० छं० नमो मार्तण्ड प्रचण्ड तमारी।
नमो कल्मषामै दुखातङ्कहारी॥
नमो भानु मे पातु प्राच्यादि वासं।
नमो पातु वेदाङ्गयाम्यार्त्त नासं॥
नमो पातु तापेन्द्र देव प्रतीचं।
नमो मे रवि रक्ष रक्षेंदुदीचं॥
नमो रश्मिगर्भासि ईशानदेशं।
नमो संयमा पातु देग्नेसुवेशं॥
नमो पातु नैर्ऋत्य हीरन्यरेत।
नमो पातु वायव्य देवार्कमेत॥
नमो मित्र मूर्धानि संधिष्णुमधं।
नमो वारुण पातु सर्वत्र बधं॥
नमो पातु सर्वाङ्ग सुर्या सतोषं।
नमो जन्म मृत्युजंरा व्याधि शोषं॥
नमो धर्म कामार्थ निर्वाणदाता।
नमो दोष दारिद्र संतापहाता॥
नमो विश्वभूताक्ष भूतात्मभूप।
नमो ज्ञान विज्ञानरूपं अनूपं॥
नमो लोक नाथादि मध्यान्तमेकं।
नमो तीव्रतेजार्क नामं अनेकं॥
नमो मेकचक्र रथ दिव्यगामी।

नमो कंदकालश कारुण्य स्वामी ॥
नमो निर्मलं निर्विलोकं विरालं ।
नमो भूषितं भूषणा रत्नजालं ॥
नमो स्वर्ण संकाशमाकाशबासी ।
नमो सज्जनानन्ददा वेग रासी ॥
नमो सूक्ष्म भाविक्ष प्रागल्भमीशं ।
नमो ब्रह्म विद्या विभौ वै बलीशं ॥
नमो त्रैगुण त्वं त्रिमूर्ति त्रिकालं ।
नमो त्वं तुरीयं निरीह निराल ॥
नमो त्वं सुरा सुस्मृतासेव्य मानं ।
करो सो कृपा ज्यों तजै शत्रुप्रान ॥
यही बीनती दास रघुनाथ की है ।
यथा बालबाणी लिह्यो, जानिही है ॥

श्लोक ॥

सूर्याष्टकं योनुदिनं पठेन्नरो मध्याह्नकाले शुचिनेमयुक्त ।
नश्यन्तिसर्वाणिरुजानितस्य प्राप्नोतिमोदार्थजयाभिरामम् ॥
यहिविधिकरि बिनतीजगदीशा * छाड़े शर रिपुदिशि इकतीशा
यक शर नाभि सरामृत शोषा * बीस भुजा घटे करि रोषा
दश शिर काटिदशौ दिशि माहीं * धरि आये रघुनन्दन पाहीं
बिनभुज शिर धावा करि कोपा * कहा राम रण करहुँ अलोपा
तब प्रभु काटि किये युग खण्डा * गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्मण्डा
तासु तेज प्रभु वदन समाना * देखि देव नभ हने निशाना
जयधुनि पूरि रही चहुँ ओरा * तिनमधि कोसलराज किशोरा
कुसुमित किंशुक तरुके बीचा * राजत तरुतमाल जनु सींचा

जटा मुकुट सोहत मुनि वीरा * कर कमलन फेरत धनु तीरा
राजिव दृग करि कृपा निहारे * सुर नर मुनि सब भये सुखारे
यह छबि सुखद बसै उर जासू * मोह असुर तब होइ बिनासू
पतिबध सुनि मयजादिक रानी * आई तहँ शिर पीटत पानी
रावणगति लखि देह बिसारी * लागीं कहन तासु गुण भारी
जेहिं भुजबल जीतेउ सुर सर्वा * तन सुख किहेउ सकलसहगर्वा
सोइ वपु बाहु श्वान शिव खाहीं * राम बिमुख कछु अचरजनाहीं
जासु कर्म फल चाहिय शोका * तदपि कृपाल दीन निज लोका
देखि बिभीषणहू दुख पावा * प्रभु प्रेरित लक्ष्मण समुझावा
अनुज क्रिया कीन्ही जस चाही * द्वितिया दिन आये प्रभु पाही
तयरघुपति लिय बोलिअनन्तहि * कपि ऋक्षप अङ्गद हनुमन्तहि
दो० कह्यो बिभीषण जाइ पुर, राज्य देहु जस रीति।
भले नाथ कहि नाइ शिर, कीन्ह्यो तिलक सप्रीति॥
बाजे बाजन बहु किये, युवतिन मङ्गल गान।
सहितबिभीषणलषणपुनि, आये जहँ भगवान॥
तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरे * जनकसुतहि लावहु ढिग मेरे
सुनि पवनज अङ्गद लङ्केशा * आइ मातु पद नायो शीशा
पूछी कुशल कुशल सब भाषी * पुनि पवनज बोले मनमाषी
मातुतमचरिन तोहिं दुख दीन्हा * तेहिते इन्हैं चही बध कीन्हा
कह सीता जनि मारिय ताता * ऋक्ष मनुजकी बरणी बाता
सुनि सुखसहितबिभीषण भावा * षोडश बिधि शृंगार करावा
शिविका सुभग माझ बैठारी * लाये सादर जहाँ खरारी
पावकते प्रकटन के हेता * कहे वचन दुर्वाद समेता
सुनि जानकी बहुरि दुख पाई * लक्ष्मण ते पावक मँगवाई

पिता रजाइ कह्यो तेहि पाहीं * रघुपति तजि गति दूसरि नाहीं
तौ जल सरिस होउ तुम केशा * अस कहि तामें कियो प्रवेशा
विप्ररूप धरि पावक लाये * प्रभुइ सौंपि अस बचन सुनाये
राम बाम दिशि आसन दयऊ * देखि भालु कपि हरषित भयऊ
लषण राम सिय शोभा हरी * निरखि सुमन बरषे सुरभूरी
दशरथ सहित राम पहँ आये * लषण सहित प्रभु शीश नवाये
बोले तव प्रसाद रिपु मारे * सुनि बिनती सुरलोक पधारे
तब विरंचि बिनती बहु कीन्ही * प्रभुपद प्रीति मांगि सो लीन्ही
आइ बिनय तब कीन पुरारी * भल कीन्हो प्रभु बध्यो सुरारी
मन वाञ्छित बर मांगि सिधाये * तब सुरेश बर बचन सुनाये
नाथ कृपा करि सुर मुनि रखे * दास जानि सब के दुख भखे
अब मोहिं जौन रजायसु देहू * करहुँ सो सुनि बोले प्रभु येहू
तात देहु कपि भालु जियाई * दिये जियाय अमी बरषाई
तब लङ्कापति बचन उचारा * नाथ करिय कछु अङ्गीकारा
कह प्रभु तोर कोश गृह मोरा * मोर कोश गृह तव न निहोरा
करहु कल्प भरि राजभिरामा * अन्त समय आयो मम धामा
पुनि बोले पट भूषण लाये * कपि भालुन चहिये बरताये
कह प्रभु होइ गहरु बिशेखी * मम मन है भरतहि कब देखी
ताते लै अकाश महँ जाहू * देहु बरषि मिलिहैं सब काहू
जाइ बिभीषण नभ बरषाये * पहिरि पहिरि सब प्रभुपहँ आये
नाना जिनिसि देखि कपिभालू * बिहँसि सकलते कह्यो कृपालू
तुम्हरे बल मैं रिपु रण जीता * भे लङ्केश मिलीं म्वहिं सीता
होइ त्रिभुवन सुयश तुम्हारा * पुनि पैहौ परधाम हमारा
अबहिं जाहु निजनिज गृह भाई * सुनि कपिभालु चले हरषाई

दो० सहितजानकी लषणयुत, युत्थप सब लंकेश ।
फणिदिन पुष्पकयान चढ़ि, चले आपने देश ॥
लखत लखावत वास निज, आये दण्डक तीर ।
मिलिघटजादिकमुनिनकहँ, पुनि गमने रघुबीर ॥
सो० चित्रकूटमें आइ, परितोषे मुनि साधु सब ।
पुनि तीरथपति पाइ, न्हाइ दान दीन्हो द्विजन ॥
भरद्वाज कहँ मिलि सनमाना * शृङ्गबेर पुनि आयउ याना
मिला गुहा अति प्रीति समेता * पवनज ते कह कृपा निकेता
जाइ अवध भरतहि सुधि देहू * तिनकै रहसि कहेउ स्वहितेहू
सुनि चलिभे कपिकरि परणामा * आइ रहे तेहि निशि तेहिग्रामा
इहा सकल शोचहिं पुरवासी * आवतहैं की नहिं सुखरासी
रघुपति बिरह अनल सब जरहीं * सगुण समुझि शुभधीरजधरहीं
अवधि बीच एकहि दिन जानी * कौसल्यादि मातु अकुलानी
फणिदिन रवि भरणी सहचावा * तिसरे पहर गणिक बुलवावा
पग परि पूछेहु सह अनुरागा * सुनि ज्योतिषी बिचारै लागा
कुं० तिथिरुपहर सयुक्तवारि, वारहु तार मिलाय ।
देहु सातकर भाग जो, बचै तासु फल गाय ॥
बचै तासु फल गाय, एकते तेहि अस्थाना ।
द्वैते आवन कहत, तीनि ते मगमें जाना ॥
चतुरथपहुँच आइदिग, पञ्चम पुनरावृत्ति बिथि ।
षष्ठ व्याधि समेत मुनि, मृतककहैइमि बिष्णुतिथि ॥
दो० यहि बिचार ते जानिये, आये प्रभुपुर पास ।
सुनि सब मातन दान बहु, दीन्हे सहित हुलास ॥
इति श्रीरावणवधाररामायोध्यागमननामैकोनत्रिंशोऽध्याय २९॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

उत्तरकाण्डप्रारम्भः ॥

सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रसायण केर मत, कहौं इतिहासबखानि ॥
रहा एक दिन अवधिकर, भरतसमुझि मनमाहिं ।
लागे शोचन विरह वश, धीरज आवत नाहिं ॥
तेहि अवसर हनुमान तहँ, आये विप्र स्वरूप ।
रटत नाम अवलोकि कै, बोले वचन अनूप ॥
जासु विरह शोचत अहौ, आवत सो समरत्थ ।
लषणजानकी सहितसुनि, प्रमुदित मिले भरत्थ ॥
तात कह्यो सन्देश जस, तस कछु नाहिं जो देहुँ ।
तासे आशिष आप कर, हौं मैं उऋण न लेहुँ ॥
देखि भरतकी प्रीति कपि, कही रामते जाय ।
सुनत चले प्रभु यान चढ़ि, पुर ढिग पहुँचे आय ॥
भरत शत्रुहन सहित गुरु, पुरजन सचिव समाज ।
लेन सिधाये रघुपतिहि, कहि जननिनते काज ॥
जहँ तहँ सुनि पुर नारिनर, धाये दरशन हेत ।
एक एक ते कहैं तुम, देखे कृपानिकेत ॥
कोटिनचढ़िगिरितरुअटनि, निरखैं व्योम बिमान ।
कोटिन मङ्गल द्रव्य लै, करहिं राम गुणगान ॥
अवध बिराजत भामिनी, जिमिबिरहिनिप्रियचार ।
पतिआवतसुनिमुदितमन, कीन सुमन शृङ्गार ॥

कीन सुतन श्रृङ्गारु, कोटि कटिकिंकिणिजानौ।
मणि विद्रुम मय भवन, अङ्गप्रति भूषण मानौ ॥
साजे बसन सुरङ्ग, सङ्गसखि चित्र अनेका।
पग नूपुर पुर शोर, घोर गति बाजत एका ॥
चञ्चल अञ्चलपानि, पताका ध्वज फहराहीं।
ग्राम धामके लोग, सकल धाये प्रभु पाहीं ॥
ऊंच अटनि पर छत्र, उचकि चितवतमगफूली।
कनक कलश कुच प्रकट, मोद वश कञ्चुकि भूली॥
भूली कञ्चुकि मोद बश, नेत्र झरोखा खरब बध।
यकटक रहैं निमेष तजि, नारिरूपभय इमिअवध॥
दो॰ भरतहि आवत देखि प्रभु, त्याग्यो तुरत बिमानु।
सन्मुख चले सनेह बश, पठै धनद पहँ यानु ॥
प्रथममिले गुरुद्विजनपुनि, गहे भरत प्रभु पाय।
बल करि तुरत उठाय हरि, भेंटे हृदय लगाय ॥
राम शत्रुहन मिले पुनि, भरत लक्षमण दोउ।
पुरवासी क्षणमें मिले, बाल बृद्ध सब कोउ ॥
भरत शत्रुहन सीय पद, परसे पाय अशीश।
पुनि भेंटे सब कपिन कहँ, बिप्रन सहित मुनीश ॥
बाजहिं बाजन बिपुल सुर, बरषहि सुमन सराहि।
द्वार द्वार प्रति आरती, कराहिं लोग सब चाहि ॥
सुनि सुनि धाईं मातु सब, ज्यों बच्छाहित धेनु।
प्रथम केकयी भेंटि पुनि, मिले सबन सुखदेनु ॥
एकै दिनगे सबन गृह, सब के भोजन कीन।
केहु न जानेहु मर्म यह, कच उतराधे लीन ॥

प्रात सतमी दिवस मुनि, कह्यो राज्यपद देन ।
सुने रघुपति नयऋषिनते, बोले कोमल बैन ॥
नाथ द्रव्यमद राजमद, बियमद बपु लेखि ।
यौवनमद तहं राज्यमद, सब ते यहै बिशेखि ॥
तेहि पाये कुछ सुख नहीं, केवल निरय निवासु ।
पुनि चञ्चल नहिं होत निजु; ताते चहै न दासु ॥
सो० नरतन कर फल एक, कहत बेद बुध आपु सम ।
परिहरि काम अनेक, भजै सदा जगदीश कहँ ॥
सुनि बोले ऋषिनाथ, तुम बिन अस को कहै प्रभु ।
सो माया तव हाथ, काल कर्म गुण जासु बश ॥
जो सुमिरत तव नाम, ते छूटत अभिमान ते ।
प्रभु परिपूरण काम, तेहि किमि होइ श्रीराज्यमद ॥
तेहि ते लेहु राज्य पद राखौ * पूजै हम सब की अभिलाखा ॥
भेंत मापि पट भूषण साजे * घंपर भोर बचाये बाजे ॥
पङ्कज द्रुम अनेक प्रकारा * लै लै आये अनुग अपारा ॥
योजन एक कनक की छानी * तामधि चन्द्रबंदिका तानी ॥
ताके तीन महल पुष्प रम्भा * मणिमय चहुँदिशि षोडश खम्भा ॥
तेहि अति सुरतेष तहँ आसन * तेहि गृह मध्य रतनसिंहासन ॥
तेहि पर कमल अष्टदल केरा * धरे विविध भाजन चहुँ फेरा ॥
गुरु अगणित शुभ सम्मत चाहा * तेहि ऊपर बैठन हित कांहा ॥
कुं० विप्रन सीमा नचायके, सिंहासन श्रीराम ।
बैठे श्रीसीतासहित, मानो रतियुत काम ॥
मानौ रतियुत काम, किधौं श्रीयुत मायापति ।
किधौं तड़ितयुत मेघ, किधौं विद्यायुत ज्ञानी ॥

कि यौंसिद्धियुत वृहदरवि, कल्पलता प्रद क्षिप्र ।
छविश्रृंगारुश्रमकीर्तिलखि, वेद उचरैं विप्र ॥
शशिसम छत्रसुकण्ठकर, चँवर विभीषण हाथ ।
लषण लिहे आदर्शवर, अङ्गद पावन पाथ ॥
अङ्गद पावन पाथ, पान, रिपुदलन पवावै ।
विजन करत निषाद, भरत सब काढ़िगलावै ॥
जामवन्त हनुमन्त कर, छरी छवीली शक्ति असि ।
बचन सुधा रसतरनितन, चन्दनाशिरचन्द्रिकाशसि ॥
नाच नटी गनगम जटी, लटी न छुटी अनूप ।
ठटनि ठटी नहिं कछु घटी, मन निपटी पटरूप ॥
मन निपटी पटरूप, टाहिविघटहि गति ऊपर ।
झटकि सुकर कटिमटकि, लटकिपटकहि पगनूपुर ॥
नूपुरपटकहिलटकि छवि, लखि मटकै बुधिवाक ।
तान कटी सुनि चटपटी, लहै मनुज मुनिनाक ॥
जान्यो जब अविशेष की, आई घटिका शिष्ट ।
प्रथमैं श्रीरघुनाथ शिर, कीन्हों तिलक वशिष्ठ ॥
कीन्हों तिलक बशिष्ठ, अपर सब तिनके पाछे ।
करहि आरती मातु, निछावरि पटअतिआछे ॥
विप्रन दीन्हों दान, सोई ज्यहि जो मनआन्यो ।
नृपन धरी बहु भेंट, बन्दित्रिभुवनपतिजान्यो ॥
तब विरंचि कर जोरिकै, बोले सम्मुख बैन ।
जय रघुनाथ अनाथपति, प्रणतपाल सुख-ऐन ॥
प्रणतपाल सुख ऐन, मैन छवि कोटि बिराजे ।
धन्य भाग्य बड तासु, लखा जिन याहिसमाजै ॥

लखा समाजे आजु मोहिं, दान देहु निजभक्ति अब ।
सुनि तथास्तु बैठे पुर., आये मुदित महेश तब ॥
वन्देहं त्वत्पद प्रभो, संश्रिताब्धि दृढ़ पोत ।
परिभवाब्धि ध्येयं सदा, तीर्थास्पद सुख सोत ॥
तीर्थास्पद सुखसोत, नतंकमलज हरि ईसं ।
प्रणतपाल आभीष्ट, द्रोह भृत्यारत खीसं ॥
खीसंकृत अघ ओघ, सव्य श्री मुनिमानन्दे ।
गुणागार मे पातु, शरसिश्य हं वन्दे ॥
विप्ररूप धरि वेद तब, बोले गिरा अनूप ।
जय जगदीशअजीशपति, निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
निर्गुण सगुण स्वरूप, भूपभव पार उतारण ।
जे नर तजि तव भक्ति, यचत जग सुखके कारण ॥
सुर दुर्लभ तनु पाइ ते, पतत नरक महँ क्षिप्र ।
चरणकमलरतिदेहुसुनि, सबहिंन जाने विप्र ॥
बोले बिश्वामित्र तब, जय जनघनमनहस ।
रघुकुलकुमुद चकोरशशि, शिवधनु कृत विध्वंस ॥
शिवधनु कृत बिध्वंस, वंशयुत असुर निकन्दन ।
जय सुर नर मुनि पाल, काल सब दशरथनन्दन ॥
दशरथनन्दन भक्ति देहु, निज मोहिं अडोले ।
तब तहँ बाल स्वरूप, आइ सनकादिक बोले ॥
जय भगवन्त अनन्तअज, अनघ अनामय एक ।
करुणासिंधु सर्वज्ञ शिव, सुखप्रद नाम अनेक ॥
सुखप्रद नाम अनेक, करम तव पावनकारी ।
काम क्रोध मद मोह, लोभगज सिंहखरारी ॥

जगदधितारन पोतदृढ़, कहतसुनत हरिलेतभय ।
बसहु सदा मम उरअयन, सिता लपण समेत जय॥
कह बशिष्ठ करजोरि तब, जय प्रभु रूप तुमार ।
वचन अगोचर बुद्धिपर, जाने कहा गँवार ॥
जाने कहा गँवार, परशुधर सके न जानी ।
प्रगट विष्णु अवतार, बेग निजकीन्हिंनिहानी ॥
शिवअरधंगिनि दक्षजा, भ्रमवश बहु संकट सहा ।
खगपतिकाकभुशुण्डिसे, भूले तौ जड नर कहा ॥
दो० आपु जनावहु जाहि सो, तिनश्रम लेइ पिछानि ।
ममउरकरहुनिवासनित, यहि समाज सुखदानि ॥
कुं० यहि बिधिसुरनरनागनृप, सबहिंन विनती कीनि ।
तवरघुपतिसबकपिनकहँ, निज परसादी दीनि ॥
निज परसादी दीनि, मुकुट लङ्कापति पावा ।
कुण्डल लहे सुकण्ठ, माल हनुमत गर नावा ॥
पीताम्बर युवराज कहँ, दीन्हो जामा ऋक्षपहि ।
औरौ गहन मँगाइ बपु, बच्यो न कोई भांति यहि ॥
सवविधिसवहिप्रसन्नकरि, बोले मुनिते राम ।
विपति माझ ये सखा सब, आये मेरे काम ॥
आये मेरे काम, नाम जिन केर बतायो ।
तिन जो कीन पुरुषार्थ, तासु मह प्रीति सुनायो॥
भरतहुतेमोहिंअधिकप्रिय, देहुकहाअसकवननिधि।
लषणचरितकाकहउँजिन, सेवाकीन्ही सकलबिधि ॥
सो० सुनत सभा हरषानि, जयकहि सुर बरपे सुमन ।
शरण सुखद प्रभु बानि, पहिरे पट भूषण बहुरि ॥

छं० पुरवासी नरनारि जे कहैं कि आज विशेखि।
नयन सफल करि लीजिये रघुपति छबि देखि ॥
नीलजलदमनि सरिस वपु दिनकरमणि समतेज।
कोटि मनोभव ते रुचिर राजत मणि सेज ॥
रत्नजटित मणिमुकुट शिर जगमगत अपार।
श्रुतिकुण्डल निज केतुके दीन्हें जनु मार ॥
भृकुटी ललित ललाटमें दिहे तिलक सुभास।
जनु लाग्ये अलि रवि करीनि हित कमल प्रकास ॥
चञ्चल चारु विशाल दृग मधिप्राण सुहाव।
मानहुँ विधि खञ्जन लरैं सुखकर तव राव ॥
श्याम सुकेश प्रसून घर जनु मणियुत नाग।
उतरे मुख शशि अमीहित लखि रिपु डर लाग ॥
विम्बादाड़िम दशन मधिरसन सुरङ्ग।
कमलकोश मे कुलिश जनु वसे दामिनि सङ्ग ॥
मन्दहास बोलत मधुर खाये मुख पान।
घर कृपादृष्टि की वृष्टिसों करै अमी समान ॥
कम्बुकण्ठ कौस्तुभ लसै मुक्तन की माल।
पयद मध्य सोहीं मनो बगपांति विशाल ॥
भुज आजानुबर जनु वही युग यमुनाधार।
धनुशर तट भूषण भँवर करकञ्ज उदार ॥
असित श्यल उपबीत उर ओढ़े उपवीत।
लसत क्षीर सरिता मनोत्वपला लखि मीत ॥
नाभि शिरस त्रिवली सुपथ रोमावलिसे बाल।
कटिकेहरि हरि किंकिणी जनु सुरवर मराल ॥

कदलिजङ्घ युग फवर नूपुर अनमोल।
पुरट पदुमके कलिन में जनु अलिगन बोल॥
अरुण चरण चिर चिह्न युत युगपदजनखाभ।
श्याम रक्त हरिदलनि जनु बैठे जलदाभ॥
विधि हरि हर ध्यावत जिन्हें मुनिगण तजिसाथ।
तिन पायनमें प्रीति दृढ़ चाहे जन रघुनाथ॥
दो० यहिविधिनखशिखरूपलखि, मुदित होयँ सबकोइ।
एक एकते आइ गृह, बोली बूझेउ सोइ॥
हे सखि आजु रामछवि देखी * नयनन मम परिहरी निमेखी
तहँ पुनि बसत अङ्ग प्रभुकेरे * अद्भुत रचना हेरी नेरे
युगल कञ्ज दश दल तिन माहीं * बसत मराल उडत ते नाहीं
पिक बक कीर लाल मिलिडोलैं * बैठे घेरि चहु दिशि बोलैं
तिन के मध्य मयन रथकेरे * चक्र बिराजत मणिमय हेरे
कमलनाल रति गललीहासा * रम्भातरु तेहि ऊपर बासा
तेहि पर गज करिपर मृगराई * दिव्य बसन ते दीन उढाई
हरिपर सर मधि भँवर विराजैं * बिबिध बरण के पची राजैं
सरपर कनक केर गिरि दोई * तिनपर रहा नील घन सोई
तेहि पर सुमन पञ्च रग फूले * तामधि बैठि परेवा भूले
तेहिपरकुसुम कुसुमपर अलिसुत * तेहिपर युग बिम्बाफल अद्भुत
तेहिपर शुक अतिशै लागतभल * लीन्हें पल्लव चोंच सहित फल
शुकतरपिक ऊपर विविखञ्जन * खञ्जन पर घन पर शशि रञ्जन
इत उत दिनमणि उदित सुहाये * मानहुँ शशिसहाय हितआये
शशि ऊपर बहु नखत सुहावन * इन्दुम इन्दुलसत मन भावन
तेहि पर गिरि गिरिपर बन सोहे * तेहि बिच लाल पन्थ मन मोहे

तेहि पर मणिधर नागिनि देखी * तेहि अघ दीरघ सरिता पेखी
तेहि ते बही सरित युग जोई * जलचरविपुलबिबिध विधि सोई
फूले कमल मिथुन इक सङ्गा * क्रीडत बिहँग जाने बहु रङ्गा
सुनत सखी सो देखन धाई * मुदित भूप के मन्दिर आई
दम्पति रूप देखि हरषानी * आई भवन तोरि तृण पानी
दो० यहिविधि सायंकाल भो, रहे दीप पुर पूरि।
मनहुँ शेष आये मिलन, किधौं धरणि सुत भूरि॥
तब मुनि मुदित रजायसु दीन्हा * सन्ध्या वन्दन सबहिन कीन्हा
राजसभा पुनि बैठे आई * हरषि पहरभरि रैन बिताई
सेवक आइ कही तब बाता * चलहु भवन प्रभु बोलत माता
उठे तुरत पुरजन शिरनाई * गे निज भवन रजायसु पाई
आये रघुपति जहँ महतारी * अनुज सिया युत कीन बियारी
अँचवन करि पुनि बीरा खाई * हनुमदादिजन लिहिनि प्रसादी
बोला सुख चलि सोवहु श्यामा * आये तब प्रभु कञ्चन धामा
देखि सखिन हँसि पाँय पखारे * मणिमय अटसिलया बैठारे
स्रक, सुगन्ध, मेवा पकवाना * धरे कनक भाजन भरि नाना
सुर नर नाग सुता अनुरागी * नृत्यगान मिलि करने लागीं
देखत ही गे सोइ कृपाला * लखि प्रभात बोला तब साला
उठहु नाथ जगनाथ हमारे * विधि हरि हर मुनि ठाढ़े द्वारे
मिलि सबहिन कहँ दरशनदीजे * याचक सकल अयाचक कीजे
विहँग बचन सुनि उठे खरारी * देखि सखिन आरती उतारी
प्रीति सहित दातूनि कराई * मिले सबन पुनि द्वारे आई
बिप्रन दान देइ बहु रङ्गा * सेवक सखा अनुज लै सङ्गा
जाइ कीन सरयू अस्नाना * देखि लोग सुख लहैं निदाना

पूजन करि पुनि मन्दिर आये * मुदित मातु तब अशन कराये
कछुक बार करि शयन कृपाला * पुनि सभामाहि आये नृप शाला
राम राज्य बैठे जब तेरे * त्रिभुवन दुःख मिटे सबकेरे
कामधेनु भइ भूमि सुहाई * मांग मेघ देइ जल आई
चारिहु वर्ण धर्म निज चरहीं * कोउ काहू ते बैर न करहीं
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * सबके प्रभुपद प्रीति अपारी
रघुपति चरित सुनै नित कहई * परमानन्द मगन सब रहई
अजहूं जे हरिपद मन लावैं * राम राज्य कर सुख ते पावैं
रघुपति चरित सुनें जे कहहीं * निश्चय ते अव्ययपद लहहीं

दो० रामचरित्र बिचित्र अति, कहि कोइ लहै कि पार।
सुखप्रदनिजमतिसरिस मैं, तुम्हें सुनाये सार॥
सुनि हरपे श्रोता सकल, धन्य भाग्य निज जानि।
कहत दास रघुनाथ अब, सहित जोरि जुग पानि॥
हे प्रभु सीतानाथ तुम, जस फुरमायो मोहिं।
तस मैं भाष्यों ग्रन्थ यह, सो अर्पत हौं तोहिं॥
श्री गुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
रामचरित सुखप्रद कछुक, बरणे जन रघुनाथ॥

तो०छं०॥ श्रीरामचरण प्रताप। कछु कीन किरपा आप॥
तेहिनाथचरितसिखालि।अयकहतगुरुपरनालि॥

कवित्त॥ श्रीरामानुज संप्रदाय द्वारा अग्रदासजूके, तहां के महन्त भे गोबिन्दराम जानिये। तिनहीं केशिष्य सन्तदास तस्य कृपाराम, कृपारामजूके रामचरण पिछानिये॥ रामचरणजूके रामजस तस्य कान्हरभे, कान्हरके शिष्य हरिरामको बखानिये। हरीरामजूके देवादास

राम नाम भाल, देवादासजूके रघुनाथ मोहि जानिये ॥

दो० इष्ट हमारो राम सिय, राम नाम प्रियभाल ।
राम रकार, मकार है, बिन्दु जानकी लाल ॥
पावन को पावन करन, शिव को धनु मुनिपर्ण ।
श्रुति सन्तन के प्राण हैं, रामनाम दोउ वर्ण ॥
बिबिधग्रन्थबहुबिधिसुमन, मम मति माखी जानि ।
विश्रामोदधि ग्रन्थ मधु, कीन इकट्ठे आनि ॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य शुचि, आवत सबके काम ।
यत्न किहे सहजे मिलै, नाहित महँगे दाम ॥
कथा रसिक जे सन्तजिमि, गुणग्राही रस चोर ।
ते आदरि हैं ग्रन्थ यह, देखि परिश्रम मोर ॥
लहिहैं सुख सम्पतिविविध, जैहैं मिटि तिहुँ ताप ।
चारों युगमें प्रबल है, रघुपति भक्ति प्रताप ॥

छं० अतिप्रबलभक्ति प्रताप सब पर ईश जोहि निजवशकरे ।
कलिकालहू हरिभजन करि बहुजीव भवसागरतरे ॥
सनकादि शम्भु बिराग मुनि जप योग तप प्रेमीभले ।
शठ कोपजा मुनि वाजि शुचि नचनन्द शांपादिकथले ॥
अहिनाथ सुरतरु तरणि नीचादित्यतम भ्रम हारेहू ।
सम मेव मध्वाचार्य स्वामी विष्णु बोहित तारेहू ।

गुरुनिष्ठ जगाचार्य्य रामानन्द श्री रँग रंगियो ।
पयपान कृत कीलाग्र शंकर नाम सुर पारस वियो ॥
जयदेव श्रीधर बिन्द मङ्गल ज्ञानदेव त्रिलोचनं ।
भय जासु सेवक आइ श्रीपति प्रेमवश दुख मोचनं ॥
पृथु रूप वल्लभभूपजन जेहि राम सिय रुधिमें लखे ।
बिविसूर कूबा गङ्गाधर हर प्रेमनिधि मङ्गल सखे ॥
गति गूढ़हरिअनुकरणराजहिपाणि पुरिखातम दियो ।
प्रिय लालिकमांकेरिखीचरिबालि निज मन्दिरलियो ॥
सिय टूकभजिनिज सुतन बिष दै प्रभुइ पियवाइ भई ।
हरि हंस मामा भानजे सदवृत्ति को कसनी लई ॥
भइ भुवनकी असिसारिकी सितदेश देवाहितकरे ।
दियो दाह कामध्वज कलेवर आइ जे मल दिशिलरे ॥
घरदीन महिषी गोपकी द्विज हेतु चलि साखीभरी ।
शिरनयो गणिका काज शङ्कीदास लगिनिग उरधरी ॥
सुख पाव सुन्दरि रामकहिं रैदास हरिहि बुलायहू ।
बहुबार रास कबीरहित धनु दीन बरदी लायहू ॥
विन बीज जामेहुधनाको शशि सेनहित छुर हरिगही ।
रघुनाथ माधवदास जनको शौच करवायो सही ॥
हरि व्यास देविहि दीनि दिक्षा नरहरी समर्था लई ।

त्रिपुरारि तत्त्वाजीव नित्यानन्द नाभा अनभई ॥
भूगर्भदेव सुरारि गज गोविन्द गिरिवरको सखा ।
गोपालरूप सनातना तद दीने नग लीन्हे लखा ॥
विठ्लेश लाला भक्त नरसी खलन बहु परचै दिये ।
परमार्थ के रस रूप पीपा पतित बहु पावन किये ॥
कोतल्ल केशव भट्ट मीरा लीन गिरिधर में भई ।
रतनावती करमैति भक्ति गणेश दै दृढ़करि गई ॥
चतुरोग तुलसीदास पावन रामयश जिन उर धरेउ ।
कवि कृष्ण लपण प्रयाग जूड़े युगल हरिजन आदरेउ ॥
भे औरहू बहु सन्त अब जे अरु आगे होइहैं ।
रघुनाथ तिनके चरित सब कहिसकै नहिं असकोइहैं ॥
जिमिक्षीरसिन्धुअपार खग निज चोंचसमभरिपावहीं ।
तेहिभांतिकबिनिजमतिसरिसहरिसन्तजनगुणगावहीं॥

कुं० अहोसन्त भगवन्त गुरु, विनय करहु मम कान ।
चहौं न महिसुख देवसुख, बिधिसुख पुनि निरबान ॥
बिधिसुख पुनि निरबान, ऋद्धिसिधि सकल धरीजै ।
जहँ राखो प्रभु मोहिं, तहा निज पद रति दीजै ॥
दीजै पुनि सतसङ्ग जहँ, तव गुण सुन बाको लहौं ।
भक्तिबिमुखकरयइनजनि, दिखरायो सुखप्रद अहौं ॥

अयन तीसरे सख्या गाई * युग सहस्र नवसै हैं भाई
और सतत्तर जानो जोई * इतनी हैं चौपाई सोई
दोहा साठि पचशत जानो * नब्वे सोरठ सोइ पिछानो
हैं छप्पै बावन यहि माहीं * गितिका छन्द उन्तालिस आहीं
चौबोला युग यामें होई * मन्जु छन्द यक सुन्दर सोई
छदैं हैं मुनि कहा सुहाई * कुण्डलिया म्वहिं बीस लखाई
तोटक यक यक दण्डक जानो * कमल एक यक तोमर भाखो
रोला वेद वेद अश्लोका * रुद्र त्रिभङ्गी छन्द बिलोका
एक मालिका यामें भाई * सख्या अयन कहा मैं गाई
सो० महिश्वर छन्द जो एक, युगनराच छन्दैं अहैं।
भुजँग प्रयाता एक, एक कवित्त यामे विशद ॥
दो० जो कछु देख्यो चूक मम, क्षम्यो जानि अज्ञान।
पराधीन जग जीव सब, ज्ञानी इक भगवान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीमज्जगज्जननि-
जनकजानकीरामस्यानुगानुगोहश्रीरघुनाथदासराम-
सनेहीनिर्मितविश्रामसागरोग्रन्थ समाप्त ॥

(१)

कमल महादेव हंस	कुन्द यमराज गरुड़	निवारी हनुमान् पपीहा	दुपहरिया इन्द्र गिध
बेला राम मैना	केवड़ा गणेश कोयल	गुल्दावदी शनैश्चर खूसट	पियावासा भैरव बया
कलगा भरत टिटीरी	सुदर्शन पवन भरदूल	गुलमेंहदी जल खड़ैंचा	नरगिस शारदा चहूल
कँदयल अभ्र गरगवा	मरुवा शुक्र कटनाश	गुलाफिरग अश्विनीकुमार तूती	सेवती स्वामिकार्तिक सारस

(२)

गुलाब हरि सुवा	निवारी हनुमान् पपीहा	कदम्ब सूर्य हरिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
बेला राम मैना	मोतिया कृष्ण बाज	गुलाचीन शत्रुहन मुरैला	गुल्दावदी शनैश्चर खूसट
चमेली ब्रह्मा काग	जूही पावक चकोर	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शार्दूल
कनयर अन्न गरगवा	मरुवा शुक्र कटनाश	नरगिस शारदा चहूल	गुलफिरग अश्विनीकुमार तूती

(४)

चान्दनी सीता लाल	कुन्द यमराज गरुड	गुल्लाल गुरुजन कठफोरा	मोतिया कृष्ण बाज
चमेली ब्रह्मा काग	निवारी हनुमान् पपीहा	कलगा भरत टिटीरी	गुलमेंहदी जल खडरैंचा
गुडहल देवी महरि	जूही पावक चकोर	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामिका० सारस
कनैर अन्न गरगवा	मरुवा शुक्र कटनाश	गुलाबास बृहस्पति शार्दूल	गुलफिरग अश्विनीकु. तूती

(८)

गेदा लक्ष्मी बकुला	केवडा गणेश कोयल	कदम्ब सूर्य हारिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
गुल्लाला गुरुजन कठफोर	मोतिया कृष्ण बाज	पियाबासा भैरव बया	नरगिस शारदा चण्डूल
कलगा भरत टिटीरी	चम्पा बुध बुलबुल	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामिका० सारस
कनैर अन्न गरगवा	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शार्दूल	गुलफिरग अश्विनीकु. तूती

हरिसिंह चन्द्रमा कबूतर	सुदर्शन पवन भरदूल	गुलाचीन शत्रुहन मुरैला	गुल्दावदी शनैश्चर खूसट	अंगुली रखकर इस प्रश्न को निकालते हैं
गुड्हल देवीजी महरि	गुलमेहँदी जल सईरचा	पियावासा भैरव बया	नरगिस शारदा चण्डूल	१ २ १३ ८ २६ २४ ३१ २३ २८ ११ ७ ०
जूही पावक चकोर	चम्पा बुध बुलबुल	केतकी मुस्वर बंदर	सेवती स्वामिका सारस	१७ १४ २० २७ १६ ० ६ १८ ४ २२ ५ ०
मरुवा शुक्र कटनाश	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शार्दूल	गुलफिरंग अश्विनीकु तूती	३ २१ १६ ८ ३० ० १५ १० १२ २५ २१ ॥

दो० बन्दिगणाधिप शारदा, रामसिया गुरु विष्णु ॥
हरिप्रेरित रघुनाथजन, बरणत मानस प्रष्णु १
कह महेश प्रभुपद कमल, भजकुरि भेष मराल ॥
ह्वै है मङ्गल लाभ बहु, मिटिहैं सबदुख हाल २
जैसा रङ्ग गुलाब का, तैसा यह संसार ॥
कह हरि मति भूलै सुवा, यामें दुःख अपार ३
पढ़ि मैना बँदि में पस्यो, अबते सुमिरहु नाम ॥
जब वह बेला आइहै, तबही सरिहै काम ४
कह सिय पिय गुनलालसे, सुयश चादनीछाय ॥
मिलत मोद गावत सुनत, गनत विपति सब जाय ५
कुन्द सरिस तन आडबटि, लक्ष्मण भल कुल नीक ॥
कहत धर्मकरि गरुडपति, भजे होइ सब ठीक ६
काक भक्षको त्यागिकै, लीन चमेली बास ॥
कह बिधि अस सतसंगहै, करु पूजी सब आस ७
सुमिरि नाम चातक सरिस, मन का मैल निवारि ॥
करतल तेरे चारि फल, कह हनुमान पुकारि ८
जिनकरि तूं सुख चहत है, तिन ते होई दुक्ख ॥
बक गेंदा सम कुटिल अति, श्रीपति सनमुख सुक्ख ९
बुद्धिमान गणपति सरिस, बोलत कोकिल बैन ॥

भजहु हरिहि है केवडा, तुम सबको सुख ऐन १०
मित्र मिली होरिज मिली, सम्पति मिली कदम्ब ॥
भूलेहु जनि रघुनाथको, मतिहि दुखायो अम्ब ११
कौन त्रिया जिमि गीधकी, तज्यो इन्द्र सुत जानि ॥
तासुचरण दुपहर सरिस, भजु तू सुखकी खानि १२
सेवहु गुरुजन प्रीति करि, फूली मुद गुल्लाल ॥
कठफोरवा सम रिपु मिटी, मिली सुहृद सुतबाल १३
भरतरहनि धरु हृदय महँ, तनु टोटी सुत मूल ॥
फलगाभक्ति ब्रह्माइये, निशिदिन मङ्गलमूल १४
गई ताहि अब झखै मति, रहीते भजु नंदलाल ॥
कालयाजिशिर सूझितहिं, पर्यो मोतिया जाल १५
कर्म कृषी भलि कीजिये, ज्यहि उपजे सुख अन्न ॥
चुगहि गरगवा जीव तब, होइ न कँदयल मन्न १६
सोम परेवा का लखै, करु तू हरि श्रृङ्गार ॥
देखु नयन भरि सुखद छबि, यहि अवसर यहि बार १७
भरुही के अरंढा बचे, बच्यो पवनसुत जानि ॥
तिमिते बाचि सुख भोगिहैं, सुमिरु सुदर्शन पानि १८
गुलाचीन करहार करि, रिपुहन्तहि पहिराउ ॥
पैहै बिजय विनोद यश, मोर तोर मतिगाउ १९

बसै शनिश्चर पाय तेहि, फिरै दावदी जैस ॥
बिन हरि सुमिरे सुख नहीं, खोड न खूसट बैस २०
गुड़हल समतन हरिभगति, देवी शीश चढ़ाउ ॥
होइ सिद्धि कल्याण जेहि, महरि सुवन यश गाउ २१
दुख सुख आवत समय पर, ज्यों खञ्जन ऋतु पाइ ॥
आनद जल बर्षत उठी, गुलमेंहदी हरियाइ २२
जूही अपने मित्रहित, पावक खात चकोर ॥
जो हरि सुमिरै प्रीतिते, क्यों न होइ फल तोर २३
नारि खहेरियासरिस है, छूमति मन कटनाश ॥
मरवा पकरि झुलाइहै, कबि कौडी की आश २४
ज्यों मधुकर चम्पहि तजै, त्यों तू तज यह दाज ॥
बुलबुल से लड़िजाइहौ, कह बुध फिरि बनराज २५
बिन बर्षा घन समुझि घर, दीन्हे बयन बिसारि ॥
पियाबास तब तिमितजा, भैरव आश निवारि २६
तीतर त्यागे प्राणनिज, गा अनार तरु सूखि ॥
नरसिंहको करु यादि अब, तू मति काहुइ दूखि २७
सुमिरि शारदाके चरण, चढै न क्यों चण्डूल ॥
नरगिसकरि क्या कराहिंगे, जो ईश्वर अनुकूल २८
रहिये रहनि बटेर की, चहिये सुयश गजारि ॥

तहै केतकी वास किमि, मुनिवरकहत विचारि२६
सारस बदको याद करु, है सो मङ्गल खानि ॥
स्वामिकार्त्तिक रटत जेहि, शम्भु सेवती मानि ३०
गुलाबासकी आश तजि, शारदूलको ध्याव ॥
होई सुख परदेश में, कहत बृहस्पति जाव ३१
गुल फिरङ्ग फूली बिपिन, भई कृपण के दर्बि ॥
कह रविसुतहरि बिनवृथा, तूती बोलै अर्बि ३२
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ॥
बरणौ मानस प्रश्न यह, पूरण जन रघुनाथ ३३
देवसुमन अरु खगनके, नाम जानि यकतीश ॥
पञ्चयाम कोठा असी, अङ्क पांच तिन शीश ३४
सकल सुनावै नाम जो, धाम मध्य ठहराइ ॥
अङ्क जोरि दोहा समुझि, सगुनहिं देउ बताइ ३५

इति ॥

